श्री

श्री विजयलक्ष्मीसूरि विरचित-

उपदेश प्रासाद भाषान्तर

विभाग ५ मो.

स्थंभ २०-२१-२२-२३-२४

(व्याख्यान २८६ थी ३६१.)

तपाचार, वीर्याचार, पूर्ण मग्न स्थिरतादि अष्टक सूचित विषयो, प्रत्येक-
बुद्धो, होलिका, पट्टावली विगेरे अनेक विषयो पर
दृष्टांत युक्त विवेचननो संग्रह.

जैन बंधुओने खास उपयोगी होवाथी गद्यपद्यात्मक संस्कृत
ग्रंथनुं शुद्ध गुजराती भाषांतर करावी
प्रयासपूर्वक संशोधन करीने

प्रसिद्ध कर्त्ता

श्री जैन धर्म प्रसारक सभा

भावनगर.

विक्रम संवत १९८१ वीर संवत २४५१ शाके १८४७

 (आवृत्ति बीजी)

किंमत रु. २-८-०

श्री उपदेशप्रासाद ग्रंथ भाषांतर.

विभाग १ लो—स्थंभ ४—व्याख्यान ६१.

समकितना ६७ बोल संबंधी कथाओ सहित. बीजी आवृत्ति. २–८–०

विभाग २ जो—स्थंभ ५ थी ९—व्याख्यान ७४.

श्रावकना पांच अणुव्रत ने त्रण गुणाव्रतोनुं स्वरूप. कथाओ सहित

आवृत्ति बीजी. २–०–०

विभाग ३ जो—स्थंभ १० थी १४—व्याख्यान ७५.

चार शिक्षाव्रतोनुं ने बीजी अनेक बाबतोनुं स्वरूप. कथाओ युक्त.

आवृत्ति बीजी. २–०–०

विभाग ४ थो—स्थंभ १५ थी १९—व्याख्यान ७५.

जिनपूजादिक अनेक विषयोनुं ने प्रांते ज्ञानाचारादि आचारोनुं

स्वरूप, कथाओ युक्त. बीजी आवृत्ति. २–८–०

विभाग ५ मो—स्थंभ २० थी २४—व्याख्यान ६१.

तपाचार—अष्टको ३२ उपर व्याख्यान ३८ प्रांते तपगच्छनी

पट्टावळी विगेरे अनेक कथाओ युक्त. बीजी आवृत्ति. २–८–०

पांचे भाग साथे खरीद करनारने रु. १०–०–० पडशे.

भावनगर—धी आनंद प्री. प्रेसमां शाह गुलाबचंद लल्लुभाइए छाप्युं.

प्रथम आवृत्तिनी प्रस्तावना.

परमात्मानी कृपाथी उपदेश प्रासाद ग्रंथनुं भाषांतर आ भागमां संपूर्ण करी शक्या छीए. आ ग्रंथ बनावीने श्री विजयलक्ष्मीसूरिए महान् उपकार कर्यो छे. तेनो पूरेपूरो अनुभव जेओ आ ग्रंथ साद्यंत वांची तेनुं मनन करे तेनेज थई शके तेम छे. श्रावक भाइओने माटे तो आ ग्रंथ अपूर्व आभूषण तुल्य छे. आ ग्रंथने प्रासादनुं नाम आप्युं छे ते वास्तविक आपेलुं छे अने तेनी सिद्धि ग्रंथकर्त्ताए प्रान्ते ३६१ मां व्याख्यानमां करी बतावी छे; अने तेज निमित्ते श्री सिद्धाचळ पर रहेला आदीश्वर प्रभुना प्रासादनुं पण वर्णन आपी तेनी साथे घटाव्युं छे. प्रांते गुरु पट्टावळी पण श्रीसुधर्मास्वामीथी प्रारंभीने पोता सुधी आपी छे. तेनी अंदर हाल वर्तता तपगच्छनां जुदां जुदां नाम कया कया आचार्यथी थया ते पण बताव्युं छे, तेमज जैनशासनमां प्रभाविक जेवा थयेला श्रीहीरविजयसूरिनुं चरित्र पण आपवामां आव्युं छे, ते खरेखर वांचवा लायक छे.

आ उपदेश प्रासादग्रंथमां २४ स्थंभ आपवामां आव्या छे; अने दरेक स्थंभने १५-१५ हांश होय तेम आमां दरेक स्थंभमां १५–१५ व्याख्यान आपेलां छे; जेथी एकंदर ३६० व्याख्यान आपेलां छे. छेलुं ३६१ मुं व्याख्यान आ ग्रंथनी प्रासादपणानी सिद्धि माटे छे. वर्षना दिवस प्रमाण (३६०) आमां व्याख्यानो छे. आ ग्रंथनी टीकानुं नाम "उपदेश संग्रहा" राखेलुं छे. ते स्वोपज्ञ छे. प्राये तमाम व्याख्यानोमां कथाओ आपेली छे. केटलांक व्याख्यानोमां एकथी वधारे कथाओ छे. तमाम कथाओनी अक्षरानुक्रमे अनुक्रमणिका आ विभागना पाछला भागमां आपेली छे; उपरांत आ ग्रंथमां सर्व पर्वतिथिओनां व्याख्यानो पण समावेलां छे. तेनी अनुक्रमणिका पण जुदी आपवामां आवी छे. ते अनुक्रमणिका वांचवाथी पण कर्त्ताए करेला उपकारनुं स्मरण थई शके तेम छे.

आ पांचमा विभागमां २० मांथी २४ मा सुधीना पांच स्थंभो आपेला छे. तेमां २८६ थी ३६१ सुधीनां (७६) व्याख्यान छे. तेनी अंदर प्रथम चोथा विभागमां अपूर्ण रहेला पांच आचारो पैकी तपाचार उपर १४ व्याख्यानो आपेलां छे, अने १५ मुं व्याख्यान विर्याचार संबंधी छे. ए रीते पांच आचारनुं स्वरुप २० मा स्थंभमां पूर्ण करेलुं छे. तेनी अंदर प्रायश्चित्त नामना सातमा तपाचारमां पांचे आचार अने श्रावकनां बारे व्रतमां लागता दोष संबंधी तमाम प्रकारनां प्रायश्चित्तो २८८–८९–९० मा व्याख्यानमां आपेलां छे. ते खास लक्ष्यमां राखवा लायक छे.

२१ मा स्थंभना प्रारंभथी कर्त्ताए श्रीमद्यशोविजयजी महाराजाने पगले चाली तेमना करेला ज्ञानसार ग्रंथमांहेना पूर्ण, मग्न, स्थिर, मोह, शम, इंद्रियजय विगेरे ३२ अष्ट-

क उपर ३८ व्याख्यानो लखेलां छे; अने तेमां पण दरेक विषय पर कथाओ आपेली छे. आ तमाम व्याख्यानो लक्ष्यपूर्वक वांचवा योग्य छे. तेमां पूर्वोक्त ३२ अष्टकोमांथी दरेक व्याख्यानमां अनुकूळता अनुसार १-२-४ श्लोको लीधेला छे. महापुरुषोने पगले चालवानुं अने ते हकीकतने ज पुष्ट करवानुं आथी सारुं शिक्षण मळी शके तेम छे.

पाछला २२ व्याख्यानोमां अनेक परचुरण विषयो समावेला छे, तेमां व्याख्यान ३४८-४९-५० मां पहेला, त्रीजा ने चोथा प्रत्येकबुद्धनी कथा आपेली छे. बीजा प्रत्येकबुद्ध नमिराजर्षिनुं चरित्र ५२ मा व्याख्यानमां आवी गयेल होवाथी अहीं आपेलुं नथी. ३४९ मा व्याख्यानमां हुताशिनी पर्व जेनाथी प्रचलित थयुं छे ते होलिकानी कथा आपेली छे. रोहिणी तप करनार माटे रोहिणीनी कथा ३३७ मा व्याख्यानमां आपेली छे. बीजी पण दरेक कथा वांचवालायक छे. तेनो विस्तार लखवा जतां आखो जुदो ग्रंथ थइ जाय तेम छे. प्रांते बे व्याख्यानमां गुरु पट्टावळी अने बे व्याख्यानमां परम उपकारी श्रीहीरविजयसूरिनुं चरित्र आपी २४ मो स्थंभ पूर्ण कर्यो छे. छेवटे ३६१ मा व्याख्यानमां संक्षिप्त प्रशस्ति पण आपी छे.

आ प्रमाणे आ पांचमा विभागनी संक्षिप्त प्रस्तावना छे; परंतु आ ग्रंथ आ विभागमां पूर्ण थतो होवाथी २४ स्थंभना ३६० व्याख्यानमां एकंदर मुख्य मुख्य शुं शुं विषयो आपेला छे ते संक्षेपमां जणाववानी जरुर छे, के जेथी आखा ग्रंथनो सामटो बोध थई शके अने ते वांचवानी अभिलाषा विशेष जागृत थाय.

प्रारंभना चार स्थंभ समकितना संबंधमांज लखेला छे. तेनां ६१ व्याख्यान छे. तेमांना पहेला व्याख्यानमां भगवंतना अतिशयोनुं वर्णन छे. पछीना त्रण व्याख्यानमां सम्यक्त्वना भेद संबंधी विवेचन छे, त्यारपछीनां ५७ व्याख्यानोमां समकितना ६७ बोलनुं विवेचन अने ते उपर कथाओ छे. छेवटनां त्रण व्याख्यानमां समकितना त्रण चार पांच विगेरे प्रकारोनुं वर्णन छे. अहीं प्रथम खंड पूर्ण थाय छे.

पांचमाथी अग्यारमा सुधीना ७ स्थंभमां श्रावकनां बार व्रत संबंधी विवेचन अने कथाओ छे. आ ७ स्थंभमां १०४ व्याख्यानो छे. तेमां बारे व्रत उपर अनुक्रमे १३-५ ५-२१-४-४-१७-७-७-४-१३-४ व्याख्यानो छे, तेमां आठमा व्रत उपरनां व्याख्याने नवमो स्थंभ पूरो थवाथी बीजो विभाग पूरो थयो छे; अने अग्यारमा स्थंभनी प्रांते आ ग्रंथनो बीजो खंड पूरो थाय छे आ बार व्रत उपरनां व्याख्यानोमां चोथा व्रत उपर बीजा व्रतो करतां वधारे व्याख्यानो छे. ते बधा खास वांचवा लायक छे. दशमा व्रतनां चार व्याख्यानमां एक अट्ठाई संबंधी व्याख्यान छे अने एक श्रावकनां वार्षिक कृत्यो संबंधी व्याख्यान छे. अग्यारमा व्रतनां १३ व्याख्यानमां वचे पांच व्याख्यान प्रतिक्रमणना

आठ पर्याय उपर दृष्टांतो सहित छे अने एक व्याख्यान इरियावहि संबंधी छे.

बारमा स्थंभना प्रारंभनां १२ व्याख्यानो पण श्रावकनां व्रतादिकना संबंधवाळाज छे अने ३ व्याख्यानमां त्रण वांचवा लायक कथाओ छे. तेरमा स्थंभना प्रारंभमां मध्य मंगळाचरण करेलुं छे. ते स्थंभमां जिनपूजा, तीर्थयात्रा, जिनचैत्य, जिनबिंब अने देवद्रव्य तथा नवकारना जाप संबंधी हकीकत कथाओ साथे समावी छे.

चौदमा स्थंभना प्रारंभनां दश व्याख्यानो तीर्थंकरनां पांच कल्याणक संबंधे खास वांचवा लायक लख्यां छे, अने छेवटनां पांच व्याख्यानोमां कालनुं स्वरूप, बार आराना भाव अने छेवट दीपोत्सवीना पर्व संबंधी व्याख्यान छे.

१५–१६–१७ आ त्रण स्थंभमां अनेक परचुरण विषयो समाव्या छे. तेमां खास करीने बेसतुं वर्ष, ज्ञानपंचमी, कार्तिकी पूर्णिमा ने मौन अग्यारश ए चार पर्वनां चार व्याख्यान छे. दान ने शीलधर्म उपर चार व्याख्यानो छे. पांच कारण उपर चार व्याख्यान छे. दश पच्चक्खाण उपर बे व्याख्यान छे. क्रोधादि चार कषाय उपर पांच व्याख्यान छे, अने ते चारे प्रकारना पिंड उपर त्रण व्याख्यान छे. उपरांत ७–८–९–३–६–५–४ आ सात निन्हवोनी कथावाळां सात व्याख्यान छे. तेमां बाकी रहेला पहेला बीजा निन्हवनी कथा ७ मा ने ९ मा व्याख्यानमां प्रथम भागमां आवी गयेल होवाथी अहीं कहेल नथी. सत्तरमा स्थंभनी प्रांते एक व्याख्यान मिथ्यात्व विषे अने बे व्याख्यान गोशाळानी कथावाळां छे. आ प्रमाणे ते स्थंभ पूर्ण करेला छे.

अढारमा स्थंभना प्रारंभथी ज्ञानाचारनुं स्वरूप शरु करेल छे. ज्ञानाचारादि पांच आचार उपर अनुक्रमे १२–१०–५–१७–१ व्याख्यानो छे. तेमां तपाचारनां त्रण व्याख्यान आपतां १९ मो स्थंभ ने चोथो विभाग पूर्ण थाय छे. तपाचारनां बाकीनां १४ व्याख्यान आ पांचमा विभागना प्रारंभमां आपेलां छे. त्यारपछी एक व्याख्यान वीर्याचार उपर आपीने २० मो स्थंभ पूर्ण करवामां आवेल छे.

२१ मा स्थंभना प्रारंभथी ज्ञानसार अष्टकपर व्याख्यान आपेलां छे. २१–२२–२३–२४ ए चार स्थंभनां ६० व्याख्यानमां ३८ व्याख्यान ३२ अष्टक उपर अने २२ व्याख्यान परचुरण अनेक विषय संबंधी छे. तेनो विस्तार उपर लखवामां आवेल होवाथी अहीं फरीथी लखवामां आवतो नथी.

आ प्रमाणे २४ स्थंभमां अनेक विषयोनो समावेश करवामां आव्यो छे. टुंकामां कहीए तो प्रथमना ४ स्थंभ सम्यक्त्व विषे, ७ स्थंभ देशविरति विषे अने त्यार पछीना १३ स्थंभो अनेक विषयोथी भरेला छे. तेमां मुख्य पांच आचार उपर ४५ व्याख्यान, बत्रीश अष्टक उपर ३८ व्याख्यान अने बाकीनां व्याख्यानो परचुरण अनेक विषय परत्वे लखेलां छे.

आ ग्रंथनी अंदर दीपोत्सवी, बेसतुं वर्ष, ज्ञानपंचमी, कार्त्तिकी पूर्णिमा, मौनएकादशी, रोहिणी, होलिका, अठ्ठाइ अने चोमासी संबंधी अनुक्रमे २१०-२११-२१५-२२५-२५१-३३७-३४५-१४७-१०४ ए व्याख्यानो छे. तेमज वार्षिक कृत्यो विषे १४८ मुं अने पर्वाराधन अवश्य करवा विषे १५१-५२ मुं ए बे व्याख्यान छे.

आ ग्रंथनी उपर कोइ मुनिए टबो पूरेलो छे. ते केटलेक स्थाने अपूर्ण छे, केटलीक जग्याए पूर्ण विनानो जणाय छे; तेमज लखनारा लहीआओना प्रमादथी दिवसानुदिवस बहुज अशुद्ध थइ गयेल छे; तेथी आ भाषांतर करतां तेनापर बहुज अल्प आधार राखवामां आव्यो छे. मूळ पण शुद्ध मळी शकतुं नथी. बे चार प्रतो एकठी कर्या छतां मूळ शुद्ध मळी शक्युं नथी, तो पण तेने शुद्ध करीने एकलुं मूळ छपाववानी अमारी इच्छा छे. प्रयत्न शरू छे.

आ ग्रंथनुं भाषांतर करावीने ते मूळ साथे बराबर मेळवी शुद्ध करवामां ३६० उपरांत दिवसो लाग्या छे; अर्थात् तेने भूल विनानुं करवा माटे बनतो प्रयत्न करवामां आव्यो छे; छतां तेमां जे कांई अशुद्धता अथवा विपरीतता मतिदोषादि कारणथी रही गइ होय तेने माटे मिच्छामिदुक्कड देवा साथे तेवी भूलो अमारी तरफ लखी मोकलवानी विनंति करवामां आवे छे; जेथी बीजी आवृत्तिने प्रसंगे अथवा खास जुदी ते शुद्धि जाहेर करवा इच्छा वर्ते छे.

आ ग्रंथना कर्त्ताना संबंधमां वधारे हकीकत मेळववा माटे विशेष प्रयास करवानुं बनी शक्युं नथी, अने जे कांई प्रयास करवामां आव्यो छे तेने परिणामे वधारे मेळवी शकायुं नथी. मात्र तेओ कपडवणज तरफ विचरेला छे तेटलुं जाणवामां आव्युं छे. त्यां तेमनी करेली चैत्यप्रतिष्ठा विद्यमान छे. आ ग्रंथ संवत् १८४३ ना कार्त्तिक शुदि पूर्णिमाए पूर्ण करवामां आव्यो छे. कर्त्ता तपगच्छमां थया छे, अने तेओ श्री विजयसौभाग्यसूरिना शिष्य छे. तेमना गुरु भाई श्रीप्रेमविजयजीना आग्रहथी आ ग्रंथनी रचना करवामां आवी छे. इत्यादि हकीकत प्रांते आपेल पट्टावली तेमज प्रशस्ति उपरथी जाणी शकाय छे. विशेष जाणवामां आवे—तेमणे अमने लखी मोकलवा तस्दी लेवी, जेथी आ ग्रंथना प्रथमना चार स्थंभना भाषांतरवाळा प्रथम भागनी बीजी आवृत्ति हवे पछी अमारा तरफथी बहार पडवानी छे तेमां प्रगट करशुं.

प्रांते परम कृपालु परमात्मानी कृपाथी आ ग्रंथनुं भाषांतर पूरेपूरुं प्रकट करवा शक्तिमान थयेला होवाथी तेमना परम उपकारनुं स्मरण करी आ प्रस्तावना समाप्त करवामां आवे छे.

आश्विन शुदि. १
संवत् १९६६

श्री जैन धर्म प्रसारक सभा.
भावनगर.

☞ आ बीजी आवृत्ति संवत १९८१ ना ज्येष्ट शुदि १ मे प्रगट करवामां आवी छे. तेमां विशेष फेरफार करवामां आवेल नथी.

श्री उपदेश प्रासाद भाषांतर भाग ५ मो.

स्तंभ २० थी २४

व्याख्यान २८६ थी ३६१

स्थंभ २० मो.

श्रीउपदेश प्रासाद ग्रंथ संपूर्ण.

श्री उपदेश प्रासाद भाषांतर.

विभाग ५ मो.

स्तंभ २० मो.

व्याख्यान २८६ मुं.

रसत्याग नामना चोथा तपाचार विषे.

विकृतिकृद्रसानां यत्त्यागो यत्र तपो हि तत् ।
गुर्वाज्ञां प्राप्य विकृतिं, गृह्णाति विधिपूर्वकम् ॥ १ ॥

भावार्थ—" विकार करनारा रसोनो जे त्याग करवो ते रसत्याग नामनो तप कहेवाय छे, तेमां पण गुरुनी आज्ञा लइने विधिपूर्वक विकृति (विगइ) ग्रहण करवी. "

दूध, दहीं, घी, तेल, गोळ तथा पक्वान्न विगेरे छ भक्ष्य अने मध, मांस, मदिरा तथा माखण ए चार अभक्ष्य मळी दश विकृति (रस) कहेला छे. ते सर्व रसोनो अथवा तेमांथी केटलाएकनो जीवन पर्यंत अथवा अमुक वर्ष सुधी, अथवा पर्व तिथि, छ मास, चार मास विगेरे अवधि राखीने त्याग करवो; केमके ते सर्वे विकारनां कारण छे. कोइ वखत कारणने लइने विकृति रस लेवानी जरुर पडे, तो मुनिए गुरुनी आज्ञा लइने विधिपूर्वक ग्रहण करवा. ते विषे श्री निशीथ चूर्णिमां कह्युं छे के:—

" विणयपुव्वं गुरुं वंदिउण भणइ, इमेण कारणेण इमं विगइं एवइअं पमाणेणं इत्तियं कालं तुभेहिं अणुन्नाए भोत्तुमिच्छामि, एवं पुच्छिए अणुन्नाए पच्छा भिक्खं पविट्ठो गहणं करोति. "

एटले विनयपूर्वक गुरुने वांदीने कहे के " अमुक कारणने लीधे आटला प्रमाणवाळा अमुक विकृतिने आटला काळ सुधी आपनी आज्ञाथी खावा इच्छुं

छुं. एम पूछी गुरुनी आज्ञा लइने पछी भिक्षा माटे जाय, अने ते विगय ग्रहण करे." रसत्यागनो निर्वाह जीवनपर्यंत थइ शके छे, अने उपवास विगेरे तो अमुक काळपर्यंतज थइ शके छे; वळी उपवासादिक तो घणा लोको करे छे, अने रसत्याग तो तत्त्व जाणनाराज करे छे; तेथी उपवासादिक करतां पण रसत्यागनुं अधिक फळ छे, तेथी करीनेज अनेक मुनिजनो विकृतिनो त्याग करे छे. श्रीऋषभस्वामीनी पुत्री सुन्दरीए साठ हजार वर्ष सुधी आंबिल तप करीने सर्व विकृतिनो त्याग कर्यो हतो, तेमज ओगणीशमा पाटे श्रीमानदेवसूरिने ज्यारे सूरिपदे स्थापन कर्या ते समये तेना बन्ने खभा उपर तेना निःस्पृहादिक गुणोथी प्रसन्न थयेली सरस्वती तथा लक्ष्मी देवीने साक्षात् जोइने "आ (मानदेवसूरि) कोइ वखत चारित्रथी भ्रष्ट थशे" एवी विचारणाथी गुरुनुं चित्त खेद पाम्युं. ते जाणीने मानदेवसूरिए रागी श्रावकोना घरनी भिक्षानो तथा सर्व विकृतिनो त्याग कर्यो. ते तपना प्रभावथी नड्डुलपुरमां[1] पद्मा, जया, विजया अने अपराजिता ए चार देवीओ मानदेवसूरिनी सेवा करवा लागी. ते जोइने "आ सूरि स्त्रीओथी परवरेला केम छे ?" एवी कोइ मुग्धने शंका थइ, तेने ते देवीओएज शिक्षा आपी. पछी ते देवीओए सूरिने कह्युं के "हे स्वामी ! अमने कांइ पण कार्य बतावो." सूरि बोल्या के "हुं संघनो उपद्रव निवारण करवा माटे तमारां नामोथी गर्भित लघुशांति स्तोत्र रचुं छुं, तेनुं अधिष्ठातापणुं तमारे स्वीकारवुं." आ प्रमाणेना गुरुना वाक्यने ते देवीओए अंगीकार कर्युं.

हवे व्यतिरेक युक्तिवडे कहे छे के "जे मुनि रसत्याग करता नथी ते मंगुसूरि विगेरेनी जेम मोटी हानिने पामे छे."

मंगुसूरिनुं दृष्टांत.

मथुरा नगरीमां मंगु नामना आचार्य पांचसो साधु सहित रहेता हता. तेना उपदेशथी रागी थयेला लोको तेने युगप्रधान तरीके मानता हता, अने बीजां सर्व कामो पडतां मूकीने तथा बीजा सर्व मुनिओनो अनादर करीने जाणे भक्तिवडे वश थया होय तेम घणा लोको ते सूरिनेज सेवता हता. ते लोको हमेशां स्निग्ध अने मधुर आहारादिकवडे सूरिनी सेवा करता हता. अनुक्रमे कर्मना

---

१ राणकपुरजीवाळी पंचतीर्थीमां नाडोल आवे छे ते.

वशथी सूरि रसमां लोलुप थया. तेथी एक स्थानेज वास अंगीकार कर्या पछी अधिक सुख मळवाथी (साता गौरवथी) विहार तथा उपदेश आपवामां पण आळसु थया. ऋद्धिगौरवना वशपणाथी मिथ्याभिमानी थया, अने यथायोग्य विनयादि क्रियामां पण मंदादरवाळा थया; अने रसमां लोलुप थवाथी क्षेत्र, कुळ विगेरे स्थापन करीने गोचरीनी गवेषणा करवामां पण आळसु थया. अनुक्रमे ते आचार्य मृत्यु पामीने तेज नगरनी खाइ पासे आवेला कोइ यक्षना मंदिरमां तेना अधिष्ठायक व्यन्तरपणे उत्पन्न थया. त्यां विभंगज्ञानथी पोतानो पूर्वभव जाणीने पश्चात्ताप करवा लाग्या. पछी हमणां तो " आम करवुं ज योग्य छे " एम विचारीने ते मंदिर पासेथी जता आवता साधुओने यक्ष प्रतिमाना मुखमांथी मोटी जिह्वा बहार काढीने देखाडवा लाग्यो. ए रीते हमेशां करवाथी एकदा कोइ साहसिक साधुए तेने पूछ्युं के " तुं कोण छे ? अने आ जिह्वा बहार काढीने शामाटे बतावे छे ? " ते सांभळीने ते यक्षे प्रत्यक्ष थइने खेद सहित सर्व वृत्तांत कही बताव्यो के " हुं धर्मरूपी मार्गमां पंगु (लंगडो) थयेलो तमारो गुरु मंगु नामनो आचार्य प्रमादथी मूळोत्तर गुणनो घात करीने महाव्रतनो भंग करवाथी आ नगरनी खाइमां यक्ष थयो छुं, माटे तमारे रसमां लोलुप थवुं नहीं. हुं जिह्वाना स्वादथी भ्रष्ट थयो छुं, तेवुं जणाववाने माटे जिह्वा बहार काढीने बतावुं छुं. " आ सांभळीने ते सर्व साधुओ रसत्यागरूपी तपमां तत्पर थया, अने सर्व लोकोने उपदेश करवा लाग्या के " हे भव्य प्राणीओ ! पुरुषोने इन्द्रियजय महा संपत्तिनुं कारण थाय छे. कह्युं छे के--

इन्द्रियाण्येवतत्सर्वं, यत्स्वर्गनरकावुभौ ।
निगृहीतविसृष्टानि, स्वर्गाय नरकाय च ॥ १ ॥

भावार्थ—" स्वर्ग अने नरक ए बेनी जे प्राप्ति थवी, ते सर्व इन्द्रियोवडेज छे; केमके इन्द्रियोनो निग्रह करवाथी स्वर्ग मळे छे, अने तेमने छूटां मूकवाथी नरक प्राप्त थाय छे. "

संग्राममां जय मेळवनारा घणा जोवामां आवे छे, पण इन्द्रियोनो जय करनारा दुर्लभ होय छे. कह्युं छे के—.

शतेषु जायते शूरः, सहस्रेषु च पंडितः ।
वक्ता शतसहस्रेषु, दाता भवति वा न. वा ॥ १ ॥

भावार्थ—" सो माणसोमां कोइ एकज शूरो होय छे, हजार माणसोमां एक पंडित निवडे छे, लाख माणसोमां कोइ एकज वक्ता होय छे, अने सर्व मनुष्योमां दातार तो कोइ होय छे, अथवा नथी पण होता. " कारण के—

न रणे निर्जिते शूरो, विद्यया न च पंडितः ।
न वक्ता वाक्पटुत्वेन, न दाता धनदायकः ॥ २ ॥

भावार्थ—" युद्धमां जीत मेळववाथी कांइ शूरो कहेवाय नहीं, विद्या उपार्जन करवाथी कांइ पंडित कहेवाय नहीं, वाणीनी चतुराइथी कांइ वक्ता कहेवाय नहीं अने धन आपे तेटलापरथी कांइ दाता कहेवाय नहीं. " त्यारे ?

इन्द्रियाणां जये शूरो, धर्मं चरति पंडितः ।
सत्यवादी भवेद्वक्ता, दाता भीताभयप्रदः ॥ ३ ॥

भावार्थ—" जे इन्द्रियोनो जय करे तेज शूरो कहेवाय छे, जे धर्मनुं आचरण करे तेज पंडित कहेवाय छे, जे सत्य बोले तेज वक्ता कहेवाय छे अने भय पामेलाने जे अभयदान आपे ते ज दातार कहेवाय छे. "

समग्र इन्द्रियोनो जय करवानुं मूळ कारण रसनेन्द्रियनो जय करवो ते छे. ते रसनेन्द्रियनो जय भोजन तथा वचननी व्यवस्थावडे थाय छे; माटे निर्दोष कर्मथी दोषरहितपणे प्राप्त थयेलो परिमित आहार शुभ क्रियानी प्रवृत्ति माटे ग्रहण करवो. अत्यंत आहार करवाथी नवा नवा मनोरथोनी वृद्धि थाय छे, प्रबळ निद्रानो उदय थाय छे, निरंतर अपवित्रपणुं प्राप्त थाय छे, शरीरना अवयवो पुष्ट थाय छे अने तेथी करीने सर्व क्रियाओमां प्रमाद थाय छे, तेमज घणुं करीने निरंतर रोगीपणुं प्राप्त थाय छे; माटे हमेशां रसनेन्द्रियने अतृप्तिवाळीज राखवी. एक रसनेन्द्रियने अतृप्त राखीए, तो बीजी सर्व इन्द्रियो पोतपोताना विषयोथी निवृत्त थइने तृप्ति पामे छे, अने रसनेन्द्रियने तृप्त राखीए तो बीजी सर्व इन्द्रियो पोतपोताना विषयोमां उत्सुक रहेवाथी अतृप्तज रहे छे. जुओ रसनेन्द्रियमां लोलुप थयेला मंगुसूरि अनेक दुर्गतिनां दुःखो पाम्या, तथा कंडरिक मुनि पण जिह्वानीज लोलुपताथी हजार वर्ष सुधी पालन करेलुं संयम हारी गया. माटे साधुओए तथा श्रावकोए अवश्य रसत्याग तप करवो.

हवे कायक्लेश नामना पांचमा तपाचार विषे कहे छे—

वीरासनादिना क्लेशः, कायस्यागमयुक्तितः ।
तनुबाधनरूपोऽत्र, विधेयस्तत्तपः स्मृतम् ॥ १ ॥

भावार्थ—" आगममां कहेली युक्ति प्रमाणे वीरासन विगेरे आसनोवडे शरीरने बाध पमाडवारूप जे कायक्लेश सहन करवो ते कायक्लेश तप कहेवाय छे. "

अहीं मूळ श्लोकमां ' वीरासनादि ' शब्दमां आदि शब्द मूक्यो छे, तेथी उग्रासन विगेरे आसनो जाणवां तथा केशलुंचन जाणवुं. ते विषे कह्युं छे के—

वीरासण उक्कुड आसणाइं, लोआइओ अ विन्नेओ ।
कायकिलेसो संसारवासनिव्वेअ हेउत्ति ॥ १ ॥

भावार्थ—" वीरासन, उत्कटासन विगेरे तथा केशलोच विगेरे कायक्लेश संसारवासमां निर्वेद (खेद) करवाना हेतुभूत जाणवा. "

केशलोच विषे बीजा शास्त्रमां पण कह्युं छे के—

पश्चात्कर्म पुरःकर्म, जीवहिंसा परिग्रहाः ।
दोषा ह्येते परित्यक्ताः, शिरोलोचं प्रकुर्वता ॥ १॥

भावार्थ—" केशनो लोच करनार पुरुषे पश्चात्कर्म, पूर्वकर्म, जीवहिंसा अने परिग्रह एटला दोषोनो त्याग कर्यो छे एम समजवुं. "

स्थानांग सूत्रमां दश प्रकारनो लोच कहेलो छे. तेमां पांच इन्द्रियोनो जय अने चार कषायनो त्याग ए नव प्रकारे भावलोच कहेलो छे अने दशमो केशलोच ए द्रव्यलोच कहेलो छे. ते द्रव्यलोच नव प्रकारना भावलोचपूर्वक करवो जोइए. अहीं चार भांगा थाय ते आ प्रमाणे–कोइक प्रथम भावलोच करीने पछी द्रव्यलोच करे छे. कह्युं छे के "साधु होय तेज साधु थाय छे." आ उपर जंबूस्वामी विगेरेनां दृष्टांत जाणवां (१). कोइक प्रथम भावलोच करे छे, पछी द्रव्यलोच करता नथी. अहीं मरुदेवी माता विगेरेनां दृष्टांतो जाणवां (२). कोइक प्रथम द्रव्यलोच करीने पछी भावलोच करे छे. ते उपर द्रुम्मक साधु विगेरेनां दृष्टांत जाणवां (३). अने कोइक प्रथम द्रव्यलोच करीने पछी भावलोच करता नथी. अहीं उदायि राजाने मारनार विनयरत्ननुं दृष्टांत जाणवुं. अथवा

आधुनिक वेषधारी अने आजीविका माटे यतिलिंग धारण करनारनां दृष्टांतो जाणवां (४).

अहीं कोइ शंका करे के " परीषहमां अने आ कायक्लेशमां शो तफावत छे ? " तेनो जवाब आपे छे के " परीषह पोताथी अने बीजाथी एम बंने प्रकारथी उत्पन्न थतां क्लेशरूप होय छे, अने कायक्लेश मात्र पोते करेला क्लेशना अनुभवरूप होय छे, एटलो तेमां तफावत छे. आ कायक्लेश तप करवाथी निरंतर कर्मक्षयरूपी गुण प्राप्त थाय छे, तेथी छद्मस्थ जिनकल्पी विगेरे प्राये निरंतर उभाज रहे छे, अने कदाच बेसे छे तो पण उत्कटिक विगेरे विषम आसनवडे ज बेसे छे. ते ज भवमां सिद्धिगामी श्री वीरप्रभुए आ तप सारी रीते आचर्युं छे; केमके श्री वीरप्रभु छद्मस्थ अवस्थामां साडा बार वर्ष अने पंदर दिवस सुधी रह्या, तेमां कोइ पण वखते ते पर्यस्तिका (पलांठी) वाळीने एक क्षणवार पण बेठा नथी, तेम ज एक मुहूर्त मात्र निद्रा लीधी छे ते पण उभा रहीने ज लीधेली छे.

आ कायक्लेश तप पण सिद्धान्तनी युक्तिने अनुसरीने कर्युं होय तो ज फळदायी थाय छे. नहीं तो बाळ तपस्वीओ घणा प्रकारना कायक्लेशने सहन करे छे, कमठादिकनी जेम पंचाग्नि तप करे छे, सूर्य सन्मुख दृष्टि राखीने तथा उंचा हाथ राखीने उभा रहे छे, पंचकेश वधारे छे, तथा वृक्षनी शाखा उपर पग बांधीने नीचे मस्तक लटके छे, पूरण, जमदग्नि अने कौशिक विगेरे तापसोनी जेम महा कष्ट सहन करे छे, परंतु ते सर्व आप्त आगमनी युक्तिरहित होवाथी निष्फळ छे.

" जे भवमां अवश्य सिद्धि मळवानी छे ते भवमां पण वीतराग प्रभु रुडा आगमने अनुसरीने आ कायक्लेश तपनुं आचरण निरंतर करे छे, माटे तपना अर्थी मुनिओए आ तपनुं आराधन अवश्य करवुं. "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ विंशतितमस्तंभस्य षडशीत्यधिकद्विशततमः प्रबंधः ॥ २८६ ॥

व्याख्यान २८७ मुं.

संलीनता नामना छठ्ठा तपाचार विषे.

इन्द्रियादिचतुर्भेदा, संलीनता निगद्यते ।
बाह्यतपोऽन्तिमो भेदः, स्वीकार्यः स्कन्दकर्षिवत् ॥ १ ॥

भावार्थ—" इंद्रियादिक चार प्रकारे संलीनता कहेली छे. ते बाह्यतपनो छेल्लो भेद स्कंदक ऋषिनी जेम अंगीकार करवो. "

संलीनता एटले गुप्तपणुं अर्थात् शयन, भोजन विगेरे अप्रगटपणे करवुं ते. ते संलीनताना चार भेद छे. ते विषे पूर्वाचार्योए कह्युं छे के—

इंदियकसायजोए, पडुच्च संलीणया मुणेयव्वा ।
तह य विवित्तचरिया, पन्नता वीयरागेहिं ॥ १ ॥

भावार्थ—" इंद्रिय, कषाय अने योग आश्रयी त्रण संलीनता तथा विविक्तचर्या ए चोथी संलीनता जाणवी, एम वीतराग जिनेश्वरे कह्युं छे. "

श्रोत्रइन्द्रियवडे मधुर के अमधुर (कटु) शब्दो उपर राग द्वेष न करवो, ते श्रोत्रेंद्रिय संलीनता कहेवाय छे. ए प्रमाणे चक्षु इंद्रिय विगेरेमां पण समजवुं. एम पांच प्रकारे इंद्रिय संलीनता जाणवी. उदयमां नहीं आवेला कषायोने रोकवा तथा उदयमां आवेलाने निष्फळ करवा ते कषायसंलीनता जाणवी. मन, वचन, कायाना अशुभ योगनो निरोध करवो; ने शुभ योगनी उदीरणा करवी, ते योगसंलीनता जाणवी; अने स्त्री, पशु, नपुंसक विगेरेथी रहित आरामादिकमां निवास करवो, ते विविक्त शयन भोजन संलीनता जाणवी. आ प्रमाणे चारे प्रकारनी संलीनता पाळवी. जेओ तेनुं पालन करता नथी, तेओ श्रवणमात्रथीज धर्मनुं ग्रहण करनार तापसनी जेम मोटी दुःखपरंपराने पामे छे.

श्रमणमात्रग्राही तापसनुं दृष्टांत.

कोइ गाममां कोइएक ब्राह्मण पापथी भय पामीने तापस थयो. तेणे ' कृपया धर्मः ' (दयाथी धर्म थाय छे) ए वाक्य सांभळ्युं हतुं. एकदा कोइ तापस सन्निपातना व्याधिथी पीडातो हतो, तेने वैद्ये थंडुं जळ पीवानो निषेध कर्यो हतो. एक वखत बीजा सर्व तापसो कांइ काम प्रसंगे अन्यस्थाने गया हता; ते वख-

त पेला रोगी तापसे आ नवीन तापस पासे थंडुं पाणी माग्युं, तेथी ' कृपावडे धर्म थाय छे ' एम जाणीने तेणे ते रोगीने थंडुं जळ आप्युं, तेथी ते रोगी बहु पीडा पाम्यो. ते वृत्तांत जाणीने बीजा तापसोए ते नवीन तापसने घणो धिक्कार्यो के-" अरे मूर्ख ! तें आ रोगीने मारी नांख्यो, अथवा अज्ञानी शुं न करे ? " तेथी ते नवीन तापसे विचार्युं के " हुं अज्ञानी छुं, तेथी मारे ज्ञान शीखवुं जोइए. " पछी अभ्यास करतां तेणे सांभळ्युं के " तप कर्या विना ज्ञान निरर्थक छे. तपथी ज ज्ञाननी प्राप्ति थाय छे. कह्युं छे के तपस्वी पुरुषो आ सचराचर त्रैलोक्यने जुए छे. " इत्यादि सांभळीने ' पोतानेज आधीन एवुं तप हुं करुं ' एम विचारीने कोइने पण कह्या विना ते नवीन तापस पर्वतनी गुफामां गयो. त्यां तप करवानो आरंभ कर्यो. कंद, मूळ अने फळादिकनो पण त्याग करीने तेणे केटलाएक दिवसो निर्गमन कर्या. क्षुधानी पीडाथी कंठगत प्राण थयो, तेवामां तेने शोध करवा नीकळेला केटलाक तापसोए तेने जोयो, अने कह्युं के आ रीते तप थाय नहीं, केमके ' शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनं ' ' धर्मनुं पहेलुं साधन शरीर छे ' एवुं वचन छे, माटे शरीरनुं रक्षण करवुं अने धर्मनुं मूळ कारण समाधान (समता) छे तेमां यत्न करवो. " ते सांभळीने ' समताने विषे हुं यत्न करुं ' एम निश्चय करीने ते तापस कोइ गाममां गयो. त्यां भक्त जनोथी पूजा पामवा लाग्यो. केटलेक दिवसे तेने धन प्राप्त थयुं. ते जाणीने केटलाक धूर्त माणसोए तेनो परिचय करवा मांड्यो. ते धूर्तो उपर विश्वास आववाथी तेणे समाधान मूलक धर्म कह्यो के " जे कांइ सुवर्ण, स्त्री विगेरे सहेजे प्राप्त थाय तेनो उपयोग करवो, अने प्राप्त न थाय तेनी आगळ के पाछळ स्पृहा करवी नहीं." आ प्रमाणे समाधान मूळ धर्म सांभळीने ते धूर्तोए उपाय हाथ लागवाथी तेनी पासे गणिका मोकलीने सर्व धन हरी लीधुं. ते वात जाणवामां आववाथी लोकोए तेने काढी मूक्यो. आ प्रमाणे ते तापस श्रवणमात्रथीज धर्मने ग्रहण करनार, शास्त्रवचनना भावार्थने नहीं जाणनार, शास्त्रना उपदेशने अयोग्य तथा संलीनता तपना रहस्यने नहीं जाणनार होवाथी अनेक भवपरंपराने पाम्यो.

चार प्रकारनां संलीनता तपयुक्त स्कन्दक साधुनुं दृष्टान्त.

पांचमा अंगमां कह्युं छे के-कलिंगपुरीना उद्यानमां श्री वीरस्वामी समवसर्या. ते पुरीनी समीपे श्रावस्ति नामनी नगरीमां स्कन्दक नामे एक तापस रहेतो

हतो. ते ब्राह्मणनां समग्र शास्त्रो जाणतो हतो. एकदा महावीरस्वामीना शिष्य पिंगल नामना मुनिए स्कन्दकने पूछ्युं के " हे स्कंदक ! लोक सान्त छे के अनन्त छे? जीव सान्त छे के अनन्त छे? सिद्धि सान्त छे के अनन्त छे? सिद्ध सान्त छे के अनन्त छे ? अने केवा प्रकारना मरणथी जीव संसारनी वृद्धि अथवा हानि पामे ? " आ प्रश्नो सांभळीने स्याद्वादने नहीं जाणनार स्कन्दक तापसे मौन धारण कर्युं. पिंगल मुनिए त्रणवार ते प्रश्नो कर्या, पण स्कंदक उत्तर आपी शक्यो नहीं. तेवामां श्रावस्तिनगरीना लोको श्री वीरप्रभुने वांदवा जता हता, ते जोइने स्कन्दके पण प्रभुना शिष्ये पूछेला प्रश्नोना उत्तरो जाणवा माटे पोताना त्रिदंड, कमंडलु, वृक्षना पल्लव, अंकुश, रुद्राक्षनी माळा अने गेरुथी रंगेलां वस्त्र विगेरे उपकरणो लइने श्री वीरप्रभु पासे आववानो संकल्प कर्यो, ते वखते श्री जिनेश्वरे गौतम गणधरने कह्युं के " आज तमने तमारा पूर्व मित्र स्कन्दकनो समागम थशे. " गौतमे पूछ्युं के " हे स्वामिन् ! क्यारे थशे ? " प्रभु बोल्या के " हमणा ते मार्गमांज चाल्या आवे छे. " गौतमे पूछ्युं के " हे स्वामिन् ! ते आपना शिष्य थशे के नहीं ? " स्वामी बोल्या के ' थशे. ' ते सांभळीने गौतमस्वामी तेनी सन्मुख गया, अने जलदीथी तेने मळीने पूछ्युं के " हे स्कन्दक ! तमे कुशळ छो ? " (अहीं गौतम गणधरे असंयमी सन्मुख गमन, कुशळ प्रश्न विगेरे कर्युं, ते अनेक लाभ जोवाथी, अथवा प्रथमथीज पोताना गुरुने तेना आववानुं ज्ञान थयुं हतुं, ते वडे प्रभुनो ज्ञानातिशय जणाववा माटे, अथवा 'ते स्कंदकने व्रतनो समय समीपेज छे ' एम भावाहत् वीरप्रभुना वाक्यथी जाणीने पोतानुं निर्मानीत्व जणाववा माटे कर्युं छे.) पछी श्री गौतमस्वामीए तेने कह्युं के " हे पूर्व मित्र ! तमे पिंगल मुनिए पूछेला प्रश्नोना उत्तरो पूछवा माटे मारा धर्मगुरु पासे आवो छो. " ते सांभळीने स्कंदके पूछ्युं के " तमे मारा मननी हकीकत शी रीते जाणी ? " गौतम गणधरे कह्युं के " अमारा गुरु त्रिकाळमां एकान्ते करेलुं, प्रत्यक्ष करेलुं अथवा भविष्यमां करवानुं ते सर्व जाणे छे. तेमने सादि अनन्त भांगे ज्ञान रहेलुं छे. तेमना वचनथी में तमारुं आगमन विगेरे जाण्युं. " स्कंदक बोल्या के " तो हवे आपणे तमारा धर्मगुरु पासे जइए. "

ते गौतम गणधरनी साथे प्रभु पासे आव्या. श्री वीरस्वामीए पण गौतमस्वामीनी जेमज वात करी. पछी स्कन्दके प्रभुना सर्वज्ञपणानी प्रतीति माटे ते प्रश्नोना अर्थ

पूछ्या. एटले स्वामी बोल्या के "लोक द्रव्यादिक चार प्रकारनो छे. तेमां द्रव्यथी लोक एक छे, पंचास्तिकायना स्वरूपवाळो छे, सान्त छे, अने परिमाणयुक्त छे. क्षेत्रथी लोक आयाम, विष्कंभ अने परिधिथी असंख्याता कोटाकोटी योजन प्रमाण छे, माटे सान्त छे. काळथी अनादि अनन्त छे; कोइ पण वखत आ लोक नहोतो, नथी के नहीं हशे एवुं नथी; अतीत काळे हतो, वर्त्तमानकाळे विद्यमान छे, अने भविष्यकाळे पण विद्यमान हशे; तेथी हमेशां नित्य छे. अने शाश्वत छे. भावथी लोक अनन्त छे, केमके अनन्त वर्ण गंधादिक पर्याय युक्त छे.

जीव पण द्रव्यथी एक अने नित्य छे, क्षेत्रथी असंख्य प्रदेशनी अवगाहनावाळो अने सान्त छे; काळथी त्रणे काळमां अनन्त छे अने शाश्वत छे; अने भावथी अनन्त ज्ञानादि रत्नत्रयना पर्यायोथी युक्त छे; केमके प्रथमनां त्रण शरीर (औदारिक, वैक्रिय अने आहारक)ने आश्रीने अनन्ता गुरुलघु पर्यायो छे, अने तैजस तथा कार्मण ए बे शरीरने आश्रीने अनन्ता अगुरुलघु पर्यायो छे, तेणे करीने जीव युक्त छे तेथी भावथी जीव अनन्त छे.

सिद्धि एटले सिद्ध जीवनी समीपनुं क्षेत्र सिद्धशिला जाणवी. ते सिद्धशिला द्रव्यथी एक, सान्त अने ध्रुव छे; क्षेत्रथी पीस्तालीश लाख योजन आयाम विष्कंभ परिमाणवाळी छे; काळथी अनादि अनन्त छे; अने भावथी अनन्त वर्णादिक पर्यायोए करीने युक्त छे.

सिद्ध एटले सकळ कर्मनो क्षय करवाथी जेने आत्मस्वरूप प्राप्त थयुं छे ते. ते सिद्ध द्रव्यथी एक अने सान्त छे; क्षेत्रथी असंख्य प्रदेशनी अवगाहनावाळा छे; काळथी सिद्ध सादि अनन्त छे; अने भावथी अनन्त ज्ञानादिक पर्यायोथी युक्त, सान्त तथा अनन्त छे.

ते सांभळीने स्कन्दके " केवा मरणथी जीव संसारनी वृद्धि तथा हानि करे ?" ए प्रश्न पूछ्यो. भगवाने उत्तर आप्यो के " बाळमरणथी संसारनी वृद्धि थाय अने पंडितमरणथी भवपरंपरानी हानि थाय. तेमां बाळमरण बार प्रकारनुं छे, तेवुं मरण करवाथी जीव चार गतिवाळा संसाररूप कांतारमां भटके छे. तेमां क्षुधादिकनी पीडाथी अथवा संयमभ्रष्ट थइने मृत्यु पामे ते वलमरण १, पांच इन्द्रियोने आधीन रहीने तेनी पीडाथी मृत्यु पामे ते वशार्तमरण २, मनमां शल्य राखी

मृत्यु पामे ते अन्तःशल्यमरण ३, माणस पोताना भवनुं नियाणुं करीने मृत्यु पामे ते तद्भवमरण ४, पर्वतपरथी पडीने मरे ते गिरिपतनमरण ५, वृक्षपरथी पडीने मरे ते तरुपतनमरण ६, जळमां डूबीने मरे ते जळप्रवेशमरण ७, अग्निमां प्रवेश करीने मरे ते ज्वलनप्रवेशमरण ८, विष भक्षण करीने मरे ते विषभक्षणमरण ९, शस्त्रथी मरे ते शस्त्रमरण १०, वृक्षनी शाखापर पाश बांधीने मरे ते वृक्षपाशमरण ११, गीध पक्षी, हाथी विगेरेना प्रहारथी मरे ते गृध्रपृष्टमरण १२. पंडित मरण बे प्रकारनुं छे–पादपोपगमन अने भक्तप्रत्याख्यान. आ बे मरणथी अनन्त भवनो क्षय थाय छे. " आ प्रमाणे सांभळीने ते स्कन्दक संदेह रहित थया, अने प्रभुने त्रण प्रदक्षिणा करीने बोल्या के " हे भगवन्! आपनुं वाक्य खरेखरुं सत्य छे. "

पछी ते स्कन्दके इशान खुणे जइ पोतानां सर्व उपकरणो मूकी दइने श्री जिनेंद्र पासे दीक्षा ग्रहण करी. अनुक्रमे अगियार अंगनो अभ्यास करी प्रभुनी आज्ञा लइने बार प्रतिमा अंगीकार करी. पछी प्रभुनी आज्ञाथी गुणरत्नसंवत्सर तप अंगीकार कर्युं. ते तपमां पहेले मासे एकेक उपवास करीने बीजे दिवसे पारणुं, बीजे महिने निरंतर छठ्ठ तप करीने पारणुं, एवी रीते चडतां चडतां सोळमे महिने सोळ उपवासे पारणुं थाय छे. स्कंदक मुनि ए प्रमाणे तप करतां, दिवसे उत्कट आसने सूर्य सन्मुख रहीने आतापना लेता, अने रात्रे वीरासन वाळीने वस्त्र रहित रहेता हता. आ गुणरत्नसंवत्सर तपमां बोंतेर पारणाना दिवसो आवे छे. एवी रीते छठ्ठ, अठ्ठम, अर्ध मास तथा मासक्षमणादि तप करीने आत्माने भावता सता शरीरनुं सघळुं मांस शुष्क थइ गयुं, मात्र जीवनी शक्तिवडे गमन करता, अने बोलता सता ग्लानि पामी जता हता. तेमनुं शरीर एटलुं बधुं कृश थइ गयुं हतुं के ते चालता अथवा बेसता, त्यारे जाणे सुकां काष्ठनुं भरेलुं अथवा पांदडांनुं भरेलुं अथवा तल अने सरसवना काष्ठनुं भरेलुं अथवा कोलसानुं भरेलुं गाडुं चालतुं होय तेम तेमना शरीरनां हाडकां खडखड शब्द करतां हतां. एकदा धर्मजागरण करतां रात्रिना पाछला भागे तेणे विचार्युं के 'हवे हुं अनशन ग्रहण करुं.' पछी प्रातःकाळे श्री जिनेश्वरनी आज्ञा लइने अत्यंत हर्षपूर्वक धीमे धीमे तेओ विपुलगिरिपर चड्या. त्यां पृथ्वीशीलापट्टनुं प्रमार्जन करीने पूर्वाभिमुखे पद्मासन वाळी दर्भना संथारापर बेसीने योगमुद्राए करीने ' नमोत्थुणं ' इत्यादि भणीने बोल्या के "हे भगवन्! आप त्यां रह्या सता मने अहीं रहेलाने जुओ. प्रथम में आ-

पनी पासे पांच महाव्रत अंगीकार कर्यां छे. हवे अत्यारे पण आपनीज साक्षीए अढार पापस्थानोनुं अने चार प्रकारना आहारनुं हुं छेल्ला श्वासोश्वास सुधी प्रत्याख्यान करुं छुं." आ प्रमाणे कही सर्व पाप आलोचीने तथा प्रतिक्रमीने मृत्युने अणइच्छता सता एक मासनी संलेखना करी. प्रांते बार वर्ष सुधी चारित्रनुं पालन करी काळधर्म पामीने अच्युत देवलोकमां देवता थया; त्यां मोटुं आयुष्य भोगवी त्यांथी च्यवीने महाविदेहक्षेत्रमां मनुष्यपणुं पामी समस्त दुःखनो अंत करी सिद्धिपदने पामशे.

"चार प्रकारनुं संलीनता नामनुं शुद्ध तप धारण करीने श्री महावीरस्वामीना शिष्य स्कन्दक नामना साधु विपुल नामना पर्वत उपर मासनी संलेखना करीने अच्युत स्वर्गमां गया."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ विंशतितमस्तंभस्य
सप्ताशीत्यधिकद्विशततमः प्रबंधः ॥ २८७ ॥

व्याख्यान २८८ मुं.

हवे छ प्रकारना आभ्यंतर तपमां प्रथम प्रायश्चित्त नामना तपरूप सातमो तपाचार कहे छे.

गीतार्थादिगुणैर्युक्तं, लब्ध्वाचार्यं विवेकिना ।
प्रायश्चित्तं तपो ग्राह्यं, पापफलप्ररोधकम् ॥ १ ॥

भावार्थ—" विवेकी पुरुषे गीतार्थादिक गुणोथी युक्त एवा आचार्यने पामीने पापना फळने रोकनारुं प्रायश्चित्त नामनुं तप ग्रहण करवुं."

गीतार्थ एटले निशीथ विगेरे छेदसूत्रादिना भावार्थने जाणनार, आदि शब्दे करीने कृतयोगी (करेला छे योग जेणे) विगेरे गुणोथी युक्त मुनि जाणवा. कह्युं छे के-–

गीअत्थो कडजोगी, चारित्ती तह गाहणाकुसलो ।
खेयन्नो अविसाई, भणिओ आलोयणायरिओ ॥ १ ॥

भावार्थ—" गीतार्थ एटले समग्र सिद्धान्तना अर्थने जाणनार, कृतयोगी एटले मन वचन अने कायाना योगनो अभ्यास करनार अथवा विविध प्रकारनुं तप करनार, चारित्री एटले अतिचार रहित संयमनुं पालन करनार, तथा ग्राहणाकुशळ एटले घणी युक्तिथी आलोचना लेनारने विविध प्रकारनां प्रायश्चित्त तप ग्रहण कराववामां कुशळ, खेदज्ञ एटले सम्यक् प्रकारे प्रायश्चित्त लेतां तथा करतां जे परिश्रम थाय तेने जाणनार, अविषादी एटले प्रायश्चित्त लेनारना अनेक दोषो सांभळ्या छतां खेद नहीं पामतां उलटा प्रायश्चित्त लेनारने तेवा तेवा प्रकारनां दृष्टांतो कहेवापूर्वक वैराग्यवाळां वाक्योथी उत्साह पमाडनार. एवा प्रकारना आचार्य आलोचनाने माटे योग्य कहेला छे. "

माटे आलोयण लेनारे अवश्य गीतार्थ गुरुनी शोध करवी. कह्युं छे के—

आलोअणादिनिमित्तं, खित्तंमि सत्तजोयणसयाइं ।
काले बारसवासा, गीअत्थगवेसणं कुज्जा ॥ १ ॥

भावार्थ—" आलोचनादिक लेवा माटे क्षेत्रथी सातसो योजन सुधी अने काळथी बार वर्ष सुधी फरीने गीतार्थनी शोध करवी. "

अग्गीओ न विजाणइ, सोहिं चरणस्स देइ ऊणहिअं ।
तो अप्पाणं आलोअगं च पाडेइ संसारे ॥ २ ॥

भावार्थ—" अग्गीओ-के० अगीतार्थ आलोयण आपी जाणता नथी, तेथी ते जो चारित्र संबंधी अधिक अथवा न्यून आलोयण आपे, तो तेथी पोताने अने आलोचना लेनारने बन्नेने संसारमां पाडे. "

अखंडिअचारित्तो, वयगहणाओ हविज्ज जो निच्चं ।
तस्स सगासे दंसणवयगहणं सोहिगहणं च ॥ ३ ॥

भावार्थ—" जे हमेशां व्रत ग्रहण कर्या पछी अखंड चारित्रवाळा होय, तेनी पासे दर्शन (समकित) अने व्रतनुं ग्रहण करवुं, तथा तेनीज पासे आलोयण लेवी, अथवा अनशन आदरवुं. "

आवा प्रकारना गुरुने पामीने अवश्य प्रायश्चित्त ग्रहण करवुं. कदापि आलोचना लेवा जतां मार्गमांज आयुष्य पूर्ण थतां मृत्यु पामे तो पण तेने आराधक जाणवो. केमके पांचमा अंगमां कह्युं छे के—

आलोअणापरिणओ, सम्मं संपट्ठिओ गुरुसगासे ।
जइ अंतरावि कालं, करीज्ज जइ आराहओ तहवि ॥१॥

भावार्थ—" आलोयणापरिणत (आलोयणा लेवाने तत्पर) थयो सतो, गुरु पासे जवाने सम्यक् प्रकारे संप्रस्थित थयो होय एटले मार्गे पड्यो होय एवो मुनि कदापि मार्गमां पण काळ करे तो ते तदपि (आलोयण लीधा विना पण) आराधक छे. "

जो कदाचित् आचार्य विगेरेनी जोगवाइ न मळे तो सिद्धनी साक्षीए पण आलोयण लेवी. कह्युं छे के--

आयरिआइ सगच्छे, संभोइअ इअर गीयत्थपासत्थे ।
सारूवी पच्छाकड, देव य पडिमा अरिहसिद्धे ॥ १ ॥

भावार्थ—" स्वगच्छना आचार्यादिक, सांभोगिक, इतर, गीतार्थपासत्थ, सारूपिक, पश्चात्कृत, देव, प्रतिमा अने अर्हन्त सिद्धनी साक्षीए उत्तरोत्तर अभावे आलोचना लेवी. "

आ गाथानो विस्तारार्थ ए छे के—साधु अथवा श्रावके अवश्य प्रथम पोतानां गच्छना आचार्य पासे आलोचना लेवी. तेने अभावे उपाध्याय पासे, तेने अभावे प्रवर्तक पासे, तेने अभावे स्थविर पासे अने तेने अभावे गणावच्छेदक पासे (जे कोइ गच्छमां मोटा होय तेनी पासे) आलोचना लेवी. पोताना गच्छमां उपरना पांचेनो अभाव होय तो सांभोगिक एटले समान सामाचारीवाळा बीजा गच्छना आचार्य विगेरे पांचनी पासे अनुक्रमे एक एकना अभावे आलोचना लेवी. तेमना अभावे इतर असांभोगिक एटले जुदी सामाचारीवाळा संविग्न गच्छमां तेज क्रमे आलोचना लेवी. तेमना पण अभावे गीतार्थपासत्थ एटले गीतार्थ थया पछी पासत्था थइ गयेल होय तेनी पासे, तेना अभावे गीतार्थ सारूपिक एटले श्वेतवस्त्रधारी, मुंड, बद्धकच्छ रहित, रजोहरण रहित, ब्रह्मचर्य रहित, स्त्रीवर्जित,

भिक्षावडे भोजन करनार एवानी पासे अथवा शिखा धारण करनार अने भार्यावाळा सिद्धपुत्रनी पासे, तेना अभावे गीतार्थ पश्चात्कृत एटले गीतार्थ थया पछी चारित्रना वेषने तजीने स्त्रीवाळा थयेला गृहस्थ पासे आलोचना लेवी.

आवा पासत्थादिकने पण आलोयण लेती वखते गुरुनी जेम वंदनादिक विधि करवो; केमके धर्मनुं मूळ विनय छे. जो कदाच पासत्थादिक पोते पोताने हीन गुणवाळा समजीने वंदनादिक करवानी ना कहे, तो तेने आसन उपर बेसाडी प्रणाम मात्र करी आलोचना लेवी. जेणे चारित्रनो वेष तजी दीधो छे एवा पश्चात्कृत पासे लेतां तेने अल्प काळनुं सामायिक उच्चरावीने तथा वेष धारण करावीने पछी विधिपूर्वक आलोयणा लेवी. तेवा पासत्थादिकना पण अभावे जे उद्यानादिकमां बेसीने अर्हन्ते अने गणधरादिके घणी वार आलोचना आपी होय, अने ते जे देवताए जोयुं–सांभळ्युं होय, त्यां जइ ते सम्यग्दृष्टि देवतानी अठ्ठम विगेरे तपथी आराधना करीने तेमने प्रत्यक्ष करी तेनी पासे आलोचना लेवी. जो कदाच जेणे आलोयण सांभळेल ते देवता च्यवी गयो हशे तो तेने स्थाने उत्पन्न थयेलो बीजो देवता महाविदेहमां विचरता अरिहंतने पूछीने आलोचना आपशे. तेना पण अभावे अरिहंतनी प्रतिमा पासे आलोचीने पोते ज प्रायश्चित्त ग्रहण करवुं. तेना पण अयोगे इशान कूण तरफ मुख राखी अर्हन्त सिद्धनी समक्ष आलोचना करवी, पण आलोचना कर्या विना रहेवुं नहीं. केमके शल्य सहित रहेवाथी आराधकपणुं नष्ट थाय छे. आ विगेरे व्याख्यान व्यवहार सूत्रमां पण लखेलुं छे.

आलोचनाना अनेक गुणो छे. कह्युं छे के–

लहु आल्हाइजणणं, अप्पपरनिवत्ति अज्जवं सोही ।
दुक्करकरणं आणा, निस्सल्लत्तं च सोहिगुणा ॥ १ ॥

शब्दार्थ––" लघुता, आह्लाद उत्पन्न थवो ते, स्वपरनी निवृत्ति, आर्जव, शुद्धता, दुष्कर करवापणुं, आज्ञा अने निःशल्यत्व–ए शोधी एटले आलोयणना गुणो छे."

तात्पर्यार्थ––लघुता एटले जेम भार वहन करनारनो भार लइ लेवाथी ते लघु (हळवो) थाय, तेम हृदयमांथी शल्य नाश थवाथी आलोयण लेनारने लघुता प्राप्त थाय छे, आह्लादी जनन एटले प्रमोद (हर्ष) उत्पन्न थाय छे, स्वपरनिवृत्ति

एटले पोतानी तथा अन्यनी दोषथी निवृत्ति थाय छे. अर्थात् आलोचना लेवाथी पोताना दोषनी निवृत्ति थाय छे, एटलुंज नहीं पण तेने जोइने बीजाओ पण पोताना दोषनी आलोचना लेवा तत्पर थाय छे, तेथी बीजानी पण दोषथी निवृत्ति थाय छे, आर्जव एटले सारी रीते आलोयण लेवाथी निष्कपटता–सरलता प्राप्त थाय छे, शोधि एटले अतिचाररूप मळनो नाश थवाथी शुद्धता प्राप्त थाय छे, दुष्करकरण–दुष्कर करवापणुं थाय छे, एटले के पापकार्यनुं प्रतिसेवन ते कांइ दुष्कर नथी, ते तो अनादिकाळथी परिचित छे; परंतु कांइपण दोष थयो होय तेनी आलोचना लेवी ते दुष्कर छे; केमके आलोचनानी इच्छा तो ज्यारे मोत्तना सन्मुखभावे प्रबळ वीर्यनो उल्लास थाय त्यारेज थइ शके छे. ते विषे श्री निशीथ चूर्णिमां पण कह्युं छे के—

"तं न दुक्करं जं पडिसेविज्जई, तं दुक्करं जं सम्मं आलोइज्जइति।"

"जे (अकार्यनुं) प्रतिसेवन करवुं ते दुष्कर नथी, पण जे तेनी सम्यक् प्रकारे आलोचना लेवी ते दुष्कर छे."

आ कारणथीज आ आलोचनाने अभ्यंतर तपमां गणेल छे. सम्यग् आलोचन मासक्षपणादिक तप करतां पण दुष्कर छे. अहीं लक्ष्मणा साध्वीनुं तथा चंडकौशिकना पूर्वभवमां देडकीनी हिंसा करनार तपस्वी (मुनि) नुं दृष्टांत जाणवुं.

हवे ज्ञानादिकनी आलोचना कहे छे.

त्रिविधाशातना जाते, ज्ञानादिनां यथाक्रमम् ।
अतिचारविशुद्ध्यर्थं, सूत्रोक्तं तत्तपश्चरेत् ॥ १ ॥

भावार्थ—"ज्ञानादिकनी अनुक्रमे त्रण प्रकारनी आशातना थये सते तेना अतिचारनी विशुद्धि माटे सूत्रमां कह्या प्रमाणे तप करवुं."

जघन्य, मध्यम अने उत्कृष्ट एम त्रण प्रकारनी आशातना जाणवी. तेमां ज्ञानादिकनो अविनय थाय, त्यारे तेनुं प्रायश्चित्त लइ यथायोग्य तप करवो जोइए. जितकल्प अनुसारे "काले विणये बहुमाणे" इत्यादि आठ प्रकारना ज्ञानाचारनी देश आशातनामां एक आंबिल अने सर्वाशातनामां एक उपवास करवो; अने स्थानांग सूत्र अनुसारे जघन्य आशातनामां पुरिमड्ढ, मध्यममां एकासणुं अने

उत्कृष्टमां आंबिल करवुं. आचार्य, उपाध्याय, पुस्तक, पाटी, कंवळी, ओळीया, नवकारवाळी विगेरे दरेकनी आशातनामां जघन्यथी एक आंबिल आवे. निंदा, प्रद्वेष, मत्सर, उपहास विगेरे रूप दरेक आशातनामां एक एक उपवास आवे. इर्यावही प्रतिक्रम्या विना स्वाध्याय विगेरे करे तो एक पुरिमड्ढनुं प्रायश्चित्त आवे. पोताना प्रमादथी पुस्तकादिकनो अग्निथी दाह थयो होय, अथवा नष्ट थयां होय तो शक्ति छते ते पुस्तको फरीथी नवां लखाववां. अक्षरोने पग अडके तो नीवी आवे, ज्ञान समीप छतां (पासे होवा छतां) आहार–नीहार करवाथी नीवी आवे, थूंकवडे अक्षर काढे तो पुरिमड्ढ आवे, जपमाळा (नवकारवाळी) तुटे अथवा तेने पगनो स्पर्श थाय के खोवाय तो नीवी आवे, काळ वखते सिद्धान्त भणे गणे अथवा कोइने भणवामां अंतराय करे तो पुरिमड्ढनुं प्रायश्चित्त आवे. आ प्रमाणे जाणीने जे माणस ज्ञान संबंधी प्रायश्चित्त ग्रहण करे नहीं, आळोवे नहीं ते माणस वरदत्तना जीव वसुदेव आचार्यनी जेम अने पुस्तक पाटी विगेरेने बाळी नाखनार गुणमंजरीना जीव सुंदरीनी जेम महान दुःख पामे छे.[1]

हवे 'निस्संकिय निक्कंखिय' इत्यादि आठ प्रकारना दर्शनाचारने विषे देशशंकामां आंबिलनुं प्रायश्चित्त आवे, सर्व शंका थाय तो उपवास आवे. (आ प्रमाणे आठेमां समजी लेवुं.) स्थानांग सूत्रमां दर्शनाचारना अतिचार संबंधी जघन्यथी पुरिमड्ढ, मध्यमथी एकासणुं अने उत्कृष्टथी उपवास कहेलो छे. प्रमादथी देवगुरुने वंदना न करे तो पुरिमड्ढ, प्रतिमानी साथे वासकुंपी, धूपधाणुं विगेरे अथडाइ जाय, प्रतिमा पडी जाय, वगर धोयेला वस्त्रवडे पूजा करे तो पुरिमड्ढ अने देव, गुरु, पुस्तक, संघ, चैत्य, तप, साधु, श्रावक अने सामाचारीनी देशथी आशातना करे तो आंबिल अने सर्वाशातनामां प्रत्येके उपवास; देरासरनी अंदर तंबोळ खावुं, जळ पीवुं, भोजन करवुं इत्यादि दश प्रकारनी चैत्यनी आशातना देशथी थाय तो आंबिल, सर्वथी आशातना थाय तो उपवास; सामान्ये मिथ्यात्व क्रिया करे तो पुरिमड्ढ, उत्कृष्टथी आंबिल; अन्यतीर्थिकना देवगुरुनुं वंदन पूजन करे, श्राद्ध संवत्सरी करे, मांडला मांडे, उतार मूके इत्यादि बादर मिथ्यात्व एक वार करवाथी प्रत्येके एक एक उपवास, वारंवार तेवी करणी करे तो प्रत्येके दश दश उपवास; साधर्मिकनी साथे अप्रीति करे तो जघन्यथी एकासणुं, मध्यमथी

१ आ दृष्टांतो पूर्वे व्याख्यान २१५ मां आवी गयेलां छे.

आंबिल अने उत्कृष्टथी उपवास; स्थापनाचार्यनी पडिलेहण न करे तो पुरिमड्ढ, पडी जाय तो एकासणुं, खोवाइ जाय तो उपवास; प्रतिमानी अंगुली विगेरे पोताना प्रमादथी नष्ट थाय तो दश उपवास; सूक्ष्मपणे देवद्रव्यनो उपभोग थइ जाय तो जघन्यथी पुरिमड्ढ, मध्यमथी उपवास अने प्रमादथी वारंवार भोगमां ले तो दश उपवास, देवद्रव्य भक्षण करीने जे मनुष्य प्रायश्चित्त ग्रहण करे नहीं ते संकाश शेठ, सागर शेठ विगेरेनी जेम अनेक दुःखसंततिने पामे छे. पृथ्वीपर पडी गयेलुं पुष्प प्रमादथी प्रभुने चडावे तो आंबिलनुं प्रायश्चित्त आवे. आ प्रमाणे प्रायश्चित्त लेवाथी थोडा तपवडे शुद्धि थाय छे, अने जो गुरु पासे जइ प्रायश्चित्त न ले तो ते मातंगना पुत्रनी जेम घणुं दुःख पामे छे.

मातंगपुत्रनुं दृष्टांत.

कामरूपपट्टणमां कोइ चांडाळने घेर दांतवाळो पुत्र उत्पन्न थयो. ते जोइ तेनी माताए भय पामीने गाम बहार जइ ते पुत्रने तजी दीधो. तेवामां ते नगरनो राजा फरवा नीकळ्यो-तेणे तेने दीठो, एटले परिजन द्वारा पोताना महेलमां लइ जइ तेने उछेर्यो. अनुक्रमे ते युवावस्था पाम्यो. प्रांते राजाए तेनेज गादीपर बेसाडीने दीक्षा लीधी. ते राजर्षि अनुक्रमे ज्ञानी थया, एटले पुत्रने प्रतिबोध करवा त्यां आव्या. राजाने खबर थतां ते मोटी समृद्धिथी गुरुने वांदीने पासे बेठो. तेवामां ते चांडालनी स्त्री पण त्यां आवी गुरुने वांदीने बेठी. ते मातंगीने जोइने राजा हर्ष पाम्यो अने ते मातंगी पण राजाने जोइने हर्ष पामी. तेना रोमांच विकसित थया अने तत्काळ तेना बन्ने स्तनमांथी दूधनी धारा नीकळी. ते जोइने राजाए आश्चर्य पामी गुरुने पूछयुं के "हे स्वामी! मारा दर्शनथी आ मातंगीना स्तनमांथी दूध केम नीकळ्युं?" मुनि बोल्या के "हे राजा! आ मातंगी तारी माता छे. तेणे तने जन्मतांज गाम बहार तजी दीधो हतो, त्यांथी में लइने तारुं पालन कर्युं हतुं, अने मारे पुत्र नहीं होवाथी तने राज्य आप्युं हतुं." ते सांभळीने राजाए पूछयुं के "हे गुरु! कया कर्मथी मातंग कुळमां मारो जन्म थयो? अने कया कर्मथी मने राज्य मळ्युं?" मुनि बोल्या के "तुं पूर्व भवे श्रीमान् अने विवेकी श्रेष्ठी हतो. एकदा जिनेन्द्रनी पूजा करतां एक सुगंधी पुष्प पद्मासन उपर पडयुं. ते अति सुगंधी छे एम जाणीने तें फरीथी ते पुष्प प्रभुपर चडाव्युं. अविधिए स्नान कर्या विना ए प्रमाणे करवाथी तें मालिन्यपणानुं पापकर्म अ-

र्जित कर्युं, ते पापनी आलोचना कर्या विना मरण पामी मातंग कुळमां तुं उत्पन्न थयो, अने विधिपूर्वक पूजा करवाना पुण्यथी तुं राज्य पाम्यो." आ प्रमाणे सांभळीने तेने जातिस्मरण ज्ञान उत्पन्न थयुं, एटले तरतज तेणे राज्य तजी दइने दीक्षा लीधी. अंते समग्र दुष्कर्म आलोची प्रतिक्रमीने स्वर्गे गयो.

"सिद्धान्त, संघ अने प्रतिमानी अर्चना विगेरेमां अविवेकने लीधे जे आशातना थइ होय तेनी सद्गुरु पासे तत्काळ आलोचना लइ योग्य तप तपीने दरेक माणसे शुद्ध थवुं."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ विंशतितमस्तंभस्य
अष्टाशीत्यधिकद्विशततमः प्रबंधः ॥ २८८ ॥

व्याख्यान २८९ मु.

पांच अणुव्रत संबंधी प्रायश्चित्त विषे.

पंचाणुव्रतसंबन्ध्यतिचारशुद्धिहेतवे ।
प्रायश्चित्ततपः कार्यं, गीतार्थगुरुणोदितम् ॥ १ ॥

भावार्थ—"पांच अणुव्रत संबंधी अतिचारनी शुद्धिने माटे गीतार्थ गुरुए कहेलुं प्रायश्चित्त तप करवुं."

पांच व्रतमांहेला पहेला व्रतनी आलोचना आ प्रमाणे छे—श्रावकोने पृथ्वीकायादिक एकेन्द्रिय जीवनी विराधना घणुं करीने सामायिकने स्थाने अथवा अभिग्रहनुं उल्लंघन करतां जाणवी. तेमां पांचे स्थावरनो कारण विना संघट्ट करवाथी एक पुरिमड्ढ, तेओने थोडी पीडा करी होय तो एकासणुं, गाढ पीडा करी होय तो नीवी अने उपद्रव कर्यो होय तो आंबिल करवुं. अनन्तकायने विकलेन्द्रियनो संघट्ट करवाथी पुरिमड्ढ, अल्प पीडा करी होय तो एकासणुं, अधिक पीडा करी होय तो आंबिल अने उपद्रव कर्यो होय तो उपवास. अहंकारथी पंचेन्द्रियनो वध कर्यो होय तो दश उपवास, घणा एकेन्द्रियनो वध कर्यो होय तो

दश उपवास, गळ्या विनानुं जळ एक वार पीधुं होय तो बे उपवास, जळ गळ्या पछी तेनो संखारो थोडो ढोळायो होय तो बे उपवास, वारंवार संखारो ढोळायो होय तो दश उपवास. संखारो सूकाइ गयो होय तो दश उपवास. खारो अने मीठो (खारो ने मीठा पाणीनो) संखारो एकत्र करवामां आव्यो होय तो त्रण उपवास, गळ्या विनाना जळथी स्नान कर्युं होय अथवा तेने उनुं कर्युं होय तो त्रण उपवास, लील फूलनो संघट्ट कर्यो होय तो एक उपवास, लीलां घास उपर बेसवा के चालवाथी एक उपवास, गर्भपाते १०८ उपवास, करोळीयानां पड उखेडवाथी दश उपवास, उधइनां घर नष्ट करवाथी दश उपवास; खाळकूवामां, कीडीओना दरमां तथा पोलाणवाळी जमीनमां जळ जाय तेम स्नान करवाथी, अने उनुं जळ अथवा ओसामण विगेरे तेवे स्थाने ढोळवाथी एक उपवास; पाणी गळतां ढोळे, फाटेला गळणाथी पाणी गळे, लाकडां पुंज्या विना अग्निमां नाखे, सळेलुं धान्य खांडे, दळे, सेके, भरडे के तडके मूके, उकरडो सळगावे, क्षेत्रमां खेड करे, वासीदुं अग्निमां नाखे. कोउ नाखे. चोमासामां ढांक्या विना दिवो करे, खाटला गोदडां तडके नाखे, वासी गार लींपे, वासी छाणां थापे, चकली विगेरेना माळा भांगे, जीव जोया विना वस्त्र धुए, रात्रिए स्नान करे; घंटी, खांडणीयो, चूलो विगेरे पुंज्या विना उपयोगमां ले. भोंय खुए, इत्यादि कार्य निर्ध्वंस (निर्दय) पणे करवाथी दरेक कार्यमां जघन्ये एक उपवासनुं, मध्यमथी त्रण उपवासनुं अने उत्कृष्ट दश उपवासनुं प्रायश्चित्त आवे. सुवावड करवाथी बे अथवा त्रण उपवास, धणी स्त्रीओनी सुवावड करवाथी दश उपवास; जळो मूकाववाथी एक उपवास, कृमिना नाश माटे औषध खाधुं होय तो उत्कृष्ट दश उपवास; जळाशयमां स्नान करे, लूगडां के गोदडां विगेरे धुए तो दश उपवास, अने कांचकी विगेरेथी केश ओळीने जू लीखनी विराधना करे तो दश उपवास.

आ प्रमाणे आलोचना सांभळीने जे कोइ पापनी आलोचना न करे ते मोटुं दुःख पामे छे.

धर्मराजाए पूर्वे पोताना द्रुमकना भवमां घणा स्थावर अने अनन्तकायादिकनो वध कर्यो हतो, तेथी तेने घणुं दुःख प्राप्त थयुं हतुं. पछी तेणे ते पापनी गुरु पासे आलोचना करी, अने गुरुए कहेलुं प्रायश्चित्त अंगीकार कर्युं, तेथी तेज भवमां ते पाछो मोटो इभ्य थयो. लाखो साधर्मिकोने अन्नदान आपीने तेणे सुखी

कर्या. त्यारपछी बीजो मनुष्यजन्म पामती वखते तेना प्रभावथी बार वर्षनो दुष्काळ पडवानो हतो ते पड्यो नहीं, तेथी तेनुं धर्मराजा नाम पड्युं. आ दृष्टांत अमे सातमा व्रतमां सविस्तर आपेलुं छे. एक गोवाळे बावळनी सूइथी जूने परोवी मारी हती, तेनुं प्रायश्चित्त न करवाथी ते एकसो ने आठ भव सुधी सूळीथी मरण पाम्यो हतो. महेश्वर नामना श्रेष्ठीनी स्त्रीए एक जू मारी हती, ते जाणीने कुमारपाळ राजाए तेनुं सर्वस्व लइने तेनावडे ते जूना प्रायश्चित्त बदल यूकाविहार नामनुं चैत्य कराव्युं हतुं. श्री हरिभद्रसूरिए पोताना प्रायश्चित्तने स्थाने चौदसो ने चुंमाळीश ग्रन्थो बनाव्या छे. आ विगेरे दृष्टान्तो पोतानी मेळे जाणी लेवां.

हवे बीजा व्रतनुं प्रायश्चित्त आ प्रमाणे छे—पांच मोटा असत्य छे, ते बोलवाथी जघन्ये एक आंबिल अने उत्कृष्ट एक उपवासनुं प्रायश्चित्त. अहंकारथी असत्य बोले तो दश उपवास, कलह करतां, चाडी करतां ने खोटुं कलंक देतां एक आंबिल, धर्मनो लोप थाय एवुं बोले तो दश उपवास, श्राप[1] देवाथी अथवा हाथवती करकडा मोळवाथी एक उपवास, दुष्टपणाथी कोइने मारवानुं कहे तो दश उपवास, कोइना पर कलंक चडाववा माटे तेने व्यभिचारी कहेवो, शाकिनी[2] कहेवी अथवा कोइने निधि मळ्यो छे—ए विगेरे दोष आपवो तेथी दश उपवास. अक्षर[3], मसि (शाही[4]) अने गुप्त कहेल वातनो भेद करे तो एक आंबिल, खोटी रीते कोइनो दंड करावे तो दश उपवास. वचनद्वारा कोइने मारी नांखे तो एकसो ने एंशी उपवास. एक पखवाडिया सुधी क्रोध रहे तो एक उपवास, चार मास सुधी क्रोध रहे तो बे उपवास, वर्ष सुधी क्रोध रहे तो दश उपवास. (आ प्रमाणे प्रायश्चित्त समजवुं). एक वर्षथी वधारे मुदत क्रोध रहे तेनी आलोचना छेज नहीं. अभिचिकुमारे पोताना पिता उदायि मुनि उपर द्वेष राख्यो हतो. छेवटे मरणसमये पण तेणे उदायि विना बीजा सर्व जीवोने खमाव्या, अने उदायिपरना द्वेषनी आलोचना करी नहीं, तेथी ते अधोगामी[5] देवता थयो हतो.

असत्य वाणी बोलवाना पापनी आलोचना नहीं लेनारा रज्जा साध्वी, कुवलयप्रभसूरि अने मरिचि विगेरेनां दृष्टान्तो अहीं जाणवां.

स्थूल अदत्तादानमां प्रमादथी खोटां तोलां तथा माप राखवां, रस पदार्थमां

१ तारुं भुंडुं थजो इत्यादि बोलवुं ते श्राप. २ आ स्त्रीजाति संबंधी दोष जाणवो. डाकण कहे छे ते. ३ अक्षर फेरववो. ४ शाही बदलाववी. ५ भुवनपति व्यंतरादि.

बीजो रस भेळवी वेचवो, दाणचोरी करवी इत्यादिकमां जघन्यथी पुरिमड्ढ, मध्यमथी आंबिल अने उत्कृष्टथी उपवास. अहंकारथी ते कार्यो करे तो दश उपवास, विश्वासघात करवाथी एक उपवास. अदत्तादाननी आ प्रमाणेनी आलोयण नहीं लेनार अने अदत्त ग्रहण करवामां आसक्त धवल नामनो श्रेष्ठी श्रीपाल राजा उपर विश्वासघातनी स्पृहा राखवाथी तेज भवमां मोटी व्यथाने पाम्यो हतो; अने केसरी, रौहिणेय विगेरे चोरो चोरीनो त्याग करीने जिनेश्वरना मार्गना रागी (भक्त) थया हता.

मैथुन विरमण नामना चोथा व्रतमां प्रमादथी स्वदारा संबंधी नियमनो भंग थयो होय तो एक उपवास, वेश्या संबंधी नियमनो भंग थयो होय तो बे उपवास, अहंकारथी भंग कर्यो होय तो दश उपवास, हीन जातिनी परस्त्रीने अज्ञातपणे सेववाथी दश उपवास, जाणीने सेववाथी लाख सज्झाय सहित दश उपवास, आम नामना राजाए डुंबनी स्त्री साथे भोग करवानी इच्छा करी हती ते वात बप्पभट्टसूरिना जाणवामां आवी, तेथी राजा लज्जित थयो. पछी ब्राह्मणना कहेला प्रायश्चित्तथी राजाए तपावेली लोढानी पुतळीनुं आलिंगन करवानी इच्छा करी. ते जाणीने गुरुए राजाने शीखामण आपी के "हे राजन्! एम करवाथी पापनो क्षय थतो नथी." पछी राजाना पूछवाथी गुरुए सर्वज्ञशास्त्रने आधारे प्रायश्चित्त आप्युं. ते प्रायश्चित्त तप करवाथी राजा पाप रहित थइने गुण पाम्यो हतो. उत्तम जातिनी परस्त्रीने अजाणतां सेववाथी एक लाख ने एंशी हजार सज्झाय सहित दश उपवास, जाणीने सेववाथी १८० उपवास. तिर्यंच संबंधी नियमनो भंग थयो होय तो एक आंबिल, स्वप्नमां भंग थयो होय तो चार लोगस्स ने एक नवकारनो कायोत्सर्ग, एकसो ने आठ श्वासोश्वास प्रमाण. हस्तक्रिया करवाथी त्रण उपवास. वारंवार हस्तक्रिया करवाथी दश उपवास, परस्त्रीना हृदयनो स्पर्श करवाथी एक उपवास, ढींगला ढींगलीना विवाह करवाथी एक पुरिमड्ढ, ढींगला गुंथवाथी एकासणुं, अने तेनी क्रीडा करवाथी एक आंबिल, परस्त्रीने बळात्कारे सेववाथी एकसो एंशी उपवास, तेना पर तीव्र दृष्टिराग राखवाथी बे उपवास, अने तेनी साथे तीव्र प्रेमपूर्वक वार्तचित के हस्त विगेरेनो स्पर्श करवाथी त्रण उपवासनी आलोयण आवे छे.

रुपी नामनी राजपुत्री बाळविधवा हती. तेणे शीलसन्नाह नामना अ-

१ लाख नवकार गणवा अथवा लाख श्लोक वांचवा-संभारवा ते.

मात्य उपर दृष्टिराग कर्यो हतो. अनुक्रमे ते बन्नेए दीक्षा ग्रहण करी हती. छेवट संलेखनाने समये गुरुए घणी रीते बोध करी समजावी, तोपण रुपी साध्वीए ते दृष्टिराग संबंधी पापनी आलोचना लीधी नहीं; ते पाप गुप्त राखवाथी (दंभ करवाथी) अनन्त भवपरंपरा पामी. जो ते पापनी आलोचना लीधी होत तो थोडा तपथीज तेनी कार्यसिद्धि थात.

कुमारिका साथे भोग करवाथी अट्ठम, इत्वर परिग्रहिता (अमुक मुदत सुधी रखायत तरीके कोइए राखेल) नो समागम करवाथी बे उपवास, मैथुन संबंधी अशुभ चिंतवन करवाथी एक उपवास. श्री लक्ष्मणा नामनी साध्वीए चकलाना मैथुननी स्तुति करी हती. ते पापनी आलोयण गुरु पासे लीधी नहीं, पण पोतानी बुद्धिथीज ते पापना नाशने माटे पचास वर्ष सुधी महा उत्कट तप कर्यो, तो पण ते पाप नाश पाम्युं नहीं; उलटी अनेक भव सुधी विडंबना पामी. पण जो दंभनो त्याग करीने गुरुए आपेला प्रायश्चित्त तपथी आलोचना करी होत तो थोडा काळमांज शुद्ध थात.

पांचमा परिग्रह परिमाण नामना व्रतमां नव प्रकारना परिग्रहना नियमनो भंग थाय तो जघन्ये पुरिमड्ढ, मध्यमथी आंबिल अने उत्कृष्टे एक उपवासनी आलोयण आवे छे; दर्पथी नियमनो भंग करे तो दश उपवासनी आलोयण आवे छे. आ व्रतनुं प्रायश्चित्त तप महणसिंह नामना श्रावकनी जेम तत्काळ स्वीकारी लेवुं. साधुए पण पोताना उपकरणादिक अधिक राखवाथी तत्काळ आलोयण लेवी-ते पापने आलोववुं; नहीं तो विबुद्धसिंहसूरिनी जेम अनार्य कुळमां जन्मवुं पडे छे. ते कथा नीचे प्रमाणेः—

विबुद्धसिंहसूरिनुं दृष्टांत.

श्री विबुद्धसिंह नामना सूरि पोताना शिष्यो सहित समस्त आप्तप्रणीत धर्ममां रक्त हता. परंतु एक योगपट्ट उपर तेने घणी प्रीति थइ हती. ते योगपट्ट विना कोइ पण स्थाने तेने प्रीति उपजती नहोती. योगपट्ट एटले उभी पलांठी वाळीने केड तथा पगने साथे बांधवामां आवतुं सुतरनुं वस्त्र समजवुं. ते योगपट्ट उपरनी मूर्छा तेणे तजी नहीं. जिनेन्द्रोए तो मूर्छानेज समस्त परिग्रहनुं मूळ कारण कहेलुं छे. ते मूर्छानुं पाप तेणे मृत्यु वखते पण सम्यग् प्रकारे आलोच्युं

नहीं. तेथी ते सूरि काळ करीने अनार्य देशमां आरबना म्लेच्छ कुळमां राजपुत्र थया. त्यां तेना शरीरपर योगपट्टना आकारनुं चिन्ह थयुं. तल, लाखुं विगेरे चिन्हनी जेम ते चिन्ह जोइने सर्व माणसो विस्मय पाम्या; कारण के आवुं चिन्ह कोइ वखत जोवामां आव्युं नहोतुं, अने तेनुं कारण तो मात्र ज्ञानीज जाणे तेम हतुं. अहीं तेना शिष्योने संयम अने तपना बळथी अनुक्रमे अवधिज्ञान अने मनःपर्यवज्ञान उत्पन्न थयां. ते ज्ञानवडे 'पोताना गुरुनी शी गति थइ छे?' ते जोतां म्लेच्छ कुळमां तेमनी उत्पत्ति जाणीने ते शिष्यो विचारवा लाग्या के "अहो! धनादिक विना मात्र स्वल्प मूर्छा पण आ प्रमाणे व्रतभंगना फळने आपनारी थइ पडी, एवी मूर्छाने धिक्कार छे, तेमज तेवी मूर्छानी अनालोचनाने पण धिक्कार छे. पण हवे आपणे तेमने सर्वज्ञ धर्म पमाडवे करीने तेमनो उद्धार करी प्रत्युपकार करवो जोइए. कह्युं छे केः—

समकितदायक गुरुतणो, पच्चुवयार[1] न थाय;
भव कोडाकोडे करी, करतां सर्व उपाय. १.

स्थानांग सूत्रमां पण "तिण्हं दुप्पडियारं" त्रण वानानो प्रतिकार थइ शके नहिं, इत्यादि कहेलुं छे. एम विचारीने ते शिष्यो तुरकनी वाणी तथा अरब्ब शास्त्र भणवा लाग्या. पछी म्लेच्छ लोकोमां मान्य थाय एवो वेष धारण करीने अने पोतानो यतिवेष गोपवीने ते देश तरफ तेओए विहार कर्यो. अनुक्रमे अनार्य देश आव्यो, त्यां सर्व स्थाने निर्दोष आहारादिक मळशे नहीं, एम जाणीने ते सर्वेए मासक्षपण विगेरे तप अंगीकार कर्युं. पछी ज्यां पोताना गुरु उत्पन्न थया हता त्यां आव्या, अने कुरानमां जे जे निर्दोष विषयो हता तेनुं आलंबन करीने वैराग्यनी युक्तिथी उपदेश करवा लाग्या, तेथी तेओ घणा लोकोनी स्तुतिने योग्य थया. अनेक जनोनां मुखथी तेमनी प्रशंसा सांभळीने ते राजपुत्र पण तेमनी पासे आववा लाग्यो. ते साधुओनी वाणी सांभळीने राजपुत्रने घणो हर्ष थयो. ते कोइ कोइ वार एकलोज त्यां आवतो, अने कोइ कोइ वार परिवार सहित आवतो. मुनिओ पण एकांतमां ते राजपुत्रने पोतानो साधुवेश देखाडता हता. एकदा साधुओनी क्रिया, वेष, योगपट्टरुपी निशानी, मुनिनां वाक्य अने पोताना पूर्वभवनो वृत्तांत सांभळीने तेने जातिस्मरण थयुं; एटले तेणे विचार्युं के "अहो! मने धिक्कार

---

१ प्रत्युपकार.

छे के में योगपट्ट संबंधी प्रायश्चित्त लीधुं नहीं. तेथी हुं त्रण रत्नो (समकित, ज्ञान ने चारित्र) हारी गयो अने मात्र योगपट्टनी मूर्छाथी परमात्माना धर्मथी व्यतिरिक्त हीन जातिमां उत्पन्न थयो. आ सर्वे मारा शिष्यो छे, तेओए मारा पर घणो उपकार कर्यो छे; केमके तेओ आहारादिकनो पण त्याग करीने मारे माटे निःस्पृहपणे आवुं उग्र तप करे छे. तेमने अहीं आव्या घणा दिवसो थइ गया छे, माटे देहना आधारभूत आहारादिक विना तेओ केम रही शकशे ? माटे हुं जलदीथी मारा स्वजनोने छेतरीने एमनी साथे जइ आर्य देशनी सीमाए पहोंचीने दीक्षा ग्रहण करुं." पछी अवसर जोइने राजपुत्रे ते शिष्यो साथे आर्य देशमां आवी दीक्षा लइने पोतानो जन्म सफळ कर्यो.

" नाना छिद्रवाळुं नाव पण जेम समुद्रमां डुबी जाय छे, तेम अल्प मूर्छाथी पण सूरि अनार्य देशमां उत्पन्न थया; माटे सर्व भव्य जीवोए पापनी शुद्धि माटे आलोचना अवश्य लेवी."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ विंशतितमस्तंभस्य
एकोननवत्यधिकद्विशततमः प्रबंधः ॥ २८९ ॥

व्याख्यान २९० मुं.

गुणव्रत तथा शिक्षाव्रतना प्रायश्चित्त विषे.

त्रीणि गुणव्रतानि स्युः, सेव्यानि प्रत्यहं तथा ।
शिक्षाव्रतानि चत्वार्येषामपि तत्तपो भवेत् ॥ १ ॥

भावार्थ—" त्रण गुणव्रत अने चार शिक्षाव्रत छे, तेमनुं निरंतर सेवन करवुं. ते बन्ने प्रकारना व्रत संबंधी पण ते तप (प्रायश्चित्त तप) अतिचार आलोचनारूप कहेलो छे." ते आ प्रमाणे—

पहेला गुणव्रतमां तीर्छु जळमां ने स्थळमां अने उंचे तथा नीचे नियम

करतां अधिक गमन थाय तो जघन्यथी एक आंबिलनुं प्रायश्चित्त समजवुं.

बीजा गुणव्रतमां अजाणतां मद्य मांस उपभोगमां आवे तो त्रण उपवास, अने दर्पथी अथवा आकुटीथी मद्य मांस वापरवामां आवे तो दश उपवास. गुणी माणसे मद्यमांसना स्वादनी इच्छा मात्र पण करवी नहीं. कदाच इच्छा थइ जाय तो तेनी पण अवश्य आलोचना लेवी. एकदा श्रीकुमारपाळ राजाने कांइक सूकुं घेबर खातां दाढ मध्ये 'करड' 'करड' शब्द थयो; तेथी प्रथम भक्षण करेला मांसनुं स्मरण थइ आव्युं. तेणे तरतज विचार्युं के " अहो ! में अयोग्य ध्यान कर्युं. " पछी तेना प्रायश्चित्त माटे पोताना सर्व दांत पाडी नांखवा तैयार थइ गया. मंत्रीए तेम करतां अटकावीने ते वृत्तान्त गुरुने जणाव्यो. गुरुए लाभ जोइने तेना प्रायश्चित्तने ठेकाणे एक हजार ने चोवीश स्तंभवाळुं आरस पत्थरनुं चैत्य कराववानो उपदेश आप्यो.

कोइवार अनाभोगे माखण खावामां आव्युं होय तो एक उपवास. जाणीने (आकुटीथी) भक्षण करे तो त्रण उपवास. अनन्तकायनुं एकवार अनाभोगे भक्षण करवाथी एक उपवास, अने जाणीने भक्षण करवाथी त्रण उपवास. कोही गयेली वनस्पतिना भक्षणथी एक आंबिल, बोळ अथाणुं भक्षण करवाथी तथा टाढा दूध, दहीं अने छाशमां द्विदळ खावाथी अने सोळ प्रहर उपरांतनुं दहीं भक्षण करवाथी तेमज बावीशे अभक्षना भक्षणथी एक एक उपवास. मधना भक्षणमां तेनो नियम छतां भंग थाय तो बे उपवास, नियम न होय अने मधनुं भक्षण करे तो एक उपवास. चौद नियमनो भंग थाय तो जघन्यथी एक पुरिमड्ढ, अने उत्कर्षथी एक उपवास. सूक्ष्म कर्मादानमां बे उपवास अने लुहारनो, वाडी वाववानो (माळीनो), रथ (गाडां विगेरे) घडवानो धंधो करवाथी तथा लाख, गळी, मणशील, धावडी, साबु, भांग, चार महा विगय, पशु पक्षीनां अंगोपांग छेदन, अफीण, हळ अने हथियार विगेरेनो वेपार करवाथी दश उपवास. विष आपीने अथवा अपावीने पछीथी तेनुं निवारण कर्युं होय तो दश उपवास, पण निवारण कर्युं न होय तो एकसो ने ऍंशी उपवास. सुइ बनाववाथी एक आंबेल. छरी बनाववाथी त्रण उपवास.

हथियारनो वेपारज राजीया श्रावकनी जेम श्रावके निषेधवो (न करवो). तेनी कथा एवी छे के " खंभातमां तपगच्छी राजीया अने वजीया नामना बे भा-

इओ रहेता हता. तेने घणा दूर देशथी जळमार्गे वहाणो आव्यां. तेमां तरवार, छरी, कटारी, सुडी, दातरडां, तीर, बंदुक, पीस्तोल अने बरछी विगेरे लोढानां बनावेलां घणां हथियारो मोटी किंमतवाळां हतां. ते जोइने तेणे विचार्युं के 'आ हथियारोथी परंपराए अनेक जीवोनी हिंसा थशे, माटे ते सर्वेने भांगीने झीणो चूरो करी खाडो खोदी दाटी देवां जोइए.' आ प्रमाणे विचारीने तेणे पोताना सेवकोने हथियारोने तेवी रीते दाटी देवानो हुकम कर्यो. सेवकोए घणो धननो लाभ देखाड्यो, तोपण तेमणे तेमनुं कहेवुं कबूल राख्युं नहीं."

रात्रीभोजनना नियमनो भंग थाय तो त्रण उपवास. रात्रीए बीजाने पीरसे तो एक पुरिमड्ढ, अने वारंवार तेम करे तो दश उपवास. अजाणतां लगभग वेळाए जमवाथी एक आंबिल. प्रभाते झल झांखल समये खाय तो एक आंबिल. साधुओने तो सर्वथा जीवितपर्यन्त रात्रीभोजननो निषेध करेलो होय छे, तेथी तेमणे तो तेनी इच्छा मात्र पण करवी नहीं. केमके इच्छा करवाथी पण मोटो दोष लागे छे. ते उपर दृष्टांत कहे छे—

श्रीपुर नामना नगरमां धनेश्वर नामना सूरि चातुर्मास रह्या हता. तेमनामां उपवास करवानी शक्ति नहोती. अन्यदा पर्यूषण पर्व आवतां बीजा साधुओ तथा श्रावको छठ, अट्ठम विगेरे तप करवा लाग्या. ते वखते सूरिए विचार्युं के "हुं उपवास करी शकतो नथी, तो पण आजे तो उपवास करुं." एम विचारीने तेणे प्रथम पोरसीनुं पच्चक्खाण कर्युं, पछी पुरिमड्ढनुं कर्युं, पछी अवड्ढनुं कर्युं, एम वधतुं वधतुं पच्चक्खाण करवा लाग्या. बीजा साधुओए गुरुने कह्युं के "अमे आहार लइ आवीए, तमे पच्चखाण पारो." गुरु बोल्या के "आजे तो उपवासज छे." पछी सायंकाळनुं प्रतिक्रमण कर्युं. संथारानी विधि भणीने संथारो कर्यो, पण भूखने लीधे तेमने निद्रा आवी नहीं. मध्यरात्रिए गुरु बोल्या के "हे मुनिओ! असुर थयुं छे, माटे अन्न लइ आवो." साधुओ बोल्या के "हजु तो मध्यरात्रिनो समय छे, सूर्योदय थयो नथी, शंख वगाडनारे हजु शंख पण वगाड्यो नथी, कुकडाओ पण बोलता नथी. आपेज अमोने शीखव्युं छे के 'रात्रीभोजनथी मूळ गुणनी हानि थाय छे' माटे आ वखते भिक्षा लेवा जवुं योग्य नथी. लोको पण हजु सुता छे." ते सांभळीने सूरि बोल्या के "हे शिष्यो! शंख पोताना पिता समुद्रने मळवा गयो छे, सूर्यनो रथ भांगी गयो छे, अने कुकडा पण उडीने

बीजे ठेकाणे आकाशमां गया छे. कह्युं छे के—

" उयहिं सरेविण शंख गय, कुक्कुड गया नहंसि ।
रह भग्गो सूरय तणो, तेण न विहाइ रत्ति " ॥ १ ॥

भावार्थ—" शंख समुद्रने मळवा गयो छे, कुकडा आकाशमां गया छे, अने सूर्यनो रथ भांगी गयो छे, तेथी रात्री वीती गइ जणाती नथी."

आ प्रमाणे सांभळीने साधुओ बोल्या के " आप जे कहो छो ते सत्य छे, पण क्षुधातुर माणसो शुं शुं करता नथी ? जुओ !

पंच नश्यन्ति पद्माक्षि, क्षुधार्तस्य न संशयः ।
तेजो लज्जा मतिर्ज्ञानं मदनश्चापि पंचमः ॥ १ ॥

भावार्थ—" हे कमळना सरखा नेत्रवाळी स्त्री ! क्षुधातुर माणसनुं तेज, लज्जा, बुद्धि, ज्ञान अने पांचमो कामदेव-ए पांचे वानां नाश पामे छे, एमां कांइ संदेह नथी."

ते सांभळीने सूरि बोल्या के " में क्षुधानी पीडाथी आवुं जल्पन कर्युं छे, तेथी मने तेनो मिथ्यादुष्कृत हो." ए प्रमाणे निष्कपटपणे सर्वेनी समक्ष पोतानुं पाप आलोचीने सूरिए चित्त दृढ कर्युं. पछी प्रातःकाळे पण पोरिसीनुं पच्चख्काण करीने त्यार पछी पारणुं कर्युं."

त्रीजा गुणव्रतनी आलोचना आ प्रमाणे छे-शत्रुनो घात, राजापणानी प्राप्ति, गामनो घात, अग्नि लगाडवानी वृत्ति अने हुं विद्याधर थाउं तो ठीक एवी इच्छा इत्यादि दुर्ध्यान कर्युं होय, " बळदोने दमन करो, खेतर खेडो, घोडाओने केळवो, गाडां हांको " इत्यादि पापकर्मनो उपदेश कर्यो होय तो जघन्यथी एक उपवास, अने अहंकारथी तेम कर्युं होय तो दश उपवास. ढंढण ऋषिनो जीव जे पूर्व भवे पुरोहित हतो, तेणे पोताना खेतरमां ५०० हळवडे एकेक चास वधारे खेडाव्यो हतो अने तेथी दोढ हजार[1] प्राणीओने भोजननो अंतराय थयो हतो, ते पापनी आलोचना करी नहीं, तेथी मुनिना भवमां तेमने छ महिने निर्दोष आहार मळ्यो हतो.

१ पांचसें हळ खेडनारा १०५० बळद ने तेने हांकनारा ५०० माणसो.

हळ, यंत्र, उखळ (खांडणीयो), मुशळ (सांबेलुं), घंटी, घाणी विगेरे हिंसा थाय तेवी वस्तु आपवाथी तथा जिनचैत्यमां विलासादिक करवाथी जघन्ये एक उपवास अने दर्पथी करे तो दश उपवास. कामण, वशीकरण विगेरे करवाथी दश उपवास. सरोवर, द्रह, तळाव विगेरे जळाशयोनुं शोषण करावचाथी अने दावानळ लगाडवाथी दश उपवास. कोइ स्थानके एकसो ने आठ उपवास पण कहेला छे.

पहेला शिक्षाव्रतमां सामायिक करवानो नियम होय अने न करे तो एक उपवास गंठि सहित, सामायिकनो भंग थयो होय तो एक नीवी, पर्वतिथिए आरंभनी जयणा न करे तो एक पुरिमड्ढ, सामायिकमां बादर अप्काय पृथ्वीकाय अने तेजस्कायनो स्पर्श थाय तो एक आंबिल, सामायिकमां भीना वस्त्रनो स्पर्श थाय तो एक पुरिमड्ढ, लीलां तृणादिक तथा बीजादिकनुं मर्दन करे तो एक आंबिल, पुरुषने स्त्रीनो स्पर्श थाय अथवा स्त्रीने पुरुषनो स्पर्श थाय तो एक आंबिल, आंतरा पूर्वक स्पर्श थाय तो एक नीवी, तेमना वस्त्र विगेरेनो स्पर्श थाय तो एक पुरिमड्ढ, सुतां सुतां राजकथा करे तो एक पुरिमड्ढ, साधुने स्त्रीनो स्पर्श थाय तो जघन्यथी एक पुरिमड्ढ, मध्यम एकासणुं अने उत्कृष्ट एक आंबिल, सर्व अंगनो स्पर्श थयो होय तो दश उपवासनी आलोयण आवे छे. सावद्य सूरिए साध्वीना वस्त्रनो संघट्ट थया छतां ते पापनी आलोचना करी नहीं, तेथी ते अनन्त दुःख पाम्या; माटे तत्काळ तेनी आलोचना करवी के जेथी अल्प तपवडे ते कर्मथी निवृत्ति थाय.

देशावकाशिक नामना दशमा व्रतनो भंग थाय अथवा तेमां अतिचार लागे तो एक आंबिलनी आलोयण आवे छे. काकजंघ राजानी जेम अवश्य एनुं प्रायश्चित्त लइ लेवुं.

अगियारमा व्रतमां लीधेला नियमनो भंग करे अथवा बराबर नियम पाळे नहीं तो एक उपवास, अने अतिचार लागे तो एक आंबिल. तेमज आवस्सही निस्सिही बराबर न कहे, उच्चार अने प्रस्रवणनी भूमिने न प्रमार्जे, प्रमार्ज्या विना कांइ पण वस्तु ग्रहण करे, अविधिए बारणां उघाडे अथवा बंध करे, शरीरने प्रमार्ज्या विना खजवाळे, भींत पुंज्या विना तेने अठींगीने बेसे, गमनागमन न आळोवे, वसतिने प्रमार्ज्या विना सज्झाय करे, केवळ कामळीज पहेरे, जळ, अग्नि, विजळी अने पृथ्वीकायनो संघट्ट करे, इत्यादिकना प्रायश्चित्त बदल प्रत्येके

जघन्यथी पण नीवीनी आलोयण आवे छे. काजो उद्धरे नहीं अथवा बेठा बेठा प्रतिक्रमण करे तो जघन्ये एक पुरिमड्ढ, अने उत्कृष्ट एकासणुं. पौषधमां वमन थयुं होय, कारण विना दिवसे शयन कर्युं होय अने जम्या पछी वांदणां न दीधां होय तो प्रत्येके एक एक आंबिल. मुखवस्त्रिकाना संघट्टमां एक नीवी, मुखवस्त्रिका खोवाइ गइ होय तो एक उपवास, रजोहरणना संघट्टमां एक आंबिल अने रजोहरण खोवाइ जाय तो एक अट्ठम. आ प्रमाणे पौषधनी आलोचना सांभळीने भव्य जीवोए उनाळानी ऋतुमां तृषाथी पीडाया छतां पण जळनी इच्छा मात्र करवी नहीं. कदाच इच्छा उत्पन्न थइ जाय तो तत्काळ तेनी आलोचना लेवी, नहीं तो नंद मणिकार श्रावकनी जेम मोटुं दुःख प्राप्त थाय छे.

अतिथि संविभागनो नियम लीधो होय तो ते नियम न पाळवाथी अथवा भांगवाथी एक उपवास, अने तेना अतिचारमां एक आंबिल. साधुने अशुद्ध आहार आपीने तेनी आलोचना न करे तो ते नागश्री विगेरेनी जेम भवपरंपराने पामे छे, माटे कदाचित् मुनिने अयोग्य आहार अपायो होय तो तेनी तरतज आलोयण लेवी (प्रायश्चित्त ग्रहण करवुं). तपस्वी साधुने देराना चोखानी रांधेली खीर वहोरावनार श्रीमंत श्रावकनी जेम.

हवे प्रसंगोपात बीजां पण केटलाक प्रायश्चित्त कहे छे.

आपघात करवानुं चिंतवन कर्युं होय तो एक उपवास, नियाणुं करे तो एक उपवास, कदाच नियाणुं कर्युं होय तो तरतज तेनी आलोचना लइ लेवी. द्रौपदीना जीवे सुकुमालिकाना भवमां पांच पुरुषोथी सेवाती एक वेश्याने जोइने नियाणुं कर्युं हतुं, ते पापनी आलोचना करी नहीं तो तेथी अनेक प्रकारनी व्यथाने पामी हती.

गर्भवती स्त्रीने आठ मास थाय त्यां सुधी साधुए तेना हाथथी आहार ग्रहण करवो; जो नवमे मासे ग्रहण करे तो तेने एक आंबिलनुं प्रायश्चित्त आवे. एकासणा विगेरे तपनो भंग थयो होय तो तेना प्रायश्चित्तमां तेज (एकासणुं विगेरे) तप आपवो, अथवा ते तपनो जेटलो स्वाध्याय होय ते आपवो.× आ प्रमाणे आलोचनानुं वर्णन आचार्य महाराजे कहेलुं छे. ते सांभळ्या छतां पण जे तेनो आदर न करे ते हीन गतिने प्राप्त थाय छे.

× एक उपवासना बदलामां २००० स्वाध्याय अपाय छे ते प्रमाणे समजी लेवुं.

एकदा राजगृही नगरीमां श्री वीरस्वामीने वांदीने श्रेणिक राजा सहित सर्व सभा बेठी हती, ते वखते चमरेन्द्रनी अग्रमहिषी काली नामनी देवी सर्व ऋद्धि सहित प्रभु पासे आवी नमीने सूर्याभदेवनी जेम नृत्य करी पोताने स्थाने गइ. पछी ते देवीना पूर्वभवनुं वृत्तांत गौतमस्वामीए प्रभुने पूछयुं, एटले भगवान् बोल्या के " आमलकल्प नगरमां काळ नामना गृहस्थनी पुत्री काळी नामे कूमारिका हती. तेणे माबापनी रजा लइने श्री पार्श्वनाथ स्वामी पासे दीक्षा लीधी. प्रभुए तेने पुष्पचूला नामनी साध्वीने शिष्या तरीके सोंपी. पछी ते काळी साध्वी तेमनी पासे सामायिक विगेरे अगियार अंगनुं अध्ययन करीने संयम तपवडे पोताना आत्माने भाववा लागी. अन्यदा ते काळी साध्वी मल परिषह सहन करवाने असमर्थ थइ सती हाथ, पग, मुख, मस्तक, स्तनांतर, कक्षांतर, गुह्यांतर विगेरे अवयवो जळथी धोवा लागी, अने जे ठेकाणे बेसीने स्वाध्याय करे त्यां प्रथम जळवडे पृथ्वीने शुद्ध करवा लागी. ते सर्व जोइने महत्तराए तेने शीखामण आपी के " साधु साध्वीने देहादिकनी जळवडे शुद्धि करवी घटती नथी, माटे तेनुं तुं प्रायश्चित्त ले. " ते सांभळीने काळी साध्वी मौन रही सती विचारवा लागी के " मारे आवी रीते पराधीनपणे अहीं रहेवुं योग्य नथी. " पछी ते जूदा उपाश्रयमां जइने रही. त्यां अंकुश रहित थवाथी स्वच्छंदपणे जळवडे अंगनी शुद्धि करवा लागी. ए प्रमाणे घणां वर्षो सुधी चारित्रनुं पालन करीने अंते ते पापनी आलोचना प्रतिक्रमण कर्या विना पंदर दिवसना अनशनथी काळ करीने अढी पल्योपमना आयुष्यवाळी असुरकुमार निकायमां देवी थइ छे; त्यांथी च्यवीने महाविदेह क्षेत्रमां उत्पन्न थइ सिद्धिपदने पामशे.

" छेदसूत्र विगेरे शास्त्रोमां बहुश्रुत आचार्योए अनेक विचारथी गर्भित आ प्रायश्चित्त तपनुं वर्णन करेलुं छे, तेथी ते तपनो तात्कालिक स्वीकार करीने पापनी आलोचना लेवी, पण शुभने इच्छनारा पुरुषोए श्रुतथी व्यतिरिक्त कांइ पण बोलवुं नहीं. "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ विंशतितमस्तंभस्य नवत्यधिकद्विशततमः प्रबंधः ॥ २९० ॥

व्याख्यान २९१ मु.

धर्मकर्ममां दंभनो त्याग करवा विषे.

दंभतो नन्वयत्नेन, तपोऽनुष्ठानमादृतम् ।
तत्सर्वं निष्फलं ज्ञेयमूषरक्षेत्रवर्षणम् ॥ १ ॥

भावार्थ—" तप अनुष्ठानादि निश्चये जो अयतनावडे अने दंभथी करवामां आवे तो ते सर्व उखर जमीनमां वृष्टिनी जेम निष्फळ जाणवां. " ते उपर सुज्ञसिरिनी कथा छे ते आ प्रमाणे—

सुज्ञसिरिनी कथा.

अवन्ति नगरी पासे शंबुक नामना खेटने विषे सुज्ञशिव नामे एक ब्राह्मण रहेतो हतो. ते दरिद्री अने निर्दय हतो. तेनी स्त्री यज्ञयशा अन्यदा गर्भवती थइ. प्रसूतिसमये प्रसवनी वेदनाथी ते मरी गइ. तेणे एक कन्याने जन्म आप्यो हतो. तेनुं नाम सुज्ञसिरि राख्युं हतुं. आ सुज्ञसिरिनो जीव पूर्व भवे कोइ राजानी राणी हतो. ते राणीए पोतानी शोकना पुत्रने मारी नांखवानो विचार कर्यो हतो, तेथी आ भवे तेनी माता जन्मतांज मृत्यु पामी. अनुक्रमे ते पुत्री आठ वर्षनी थइ तेवामां बार वर्षनो दुष्काळ पड्यो; एटले आजीविका माटे ते सुज्ञशिव ब्राह्मण पुत्रीने लइने परदेश चाल्यो. मार्गे जतां कोइ गाममां गोविंद नामे एक ब्राह्मण रहेतो हतो. तेने घेर तेणे सुज्ञसिरि वेची. अनुक्रमे ते गोविंद पण निर्धन थयो. एकदा तेने घेर तेणे कोइ महियारी गोरस वेचवा आवी. तेनी पासेथी गोविंदनी स्त्रीए चोखाने बदले गोरस लीधुं. अने चोखा लाववाने माटे सुज्ञसिरिने घरमां मोकली. ते घरमां जइ आम तेम जोइने पाछी आवी अने बोली के ' चोखा क्यां छे ? में तो क्यांइ जोया नहीं. ' ते सांभळीने गोविंदनी स्त्री पोते घरमां गइ, तो घरना एक खुणामां तेना मोटा पुत्रने कोइ वेश्या साथे क्रीडा करतां जोयो. ते पुत्रे तेने आवती जोइने तिरस्कार कर्यो, तेथी ते मूर्छा पामी गइ. गोविंदने तेनी खबर पडतां तेणे शीत उपचारथी तेने सज्ज करी. एटले ते स्त्रीने जातिस्मरण ज्ञान थवाथी तेणे पोतानो पूर्वभव जाणीने कही बताव्यो. ते सांभळीने गोविंदे पोतानी स्त्री सहित दीक्षा ग्रहण करी.

आ समये श्री गौतमस्वामीए श्री महावीरस्वामीने प्रणाम करीने पूछयुं के " हे भगवंत ! तेणे पोतानो पूर्वभव शो कही बताव्यो के जेथी गोविंदने पण वैराग्य उपज्यो ? " एटले भगवान बोल्या के " ते स्त्रीए लाख भव उपर दंभ कर्यो हतो. पूर्वे ते क्षितिप्रतिष्ठ नगरना राजानी रुपी नामनी पुत्री हती. ते पुत्रीनुं पाणिग्रहण थयुं के तरतज तेनो पति मृत्यु पाम्यो; एटले ते रुपी विधवा थवाथी तेणे शीलना रक्षण माटे चितामां प्रवेश करवा पोताना पितानी रजा मागी. राजाए कह्युं के " हे पुत्री ! चितामां प्रवेश करवाथी पतंगना मृत्युनी जेम निष्फळ मरवापणुं छे, तेथी तुं ते वात छोडी दइने जैनधर्ममां रक्त थइ शीलव्रतनुं पालन कर. " ते सांभळीने रुपीए भावथी शील अंगीकार कर्युं. अन्यदा ते राजा पुत्र रहित मरण पाम्यो, एटले प्रधानोए ते पुत्रीनेज गादीपर बेसाडी, अने तेने रुपीराजाना नामथी बोलाववा लाग्या. अनुक्रमे रुपी युवावस्था पामी. तेना गात्रमां कामदेवे प्रवेश कर्यो. एकदा सभाने विषे शीलसन्नाह नामनो मंत्री बेठो हतो तेनी सामुं रुपीए सराग दृष्टिए जोयुं. ते मंत्रीए पण तेना चित्तनो अभिप्राय जाणी लीधो; एटले शीलभंगथी भीरु मंत्री गुप्त रीते नगरनी बहार नीकळी गयो अने विचारसार नामना कोइ बीजा राजानो सेवक थइने रह्यो. एकदा ते राजाए मंत्रीने पूछयुं के " तें प्रथम जे राजानी सेवा करी हती तेनुं नाम तथा तारुं कुळ, जाति, नगर विगेरे कहे. " मंत्रीए कह्युं के " में जे राजानी प्रथम सेवा करी हती तेनी आ मुद्रा जुओ. बाकी तेनुं नाम तो भोजन कर्या पहेलां लेवुं योग्य नथी; केमके जो भोजन अगाउ तेनुं नाम लेवामां आवे तो ते दिवस अन्न विनानो जाय छे. " ते सांभळीने राजा विस्मय पाम्यो, एटले तरतज सभामां भोजनसामग्री मंगावी, हाथमां कवळ लइने मंत्रीने कह्युं के " हवे ते राजानुं नाम ले. " ज्यारे मंत्रीए ' रुपीराजा ' ए प्रमाणे नाम कह्युं के तरतज " शत्रुराजाए आपना नगरने घेरो घाल्यो छे " ए वाक्य राजाए सांभळ्युं. तत्काळ कवळ नाखी दइने राजा युद्ध करवा गयो. परस्पर मोटुं युद्ध चाल्युं. ते वखते युद्धनुं निवारण करवा माटे शीलसन्नाह पण त्यां गयो. तेने मारवा माटे शत्रुना सुभटो तेनी सन्मुख आव्या. तेमने शासनदेवीए स्तंभित कर्या, अने आकाशवाणी करी के 'नमोऽस्तु शीलसन्नाहाय ब्रह्मचर्यरक्ताय' "ब्रह्मचर्यमां आसक्त एवा शीलसन्नाहने नमस्कार छे" एम बोलीने देवताओए शीलसन्नाह उपर पुष्पनी वृष्टि करी. शीलसन्नाह ते वाक्य सांभळीने विचार करवा

लाग्यो, एटले तरतज तेने जातिस्मरण थयुं, अने अवधिज्ञान पण प्राप्त थयुं. तत्काळ तेणे पंचमुष्टि लोच करी चारित्र अंगीकार कर्युं. पछी ते मुनिना उपदेशथी ते बन्ने राजाओ बोध पामी युद्धथी निवृत्त थया. पूर्वभवमां शीलसन्नाह मुनि सावद्य वचन बोल्या हता, तेथी तेना प्रायश्चित्त माटे तेणे मौनव्रत[1] धारण कर्युं.

अंते ते मुनि चारित्र पाळीने प्रथम देवलोकमां देवता थया, अने त्यांथी च्यवीने ए शीलसन्नाह स्वयंबुद्ध मुनि थया छे.[2]

शीलसन्नाह मुनि विहार करतां करतां एकदा रुपी राजाना नगरनी बहार उद्यानमां आव्या. तेने वांदवा माटे रुपी राजा सामन्तादिक सहित उद्यानमां आव्यो. त्यां गुरुनी देशना सांभळीने रुपीराजाए दीक्षा ग्रहण करी. अनुक्रमे शीलसन्नाह मुनि समेतशिखर गया. त्यां जिनेश्वरोने वंदना करीने एक शिलापट्ट उपर संथारो करी संलेखना करवा तैयार थया. ते वखते रुपी साध्वी बोल्या के "हे गुरु ! मने पण संलेखना करावो." गुरु बोल्या के "भवसंबंधी सर्व पापोनी आलोचना लइने शल्य रहित थया पछी इच्छित कार्य करो; केमके ज्यांसुधी शल्य गयुं न होय त्यांसुधी बहु भवभ्रमण करवुं पडे छे. जेम कोइक राजाना अश्वना पगमां खीलो वाग्यो हतो, तेनो नानो सरखो ककडो अंदर भराइ रह्यो हतो, तेथी ते अश्व अति कृश थवा लाग्यो. राजाए तेने माटे अनेक उपचारो कर्या पण ते निष्फळ गया. पछी एक कुशळ पुरुषे ते अश्वना आखा शरीरे आछो आछो कादव चोपड्यो एटले जे ठेकाणे शल्य हतुं ते भाग उपसी आव्यो. ते जोइने ते पुरुषे तेमांथी नखहरणीवती[3] ते शल्य काढी नाख्युं, एटले ते अश्व स्वस्थ थयो. वळी हे साध्वी ! एक तापस हतो. तेणे एकदा अजाण्युं फळ खाधुं, तेथी ते रोगग्रस्त थयो. पछी दवा माटे ते वैद्य पासे गयो. वैद्ये शुं खाधुं छे ? एम पूछ्युं त्यारे तापसे सत्य वात कही दीधी; तेथी ते वैद्ये तेने वमन तथा विरेचन आपीने साजो कर्यो." आ प्रमाणे सांभळीने ते रुपी साध्वीए मात्र एक दृष्टिविकार [शिलसन्नाह सामुं विकार दृष्टिए जोयुं हतुं ते] विना बीजां सर्व पापनी आलोचना लीधी. गुरुए कह्युं के "प्रथम सभामां तें मारी सामुं सराग दृष्टिए जोयुं हतुं तेनी आलोचना कर." ते बोली के "ते तो में सहज निर्दंभपणे जोयुं

१ धर्मदेशनादि शुभ निमित्त विना न बोलवुं ए प्रमाणेनुं मौनव्रत जाणवुं. २ आ हकीकत शीलसन्नाहना भवना प्रांत भागनी छे, ते वच्चे लखवामां आवी छे ३ भाषामां 'नेरणी' कहेवामां आवे छे.

हतुं. " ते सांभळीने गुरुए तेने उपदेश आपवा माटे लक्ष्मणा राजपुत्रीनुं दृष्टांत कही संभळाव्युं के—

" गइ उत्सर्पिणीमां क्षितिप्रतिष्ठ नामना नगरने विषे जंबुदाडिम नामना राजानी लक्ष्मणा नामे युवान पुत्री हती. ते स्वयंवरमंडपमां एक योग्य पतिने वरी. तेना पाणिग्रहण वखते चोरीमांज तेनो पति अकस्मात् मरण पाम्यो; तेथी लक्ष्मणा अति दुःखथी विलाप करवा लागी. तेना पिताए तेने शिखामण आपी के " हे पुत्री ! कर्मनी विचित्र गति छे, माटे विलाप करवाथी शुं फळ छे ? तेथी तुं जीवित पर्यंत शीलनुं पालन कर." इत्यादि कहीने राजाए तेने शांत करी. एकदा श्री जिनेश्वर ते राजाना उद्यानमां समवसर्या. भगवाननी देशनाथी बोध पामीने राजाए पुत्री सहित दीक्षा ग्रहण करी. लक्ष्मणा साध्वी पोतानी गुरुणी [प्रवर्त्तिनी] पासे रहीने संयम पाळवा लागी. एकदा गुरुणीजी (महत्तरा) ना कहेवाथी ते वसति शोधवा गइ. त्यां चकलाना मिथुनने चुंबनादि पूर्वक कामक्रीडा करतुं जोइने तेणे विचार्युं के " पतिथी वियोग पामेली मने धिक्कार छे ! अहो ! आ पक्षीओ पण प्रशंसा करवा लायक छे के जेओ साथे रहीने निरंतर क्रीडा करे छे. अहो ! श्री जिनेश्वरोए आनो सर्वथा निषेध केम कर्यो हशे ? जरुर श्री जिनेन्द्रो अवेदी होवाथी वेदोदयना विपाकथी अजाण्या होवा जोइए. " आवा विचारथी तेणे जिनेश्वरमां अज्ञानदोष प्रगट कर्यो अने दांपत्यसुखनी प्रशंसा करी. पछी तरतज पोतानुं साध्वीपणुं याद आववाथी ते पोताने निंदवा लागी के "अरेरे ! में मारुं व्रत फोगट खंडित कर्युं ! आ पापनुं प्रायश्चित्त गुरु पासे जइने लउं." एम निर्णय करतां वळी विचार आव्यो के " हुं बाल्यावस्थाथीज शीलव्रतने पाळनारी राजपुत्री छुं, तथा सर्व लोकनी समक्ष आ निंदवा लायक दुष्कर्मनुं शी रीते प्रायश्चित्त लइ शकुं ! तेम करवाथी तो मारी आजसुधीनी जे शीळप्रशंसा छे ते नष्ट थाय, माटे अन्यनी साक्षीनुं शुं काम छे ? आत्मानी साक्षीए जे करवुं तेज प्रमाण छे." इत्यादि विचार करीने ते साध्वीए गुरु पासे प्रायश्चित्त लीधा शिवाय पोतानी मेळेज प्रायश्चित्त तरीके छठ्ठ, अठ्ठम, दशम, आंबिल, नीवी विगेरे अनेक तपस्याओ चौद वर्ष पर्यंत करी; सोळ वर्ष सुधी मासक्षपण कर्या अने वीश वर्ष सुधी सतत् आंबिल कर्या. एकदा तेणे विचार्युं के " में आटली बधी तपस्या करी, पण तेनुं साक्षात् फळ तो में कांइ पण जोयुं नहीं, " इत्यादि

आर्तध्यान करतां ते मृत्यु पामीने एक वेश्याने घेर अति रुपवती दासी थइ. तेनुं रुप जोइने सर्व कामी पुरुषो तेनेज इच्छवा लाग्या. पोतानी पुत्रीने जोयां छतां पण तेनी कोइ इच्छा करतुं नथी, एम जोइने अक्का रोष पामीने विचारवा लागी के "आ रुपवती दासीनां कान, नाक अने होठ कापी नांखवा योग्य छे." तेज रात्रिए कोइ व्यंतर देवताए ते दासीने उंघमां अक्काना विचारनुं स्वप्न आप्युं, तेथी भय पामीने ते दासी प्रातःकाळे त्यांथी भागी. भमतां भमतां छ मास व्यतीत थया त्यारे कोइ गृहस्थना पुत्रे तेने पोताना घरमां राखी. एकदा ते श्रेष्ठीनी पत्नीने इर्ष्या आववाथी तेणे क्रोधवडे ते दासी उंघी गइ हती त्यारे तेना गुह्यस्थानमां लोढानी कोश नांखी, तेथी ते दासी मृत्यु पामी. शेठाणीए तेना शरीरना टुकडे टुकडा करीने गीध विगेरे पक्षीओने खवरावी दीधा. श्रेष्ठीए ते वृत्तांत जाण्युं एटले वैराग्य पामीने तरतज चारित्र लीधुं. ते दासी घणा भवमां भ्रमण करीने नरदेव (चक्रवर्ती) नुं स्त्रीरत्न थइ, त्यांथी मरीने छठ्ठी नरकमां गइ, त्यांथी श्वानयोनिमां उपजी. अनेक वार मरण पामीने निर्धन ब्राह्मणपणुं पामी. पछी अनुक्रमे व्यन्तरपणुं, ब्राह्मणपणुं, नरके गमन, सात भव सुधी पाडो, मनुष्य, माछली अने अनार्य देशमां स्त्रीपणुं पामी, मरीने छट्ठी नरके गइ. त्यांथी नीकळी कुष्टि मनुष्य थइ. पछी पशु अने सर्प योनिमां उत्पन्न थइ, मरीने पांचमी नरके गइ. इत्यादि चारे गतिमां परिभ्रमण करीने ते लक्ष्मणानो जीव पद्मनाभ स्वामीना वारामां कोइक गाममां कुबडी स्त्री थशे. तेने तेना माबाप अविनीतपणाने लीधे घरमांथी काढी मूकशे. पछी तेने अरण्यमां भ्रमण करतां कांइक पुण्योदयथी श्री पद्मनाभ प्रभुना दर्शन थशे. त्यां ते पोताना कर्म विपाकनो प्रश्न करशे, त्यारे प्रभु सर्व वृत्तान्त कहेशे. ते सांभळीने ते कुब्जा वैराग्य पामी दीक्षा लेशे. पछी पूर्वनां सर्व दुष्कृतोनी आलोचना प्रतिक्रमणा करीने समाधिवडे केवळज्ञान पामी सिद्धिपदने पामशे." इति लक्ष्मणा साध्वी प्रबंधः

आ प्रमाणे शीळसन्नाह मुनिए कहेलो वृत्तांत सांभळ्या छतां पण रुपी साध्वी बोली के "हे गुरु! मारामां कांइ पण शल्य नथी." आ प्रमाणे कहेवाथी तेणे मायावडे फरीने पण स्त्रीपणुं उपार्जन कर्युं. गुरुए तेने अयोग्य जाणीने संलेखना न करावी अने पोते एक मासनी संलेखना करी, केवळज्ञान पामीने मोक्षे गया.*

* प्रथमनी हकीकत साथे मेळवतां अनुक्रमे केवळज्ञान पामी मोक्षे जशे एम घटमान लागे छे.

रुपी साध्वी विराधक भावे मृत्यु पामी विद्युत्कुमार नीकायमां देवी थइ; त्यांथी च्यवीने श्याम अंगवाळी अने कामवासनाथी विह्वळ एवी कोइ ब्राह्मणनी पुत्री थइ, त्यांथी नरकमां गइ, त्यांथी नीकळी तिर्यंच थइ. एवी रीते त्रणे उणा लाख भव सुधी परिभ्रमण करीने मनुष्यभव पामी प्रव्रज्या ग्रहण करी साधुपणाना गुणने पामी; परंतु पूर्वनी मायाने लीधे त्यांथी काळ करीने इन्द्रनी अग्रमहिषी (इंद्राणी) थइ, त्यांथी च्यवीने ते गोविंदनी स्त्री थइ, अने आ भवमां चारित्र पामीने मोक्षे गइ. " इति रुपी श्रमणी संबंधः

हवे पेली सुज्ञसिरि गोविंदना घरमां रहेती हती, त्यांथी तेने लोभ पमाडीने एक आभीरी पोताने घेर लइ गइ. त्यां दूध दहीं विगेरे खाइने ते मनोहर रुपवाळी थइ. तेनो पिता जे सुज्ञशिव हतो ते मनुष्य अने पशुनो क्रयविक्रय करवावडे पांच महोर मेळवी फरतो फरतो एकदा रात्रि रहेवा माटे ते आभीरीने घेर आव्यो. त्यां पोतानी पुत्री सुज्ञसिरिना रुपथी मोह पामीने घणा द्रव्यनो व्यय करी तेने परण्यो. एकदा बे साधुने जोइने सुज्ञसिरिनां नेत्रमां जळ भरायुं. तेनुं कारण तेना पतिए पूछयुं त्यारे ते बोली के " मारा स्वामी गोविंदनी पत्नी आवा घणा साधुओने प्रतिलाभीने पंचांग नमस्कार करती हती. तेनुं स्मरण थवाथी मने शोक थाय छे. " ते सांभळीने सुज्ञशिवे तेने पोतानी पुत्री तरीके ओळखी अने तेणे पण पोताना पिता तरीके सुज्ञशिवने ओळख्यो; तेथी ते बन्ने लज्जित थया. पछी ते बन्ने अग्निमां बळी मरवानो निश्चय करी चिता खडकीने तेमां पेठा, पण काष्ठ निर्दाहक* जातिनां होवाथी अग्नि पण बुझाइ गयो. लोकोए तेमनो अत्यंत तिरस्कार कर्यो, एटले तेओ त्यांथी चाली नीकळ्या. अनुक्रमे एक मुनि मळ्या, एटले तेनी पासे सुज्ञशिवे दीक्षा लीधी. सुज्ञसिरि गर्भवंती हती, तेथी तेने दीक्षा आपी नहीं. पछी ते गर्भना दुःखथी विचार करवा लागी के " आ गर्भने विविध प्रकारना क्षारादिकना उपायथी पाडी नाखुं. " इत्यादि रौद्रध्यान करती सती प्रसवनी वेदनाथी मरण पामीने छठी नरके गइ.

तेना गर्भथी नवा जन्मेला पुत्रने कोइ कूतराए मुखमां लइने एक कुंभारना चक्र उपर मूक्यो. कुंभारे तेने पुत्र तरीके राख्यो. सुसढ तेनुं नाम पाडयुं. अनुक्रमे ते युवावस्था पाम्यो. एकदा ते सुसढे मुनिना उपदेशथी बोध पामी दीक्षा ग्रहण

* बळे-सळगे नहीं एवी जातनां.

करी; परंतु जपतपादिमां तेमज व्रतनुं आचरण करवामां ने क्रियामां शिथिलाचारी थयो. गुरुए तेने घणो उपदेश आप्यो, तोपण तेणे शिथिलपणुं छोडयुं नहीं. छेवट ते काळ करीने पहेला देवलोकमां सामानिक देवता थयो. त्यांथी च्यवीने ते भरतक्षेत्रमां वासुदेव थशे; त्यांथी सातमी नरके जइने हाथी थशे, त्यांथी अनन्तकायमां उत्पन्न थशे. इत्यादि बहु काळ सुधी भमीने अन्ते ते सिद्धिपदने पामशे." आ सुसढनी कथा निशीथ सूत्रमां कहेली छे, ते अहीं टुंकामां प्रसंगे कहेवामां आवी छे.

"उत्तम जीवे आलोचना लेती वखते निरंतर कुटिलपणानो अवश्य त्याग करवो. आगमना अर्थने जाणनार पुरुषोए आलोचना देवी तेमज लेवी, केमके आलोचनानी इच्छा मात्र पण शुभ फळदायक छे."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ विंशतितमस्तंभस्य
एकनवत्यधिकद्विशततमः प्रबंधः ॥ २९१ ॥

व्याख्यान २९२ मुं.

आठमा विनय तप विषे.

चतुर्धा विनयः प्रोक्तः, सम्यग्ज्ञानादिभेदतः ।
धर्मकार्ये नरः सोऽर्हः, विनयाह्वतपोऽचितः ॥ १ ॥

भावार्थ—"सम्यग् ज्ञानादि भेदे करीने चार प्रकारनो विनय कहेलो छे. ते विनय नामना तपथी युक्त पुरुष धर्मकार्यने विषे योग्य छे."

ज्ञानादि भेदे करीने चार प्रकारनो विनय छे ते आ प्रमाणे—बहुमान पूर्वक ज्ञान ग्रहण करवुं, तेनो अभ्यास करवो, स्मरण करवुं, इत्यादि ज्ञानविनय कहेवाय छे [१]. आहार नीहार विगेरे क्रिया करतां मौन धारण करवुं ते पण ज्ञानविनय छे. सामायिक विगेरे सकळ प्रवचन श्रीजिनेश्वरप्रणीत होवाथी तेमां

कोइ पण जातनो विसंवाद नथी, तेथी यथार्थ वस्तुतत्त्वनी प्रतीतिमां निःशंक थवुं ते दर्शनविनय कहेवाय छे. (२). चारित्रनुं श्रद्धान करवुं, तेनुं सम्यक् प्रकारे आराधन करवुं, अन्यनी पासे चारित्रना गुणोनी स्तवना करवी अने चारित्रनुं स्वरूप कही बतावबुं, ए विगेरे चारित्रविनय कहेवाय छे (३). आचार्य विगेरे गुरुनुं प्रत्यक्ष दर्शन थाय एटले तरतज उभा थवुं, तेमनी सन्मुख जवुं, हाथ जोडवा विगेरे विनय करवो अने तेमनी गेरहाजरी होय त्यारे पण मन वचन अने कायाना योगे करीने पगे चालवुं अने तेमना गुणनुं कीर्तन तथा वारंवार स्मरणादि करवुं ते उपचारविनय कहेवाय छे. आ संबंधमां पांच कळशी भार-वाहकनी कथा छे, ते आ प्रमाणे—

पंचाख्य भारवाहक कथा.

कोइ एक गाममां भार वहन करनारा पांचसो मजुर रहेता हता. तेओमां एक मुख्य हतो, ते पांच कळशी अनाजनो भार उपाडतो हतो. तेनामां एवो लोकोत्तर गुण जोइने राजाए तेना पर कृपा करीने वर आप्यो के " ज्यारे तुं भार उपाडीने मार्गमां चाले त्यारे तारी सामे जो रथ, घोडा, गाडां, सैन्य अने हाथी विगेरे आवतां होय तो तेने जोइने तारे तारो स्वीकार करेलो मार्ग छोडीने आघुं पाछुं जवुं नहीं, केमके भारथी पीडायेला प्राणीने चालतो मार्ग छोडवो अति दुष्कर छे. हुं पण तने दूरथी जोइने मार्ग आपीश, तेथी तारे मारो पण भय राखवो नहीं, तो पछी बीजानो भय तो शामाटेज होय ? आ मारी आज्ञानो कोइ लोप करशे तेने हुं शिक्षा करीश." आ प्रमाणे आज्ञा मळवाथी ते मजुर इच्छा मुजब मार्गमां चालतो हतो. तेने आवतो जोइने सर्व कोइ तेने मार्ग आपता हता, पण तेना पर कोइ रोष करतुं नहोतुं. एकदा ते भार उपाडीने मार्गमां जतो हतो, तेवामां तेनी सामे कोइ साधुने आवतां तेणे जोया. तेने जोइने ते मजुरे विचार कर्यो के " मारो भार तो गमे तेटलो पण परिमित छे, अने आ मुनिए धारण करेल पांच महाव्रतरूपी भार तो अपरिमित छे, ते कोइनाथी कळी शकातो नथी; तेटलो बधो भार उपाडीने ते चाले छे, तेथी एमनी पासे मारुं पराक्रम निरर्थक छे." एम विचारीने तेणे मुनिने रस्तो आप्यो. ते आघो खस्यो एटले तेनी पाछळना सर्वे मजुरोने पण खसवुं पडयुं, तेथी तेओ रोष पामीने बोल्या के " तें राजानी आज्ञानुं उल्लंघन कर्युं. " पछी तेओए राजाने जाहेर कर्युं. राजाए तेने बोलावीने

पूछ्युं, त्यारे ते बोल्यो के " हे देव ! आपनी आज्ञा जरा पण में खंडित करी नथी. " राजाए तेनुं कारण पूछ्युं, त्यारे ते फरीथी बोल्यो के " हे राजा ! मारा करतां आ मुनिनो भार अधिक छे, तेथी हुं बाजुपर खस्यो छुं. " राजाए पूछ्युं के "तेनापर शो भार छे?" ते बोल्यो के "हे स्वामी ! मेरु पर्वत करतां पण अधिक भारवाळां पांच महाव्रतो के जेने वहन करवाने हुं असमर्थ छुं अने आ मुनि तो ते भारनुं वहन करे छे, अने तेमां नेत्रस्फुरण जेटलो काळ पण प्रमाद करता नथी. हुं तो मात्र बहारनो भार उपाडुं छुं, अने इर्यादि समिति रहित होवाथी अनेक जीवोनुं उपमर्दन करीने अनेक भवोथी पण दुर्मोच्य एवा पापना समूहने वृद्धि पमाडुं छुं. प्रथम में प्रव्रज्या अंगीकार करी हती, परंतु पांच महाव्रतना भारने वहन करवामां अशक्त थवाथी प्रव्रज्यानो में त्याग कर्यो. आ पांच कळशीनो भार तो हुं सहेजे उपाडी शकुं छुं, पण प्रथम स्वीकार करेला महाव्रतरूपी अभ्यंतर भार उपाडी शकतो नथी, माटे हुं मार्गमांथी आघो खस्यो, ते में युक्त कर्युं छे."

भक्तिभरा नमस्यन्ति, इन्द्रादयो गतस्मयाः ।
महाव्रतभराकीर्णान्, तदग्रेऽहं कियन्मितः ॥ १ ॥

भावार्थ—" हे राजा ! महाव्रतरूपी भारने वहन करनारा मुनिओने भक्तिथी भरपूर इन्द्रादिक पण गर्वरहित थइने नमस्कार करे छे, तो तेवा मुनिनी पासे हुं कोण मात्र छुं ? "

वळी हे राजा ! आ मुनि पांच महाव्रतोमांना दरेकने पांच पांच भावना वडे निरंतर निर्मळ करे छे. तेमां पहेलां प्राणातिपात विरमण नामना व्रतनी पांच भावनाओ आ प्रमाणे छे. यतः प्रवचनसारोद्धारे—

इरियासमिए तहा सया जए, उवेह भुंजेज्ज व पाणभोयणं ।
आयाणनिक्खेव दुगुंच्छ संजए, समाहिए संजयए मणोवई ॥ १ ॥

शब्दार्थ—" इर्यासमितिवाळा, तथा सर्वदा जोइने पान भोजन करनारा (एषणा समितिवाळा), आदान निक्षेप अने जुगुप्सा करनारा, तथा समाहित थइने मनने अने वचनने नियममां राखनारा यति पहेलाव्रतनी पांच भावना भावे छे. "

विस्तरार्थ—इर्या एटले गमन करवुं ते, तेमां समित एटले उपयोग राखनार,

समस्त जीवोनी हिंसाना त्यागने माटे इर्यासमित थवुं ते पहेली भावना; तथा सर्वदा सारी रीते उपयोग राखीने इक्षण पूर्वक (जोइने) पान अने भोजन ग्रहण करवुं अथवा वापरवुं ए बीजी भावना ; आदान निक्षेप एटले पात्रादिक प्रमार्जना पूर्वक ग्रहण करवां अथवा मूकवां ते, तथा आगममां जेनो निषेध कर्यो होय तेनी जुगुप्सा (निंदा) करे—पोते न आचरे ते त्रीजी भावना तथा साधु समाहित एटले सावधान थइने मनने दूषण रहित प्रवर्तावे, केमके मन दूषणवाळुं होय तो कायसंलीनता विगेरे कर्या छतां पण ते कर्मबंध माटे थाय छे. प्रसन्नचंद्र नामना राजर्षिए मनोगुप्ति राखी नहीं तेथी कायावडे हिंसा नहीं कर्या छतां पण मनथी सातमी नरकने योग्य कर्म बांध्युं हतुं एम संभळाय छे, माटे मनने नियममां राखवुं ए चोथी भावना. तेवीज रीते वाणी पण दूषण रहित बोलवी के जेथी हिंसा थाय नहीं, ते पांचमी भावना.

बीजा असत्यविरमण व्रतनी पांच भावना आ प्रमाणे छे—

अहस्स सच्चे अणुवीय भासए, जे कोह लोहं भयमेव वज्जए ।
से दीहरायं समुपेहिया सया, मुणी हु मोसं पडिवज्जए सिया ॥२॥

शब्दार्थ—"जे हास्य रहित सत्य बोले, विचारीने बोले तथा क्रोध लोभ अने भयनो त्याग करे ते मुनि दीर्घरात्रने सदा जुए छे, माटे मुनिए सर्वदा असत्यनो त्याग करवो."

विस्तरार्थ—हास्यनो त्याग करीने सत्य वाणी बोलवी, केमके हास्यथी कदाच असत्य पण बोलाय छे ते पहेली भावना. १. विचारीने एटले सम्यग् ज्ञानपूर्वक विचार करीने बोलवुं ; वगर विचारे बोलनार कोइ वार असत्य पण बोली जाय छे, अने तेथी पोताने वैर, पीडा विगेरे प्राप्त थाय छे, तथा जीवहिंसा पण थाय छे ते बीजी भावना. २. तथा जे क्रोध[1], लोभ अने भयनो त्याग करे ते मुनि दीर्घरात्र एटले मोक्षने पोतानी समीपे जुए छे; माटे हमेशां असत्यनो त्याग करवो. क्रोधादिक त्याग करवानुं तात्पर्य ए छे के—क्रोधने आधीन थयेलो माणस ज्यारे बोले छे त्यारे तेने स्वपरनी अपेक्षा रहेती नथी, तेथी ते जेम तेम बोलतां असत्य पण बोले छे, माटे तेनो त्याग करवो श्रेष्ठ छे. ३. लोभने आधीन

१ क्रोधादिकना त्यागनी त्रण भावना मळीने पांच थाय छे.

थयेलो माणस पण अत्यंत धनना लोभथी खोटी साची पूरवा विगेरेथी असत्य बोले छे, माटे तेनो त्याग करवो. ४. तथा भयभीत माणस पोताना प्राणादिकनुं रक्षण करवानी इच्छाथी सत्यवादीपणानो त्याग करे छे, माटे पोताना आत्मामां निरंतर निर्भयता धारण करवी. ५.

त्रीजा अदत्तादान विरमण व्रतनी पांच भावना आ प्रमाणे छे—

सयमेव उग्गह जायणे घडे, मइमं निसम्म स भिक्खु उग्गहं ।
अणुन्नविय भुंजिय पाणभोयणं, जाइत्ता साहंमियाण उग्गहं ॥३॥

शब्दार्थ—"साधु पोतानी जातेज [1]अवग्रहनी याचना करे, पछी मतिमान एवो ते साधु [योग्य] चेष्टा करे, अवग्रहनी आज्ञा सांभळीने तेमां रहे, पान अने भोजन आज्ञा लइने करे, तथा साधर्मिक पासे अवग्रहनी याचना करीने निवास करे."

विस्तरार्थ—बीजानी साथे कहेवडाव्या विना पोतेज साधु भगवंतनी आज्ञा प्रमाणे इन्द्र, राजा, गृहपति, शय्यातर अने साधर्मिकना भेदवाळा पांच प्रकारना अवग्रहनी याचना करे; अन्य माणस पासे याचना न करावे, कारणके जे स्वामी न होय तेनी पासे याचना करी होय ने खरा स्वामी पासे याचना न करी होय तो परस्पर विरोधादिक दोषो प्राप्त थाय छे (१). पछी ते आज्ञा लीधेला अवग्रहमां तृणादिक ग्रहण करवा माटे मतिमान साधु चेष्टा एटले यत्न करे, अर्थात् अवग्रह आपनारनुं आज्ञावचन सांभळीने तृणादिक पण वापरे; आज्ञा विना वापरे तो अदत्तनुं ग्रहण कर्युं कहेवाय (२). तथा साधु सर्वदा अवग्रहनी स्पष्ट मर्यादा पूर्वक याचना करे, अर्थात् स्वामीए एकवार अवग्रह आप्या छतां पण वारंवार मात्रुं विगेरे परठववाना कार्यमां अवग्रहनी याचना करे (३). गुरु विगेरेनी आज्ञा लइने पान भोजन विगेरे वापरे, अर्थात् जे कांइ चीज वापरवी ते सर्व गुरुनी आज्ञा पूर्वकज वापरवी जोइए, नहीं तो अदत्त भोगव्यानो दोष लागे छे [४]. सरखा धर्मनुं जे आचरण करे ते साधर्मिक कहेवाय छे, अर्थात् एकज शासनमां वर्तनारा संवेगी साधुओए प्रथमथी ते स्थान याचनापूर्वक ग्रहण करेलुं होय ते तेमनी पासेथी मास विगेरे अवधिनुं तथा पंचक्रोशादि क्षेत्रनुं मान करीने रहेवा माटे मागी लेवुं, तेमनी आज्ञाथीज उपाश्रय विगेरे सर्व ग्रहण करवुं, नहीं तो अदत्तनो भांगो लागे छे.

---

१ उपाश्रय विगेरेनी.

हवे चोथा ब्रह्मचर्य व्रतनी पांच भावना आ प्रमाणे छेः—

आहारगुत्ते अविभूसियप्पा, इत्थि न निज्झाय न संथवेज्जा ।
बुद्धे मुणी खुद्दकहं न कुज्जा, धम्माणुपेही बंभचेर संधए ॥ ४ ॥

शब्दार्थ—" आहारनी गुप्ति करे, पोताना देहने अविभूषित राखे, स्त्रीने जुए नहीं. स्त्रीनी प्रशंसा अथवा परिचय करे नहीं, अने बुद्धिमान मुनि क्षुद्र कथा करे नहीं, तो ते धर्मानुप्रेक्षी मुनि ब्रह्मचर्यने बराबर धारण करे छे एम जाणवुं. "

विस्तरार्थ—आहारनी गुप्ति राखवी, एटले स्निग्ध भोजन करवुं नहीं, तेमज अतिमात्र भोजन करवुं नहीं; केमके तेथी धातु पुष्ट थवाथी वेदनो उदय थाय अने तेथी करीने कदाच ब्रह्मचर्यनुं खंडन पण थाय (१). अविभूषितात्मा एटले शरीरने स्नान विलेपन विगेरे विविध प्रकारनी विभूषाथी रहित राखवुं (२). स्त्रीने अने तेना अंगोपांगोने पण जोवां नहीं (३). स्त्रीनी प्रशंसा करवी नहीं, तथा तेनो परिचय पण करवो नहीं (४). तथा बुद्धिमान एटले तत्त्वने जाणनार मुनिए क्षुद्र एटले अप्रशस्य एवी स्त्रीकथा करवी नहीं (५). आ पांच भावनाथी जेनुं अंतःकरण भावित थयुं छे, एवो धर्मानुप्रेक्षी एटले धर्मना आसेवनमां तत्पर साधु ब्रह्मचर्यने धारण करे छे, अर्थात् ते व्रतने पुष्ट करे छे.

पांचमा महाव्रतनी भावना आ प्रमाणे छेः—

जे सद्दरूवरसगंधमायए, फासे य संपप्पमणुन्नपावए ।
गेही पउसं न करेज्ज पंडिए, से होइ दंते विरए अकिंचणे ॥५॥

शब्दार्थ—" जे साधु मनोज्ञ ने अमनोज्ञ एवा आगंतुक शब्द, रूप, रस अने गन्ध ए चार तथा स्पर्श मळी पांच प्रकारना इन्द्रियना विषयोने पामीने तेना पर गृद्धि के प्रद्वेष करे नहीं ते पंडित, जितेन्द्रिय ने सर्व सावद्य कर्मथी विरक्त एवो साधु अकिंचन एटले परिग्रह रहित कहेवाय छे. "

भावार्थ—" जे साधु शब्द, रूप, रस, गंध ए चार प्रकारना भावता एवा इन्द्रियना विषयो प्रत्ये तेमज स्पर्श प्रत्ये-मनोज्ञ अने अमनोज्ञ-इष्ट अने अनिष्ट एवाने पामीने तेनापर गृद्धि ते मूर्छा अने प्रद्वेष ते द्वेष यथाक्रमे न करे, अर्थात् इष्ट विषयोने पामीने गृद्धि न करे अने अनिष्टने पामीने द्वेष न करे ते

मुनि दांत, जितेन्द्रिय, सर्व सावद्य योगथी विरत अने अकिंचन-निःपरिग्रही थाय छे. पांच प्रकारना विषयो संबंधी अभिष्वंग ने प्रद्वेष एटले राग ने द्वेष तजी देवो ए पांचमा व्रतनी पांच भावना जाणवी.

आ प्रमाणे दरेक व्रतनी पांच पांच भावनाओ मळीने पचीश भावना जाणवी. इत्यादि अनेक युक्तिथी महाव्रतनो भार उपाडवो दुष्कर छे.

पंचाख्य नामना मजुर पासेथी आ प्रमाणेनी हकीकत सांभळीने राजा बोल्यो के "हे पचाख्य ! तुं महा पराक्रमी छे. आटलो पांच कळशीनो मोटो भार वहन करे छे, महाकष्टनो अनुभव करे छे, छतां तें पंचमहाव्रतनो त्याग शामाटे कर्यो ? केमके तेमां कांइ भार नथी, आ व्रत तो सुखेथी निर्वाह थइ शके तेवां छे, मने तो तेमां कांइ पण दुष्कर जणातुं नथी." ते सांभळीने पंचाख्य बोल्यो के "हे स्वामी ! आपे घणीवार इन्द्रियोने योग्य एवा विषयो भोगव्या छे, हवे आपना पुत्रने राज्य सोंपीने मुनिने योग्य एवुं संयम एकज दिवसने माटे अंगीकार करो, अने तेने योग्य क्रियानुष्ठान करो." आ प्रमाणेनां पंचाख्यना वचनथी ते अभिमानी राजा व्रतने माटे उद्यमी थयो. ते वात जाणीने तेनी राणीओ बोली के "हे प्राणनाथ! अमे तमारुं पडखुं एक क्षण पण छोडशुं नहीं, तमारा विना अमे कोइ पण वस्तुथी रति पामशुं नहीं. वळी मनोहर-रमणिक कामिनीना भोगने योग्य एवुं आ तमारुं शरीर अंत, प्रांत अने तुच्छ आहारादिक बावीश प्रकारना परीषहो सेववाथी नाश पामशे. ते वखते पछी तमने निरंतर पश्चात्ताप थशे; केमके दुःख भोगववुं ते सहेलुं नथी. हे नाथ! जो के हमणां तमे निःस्पृह अने त्रिकाळ परवस्तुने नहीं इच्छनारा एवा मुनिना गुणोनो तिरस्कार करवा माटे अहंकारने लीधे आ कार्य करवा इच्छो छो, पण ते युक्त नथी; केमके ते कार्य तो समग्र प्रकारना दर्प, दंभ अने गर्वथी रहित एवा पुरुषोज करी शके छे." इत्यादि सांभळीने राजा बोल्यो के " अहो ! आ अति दुष्कर कार्य में अज्ञानथीज चिंतव्युं, केमके ज्यारे सर्वथा निराशाभाव प्राप्त थाय छे, त्यारेज ते व्रतने योग्य स्वभाव (आत्मभाव) प्रगट थाय छे." पछी राजाए ते भारवाहक मुख्यने कह्युं के " समस्त पुद्गलनी आशा रहित एवुं मुनिपणुं अतृप्त जीवोने एक दिवस पण फरसी शकतुं नथी." पंचाख्य बोल्यो के "हे राजा ! ते मुनिए यौवन अवस्था छतां पण प्रत्यक्ष प्राप्त थयेलुं कांचन, कामिनी अने राज्यनुं सुख तृण मात्रनी जेम

छोडी दइने जीवन पर्यंत संयमनो भार वहन करवानुं स्वीकार्युं छे, अने तेज प्रमाणे ते छेल्ला श्वासोच्छ्वास सुधी पालन करशे. में पण श्री मुमुक्षु (तीर्थंकर) प्रणीत स्याद्वादयुक्त आगमनां वचनोने सांभळीने महाव्रत ग्रहण कर्यां हतां, परंतु हुं तो तेमां नपुंसक बळद जेवो थइ गयो. हाथीनो भार तो हाथीज उपाडी शके, गधेडो उपाडी शके नहीं. वळी विश्वमां आ समग्र पृथ्वी, समुद्र, पर्वत अने वृक्षो विगेरेनो भार उपाडवामां समर्थ एवा केटलाक पुरुषोने सांभळीए छीए; पण आ महाव्रतनो भार वहन करवामां तो ते क्षमावान मुनिज समर्थ छे एम हुं मानुं छुं; ते माटेज हे राजन् ! हुं मार्गमां तेने विनयथी नम्यो छुं, तथा तेनी प्रशंसा पण तेटला माटेज करी छे." आ प्रमाणे पंचाख्यनां वचनो सांभळीने राजा विगेरे सर्व जैन मुनिनो विनय करवामां तत्पर थया, अने पंचाख्यनी आवी बुद्धिथी रंजित थयेला राजाए तेने पोतानो हजुर सेवक करीने राख्यो अने तेनी पासे निरंतर धर्मकथा श्रवण करवा लाग्यो.

"आ भारवाहके जोके दुःखे धारण करी शकाय तेवा चारित्रना गुणोनो त्याग कर्यो हतो, तोपण तेणे राजादिकने धर्मना रागी कर्या. तेनुं कारण ए के सर्व गुणोना मोटा भाइ समान विनयगुणने तेणे छोड्यो नहोतो अने तेज गुणथी ते परिणामे सर्वोत्तमपणुं पामशे."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ विंशतितमस्तंभस्य
द्विनवत्यधिकद्विशततमः प्रबंधः ॥ २९२॥

व्याख्यान २९३ मुं.

पुनः विनयनुंज वर्णन करे छे.

बाह्याभ्यन्तरभेदाभ्यां, द्विविधो विनयः स्मृतः ।
तदेकैकोऽपि द्विभेदो, लोकलोकोत्तरात्मकः ॥ १ ॥

भावार्थ—"बाह्य तथा अभ्यन्तर भेदवडे विनय बे प्रकारनो कहेलो छे. ते बाह्य तथा अभ्यन्तरना पण लोक अने लोकोत्तर एवा बे बे भेद छे."

वंदन करवुं, वचनथी स्तुति करवी, उभा थवुं, सन्मुख जवुं, ए विगेरे बाह्य विनय कहेवाय छे अने अन्तःकरणथी वंदनादिक करवुं, ते अभ्यन्तर विनय कहेवाय छे. आ बे प्रकारना विनयना चार भांगा थइ शके छे. ते आ प्रमाणे—कोइक प्राणी मात्र बाह्य विनय देखाडे छे, पण अभ्यन्तर विनय होतो नथी. शीतळाचार्यनी जेम (१). कोइ प्राणी अभ्यन्तर विनय करे छे, पण बाह्य विनय करतो नथी; सातमा देवलोकना देवतानी जेम. ते विषे पांचमा अंगमां कह्युं छे के—सातमा देवलोकना देवोए श्रीमहावीरस्वामीने भावथी वंदन करीने मनवडेज प्रश्न कर्यो, तेथी प्रभुए पण " मारा सातसो शिष्यो मोक्ष पामशे" एवो उत्तर आप्यो. ते वखते संदेह उत्पन्न थवाथी गौतम विगेरे मुनिओए स्वामीने पूछयुं के " हे भगवन् ! आ देवोए बाह्य विनय केम न कर्यो ? " त्यारे प्रभुए आन्तर भक्तिथी पूछेला प्रश्नादिकनुं सर्व वृत्तान्त कह्युं, ते सांभळीने तेओ विस्मय पाम्या (२). कोइक प्राणी अतिमुक्तक ऋषिनी जेम बन्ने प्रकारनो विनय करे छे (३). तथा कोइ प्राणी गोष्ठामाहिल्ल अने मंखलीपुत्र विगेरेनी जेम बेमांथी एके प्रकारनो विनय करता नथी (४).

आ बन्ने प्रकारना विनय लौकिक तथा लोकोत्तर भेदे करीने बे बे प्रकारना छे. तेमां पिता विगेरेने विषे बाह्य विनय करवो ते लौकिक बाह्य विनय कहेवाय छे, अने ते पिता विगेरेने विषे आंतर प्रीतिथी वंदन, अभ्युत्थानादिक करवां, ते लौकिक अभ्यन्तर विनय कहेवाय छे. लोकोत्तर एवा जैन मार्गमां रहेला आचार्यादिकनो अभ्युत्थानादिक बाह्य विनय करवो, ते लोकोत्तर बाह्य विनय कहेवाय छे, तथा ते आचार्यादिकनुं अंतरंग प्रीतिथी विधिवंदनादिकवडे ध्यान करवुं ते लोकोत्तर अभ्यंतर विनय कहेवाय छे.

बीजा सर्व गुणोथी भ्रष्ट थया छतां पण जो विनयवाळो होय तो ते धर्म पामी शके छे. कह्युं छे के—

अन्यैर्गुणैः प्रभ्रष्टोऽपि, यद्यस्ति विनयो दृढः ।
भूयो गुणानवाप्नोति, अर्हन्नकनिदर्शनम् ॥ १ ॥

भावार्थ—" बीजा गुणोथी भ्रष्ट थया छतां पण जो विनय गुण दृढ रह्यो होय तो ते फरीथी पण अर्हन्नकनी जेम गुणने पामे छे. "

अर्हन्नक मुनिनुं दृष्टान्त.

तगरा नामनी नगरीमां दत्त नामे श्रावक रहेतो हतो. तेने भद्रा नामनी पत्नी साथे पांच इन्द्रिय संबंधी सुख भोगवतां अर्हन्नक नामनो पुत्र थयो. एकदा अर्हन्मित्र नामना सूरि पासे आर्हत धर्म श्रवण करीने वैराग्य पामेला दत्ते पोतानी स्त्री अने पुत्र सहित दीक्षा ग्रहण करी. दत्त मुनि सारी रीते क्रियायुक्त छतां पण " आगळ जतां मारो पुत्र संयमनुं पालन करशे " एम धारीने तथा पुत्र उपरना वात्सल्यने लीधे उत्तम भोजन लावी लावीने पुत्रनुं पोषण करता हता, कोइपण वखत पुत्रने भिक्षा लेवा मोकलता नहीं. ते जोइने बीजा साधुओ " आ बाळ साधु समर्थ छतां पण तेनी पासे शामाटे भिक्षा मंगावता नथी ? " इत्यादिक मनमां विचार करता, पण तेने कांइ पण कही शकता नहीं. केमके पुत्रनुं पिता पालन करे तेमां कोण निषेध करी शके ? पछी केटलेक काळे दत्त मुनि उन्हाळाना समयमां समाधिथी मरण पाम्या. तेना वियोगथी अर्हन्नक साधुने महा दुःख प्राप्त थयुं. पिताना विरहथी दुःखी थयेला तेने बीजा साधुओए बे त्रण दिवस सुधी तो आहार लावी आप्यो. पछी तेओए अर्हन्नकने कह्युं के " हवे तुं पोतेज भिक्षा माटे अटन कर. तारा पितानी जेम हवे हमेशां कोइ लावीने तने आहार आपशे नहीं. " आ प्रमाणे कर्णमां सीसुं रेड्या जेवुं वचन सांभळीने अर्हन्नक खेदयुक्त थइ बीजा मुनिओनी साथे भिक्षा माटे चाल्या. पूर्वे कोइ पण वखत तेणे जरा पण श्रम लीधो नहोतो, अने शरीर अत्यंत सुकुमार हतुं, तेथी ग्रीष्म ऋतुना सूर्यनां उग्र किरणोथी तपेली धूळमां चालवाथी तेना पग दाझवा लाग्या, माथुं पण सूर्यनां किरणोथी तपी गयुं, अने तृषा लागवाथी मुख पण सूकाइ गयुं. तेवी रीते चालतां ते अर्हन्नक मुनि बीजा साधुओथी पाछळ रही गया, एटले विश्रामने माटे कोइ एक गृहस्थना महेलनी छायामां उभा रह्या. त्यां उभा रहेला कामदेव समान आकृतिवाळा तेने चंद्रना जेवा मुखवाळी अने जेनो पति परदेश गयेलो हतो एवी ते घरनी मालेक स्त्रीए दीठा. ते बाळ मुनिने जोइने तेणे विचार्युं के " अहो ! शुं आनुं अपूर्व सौन्दर्य छे के जे जोवा मात्रथीज मारा मननुं आकर्षण करे छे ! माटे आ युवाननी साथे विलास करीने मारुं यौवन सफळ करुं. " एम विचारीने तेणे ते साधुने बोलाववा माटे दासीने मोकली. दासीए तेने बोलाव्या, एटले ते पण तेना घरमां गया.

तेने आवता जोइने हर्षना भारथी जेना कुचकुंभ प्रफुल्लित थया छे एवी ते स्त्री तेनी सामे आवी, अने हास्यथी मिश्रित थयेला दांतनां किरणोथी अधरोष्ठने तेजस्वी करती तथा नेत्रने नीचां राखीने वांकी दृष्टिथी कटाक्ष करती ते स्त्रीए तेने पूछयुं के "हे प्राणना जीवन समान! तमे शुं मागो छो?" त्यारे अर्हन्नक मुनि बोल्या के "हे सारा लोचनवाळी कामदेवनी प्रिया! हुं भिक्षा मागुं छुं." ते सांभळीने तेणे विचार्युं के "आ साधुने हुं कामदेवने उद्दीपन करनारां औषधोथी मिश्रित, स्निग्ध, मधुर अने जोवा मात्रथीज विकार उत्पन्न करे तेवो आहार आपीने वश करुं." एम विचारीने तेणे मनोहर एवा घणा मोदक तेने आप्या. ते पण पर्यटन करवाथी ग्लानि पाम्या हता, तेथी आवा सुंदर मोदक मळवाथी घणो हर्ष पाम्या. पछी ते स्त्रीए स्नेहयुक्त दृष्टिथी जोतां जोतां तेने पूछयुं के "हे युवान! मारा अंगमां व्यापेला कामविकारना तापसमूहनुं निवारण करवामां समर्थ, तथा कदलीना स्तंभ जेवी कोमळ जंघावाळी अने माखणना जेवा सुकुमार अंगवाळी कमनीय कामिनीओए स्पृहा करवा योग्य एवुं आ यौवन पामीने शामाटे परीषहरूपी कुठारवडे वृक्षनी जेम आ प्रफुल्ल यौवनरूपी वाडीनुं उन्मूलन करो छो? व्रत ग्रहण करवानो आ समय नथी. केटलाएक स्त्रीसुखनी लालसावाळा जीवो क्षुधा तृषादिक कष्ट सहन करे छे, आतुर रह्या करे छे; तोपण तेओने स्वप्ने पण तेवा सुखनी प्राप्ति दुर्लभ जणाय छे. तमने तो तेवुं सुख अत्यारे अनायासे प्राप्त थयुं छे, माटे आटला दिवस पालन करेला व्रतनुं आ फळ प्राप्त थयुं छे एम जाणो. वळी

कुरूपदुःस्थस्थविरकर्कशांगजनोचिताम् ।
इमां कष्टक्रियां मुंच, मुधा स्वं वंचयस्व मा ॥ १ ॥

"कुरूप, दुःखी, वृद्ध अने कठोर अंगवाळा जनोने योग्य एवी आ कष्टकारी क्रियाने मूकी द्यो; फोकट तमारा आत्माने छेतरो नहीं."

वळी आपणा बेउनुं रूप अने शरीर अन्योन्यना संगमथी आजे सफळपणाने पामो. जो कदाच तमने दीक्षामां अत्यंत आग्रहज होय तो भोग भोगवीने पछी वृद्धावस्थामां फरीथी दीक्षा ग्रहण करजो." आ प्रमाणेनां तेनां वचनो सांभळीने तथा तेना हावभाव जोइने अर्हन्नकनुं मन व्रत उपरथी भग्न थइ गयुं. कह्युं छे के—

दृष्टाश्चित्रेऽपि चेतांसि, हरन्ति हरिणीदृशः ।
किं पुनस्ताः स्मितस्मेरविभ्रमभ्रमितेक्षणाः ॥ १ ॥

भावार्थ—" मृगलीना सरखा नेत्रवाळी स्त्रीओ मात्र चित्रमां जोइ होय तोपण ते चित्तनुं हरण करे छे, तो पछी हास्यथी प्रफुल्लित अने विलासथी भ्रमित एवां नेत्रोवाळी स्त्रीओने साक्षात् जोवाथी चित्त हरण करे तेमां शुं कहेवुं ? "

पछी तेनुं वचन अंगीकार करीने अर्हन्नक तेनाज घरमां रह्यो, अने अत्यंत आसक्त थयेली ते स्त्रीनी साथे स्वेच्छापूर्वक कामक्रीडा करवा लाग्यो.

अहीं सर्वे साधुओ गोचरी लइने उपाश्रये आव्या, अर्हन्नकने जोयो नहीं, तेथी तेमणे तेनी शोध आखा शहेरमां करी. पण कोइ ठकाणे तेनो पत्तो लाग्यो नहीं; तेथी तेओए ते वृत्तांत तेनी माता के जे साध्वी थयेली हती तेने कह्यो. ते सांभळीने साध्वी पुत्रपरना अति रागांधपणाथी पुत्रशोकवडे जाणे तेना शरीरमां भूत पेठुं होय तेम बेभान जेवी अने उन्मत्त जेवी थइ गइ, अने " हे अर्हन्नक ! हे अर्हन्नक ! " एम उंचे स्वरे गद्गद् कंठे विलाप करती शहेरना सर्व चौटा अने शेरीओमां भमवा लागी. मोहथी घेली बनेली ते पगले पगले स्खलना पामती नयनमांथी पडतां आंसुनी धाराथी मार्गनी धूळने आर्द्र करती अने जे कोइ सामुं मळे तेने " मारा प्राणथी पण प्रिय पुत्र अर्हन्नकने तमे क्यांइ पण जोयो छे ? " एम वारंवार पूछती ते आखा नगरमां अटन करवा लागी. तेनी आवी उन्मत्त अवस्था जोइने सज्जन पुरुषोने अनुकंपा आवती हती अने दुर्जनो तेनी मश्करी करता हता.

एकदा महेलनी बारीमां बेठेला अर्हन्नके तेने दीठी. तेनी तेवी उन्मत्त स्थिति जोइ तेने ओळखीने अर्हन्नक विचार करवा लाग्यो के " अहो ! मारुं केवुं अविनयपणुं ! अहो में केवुं दुष्कर्म कर्युं ! क्षणिक सुखने माटे में आ स्त्रीनां वचनथी मुक्तिना सुखने आपनारा व्रतनो त्याग कर्यो, अने आवा दुःसह कष्टमां मारी माताने नांखी. लौकिक शास्त्रमां अडसठ तीर्थो करतां पण माताना विनयनुं फळ अत्यंत कहेलुं छे. तेमां पण आ मारी माता तो जैनधर्मज्ञ होवाथी अने चारित्र अंगीकार करेली होवाथी विशेषे करीने पूज्य छे. हा ! हा ! चारित्रनो भंग करीने में मारा आत्माने भवसागरमां नांख्यो, एटलुंज नहीं पण आ मारी माताना महाव्रतनो लोप थवामां पण हुंज सहायभूत थयो. अहो ! परंपराथी मारा पापमां केटली बधी वृद्धि थइ ? आ चंद्रवदना स्त्रीए प्रारंभमां मिष्ट

लागे तेवुं बहारथी सुंदर पण परिणामे अनन्त दुःख आपनार हावभावादि रूप विषनुं मने पान कराव्युं. तेना लावण्यने, सुंदर वेषने अने निपुणताने धिकार छे! आनी सर्व चतुराइ केवळ नरकनेज आपनारी छे. हे चेतन! हवे तारे माटे बे मार्ग छे. एक तो आ चंद्रमुखीए बतावेलो पाप मार्ग अने बीजो आ आर्याए बतावेलो पुन्य मार्ग. आ बे मार्गमांथी जे कल्याणकारी होय तेनुं आचरण कर; पण अत्यारे तो मारे मारी दुःखी माताना शोकनुं उन्मूलन करवुं योग्य छे." एम विचारीने अर्हन्नक एकदम ते घरमांथी बहार नीकळ्यो. तेनी पाछळ ते चंद्रमुखी पण एकदम आवीने विरहना विलाप विगेरे अनेक प्रकारना अनुकूळ उपसर्ग करती बोली के "हे निर्दय! हमणा तने स्त्रीहत्यानुं पाप लागशे. हे कठोर! शामाटे मने वृक्षना शृंग उपरथी पाडी नाखे छे? शामाटे मने दुःखरूपी चितामां होमे छे? शामाटे मालतीना पुष्पनी माळा जेवी कोमळ, सुंदर अने अकुटिल एवी मने तजे छे? मने रसीली बनावीने हवे विरस केम करे छे!" आ प्रमाणेनां तेनां वचनो सांभळीने अर्हन्नक बोल्यो के "हे पापसमुद्रे! क्षणिक सुखने माटे आवा फोगट विलापो शामाटे करे छे? पहेलां हुं अज्ञानग्रस्त हतो, तेथी तें मने विलासमां पाडी नांख्यो, अने में त्रण लोकने अद्वितीय शरणरूप परमात्माना धर्मने दूषित कर्यो. हवे अहीं रहेवुं मने योग्य नथी. आ मारी माताने धन्य छे के जेणे मने विवेकमार्ग देखाड्यो. संसारमां पडवाना मार्ग बतावनार तो दुनियामां घणा देखाय छे, परंतु भवसागरमां पडेलानो उद्धार करवामां ने तेने पवित्र करवामां समर्थ तो मारी माता समान बीजुं कोइ नथी. हवे जीवित पर्यन्त इन्द्रनी अग्रमहिषीनुं सुख मळे तो तेने पण हुं इच्छतो नथी, तो पछी मनुष्यजातिनी स्त्रीना सुखनी इच्छा तो शेनीज करुं? मन वचन कायाए करीने में सर्व संसारसुखनो त्याग कर्यो छे." इत्यादि कहीने पछी लज्जा सहित विनययुक्त पोतानी माताने नमीने ते बोल्यो के "हे माता! आ तमारा कुळमां अंगारा जेवो अर्हन्नक तमने नमे छे." एम कहीने नेत्रमां अश्रु लावीने ते माताने नम्यो. तेने जोइने ते माता स्वस्थ चित्तवाळी थइ सती हर्षथी बोली के "हे पुत्र! आटला दिवस तुं क्यां रह्यो हतो?" त्यारे अर्हन्नके दंभरहितपणे पूर्वे अभ्यास करेला प्रशस्त धर्मरागथी अनंतगणा शुभ वैराग्ययुक्त अध्यवसायवाळा थइने पोतानुं सर्व वृत्तान्त यथार्थ कही आप्युं." ते सांभळीने माता बोली के "हे वत्स! हवे तुं फरीथी

चारित्र ग्रहण कर." ते बोल्यो के "हे माता! हमेशां संयमक्रियानुं पालन करवुं मने दुष्कर लागे छे. निरंतर सुडतालीश दोष रहित आहार ग्रहण करवो, एक निमेष मात्र पण प्रमाद करवो नहीं, "करेमि भंते" ना उच्चार समयथी आरंभीने प्राणांत समय सुधी अतिचार रहित चारित्रनुं पालन करवुं. इत्यादि साधुनी समग्र क्रिया निरंतर करवा हुं शक्तिमान नथी. हुं महा पापी छुं, तेथी व्रतनुं पालन करी शकीश नहीं, तेथी हे माता! जो तमारी आज्ञा होय तो हुं अनशन ग्रहण करुं." ते सांभळीने भद्रा साध्वी हर्ष पामी सती बोली के "हे भद्र! आ समये अनशन पण तारे माटे योग्य छे; अनंत भवभ्रमण करवामां निमित्तरूप व्रतभंग योग्य नथी, परंतु तुं आवा स्वल्प मात्र पंच महाव्रतनुं पालन करवामां उद्वेग पामे छे, तो अनशन पाळवुं ते तो महा दुष्कर छे. योग्य माणसने ज ते अनशन प्राप्त थाय छे. तुं तो शुभ अने अशुभ पुद्गलोने जोइने राग अने विराग धारण करे छे, माटे हमणां तो तारो विश्वास ज्ञानीना वचनथी आवशे, ते विना आवशे नहीं." अर्हन्नक विचारवा लाग्यो के "खरेखर मारी मातानो राग मारापर अत्यंत छे." पछी मातानी परीक्षा करवा माटे ते बोल्यो के "हे माता! हमणां थोडा दिवसना मारा विरहथी तमे आवी दुःखी अवस्था पाम्या, तो अनशनथी तो मारा शरीरनो सर्वथा नाश थशे, ते व्यथा तमे शी रीते सहन करशो?" भद्रा बोली "हे पुत्र! तुं सत्य कहे छे, परंतु एक वात कहुं ते सांभळ. तारा विरहथी दुःख पामीने में विचार्युं हतुं के "मारो पुत्र धर्म कर्या विना इन्द्रादिकने पण दुर्लभ एवा संयमरूपी रत्ननो तृणनी माफक त्याग करशे तो संसारनां महा दुःखो पामशे; तेथी तेने हुं तत्काळ बोध करुं." ते सांभळीने अर्हन्नक बोल्यो के "हे माता! तमे आ लोकमां अने परलोकमां बन्नेमां सुखदायी थया छो. वधारे शुं कहुं? तमे मारो सम्यक् प्रकारे उद्धार कर्यो छे. प्रथम तमे मने जन्म आपनार थया, अने पछी अनंत जन्मनो नाश करनार धर्म आपनार थया." इत्यादि मातानी स्तुति करीने गुरु पासे जइ तेणे फरीथी चारित्र लीधुं. पछी ज्ञानीना वचनथी विश्वास पामीने माताए आज्ञा आपी एटले तेणे सर्व सावद्य योगनुं प्रत्याख्यान करीने, पोताना दुरितनी निन्दा करीने, सर्व प्राणीओने खमावीने, सूर्यनां किरणोथी तपेली बाह्य वननी शिला उपर, बेसीने चार शरण अंगीकार करी पादपोपगमन अनशन ग्रहण

कर्यु. पछी अति दारुण उष्ण वेदनाने सम्यक् प्रकारे सहन करतां ते अर्हन्नक मुनि शरीरे अति कोमळ होवाथी माखणना पिंडनी जेम एक मुहूर्तमात्रमां ज गळी जइ तत्काळ स्वर्गसुखने पाम्या.

" चंद्रमुखी स्त्रीना स्नेहपाशमां बंधाया छतां पण अर्हन्नके पोतानी माताने जोइने विनय तज्यो नहीं, अने तेथी ज ते फरीने पोताना दुष्कृतनो त्याग करी स्वर्गनुं सुख पाम्या. "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ विंशतितमस्तंभस्य

त्रिनवत्यधिकद्विशततमः प्रबंधः ॥ २९३ ॥

व्याख्यान २९४ मुं.

नवमा वैयावृत्य नामना तप विषे.

यथार्हं तत्प्रतीकारो, व्याधिपरीषहादिषु ।
वैयावृत्त्यं तदुद्भाव्यं, विश्रामणाशनादिभिः ॥१॥

भावार्थ—" व्याधि ने परीषहादिकमां जेम घटे तेम तेनो प्रतीकार (उपाय) करवो, अने विश्रामणा तथा अशनादिके करीने वैयावृत्य करवुं. "

विश्रामणा एटले ग्लान मुनिने अथवा मार्गमां अटन करवाथी श्रमित थयेला मुनिने निवृत्ति माटे तेनां हाथ, पग, पृष्ठ, जांघ विगेरे अवयवोने हाथनी मुष्टिथी दबाववां ते. ते विश्रामणा गुरु विगेरेनी अवश्य निरंतर करवी जोइए. अशन एटले आहार, वस्त्र, पात्र विगेरे आपीने शक्ति प्रमाणे अनुकूळ वर्तन करवुं ते. आ विश्रामणा करवावडे अने अशनादिक आपवावडे वैयावृत्य करी कहेवाय छे. आवुं वैयावृत्य सर्वने अवश्य करवा लायक छे. आ विषय उपर घणां दृष्टांतो छे. तेमां भरतचक्री तथा बाहुबलिए पोताना पूर्वभवमां हमेशां पांचसो साधुने अन्न पाणी लावी आपवानो तथा विश्रामणा करवानो अभिग्रह लीधो हतो, तेनां तथा वसुदेवना जीव नंदीषेण महर्षिए, रोगीनुं वैयावृत्य करवानो अभिग्रह लीधो हतो तेनां

दृष्टांत जाणवो. तथा परीषह–उपसर्ग थाय त्यारे तेनो प्रतीकार अवश्य करवो, ते उपर हरिकेशी मुनिनुं वैयावृत्य करनार तिंदुक नामना यक्षनुं दृष्टांत छे, ते श्री उत्तराध्ययनसूत्रथी जाणी लेवुं.

आ वैयावृत्यनुं फळ सूत्रमां विशेष अधिक वर्णव्युं छे. यतः—

"वेयावच्चेण भंते जीवे किं जणइ? गोयमा ! निच्चगोयं कम्मं न बंधइ"

वेयावच्चं निययं करेह, उत्तमगुणे धरंताणं ॥
सव्वं किर पडिवाई, वेयावच्चं अपडिवाइ ॥ १ ॥
पडिभग्गस्स मयस्स व, नासइ चरणं सुअं अगुणणाए।
न हु वेयावच्चं चिअ, असुहोदय नासए कम्मं ॥ २ ॥

भावार्थ—गौतम स्वामी पुछे छे के "हे भगवन् ! वैयावृत्य करवाथी जीवने शुं उत्पन्न थाय ?" प्रभु कहे छे के "हे गौतम ! वैयावच्च करनार नीच गोत्र-कर्म बांधे नहीं." वळी "निरंतर वैयावृत्य करवुं, जो के बीजा उत्तम गुणो कोइ धारण करे, पण ते सर्व गुणो कोइवार प्रतिपाती थाय छे (भ्रष्ट थाय छे), पण वैयावृत्य गुण अप्रतिपाती छे. ते गुणथी प्राणी भ्रष्ट थतो नथी. १. मदे करीने भ्रष्ट थयेला माणसनुं चारित्र नष्ट थाय छे, अने आवृत्ति विना (वारंवार संभार्या विना) श्रुत नष्ट थाय छे. पण वैयावृत्य गुण कदापि नाश पामतो नथी, अने अशुभोदयवाळा कर्मनो नाश करे छे. २."

आ वैयावृत्य करवानुं तथा न करवानुं फळ विपुलमतिना दृष्टांतथी जाणवुं. कह्युं छे के—

गुरुभत्ति अकुणंतो, कुगइ जीवा लहंति पुणरवि ।
तं च कुणंतो सुगई, विउलमई इत्थ दिट्ठंतो ॥ १ ॥

भावार्थ—"गुरुनी भक्ति नहीं करवाथी जीवो कुगतिने पामे छे, अने पाछा गुरुभक्ति करवाथी सारी गतिने पामे छे, ते उपर विपुलमतिनुं दृष्टांत छे." ते आ प्रमाणे—

विपुलमतिनी कथा.

विराट देशमां विजयपुरी नामे नगरी छे. तेमां श्रीचूड नामे राजा राज्य

करतो हतो. ते राजानो बहु मानीतो जिनदत्त नामे श्रेष्ठी परम श्रावक हतो. ते श्रेष्ठीने सद्बुद्धिवाळी विपुलमति नामे पुत्री हती. तेज नगरीमां धनमित्र नामे एक श्रावक रहेतो हतो, ते जिनदत्तनो मित्र हतो. ते बन्ने मित्रो जैनधर्म पाळता हता. एकदा शियाळानी ऋतु आवी.

शीतऋतुनुं वर्णन कोइ कविए भोजराजानी पासे कर्युं छे के—

शीते त्राणपटी न चास्ति शकटी भूमौ च घृष्टा कटी,
निर्वाता न कुटी न तंडुलपुटी तुष्टिर्न चैका घटी ।
तृप्तिर्नारभटी प्रिया न गुमटी तन्नाथ मे संकटी
श्रीमन् भोज तव प्रसादकरटी भंक्ता ममापत्तटी ॥ १ ॥

भावार्थ—" आ टाढनी ऋतुमां मारी पासे शीतथी रक्षण करनारुं वस्त्र नथी, तापवा माटे सगडी नथी, पृथ्वीपर कटी घसवी पडे छे, अर्थात् भूमिपर पाथरवानुं पण साधन नथी. तेमां वायुनो संचार न थाय एवी झुंपडी नथी, खावा माटे चपटी चोखा नथी, एक घडी पण प्रसन्नता नथी, मारी रीते तृप्ति थाय तेवुं साधन नथी अने सुंदर स्त्री नथी. हे स्वामी ! ए सर्व प्रकारनां मारे संकटो छे, तोपण हे भोजराजा ! तमारा प्रसादरूप हाथीए मारी आपत्तिरूप नदीने भांगी नांखी छे, अर्थात् सर्व आपत्ति मटाडी दीधी छे."

रात्रौ जानुर्दिवा भानुः, कृशानुः संध्ययोर्द्वयोः ।
राजन् शीतं मया नीतं, जानुभानुकृशानुभिः ॥ २ ॥

भावार्थ—" रात्रिए जानु, दिवसे भानु (सूर्य) अने बन्ने संध्यासमये कृशानु (अग्नि) शीतनी रक्षा करनार छे. तेथी हे राजा जानु, भानु अने कृशानुए करीने में शीतनो नाश कर्यो छे."

आवा टाढना वखतमां एकदा धनमित्रे जिनदत्तने कौतुकथी कह्युं के—" कोइ पण माणस गाम बहारना उद्यानमां थंडा जळथी भरेला तळावमां आ माघ मासने समये आखी रात्रि सुधी कंठप्रमाण जळमां उभो रहे तो तेने हुं एक लाख दीनार आपुं." ते सांभळीने लोभी जिनदत्ते सर्व लोकनी समक्ष तेम करवानुं

१ पग संकोचीने सुवाथी टाढ थोडी लागे छे.

अंगीकार कर्युं, अने आखी रात्रि तेवी ज रीते निर्गमन करी. पछी प्रभाते आवीने धनमित्रने कह्युं के "मने लाख दीनार आप." धनमित्र बोल्यो के "तुं आखी रात्रि तेवी ज रीते रह्यो छे तेनी खात्री शी?" जिनदत्त बोल्यो के "तारा घरमां आखी रात्रि दीवो बळतो हतो, ते निशानीथी तारे खात्री मानवी." धनमित्र बोल्यो के "त्यारे तो दीवो जोवाथी तारी टाढ जती रही, माटे हवे तने धन नहीं आपुं." ते सांभळीने जिनदत्त खेदयुक्त चित्ते घेर गयो. तेने चिंतातुर जोइने विपुलमति पुत्री बोली के "हे पिता! तमे खेद करो मा, तमने जे रीते धननी प्राप्ति थशे तेम हुं करीश." पछी पुत्रीना कहेवाथी जिनदत्ते भर उनाळामां धनमित्रने पोताने घेर भोजननुं आमंत्रण कर्युं. मध्याह्न समये तेने जमवा बेसाड्यो. भोजनमां मीठावाळो अने स्निग्ध पदार्थ विशेष हतो, तेथी भोजन करतां धनमित्रे वच्चमां पाणी पीवा माग्युं. ते वखते जिनदत्ते शीतळ जळनी भरेली गागर देखाडीने कह्युं के "जेम ते वखते शियाळामां दीवो जोवाथी मारी टाढ नाश पामी हती, तेम आजे आ पाणीनी गागर जोवाथी तारी तृषा पण नाश पामो." धनमित्र आनो जवाब आपी शक्यो नहीं, एटले ते हारी गयो; तेथी सरतमां ठरावेला लाख रुपीआ तेणे जिनदत्तने आप्या. पछी जिनदत्ते तेने जळ आप्युं. भोजन कर्या पछी धनमित्र पोताने घेर गयो अने विचारवा लाग्यो के "आ बुद्धि कोनी?" ते वखते कोइए कह्युं के "जिनदत्तनी पुत्री विपुलमतिनी." ते सांभळी धनमित्रे परणवा माटे विपुलमतिनुं मागुं कर्युं. पण जिनदत्ते विचार्युं के "मारी पुत्री हुं एने आपीश तो ते क्रोधथी तेनुं विरूप करशे." एम धारीने तेने आपी नहीं. त्यारे विपुलमति बोली के "हे पिता! मने धनमित्र साथे परणावो. बुद्धिना प्रसादथी बधुं सारुं थशे." केमके—

> यस्य बुद्धिर्बलं तस्य, निर्बुद्धेश्च कुतो बलम् ।
> बद्धो गजो वने मत्तो, मूषकैः परिमोचितः ॥ १ ॥

भावार्थ—"जेने बुद्धि छे तेने ज बळ छे, निर्बुद्धिने बळ क्यांथी होय? वनमां मदोन्मत्त हाथीने बांधेलो हतो तेने बुद्धिमान उंदरे मुक्त कर्यो हतो." (आ दृष्टांत पंचतंत्रमांथी जाणी लेवुं.)

पुत्रीनां आवां वचन सांभळी जिनदत्ते धनमित्रनी साथे तेने परणावी. विवाह थया पछी घेर लइ जइने धनमित्रे विपुलमतिने पाणी विनाना एक

कूवामां नांखी, अने तेने कह्युं के " तने पुत्र थाय त्यांसुधी कपास कांतती अने कांगना चोखा खाती आमां रहेजे. हुं द्रव्य उपार्जन करवा माटे परदेश जाउं छुं. " एम कहीने धनमित्र परदेश गयो. पछी विपुलमतिए ते कुवाथी पिताना घर सुधी सुरंग खोदावीने ते रस्ते पिताने घेर गइ.[1] कुवामां पोताने ठेकाणे एक चाकरने राख्यो. ते हमेशां कांगना चोखा ग्रहण करतो. कांतवा आपेलो कपास पिताने सोंप्यो अने कंतावी राखवा कह्युं. पछी " ज्यां मारो पति छे त्यां हुं जाउं छुं. " एम कहीने ते पतिवाळा गामे गइ. त्यां वेश्यानी वृत्तिथी पतिने वश करी तेनी साथे क्रीडा करवा लागी. अनुक्रमे तेनाथी पुत्र थयो. पछी पतिनी पहेलां ज ते पोताने घेर आवी अने कुवामां रही. केटलेक दिवसे धनमित्र घेर आव्यो, तेने तेना आप्तजनोए कह्युं के " तारी स्त्रीने कुवामांथी बहार काढ. " धनमित्रे तेने बहार काढी तो सूत्र अने पुत्र सहित ते बहार नीकळी. धनमित्रे तेने ओळखी एटले ते आश्चर्य पाम्यो. पछी तेणे विपुलमतिने घरनी स्वामिनी करी. लोकमां विपुलमतिनी घणी प्रतिष्ठा थइ.

एकदा ते नगरीमां भवदेव नामना सूरि आव्या. तेने वांदवा माटे स्त्री सहित धनदत्त गयो. गुरुने वांदीने तेणे पूछ्युं के " हे स्वामी ! आ मारी स्त्रीए पूर्व भवमां शुं पुण्य उपार्जन कर्युं छे के जेना प्रसादथी तेनी आवी तीक्ष्ण बुद्धि थइ छे ? " गुरु बोल्या के " हे महाभाग्यवान् ! कुसुमपुर नामना नगरमां भानुदेवने रोहिणी नामे बाळविधवा पुत्री हती. एकदा तेने घेर परगामथी कोइ गृहस्थ वणिकनो पुत्र आव्यो. तेने जोइने रोहिणीने कामविकार उत्पन्न थयो, तेथी तेणे तेना सामुं कटाक्षपूर्वक चपळ दृष्टिथी जोयुं. ते वखते आहार लेवा आवेला शीलसार मुनि ते समजी गया. कह्युं छे के—

जइवि न सइ न संपज्जइ, न हु अ झाएइ हिअयमज्झंमि ।
मयणाउरस्स दिट्ठी, लक्खिज्जइ तहवि लोएण ॥ १ ॥

भावार्थ—" जो के पोताने स्त्री नथी, स्त्रीनी इच्छा नथी, तेने हृदयमां ध्याता नथी, तो पण बुद्धिमान मुनि जोवा मात्रथी मदनातुरनी दृष्टिने समजी शके छे. "

---

१ धनमित्रे कहेली हकीकतनी जिनदत्तने खबर पड्या पछी कोइ माणस द्वारा विपुलमतिए कहेवरावेली युक्ति प्रमाणे आ सुरंग खोदावी.

पछी " अहो ! कामदेवनो प्रचार अति दुर्जय छे " एम विचारतां ते मुनि त्यांथी चाल्या गया. ते शीलसार मुनि अनुक्रमे समग्र सूत्र अने अर्थनो अभ्यास करी गीतार्थ थया. तेथी गुरुए तेने आचार्यपदे स्थापन कर्या. अनुक्रमे विहार करतां एकदा भव्य जीवोने प्रतिबोध करवा माटे ते कुसुमपुरे पधार्या, त्यां देशना आपी. ते सांभळीने रोहिणी प्रतिबोध पामी अने दीक्षा लेवा तैयार थइ. दीक्षा लेवाने समये गुरुए कह्युं के—

जहा सुविसुद्धे कुडे, लिहिअ चित्तं विहाइ रमणिज्जं ।
तह अणइयार जीवे, समत्तं गुणकरं होइ ॥ १ ॥
जह लंघहणिअरस्स, रोगिणो ओसहं गुणाय भवे ।
आलोयणा विसुद्धस्स, धम्मकम्मं तहा सयलं ॥ २ ॥

अर्थ—" जेम शुद्ध करेली भींत उपर चित्रेलुं चित्र रमणीय लागे छे, तेवीज रीते अतिचार रहित शुद्ध जीवने विषे रहेलुं समकित अधिक गुणकारी थाय छे. जेम लंघन करेला रोगीने औषध गुणकारी थाय छे, तेम आलोयण रूपी लंघनथी विशुद्ध थयेला जीवने सर्व धर्मकार्य गुणकारी थाय छे. "

ते सांभळीने रोहिणीए सर्व पापनी आलोचना लीधी, पण पेला दृष्टिविकारनी आलोचना लीधी नहीं. त्यारे गुरु बोल्या के " हे महा अनुभाववाळी ! ते दिवसे हुं तारे घेर आहार लेवा आव्यो हतो, ते वखते में तारो दृष्टिविकार साक्षात् जोयो हतो, तेनी आलोचना केम करती नथी ? " रोहिणीए जवाब आप्यो के " ते वणिकपुत्रनी सामुं में मात्र सहजज जोयुं हतुं; रागथी जोयुं नहोतुं. " ते सांभळीने गुरुए तेने लक्ष्मणा आर्यानुं दृष्टांत आपीने घणुं समजावी तोपण तेणे मान्युं नहीं, अने कहेवा लागी के " वारंवार कहीने खोटुं दूषणज शामाटे बतावो छो ? जो आपने खोटुं दूषणज आपवुं होय तो मारे चारित्रज लेवुं नथी. " एम बोलीने सम्यक्त्व ग्रहण करेली ते गुरु उपर द्वेष करीने पोताने घेर चाली गइ. पछी प्रतिसमये उभराता द्वेषथी ते निरंतर गुरुनी निंदा करवा लागी.

अनुक्रमे तेवाज दुर्ध्यानमां मृत्यु पामीने ते कुतरी थइ, ऋतु वखते तेना गुह्यस्थानमां अनेक कृमि उत्पन्न थया, तेनी व्यथाथी मरण पामीने सर्पिणी थइ.

त्यां दावानळथी बळीमरीने नरके गइ. त्यांथी नीकळीने वाघण थइ, त्यां पाराधिना बाणथी मृत्यु पामीने पाछी नरके गइ. इत्यादि तिर्यंच तथा नरकमां असंख्य वार उत्पन्न थइने अत्यंत दुःसह दुःखो पामी. पछी मनुष्यपणामां बहु वखत स्त्रीपणुं पामीने दुर्भाग्य, दारिद्र्य, व्याधि, शोक, पतिवियोग विगेरे अनेक प्रकारनां दुःखो भोगवीने असंख्य काळे धन्य नामना पुरमां गोवर्धन शेठनी धनी नामे पुत्री थइ. ते युवावस्था पामी एटले तेने नगरशेठना पुत्रे जोइ, अने तेना स्वरूपथी मोहित थइ तेनी मागणी करीने ते तेने परण्यो. पछी शयनगृहमां सुवा गयो. ते वखते तेना अंगनो स्पर्श थतांज तेने एवो ताप लाग्यो के जाणे जाज्वल्यमान अग्निना तापमां पड्यो होय. आवो ताप सहन नहीं थवाथी ते रात्रिमांज जतो रह्यो. प्रातःकाळे पुत्रीने रुदन करती जोइने तेना पिताए तेने धीरज आपी. पछी पोताना घरना गोवाळने घरजमाइ करीने तेनी साथे परणावी. ते गोवाळ पण तेना स्पर्शथी ताप पामीने तेने मूकीने नासी गयो. पछी शोकातुर थयेली पुत्रीने तेना पिताए कह्युं के "हे पुत्री ! आपणा कुळने अयोग्य एवो तारो पुनर्विवाह पण में कर्यो, तोपण तारां पूर्व कर्मना प्रभावथी दुर्भाग्यज आगळनुं आगळ आवीने उभुं रहे छे. हवे तुं दानादिक धर्मक्रियामां तत्पर थइने मारा घरमांज रहे." धनीए ते वात कबुल करी, अने पिताना कहेवा प्रमाणे धर्मक्रिया करवा मांडी. एकदा त्यां कोइ साधुओ आव्या, तेमने वंदना करीने धनीए पूछ्युं के "हे गुरु ! एवो कोइ मंत्र, जंत्र के तंत्र छे के जेथी मने सौभाग्यनी प्राप्ति थाय, अने हुं युवान पुरुषने स्पृहा करवा लायक थाउं?" मुनिए जवाब आप्यो के "अमे कांइ जाणता नथी, पण पुष्पाकर उद्यानमां अमारा गुरु शीलाकर नामना आचार्य पधार्या छे ते सर्व जाणे छे." ते सांभळीने धनी आचार्यमहाराज पासे गइ, अने वंदना करीने तेने पण प्रथमनी जेम सौभाग्यमंत्रादि माटे पूछ्युं. आचार्य बोल्या के—

तिलुक्कवसीकरणो, समत्तमणचिंतिअथ्थसंजणणो ।
जिणपन्नत्तो धम्मो, मंतो ते चेव न हु अन्नो ॥ १ ॥
जेहिं विहिओ न धम्मो, पुव्वं ते एथ्थ दुथ्थिया जीवा ॥
किं पसरइ दारिद्दं, चिंतारयणोवि संपत्ते ॥ २ ॥

अर्थ—" त्रणे लोकने वश करनार अने समग्र मनचिंतित पदार्थने आपनार एवो एक जिनेश्वरकथित धर्मरूपी मंत्रज श्रेष्ठ छे; बीजो कोइ मंत्र तेवो नथी. जेणे पूर्व जन्ममां धर्मनुं अनुष्ठान कर्युं नथी तेओज आ जन्ममां दुःखी थाय छे; बाकी जेने चिंतामणि रत्न प्राप्त थयुं होय तेनी पासे शुं दारिद्य रही शके?" ते सांभळीने गोवर्धन शेठे पूछ्युं के " हे गुरु! आ मारी पुत्रीए पूर्व जन्ममां केवुं पापकर्म कर्युं छे के जेथी आ भवमां आवा दुर्भाग्यथी कलंकित थइ?" आचार्य बोल्या के " आ तारी पुत्रीए प्रथम रोहिणीना भवमां गुरुनी अवज्ञा करी हती; तेथी असंख्य जन्ममां अनेक दुःखो अनुभवीने आ भवे तारी पुत्री थइ छे. पूर्वभवनुं कर्म भोगववुं कांइक बाकी रह्युं छे, तेथी आ जन्ममां पण तेने आवुं दुर्भाग्य प्राप्त थयुं छे." आ प्रमाणे सांभळतांज धनीने जातिस्मरण ज्ञान प्राप्त थयुं, तेथी तेणे पोतानो पूर्वभव दीठो एटले ते बोली के " हे पूज्य गुरु! आपनुं कहेवुं सत्य छे." गुरु बोल्या के—

इहलोइए वि कज्जे, सुगुरुं पणमंति माणवा निच्चं ।
किं पुण परलोअपहे, धम्मायरिअं पईवसमं ॥ १ ॥

भावार्थ—" मनुष्यो आ लोकनां कार्योमां पण सद्गुरुने हमेशां नमे छे, तो पछी परलोकना मार्गमां प्रदीप समान आचार्यने नमवुं तेमां तो शुं कहेवुं?"

आ प्रमाणे सांभळीने धनी पूर्वे करेलां पापनी आलोचना करीने गुरु पासे बार व्रतरूप गृहस्थधर्म ग्रहण करी धर्मक्रियामां तत्पर थइ तीव्र तप करवा लागी. पारणाने दिवसे वस्त्र, अन्न, पान, पात्र, शय्या विगेरे जे जे जेने अनुकूळ होय ते तेमने (साधुओने) प्रासुक अने एषणीय आपवा लागी. पछी मनना उल्लास पूर्वक शुभ परिणामे करीने ते धनीए चारित्र ग्रहण कर्युं, अने अतिचार रहित चारित्रनुं प्रतिपालन करीने सौधर्म देवलोकमां उत्पन्न थइ. त्यांथी च्यवीने आ तारी विपुळमति नामे स्त्री थइ छे. गुरुनी भक्ति करवाथी तेनी आवी निर्मळ बुद्धि थइ छे, अने भोगसंपत्ति पण प्राप्त थइ छे.

आ प्रमाणे पोताना पूर्वभवनुं वृत्तांत गुरुमुखथी सांभळीने ते विपुळमतिने जातिस्मरण थयुं, तेथी संशय रहित थइने हर्षथी तेणे गुरुने पूछ्युं के " हे स्वामी! वैयावृत्यना केटला प्रकार छे?" गुरु बोल्या के " हे भाविक स्त्री! वैयावृत्यना दश प्रकार छे—

आयरिय उवज्झाए, थेर तवसी गिलाण सेहे अ ।
साहम्मिय कुल गण, संघसंगयं तमिह कायव्वं ॥ १ ॥

भावार्थ—" आचार्य, उपाध्याय, [1]स्थविर, तपस्वी, ग्लान (रोगी), नवदीक्षित शिष्य, साधर्मिक, [2]कुळ, [3]गण अने संघ ए दशना संबंधमां जे वैयावच्च करवी ते दश प्रकार जाणवा. "

आ प्रमाणे सांभळीने विमुळमति निरंतर वैयावृत्य करवामां तत्पर थइ. अनुक्रमे मृत्यु पामीने स्वर्गे गइ. त्यांथी च्यवी थोडा काळमां सिद्धिसुखने पामशे.

" आ अभ्यंतर तपनुं निरंतर आराधन करनार प्राणी आहार करतां छतां पण तपनुं फळ पामे छे. आ तपनुं फळ प्रत्यक्ष जोइने विपुळमतिए ते तप स्वीकार्यो अने तेथी ध्रुव (मोक्ष) पदने पामी. "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ विंशतितमस्तंभस्य
चतुर्नवत्यधिकद्विशततमः प्रबंधः ॥ २९४ ॥

व्याख्यान २९५ मुं.

दशमा तपाचार विषे.

स्वाध्यायः पंचधा प्रोक्तो, महतीनिर्जराकरः ।
तपोपूर्त्तिरनेन स्यात्, सर्वोत्कृष्टस्ततोऽर्हता ॥ १ ॥

भावार्थ—" स्वाध्यायना पांच प्रकार छे, ते कर्मनी मोटी निर्जराना करनारा छे. एनावडे तपनी पूर्णता थाय छे, माटेज अरिहंते ते स्वाध्याय तपने सर्वोत्कृष्ट तप कहेलो छे. "

स्वाध्यायना पांच प्रकार छे, तेमां पहेलो प्रकार वाचना छे. वाचना एटले सूत्र तथा अर्थनो अभ्यास करवो अने कराववो ते. ते प्रकार वज्रस्वामी अने भद्रबाहु

१ वृद्धमुनि. २ एक सूरिनो परिवार. ३ घणा आचार्योनो परिवार.

स्वामी विगेरेनी जेम निरंतर करवो. बीजो पृच्छना नामनो स्वाध्याय छे. सूत्र तथा अर्थ संबंधी संदेह दूर करवा माटे अने तेने हृदयमां दृढ करवा माटे बीजा विशेषज्ञाताने पूछवुं ते पृच्छना कहेवाय छे. ते पृच्छना चिलातिपुत्र, महाबलनो जीव, सुदर्शन शेठ अने हरिभद्र ब्राह्मण विगेरेनी जेम अवश्य करवी. त्रीजो परावर्तना नामनो स्वाध्याय छे. भणी गयेला सूत्रादिक विसरी न जवाय माटे तेनुं वारंवार गणवुं आवृत्ति करवी ते परावर्तना कहेवाय छे. ते अतिमुक्तक तथा क्षुल्लक ऋषिनी जेम करवुं, तथा वणकरनी जेम विस्तारवुं. कोइ एक वणकर पांजणी पातां ते तंतुओना प्रांत भागने पकडीने बंने छेडे उभी रहेली पोतानी बे स्त्रीओ पासे ज्यारे ज्यारे जतो त्यारे त्यारे कुचमर्दन तथा अधरचुंबनादि करतो हतो. तेनी आ प्रमाणेनी चेष्टा मार्गे जता कोइ मुनिए जोइ, एटले ते उभा रह्या. ते वखते वणकरे मुनिने कह्युं के " हे साधु ! तमे शुं जुओ छो ? आवुं सुख तमे क्यांइ जोयुं छे ? तमारे तो स्वप्नमां पण आवुं सुख क्यांथी होय ? " आ प्रमाणे अभिमानवाळुं तेनुं वचन सांभळीने मुनिए अवधिज्ञाननो उपयोग दीधो. तेथी ते वणकरनुं मात्र एक क्षणनुं ज आयुष्य बाकी रहेलुं जोइने तेने पोतानी पासे बोलावीने कह्युं के " हे भद्र ! केटली वखत जीववा माटे आवी कामचेष्टा करे छे ? तारुं आयुष्य तो हमणां ज पूर्ण थवानुं छे. " ते सांभळीने वणकर भय पामीने बोल्यो के "त्यारे तमे मने कांइ पण जीववानो उपाय कहो. " पछी मुनिए तेने नवकार मंत्र आप्यो. ते मंत्रने एकवार गणीने तेनुं परावर्तन करतो ते मृत्यु पामीने स्वर्गे गयो. पोताना पतिनुं अकस्मात मृत्यु जोइने तेनी स्त्रीओए मुनिने कलंक चडाव्युं के " तमे मारा स्वामीने मूठ विगेरे प्रयोगथी मारी नांख्यो. " मुनिए तेमने घणो उपदेश तथा शिखामण आपी, पण ते स्त्रीओए पोतानो कदाग्रह छोड्यो नहीं. अने गामना लोकोने भेळा करी मुनिने कलंक आपवा लागी. मुनि पण ते देवना आगमननी राह जोता त्यां ज उभा रह्या. एटलामां ते वणकर देव पोताना गुरुना उपकारनुं स्मरण थतां तत्काळ त्यां आव्यो, अने गामना लोकोने तथा पोतानी स्त्रीओने सर्व वृत्तांत कहीने तेमनी शंका दूर करी, गुरुने नमी तथा स्तवीने स्वर्गे गयो.

चोथो अनुप्रेक्षा नामनो स्वाध्याय छे. अनुप्रेक्षा एटले सूत्रार्थनो मुखथी उच्चार कर्या विना मनमां ध्यान करवुं ते. कायोत्सर्गादिकमां अने अस्वाध्यायने दिवसे

मुखे परावर्तन थइ शके नहीं, माटे ते वखते अनुप्रेक्षावडे ज श्रुतस्मृति विगेरे थाय छे. परावर्तना करतां अनुप्रेक्षा अधिक फळदायी छे; केमके अभ्यासना वशथी मननुं शून्यपणुं छतां पण मुखवडे परावर्तना थइ शके छे, अने अनुप्रेक्षा तो मन सावधान होय त्यारे ज थइ शके छे. मंत्रनी आराधना विगेरेमां स्मरण (अनुप्रेक्षा) थी ज विशेष सिद्धि थाय छे. कह्युं छे के—

संकुलाद्विजने भव्यः. सशब्दान्मौनवान् शुभः ।
मौनजान्मानसः श्रेष्ठो. जापः श्लाघ्यः परःपरः ॥ १ ॥

भावार्थ—" घणा माणसोमां रहीने जाप करवो ते करतां एकांते करवो ते श्रेष्ठ छे, तेमां पण मुखथी बोलीने करवा करतां मौन धारण करीने करवो ते श्रेष्ठ छे, मौन जप करतां पण मनथी जाप करवो ते श्रेष्ठ छे. एवी रीते उत्तरोत्तर जप वखाणवा लायक छे. "

वळी संलेखना, अनशन विगेरे करवाथी बहु क्षीण शरीरवाळा थइ जवाने लीधे परावर्तनादिक करवानी शक्ति ज्यारे रहेती नथी त्यारे अनुप्रेक्षाए करीने ज प्रतिक्रमण विगेरे नित्यक्रिया थाय छे; अने तेथी ज घातीकर्मनो क्षय थइने केवळज्ञाननी प्राप्ति थाय छे, ने प्रांते सिद्धिपद प्राप्त थाय छे. पांचमो धर्मकथा नामनो स्वाध्याय छे. धर्मकथा एटले धर्मनो उपदेश अने सूत्रार्थनी व्याख्या करवी तथा सांभळवी ते. ते धर्मकथा नंदिषेण ऋषिनी जेम करवी.

आ पांचे प्रकारना स्वाध्याये करीने तपनी पूर्त्ति थाय छे. ते विषे आलोचनाना ग्रंथमां कह्युं छे के " एकासणानो भंग थाय तो पांचसो नवकार गणवा. उपवासनो भंग थाय तो बे हजार नवकार गणवा. नीवीनो भंग थाय तो छसो ने सडसठ नवकार गणवा. आंबिलनो भंग थाय तो एक हजार नवकार गणवा. चोविहारनो भंग थाय तो एक उपवास करवो. तथा हमेशां एकसो नवकार गणवाथी वर्षे छत्रीश हजार नवकारनो स्वाध्याय थाय छे. हमेशां बसो नवकार गणवाथी एक वर्षे बोंतेर हजार अने हमेशां त्रणसो गणवाथी एक वर्षे एक लाख अने आठ हजार नवकारनो स्वाध्याय थाय छे. इत्यादि पोतानी मेळे जाणी लेवुं."

आवी रीतना स्वाध्याय तपने जिनेश्वरे सर्वोत्तम एटले सर्व तपमां उत्तम तप कहेलो छे. श्री महानिशीथ सूत्रमां कह्युं छे के—

बारसविहंमि तवे, अप्भिंतरबाहिरे कुसलदिट्ठे ।
न वि अत्थि न वि अ होहि, सज्झायसमं तवो कम्मं ॥१॥

भावार्थ—" सर्वज्ञ भगवंते कहेला अभ्यंतर अने बाह्य एवा बार प्रकारना तपमां स्वाध्याय जेवुं तपकर्म कोइ छे पण नहीं, अने कोइ थशे पण नहीं. "

मणवयणकायगुत्तो, नाणावरणं च खवइ अणुसमयं ।
सज्झाये वट्टंतो, खणे खणे जाइ वेरग्गं ॥ २ ॥

भावार्थ—" स्वाध्यायमां वर्ततो माणस मन, वचन अने कायानी गुप्तिए करीने प्रतिसमये ज्ञानावरणीय कर्मनो क्षय करे छे, तथा तेने क्षणे क्षणे वैराग्य प्राप्त थाय छे. "

इग दु ति मासखवणं, संवच्छरमवि अणसिओ हुज्जा ।
सज्झायज्झाणरहिओ, एगोवासफलं पि न लभिज्जा ॥३॥

भावार्थ—" एक मास, बे मास के त्रण मासक्षपण करे, अथवा एक वर्ष सुधी अनशन (उपवास) करे, पण जो ते स्वाध्याय ध्यान रहित होय, तो एक उपवासनुं पण फळ मेळवतो नथी. "

उग्गम उप्पाय एसणाहिं, सुद्धं च निच्च भुंजंतो ।
जइ तिविहेणाउत्तो, अणुसमयं भविज्ज सज्झाए ॥ ४ ॥
ता तं गोयम एगग्ग–माणसं नेव उवमिउं सक्का ।
संवच्छरखवणेणवि, जेण तहिं निज्जराणंता ॥ ५ ॥

भावार्थ—" उद्गम, उत्पाद अने एषणाना दोष विनाना शुद्ध आहारने दररोज भोगवतो सतो पण जो ते प्रतिसमये त्रिविध योगवडे स्वाध्यायमां आयुक्त–तत्पर होय तो हे गौतम ! ते एकाग्र मनवाळाने सांवत्सरिक तपवडे करीने पण उपमी शकीए नहीं, अर्थात् तेनी साथे पण सरखावी शकीए नहीं; कारणके सांवत्सरिक उपवास करतां तेने अनंतगुणी निर्जरा थाय छे. " ४–५

हवे प्रसंगागत व्यतिरेकफळ आगळ कहेवाशे एवा सुभद्राना संबंधथी जाणवुं.

सुभद्रानी कथा.

वाराणसी पुरीमां एक सार्थवाह हतो. तेने सुभद्रा नामे स्त्री हती. तेने कांइ पण संतति थती नहोती. तेने माटे ते बहु विकल्प करती हती. एकदा तेने घेर साध्वीसंघाटक (बे साध्वी) भिक्षा माटे आव्यो. तेमने प्रतिलाभीने सुभद्राए विज्ञप्ति करी पूछ्युं के "हे पूज्य ! जे स्त्रीना पुत्रो आंगणामां क्रीडा करता होय ते स्त्रीने धन्य छे ! माटे मारे कांइ संतति थशे के नहीं ?" साध्वी बोल्या के "हे भद्रे ! अमे धर्म विना बीजुं कांइ बोलता नथी." त्यारे सुभद्रा बोली के "तो धर्म कहो." त्यारे ते साध्वीओए सारी रीते धर्मनो उपदेश कर्यो. ते सांभळीने सुभद्रा बोध पामी. पछी अपुत्रपणाना दुःखथी पीडायेली ते सुभद्राए केटलेक काळे पतिनी आज्ञा लइने दीक्षा ग्रहण करी. चारित्रनुं पालन करतां ते स्वाध्यायमां तत्पर रहेती, तोपण रूपवंत एवां बाळकोने देखीने मोहना वशथी ते पोताना उदर पर, खोळामां, हृदय उपर अने जंघा उपर बेसाडती, तथा केटलांक बाळकोने आंगळीनो आधार आपीने भमाडती, अने केटलांकने सुखडी विगेरे खावानुं पण आपती. कह्युं छे के—

केसिं पि देइ खज्जं, अन्नेसिं भुज्जईमन्नेसिं ।
अब्भंगइ उव्वट्टइ, एहाइ य तह फासुअजलेण ॥ १ ॥
धाइकम्माइआ, जं दोसा जिणवरेहिं इह भणिया ।
इहलोअ पारलोईअ, दुक्खाण निबंधणब्भुआ ॥ २ ॥

भावार्थ— "कोइ बाळकने खावानुं आपे, कोइने खवरावे, कोइने अभ्यंग करे, उवट्टणुं करे, तेमज फासु जळवडे न्हवरावे, इत्यादि धात्रकर्म (धात्य माताए करातां कार्य)थी जे दोष जिनेश्वर भगवंते कहेलो छे ते आलोकमां ने परलोकमां दुःखना निबंधनभूत (कारणभूत) जाणवो." १-२

आ प्रमाणे सुभद्रा साध्वीनी चेष्टा जोइने बीजी वृद्धा साध्वीओए तेने शिखामण आपी के "तने आम करवु घटतुं नथी, स्वाध्यायादिक क्रियामां तुं केम प्रमाद करे छे ? मुनिओ तो द्रव्य अने भावथी बाळक साथेनी क्रीडा अथवा तेनी इच्छानो त्याग करीने निरन्तर अध्यात्ममांज आसक्त होय छे." ते

सांभळीने सुभद्रा अति कोप पामीने बीजा उपाश्रयमां गइ, त्यां निरंकुश थइने यथेच्छ रीते बाळकोनी साथे क्रीडा करवा लागी. छेवटे पाक्षिक अनशनथी काळ करीने प्रथम स्वर्गमां देवीपणे उत्पन्न थइ.

एकदा ते सुभद्रा देवी श्री महावीरस्वामीने वांदवा माटे सर्व समृद्धि सहित आवी, त्यां पण पूर्वना अभ्यासथी तेमज बाळकपरना रागथी घणां बाळको विकुर्वीने नाटक करी ते पोताना विमानमां गइ. तेना गया पछी श्री गौतमस्वामीए प्रभुने पूछ्युं के " हे भगवन् ! आ देवताए घणां बाळकोने शामाटे विकुर्व्यां ? " जिनेश्वरे कह्युं के " हे गौतम ! ए बहुपुत्रिका नामनी देवी छे. तेणे पूर्वभवना अभ्यासना वशथी अहीं पण बाळको विकुर्व्यां हतां, शक्रेन्द्रनी सभामां पण तेणे नृत्य करती वखते घणां बाळको विकुर्व्यां हतां, तेथी ते देवी बहुपुत्रिका नामथी प्रसिद्ध थइ छे." ते सांभळीने श्री गौतमस्वामीए तेनो पूर्वभव पूछ्यो, एटले स्वामीए सर्व वृत्तान्त कह्यो. गौतमस्वामीए " हवे पछी ते क्यां जशे ? " एवो प्रश्न कर्यो, त्यारे प्रभु बोल्या के " ए देवी चार पल्योपमनुं आयुष्य पूर्ण करीने विंध्याचळ पर्वतनी समीपे वेभेल नामना सन्निवेशमां सोमा नामे कोइ ब्राह्मणनी रूपवती पुत्री थशे, तेने कोइ राष्ट्रकुट नामनो द्विज परणशे, त्यां तेने युगल संतान उत्पन्न थशे, एम दर वर्षे बब्बे संतति उत्पन्न थतां सोळ वर्षमां बत्रीश पुत्रपुत्रीनो समुदाय थशे. बाळकोमां कोइ तेनी पीठ उपर अने कोइ माथा उपर चडी जशे, कोइ प्रहार करशे, कोइ खावानुं मागशे, कोइ उत्संगमां मूत्रादिक करशे, एम रात्रीदिवस पुत्रोनां दुःखथी पीडा पामीने घणो उद्वेग पामीत सती मनमां विचार करशे के " मारा करतां वंध्या स्त्री श्रेष्ठ छे, के जे सुखे रहे छे अने निरांते निद्रा ले छे. " पछी एकदा साध्वीना संघाडाने प्रतिलाभतां तेने जातिस्मरण उत्पन्न थशे; तेथी पोतानो पूर्वभव जाणीने ते वैराग्यथी दीक्षा ग्रहण करशे. पछी एकादश अंगनो अभ्यास करी सर्व जनोनी समक्ष पोताना पूर्वभवनुं चारित्र प्रगट करी अंते एक मासना अनशनथी काळधर्म पामीने बे सागरोपमना आयुष्यवाळो देव थशे, त्यांथी च्यवीने महाविदेह क्षेत्रमां सिद्धिपदने पामशे..

" सुभद्रा साध्वी स्वाध्यायादिक क्रियामां प्रवर्तता छतां पण बाळकोने

जोइने तेनापरना मोहथी क्रियामां शिथिल थइ, तो तेनुं फळ बीजा मनुष्यभवमां पामीने पछी तेनी आलोचना करी प्रांते मुक्ति पामी."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ विंशतितमस्तंभस्य पञ्चनवत्यधिकद्विशततमः प्रबंधः ॥ २९५ ॥

व्याख्यान २९६ मुं.

ध्यान नामना अगियारमा तपाचार विषे.

सिद्धाः सिध्यन्ति सेत्स्यन्ति, यावन्तः केऽपि मानवाः ।
ध्यानतपोबलेनैव, ते सर्वेऽपि शुभाशयाः ॥ १ ॥

भावार्थ—" जे कोइ मनुष्यो सिद्ध थया छे, सिद्ध थाय छे, अने सिद्ध थशे ते सर्वे शुभाशयवाळा ध्यानतपना बळे करीनेज सिद्धिपणुं पामे छे एम जाणवुं."

अहीं एवी मतलब छे के नाना प्रकारनां दुस्तप तप तपे, तोपण ते शुभ ध्यानथीज सिद्धिने पामे छे; केमके मरुदेवी माता अने भरत चक्री विगेरे तप विना पण सिद्धि पाम्या छे, माटे मोक्षनुं व्यवधान रहित अवन्ध्य साधन शुभ ध्यानज छे; बीजां सर्व सत्कृत्यो परंपराए करीनेज मोक्षनां साधन छे. सर्व सुकृत्यो करतां शुभ ध्याननुंज सर्व प्रकारे अतिशयपणुं छे. कह्युं छे के–

निर्जराकरणे बाह्याच्छ्रेष्ठमाभ्यन्तरं तप ।
तत्राप्येकातपत्रत्वं, ध्यानस्य मुनयो जगुः ॥ १ ॥

भावार्थ—" निर्जरा करवामां बाह्य तप करतां अभ्यन्तर तप श्रेष्ठ छे, तेमां पण ध्यानतपनुं एकछत्रपणुं छे. ते तप 'चक्रवर्ती छे, एम मुनिओ कहे छे."

ध्यानना काळनुं प्रमाण आ प्रमाणे कह्युं छे–

अन्तर्मुहूर्त्तमात्रं यदेकाग्रचित्ततान्वितम् ।
तद्ध्यानं चिरकालीनां, कर्मणां क्षयकारणम् ॥ १ ॥

भावार्थ—" अन्तर्मुहूर्त मात्र जे एकाग्र चित्तपणुं ते ध्यान कहेवाय छे. तेवुं ध्यान घणा काळनां बांधेलां कर्मोनो क्षय करवामां कारणभूत छे. "

आ अर्थने पुष्टि करनारुं सिद्धान्तनुं वाक्य पण छे के—

अंतोमुहुत्तमित्तं, चित्तावत्थाणमेगवत्थुंमि ।
छउमत्थाणं झाणं, जोगनिरोहो जिणाणं तु ॥ १ ॥

भावार्थ—" एकज वस्तुमां अंतर्मुहूर्त मात्र जे चित्तनी एकाग्रता ते छाद्मस्थिकनुं ध्यान छे अने योगनिरोध ते जिनेश्वरोनुं ध्यान छे.

आ ध्यान घणा काळनां संचित करेलां अनन्त कर्मोनो पण तत्काळ क्षय करे छे. ते विषे भाष्यकार कहे छे के—

जह चिअसंचिअमिंधणमणलो य पवण सहिओ दुअं डहइ ।
तह कम्मिंधणममिअं खणेण झाणाणलो डहइ ॥ १ ॥

भावार्थ—" जेम चिरकाळनां एकठां करेलां काष्ठोने पवननी साथे रहेलो अग्नि तत्काळ बाळी नाखे छे, तेम अनन्त कर्मरूपी इंधनने एक क्षणमात्रमांज ध्यानरूपी अग्नि बाळी नाखे छे. "

अहवा घणसंघाया, खणेण पवणाहया विलिज्जंति ।
झाणपवणावहूआ, तह कम्मघणा विलिज्जंति ॥ १ ॥

भावार्थ—" अथवा जेम पवनथी हणायेलो मेघसमूह एक क्षणमात्रमां वींखाइ जाय छे (नाश पामी जाय छे), तेम ध्यानरूपी पवनथी हणायेलो कर्मरूपी मेघ क्षण मात्रमां वेराइ जाय छे. "

हवे प्रशस्त अने अप्रशस्त निमित्तो ध्यानने अनुसारेज फळ आपे छे. ते विषे कह्युं छे के—

प्रशस्त कारणानि स्युः, शुभानि ध्यानयोगतः ।
अनर्हाण्यपि तान्येव, अनर्हध्यानपुष्टितः ॥ १ ॥
अप्रशस्तनिमित्तानि, शुभानि ध्यानशुद्धितः ।
तद्रूपाणि भवन्त्येव, अशुभाश्रवसंश्रयात् ॥ २ ॥

भावार्थ—" शुभ ध्यानना योगथी प्रशस्त एवां कारणो शुभ थाय छे अने तेज कारणो अशुभ ध्यानना पुष्टिथी अशुभ (अयोग्य) पण थाय छे. तेमज ध्याननी शुद्धिथी अप्रशस्त निमित्तो शुभ थाय छे, अने अशुभ आश्रवनो आश्रय करवाथी तेज कारणो अशुभ थाय छे. "

आ बे श्लोकोनुं तात्पर्य एवुं छे के श्री जिनेश्वरना मतमां जेटला सुकृत्योना प्रकारो छे ते सर्वे जो के मुक्तिना हेतुओ छे, परंतु ते सत्कृत्यो शुभध्यानसंयुक्त होय तोज मुक्तिनां कारण छे, नहीं तो मुक्तिनां कारण नथी. ते उपर घणा वखत सुधी चारित्रनुं आराधन करनार अंगारमर्दक नामना आचार्यनुं दृष्टांत स्वयमेव जाणी लेवुं. अने शुभ ध्यान सते स्त्री धनादिक जे कांइ भववृद्धिना कारणभूत छे ते पण मुक्तिनां कारण थाय छे. कह्युं छे के—

अहो ध्यानस्य माहात्म्यं, येनैकापि हि कामिनी ।
अनुरागविरागाभ्यां, भवाय च शिवाय च ॥ १ ॥

भावार्थ—" अहो ! ध्याननुं केवुं माहात्म्य छे के जेथी एकज स्त्री अनुराग अने विरागे करीने भवने माटे तथा मोक्षने माटे थाय छे, एटले अनुरागथी भवने माटे थाय छे अने विरागथी मोक्षने माटे थाय छे. " सूत्रमां पण कह्युं छे के—

जे जित्तिआयहेऊ, भवस्स तेचेव तित्तिआ मुक्खे ।
गुणगणाईआ लोगा, दुराहवि पुन्ना भवे तुल्ला ॥ १ ॥

भावार्थ—" जे जेटला संसारना हेतु छे तेज तेटला मोक्षना हेतु छे; गुणगणातीत लोकमां बंने पूर्ण छे अने सरखाज छे. "

आ विगेरे अनेक युक्तिए करीने ध्याननुं माहात्म्य शास्त्रमां वर्णव्युं छे. ते सांभळीने अप्रशस्त अनेक निमित्तो मळे तोपण वसुभूतिनी जेम शुभ ध्यान तजवुं नहीं.

वसुभूतिनी कथा.

वसंतपुरमां शिवभूति अने वसुभूति नामना बे भाइओ हता. एकदा मोटा भाइ शिवभूतिनी स्त्री कमळश्रीए कामदेव जेवा वसुभूति दियरने जोइने राग उत्पन्न थवाथी भोगने माटे तेनी पासे याचना करी; त्यारे वसुभूति बोल्यो के " हे

मुग्धा ! ' मोटा भाइनी पत्नी माता समान जाणवी ' एम नीतिशास्त्रमां कहेलुं छे. " ते सांभळीने कमलश्री बोली के " हे स्वामी ! मारा अंगमां व्यापेली कामज्वरनी व्यथा शांत कर, नहीं तो तने मोटुं पाप लागशे. तुं लोकव्यवहारथी अज्ञात छे, तेथी शास्त्रना वाक्यथी भ्रान्ति पाम्यो छे. व्यवहारने नहीं जाणनारानुं एक दृष्टान्त तने कहुं ते सांभळ. हरिस्थळ नामना गाममां न्याय, ज्योतिष, व्याकरण अने वैद्यकशास्त्रमां कुशळ थयेला पण व्यवहारथी विकळ चार ब्राह्मणना पुत्रो परस्पर प्रीतिवाळा हता. एक दिवस ते चारे जण पोतपोतानी विद्याथी गर्वित थयेला परदेशना कौतुको जोवा माटे पोताना गामथी नीकळ्या. मार्गमां कोइ गाम आव्युं त्यां भोजन माटे रोकाया. पछी जे नैयायिक हतो तेणे घी लाववानुं, जोतिषीए बळद चारवानुं, वैयाकरणीए रसोइ करवानुं अने वैद्ये शाक लाववानुं काम माथे लीधुं. पछी पोतपोताना कार्यमां चारे जणा प्रवृत्त थया. तेमां नैयायिक घी लइने आवतां मार्गमां विचार करवा लाग्यो के ' घृताधारं पात्रं पात्राधारं घृतं वा ' घीने आधारे पात्र छे के पात्रने आधारे घी रह्युं छे ? एम विचारीने खात्री करवा माटे ते घृतपात्रने उंधुं वाळ्युं, एटले तेमांनुं बधुं घी पृथ्वीपर पडी गयुं. पछी आगळ चालतां सामेथी हाथी आवतो जोइने तेणे विचार्युं के " आ हाथी प्राप्त (अडकनार) ने मारे के अप्राप्तने मारे ? जो अप्राप्तने हणे तो तो कोइ पण जीवे नहीं, अने तेवी रीते जोवामां पण आवतुं नथी. जो कदाच प्राप्तने हणे तो तेना महावतने हणशे, हुं तो अति दूर छुं, अने तेने अडकतो पण नथी. " इत्यादि विचार करे छे, तेवामां हाथीए तेने तत्काळ सूंढथी पकड्यो. हवे बीजो जे जोषी हतो ते बळद चारवा गयो, त्यां बळदो लीलां घास चरता चरता दूर नीकळी गया. तेथी तेनी शोधने माटे ते ज्योतिषशास्त्रनुं अवलोकन करवा लाग्यो के " आ मारा बळदो अंध नक्षत्रमां, काण नक्षत्रमां, चीप्पट नक्षत्रमां के दिव्यचक्षु नक्षत्रमां-क्या नक्षत्रमां गया छे ? वळी तेओ कइ दिशामां गया छे ? अने चर लग्नमां गया छे के स्थिर लग्नमां गया छे ? " इत्यादि विचार करवा लाग्यो, तेटलामां तो ते बळदो अति दूर नीकळी गया. हवे त्रीजो जे वैयाकरणी हतो ते रसोइ करतो हतो, तेणे चूला पर खीचडी मूकी हती. तेमां ' खदबद ' शब्द थवा लाग्यो. ते सांभळीने तेणे विचार्युं के " अहो ! आ ' खदबद ' शब्द कया व्याकरणमां कया सूत्रथी सिद्ध थयो छे ? " इत्यादि विचार

करवा लाग्यो, एटले खीचडी दाझी गइ. हवे चोथो जे वैद्य हतो, ते शाक लेवा गयो हतो. त्यां केळां, केरीं, कंकोडां, भाजी, लींबु विगेरे घणां शाक जोइने तेणे विचार्युं के आ सर्वे शाक वात, पित्त, कफ, श्लेष्म अने त्रिदोष विगेरे महा व्याधिओने उत्पन्न करवाना कारणभूत छे, माटे ते शाक तो लेवां नहीं. पण आ लींबडानुं शाक ठीक छे, केमके वैद्यकशास्त्रमां कह्युं छे के—

निंबो वातहरः कलौ सुरतरुः शाखाप्रशाखाकुलः
पित्तघ्नः कृमिनाशनः कफहरो दुर्गन्धनिर्नाशनः ।
कुष्ठव्याधिविषापहो व्रणहरो द्राक्पाचनः शोधनो
बालानां हितकारको विजयते निंबाय तस्मै नमः ॥ १ ॥

भावार्थ—" शाखा प्रशाखाए करीने युक्त एवो आ लींबडो कलियुगने विषे कल्पवृक्ष समान विजय पामे छे, ते वातनुं हरण करे छे, पित्तने हणे छे, कृमिनो नाश करे छे, कफनुं हरण करे छे, दुर्गन्धनो नाश करे छे, कुष्ट (कोढ) ना व्याधिनो अने विषनो नाश करे छे, व्रण-चांदा विगेरेनुं हरण करे (रुझावे) छे, शीघ्र पाचन करनार छे, कोठाने शुद्ध करे छे, वळी बाळकोने विशेषे हित करनार छे माटे ते निंबवृक्षने नमस्कार छे. "

आम विचारीने ते वैदकशास्त्रने आधारे लींबडानुं शाक लइने आव्यो. आ प्रमाणे तेओ शास्त्र भणेला हता, छतां लोकव्यवहारने नहीं जाणवाथी पोतपोताना कार्यमां भ्रष्टताने पाम्या. माटे हे दियर ! तुं पण शास्त्रनी जडता छोडीने मारी साथे क्रीडा कर, नहीं तो तने मोटो दोष प्राप्त थशे. " आ प्रमाणे आग्रहवाळां भाभीनां वचनो सांभळी वसुभूति वैराग्य पामी घर तजी दइने यति थयो. कह्युं छे के—

अपसर सखे दूरादस्मात् कटाक्षविषानलात् ।
प्रकृतिविषमाद्योषित्सर्पाद्विलासलसत्फणात् ।
इतरफणिना दष्टः शक्यश्चिकित्सितुमौषधै-
श्चटुलवनिताभोगिग्रस्तं त्यजन्ति हि मंत्रिणः ॥ १ ॥

भावार्थ—" हे मित्र ! जेमां कटाक्षरूपी विषनो अग्नि रहेलो छे, वि-

लासरूपी जेने उछळती फणा छे, अने जे स्वभावथीज विषम छे. एवा आ स्त्री रूपी सर्पथी दूर खसी जा; केमके बीजा लौकिक सर्पथी डसायेला माणसनी औषधादिकथी चिकित्सा करी शकाय छे, पण स्त्रीरूपी चपळ सर्पथी ग्रस्त थयेलाने तो मंत्रीओ[1] पण छोडी दे छे; तेओ पण तेनी चिकित्सा करी शकता नथी. "

आ प्रमाणे स्त्रीनो संग विषम जाणीने ते महात्मा वसुभूति सर्वथा स्त्री-संगनो त्याग करीने विहार करवा लाग्या. तेनी भाभी पण तेणे दीक्षा लीधाना खबर जाणीने रागना उदयथी आर्त्तध्याने मृत्यु पामी कोइक गाममां कूतरी थइ. त्यां ते वसुभूति मुनिने गोचरी माटे फरता जोइने पूर्वरागना वशथी ते कूतरी शरीरनी छायानी जेम ते मुनिनी साथेज चालवा-रहेवा लागी. सर्व काळे अने सर्व स्थाने ते कूतरीने साथे रहेती जोइने लोको ते मुनिने शुनीपति (कूतरीनो स्वामी) कहेवा लाग्या. आवा लोकवाक्यथी लज्जा पामीने मुनि कोइ प्रकारे ते कूतरीनी दृष्टिने भूलावी त्यांथी जता रह्या. मुनिने नहीं जोवाथी ते कूतरी आर्त्त-ध्यानथी मृत्यु पामी कोइ वनमां वानरी थइ. त्यां पण कोइ वार वसुभूति मुनिने मार्गमां विचरता जोइने कूतरीनी जेम तेमनी पाछळ पडी ने साथेज फरवा लागी. तेवी रीते जोइने लोको मुनिने वानरीपति कहेवा लाग्या. जेम जेम लोको मुनिने वानरीपति कहेता, तेम तेम ते वानरी अत्यंत हर्ष पामती, अने हमेशां मुनिनी पासे विषयनी चेष्टा कर्या करती. आ सर्व जोइने मुनि विचारता के " अहो ! मारा कर्मनी गहन गति छे!" पछी शुनीनी जेम आ वानरीने पण कोइ प्रकारे भूलावो खवरावीने मुनि जता रह्या, एटले ते वानरी पण आर्त्तध्यानथी मृत्यु पामीने कोइ जळाशयमां हंसी थइ. ते जळाशय पासे ते मुनि एकदा शीतपरिषह सहन करवा माटे प्रतिमा धारण करीने उभा हता, तेने जोइने हंसी कामातुर थइ गइ, तेथी बे हाथवडे स्त्रीनी जेम पाणीथी भींजायेली बन्ने पांखोवडे तेणे मुनिने आलिंगन कर्युं, अने वारंवार करुण स्वरे अव्यक्त मधुर अने विरह वेदनावाळी वाणी बोलवा लागी. मुनि तो शुभध्यानमांज मग्न रह्या अने पछी त्यांथी अन्यत्र विहार कर्यो. मुनिने नहीं जोवाथी ते हंसी आर्त्तध्यानवडे तेनुंज स्मरण करती मृत्यु पामीने व्यन्तर निकायमां देवी थइ. त्यां तेणे विभंग ज्ञानथी पोतानो अने मुनिनो सर्व संबंध जाणीने "आ मारा दियरे मारुं वचन मान्युं नथी" ए वात संभारी क्रोधा-

१ सर्पना पक्षमां मंत्र जाणनार अने स्त्रीना पक्षमां प्रधान विगेरे.

यमान थइने ते मुनिने हणवा तैयार थइ; पण मुनिना ध्यानतपना प्रभावथी ते तेने मारी शकी नहि. पछी ते देवी मुनिनी पासे पोतानी दिव्य शक्तिथी अनेक स्त्रीओनां रूपो विकुर्वीने बोली के " हे मुनि ! तमे शुं विचारो छो ? तमारुं संयम सद्य सफळ थयुं छे, माटे आ दिव्य भोग भोगवो. हवे शामाटे फोगट तप करो छो ? तमारी वयने योग्य प्रत्यक्ष प्राप्त थयेलुं सुख अंगीकार करो. " इत्यादि प्रतिकूळ अनेक उपसर्गो ते देवीए कर्या, पण मुनि किंचित् मात्र क्षोभ पाम्या नहीं. तेओ विचारवा लाग्या के " संसारमां आसक्त थयेला बाह्यदृष्टिवाळा जीवोने सुंदर स्त्री अमृतना घडा जेवी लागे छे, ते स्त्रीने माटे धन उपार्जन करे छे, अने तेनेज माटे मोहनिमग्न थइने रावणादिकनी जेम प्राणनो पण त्याग करे छे; परंतु जेओ निर्मळ अने एकान्त आनंदमय आत्मस्वरूपने जोवामां दक्ष थयेला छे तेओने तो आ स्त्रीओ मळ, मूत्र, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा अने शुक्र विगेरे अशुचि पदार्थनुं पात्र मालम पडे छे. तेवी स्त्रीओनो त्याग करनार जंबूस्वामी विगेरेज सर्वोत्तम छे." इत्यादि निर्मळ ध्यानमां आरूढ थयेला ते मुनिने अनुक्रमे केवळज्ञान प्राप्त थयुं. पछी सर्व लोकोनी समक्ष पोतानो अने ते देवीनो सर्व संबंध कहीने अनुक्रमे ते मुनि मुक्तिपदने पाम्या.

" क्षमा गुण धारण करनार मुनिने ध्यानथी चळित करवा माटे रागथी विह्वळ थयेली ते स्त्री कोइ पण भवमां समर्थ थइ नहीं, अने ते मुनीश्वर पण अनेक प्रकारना परिषहो उत्पन्न थया छतां एकाग्र ध्यानथी भ्रष्ट थया नहीं. "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ विंशतितमस्तंभस्य
षण्णवत्यधिकद्विशततमः प्रबंधः ॥ २९६ ॥

व्याख्यान २६७ मुं.

कायोत्सर्ग नामना बारमा तपाचार विषे.

प्रायो वाङ्मनसोरेव, स्याद्ध्याने हि नियंत्रणा ।
कायोत्सर्गे तु कायस्याप्यतो ध्यानात् फलं महत् ॥ १ ॥
ऊर्ध्वस्थशयिताद्यैश्च, कायोत्सर्गः क्रियारतैः ।
एकोनविंशतिदोषैर्मुक्तः कार्यो यथाविधिः ॥ २ ॥

भावार्थ—" ध्यानमां प्राये वाणी अने मननीज नियंत्रणा (कबजे राखवापणुं) थाय छे. पण कायोत्सर्गमां तो कायानी पण नियंत्रणा थाय छे, माटे ध्यान करतां कायोत्सर्गनुं मोटुं फळ छे (१). क्रियामां आसक्तिवाळा पुरुषोए उभा रहेवावडे तथा शयन विगेरेए करीने ओगणीश दोषे करीने रहित एवो कायोत्सर्ग यथाविधि करवो. २. "

एकांत स्थानमां लांबा हाथ राखीने कायोत्सर्ग करवामां आवे छे ते. कायोत्सर्गनिर्युक्तिमां कहेली घोडगलयखंभाइ० ए गाथामां कहेला ओगणीश दोष रहित, उभा रहीने अथवा शयनादिकवडे करवो. आदिनुं ग्रहण कर्युं छे माटे बेठा बेठा पण करी शकाय छे. तेमां छद्मस्थ अवस्थामां तीर्थंकर अने जिनकल्पी मुनि विगेरे तो उभा रहीनेज कायोत्सर्ग करे छे; केमके तेओ बेसवुं, सुवुं विगेरे कांइ करता नथी. कदाचित् जिनकल्पी बेसे छे, त्यारे पण ते उत्कटिक आसनेज बेसे छे, अने सुवे तोपण तेज आसने रात्रीना त्रीजा प्रहरे सुवे छे. स्थविरकल्पीए पोतानी शक्ति प्रमाणे कायोत्सर्ग करवो, पण तेना ओगणीश दोष तजवा. आ प्रसंग उपर एक वृत्तांत लखीए छीए.

सुस्थित मुनिनुं दृष्टान्त.

श्री राजगृही नगरीमां दर्दुर नामना देवताए श्रेणिक राजाना समकितनी परीक्षाथी प्रसन्न थइने तेने अढार सरनो एक हार, दिव्य वस्त्रयुगळ तथा बे कुंडळ आप्यां हतां. राजाए हार चेलणाने आप्यो, अने वस्त्र तथा कुंडल सुनंदाने आप्यां. ते जोइने चेलणाए खेद पामीने कह्युं के "जो-तमे मने ते वस्तुओ

नहीं आपो तो हुं मारुं जीवित तजी दइश." राजाए कह्युं के "तने जेम रुचे तेम कर." ते सांभळीने चेलणाने घणो रोष चड्यो. तेथी महेलना गोखमां एकली आर्त्तध्यान करती बेठी. रोषनो आवेश होवाथी रात्री छतां तेने निद्रा न आवी. ते वखते ते गोख नीचे सेचनक हाथीनो महावत अने मगधसेना नामनी दासी परस्पर वातो करता हता. तेमां दासीए पोताना जार महावतने कह्युं के "काले दासीओनो महोत्सव छे, तेथी तुं मने आ चंपकमाळा हाथीना कंठमांथी उतारीने आप, जेथी ते पहेरीने हुं मारी जातिमां अधिक शोभा पामुं." महावत बोल्यो के "राजानी आज्ञाना भंगनुं दुःख सहन करवा हुं समर्थ नथी." दासीए कह्युं के "त्यारे हुं प्राण तजीश." महावत बोल्यो के "हुं ब्रह्मदत्त चक्रीनी जेवो मूढ नथी, के जेथी स्त्रीना वचनथी चितामां प्रवेश करवा तैयार थाउं." (ते ब्रह्मदत्तने बकराए बोध आप्यो हतो, विगेरे कथा पूर्वे लखाइ गइ छे.) ते सांभळीने दासी बोली के-"हुं मरुं तो मारा जीवनी जाउं, तेमां तारुं शुं गयुं ? तुं तो बीजी स्त्रीमां आसक्त थइ मारुं नाम पण नहीं ले; परंतु तारुं मन पथ्थर करतां पण वधारे कठण देखाय छे." इत्यादिक तेमनी वातो सांभळीने चेलणाए विचार्युं के "हुं जो प्राणनो त्याग करुं, तो तेमां राजाने कांइ पण हानि थवानी नथी, तेने तो बीजी पांचसो राणीओ छे, पण हुं तप संयमादिक कर्या विना मनुष्य-जन्मथी भ्रष्ट थाउं." एम विचारीने ते पाछी राजा उपर अनुरागवाळी थइ.

एकदा ते हारनो दोरो तुटी गयो. पेला दर्दुरांक देवताए हार आपती वखते कह्युं हतुं के "आ हार तुट्या पछी तेने जे सांधशे ते मस्तक फाटवाथी मरण पामशे." राजाए शहेरमां पटह वगडाव्यो के "जे आ अढार सरनो हार सांधी आपशे तेने राजा एक लाख दिनार आपशे." ते सांभळीने एक वृद्ध मणिकारे पोताना कुटुंबना सुख माटे ते पटह ग्रहण कर्यो. ते वखते राजाए तेने अर्धो लाख द्रव्य प्रथम आप्युं अने कह्युं के "ज्यारे हार पूरो संधाशे त्यारे बाकीनुं द्रव्य आपशुं." पछी ते हार लइने ते मणिकारे पोताना घरना भागमां एक सरखी भूमिपर ते हार मूक्यो, पछी एक सूक्ष्म दोरी घी तथा मधथी वासित करीने मोतीनां छिद्रमां परोववा लाग्यो, पण मोतीनां छिद्र वांकां होवाथी तेने सांधवाने समर्थ थयो नहीं. तेवामां मधनी गंधथी घणी कीडीओ त्यां आवी. ते दोरीनो छेडो पकडीने धीमे धीमे मोतीनां छिद्रमां चाली, एटले ते दोरी परोवाइ गइ. पछी ते मणिकारे गांठ वाळीने हार सांधी दीधो; परंतु तत्काळ तेनुं मस्तक फाटी गयुं, तेथी ते मृत्यु पामीने तेज गाममां

वानर थयो. तेने एकदा दरेक घेर फरतां फरतां पोतानुं घर तथा पुत्रादिकने जोइने जातिस्मरण थयुं. ते जोइने पुत्रो उपरनी अनुकंपाथी तेणे 'हुं तमारो पिता छुं' एवा अक्षर पुत्रनी पासे लख्या. ते जोइने तेना सर्वे स्वजनोए आश्चर्य पामी विचार्युं के "अहो! कर्मनी गति केवी विचित्र छे!" पछी ते वानरे अक्षर लख्या के "बाकीनुं द्रव्य राजाए तमने आप्युं के नहीं?" पुत्रो बोल्या के "नथी आप्युं." ते सांभळीने तेने राजा उपर द्वेष उत्पन्न थयो, पछी ते हारनी चोरी करवा माटे छिद्र जोवा लाग्यो. एकदा चेलणा राणी सायंकाळे वावमां स्नान करती हती, ते वखते तेणे सर्व अलंकारो उतारीने बहार मूक्यां हतां, तेमां ते हार देखीने लाग जोइ वानराए ते हार गुप्त रीते उपाडी लीधो अने पोताना पुत्रने आप्यो. राणी न्हाइने अलंकार पहेरवा लागी ते वखते हार जोयो नहीं, तेथी ते विलखी थइ गइ. तेणे ते वृत्तांत राजाने कह्यो. राजाए अभयकुमारने बोलावीने कह्युं के "आ हार सात दिवसमां शोधी लाव, ते सिवाय तारो जीववानो उपाय देखातो नथी." पछी अभयकुमार मंत्रीए ते हारनी निरंतर शोध करवा मांडी.

हवे ते नगरमां कोइ आचार्यना पांच शिष्यो आव्या हता, तेमनां शिव, सुव्रत, धन्य, जोणक अने सुस्थित एवां नाम हतां; तेमांथी सुस्थित मुनि जिनकल्पीपणुं अंगीकार करवानी इच्छाथी तेनी पांच प्रकारनी भावना भावता हता, (तुलना करता हता). तेनां नाम आ प्रमाणे—

तवेण सत्तेण सुत्तेण, एगत्तएण बलेण य ।
तुलणा पंचहा वुत्ता, जिणकप्पं पडिवज्जओ ॥ १ ॥

भावार्थ—"जिनकल्प प्रतिपन्न करवाने इच्छनार मुनिने माटे तप, सत्त्व, सूत्र, एकत्त्व अने बळ ए पांच प्रकारनी तुलना कही छे."

पहेली तपभावना आ प्रमाणे छे के-प्रथम ते पोरसी विगेरे तपनो अभ्यास करे छे, तेमां गिरिनदीमां उतरता सिंहनी जेम क्षुधानो विजय करवाने माटे त्रण गणुं तप करवुं. जेम कोइ पर्वतमांथी नीकळती नदी जळथी भरपूर होय, ते नदीने उतरतो सिंह सरल मार्ग आवे त्यांसुधी वक्र गतिए चाले, तेवीज रीते एक एक उपवासनी वृद्धि करतां कांइ पण हानि न थाय तेम छ मासना उपवास करवा सुधी तपने

वृद्धि पमाडे. बीजी सत्त्व भावना ए प्रमाणे छे के–रात्रीने वखते प्रथम उपाश्रयमां रहीने कायोत्सर्ग करतां सर्प, चोर, गोपाळ तथा भयंकर संग्राम विगेरेथी भय पामे नहीं, अने रात्रीना पहेला त्रण प्रहर सुधी ध्यानमांज स्थित रहे, बीलकुल निद्रा ले नहीं. तेने कायोत्सर्ग करवानां पांच स्थान छे. तेमां प्रथम उपाश्रयमां, बीजुं उपाश्रय बहार, त्रीजुं चौटामां, चोथुं शून्य घरमां अने पांचमुं स्मशानमां. आ स्थानोमां ध्यानमग्न रहेतां भयंकर स्वरूपवाळा देवताओ बीवडावे तोपण किंचित् भय पामे नहीं; सर्वत्र निर्भय रहे. [आ भावनामां भय ने निद्रानो जय करवानो छे]. त्रीजी सूत्र भावना एवी रीते छे के–नंदीसूत्र विगेरे सर्व शास्त्र पोताना नामनी जेम कोइ पण वखते भूले नहीं, कंठे राखे अने काळना प्रमाणने सूत्रने आधारे बराबर जाणे. श्वासोच्छ्वास, प्राण, स्तोक, मुहूर्त तथा पोरसी विगेरे काळना प्रमाणने, दिवसे तथा रात्रीए मेघादिकथी आकाश छवायुं होय तोपण यथास्थित जाणे, तथा पडिलेहणनो काळ, बे टंकना प्रतिक्रमणनो काळ, भिक्षानो काळ तथा विहारादिकनो काळ पण देहनी छाया न देखाती होय त्यारे पण बराबर जाणे. चोथी एकत्व भावना एवी रीते छे के —जो के प्रथम गृहस्थीपणानुं स्त्रीधनादिक संबंधी ममत्व साधुओए छोडी दीधुं छे, तोपण पाछळथी आचार्यादिक पद प्राप्त थवाथी गच्छ विगेरे उपर ममत्व उत्पन्न थाय छे; तेवो ममत्व न करवो, अने दृष्टिपात, आलाप, परस्पर कुशळ पृच्छा अने कथाव्यतिकर कहेवा विगेरेनी जे प्रथम प्रवृत्ति हती, ते सर्वनो त्याग करवो. छेवट देह अने उपधि आदिकनो ममत्व पण तजवो. पांचमी बळ भावना आ प्रमाणे छे के–तप प्रमुखना वशथी जो शरीरनुं बळ क्षीण थयुं होय तोपण चित्तना धैर्यनो त्याग करे नहीं. महा घोर परिषह उत्पन्न थाय, अथवा बीजां दुर्धर प्राणीओना भयजनक उपसर्गो थाय तोपण पोतानुं धैर्य मूके नहीं. आ प्रमाणे पांचे भावनाथी कांइ पण क्षोभ न पामे तो पछी जिनकल्पने अंगीकार करी शकाय छे. सुस्थित मुनि बीजी सत्व भावनाए करीने आत्माने भावता हता. तेमां पण उपाश्रय बहार रहीने कायोत्सर्ग करवारूप बीजा सत्त्व योगनी भावना करता हता.

ते पांचे मुनिओ अभयकुमार मंत्रीनी यानशाळामां मासकल्प रह्या हता. हवे अभयकुमारे घणी शोध करी तोपण हार मळ्यो नहीं, तेथी " छ दिवस वीती गया अने सातमो दिवस छे, कोण जाणे काले शुं थशे ? " इत्यादि

विचारथी ते शोकातुर थया सता 'आजे तो साधु पासे जइने तेमनी पर्युपासना करुं.' एवो विचार करीने उपाश्रयमां आवी रात्रिपोसह लइ त्यांज रात्रि रह्या. ते समये सुस्थित मुनि प्रतिक्रमण करीने उपाश्रयनी बहार जइ कायोत्सर्गे रह्या.

अहीं पेला मणिकारना पुत्रने विचार थयो के " जो कदाच राजाने आ हार मारी पासे छे एम खबर पडशे, तो आखा कुटुंब सहित मारा जीवितनी हानि थशे." पछी तेणे ते हार वानरने पाछो आप्यो. माणसो उपर कृपावान वानर ते हार बीजे कांइ न मूकतां साधुना उपाश्रय पासे आव्यो, त्यां मुनिने उपाश्रयनी बहार एकला कायोत्सर्गे रहेला जोइने ते हार मुनिना कंठमां पहेरावी दीधो. हवे उपाश्रयमां रहेला बीजा चार साधुओ एक एक प्रहरना वारा प्रमाणे सुस्थित मुनिना शरीरने प्रमार्जवा (तेनी संभाळ लेवा) आवता हता. तेमां प्रथम शिवसाधु पहेले प्रहरे कायोत्सर्गे रहेला सुस्थित मुनिना देहनुं प्रमार्जन करवा माटे आव्या. ते वखते तेमना कंठमां दिव्य कांतिवाळो हार जोइने तेणे धार्यु के " जरुर जेने माटे अभयमंत्री चिंतातुर छे तेज आ हार जणाय छे." पछी सुस्थित मुनिना देहनुं प्रमार्जन करीने पहेलो प्रहर पूरो थये उपाश्रयनी अंदर निस्सिहि कहीने प्रवेश करतां तेने बदले शिवसाधु बोल्या के " अहो! महाभय प्राप्त थयुं." ते सांभळी अभये पूछयुं के " निर्भय एवा मुनिओने भय क्यांथी होय ?" साधुए कह्युं के " पूर्वे अनुभवेला भयनुं स्मरण थयुं." अभये कह्युं के " हे पूज्य! ते वृत्तान्त जाणवा इच्छुं छुं." त्यारे मुनि बोल्या के—

अवन्ती नगरीमां सोम अने शिवदत्त नामे बे भाइओ रहेता हता. ते बन्ने धन मेळववानी इच्छाथी व्यापार करवा माटे सौराष्ट्र देशमां गया. त्यां अनेक प्रकारना अधम तथा कर्मादानना व्यापार करीने तेमणे घणुं द्रव्य मेळव्युं. पछी पोताना घर तरफ आववा तैयार थया. ते वखते सर्व धन एक वांसळीमां भरीने मोटा भाइए ते वांसळी पोतानी केडे बांधी. मार्गमां चालतां तेने विचार थयो के " जो हुं नाना भाइने मारी नांखुं तो आ धननो भागीदार कोइ रहे नहीं, अने सर्व धन मारा हाथमांज रहे." एम विचार करतो करतो ते नाना भाइ सहित गन्धवती नदी पासे आवी पहोंच्यो; एटले तेणे विचार्यु के "आ द्रव्यना प्रभावथी प्रतिक्षणे मने रौद्रध्यान थया करे छे, माटे आ अनर्थ करनारी वांसळीने नदीना मोटा द्रहमांज नाखी दउं." एम विचारीने तेणे तरतज नदीना मोटा धरामां ते वांसळी नांखी दीधी. ते जोइने नाना भाइए कह्युं के " अरे भाइ! आ तमे शुं

? " मोटो भाइ बोल्यो के " दुष्ट बुद्धि सहित में वांसळीने अगाध जळमां नांखी दीधी छे. " एम कहीने तेणे पोताना दुष्ट विचारो नाना भाइने कह्या. ते सांभळीने नानो भाइ पण बोल्यो के " तमे बहु सारुं कर्युं, मारी पण तेवीज दुष्ट बुद्धि थती हती, ते पण नाश पामी. " पछी ते बन्ने भाइओ पोताने घेर आव्या. अहीं ते वांसळीने एक क्षुधित मत्स्य गळी गयो. ते मत्स्य भारे थइ जवाथी तरतज कोइ एक मच्छीमारनी जाळमां पकडायो. तेने मारीने मच्छीमार चौटामां वेचवा आव्यो. ते बन्ने भाइओनी माताए मूल्य आपीने ते मत्स्य वेचातो लीधो, अने घेर आवीने पोतानी दीकरीने विदारवा आप्यो. ते दीकरीए मत्स्य कापतां तेमां वांसळी दीठी. तेने छानी रीते लइने पोताना खोळामां संताडी. ते जोइने माताए पूछ्युं के " तें शुं संताड्युं ? " पुत्री बोली के " कांइ नहीं. " माता खात्री करवा माटे तेनी पासे गइ, एटले पुत्रीए तेने हाथमां रहेला छरावडे मर्मस्थानमां प्रहार कर्यो. तेथी ते डोशी मृत्यु पामी. पछी गभराइने ते अमारी बहेन एकदम उठी, एटले तेना खोळामांथी ते वांसळी भूमिपर पडती अमे साक्षात् जोइ. तेथी अमने बन्ने भाइओने विचार थयो के " अहो ! तेज आ अनर्थ करनार धन छे के जेने अमे फेंकी दीधुं हतुं ! " इत्यादि विचारीने मातानी उर्ध्वक्रिया करीने अमे बन्ने भाइओए वैराग्यथी ते वांसळीनो त्याग करी दीक्षा ग्रहण करी. माटे हे श्रावक ! ते भय अत्यारे मने याद आव्युं. तमेज जुओ के ते अर्थ (धन) केवुं भयकारी छे ? " अभय बोल्या के " हे पूज्य ! आपनुं वाक्य सत्य छे. धन स्नेहवाळा भाइओमां पण परस्पर वेर करावनारुं छे, सेंकडो दोष उत्पन्न करनारुं छे अने हजारो दुःखोने आपनारुं छे. तेना भयथी आपे जे आ चारित्र लीधुं ते बहु सारुं कर्युं छे; केमके दुःखने आपनारा एवा अनेक विकल्पोने करावनारुं धन छे. "

आ दृष्टांत सांभळी अभयकुमार धननुं दुःखदायी परिणाम जाणया छतां पोते धननो आदर कर्यो छे एम विचारीने ते शिवसाधुनी तथा कायोत्सर्गे रहेला सुस्थित मुनिनी प्रशंसा करवा लाग्यो.

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ विंशतितमस्तंभस्य
सप्तनवत्यधिकाद्विशततमः प्रबंधः ॥ २९७ ॥

व्याख्यान २९८ मुं.

सुस्थित मुनिवाळुं दृष्टांत आगळ कहे छे.

तथैव सुस्थितं साधुं, कायोत्सर्गजुषं मुदा ।
देहप्रमार्जनार्थाय, द्वियामे सुव्रतो ययौ ॥ १ ॥

भावार्थ—"तेज प्रमाणे हर्षपूर्वक कायोत्सर्गने सेवनारा सुस्थित मुनिना देहनुं प्रमार्जन करवा माटे बीजे प्रहरे सुव्रत साधु गया." आ श्लोकमां सूचवेला सुव्रत मुनिनो संबंध आ प्रमाणे छे—

हवे बीजे प्रहरे सुस्थित मुनिना देहने प्रमार्जवा माटे सुव्रत साधु उपाश्रयनी बहार नीकळ्या. ते पण पोतानुं कार्य करीने हार जोइ बीजो प्रहर पूरो थये पाछा वळ्या, अने "अहो ! महा भय उत्पन्न थयुं" एम बोल्या. ते सांभळीने अभयकुमार मंत्रीए पूछ्युं के "हे पूज्य ! जेमणे गृहकार्योनो सर्वथा त्याग कर्यो छे एवा मुनिने मोटुं भय शुं ?" साधु बोल्या के "पूर्वे अनुभवेलुं भय स्मरणमां आव्युं." मंत्रीए तेनुं स्वरूप पूछ्युं, एटले सुव्रत मुनि बोल्या के "अंगदेशने विषे व्रज नामना गाममां मदहरनो पुत्र हुं सुव्रत नामे हतो. मारे सीरिभद्दा नामनी पत्नी हती. एकदा ते गाममां चोरो पेठा. तेमना भयथी सर्व लोको नासी गया. हुं एकान्त स्थळमां संताइ गयो. ते वातथी अजाणी मारी स्त्रीए चोरोने कह्युं के "तमे स्त्रीओने केम हरी जता नथी ?" तेना आवा वाक्यथी चोरोए तेनो अभिप्राय जाणीने तेनुं हरण कर्युं, अने पोताना पल्लीपतिने अर्पण करी. पछी मारा स्वजनो मने वारंवार कहेवा लाग्या के "तुं वधूने बंधनथी केम छोडावतो नथी ?" तोपण हुं तेनी शोध करतो नहोतो. अन्यदा स्वजनोनो बहु आग्रह थवाथी हुं एकलो चोरनी पल्लीमां गुप्त रीते गयो. त्यां एक वृद्ध डोशीने घेर रह्यो. एक दिवस में ते डोशीने मारी स्त्रीनुं हरण थयेलुं जणाव्युं. तेथी ते वृद्धाए पल्लीपतिने घेर जइने ते स्त्रीने कह्युं के "तारे माटे तारो पति अहीं आव्यो छे." ते सांभळी सीरिभद्दा बोली के "आजे पल्लीपति बहार जवानो छे, तेथी तेना गया पछी सांजे मारा पतिने मारी पासे मोकलजो." पछी ते वृद्धाना कहेवाथी हुं मारी स्त्री पासे गयो. तेणे मारुं सारी रीते आसनादिकथी सन्मान कर्युं. तेवामां पल्लीपति

अपशुकन थवाथी पाछो आव्यो, तेथी मारी स्त्रीए मने पलंगनी नीचे संताडी दीधो. पल्लीपति पण आवीने तेज पलंग उपर बेठो, तेथी हुं भयभीत थयो. पछी मारी स्त्रीए पल्लीपतिने पूछ्युं के " हे पल्लीश ! जो कदाच मारो पति अहीं आवे तो तमे मने शुं करो ? " तेणे जवाब आप्यो के " सत्कारपूर्वक तने तारा पतिने पाछी सोंपी दउं. " ते सांभळीने तेणे वक्र भृकुटी करीने संज्ञा करी, एटले ते फरीथी बोल्यो के–"जो हुं तारा पतिने जोउं, तो तेनो वध करुं. " एटले मारी स्त्रीए नेत्रनी संज्ञाथी मने देखाड्यो के तरतज मारा केश पकडीने मने बहार काढ्यो अने लीली वाधरथी मने बांधी लीधो. पछी पल्लीपति विगेरे सर्व जनो सूइ गया. मने बांध्यो हतो त्यां केटलाएक कूतरा आव्या, तेमणे मारां सर्व बंधन भक्षण कर्यां, तेथी हुं बंधनमुक्त थयो. पछी ते चोरनाज खड्गथी में पल्लीपतिने मारी नांख्यो, अने मारी स्त्रीना केश पकडीने खेंची अने कह्युं के " जो बूम पाडीश तो हुं तारुं शिर पण छेदी नाखीश. " एटले ते स्त्री मौन धरी रही. पछी तेने लइने हुं बहार नीकळी चालवा मांड्यो. ते मारी स्त्रीए मार्गमां कंबल फाडीने तेना ककडा नांखवा मांड्या. प्रातःकाळे हुं तेनी साथे एक वांसनी जाळमां विसामो खावा माटे रोकायो. थोडीवारे मारी स्त्रीए नांखेला कंबलना ककडाने अनुसारे ते पल्लीपतिना अनुचरो आवी पहोंच्या, अने मने खूब मार मार्यो. पछी मारां पांच अंगोने पांच खीलाथी जडी लइ मने पृथ्वी साथे चोंटाडी दीधो. अने मारी भार्याने लइने तेओ पाछा चाल्या गया. थोडीवारे एक वानर मारी पासे आव्यो. ते मने जोइने मूर्छा पाम्यो. केटलीक वारे सावध थइने ते शल्योद्धरणी (शल्यनो उद्धार करनारी) अने संरोहणी (घा रुझावनारी) औषधि लइने मारी पासे आव्यो. तेनाथी तेणे मने शल्य रहित कर्यो. पछी मारी समीपे तेणे अक्षरो लख्या के–"हुं तारा गाममां सिद्धकर्मा नामनो वैद्य हतो; ते वखते पण में तने साजो कर्यो हतो, ते हुं मरीने आ वनमां वानर थयो छुं. आ वनमां कोइ एक वानरे मने प्रहार करीने मारो सर्व परिवार लइ लीधो छे, हुं यूथथी भ्रष्ट थयेलो अहीं तारी पासे आव्यो छुं. तने जोइने मने जातिस्मरण थयुं तेथी में तने शल्यथी मुक्त कर्यो छे. हवे तुं पण मारो सहायभूत था, जेथी मारा शत्रु वानरनो हुं पराजय करुं. " ते सांभळीने हुं ते मर्कटनी साथे गयो. त्यां बन्ने मर्कटोनुं युद्ध शरु थयुं. तेमां मारी साथेना मर्कटनो पराजय थयो, त्यारे तेणे मने कह्युं के "तें मारी सहायता केम न क-

री ?" में कह्युं के "तमे बन्ने रूप अने वर्णादिके करीने समान देखाओ छो, तेथी मारो मित्र कोण अने तेनो शत्रु कोण ते हुं ओळखी शक्यो नहीं." ते सांभळीने ते मर्कट निशानी माटे पोताना कंठमां पुष्पमाळा नांखीने फरीथी युद्ध करवा गयो. ते वखते में बीजा वानरने पत्थरवडे मर्मस्थानमां प्रहार कर्यो, जेथी ते मृत्यु पाम्यो. पछी हुं मारा मित्र वानरनी रजा लइने पाछो चोरनी पल्लीमां गयो. त्यां मारी भार्या साथे आलिंगन करीने सुतेला पल्लीपतिना भाइने में खड्गवडे मारी नांख्यो अने बळात्कारथी मारी स्त्रीने लइने मारे घेर आव्यो; परंतु सर्व प्रकारनां दुःखनो अनुभव थवाथी मने वैराग्य उत्पन्न थयो. तेथी में तत्काळ संसार छोडीने चारित्र ग्रहण कर्युं. हे मंत्री ! आजे उपाश्रयमां प्रवेश करतां ते भयनुं स्मरण थयुं." ते सांभळी मंत्री बोल्यो के "हे मुनि ! आपे ते स्त्रीनो संग छोडीने चारित्र लीधुं ते घणुं उत्तम काम कर्युं छे."

पछी त्रीजे प्रहरे धन्यमुनि सुस्थितमुनिना देहने प्रमार्जवा गया. ते पण तेवीज रीते हार जोइने "अहो ! मोटुं भय उत्पन्न थयुं" एम बोलता उपाश्रयमां आव्या. अभयकुमारे पूछ्युं के "हे पूज्य ! वीतरागना मार्गमां रहेलाने अति भय क्यांथी होय ?" मुनि बोल्या के "पूर्वे अनुभवेल भय याद आव्यो." मंत्रीए कह्युं "हे स्वामी ! ते वृत्तान्त प्रकाशित करो." त्यारे मुनि कहेवा लाग्या के "अवन्ति नगरी समीपे एक गामडाना रहीश कोइ कुलपुत्र (कणबी) नो पुत्र हुं धनक नामनो छुं. मारा मातापिताए मने अवन्तीमां परणाव्यो हतो. एकदा हुं सायंकाळने वखते मारे सासरे जतो हतो. संध्यासमय थतां हुं अवन्ति नगरीना स्मशाने जइ पहोंच्यो. त्यां एक युवतीने रोती सांभळीने में तेने पूछ्युं के "तुं केम रुए छे ?" ते बोली के "जे माणस कदी दुःख पाम्यो नथी अथवा जे दुःख भांगवा समर्थ नथी अथवा जे बीजानुं दुःख जाणी दुःखी थतो नथी तेवा माणसने दुःखनुं वृत्तांत कहेवुं नहीं अने जे दुःख पाम्यो छे, जे दुःखनो निग्रह करवा समर्थ छे अथवा जे पारका दुःखे दुःखीओ थाय छे तेने दुःखनी वात कहेवी." ते सांभळीने में कह्युं के "हुं तारा दुःखनुं निवारण करीश." त्यारे ते बोली के "आ शूळी उपर चडावेलो माणस मारो स्वामी छे. ते निर्दोष छतां तेने राजाए आवी दशा पमाडी छे. हुं राजपुरुषोथी भय पामती 'मने कोइ जाणे नहीं' एम विचारीने आ संध्यासमये मारा स्वामीमाटे भोजनादिक लइने आवी

छुं; पण मारुं शरीर नानुं होवाथी हुं तेने भोजन कराववा शक्तिमान थती नथी, तेथी हुं रुदन करुं छुं. " ते सांभळीने में तेने कह्युं के " मारी पीठपर चडीने तुं तारा पतिने भोजन कराव. " त्यारे तेणे मने कह्युं के " तारे नीची दृष्टिज राखवी, उंचुं जोवुं नहीं; जो उंचुं जोइश तो हुं पतिव्रता होवाथी लज्जा पामीश." एम कहीने ते मारी पीठपर चडी पोताना कार्यमां प्रवृत्त थइ. थोडीवारे मारा पृष्ठ उपर रुधिरनां बिंदुओ पडवा लाग्यां. तेथी में कांइक उंची दृष्टि करी जोयुं तो छरावडे ते माणसनुं मांसादिक लेती अने तेने कापी कापीने पात्रमां नांखती में तेने जोइ. आवा बिभत्स कर्मने जोइने में तेने पडती मूकी अने भयथी हुं गामना दरवाजा पासे आवेला एक यक्षना देरामां पेठो. मारी पाछळज दोडती आवती तेणे मने जोयो; एटले मारो एक पग देराना उमरानी बहार अने एक पग अंदर हतो, तेज वखते तेणे बहारना पग उपर तेज असिवडे प्रहार कर्यो अने तेनाथी कपायेलो मारो उरुप्रदेश लइने ते नासी गइ. पछी हुं द्वारदेवीनी पासे करुण स्वरे रुदन करवा लाग्यो; तेथी देवीने करुणा उत्पन्न थइ; एटले कोइ शूळीए चडावेला सजीवन माणसनो उरुप्रदेश कापी लावीने मारा पग साथे सांधी तेणे मने साजो कर्यो. पछी हुं रात्रीनेज वखते मारा ससराने घेर गयो, त्यां घरमां दीवो बळतो होवाथी द्वारना छिद्रमांथी घरनी अंदर शुं थाय छे ते हुं जोवा लाग्यो, तो तेज स्त्रीने अने तेनी माने मद्य मांस खाती में जोइ. तेनी माए तेने पूछ्युं के " अहो पुत्री! आवुं सुंदर ताजुं मांस तुं क्यांथी लावी ? " ते बोली " हे माता! आ मांस तारा जमाइनुं छे." एम कहीने तेणे सर्व वृत्तान्त कह्यो. त्यारे तेनी माता बोली के " एम करवुं तने योग्य नहोतुं. " पुत्री बोली के " हुं शुं करुं ? तेणे मारा वचन प्रमाणे कर्युं नहीं, अने उंचुं जोयुं, तेथी में तेम कर्युं. " आ प्रमाणे ते बन्नेनी वातो सांभळीने हुं पाछो फरी देवीना चैत्यमां आव्यो अने त्यां रात्री निर्गमन करी, कोइ साधु पासे धर्मोपदेश सांभळीने में दीक्षा ग्रहण करी. हालमां आ सुस्थित मुनिनी सेवा करुं छुं. आजे ते पूर्वेनुं अनुभवेलुं भय स्मरणमां आव्युं. " ते सांभळीने अभयकुमारे तेमनी अति प्रशंसा करी.

हवे चोथे प्रहरे जोणक मुनि प्रमार्जन करवा निमित्ते गया. तेओ पण हार जोइने ' महा भय उत्पन्न थयुं ' एम बोल्या. अभयकुमारे पूछतां ते जोणक साधु

पोतानुं पूर्व चरित्र कहेवा लाग्या के " अवन्तीनगरीमां जोणक नामनो हुं सार्थवाह हतो. मारी स्त्री उपर हुं अति रागवान हतो. " एक वखत मारी भार्याए मने कह्युं के " तमे मने मृगपुच्छ लावी आपो. " में कह्युं के " हुं क्यांथी लावी आपुं ? " ते बोली के " राजगृही नगरीना राजाने घेर मृगो छे, त्यांथी लावी आपो." पछी हुं राजगृही नगरीना उद्यानमां गयो, त्यां स्वरूपवान वेश्यानो समूह छेल पुरुषोनी साथे क्रीडा करतो में जोयो, तेमांथी एक मुग्धसेना नामनी सुंदर युवतीने कोइ विद्याधरे हरण करी. में ते विद्याधरने बाणथी वींधी नाख्यो, एटले तेना हाथमांथी छुटीने ते युवती सरोवरमां पडी, तेमां उगेला कमळो लइने ते बहार नीकळी अने मने कमळनुं भेटणुं करी मारी साथे स्नेह करवा लागी. त्यारपछी तेणे मने आगमननुं कारण पूछ्युं, एटले में पण स्त्रीनी प्रेरणाथी करेला प्रयाणनुं वृत्तान्त निवेदन कर्युं. ते वृत्तान्त सांभळीने ते युवतीए मने कह्युं के " खरेखर तमारी स्त्री असती जणाय छे, तेणे कपट करीने तमने छेतर्या छे. " ते युवतीनुं आ वाक्य मने सत्य लाग्युं नहीं. मने एवो भास थयो के " स्त्रीओ बीजी स्त्रीना गुण सांभळीने खुशी थती नथी, पण इर्ष्यालु थाय छे." पछी हुं ते मुग्धसेना वेश्याने घेर गयो. तेणे घणा उपचारोथी मारी सेवा करी. एक दिवस ते वेश्याए श्रेणिक राजा पासे नृत्य करवानो आरंभ कर्यो, ते वखते हुं तेनी साथे गयो हतो. सर्व जनोनां हृदय नृत्यमां लीन थयेलां जोइने में मृगपुच्छ हरण कर्युं; पण तेना रक्षके मने दीठो एटले तेणे राजा पासे जाहेर कर्युं. ते गुन्हामांथी मने मुग्धसेनाए छोडाव्यो. अन्यदा ते मुग्धसेनाने लइने हुं मारा गाम तरफ चाल्यो अने गामनी बहार उद्यानमां ते वेश्याने मूकीने रात्रे हुं गुप्त रीते मारे घेर गयो; ते वखते मारी भार्याने एक जार पुरुषनी साथे भोजन करती में जोइ. त्यारपछी मारी स्त्री कांइ काम माटे बहार गइ अने ते जार सूइ गयो, त्यारे तेने में मारी नांख्यो. मारी स्त्रीए आवीने तेने मरेलो जोयो, एटले तरतज तेने उचकीने घरना वाडामां एक खाडो खोदी तेमां दाटी दीधो. ते सर्व स्त्रीचरित्र जोइने पाछो हुं उद्यानमां पेली वेश्या पासे आव्यो अने तेने सर्व वात कही. पछी वेश्या साथे हुं राजगृही नगरीमां आवी तेने घेर घणा काळ सुधी रह्यो. पछी वेश्यानी रजा लइने हुं फरीथी मारी स्त्रीनुं चरित्र जोवानी उत्कंठाथी घेर गयो. मारी स्त्री निरंतर मारी सेवा करवा लागी, में पण तेनुं चरित्र प्रगट कर्युं नहीं. हवे ते हमेशां पेला जारने ज्यां दाट्यो

हतो ते स्थाननी भोजनादिक नैवेद्यथी प्रथम पूजा करी पछी जमती हती. एक दिवसे मारी स्त्रीए मारे माटे घेबर विगेरे मिष्ट भोजन तैयार कर्युं, ते वखते में तेने कह्यु के "आजे प्रथमथी कोइने तारे आ भोजन आपवुं नहीं; जे तने अधिक प्रिय होय तेनेज प्रथम आपवुं." त्यारे ते बोली के "मारे तमाराथी बीजो कोइ अधिक नथी." एम कहीने ते मारी दृष्टि चूकावीने पेला जारवाळा स्थळनी पूजा करवा गइ. में ते जाणीने तेने कह्युं के "हे अप्राथ्र्य प्रार्थिके ! (मृत्युने मागनारी!) हजु सुधी तुं तारुं चरित्र छोडती नथी." त्यारे तेणे जवाब आप्यो के "में कोइ पण वखत तमारी आज्ञानुं उल्लंघन कर्युं नथी, हुं कोइ वखत कडवुं वचन पण बोली नथी, अने शामाटे कारण विना मने ठपको आपो छो ?" एम बोलीने क्रोधथी अश्रुपात करती तेणे तपावेला तेलथी भरेलो लोढानो तवो मारी उपर फेंक्यो. तेमांथी उछळता तेलना बिंदुओ एटलां बधां मारा शरीर उपर पड्यां के मारा शरीरनी बधी चामडी नाश पामी गइ. पछी हुं भयथी एकदम नासीने महा मुश्केलीए मारी माना घरमां पेसी गयो. त्यां जतांज हुं मूर्छा खाइने पडी गयो. मारा स्वजनोए मने शतपाक तैल विगेरे उपचारो करीने साजो कर्यो. पछी में सर्व कुटुंबने सत्य वृत्तान्त कहीने साधु पासे आवी धर्मोपदेश सांभळी वैराग्यथी दीक्षा ग्रहण करी. अत्यारे पण ते भयनुं मने स्मरण थयुं." ते सांभळी अभयकुमार बोल्यो के "हे पूज्य ! तमे तो बाह्य अने अभ्यंतर बन्ने प्रकारना भयथी रहित छो, पण अमेज कर्मना समूहथी भारे थता सर्व भयनी मध्ये रहीए छीए." इत्यादि घणी रीते तेमनी प्रशंसा करीने अभयकुमारे रात्रीपोसह पूर्ण कर्यो.

सूर्योदय थयो त्यारे मंत्री उपाश्रयनी बहार नीकळ्या. त्यां कायोत्सर्गमां तत्पर अंतःकरणवाळा सुस्थितमुनिना कंठमां पेलो हार जोइने तेणे विचार्युं के "अहो ! रात्रीना दरेक प्रहरे ते चारे मुनिओ "महाभय प्राप्त थयुं" एम बोल्या हता ते सत्य छे; केमके निःस्पृह मुनिओने तो कांचन महाभय रूपज छे. अहो ! साधुओनी निर्लोभता केवी छे ! राज्य समान दिव्य हार जोइने पांचेमांथी कोइए किंचित् पण लोभ कर्यो नहीं. खरेखर सर्व भयो लोभमांज रहेलां छे." आ प्रमाणे विचारी सुस्थितमुनिने त्रण प्रदक्षिणापूर्वक वांदीने तथा स्तुति करीने अभयकुमार बोल्या के "अहो ! तमेज खरेखरो लोभने जीत्यो छे." पछी ते

हार मुनिना कंठथी पोतेज उतारीने हर्ष पामता राजसभामां जइ श्रेणिक राजाने आप्यो, अने रात्रीनुं सर्व वृत्तांत कह्युं. ते सांभळीने राजाए मंत्रीने कह्युं के "मुनिओना गुणनी स्तुति विगेरे करवाथी अनन्त भवनां दुःख चिंतादिकनो नाश थाय छे; तो पछी तमारी ऐहिक चिंतानो नाश थाय तेमां तो कहेवुंज शुं! तेमना महिमाथी स्वयमेव सर्व दुःखनो क्षय थाय छे."

"उपाश्रयनी बहार कायोत्सर्गमां उभा रहेला सुस्थित साधु चारे प्रहर सुधी योगमां निश्चळ रह्या, ते छेल्ला तपाचारने आचरता सद्गुणी मुनीश्वरनी हुं स्तुति करुं छुं."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ विंशतितमस्तंभस्य
अष्टानवत्यधिकद्विशततमः प्रबंधः ॥ २९८ ॥

व्याख्यान २९९ मुं.

तपनी प्रधानता विषे.

तपो मुख्यं हि सर्वत्र, न कुलं मुख्यमुच्यते ।
हरिकेशी श्वपाकोऽपि, स्वःपूज्योऽभून्महाव्रतैः ॥ १ ॥

भावार्थ—"सर्वत्र तपज मुख्य छे, कुळ मुख्य कहेवातुं नथी. जुओ! हरिकेशी नामनो चांडाळ पण पांच महाव्रतोथी देवने पूज्य थयो हतो."

हरिकेशीमुनिनी कथा.

मथुरापुरीमां शंख नामना युवराजे धर्म श्रवण करीने दीक्षा ग्रहण करी. विहार करतां करतां राजपुर (हस्तिनापुर) मां आव्या. त्यां भिक्षाने माटे तप्तवालुकावाळी नरक पृथ्वी समान अने देवना प्रभावथी दावानळ रूप हुतवहा नामनी एक शेरी हती. ते शेरीमां जे कोइ चालतुं ते तरतज मृत्यु पामतुं हतुं. मुनिए ते शेरीने माणसना संचार विनानी जोइने पुरोहितना पुत्रने पूछ्युं के "आ

शेरीमां माणसो चाले छे के नहीं ? " तेणे ' भले आ बळी जाय ' एवा दुष्ट आशयथी कह्युं के ' चाले छे. ' ते सांभळी मुनि उतावळा ते शेरीमांज चाल्या. तेमना तपना प्रभावथी ते शेरी शीतळ थइ गइ. पेलो पुरोहितनो पुत्र गवाक्षमां बेठो हतो तेणे मुनिने इर्यापथिकी शोधता अने धीमे धीमे चालता जोइने "अहो ! आ कोइ महातपस्वी छे " एम जाणी विस्मित थयो. पछी एक दिवस ते- मुनि पासे उद्यानमां जइ तेमने नमीने ते बोल्यो के " हे पूज्य ! में आपने पेली शेरीमां जवानी अनुज्ञा आपी हती ते पापथी हुं शी रीते मुक्त थइश ? " मुनिए कह्युं के " प्रव्रज्या ग्रहण कर. " ते सांभळीने तेणे दीक्षा लीधी; परंतु ब्राह्मण होवाथी तेणे जातिमद कर्यो. छेवट आयुष्य पूर्ण करीने स्वर्गे गयो.

त्यांथी च्यवीने गंगाने कांठे स्मशाननो स्वामी बलकोट नामनो चांडाळ हतो, तेने गौरी अने गांधारी नामनी बे स्त्रीओ हती. तेमां गौरीनी कुक्षिमां ते उत्पन्न थयो. पूर्व भवे जातिमद कर्यो हतो तेथी कदरुपो अने श्याम थयो. चांडा- ळोने पण उपहास करवा लायक थयो. तेनुं बळ नाम पाड्युं. ते कोइने पण भांडवामां कुशळ अने विषवृक्षनी जेम सौने द्वेष करवा लायक थयो सतो घणा लोकोने उद्वेग पमाडतो वृद्धि पामवा लाग्यो. एकदा तेनो बंधुवर्ग [1]पानगोष्ठीमां तत्पर थयो हतो, ते वखते तेणे भांडचेष्टा करीने सर्वेनी साथे कलह कर्यो; तेथी तेओए तेने पोताथी दूर कर्यो. ते दूर जइने बेठो, तेवामां त्यां एक सर्प नीकळ्यो. तेने जोइने ते सर्वे चांडाळोए एकदम उठीने ' आ झेरी साप छे ' एम कही तेने मारी नाख्यो. थोडी वारे बीजो दीपक जातिनो सर्प नीकळ्यो, ते विषरहित छे एम जाणीने तेओए तेने जवा दीधो. ते सर्व जोइने बळे विचार्युं के " विषधारी सर्प हणाय छे, अने दीपक (निर्विष) सर्प मूकी देवाय छे, माटे सर्व कोइ पोतानाज दोषथी क्लेश पामे छे एम सिद्ध थयुं, तो हवे भद्र प्रकृति राखवी तेज योग्य छे." एम विचारतां तेने जातिस्मरण थयुं; तेथी पोतानो स्वर्गवास तथा दुष्ट जातिमदने विचारतो ते बळ कोइ संविग्न साधु पासे गयो. तेमनी पासे धर्म श्रवण करीने तेणे दीक्षा लीधी. पछी विहार करतां अन्यदा तिंदुक नामना उद्यानमां तिंदुक यक्षना चैत्यमां ते मुनि [2]प्रतिमा धारण करीने रह्या.

---

१ मदिरापान करवामां. २ कायोत्सर्ग करीने स्थिर रहेवुं ते.

एक दिवस ते चैत्यमां कौशलिक राजानी पुत्री भद्रा घणी सखीओ साथे परवरेली आवी. त्यां यक्षने नमीने क्रीडा करवामां प्रवृत्त थइ, क्रीडा करतां ते सर्वेए वरने आलिंगन करवानुं मिष करीने चैत्यना जुदा जुदा स्तंभो पकड्या. तेमां राजपुत्री कायोत्सर्गे उभेला ते मुनिने स्तंभ धारीने तेमनेज आलिंगन करीने बोली के " हुं आ वरने वरी छुं. " थोडी वारे वर्णे श्याम अने विकराळ एवा ते मुनिने जोइने ते बूम पाडती सती थू थू करवा लागी. ते जोइने यक्षने क्रोध चड्यो; तेथी तेणे ते राजकन्यानुं मुख वांकुं करी नांख्युं, शरीर कदरुपुं कर्युं अने परवश करी दीधी. पछी ते यक्ष बोल्यो के " जो आ स्त्री मुनिने पतिपणे स्वीकारशे तोज तेने हुं मुक्त करीश. " ते सांभळीने राजाए जीवती राखवाना हेतुथी तेम करवानुं कबूल कर्युं. पछी ते राजपुत्री स्वजनोनी अनुज्ञाथी यक्षना चैत्यमांज रही, अने मुनिने अनुकूळ उपसर्ग करवा लागी, पण मुनिए तेनी जरा पण इच्छा करी नहीं; एटले ते पाछी ओसरी. पछी यक्षे घडीमां पोतानुं स्वरूप अने घडीमां मुनीनुं स्वरूप देखाडी छेतरीने आखी रात्री तेनी विडंबना करी. प्रातःकाळे " मुनि तो तने इच्छता नथी " एवां यक्षनां वचनथी ते राजपुत्री खिन्न मनवाळी थइ सती पोताना पिताने घेर गइ. पाछी आवेली जोइने पुरोहिते राजाने कह्युं के " आ ऋषिपत्नी ब्राह्मणने कल्पे. " ते सांभळीने राजाए ते पुरोहितनेज आपी. तेणे तेने पोतानी पत्नी करी. अन्यदा प्रिया सहित यज्ञदीक्षा ग्रहण करीने तेणे यज्ञनो आरंभ कर्यो.

हवे हरिकेशी नामना चांडाळ कुळमां उत्पन्न थयेला बळ नामना ते जितेन्द्रिय मुनि एक दिवस भिक्षा माटे ते ब्राह्मणना यज्ञपाटकमांज गया. ते तपस्वीने आवता जोइने ब्राह्मणो अनार्यनी जेम तेनो उपहास करवा लाग्या, अने कहेवा लाग्या के "अरे! तुं कोण छे? तारुं आवुं बिभत्स रूप जोवाने पण अमे योग्य नथी. तुं शी इच्छाथी अहीं आव्यो छे ? अमारी दृष्टिथी दूर जा. " इत्यादि वचनो सांभळीने पेलो यक्ष जे निरंतर मुनिनी साथेज रहेतो हतो ते कोपायमान थयो; तेणे मुनिना देहमां प्रवेश करीने कह्युं के " हुं श्रमण (साधु) छुं. बीजाने माटे तैयार करेलुं अन्न लेवा माटे हुं आव्यो छुं. अहीं तमोए घणुं अन्न रांध्युं छे; तो तेमांथी शेषनुं पण अवशेष प्रांते रहेलुं होय ते मने साधुने आपो." ए प्रमाणेनां वचनो सांभळी याज्ञिको बोल्या के " आ सिद्ध करेलुं भोजन ब्राह्मणोनेज

देवा योग्य छे, तने शुद्रने दइ शकाय तेम नथी. जगतमां ब्राह्मण समान बीजुं कोइ पुण्यक्षेत्र नथी, तेमां वावेलुं बीज मोटा फळने आपे छे." मुनिना शरीरमां रहीने यक्ष बोल्यो के " तमे यज्ञमां हिंसा करो छो, आरंभमां रक्त छो, अजितेन्द्रिय छो, तेथी तमे तो पापक्षेत्र छो, विश्वमां महाव्रतने धारण करनार मुनिना जेवुं बीजुं कोइ पुण्यक्षेत्र नथी." आ प्रमाणे ते यक्षे यज्ञाचार्यनुं अपमान कर्युं. ते जाणीने तेना शिष्यो बोल्या के " अमारा उपाध्यायनो तुं प्रत्यनिक छे, माटे हवे तो तने कांइ पण आपशुं नहीं: नहीं तो कदाच अनुकंपाने लीधे कांइ अंत प्रांतादि पण आपत. " यक्ष बोल्यो के " समितिवंत, समाधिवाळा, त्रण गुप्तिथी गुप्त अने जितेन्द्रिय एवा मने जो तमे एषणीय अन्न नहि आपो; तो पछी आ यज्ञथी तमने शुं लाभ मळवानो छे? कांइ पण लाभ मळशे नहीं. " ते सांभळीने अध्यापके पोताना शिष्योने कह्युं के " आने लाकडी अने मुठी विगेरेथी मारीने काढी मूको." ते सांभळीने सर्वे शिष्यो एकदम तेना तरफ दोड्या, अने मुनिने दंडादिकवडे मारवा लाग्या. ते वखते राजपुत्री भद्रा तेमने अटकावीने बोली के " हे शिष्यो ! आ मुनि कदर्थनाने योग्य नथी; केमके देवना वचनथी मने राजाए आ मुनिने आपी हती, तोपण तेणे मनथी पण मारी इच्छा कर्या विना मने छोडी दीधी; ते आ ऋषि छे, देवेंद्र ने नरेंद्रने पण वंदनिक छे, आ महा यशस्वी, मोटा प्रभाववाळा, महा दुष्कर व्रतधारी अने घोर पराक्रमवाळा एवा मुनिनी तमे हीलना करो नहीं. तेनी हीलना करवाथी तेमना तपना प्रभाववडे तमे ने अमे सर्वे बळीने भस्म थइ जइशुं, माटे तेवुं न थाय तेम करो. " ते सांभळीने यक्षे " आ भद्रानुं वचन मिथ्या न थाओ " एम धारी सर्वे छात्रोनुं निवारण कर्युं. " कह्युं छे के—

एयाइं तीसे वयणाइ सोच्चा, पत्तीए भद्दाए सुभासियाई ।
इसिस्स वेयावडियट्ठयाए, जक्खा कुमारोवि णिवारयंति ॥१॥

भावार्थ— " पोताना पतिने कहेलां भद्रानां आवां सुभाषित वचन सांभळीने मुनिनी वैयावच्च करनार यक्षे ते शिष्योनुं निवारण कर्युं. केवी रीते कर्युं ते कहे छे—

तरतज रोष पामीने यक्षे आकाशमां अनेक रूपो विकुर्वी ते उपसर्ग करनारा सर्वे छात्रोने अंग विदारता अने लोही वमता कर्या. ते जोइ फरीथी भद्रा बोली

के "हे छात्रो ! आ मुनिनी तमे अवगणना करो छो, ते पर्वतने नखथी खोदवा जेवुं, लोहदंडने दांतथी खावा जेवुं अने जाज्वल्यमान अग्निने पादप्रहार करवा जेवुं करो छो. तमने सामान्य भिक्षु मानीने मूर्खने योग्य एवुं कार्य करो छो ते तमने घटतुं नथी; माटे जो तमे जीवितने के धनने इच्छता हो तो ते मुनिने मस्तक नमावीने तेमने शरणे जाओ." पछी ते सोमदेव नामनो यज्ञाचार्य, जेमनां नेत्र अने जिह्वा बहार नीकळेल छे एवा, अने काष्ठ समान थइ गयेला तेमज ऊर्ध्व मुख-वाळा छात्रोने जोइने पोतानी पत्नी भद्रा सहित ते मुनि पासे जइ तेमने स्तुति द्वारा प्रसन्न करवा माटे कहेवा लाग्यो के "हे भगवन् ! अमारा अपराधने क्षमा करो. आ बाळक, मूर्ख अने अज्ञानी छात्रोए आपनी हीलना करी, तेनी आप क्षमा करो; केमके मुनिजनो तो घणा कृपाळु होय छे; तेओ कदी पण कोइना पर कोप करता नथी." ते सांभळी मुनि बोल्या के "प्रथम, अत्यारे के हवे पछी मने किंचित् पण तमारा उपर प्रद्वेष नथी, पण कोइ यक्ष मारुं वैयावृत्य करे छे, तेणे आ तमारा छात्रोने पराभवेला जणाय छे." अध्यापक बोल्यो के "हे पूज्य ! तमे धर्मतत्त्वना ज्ञानी क्रोध करोज नहीं, पण अमे तो आपना चरणने शरणे आव्या छीए. माटे आ पुष्कळ शालि विगेरे अन्न इच्छानुसार ग्रहण करो, अने ते वापरीने अमारा पर अनुग्रह करो." ते सांभळीने मुनिए मासक्षपणनुं पारणुं होवाथी शुद्ध अन्नपान ग्रहण कर्युं; एटले पेला यक्षे सर्व छात्रोने साजा कर्या अने पांच दिव्य प्रगट कर्या. पछी हर्षवन्त थइने ते सर्व ब्राह्मणो बोल्या के "बाह्य स्नाना-दिक धर्मनी स्पृहावाळा अमे आपे अंगीकार करेला यज्ञादिकनुं तत्त्व जाणता नथी; तेथी पूछीए छीए के—तमारे यज्ञ करवाना विधिमां कयो अग्नि छे ? ते अग्निनुं स्थान कयुं छे के ज्यां अग्निनुं स्थापन कराय छे ? घृतादिक नांखवा माटे तमारे सरवो कयो छे ? अग्निने प्रदीप्त करवा माटे तमारे कारीस (छुंगळी) रूप शुं छे के जेनाथी अग्नि फुंकाय छे ? अग्निने सळगाववा माटे समिध (काष्ठ) कया छे ? पापने उपशमन करवामां हेतुरूप एवी शांतिने माटे तमारी अध्ययनपद्धति कइ छे ? अने केटला तेमज कोना संबंधी होमविधिथी शेनो होम करो छो ? ते सर्व कृपा करीने कहो." मुनिए जवाब आप्यो के "अमारे तप (आहार मूर्छा त्याग) रूप अग्नि छे; केमके ते कर्मेन्धनने बाळनार छे. जीव अग्निनुं स्थान छे; कारणके तप-रूपी ज्योति (अग्नि) तेने आश्रये रहे छे. मन, वचन अने कायाना योगरूप सरवो

छे. तेनावडे थता शुभ व्यापार ते स्नेह (घृत) ने स्थाने छे. शरीररूप अग्नि धमवानुं करीस (भुंगळी) छे. कर्मरूपी समिध (काष्ठ) छे अने संयम तथा योगरूप शान्ति क्रिया छे. एवी रीते मुनिओने होम करवानो विधि छे. तेवा प्रकारथी हुं पण होम करुं छुं." फरीने अध्यापके स्नाननुं स्वरूप पूछयुं के "तमारे स्नान करवा माटे कयो द्रह (धरो) छे ? पाप टाळवा माटे अने शांति माटे कयुं तीर्थ छे ? कयुं पुण्यक्षेत्र छे ? ते तीर्थोनां केटलां स्वरूप छे के जे संसाररूपी समुद्रथी तारे छे ? शेने विषे स्नान करीने पवित्र थयेला आप कर्ममळनो त्याग करो छो ? अमारीज जेवां तमारे पण शुद्धि करवानां द्रहादि जळाशयो (तीर्थो) छे के कांइ जूदांज छे ? ते अमे जाणता नथी. माटे हे यक्षपूज्य मुनि ! ते सर्व आपनी पासेथी अमे जाणवा इच्छीए छीए." मुनि बोल्या के "अमारे धर्मरूपी द्रह (धरो) छे अने ब्रह्मचर्यरूपी तीर्थ छे के जेने विषे अनाविलिप्त (संसारमां नहीं लपटायेलो) अने प्रसन्न लेश्यावाळो आत्मा स्नान करवाथी निर्मळ, शुद्ध अने शीतळ थइने सर्व दोषनो त्याग करे छे." इत्यादि मुनिनां शुभ वाक्योथी ते ब्राह्मणो बोध पामीने जैनधर्मी थया. मुनि पण अन्यत्र विहार करतां अनुक्रमे कर्मनो क्षय करीने परमपदने पाम्या.

"खरेखर सौथी अधिक तपज देखाय छे; कोइ ठेकाणे जातिनुं अधिकपणुं देखातुं नथी. जुओ ! हरिकेशी चांडाळना पुत्र छतां पण तपनाज प्रभावथी महानुभाग थइने आवी ऋद्धिने पाम्या."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ विंशतितमस्तंभस्य
नवनवत्यधिकद्विशततमः प्रबंधः ॥ २९९ ॥

व्याख्यान ३०० मुं.

वीर्याचार.

बाह्याभ्यन्तरसामर्थ्यानिन्हवेन प्रवर्तनम् ।
सर्वेषु धर्मकार्येषु, वीर्याचरणमुच्यते ॥ १ ॥

भावार्थ—" बाह्य तथा अभ्यन्तर सामर्थ्यने गोपव्या विना तेने सर्व धर्मकार्योमां प्रवर्तावं ते वीर्याचार कहेवाय छे."

वाणी अने कायाने आधीन जे सामर्थ्य[1] ते बाह्य सामर्थ्य कहेवाय छे, अने मन संबंधी जे वीर्य ते अभ्यंतर सामर्थ्य[2] कहेवाय छे. ते बन्नेने अनिन्हवपणे प्रवर्तावं एटले सर्व धर्मकार्यमां वीर्यने फोरववुं तेने वीर्याचार कहे छे.

पूर्वाचार्योए कह्युं छे के—

अणिगूहिअ बलवीरिओ, परिक्कमइ जो जहुत्तमाउत्तो ।
जुंजइ अ जहाथामं, नायव्वो वीरिआयारो ॥ १ ॥

भावार्थ—" बल अने वीर्य ने गोपव्या शिवाय जे यथोक्त रीते ज्ञानादि आचारनो आश्रय करीने अनन्य चित्ते पराक्रम करे छे, अने ते बाह्याभ्यंतर पराक्रमने योग्य स्थाने जोडे छे एटले तेनो घटित उपयोग करे छे ते वीर्याचार जाणवो."

अहीं आचार अने आचारवाळानो कथंचित् अभेद मानीने तेने वीर्याचार कहेलो छे. ते मन, वाणी अने कायाना भेदे करीने त्रण प्रकारनो छे. तेना अतिचार पण मन, वाणी अने कायाना वीर्यने गोपववा रूप त्रणज छे. ते विषे श्रावकना एकसो ने चोवीश अतिचारोना वर्णननी गाथामां कह्युं छे के—

पण संलेहण पनरस्स कम्मा, नाणाइ अट्ठ पत्तेयं ।
बारस तव विरिय तिग, पण सम्मत्ताइं अइयारा ॥१॥

---

१ वचन अने कायानुं बल. २ मननुं बल.

भावार्थ—"संलेखनाना पांच अतिचार छे, कर्मादानना पंदर छे, ज्ञानादि (ज्ञान, दर्शन, चारित्र) आचारना प्रत्येके आठ आठ छे, तपाचारना बार छे, वीर्याचारना त्रण छे अने सम्यक्त्व तथा बार व्रतना पांच पांच अतिचार छे." एटले ५–१५–२४–१२–३–६५ मळी १२४ थाय छे.

अहीं कोइ शंका करे के–" आ बकरीना गळाना आंचळ जेवा (नकामा) वीर्याचारने सारी रीते उपयोगमां लेवानुं शुं प्रयोजन छे? केमके भव्य प्राणीओने भवस्थितिनुं तो नियतपणुं छे. तेथी ज्यारे जे भव्य प्राणी सिद्धिमां जवानो हशे, त्यारे ते प्राणी वीर्याचारनो उपयोग कर्या विना पण मोक्ष जशे." गुरुमहाराज तेनो जवाब आपे छे के " तें जे अहीं भवस्थितिनुं नियतपणुं हेतुपणे दर्शाव्युं, ते युक्तिविकळ होवाथी सत्य नथी; केमके भव्य जीवोनी भवस्थिति एकान्ते नियत पण नथी, तेम अनियत पण नथी, पण नियतानियत छे. ते शी रीते? एम पूछीश तो सांभळ—पुण्य पापने अनुसारे भवस्थिति घटे छे अने वृद्धि पामे छे. तेथी तेनुं अनियतपणुं कहेवाय छे; अने जे ज्यारे मुक्ति जवानो छे ते त्यारेज मुक्ति पामशे, ए युक्तिथी नियत पण कहेवाय छे. परंतु जो ' जे ज्यारे मोक्ष जवानो छे, ते त्यारेज मोक्ष जशे ' एवो एकान्तवाद स्वीकारीए, तो गोशाळानो मत प्राप्त थाय छे. गोशाळो ' जेनुं जे ज्यारे थवानुं छे तेनुं ते त्यारेज थाय छे ' एवो नियतिवाद माने छे, अने तेम मानवाथी तो प्रत्यक्ष मिथ्यात्व प्राप्त थाय छे. केमके जिनशासनमां कालादिक पांच कारणो जगतना विवर्तमां हेतुरूप कहेलां छे. तेमांना मात्र प्रत्येकने हेतु मानेला नथी, पण पांचे मळीने हेतु रूपे मानेलां छे; माटे भवस्थितिने नियतानियतज मानवी जोइए. आ वचन युक्तिथी विकळ छे एम समजवुं नहीं. केमके जेम एकज वस्तुमां उत्पाद, व्यय अने ध्रौव्य ए त्रणे अविरोध रहे छे, तेमज एक भवस्थितिमां कथंचित् नियतपणुं अने कथंचित् अनियतपणुं पण रही शके छे. अहीं तात्पर्य ए छे के—जीव पुण्यादिक उपक्रम करवाथी वहेलो पण मोक्ष पामे छे, अने जिनाज्ञा लोपवाथी तथा महा पापो करवाथी अधिक काळ संसारमां परिभ्रमण पण करे छे. ते अपेक्षाए भवस्थिति अनियत जाणवी. आ बाबत सिद्धान्तथी पण विरुद्ध नथी; केमके महानिशीथादि शास्त्रोमां आपणे सांभळीए छीए के—सावद्याचार्य विगेरेने भवस्थिति एकज भव बाकी रहेवा रूप हती, पण उत्सूत्र भाषणादिवडे तेओनी भवस्थिति अधिक थइ हती. कोइ जीव भव-

स्थितिना प्रतिनियत समयेज मोक्षनी प्राप्तिने योग्य एवुं पुण्य करवा शक्तिमान थाय अने बीजे वखते तेवुं पुण्य करी न शके, ते नियत काळेज मोक्षे जाय, तेनी अपेक्षाए भवस्थिति नियत जाणवी. केवळज्ञानीए जे स्थिति कही होय ते तो नियत स्थितिज जाणवी; केमके केवळज्ञानी तो संपूर्ण ज्ञानना प्रभावथी "आ जीव आ प्रमाणे पुण्यादि उपक्रम करशे, अने आ जीव तेम नहीं करे" इत्यादि दरेक जीवना उपक्रमनुं स्वरूप जाणीनेज भवस्थिति कहे छे, जाण्या विना कहेता नथी; माटे नियत जाणवी. पण जो भवस्थितिनुं एकान्त नियतपणुंज अंगीकार करीए, तो प्राणीने तेवा तेवा प्रकारनां दुष्कर धर्मकृत्यो करवानुं अने हिंसादिक पापव्यापारना परिहारनुं निष्फळपणुं प्राप्त थशे, ते कांइ युक्तियुक्त नथी. माटे भव्य प्राणीओनी भवस्थितिनुं नियतानियतपणुं सिद्ध छे एम समजवुं; अने तेनी सिद्धि थवाथी सर्वत्र धर्मक्रियामां पोतानी शक्ति फोरववा रूप वीर्याचारनी पण सफळता सिद्ध थइ. ते विषे सूत्रमां कह्युं छे के—

तित्थयरो चउनाणी, सुरमहिओ सिज्झियव्वय धुवंमि ।
अणिगूहियबलविरिओ, सव्वत्थामेण उज्जमइ ॥ १ ॥

भावार्थ—" चार ज्ञानने धारण करनार, देवताओथी पूजित अने ध्रुव (निश्चये) सिद्धिपदने पामनारा एवा तीर्थंकरो पण बल[1] अने वीर्य[2]ने गोपव्या विना सर्व सामर्थ्यवडे उद्यम करे छे. "

इअ जह तेवि हु निच्छिन्नपायसंसारसायरा वि जिणा ।
अब्भुज्जमंति तो सेसयाण को इत्थ वामोहो ॥ २ ॥

भावार्थ—" आ प्रमाणे ज्यारे जेमने संसारसागर प्राये तरी गयेला जेवोज छे एवा जिनेश्वरो पण (शुभ योगमां) उद्यमवंत थया छे, तो पछी अहींआं बीजाओने शुं व्यामोह करवा जेवुं छे ? " अर्थात् शो विचार करवानो छे ? तेमणे तो अवश्य शुभ निमित्तमां मन वचन कायानुं बळ वीर्य फोरववा योग्य ज छे."

अहीं वीर्यना गोपन तथा अगोपननुं फळ सुधर्म श्रेष्ठीना दृष्टांतवडे बतावे छे—

१ बळ शरीर संबंधी जाणवुं. २ वीर्य मन संबंधी जाणवुं.

सुधर्म श्रेष्ठीनी कथा.

पृथ्वीपुरमां सुधर्मा नामे एक श्रेष्ठी रहेतो हतो, तेनुं अन्तःकरण जैन धर्मथी वासित हतुं. एकदा गुरुमुखथी वैराग्यनी कथा सांभळतां तेमां भारवाहक विगेरेनां दृष्टान्तो सांभळीने तेणे चारित्र ग्रहण कर्युं. ते भारवाहकनुं दृष्टांत आ प्रमाणे—

कोइएक भारवाहक हमेशां मोटा कष्टथी काष्ठ लावी ते वेचीने आवेला पैसामांथी पोतानो निर्वाह चलावतो हतो. एकदा ग्रीष्मऋतुमां मध्याह्न समये ते काष्ठनो भारो माथे उपाडीने वेचवा माटे गाममां अटन करतो हतो. अति भारनी पीडाथी माथेथी भारो उतारीने ते कोइ गृहस्थनी हवेलीनी छायामां विश्रान्ति लेवा उभो रह्यो. ते वखते हवेलीना गोखमां ते गृहनी स्वामिनी तिलोत्तमा अप्सराना जेवी मनोहर रूपवती बेठी हती. तेने जोइने तेणे विचार्युं के "अहो! समग्र त्रैलोक्यनुं सुख तो आ युवतीएज खेंची लीधुं छे. परंतु आवा सुखनुं कारण मात्र द्रव्यज छे; तो हुं पण द्रव्यनुं उपार्जन करीने आवुं सुख मेळवी जन्म सफळ करुं." एम विचारीने त्यारथी तेणे भोजनादिकमां कृपणता (कसर) करवा मांडी. काष्ठ वेचतां जे पैसा आवे तेमांथी थोडा खर्चे अने वधारे संग्रह करे. ए प्रमाणे निरंतर द्रव्य उपार्जन करवाना ध्यानरूपी कल्लोलथी चपळ मनवाळो ते काळ निर्गमन करवा लाग्यो. एक दिवस अति कृपणताने लीधे जेनुं अंग अति कृश थइ गयुं छे एवो ते भारवाहक सूर्यनां किरणोना तापथी आकुळव्याकुळ थइ गयो, शरीरनां सर्व अवयवो परसेवाना बिंदुओथी भींजाइ गयां, लुहारनी धमणनी जेम श्वासोश्वास लेवा लाग्यो, अने केडे बे हाथ राखीने फरतो फरतो अरण्यना एक कुवा पासे आव्यो. त्यां विश्राम लेवा माटे कुवाना थाळामां सूइ गयो. तत्काळ निद्रा आवी गइ तेमां तेने स्वप्न आव्युं. स्वप्नमां तेणे जोयुं के जाणे पोते महान कष्टो अनुभवीने द्रव्य मेळव्युं. तेनावडे विवाहादिक कार्यो कर्यां, पूर्वे गोखमां बेठली युवती जोइ हती तेना जेवी सुंदर स्त्री परण्यो. तेनी साथे हावभाव, कटाक्ष विगेरे क्रीडा अनुभववा लाग्यो. परस्पर प्रश्नोत्तरो करतां ते स्त्रीने कांइ रोष उत्पन्न कर्यो तेथी ते स्त्री वक्र दृष्टि करी बोली के "आवुं लज्जावाळुं वाक्य केम बोलो छो? अहींथी दूर जाओ." आ प्रमाणे कोमळ अने सुंदर वाणी सांभळीने ते प्रेमगर्भित चेष्टाथी प्रसन्न थयो; तेथी बे हाथवडे तेने गाढ आलिंगन करवा

तैयार थयो, एटले ते स्त्रीए विलासथीज एक दोरडीवडे तेनापर प्रहार कर्यो. ते जोइने ते भारवाहक जरा दूर खस्यो. आवा स्वप्नमां तेनुं थाळामां पडेलुं शरीर पण निद्रामां साक्षात् खस्युं, एटले ते थाळामांथी कुवामां पडी गयो. पडतां पडतां तेनी निद्रा जती रही, एटले ते विचारवा लाग्यो के " अहो ! आ शुं थयुं ? में शुं जोयुं ? ते स्त्री क्यां गइ ? तेना विलासनी केवी छटा ! अहो ! जेनुं निरंतर ध्यान कर्युं हतुं ते आजे स्वप्नमां फळीभूत थयुं: परंतु आ तो स्वप्ननी स्त्रीए पोतानी मायाजाळमां बांधीने मने आ अंधकुवामां नांखी दीधो; तो पछी साक्षात् स्त्रीनो अनुभव कर्यो होय, तो ते तो खरेखर नरकगतिमांज नांखे. तेमां प्राणीओए कांइ पण संदेह राखवा जेवुं नथी. " आ प्रमाणे कुवामां रह्यो संतो ते विचार करे छे. तेवामां त्यां एक राजा आवी चड्यो. तेणे कुवामां पडेला ते माणसने जोइने तेने बहार काढी पूछ्युं के " तने आ कुवामां कोणे नाख्यो ते कहे. हुं तेने शिक्षा करीश. " भारवाहक बोल्यो के " हे स्वामी ! तेनी पासे तमे तो शी गणत्रीमां छो ? इन्द्रादिक पण तेने शिक्षा करवा समर्थ नथी, तो पछी बीजानी तो वातज शी करवी ! " ते सांभळीने पोताना बळथी गर्व पामेलो ते राजा गाजी उठ्यो के " अरे ! हुं पृथ्वीपति छुं; तेथी एवी कांइ पण वस्तु नथी के जे हुं करी न शकुं. " त्यारे ते भारवाहके पोताना स्वप्ननुं वृत्तान्त सर्व कह्युं. ते सांभळी राजा प्रतिबोध पामी बोल्यो के " तें सत्य कह्युं छे. स्त्रीना विलासने जीतनार तो मात्र महर्षिओज छे. " पछी ते भारवाहक पूरेपूरो प्रबोध पामवाथी तेने प्रथम द्रव्य तथा स्त्री उपर जेवी आसक्ति थइ हती, तेवीज हवे सत्त्व, रजस अने तमोगुणथी रहित एवा निर्गुण मार्गमां आसक्ति थइ. "

आ प्रमाणेनां अनेक दृष्टान्तो सांभळीने ते सुधर्मा शेठ प्रतिबोध पाम्यो हतो. ते पोताना एक मित्रने हमेशां धर्मकथाओ कहीने उपदेश आपवा लाग्यो. पण ते मित्र तीव्र मोह अने अज्ञानसमन्वित होवाथी एक क्षणमात्र पण जैन धर्म उपर रुचिवाळो थयो नहीं. तेथी विषाद पामीने सुधर्माश्रेष्ठीए एकलाज दीक्षा ग्रहण करी. अनुक्रमे एकादश अंगनो अभ्यास कर्यो.

एकदा ते मुनि नगरमां प्रवेश करतां कोइ ठेकाणे विवाहउत्सव होवाथी मधुर गीत, नृत्य अने वाजित्रना मनोहर नाद सांभळीने तथा कामने उद्दीपन करे तेवां सुंदर लावण्यथी, वस्त्राभूषणथी अने मनोहर गीतना आलापथी

कामी जनना मनने विह्वळ करनार स्त्रीओना समूहने जोइने तत्काळ पाछा फर्या; अने अरण्यना कोइ विभागमां जइने लीलां तृण, पर्ण अने बीजादिकनी विराधना न थाय तेवी रीते कोइ वृक्षनी नीचे इर्यापथिकी पडिक्कमीने ध्यानमग्न थया सता विचारवा लाग्या के " अहो ! मारो आत्मा अति लोलुप छे, तेथी जो ते मोहजनक निमित्तो जोइने हुं पाछो निवर्त्यो न होत तो मोटी कर्मवृद्धि थात. ते पुरुषोनेज धन्य छे के जेओ रंभा अने तिलोत्तमा जेवी युवतीओना समूहमां रह्या छतां एक क्षणमात्र पण आत्मतत्त्वनी रमणताने मूकता नथी." आ प्रमाणे शुभ ध्यान ध्यातां ते मुनिने अवधिज्ञान उत्पन्न थयुं. तेज वखते उपरना वृक्षउपरथी एक पांदडुं पोताना चोलपट्ट उपर पड्युं. ते जोइने मुनिए विचार्युं के " आ पत्रमां हुं पण अनेकवार उत्पन्न थयो हइश; परंतु मारो पूर्वनो मित्र कइ गतिमां गयो हशे ? " एम विचारीने तेणे अवधिज्ञानवडे जोयुं तो तेज पत्रमां पोताना मित्रने एकेन्द्रियपणे उत्पन्न थयेलो जोयो. ते वखते मुनि बोल्या के "हे मित्र ! पूर्वे में तने अनेक प्रकारे वार्यो छतां पण तें मोहनी आसक्ति छोडी नहीं; हवे तो तुं मन, वाणी अने बीजी इन्द्रियो विनानो थयो छे; तेथी हवे हुं तने शुं कहुं ? तें मनुष्यभव निरर्थक गुमाव्यो. अरे रे ! परमात्मानो कहेलो धर्म तें सम्यग् प्रकारे अंगीकार कर्यो नहीं." इत्यादि भावदया भावतां अनुक्रमे ते मुनि अनन्तानंदपणुं (मोक्ष) पाम्या.

" विलासमां लालसावाळा ते मित्रने सारी रीते बोध कर्या छतां पण तेणे पोतानुं वीर्य गोपवी राख्युं; तेथी ते वृक्षना पत्रपणाने पाम्यो, अने सुधर्मा मुनिए पोतानुं वीर्य फोरव्युं, तो ते आज जन्ममां अव्ययपदने पाम्या."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ विंशतितमस्तंभस्य
त्रिशततमः प्रबंधः ॥ ३०० ॥

॥ समाप्तोऽयं विंशतितमः स्तंभः ॥

श्री उपदेशप्रासाद.

स्थंभ २१ मो.

व्याख्यान ३०१ मुं.

पूर्णता गुण विषे.

पूर्णतागुणसंपृक्तं, वाचंयममहामुनिम् ।
जयघोषो द्विजः प्रेक्ष्य, पूर्णानन्दमयोऽभवत् ॥ १ ॥

भावार्थ— " वाणीने नियममां राखनार एवा महामुनिने पूर्णता गुणथी युक्त जोइने जयघोष नामनो ब्राह्मण पूर्ण आनंदमय थयो हतो. "

पूर्णता गुणनुं वर्णन पूर्वाचार्योए आ प्रमाणे कह्युं छेः—

पूर्णता या परोपाधेः, सा याचितकमंडनम् ।
या तु स्वाभाविकी सैव, जात्यरत्नविभानिभा ॥ १ ॥

भावार्थ— " जे परउपाधिथी पूर्णता थयेली छे ते मागेला अलंकार जेवी छे; अने जे स्वाभाविक पूर्णता छे ते जातिवंत रत्ननी प्रभा जेवी छे. "

आ श्लोकनुं तात्पर्य ए छे के " परउपाधि एटले पुद्गलना संबंधथी उत्पन्न थयेल देह, द्रव्य, कामिनी, कीर्त्ति विगेरे उपाधिथी नरेन्द्र अने देवेन्द्रादिक जे पूर्णता माने छे ते मागीने पहेरेला अलंकारादिकनी जेम थोडो वखत शोभा आपे छे तेम थोडा वखतनी शोभा छे, अनंतकाळ पर्यंत ते शोभा रहेती नथी; केमके तेवा अलंकारादिकथी जे ऐश्वर्य प्राप्त थाय छे ते ऐश्वर्य तो आ विश्ववासी घणा जीवोए अनन्तवार भोगवीने उच्छिष्ट करेलुं छे, तेथी ते प्राणीओने अशुद्धताना कारणभूत छे. आवी रीते समजीने जे आत्मस्वरूपना अनुभवनी शोभा धारण करे ते शोभा ज निर्मळ रत्ननी कान्ति जेवी शुद्ध छे एम जाणवुं. "

१ श्री यशोविजयजी उपाध्यायकृत ज्ञानसार [अष्टक] ना पहेला पूर्णाष्टकमां आ श्लोक छे.

आ पूर्णता जेने सम्यक्त्वादि प्राप्त थयुं होय तेनेज होय छे. ते विषे कह्युं छे के—

कृष्णपक्षे परिक्षीणे, शुक्ले च समुदञ्चति ।
द्योतते सकलाध्यक्षा, पूर्णानन्दविधोः कला ॥ २ ॥

(ज्ञानसार).

शब्दार्थ—" कृष्णपक्ष क्षीण थाय अने शुक्लपक्षनो उदय थाय, त्यारेज पूर्णानन्द रूपी चन्द्रनी कळा समग्र लोकनी समक्ष प्रकाशमान थाय छे. "

विस्तरार्थ–" कृष्णपक्ष क्षय पामे अने शुक्लपक्ष उदय पामे, त्यारे समस्त लोकने प्रत्यक्ष एवी चन्द्रनी कळा प्रकाशे छे ए लोकसिद्ध रीति छे; तेवी ज रीते कृष्णपक्षरूपी अर्ध पुद्गळ परावर्त उपरांत तमाम संसार क्षय पामे, अने शुक्लपक्षरूपी अर्ध पुद्गळ परावर्तनी अंदर रहेलो संसार प्रवर्तमान थाय त्यारे पूर्णानंद (आत्मा) रूपी चंद्रनी स्वरूपानुयायी चैतन्य पर्याय प्रगट थवा रूप कळा प्रत्यक्ष थाय छे (शोभे छे). कृष्णपक्षमां तो अनादि क्षयोपशमीभूत चेतनावीर्यादि परिणाम मिथ्यात्व अविरतिमय होवाथी संसारना हेतुभूत होय छे तेथी ते शोभतुं नथी.

आ पूर्णताने स्वमतिकल्पनाथी अनेक प्रकारे कहेली छे, परंतु स्याद्वाद रीते तो जे आत्मस्वरूपनुं साधन करवानी अवस्था तेज पूर्णता प्रशस्त छे.

पूर्णताना चार प्रकार छे—नाम पूर्णता, स्थापना पूर्णता, द्रव्य पूर्णता अने भाव पूर्णता. तेमां नाम पूर्ण एटले कोइ वस्तुनुं नाम मात्र जे पूर्ण होय ते; जेमके पूर्णपोळी. काष्ठ अथवा पाषाणादिकमां जे पूर्णनी आकृति करीए ते स्थापना पूर्ण. द्रव्य पूर्णना घणा अर्थो थाय छे, तेमां द्रव्यमां पूर्ण–धनाढ्य माणस; द्रव्ये करीने पूर्ण–जळ विगेरे द्रव्ये करीने पूर्ण घडो विगेरे; द्रव्यथी पूर्ण–पोताना कार्यथी पूर्ण थयेलो; (अहीं द्रव्य एटले " अर्थ क्रिया करनारुं " एवुं द्रव्यनुं लक्षण समजवुं). द्रव्योने विषे पूर्ण–धर्मास्तिकाय स्कन्ध विगेरे. (अहीं 'अणुवओगो दव्वं ' ' जेनामां उपयोगशून्यता होय ते द्रव्य ' एवुं वचन कहेलुं छे. जे पूर्णपदना अर्थने जाणनार छतां उपयोग रहित होय ते आगमथी द्रव्य कहेवाय छे, अने ज्ञशरीर, भव्य शरीर तथा तेथी व्यतिरिक्त ए त्रण प्रकारे करीने नोआगमथी द्रव्य कहेवाय छे; तेमां पूर्णपद जाणनार जीवनुं जे शरीर छे ते ज्ञशरीर

कहेवाय छे, पूर्णपदने जाणनार हवे पछी थवानो होय एवो जे लघु शिष्यादिक ते भव्य शरीर कहेवाय छे, ते बन्नेथी व्यतिरिक्त एटले गुणादिकनी सत्तावडे पूर्ण होय, तोपण तेनी प्रवृत्तिथी रहित अने कर्मथी आवरण पामेलो एवो आत्मारूपी द्रव्य ते तद्व्यतिरिक्त कहेवाय छे. अहीं तेना भाव स्वभावनी विवक्षा करी नथी; केमके द्रव्य कोइ पण वखते पर्याय विनानुं होतुंज नथी. परंतु अहीं तो द्रव्य निक्षेपाना प्रतिपादनने माटे पर्याय रहित मात्र द्रव्यनीज विवक्षा करेली छे. आ प्रमाणे जीवसमासादिक ग्रंथमां निर्णय करेलो छे. पूर्णता तो जीवना गुणरूप छे. ते गुण गुणी विना रही शके नहीं. तेथी तेमां द्रव्यनुं प्राधान्य राखवाथी द्रव्यजीव कहेवाय छे. भावपूर्ण एटले आगमथी पूर्ण–पदार्थना समग्र उपयोगवाळो अने नोआगमथी ज्ञानादि गुणोवडे संपूर्ण.

संग्रह नयने आधारे सर्वे जीवो पूर्णता गुणे करीने युक्त छे. नैगमनयने आधारे आसन्नसिद्धिवाळा भव्य जीवो जेओ पूर्णता गुणना अभिलाषी होय ते पूर्णता गुणथी युक्त कहेवाय छे. व्यवहार नयने आधारे पूर्णता गुण प्राप्त करवा माटे तेनो अभ्यास करनारा जीवो पूर्ण छे. ऋजुसूत्रना मतमां पूर्णता गुणनो वर्तमान समयमां विचार करनारा जीवो पूर्ण छे. शब्दनयना मतमां सम्यक्दर्शनादि साधक गुणोना आनंदथी पूर्ण थयेला जीवो पूर्ण छे. समभिरूढ नयनो आश्रय करीए तो अरिहन्त, आचार्य, उपाध्याय अने मुनिओ आत्मस्वभावना सुखनो आस्वाद करीने संसारमां उद्वेग पामेला होवाथी पूर्णता गुणथी युक्त छे; अने एवंभूत नयने आधारे सिद्धना जीवो अनन्त गुणवाळा अव्याबाध आनंदथी पूर्ण थयेला होवाथी पूर्णता गुणे युक्त छे. अहीं भावपूर्णता एटले त्रिकाळने विषे पण परपुद्गळना संयोगथी उत्पन्न थता सुखनी वांछाथी रहित थवुं ते. तेनाथी न्यूनपणुं न मानवुं ते. तेवा पूर्णता गुणे करीने युक्त एवा साधुने जोइने जयघोष नामनो ब्राह्मण पूर्ण आनंदमय थयो हतो. तेनी कथा आ प्रमाणे—

जयघोष द्विजनी कथा.

वाणारसी नगरीमां साथे जन्मेला जयघोष अने विजयघोष नामना बे भाइओ काश्यपगोत्री हता. एकदा जयघोष स्नान करवा गंगाने किनारे गयो. त्यां मुखमां शब्द करता देडकाने लइने खातो एक सर्प तेणे जोयो. ते सर्पने पण एक कुरर पक्षीए उपाडीने उंचो उडाडी पृथ्वीपर नांखी खावा मांड्यो. ते पक्षीथी

भक्षण करातां छतां पण ते सर्प पेला शब्द करता देडकाने तोडीतोडीने खातो हतो. आ प्रमाणे परस्पर भक्षण करता ते प्राणीओने जोइने जयघोषे विचार्युं के " अहो ! संसारनुं स्वरूप केवुं छे ? "

> यो हि यस्मै प्रभवति, ग्रसते तं स मीनवत् ।
> न तु गोपयति स्वीयशक्तिं कोऽपि न दीनवत् ॥ १ ॥

भावार्थ—" जे जेना करतां वधारे समर्थ छे, ते तेने मत्स्यनी पेठे ग्रसन करे छे. कोइ पण प्राणी दीननी जेम पोतानी शक्तिने गोपवता नथी. " अने

> कृतान्तस्तु महाशक्तिरिति स ग्रसतेऽखिलम् ।
> तदसारेऽत्र संसारे, का नामास्था मनीषिणाम् ॥ २ ॥

भावार्थ—" यमराज तो महाशक्तिमान छे, तेथी ते समग्र प्राणीने गळी जाय छे; तो आवा असार संसारमां बुद्धिमान पुरुषोनी केम आस्था होय ? नज होय. "

परंतु आ संसारमां मात्र एक धर्मज यमराजनी शक्तिने कुंठित करवा समर्थ छे, तेथी हुं तेनोज आश्रय करुं.

आ प्रमाणे चित्तमां निश्चय करीने ते गंगानदीने सामे तीरे गयो. त्यां तेणे पूर्वे कहेला पूर्णता गुणथी युक्त एवा साधुओने जोया. एटले तेमनी वाणीथी जैनधर्मनुं रहस्य जाणीने तेमनी पासे दीक्षा ग्रहण करी पृथ्वीपर विहार करवा लाग्यो. अनुक्रमे विहार करतां ते जयघोष मुनि वाणारसी नगरीना उद्यानमां आव्या. ते पुरीमां विजयघोषे यज्ञ करवा मांड्यो हतो, त्यां जयघोष मुनि मासक्षपणने पारणे भिक्षा माटे गया. तेने यज्ञ करनार विजयघोषे ओळख्या नहीं, तेथी पोतेज तेने भिक्षानो निषेध करी कह्युं के " हे भिक्षुक! तने हुं भिक्षा आपीश नहीं. बीजे ठेकाणे याचना कर; केमके वेद जाणनार ब्राह्मणोज यज्ञमंडपमां निष्पन्न थयेलुं अन्न खावाने योग्य छे. " आ प्रमाणे ते याजके (यज्ञ करनाराए) निषेध कर्या छतां पण ते मुनि समता धारण करीने रह्या. पछी अन्ननी इच्छाथी नहीं, पण तेने तारवानी बुद्धिथी ते बोल्या के " हे ब्राह्मण ! वेदमुख एटले वेदमां मुख्य धर्म शो कह्यो छे ? यज्ञमुख एटले मुख्य यज्ञ कयो छे ? नक्षत्रमुख एटले नक्षत्रोमां मुख्य कोण छे ? अने धर्ममुख एटले धर्मने शरु करनार कोण छे ? ते तुं

कांइ पण जाणतो नथी." ते सांभळीने याजक बोल्यो के "त्यारे तमेज ते सर्व कहो." मुनि बोल्या के "वेदमां अहिंसा धर्मज सर्व धर्ममां मुख्य कहेलो छे, सर्व यज्ञोमां भावयज्ञ मुख्य छे, नक्षत्रोमां मुख्य चंद्रमा छे अने धर्ममुख काश्यपगोत्री ऋषभदेवज छे. केमके तेमणेज धर्मनो प्रथम उपदेश करेलो छे अने तेमणे प्ररुपेला धर्मनुं आराधन करनाराज ब्राह्मण कहेवाय छे." ते विषे श्री उत्तराध्ययनना पच्चीशमा अध्ययनमां कह्युं छे के—

जहा पोमं जले जायं, नो वि लिप्पइ वारिणा।
एवं अलित्त कामेहिं, तं वयं बंभमाहणं ॥ १ ॥

भावार्थ—"जेम जळमां उत्पन्न थयेलुं कमळ जळथी लेपातुं नथी, तेवीज रीते जेओ कामभोगथी लेपाता नथी, तेनेज अमे ब्राह्मण कहीए छीए." वळी—

न वि मुंडिएण समणो, न ओंकारेण बंभणो।
न मुणी रणवासेणं, कुसचीरेण न तावसो ॥ २ ॥

भावार्थ—"मात्र मुंडन कराववाथी (लोच कर्याथी) कांइ साधु कहेवाय नहीं, मात्र ओंकार (ॐ भूर्भुवः स्वः इत्यादि गायत्रीमंत्र) बोलवाथी ब्राह्मण कहेवाय नहीं, मात्र अरण्यमां रहेवाथी मुनि कहेवाय नहीं अने मात्र दर्भ अथवा वल्कलनां वस्त्र धारण करवाथी तापस कहेवाय नहीं."

समयाए समणो होइ, बंभचेरेण बंभणो।
नाणेणाय मुणि होइ, तवेण होइ तावसो ॥ ३ ॥

भावार्थ—"समता गुण धारण करवाथी श्रमण (साधु) कहेवाय छे, ब्रह्मचर्य पाळवाथी ब्राह्मण कहेवाय छे, ज्ञानथी मुनि कहेवाय छे. अने तप करवाथी तापस कहेवाय छे." वळी—

कम्मुणा बंभणो होइ, कम्मुणा होइ खत्तीउ।
कम्मुणा वइसो होइ, सुद्दो हवइ कम्मुणा ॥ १ ॥

भावार्थ—"कर्मे (क्रियावडे) करीनेज ब्राह्मण कहेवाय छे, कर्मे करी-

नेज क्षत्रिय कहेवाय छे, कर्मे करीने ज वैश्य कहेवाय छे, अने कर्मे करीनेज शुद्र कहेवाय छे. "

कर्मे करीने ज ब्राह्मण कहेवाय छे, ते विषे कह्युं छे के—

क्षमा दानं तपो ध्यानं, सत्यं शौचं धृतिः क्षमा ।
ज्ञानं विज्ञानमास्तिक्य–मेतद्ब्राह्मणलक्षणम् ॥ १ ॥

भावार्थ—" क्षमा, दान, तप, ध्यान, सत्य, शौच, धृति, क्षमा, ज्ञान, विज्ञान अने आस्तिकपणुं ए ब्राह्मणनां लक्षण छे. "

कर्मे करीने क्षत्रिय कहेवाय छे, एटले भयथी रक्षण करवारूप कर्मे करीने क्षत्रिय कहेवाय छे, कृषि तथा पशुपालन विगेरे करवाथी वैश्य कहेवाय छे अने कासदीयुं, नोकरी विगेरे कर्म करवाथी शुद्र कहेवाय छे. आ प्रमाणे पोतपोताने योग्य कर्म न करे तो ते ब्राह्मणादिक जातिथी ने तेवी संज्ञाथी पण भ्रष्ट थयेला जाणवा. अहिंसादिक गुणोथी युक्त एवा श्रेष्ठ ब्राह्मणोज तरवा अने तारवामां समर्थ होय छे. "

आ प्रमाणे ते मुनिनां धर्मवाक्यो सांभळीने विजयघोष संशय रहित थइ " जरूर आ मुनि मारा भाइ छे " एम जाणीने प्रसन्न थइ बोल्यो के–" हे मुनि ! तमेज खरा वेदने जाणनारा छो. हे यथास्थित वस्तुतत्त्वने जाणनार ! तमेज यज्ञना करनारा छो. भावयज्ञ करीने तमेज पोताने अने परने तारवाने समर्थ छो. माटे हे उत्तम भिक्षु ! आ भिक्षा ग्रहण करीने तमे मारापर अनुग्रह करो. " मुनि बोल्या के " हे ब्राह्मण ! मारे भिक्षानी कांइ जरुर नथी; परंतु जलदीथी तुं आ कृत्यथी निवृत्ति पामी प्रव्रज्या ग्रहण कर. भयना आवर्त्तवाळा आ संसारसागरमां भटक नहि. जेम एक लीलो तथा एक सूको एवा माटीना बे गोळाने भींतपर फेंकीए, तो आर्द्र गोळो भींत साथे चोंटी जशे अने सूको गोळो नीचे पडशे, अर्थात् ते चोंटशे नहीं, तेम जे दुर्बुद्धि माणसो कामनी लालसावाळा होय छे तेओज संसारमां लीन थाय छे, अने जेओ ते लालसाथी विरक्त छे तेओ लीन थता नथी. " कह्युं छे के—

एवं लग्गंति दुम्मेहा, जे नरा कामलालसा ।
विरत्ता उ न लग्गंति, जहा सुक्के उ गोलए ॥ १ ॥

(आ गाथानो अर्थ उपर आवी गयेलो छे.)

इत्यादि उपदेश सांभळीने ते विजयघोषे सर्व संग तजीने दीक्षा ग्रहण करी. पछी बन्ने भाइओ अनुक्रमे पूर्व कर्मनो क्षय करीने मोक्षसुखने पाम्या.

" वास्तविक कल्पना रहित अने आत्मगुण साधन करवामां तत्पर एवी पूर्णता ते ज्ञानदृष्टिरूप पोतानीज कांति छे, माटे हे भव्य प्राणीओ ! तमे तेने अनुयायी चेतना करो. "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ एकविंशतितमस्तंभस्य एकोत्तरत्रिशततमः प्रबंधः ॥ ३०१ ॥

व्याख्यान ३०२ जुं.

मग्नता गुण विषे.

हित्वाक्षविषयांश्चित्तं, समाधिसौख्यलालसम् ।
यस्य जातं नमस्तस्मै, मग्नतागुणधारिणे ॥ १ ॥

भावार्थ—" जेनुं चित्त इन्द्रियोना विषयोने छोडीने समाधिसुखनुं लालसु (तल्लीन) थयुं छे, तेवा मग्नता गुण धारण करनारने नमस्कार छे. "

मग्नता गुणनुं स्वरूप पूर्वाचार्योए आ प्रमाणे कह्युं छे—आ जीव अनादि काळथी पुद्गळना स्कन्धथी उत्पन्न थयेला वर्ण, गंध, रस, स्पर्श अने शब्द विगेरे विषयोमां भ्रमण करतां करोडो कल्पना करीने इष्ट विषयोने इच्छतो सतो वायुए उपाडेला पलाशनां सूकां पांदडांनी जेम भटक्या करे छे. ते जीव कोइ वखत स्वपरना विवेकरूप भेदज्ञानने पामीने अनन्त ज्ञान दर्शनना आनंदवाळा आत्मभावनो सत्तापणे निश्चय करीने पछी " आ [1]विभावथी उत्पन्न थयेलुं सुख मारुं नहीं, हुं तेनो भोक्ता नहीं, ए तो मात्र उपाधिज छे; में आजसुधी आ परवस्तुओमां ममता राखीने तेनो कर्त्ता, भोक्ता (भोगवनार) अने ग्राहक (ग्रहण करनार) हुं छुं एम जे मान्युं हतुं ते योग्य नथी. त्रिकाळज्ञ केवळी भगवानना वाक्यरूपी

१ आत्मार्थी व्यतिरिक्त पुद्गलादिक सर्व विभाव कहेवाय छे.

अंजनवडे जेने स्वपरनो विवेक प्राप्त थयेलो छे, तेने परवस्तुमां रमणरूप आस्वादन योग्य नथी. " एवी रीते विचार करीने आत्माने अनन्त आनंदमय जाणी परमात्म सत्तारूप स्वरूपमां मग्न थाय छे. आवो माणस मग्नता गुणने धारण करनार कहेवाय छे.

आ मग्नता गुण नयनिक्षेपादिकवडे घणा प्रकारनो छे. तेमां नाम अने स्थापना सुगम छे. धन अने मदिरापान विगेरेमां जे मग्न होय ते द्रव्यमग्न कहेवाय छे. अथवा द्रव्यमग्नना बे प्रकार जाणवा. आगमथी मग्न अने नोआगमथी मग्न. तेमां आगमथी मग्न एटले पदार्थोने जाणे, पण तेमां उपयोग वर्त्ते नहीं ते, अने नोआगमथी मग्न पूर्वे कह्या प्रमाणे धन मदिरादिकमां मग्न होय ते. तद्व्यतिरिक्त ते मूढ, शून्य, जड होय ते. भावमग्न बे प्रकारे छे, अशुद्ध अने शुद्ध. तेमां अशुद्ध भावमग्न ते निरंतर क्रोधादिकमां मग्न, विभावमां आत्माने भावनारो. शुद्ध भावमग्नना बे प्रकार छे, तेमां प्रथम साधक एटले आत्मस्वरूपने साधनार ते आत्मस्वरूपनी सन्मुख रहेलो. नयनी अपेक्षाए विचारीए तो पहेला चार नयनी अपेक्षाए विधि सहित बाह्य साधनमां प्रवृत्ति करनार अने वस्तुस्वरूपने प्रगट करवानी इच्छावाळो साधक कहेवाय छे: अने शब्दादिक त्रण नयनी अपेक्षाए तो सम्यग् दर्शन, ज्ञान अने संयम विगेरे आत्मसमाधिमां मग्न थयेलो साधक कहेवाय छे. बीजो सिद्धमग्न ते आवरण रहित संपूर्ण वस्तुस्वरूपमां मग्न थयेलो जाणवो.

अहीं ज्ञानादिक आत्मस्वरूपमां मग्नपणुं गुणान्वित जाणवुं. परभावमां आसक्त थयेलामां खरुं मग्नपणुं जाणवुं नहीं. कह्युं छे के---

स्वभावसुखमग्नस्य, जगत्तत्त्वावलोकिनः ।
कर्तृत्वं नान्यभावानां, साक्षित्वमवशिष्यते ॥ १ ॥

भावार्थ—" जगतना तत्त्वनुं अवलोकन करनार स्वभावसुखमां मग्न थयेलाने अन्य भावोनुं कर्तापणुं होतुं नथी, मात्र साक्षीपणुंज अवशेष रहे छे. "

अर्थात् स्वाभाविक सहज सुखमां मग्न थयेला अने लोकना यथार्थ स्वरूपने जाणनारा दर्शनशील एवा मनुष्योने ज्ञानावरणीयादिक कर्मोने उत्पन्न करनार बाह्य पुद्गळ स्कन्धो लेवामां अथवा मूकवामां कर्तापणुं होतुं नथी, पण ज्ञानपणाना स्वभावथी साक्षीपणुं ज होय छे.

आ उपर सूक्ष्म विचार करीए तो—क्रिया करवामां जेनुं एकाधिपत्यपणुं [स्वतंत्रपणुं] होय ते कर्त्ता कहेवाय छे. आ कर्त्तापणुं जीवमां तेना गुणोनुंज होइ शके छे. कुंभार चक्रादिक उपकरणथी घटादिक पदार्थो करे छे तेम जीव पण चैतन्यवीर्यरूपी उपकरणथी पोताना गुणो उत्पन्न करी शके छे. क्रिया शून्यपणुं होवाथी धर्मास्तिकायादिक द्रव्यमां एकाधिपत्य कर्त्तापणुं नथी. जीवनुं कर्त्तापणुं पण पोताना कार्य (आत्मधर्म) संबंधे छे. कोइ पण जीव जगतनो कर्त्ता नथी, परंतु पोताना कार्यना परिणाम पामता गुणोना पर्यायनी प्रवृत्तिनो ज कर्त्ता छे. जो परभावोनो कर्त्ता जीवने मानीए तो असत् आरोप अने सिद्धिअभाव विगेरे दूषणो प्राप्त थाय छे. माटे जीव लोकालोकनो ज्ञाता छे पण परभावनो कर्त्ता नथी; परंतु स्वभावमां मूढ थइने अशुद्ध परिणाममां प्रवृत्त थइ अशुद्ध निश्चयनये रागादिक विभावनो अने अशुद्ध व्यवहारनये ज्ञानावरणादि कर्मनो कर्त्ता थाय छे, तेम छतां पण ते जीव स्वाभाविक रुचिवाळो अने अनन्त अविनाशी आत्मस्वरूपवाळो होइने आत्माना परमानन्दनो ज भोक्ता छे. ते परभावोनो कर्त्ता नथी, पण ज्ञाता (साक्षीमात्र) छे.

आ मग्नता गुण धारण करनार प्राणी केवो होय ? ते विषे पूर्वपूज्यपुरुषो कहे छे के—

परब्रह्मणि मग्नस्य, श्लथा पौद्गलिकी कथा ।
क्वामी चामीकरोन्मादाः, स्फारा दारादराः क्व च ॥ १ ॥

शब्दार्थ—" परब्रह्ममां मग्न थयेला मनुष्यने पुद्गळ संबंधी कथा ज शिथिळ थइ जाय छे. तेने पछी आ सुवर्णना उन्मादो क्यां ? अने देदीप्यमान स्त्रीओनो आदर पण क्यां ? "

विस्तरार्थ—" परब्रह्म एटले ज्ञानादि आत्मस्वरूपमां मग्न थयेला मनुष्यने पुद्गळ संबंधी कथा एटले शरीरादिकना सुंदर वर्ण विगेरेनी कथा शिथिळ एटले नष्ट थइ जाय छे; केमके ते शरीरादिक परवस्तु छे, अग्राह्य छे, अने अभोग्य छे, एम तेने निर्धार थयेलो होय छे. अर्थात् आवा पुद्गळादिकनी कथा पण जेने करवा लायक नथी, तेने पछी तेनापर आग्रह तो क्यांथी ज थाय ? ते कारणथी ज तेने आ कांचन एटले सुवर्णनो उन्माद ज क्यांथी होय ? केमके पापस्थानोना निमित्तभूत होवाथी आत्मगुणरूपी संपत्तिवाळा मनुष्यने सुवर्णादिनुं ग्रहण

करवापणुंज होतुं नथी, तेमज एवा पुरुषने स्फार-देदीप्यमान एवी जे स्त्री तेनो आदर पण क्यांथी ज होय ? न ज होय. ”

अहर्निश पुद्गळ संबंधी कथामां मग्न रहेनार सर्व स्थाने उन्मादवाळा ज होय छे. जुओ ! रामचंद्र त्रिकाळमां पण असंभवित एवो सुवर्णनो मृग जोइने तेने ग्रहण करवा माटे अनेक प्रकारना उन्मादो कर्या हता. त्यारपछी स्त्रीने माटे पण तेणे घणो आदर प्रगट कर्यो हतो. अर्थात् सीतानुं हरण थतां घणो उन्माद बताव्यो हतो अने तेने पाछी लाववा पारावार प्रयास कर्यो हतो; माटे व्यथा उत्पन्न करनारी ते पुद्गलनी कथाने जेणे ज्ञानगोचर करेली छे तेज मग्नता गुणयुक्त कहेवाय छे. आ संबंधमां उपयोगी सोमवसुनुं दृष्टांत छे ते आ प्रमाणे –

सोमवसुनी कथा.

कौशांबी नगरीमां सोम नामे एक ब्राह्मण रहेतो हतो. ते हमेशां धर्मशास्त्र श्रवण करवामां प्रीतिवाळो हतो. एकदा पुराणमां तेणे आ प्रमाणे लोमऋषिनी कथा सांभळी के “ कोइ एक दीर्घदर्शी (सूक्ष्म दृष्टिवाळा) तापसे बार हजार वर्ष सुधी तप कर्युं. ते मासक्षपणने पारणे पांचज घेर भिक्षा मागतो हतो. जो कदाच ते पांच घरमांथी तेने भिक्षा न मळती तो फरीथी मासना उपवास करतो, पण छठ्ठे घेर भिक्षा मागतो नहीं. ए प्रमाणे चार मासक्षपण सुधी करतो, अने आहार मळतो त्यारे मळेला आहारना चार भाग करीने एक भाग जळचर[1]ने, बीजो स्थळचर[2]ने अने त्रीजो खेचर[3]ने आपीने अवशेष रहेला चोथा भागने एकवीश वार पाणीथी धोइने पोते खातो हतो. आवी रीते तप करतां ते तापस मृत्यु पामीने इन्द्र थयो, त्यां तेणे सर्व देवोने पूछ्युं के “ आ स्वर्ग कोणे बनाव्युं छे ? ” त्यारे देवताओ बोल्या के “ आ स्वर्ग कोइए बनाव्युं नथी. ते तो स्वयंसिद्धज छे. ” ते सांभळीने तेणे (इन्द्रे) विचार्युं के “ आ स्वर्ग जीर्ण थइ गयुं छे माटे हुं नवुं स्वर्ग बनावुं. ” देवताओए कह्युं के “ नवीन स्वर्ग कोइथी बनी शकेज नहीं. ” इन्द्रे कह्युं के “ प्रथमना इन्द्रो नवीन स्वर्ग बनाववामां अशक्त हता, पण हुं तो समर्थ छुं. ” त्यारे देवो बोल्या के “ हे स्वामी ! तमे प्रथम मृत्युलोकने जुओ, पछी तमारी धारणा प्रमाणे करो. ” ते सांभळीने इन्द्र मनुष्यलोक

१ माछलां विगेरे. २ पशुओ. ३ पक्षीओ.

जोवा गयो. त्यां कोइ एक अरण्यमां एक आकडाना वृक्षनी नीचे लोम नामना ऋषिने तपस्या करता जोया. ते ऋषिने इन्द्रे पूछ्युं के "हे ऋषि! तमे मठ कर्या विना तप केम करी शको छो ?" लोमऋषि बोल्या के– "ज्यारे चौद [1]चोकडी जाय छे, त्यारे मारा शरीरनो एक वाळ खरे छे. एवी रीते आ मारा आखा शरीरना साडात्रण करोड वाळ खरी जशे, त्यारे मारुं मृत्यु थवानुं छे. हजु तो मारा मस्तकना चार केश पण पूरा पड्या नथी. अकेक चोकडी वीश हजार वर्षे थाय छे. ते प्रमाणे सर्व रोम पडशे त्यारे मारुं मृत्यु थशे, तेथी आ देह अनित्य छे. जो आ शरीर शाश्वतुं होत तो तेने माटे मठ विगेरे करवानो मोह राखत, पण तेम तो नथी." ते सांभळी इन्द्रे विचार कर्यो के "आ ऋषिनी पासे मारुं आयुष्य तो जळना कणीआ जेटलुंज छे. तो नवीन स्वर्ग करवानो शो मोह करवो ?" एम निश्चय करी इन्द्र पोताने स्थाने गयो.

आ प्रमाणे पुराणनी कथा सांभळीने ते सोम ब्राह्मणे विचार्युं के "कुळधर्म तो श्रेष्ठ नथी. माटे धर्मनी परीक्षा करीने ज्ञानधर्मनुं आचरण करुं." पछी तेणे नाना प्रकारनां दर्शनो जोतां जोतां कोइएक मतना परिव्राजकने धर्म पूछ्यो के "प्रभुए त्रण पदमां धर्म कहेलो छे. मीठुं खावुं, सुखे सूवुं अने पोतानो आत्मा लोकप्रिय करवो. आ त्रण पदनो शो अर्थ समजवो ?" परिव्राजके जवाब आप्यो के "प्रथमनुं जमेलुं जीर्ण थया पछी (पची गया पछी) रुचि प्रमाणे जमवुं ते मीठुं भोजन, कोमळ शय्यामां सूवुं ते सुखशयन अने मंत्र तथा औषधिना प्रयोगथी लोकोमां प्रशंसा थाय तेम करवुं ते लोकप्रिय थवुं." ते सांभळीने सोमवसुए विचार्युं के "आ सम्यग् धर्म नथी, केमके आ तो पापवृत्तिमय छे." एम विचारीने तेणे ते त्रणे पदनो अर्थ कोइ मुनि पासे जइने पूछ्यो. एटले मुनिए जवाब आप्यो के "जे भोजन पोते कर्युं न होय, कराव्युं न होय अने तेना करनारने अनुमोदन पण कर्युं न होय एवुं भोजन एकांतर खावामां आवे तो ते परमार्थथी मिष्ट कहेवाय छे. केमके ते दाता, दान ने देय एम त्रणे प्रकारनी शुद्धिवाळुं होवाथी दान करनार अने लेनार बन्नेने सुखकारी छे. विधिपूर्वक अल्प निद्रा लेवी ते सुखशयन कहेवाय छे; अने कोइपण प्रकारनी इहा (इच्छा) न करवी. एवुं महा निरीह

१ तेंताळीश लाख अने वीश हजार वर्षनी एक चोकडी कहेवाय छे एम टबामां लख्युं छे.

पणुं होवाथी लोकप्रिय थवाय छे. " आ प्रमाणे सांभळीने सोमवसुए विचार्युं के " आ अर्थ मार्गानुयायी अने समिचिन जणाय छे. "

ए प्रमाणे तत्त्वज्ञान सांभळीने ते ब्राह्मण हर्ष पाम्यो अने पांच समिति तथा त्रण गुप्तिथी युक्त एवा ते साधुए आचरण करेली त्रिपदीने जोइने तथा सांभळीने तेणे चारित्र ग्रहण कर्युं. एकदा ते सोम साधु अरण्यमां प्रतिमा धारण करी उभा रह्या हता, ते वखते इन्द्रियोना विषयोने निवारीने आत्मस्वरूपना अवलोकनमांज तत्पर थइ तन्मय चित्त करीने आत्मस्वरूपना ज्ञानमां मग्न थया. कह्युं छे के—

ज्ञानमग्नस्य यत्सौख्यं, तद्वक्तुं नैव शक्यते ।
नोपमेयं प्रियाश्लेषैर्नापि तच्चन्दनद्रवैः ॥ १ ॥

भावार्थ—ज्ञानमां मग्न थयेला मनुष्यने जे सुख होय छे, ते कहेवाने कोइ समर्थ नथी. ते सुखने प्रियाना आलिंगन साथे अथवा तो चंदन रसना विलेपन साथे उपमा आपी शकाय तेम नथी " आत्मस्वरूपनी उपलब्धिथी प्राप्त थयेलुं जे सुख ते वाणीगोचर छेज नहीं. ते अध्यात्म सुखने बाह्य सुखनी उपमा वडे उपमित करायज नहीं; केमके आरोपित सुख आत्मज्ञानना सुखनी बराबर थइ शके नहीं. कह्युं छे के—

लब्भइ सुरसामित्तं, लब्भइ पहुअत्तणं न संदेहो ।
इक्को नवरिं न लब्भई, जिणवरदेसओ धम्मो ॥ १ ॥

भावार्थ—" देवोनुं स्वामीपणुं (इंद्रपणुं) पामी शकाय छे, तेमज प्रभुता पण पामी शकाय छे, तेमां कांइ संदेह जेवुं नथी; परंतु एक जिनेंद्रे प्ररुपण करेलो धर्मज पामी शकातो नथी, तेज एक विशेष दुर्लभ छे. "

धम्मो पवित्तिरूवो, लब्भइ कइया वि निरयदुक्खतया ।
जो निअवत्थुसहावो, सो धम्मो दुल्लहो लोए ॥ २ ॥

भावार्थ—" नरकना दुःखथी पीडा पामीने कोइक वखत प्रवृत्तिरूप धर्म तो पामी शकाय छे, पण जेमां आत्मवस्तुनो स्वभाव रहेलो छे एवो जे धर्म ते आ लोकमां दुर्लभ छे. "

एज कारणथी वस्तुस्वरूप धर्मना स्पर्शवडे करीनेज ते साधु शुभ ध्यानमां मग्न थइ कायोत्सर्गे रह्या. ते वखते कोइ एक चक्रवर्ती चोराशी लाख हाथी, घोडा अने रथथी युक्त तथा छन्नु करोड पदाति सहित अनेक वारांगनाओने नृत्य करावतो ते मार्गे नीकळ्यो. तेणे ते मुनिने जोइने विचार्युं के " अहो! आ मुनिमां आत्मस्वरूपमां मग्न थवानो गुण केवो अप्रतिम छे ! ते वाणीथी कही शकाय तेम नथी. मारा सैन्यमां रहेला स्पर्शनादिक पांचे इन्द्रियोना विषयोने जोया छतां पण ते जोता नथी, माटे हुं हाथीपरथी उतरीने तेमने बोलावुं." एम विचारी हाथीपरथी नीचे उतरीने ते बोल्या के " हे मुनि ! हुं चक्रवर्ती राजा तमने वांदुं छुं." एम वारंवार राजाए कह्युं तोपण ते मुनिए ध्यानमां होवाथी सांभळ्युं नहीं, कारणके ते तो आत्मानो स्वाभाविक धर्म अने तेनी अढार हजार शिलांगरथादि सेना तेने जोवामांज एकतानवाळा हता; परवस्तु तो विभाव दशावाळी होवाथी ते परावलोकन करता नहोता. आ प्रमाणे आत्मगुणमां मग्न थयेला (भावितात्मा) ते मुनिनी सामे चक्रवर्ती अरधा पहोर सुधी जोइ रह्यो, तो पण तेमणे पोतानुं ध्यानमग्नपणुं छोड्युं नहीं. पछी राजाए मुनिना गुणनी प्रशंसा करता सता श्रावकधर्म ग्रहण कर्यो. मुनि पण अनुक्रमे केवळज्ञान अने सिद्धिपदने पाम्या.

" समग्र साध्य (आत्मस्वरूप) ने साधनार एवा पोताना आत्मामांज रहेला मग्नता गुणने पामीने आत्मऋद्धि-पोतानी सेना जोवामांज तत्पर अने समाधिमां रहेला सोमवसु मुनिए इन्द्रिय विषयोथी भरपूर एवा चक्रवर्तीनी सेना साम्मुं पण जोयुं नहीं. "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ एकविंशतितमस्तंभस्य
द्व्युत्तरत्रिशततमः प्रबंधः ॥ ३०२ ॥

व्याख्यान ३०३ मुं.

स्थिरता गुण विषे.

दर्शनादिगुणावाप्तौ. त्रिभावेष्वप्रवर्तना ।

सा स्थिरता दिवा रात्रावरक्तद्विष्टतां गता ॥ १ ॥

भावार्थ—" दर्शनादिक गुणोनी प्राप्ति माटे रात्रीदिवस विभाव पदार्थोमां राग द्वेष तजीने ते पदार्थोथी पाछा फरवुं तेने स्थिरता कहेली छे. "

आ स्थिरता पूर्वाचार्योए घणे प्रकारे वर्णवेली छे. तेमां धर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकाय अने आकाशास्तिकाय ए त्रणनी स्थिरता क्रियारहित होवाथी अने पुद्गळोनी स्थिरता स्कंधादिनिबद्ध होवाथी ते आत्मतत्त्वना साधनमां हेतुभूत नथी, पण आत्मानी स्थिरताज हेतुभूत छे. तेमां नाम स्थिरता अने स्थापना स्थिरता तो पूर्वनी जेम सुगम छे. द्रव्यथी स्थिरता एटले योगचेष्टानो रोध करवो ते. द्रव्यने विषे स्थिरता एटले मम्मण श्रेष्ठीनी जेम प्राप्त थयेला द्रव्य (धन) नो व्यय करवानी इच्छा पण न करवी ते; अथवा द्रव्यस्थिरता एटले शरीरमां रोगादिक उत्पन्न थवाथी मळकोष्टबंधरूप (मलमूत्रादिकनो रोध) थाय छे ते. अथवा ते बन्नेथी व्यतिरिक्त-स्वरूपना उपयोगथी शून्य अने साध्यथी विकळ एवा मनुष्यनी प्रणामादिकने विषे तथा कायोत्सर्गादिमां स्थिरता थाय छे ते पण द्रव्य स्थिरता कहेवाय छे. कह्युं छे के—

अस्थिरे हृदये चित्रा, वाङ्नेत्राकारगोपना ।

पुंश्चल्या इव कल्याणकारिणी न प्रकीर्तिता ॥ १ ॥

भावार्थ—" हृदय स्थिर न होय एटले परभावमां प्रवर्ततुं होय. छतां विचित्र एवी वाणी, नेत्र तथा आकारनी द्रव्यक्रियारूप गोपना-ते पुंश्चली (असती) स्त्रीनी जेम हित करनारी कहेल नथी. "

जैनशासनमां भावनी अभिलाषी एवी द्रव्य क्रियाज प्रशस्त कहेली छे. भावरहित क्रिया बिलाडाना ध्यान जेवी निष्फळ छे. केटलाएकने द्रव्य क्रिया परंपराए करीने धर्मना हेतुपणे थाय छे एम तत्त्वार्थमां कहेलुं छे, पण ते देवादिकना

सुखनी तथा यश विगेरेनी वांच्छा रहित करेली क्रिया समजवी; लोकसंज्ञामां आरूढ थयेलाए लोकमां ख्याति विगेरेनी इच्छा माटे करेली न समजवी. भावस्थिरता अशुद्ध अने शुद्ध भेदे करीने बे प्रकारनी छे. तेमां रागद्वेषमां तन्मयतास्थिरता ते अशुद्ध भावस्थिरता कहेवाय छे, अने सम्यग् ज्ञानादिक स्वरूपमां तन्मयपणारूप स्थिरता ते शुद्ध भावस्थिरता कहेवाय छे.

साध्यनी अभिलाषाए करीने साध्यने योग्य उद्यमना परिणामना कारणभूत योगादिक द्रव्याश्रवनो त्याग करवाथी थयेली जे स्थिरता ते पहेला चार नय रूप छे, जे सम्यग दर्शनादिके करीने आत्मस्वरूप निष्पादन करवा माटे अभ्यासवाळी स्थिरता ते शब्दनय स्थिरता छे, जे धर्मध्यान अने शुक्लध्यानमां रहेली अप्रच्युति परिणतिरूप स्थिरता ते छठ्ठा नयने योग्य छे, अने जे क्षायिक ज्ञानादिकना सुखथी अप्रच्युतिरूप स्थिरता ते एवंभूत स्थिरता कहेवाय छे. विभाव पदार्थमां पण सर्व नयनी अपेक्षाए स्थिरता होइ शके छे, पण तेवी स्थिरता तत्त्वविकळ पुरुषोने होय छे. अहीं तो परभावमां अप्रवर्तनरूप जे स्थिरता तेज परमानंदना संदोहवाळी होवाथी ग्रहण योग्य छे. कह्युं छे के—

स्थैर्यरत्नप्रदीपश्चेद्दीप्रः संकल्पदीपजैः ।
तद्विकल्पैरलं धूमैरलंधूमैस्तथाश्रवैः ॥ १ ॥

भावार्थ—" जे मनुष्यने स्थिरतारूपी रत्नप्रदीप देदीप्यमान छे तेने संकल्परूपी दीवाथी उत्पन्न थता विकल्परूपी धूमनुं शुं प्रयोजन छे ? तेमज आश्रव रूपी धूमनुं पण शुं प्रयोजन छे ? "

आ श्लोकनो विस्तरार्थ एवो छे के—" जे माणसने स्थिरता रूपी रत्ननो दीवो देदीप्यमान छे, ते माणसने परवस्तुनी चिंताथी उत्पन्न थयेल अशुद्ध चपळतारूप जे संकल्प ते संकल्प रूप दीवाथी उत्पन्न थता जे वारंवार स्मरणरूप विकल्पो ते रूप धूमाडाथी सर्युं, अर्थात् तेने आवा धूमाडा कांइ लाभ करी शकता नथी. जो के अभेद रत्नत्रयीनो प्रादुर्भाव थाय त्यारेज निर्विकल्प समाधि थाय छे, तोपण आत्मस्वरूपमां लीन थयेला मनुष्यने संसार संबंधी संकल्पविकल्प तो थतांज नथी; तथा द्रव्यथी अने भावथी प्राणातिपातादिक आश्रवोथी पण सर्युं, अर्थात् जेने स्थिरता रूप रत्नदीपक होय तेने आश्रवो कांइपण लाभ करी शकता नथी."

आत्मसमाधिमां लीन थयेलाने आश्रवो होताज नथी; असत् स्वरूपथी भ्रान्ति पामेलानेज आश्रव प्राप्त थाय छे; तेनीज तेवी परिणति थाय छे. ज्यारे आत्मस्वरूपनो बोध प्राप्त थाय छे, त्यारे पोतानी परिणति आत्मकार्य करवामांज वापरे छे. पण परकार्य करवामां वापरता नथी. कर्त्ता, कर्म विगेरे छए कारको पण आत्मस्वरूपनी मूढताथीज परकार्यमां व्यापार करता जणाय छे. वास्तविक रीते ते अशुद्धि करनाराज छे. ज्यारे स्वपरनो विवेक करीने " हुं जूदो छुं. हुं पर वस्तुनो कर्त्ता अथवा भोक्ता नथी. " ए प्रमाणे आत्म विवेक प्राप्त थाय छे त्यारे षट्कारक रूप चक्रने आत्मकार्य करवामांज प्रवर्तावे छे. ते वखते छ कारकोनी प्रवृत्ति आ प्रमाणे थाय छेः " आत्मा (पोताना) आत्माने आत्माए करीने आत्माने माटे (आत्मज्ञान माटे) आत्माथी आत्मामांज प्रवर्तावे छे. " आ प्रमाणे स्वरूपमां स्थिरतावाळा मनुष्योने आश्रवो होता नथी. अहीं स्थिरता गुण उपर ते गुणयुक्त राजीमतीनो संबंध छे ते आ प्रमाणे—

राजीमतीनुं दृष्टांत.

दश धनुष्यना देहवाळा श्री नेमिनाथे कुमारावस्थामां त्रणसो वर्ष निर्गमन कर्यां. अन्यदा बन्धुओना आग्रहथी पद्मावती, गौरी, गंधारी विगेरे कृष्णनी पट्टराणीओए तथा बत्रीश हजार गोपांगनाओए जलक्रीडा समये हावभावना वाक्योथी, कटाक्षरूपी बाणोथी अने पुष्पना कंदुक (दडा) मारवाथी नेमिनाथने खेद पमाडी परणवानी कबुलात मागी. नेमिनाथ मौन धारीने रह्या, तेथी कृष्णनी राणीओए कृष्णने कह्युं के 'नेमिनाथे पाणिग्रहण करवानुं मान्युं छे.' ते सांभळीने हर्ष पामेला कृष्णे सत्यभामानी नानी बहेन राजीमतीने माटे तेना पिता उग्रसेन पासे मागणी करी. उग्रसेने पण राजीमती साथे नेमिनाथनो विवाह कबूल कर्यो. पछी लग्नने दिवसे यादवोनी साथे रथमां बेसीने नेमिनाथ उग्रसेनना घर समीपे आव्या. त्यां एक वाडामां दृढ बंधनथी बांधेलां एवां दीन पशुपक्षीओने करुण स्वरे रूदन करतां नेमिनाथे सांभळयां. तेथी तेणे सारथिने पूछ्युं के " आ बिचाराओने केम बांधेलां छे ? " सारथिए कह्युं के " आपना लग्नप्रसंगमां सर्व यादवोने जमाडवा माटे आ पशुओने बांधेलां छे. " ते सांभळी नेमिनाथ बोल्या के—

धिगनाराजकं विश्वं, धिगमी निःकृपा जनाः ।
यदेवमशरणानां, पशूनां कुर्वते वधं ॥ १ ॥

" आ स्वामी विनाना विश्वने धिक्कार छे, अने आ निर्दय माणसोने पण धिक्कार छे के जेओ शरणरहित एवा (निरपराधी) पशुओनो वध करे छे."

पछी नेमिनाथना हुकमथी सारथिए वाडामांथी सर्व जीवोने मुक्त कराव्या अने रथ पाछो वाळ्यो. ते जोइ नेमिनाथना मातापिता विगेरे खेद पामीने नेमिनाथने कहेवा लाग्या के " हे वत्स ! आवा हर्षने ठेकाणे विरस करवो योग्य नथी. " नेमिनाथ बोल्या के " हे मातपिता ! में अहीं आववानो जे आरंभ कर्यो छे ते सर्वने कृपाधर्म जणाववा माटे, अने पशुना समूहने मूकाववा माटेज कर्यो छे. " एम कहीने रुदन करता सर्व यादवोनी उपेक्षा करीने नेमिनाथ घरे आव्या. पछी इन्द्रनी आज्ञाथी जृंभक देवोए लावीने धरेला सुवर्णथी प्रभुए वरसीदान आपीने चारित्र ग्रहण कर्युं. चारित्र लीधा पछी चोपन दिवसे आश्विन मासनी अमावास्याए (भादरवा वद ०)) से) चित्रा नक्षत्रमां चंद्र स्थित हतो ते वखते जन्मथीज ब्रह्मचर्यावस्थाए रहेला प्रभुने रैवतक (गिरनार) पर्वत उपर केवळज्ञान प्राप्त थयुं.

अहीं भोजराज (उग्रसेन)नी पुत्री राजीमती प्रभुए ज्यारे रथ पाछो वाळ्यो त्यारे आवेली मूर्छाने लीधे तत्काळ पृथ्वीपर पडी गइ. तेनी सखीओए तेने अनेक उपचारोथी सावध करी, एटले राजीमती मुखरूपी चंद्रना संबंधथी जाणे करमाइ गया होय तेवा हस्तकमळने कपोळपर राखी विलाप करवा लागी के " हे इश ! ज्यारे तमे पाछुं वळवानुं आगळथीज धारी राख्युं हतुं. तो मने आवी रीते छेतरी शामाटे ? सत्पुरुषने आवुं कार्य करवुं योग्य नथी. केमके आरंभ करेला कार्यने उत्तम पुरुषो कदी तजता नथी. ते तमे शुं नथी सांभळ्युं ? शुं में पूर्व भवमां कोइ दंपतीना भोगसुखमां कांइ विघ्न कर्युं हशे ? अथवा शुं कोइना हाथनुं विघटन कर्युं हशे के जेथी हुं आपना करकमळनो स्पर्श पण पामी नहीं ? " आ प्रमाणे विलाप करती राजीमतीने तेनी सखीओए कह्युं के " हे सखी ! तुं शामाटे शोक करे छे ? ए कठोर हृदयवाळा नेमि गया तो भले गया, तेनुं शुं काम छे ? यादवोमां बीजा पोताना स्वरूपथी कामदेवने पण जीतनारा घणा कुमारो छे, तेमांथी कोइ पण शुं तने परणशे नहीं ? " आ प्रमाणे सखीओनां वचन सांभळीने राजीमती बोली के " हे सखीओ ! आवुं कुळने कलंक लगाडनारुं वचन तमे केम बोलो छो ? शुं कोइ पण शास्त्रमां बीजी वार कन्यादान

अपाय एम कह्युं छे ? माटे नेमिज मारा स्वामी हो. बीजाने हुं मनवचनथी इच्छती नथी." एम कहीने ते राजीमती केटलेक काळे शोकरहित थइ, अने जेम चक्रवाकी पोताना पतिना समागमनी उत्कंठाथी चंद्रोदयनी राह जुए, तेम दीक्षा लेवानी उत्कंठाथी भगवानने केवळज्ञान उत्पन्न थयानी राह जोती दिवसो दुःखथी निर्गमन करवा लागी.

अहीं भगवाने दीक्षा लीधी, त्यारे तेना नाना भाइ रथनेमि राजीमतीने परणवानी वांच्छाथी तेने नवां नवां भेटणां मोकलवा लाग्यो. ते जोइ राजीमती एम धारती के " पोताना भाइना प्रेमने लीधे आ रथनेमि मने भेटो मोकले छे, माटे मारे ते ग्रहण करवां जोइए." एम धारीने ते ग्रहण करवा लागी. एक दिवसे विवाहनी इच्छाथी रथनेमिए राजीमतीनी प्रार्थना करी, एटले राजीमतीए कह्युं के " मदनफळ (मींढोळ) सुंघीने तुं वमन कर, पछी ते वमन करेलुं खाइ जा." ते बोल्यो के " शुं हुं कूतरो छुं के वमन करेलुं खाउं ?" राजीमती बोली के " त्यारे तमारा भाइए त्याग करेली एवी मने भोगववाने शामाटे इच्छा करो छो ? वळी कयो माणस हस्तीने छोडीने गधेडानी इच्छा करे ? अने कयो माणस रत्ननो अनादर करीने काचना ककडाने इच्छे ? हुं तो जन्मांतरमां पण नेमिनाथ वरनेज इच्छुं छुं, बीजाने इच्छती नथी." इत्यादि युक्तिथी समजावीने रथनेमिनो मनोरथ भंग करी पाछो मोकल्यो.

एकदा जेमने केवळज्ञान प्राप्त थयुं छे एवा नेमिनाथ प्रभु गिरनारपर समवसर्या. ते वखते राजीमतीए त्यां जइ प्रभु पासे दीक्षा लीधी. प्रभुना नाना भाइ रथनेमिए पण चारित्र ग्रहण कर्युं.

अन्यदा जिनेश्वरनी आज्ञा लइने रथनेमि भिक्षाने माटे नगरीमां भ्रमण करी पाछा फर्या. रस्तामां वरसाद पडवा लाग्यो. तेथी तेणे विचार्युं के " मारा शरीरना संपर्कथी अप्काय जीवोनो विनाश न थाओ." एम विचारीने ते एक[1] गुफामां पेठा. अहीं राजीमती पण प्रभुने वांदीने पाछी वळती हती, ते पण वृष्टिथी भय पामीने रथनेमिवाळीज गुफामां पेठी. ते गुफामां रथनेमि स्थिरता रहेला छे तेनी तेने खबर नहोती, अने पेठा पछी पण अंधकारने लीधे एक खुणामां बेठेला

१ गीरनार उपरथी उतरतां राजीमती एक गुफामां प्रथम ज्यां रथनेमि कायोत्सर्गे रहेला तेमां पेठा. अने वरसादथी भींजायेला कपडा उतारीने मुकव्या. ते वखते तेनुं विवस्त्र शरीर जोइने रथनेमिने काम उपन्यो, आ प्रमाणे अन्यत्र कथन छे.

रथनेमिने तेणे जोया नहीं, एटले पोताना भींजाएला वस्त्रने ते नीचोववा लागी. ते वखते स्वर्गलोकने जीतवाने माटेज तप करती होय नहीं एवी रूपवती ते साध्वीने वस्त्ररहित जोइने रथनेमि साधु विषयोत्कंठित थया. ते वखते "आ मुनिना भाइए मारो जन्मथी आरंभीने तिरस्कार कर्यो छे." एम धारीने कामदेव पण भाइना वैरने लीधे ते मुनिने पीडा करवा लाग्यो. रथनेमि मुनि कामविकारथी ग्रस्त थया सता विचार करवा लाग्या के "जाणे समस्त जगतना सौंदर्यनो पिंड होय एवी आ मृगेक्षणाने एकवार पण में भोगवी नहीं, तेथी मारो जन्म निरर्थक छे." एम विचारीने चाकरनी जेम कांइक शरीरना कंपने धारण करता ते मुनि विसंस्थुलपणे उभा थइ धीरे धीरे राजीमतीनी सन्मुख आवीने विकस्वर नेत्रथी तेना सामुं जोता बोल्या के "हे भद्रे! स्वेच्छाथी आव, आव, आपणे जन्म सफळ करीए. पछी वृद्धावस्थामां आपणे फरीने व्रत ग्रहण करशुं." आ प्रमाणे सांभळीने शुद्ध मनवाळी ते साध्वी धैर्य धारण करीने तत्काळ वस्त्र पहेरी लइ अमृत समान वाणीथी ते मुनि प्रत्ये बोली के "हे मुनीन्द्र! संयमने धारण करनार एवा तमारे आ प्रमाणे बोलवुं युक्त नथी. हे मुनि! तमारो निर्मळ कुळमां जन्म क्यां? अने आ काजळथी पण काळुं एवुं कुकर्म क्यां? माटे आदर करेला निर्मळ व्रतनो निर्वाह करो. धीर पुरुषो कदापि पण व्रतथी भ्रष्ट थता नथी. वळी संयमीनी साथे भोगविलास करवाथी, धर्मनी उड्डाह करवाथी, ऋषिनी हत्या करवाथी अने देवद्रव्यनो विनाश करवाथी बोधीबीजनो नाश थाय छे, एम शास्त्रमां कहेलुं छे. पूर्वे गृहस्थावस्थामां में वाणीथी पण तमारी इच्छा करी नथी, तो आजे व्रतनी प्रतिज्ञा लइने पछी तमारो आदर केम करी शकुं? हे मुनि! अगंधन कुळमां उत्पन्न थयेला सर्पो पण सारा के जे वमन करेलुं विष पाछुं ग्रहण करता नथी, पण तमे तो ते करतां पण हीन छो के वमेलाने पाछुं इच्छो छो. शीलनुं खंडन करनारा जीवितने धिक्कार छे! हे श्रेष्ठ साधु! जो तमे स्त्रीने जोइ जोइने तेनापर आसक्त थशो, तो वायुथी हणायेला वृक्षनी जेम धैर्यथी हणाइने अस्थिर आत्मावाळा थशो. माटे हे मुनि! एक कोडी वास्ते करोडनो नाश न करो, अने धैर्य धारण करीने शुद्ध धर्मनुं आचरण करो." आ प्रमाणे राजीमतीनां अनेक प्रकारनां युक्तियुक्त वाक्यो सांभळीने रथनेमि मुनिए विचार्युं के "स्त्री जातिमां पण गुणसंपत्तिना भंडार रुप आ राजीमतीने धन्य छे! अने कुकर्म रुपी समुद्रमां डुबेलो होवाथी हुं पुरुष छतां पण मने धिक्कार छे!" पछी राजीमती-

नीसन्मतिथी बोध पामीने रथनेमि मुनिए तत्काळ ते साध्वीने मिथ्यादुष्कृत आपीने प्रभुपासे जइ फरीथी साधुधर्म अंगीकार कर्यो.

राजीमती साध्वी पण गृहस्थपणामां चारसो वर्ष, छद्मस्थपणामां एक वर्ष अने केवळज्ञान अवस्थामां पांचसो वर्ष रहीने कुल नवसो ने एक वर्षनुं आयुष्य पूर्ण करी मोक्षपदने पामी.

"कामदेवनां पांच बाणना निवारण माटे पांच महाव्रतरूपी शस्त्रो धारण करवां, तेमां पण विशेषे करीने स्थिरता धारण करवी; केमके स्थिरता विना पांचे महाव्रतो निष्फळप्राय छे."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ एकविंशतितमस्तंभस्य
त्र्युत्तरात्रिंशततमः प्रबंधः ॥ ३०३ ॥

व्याख्यान ३०४ मुं.

मुनिना स्थिरता गुण विषे.

नेच्छन्ति मुनयः केचिच्चिकित्सां व्याधिपीडिताः ।
निष्प्रकंपा यतेर्धर्मे, श्रीमत्सनत्कुमारवत् ॥ १ ॥

भावार्थ—"केटलाएक मुनिओ व्याधिथी पीडित थया छतां पण ते रोगनी चिकित्सा करवाने इच्छता नथी, अने श्रीमान् सनत्कुमार चक्रीनी जेम यतिधर्ममां कंपरहित (स्थिर) रहे छे."

सनत्कुमार चक्रवर्तीनी कथा.

कांचनपुरमां विक्रमयश नामे राजा हतो. तेने पांचसो राणीओ हती. ते पुरमां नागदत्त नामनो श्रेष्ठी रहेतो हतो. तेने विष्णुश्री नामे स्त्री हती. एकदा राजा मार्गमां जतां विष्णुश्रीने जोइने मोह पाम्यो. तेथी तेनुं हरण करीने तेने पोताना अन्तःपुरमां राखी. ते विषे धर्मोपदेशमाळानी वृत्तिमां कह्युं छे के—

सन्ति मार्गणघातानां, सोढारः प्रचुरा युधि ।
विरलास्तु स्मरशस्त्रप्रहाराणामिहावनौ ॥ १ ॥

भावार्थ—" युद्धमां बाणना घातने सहन करनारा घणा होय छे, पण कामदेवना शस्त्रप्रहारने सहन करनारा आ पृथ्वीमां विरला होय छे. "

पोतानी स्त्रीना वियोगथी विह्वळ थयेलो नागदत्त महा दुःखी हालते आखा शहेरमां भटकवा लाग्यो. विष्णुश्रीने अंतःपुरमां लाववाथी राजानी उपर बीजी सर्वे राणीओए कोप पामीने ते विष्णुश्रीने कार्मणप्रयोगथी मारी नांखी; परंतु विष्णुश्रीना मोहमां पडेला राजाए तेने मरेली धारी नहीं, पण कांइ कारणसर रीसाणी छे एम मानीने ते तेना पगमां पड्यो अने बोल्यो के "हे प्रिये! अपराध विना मारापर तुं शामाटे कोप करे छे?" आवां वाक्योथी पण ज्यारे ते बोली नहीं, त्यारे तेने पोताना खोळामां बेसाडी. मंत्रीओए राजाने घणी रीते समजाव्यो, परंतु राजाए तेने अग्निसंस्कारादिक कांइ कार्य करवा दीधुं नहीं. छेवट मंत्रीओए राजाने कोइ बाबतनो विचार करवाना मिषथी कार्यमां व्यग्र कर्यो. पछी राजानी दृष्टिने छेतरीने ते विष्णुश्रीना शबने वनमां लइ जइने मूकी दीधुं. थोडीवारे राजा विचार करीने पाछो आव्यो, त्यारे विष्णुश्रीने जोइ नहीं. तेथी ते मूर्छा पाम्यो. मंत्रीओए तेने चंदनना जळथी सिंचन करी सावध कर्यो. एटले राजाए कह्युं के "मारी प्रिया क्यां छे? ज्यां होय त्यांथी लावीने मने बतावो." मंत्री बोल्या के "हे स्वामी! आपना विरहथी पीडा पामीने वाडीमां गयेल छे. परंतु आपना उपरनो क्रोध तजीने आपना गुणनुं स्मरण करी हमणा पाछी आवशे, माटे आप तेनी चिन्ता न करो." ते सांभळीने राजा अन्नादिकनो त्याग करीने बेठो. आ प्रमाणे राजा बे दिवस सुधी शोकमग्न रह्यो. त्यारे मंत्रीओ तेने विष्णुश्रीना शब पासे लइ गया. ते शबने जोयुं तो तेनुं मुख पहोळुं थइ गयेलुं होवाथी अंदरना दांत देखावाने लीधे ते भयंकर लागतुं हतुं, पक्षीओए वज्रजेवी चांचो मारीने तेनां बन्ने नेत्रो उखेडी नांखेलां हतां. तेना देहमां कीडा पड्या हता, नाक अने कान पक्षीओ खाइ गया हता; शियाळ, कागडा, कूतरा अने घुवड विगेरेए ते शबने चावी नाख्युं हतुं, तेथी तेमांथी नीकळतुं दुर्गंधवाळुं पाणी पृथ्वीने आर्द्र करतुं हतुं. आवी स्थितिमां ते शबने जोइने राजाने

परम वैराग्य प्राप्त थयो. ते विचारवा लाग्यो के-" ज्यांसुधी मारो जीव आ शरीरने तजीने जाय नहीं, त्यांसुधीमां हुं आ शरीरे करीने मारा आत्मानुं हित करुं." इत्यादि विचारीने तेणे तत्काळ दीक्षा ग्रहण करी. पछी चारित्रनुं पालन करी तप तपीने त्रीजा स्वर्गे देवता थयो.

त्यांथी चवीने रत्नपुरमां जिनधर्म नामे वणिक थयो. पेलो नागदत्त पण भवमां भ्रमण करीने सिंहपुरमां अग्निशर्मा नामे ब्राह्मण थयो: तेणे तापसपणुं अंगीकार कर्युं. ते तापस बे मास उपवासना पारणा माटे रत्नपुरमां आव्यो. राजाए पारणा माटे निमंत्रण कर्युं. त्यां जिनधर्म श्रावकने जोइने तेणे राजाने कह्युं के "जो आ वणिकना पृष्ठपर उष्ण भोजनपात्र राखीने जमाडो तो हुं जमुं." ते सांभळीने राजाए ते प्रमाणे कराव्युं. भोजनपात्र अति उष्ण होवाथी जिनधर्मना पृष्ठनी चामडी उखडी गइ; तोपण तेणे क्रोध के द्वेष कर्या विना पोताना पूर्वकर्मनुं ज ए फळ छे एम धार्युं; पछी तेणे सात क्षेत्रमां द्रव्यनो व्यय करीने व्रत ग्रहण कर्युं. प्रांते अनशन करी एक मासे काळधर्म पामी सौधर्म देवलोकमां इन्द्र थयो. पेलो तापस ते इन्द्रनो ऐरावण हस्ती थयो. ते हस्ती त्यांथी चवीने भवमां भ्रमण करी असित नामे यक्ष थयो; अने जिनधर्मनो जीव जे इन्द्र थयो हतो ते आयुष्य पूर्ण थतां चवीने चौद महास्वप्नोथी सूचित सनत्कुमार नामनो चोथो चक्रवर्ती हस्तिनापुरमां अश्वसेन राजानी पटराणी सहदेवीनी कुक्षिथी उत्पन्न थयो.

ते चक्रीने महेन्द्रसिंह नामे एक मित्र हतो. एकदा वसन्त ऋतुने विषे युवावस्थाना आरंभमां मित्र सहित सनत्कुमार नंदनवन जेवा मकरंद नामना वनमां गयो. त्यां कोइ अश्वपालके एक जातिवंत अश्व कुमारने भेट तरीके आप्यो. तेनापर चढीने सनत्कुमार तेने चलाववा लाग्यो. तेवामां ते अश्व एक क्षणमां सर्व जनने अदृश्य थइ गयो. ते खबर अश्वसेन राजाने थतां तेणे घणी शोध करावी, पण अश्व तथा पुत्रनी शोध मळी शकी नहीं. पछी सनत्कुमारनो मित्र महेन्द्रसिंह राजानी रजा लइने मित्रनी शोध माटे चाल्यो. एक वर्ष सुधी ते मोटा अरण्यमां भटक्यो, पण मित्रनी प्राप्ति थइ नहीं. एकदा सारस पक्षीनो ध्वनि सांभळीने ते शब्दने अनुसारे आगळ गयो, तो एक सरोवर तेना जोवामां आव्युं. ते सरोवरनी पासे कदलीगृहमां स्त्रीओना समूहथी अनुसरता बंदिजनना मुखथी एक स्तुतिनो श्लोक महेन्द्रसिंहे सांभळ्यो के—

कुरुदेशैकमाणिक्य, अश्वसेननृपांगज ।
श्रीमन्सनत्कुमार त्वं. जय त्रैलोक्यविश्रुतः ॥ १ ॥

भावार्थ—" कुरुदेशना एक माणिक्य समान अने अश्वसेन राजाना पुत्र एवा हे श्रीमान सनत्कुमार ! त्रण लोकमां विख्यात एवा तमे जय पामो !"

आ प्रमाणे श्लोक सांभळीने महेन्द्रसिंह अति हर्ष पाम्यो. तेथी आगळ जइने जुए छे, तो तेणे साक्षात् सनत्कुमारने जोयो. सनत्कुमार पण मित्रने जोइने अत्यानंद पाम्यो. बन्ने मित्रो प्रेमथी परस्पर आलिंगन करी मळीने एक आसनपर बेठा. कुशल वृत्तान्त पूछतां महेन्द्रसिंह बोल्यो के " हे कुमार ! आटला बधा दिवसो तमे क्यां निर्गमन कर्या ? " कुमारे कह्युं के " मने निद्रा आवे छे, माटे हुं जरा सुइ जाउं छुं. तमने मारुं सर्व वृत्तान्त आ मारी बकुलवती नामनी प्रिया प्रज्ञप्ति विद्याथी जाणीने कहेशे." एम कहीने सनत्कुमार सुइ गयो. पछी बकुलवती बोली के " हे महेन्द्रसिंह ! तमारा मित्रनुं अपहरण करीने ते विपरीत शिक्षावाळो अश्व तेमने एक मोटा अरण्यमां लाव्यो. त्यां त्रीजे दिवसे क्षुधा तृषाथी पीडा पामीने ते अश्व मरण पाम्यो. कुमार पण जळ विना आंखे अंधारा आववाथी मूर्छा खाइने पृथ्वीपर पडी गया. ते वखते कोइ एक यक्षे तेने जळ छांटीने सावध कर्या. एटले कुमारे ते यक्षने पूछयुं के " आवुं जळ क्यां छे ?" यक्ष बोल्यो के " आवुं जळ मानसरोवरमां छे." कुमारे कह्युं के " जो हुं तेमां स्नान करुं तो मारा शरीरनो ताप शान्त थाय." ते सांभळीने ते यक्ष तेने मानसरोवर उपर लइ गयो. कुमारे तेमां स्नान कर्युं. पछी जलपान करीने कुमार सरोवरनी पाळ उपर बेठा. तेवामां पूर्वना चार भवना वैरी असित यक्षे तेमने जोया. एटले ते यक्ष क्रोध करीने कुमार साथे युद्ध करवा आव्यो. बन्नेनुं महा युद्ध थयुं. चिरकाळ सुधी युद्ध करीने छेवट तमारा मित्रे क्रोधथी वज्र जेवी मुठीवडे ते यक्षने प्रहार कर्यो. ते देव होवाथी मरण पाम्यो नहीं. पण भय पामीने नासी गयो. पछी कुमार त्यांथी आगळ चाल्या.

आगळ जतां भानुवेग नामना विद्याधरे पोतानी आठ पुत्रीओ साथे कुमारनो विवाह कर्यो. ते आठ स्त्रीओ सहित सुता हता. तेवामां ते असित यक्षे आवीने कुमारने उपाडी कोइक स्थाने नांखी दीधा. प्रातःकाळे जागृत थइने

कुमार आगळ चाल्या. मार्गमां एक मोटो प्रासाद जोइने कुमारे तेमां प्रवेश कर्यो. त्यां हरिणना सरखा नेत्रवाळी एक कन्याने जोइने कुमारे तेने पूछ्युं के "तुं कोण छे?" ते बोली के "साकेतपुरना राजानी हुं पुत्री छुं. मारा पिताने कोइ निमित्तियाए कह्युं के 'आ तमारी पुत्री चोथा चक्रवर्ती सनत्कुमारने योग्य छे.' ते जाणीने एक विद्याधरे मारुं हरण करी मने अहीं आणी छे. हुं नथी जाणती के हवे पछी ते शुं करशे?" आ प्रमाणे सांभळीने कुमार बोल्या के "तुं भय पामीश नहीं, हुंज सनत्कुमार छुं." एटलामां ते कन्यानुं हरण करनार वज्रवेग विद्याधर त्यां आव्यो, तेने मारीने कुमार ते कन्याने परण्या. पछी वज्रवेगनी व्हेन संध्यावली के जेने कोइ निमित्तियाए कह्युं हतुं के 'तारा भाइने मारनार पुरुष तारो पति थशे' ए वाक्यनुं स्मरण करीने ते संध्यावली कुमारने परणी. आ सर्व वृत्तांत जाणीने वज्रवेगनो पिता कुमारने मारवा आव्यो; पण संध्यावलीए आपेली पाठसिद्ध* विद्याथी कुमारे तेने जीती लीधो. तेनी साथेना युद्धमां कुमारने चक्ररत्न उत्पन्न थयुं. पछी सर्व विद्याधरो हर्षथी कुमारने वैताढ्य पर्वत उपर लइ गया. त्यां कुमार सो कन्या परण्या. त्यांथी आज क्रीडा करवा माटे तमारा मित्र अहीं आव्या; त्यां तमारो मेळाप थयो." आ प्रमाणे बकुलवती वात करे छे तेवामां चक्री निद्राथी जागृत थया. पछी मित्र तथा स्त्रीओने लइने कुमार वैताढ्य पर्वत उपर गया. त्यांथी मित्रनी प्रार्थनाने लीधे कुमार पोताना नगरमां आव्या. तेने जोइने अश्वसेन राजा अति आनंद पाम्या. पछी कुमारने राज्यगादीपर बेसाडीने तेमणे धर्मनाथ प्रभु पासे दीक्षा ग्रहण करी. अश्वसेनना पुत्र सनत्कुमार चक्री दश हजार वर्षे समग्र भरतक्षेत्र साधी चक्रवर्ती थया.

एकदा सौधर्म देवलोकना इन्द्र दिव्य नाटक जोता हता; ते वखते इशान देवलोकथी कोइ महा तेजस्वी देव कार्यनिमित्ते त्यां आव्यो. ते देवे सूर्यनी कांतिथी नक्षत्रनी जेम पोतानी कांतिथी बीजा सर्व देवोनी कान्तिने निस्तेज करी दीधी. ते देवना गया पछी सौधर्म देवलोकना देवोए सौधर्म इन्द्रने पूछ्युं के "हे नाथ! आ देव आवो अधिक कान्तिवाळो केम थयो?" इन्द्रे कह्युं के "तेणे पूर्वभवमां दुष्कर एवो आंबिलवर्धमान तप कर्यो छे, तेनो आ महिमा छे." फरीथी देवोए पूछ्युं के "हे स्वामी! बीजो कोइ देवोमां के मनुष्योमां आवी कान्तिवाळो छे?"

* पाठमात्र करवाथीज सिद्ध थाय–साधवी न पडे तेवी.

इन्द्रे कह्युं के " चक्रवर्ती सनत्कुमार जेवो तेजस्वी अने रूपवान छे तेवो मनुष्य लोकमां के देवलोकमां पण कोइ नथी." आ प्रमाणेना इन्द्रना वाक्य उपर विश्वास नहीं आववाथी कोइ बे देवो ब्राह्मणनुं स्वरूप धारण करीने चक्रीना महेलमां आव्या. त्यां चक्रीनुं अनुपम रूप जोइने विस्मय पामी ते बन्ने बोल्या के " हे चक्री ! शुं तारुं रूप ! शी तारी कांति ! अने शी तारा शरीरनी अद्‌भुत लावण्यता ! खरेखर तारा अंगनुं वर्णन करवामां मोटा कवीश्वरो पण मुंगा थइ गया छे. मात्र तारा शरीरनुं रूप जोवामां पण कोइ माणस एक भवमां समर्थ थाय तेम नथी, परंतु केटलाएक भव सुधी तारुं रूप जोया करे तो आखुं शरीर बराबर जोइ शके." ते सांभळीने रूपथी गर्वित थयेल चक्री बोल्या के " हे ब्राह्मणो ! अत्यारे तो [1]खेल अने तैलादिकनुं मारा शरीर पर अभ्यंगन करेलुं छे, तेथी तेवा शरीरमां शुं लावण्य जुओ छो ? पण ज्यारे स्नान करीने हुं सभामां आवुं त्यारे मारुं रूप तमे जोजो. " एम कहीने ते ब्राह्मणोने रजा आपी चक्रीए स्नान कर्युं. पछी अंग उपर उत्तम वस्त्रो तथा सर्व अलंकारो धारण करी छत्रादिक राजचिन्होथी भूषित थइ सभामां आवीने सिंहासन उपर बेठा. पछी ते बन्ने ब्राह्मणोने बोलावी पोतानुं रूप देखाड्युं. देदीप्यमान भूषणोथी सुशोभित एवा ते चक्रीने जोइने ते बन्ने ब्राह्मणो सायंकाळे जेम कमळो करमाइ जाय तेवा म्लान मुखने धारण करता सता विचारवा लाग्या के "अहो ! मनुष्योनुं रूप केवुं क्षणभंगुर छे ! " तेमने विचारमां पडेला तेमज म्लान मुखवाळा जोइने चक्रीए पूछ्युं के " हे ब्राह्मणो ! शुं विचार करो छो?" तेओ पोतानुं स्वरूप कही संभळावीने बोल्या के " तमारा शरीरमां अनेक रोगो उत्पन्न थइ गया छे." चक्रीए पूछ्युं के "तमे ते केम जाण्युं?" तेओ बोल्या के " अमे ज्ञानथी जाण्युं छे, तोपण तमे भक्षण करेला तंबोलने थुंकी जोइने खात्री करो. मूळ वर्ण तजीने तमारुं थुंक परु जेवुं थइ गयुं छे. काश, श्वास, अजीर्ण, अर्श, ज्वर विगेरे सोळ व्याधिओ तमारा शरीरमां उत्पन्न थया छे. " ते सांभळीने चक्री पोताना शरीरने विवर्ण तेजवाळुं जोइ विचारवा लाग्या ते आ प्रमाणे—

[1] पीठी अथवा तेने लगती सुगंधी पदार्थविशेष.

*अचिन्तयच्च धिगिदं, सदागदपदं वपुः ।
मुधैव मुग्धाः कुर्वन्ति, तन्मूर्छां तुच्छबुद्धयः ॥ १ ॥
शरीरमन्तरुत्पन्नैर्व्याधिभिर्विविधैरिदम् ।
दीर्यते दारुणैर्दारु, दारु कीटगणैरिव ॥ २ ॥
अद्यश्वीनविनाशस्य, शरीरस्य शरीरिणाम् ।
सकामनिर्जरासारं, तप एव महत्फलम् ॥ ३ ॥

भावार्थ—" चक्रीए विचार्युं के निरन्तर व्याधिना स्थानभूत एवा आ शरीरने धिक्कार छे ! आवा शरीरनी मूर्च्छा तुच्छ बुद्धिवाळा मूर्ख माणसो फोगटज करे छे. शरीरनी अंदर उत्पन्न थयेला विविध प्रकारना भयंकर व्याधिओए करीने कीडाना समूहवडे काष्ठनी जेम आ शरीर विदीर्ण थाय छे. आज के काल नाश पामवावाळा शरीरनुं मोटुं फळ सकाम निर्जराना सारवाळो तप करवो तेज छे. "

इत्यादि विचार करीने सनत्कुमार चक्रीए चक्रीपणानी ऋद्धिने तजी दइने विनयंधर नामना सूरि पासे दीक्षा ग्रहण करी.

पछी गुरुनी आज्ञाथी एकलविहार प्रतिमा अंगीकार करी विचरवा लाग्या. तेमनी पाछळ छ मास सुधी विविध प्रकारना आलाप करती तेमनी राणीओ तथा मंत्रीओ विगेरे फर्या; पण ते मुनीन्द्रे दृष्टिवडे जोवा जेटली पण तेमनी संभावना करी नहीं. छट्ठ, अट्ठम विगेरे तपस्या करीने पारणाने दिवसे गोचरी माटे फरतां अन्यदा कुरीया अने बकरीनी छाश तेमने प्राप्त थइ. तेनो आहार करवाथी तेमना शरीरमां सात व्याधिओ उत्पन्न थया. ते आ प्रमाणे—

शुष्ककच्छु ज्वरः श्वासः, काशश्चान्नारुचिस्तथा ।
अक्षिदुःखं तुंददुःखं, सप्तैतेऽत्यन्तदारुणाः ॥ १ ॥

भावार्थ—" सूकी खरज, ज्वर, श्वास, काश (खांसी), अन्नपर अरुचि, नेत्ररोग अने उदररोग ए सात व्याधिओ अत्यन्त दारुण छे. "

* आ श्लोको श्री हेमचंद्राचार्यकृत योगशास्त्रनी स्वोपज्ञवृत्तिमां चोथा चक्रीनी भावनामां तेमणे आप्या छे.

आ सात व्याधिना दुःखने तेमणे सातसो वर्ष सुधी सहन कर्युं, पण कोइ वखत पोताना देहमां व्याधिओ छे एवो उपयोग पण तेमणे दीधो नहीं. संयमनी क्रियारहित एक क्षण पण तेमनो निर्गमन थतो नहीं के जे वखते व्याधिनुं स्मरण थाय. आवी तेमनी चारित्रमां स्थिरता जोइने सभामां बेठेला सौधर्म इन्द्रे सर्व देवोनी समक्ष कह्युं के-" अहो सनत्कुमार मुनिनी केवी अनुपम स्थिरता छे, के जे व्याधिना प्रतिकारनी इच्छा पण करता नथी." ते सांभळीने पेला प्रथमनाज बे देवो परीक्षा करवा माटे वैद्यनुं रूप धारण करीने पृथ्वीपर आव्या. ते वैद्योए मुनिने कह्युं के-" हे मुनि ! जो आपनी आज्ञा होय तो अमे वैद्यो आपना व्याधिनी निर्दोष औषधथी चिकित्सा करीए. " मुनि बोल्या के- "द्रव्य अने भाव एम बे प्रकारना व्याधिओ छे. तेमां द्रव्य एटले बाह्य व्याधिना प्रतिकारने तो हुं पण जाणुं छुं." एम कहीने ते मुनिए पोतानी एक आंगळीने पोताना श्लेष्म (थुंक) वडे लेप करीने सुवर्ण जेवी करी बतावी. पछी मुनि बोल्या के-" आठ कर्मने भावव्याधिओ कहेला छे. ते कर्मोनी एकसो ने अठावन प्रकृतिओ कहेली छे. तेमना प्रतिकारने हुं पोते क्रियावडे करुं छुं. ते प्रतिकार ज्ञानविकळ अने क्रियामां नपुंसक जेवा पुरुषोने अति दुष्कर छे. हुं मारा चित्तने शुभ क्रिया रहित क्षणवार पण राखतो नथी; ते छतां पण भावरोगोथी हमेशां भय पामतो रहुं छुं. माटे जो तमे खरा वैद्य हो तो मारा भावरोगनो प्रतिकार करो." आ प्रमाणे सांभळीने ते बन्ने देवो पोताना आगमननुं कारण कही तेमनी स्तुति करीने पोताने स्थाने गया, अने सर्व वृत्तांत इन्द्रने निवेदन कर्यो.

सनत्कुमार मुनीश्वर खड्गधारा समान तीव्र व्रतनुं पालन करीने अंते अनशन ग्रहण करी उपाधिरहित समाधिवडे देहने तजी दइ त्रीजा देवलोकमां महर्द्धिक देवता थया.

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ एकविंशतितमस्तंभस्य
चतुरुत्तरत्रिशततमः प्रबंधः ॥ ३०४ ॥

व्याख्यान ३०५ मुं.

मोह तजवा विषे.

स्वरूपानवबोधेन, मोहमूढा ममत्वगाः ।
भ्रमन्ति भवकान्तारे, हेयो मोहस्ततोऽशुभः ॥ १ ॥

भावार्थ—"आत्मस्वरूपना अज्ञानने लीधे मोहमां मूढ थयेला अने संसारमां ममतावाळा जीवो भवाटवीमां भ्रमण कर्या करे छे, माटे ए अशुभ मोह त्याग करवा लायक छे."

आ श्लोकना अर्थनुं समर्थन करवा माटे अहीं एवी भावना करवानी के ज्ञानादिक गुणना सुखनो रोध करनारा, चंचळ स्वभाववाळा, अनन्त जीवोए अनन्तवार भोगवी भोगवीने मूकी दीधेला, जड अने अग्राह्य एवा पुद्गलोमां ग्रहणरूप जे विकल्प (पुद्गलो उपर जे ममता) ते मोह कहेवाय छे. आवा मोहमां आसक्त थयेला जीवो भवाटवीमां परिभ्रमण करे छे, तेथी ते मोहनो त्याग करवो योग्य छे. कह्युं छे के—

अप्पा नाणसहावी, दंसणसीलो विसुद्धसुहरूवो ।
सो संसारे भमइ, एसो दोसो खु मोहस्स ॥ १ ॥

भावार्थ—"ज्ञान दर्शनना स्वभाववाळो अने विशुद्ध सुखरूप एवो आत्मा पण संसारमां परिभ्रमण करे छे, ते दोष मोहनोज छे."

मोहनो त्याग शुद्ध आत्मज्ञाने करीने थइ शके छे. "ज्ञानादिक अनन्त गुण पर्यायवाळो, नित्यानित्य विगेरे अनन्त स्वभाववाळो, असंख्य प्रदेशी स्वभावपरिणामी (आत्मभावना परिणामवाळो), पोताना स्वभावनोज कर्ता अने भोक्ता इत्यादि गुणवाळो शुद्ध आत्मा तेज हुं छुं. हुं अनन्त स्याद्वाद सत्तानो रसिक छुं. एक समयमां त्रण काळमां अने त्रण लोकमां रहेला सर्व द्रव्यपर्यायोनी उत्पत्ति, स्थिति अने नाशने जणावनारुं जे ज्ञान ते मारो (आत्मानो) गुण छे." इत्यादिक आत्मस्वरूपने जाणनारा मनुष्यज मोहनो जय करे छे; बीजो जय करी शकतो नथी. केमके मोहनीय कर्म अति दुर्जय छे. आ संबंधमां अर्हद्दत्त-

नी कथा छे ते नीचे प्रमाणे—

अर्हद्दत्तनी कथा.

अचलपुरना राजानो पुत्र युवराज वैराग्य उत्पन्न थवाथी दीक्षा ग्रहण करीने विहार करतां अवन्ति नगरीमां आव्यो. त्यां मध्याह्नकाळे भिक्षा माटे राजमंदिर तरफ जता ते मुनिने जोइने लोकोए कह्युं के " आ गाममां राजानो पुत्र अने पुरोहितनो पुत्र साधुने जोइने तेने पीडा करे छे; माटे आपे आ गाममां रहेवा जेवुं नथी. " आ प्रमाणे सांभळ्या छतां पण भयरहित मुनि त्यां जइने उंचे स्वरे 'धर्मलाभ' एम बोल्या. ते सांभळीने एक स्थानमां रहेला जाणे बे पापग्रहो होय तेवा ते बन्ने जणा मुनि पासे आवीने बोल्या के " हे साधु ! तुं अमारी पासे नृत्य कर, अमे वाजित्र वगाडीए. " त्यारे साधुए कह्युं के 'बहु सारुं.' पछी साधु नृत्य करवा लाग्या अने ते बन्ने वाजित्र वगाडवा लाग्या. थोडीवारे साधुए ते बन्नेने तिरस्कारथी कह्युं के " अरे ! कौळिको (कोळीना पुत्रो !) तमने वाजित्र वगाडतां बराबर आवडतुं नथी, केमके तमे मूर्ख छो. " आ प्रमाणे सांभळीने ते बन्ने क्रोधथी मुनिने मारवा दोड्या; एटले नियुद्धकुशळ मुनिए तेमना शरीरना अवयवोने संधिमांथी उतारी नांख्या. आ प्रमाणे मुनिना द्वेषीओने शिक्षा आपीने ते युवराज मुनि त्यांथी नगर बहार चाल्या गया. पछी राजा तथा पुरोहितने ते वातनी खबर थतां पोताना पुत्रोनी अति दुःखी अवस्था जोइने अत्यंत खेद पाम्या सता तत्काळ युवराज ऋषिनी पासे आव्या. त्यां तेमने ओळखीने राजा विज्ञप्ति करवा लाग्यो के " हे भाइ ! तमारा भत्रीजाने साजा करो ने ते बाळकनो अपराध क्षमा करो." मुनि बोल्या के " हे राजा ! जो ते बन्ने पुत्रो हितकारी एवा व्रतने आदरे तो तरतज ते बन्नेने हुं साजा करुं. ते सिवाय तेमने साजा नहीं करुं." ते सांभळीने ते बन्ने कुमारोने मुनि पासे लाववामां आव्या. तेओए मुनिनुं वचन अंगीकार कर्युं. तेथी मुनिए प्रथम तेमनो लोच कर्यो, अने पछी तेमने साजा करीने दीक्षा आपी.

त्यारपछी राजपुत्र शंकारहित व्रतनुं पालन करवा लाग्यो. पण पुरोहितनो पुत्र जाते ब्राह्मण होवाथी चारित्रनुं पालन करता छतां पण " मने आ मुनिए बळात्कारे दीक्षा आपी छे" एम मनमां तेमना पर अभाव राखवा लाग्यो. अनुक्रमे

ते बन्ने मरण पामीने देवता थया.

कौशांबी नामनी नगरीमां कोइ एक तापस नामनो श्रेष्ठी रहेतो हतो. ते मरण पामीने पोताना घरना उकरडामांज शूकर (भुंड) थयो. तेने पोतानो महेल विगेरे जोवाथी जातिस्मरण थयुं. अन्यदा तेना छोकराओए तेनाज श्राद्धने दिवसे तेनेज (ते शूकरने) मार्यो. ते मरीने पोताना घरमां सर्प थयो. एकदा ते सर्प घरमां फरतो हतो, तेने जोइने तेना पुत्रोए मारी नांख्यो, ते पोताना पुत्रनोज दीकरो थयो. तेने पूर्वनी जेम जातिस्मरण थयुं. तेथी ' पुत्रनी वहुने मा अने पुत्रने पिता शी रीते कहुं ? ' एम विचारीने तेणे मौन धारण कर्युं. तेथी तेनुं नाम अशोकदत्त पाडयुं हतुं, छतां मूक नाम सर्वत्र प्रसिद्ध थयुं. एकदा ते नगरीमां चार ज्ञानने धारण करनार कोइ सूरि समवसर्या. तेमणे पोताना बे साधुने नीचेनी गाथा शीखवीने मूकने घेर मोकल्या.

तावस किमिमिणा मूअव्वएण. पडिवज्ज जाणिउं धम्मं ।
मरिउण सुअरोरग. जाओ पुत्तस्स पुत्तोसि ।। १ ।।

भावार्थ—" हे तापस श्रेष्ठी ! आ मौनव्रते करीने शुं ? माटे धर्मने जाणीने तेनो आदर कर. तुं मरीने शूकर अने पछी सर्प थयो हतो, अने हमणा पुत्रनो पुत्र थयो छे. "

आ गाथा सांभळीने विस्मय पामेला मूके ते मुनिने नमीने पूछयुं के "आ वात तमे शी रीते जाणी ?" ते साधुओ बोल्या के "अमारा गुरु गाम बहार उद्यानमां रहेला छे, तेमना वचनथी अमे जाणीए छीए. " ते सांभळीने मूक तेमनी साथे उद्यानमां गयो. त्यां गुरु पासे देशना सांभळीने तेणे मौनपणुं मूकी श्रावकधर्म अंगीकार कर्यो.

अहीं देवलोकमां जातिमदवाळो पुरोहितनो पुत्र जे देव थयेलो छे तेणे महाविदेह क्षेत्रमां जइ जिनेश्वरने प्रश्न कर्यो के " हुं सुलभबोधि छुं के दुर्लभबोधि छुं ? " प्रभुए जवाब आप्यो के " तुं दुर्लभबोधि छे; पण स्वर्गथी चवीने कौशांबी नगरीमां मूकनो भाइ थवानो छे; तेनाथी तने धर्मनी प्राप्ति थशे." आ प्रमाणे सांभळीने ते देवे कौशांबीमां आवीने मूकने कह्युं के " हुं स्वर्गमांथी चवीने तारी माताना उदरमां उत्पन्न थइश. तेने अकाळे आम्र फळ खावानो दोहद

थशे. तेने माटे में आजथी आ समीपना पर्वत पर हंमेशां फळ आपे तेवो आम्रवृक्ष रोप्यो छे. तेथी ज्यारे ते माता तारी पासे घणा आग्रहथी आम्रफळ मागे त्यारे तेनी पासे तारे एटला अक्षरो लखवा के "हे माता ! गर्भमां रहेलो पुत्र जो तुं मने आपे तो हुं तारो दोहद पूर्ण करुं." आ तारुं वचन ज्यारे ते स्वीकारे, त्यारे तारे तेने आम्रफळ लावी आपवां. मारो जन्म थया पछी मने तारे स्वाधीन राखीने जैन धर्मनो बोध आपवो. वळी वैताढ्य पर्वत उपर पुष्करिणी (वाव) मां में मारा नामथी अंकित बे कुंडळो गोपव्यां छे. ते मने खात्रीने माटे बताववां. कदाच तुं मरीने स्वर्गमां जाय, तोपण मारी उपेक्षा करवी नहीं." आ प्रमाणेना ते देवना वचनने मूके अंगीकार कर्युं, एटले ते देव स्वस्थाने गयो.

अनुक्रमे आयुष्य पूर्ण थतां ते देव चवीने मूकनी मातानी कुक्षिमां अवतर्यो. तेने ऋतु विना केरी खावानो दोहद थयो, ते वखते देवनी वाणीनुं स्मरण करीने मूक बोल्यो के "हे माता ! जो तुं मने आ गर्भमां रहेला पुत्रने आपे, तो हुं तने आम्र फळ लावी आपुं." माताए तेम करवानुं कबूल कर्युं, एटले ते मूके देवे कहेला पर्वतपरथी आम्रफळ लावी आपीने मातानो दोहद पूर्ण कर्यो. समय पूर्ण थतां तेणे पुत्र प्रसव्यो. मातापिताए हर्षथी ते पुत्रनुं अर्हद्दत्त एवुं नाम पाड्युं. पछी मूक पोताना भाइनुं बाल्यावस्थाथीज लालनपालन करवा लाग्यो अने चैत्यमां तथा उपाश्रयमां साथे लइ जवा लाग्यो. पण ते बाळक मुनिओने जोइने मोटेथी रोवा लागतो, अने तेमने वंदना पण करतो नहीं. मूके तेने घणी रीते समजाव्यो, पण ते बाळक साधुना गन्धने पण सहन करतो नहीं. छेवट तेने समजावतां मूक थाकी गयो, तोपण ते (अर्हद्दत्त) धर्म पाम्यो नहीं. एटले मूक तो साधु पासे दीक्षा लइने अनुक्रमे आयुष्य पूर्ण थतां स्वर्गे गयो. त्यां तेणे अवधिज्ञाननो उपयोग दीधो तो पोताना नाना भाइ अर्हद्दत्तने चार स्त्री साथे परणेलो जोयो. मूक देवे तेणे कहेलुं अने पोते स्वीकार करेलुं पूर्व भवनुं वाक्य संभार्युं, अने तेने प्रतिबोध करवा माटे प्रथम तेना शरीरमां जलोदरनो व्याधि उत्पन्न कर्यो. ते व्याधिना भारथी अर्हद्दत्त उठी पण शकतो नहीं. सर्वे वैद्यो तेनी चिकित्सा करी करीने थाक्या, पण कोइथी सारुं थयुं नहीं, तेथी सर्व वैद्योए तेनो त्याग कर्यो. पछी ते मूक देव पोते वैद्यनो आडंबर करीने अर्हद्दत्तनी पासे आव्यो. अर्हद्दत्त तेने जोइने दीनमुखे बोल्यो के "हे वैद्यराज ! मने रोगथी मुक्त करो." वैद्य

बोल्यो के "तारो आ व्याधि असाध्य छे, तोपण विविध प्रकारना औषधोथी हुं तने निरोगी करुं; परंतु सारुं थया पछी तारे आ मारो औषध तथा शस्त्रोनो कोथळो उपाडीने जीवतां सुधी मारी साथे फरवुं पडशे." ते सांभळीने अर्हद्दत्ते ते वात कबूल करी, एटले ते मायावी वैद्ये औषधो आपीने तेने सारो कर्यो. पछी अर्हद्दत्त तेनी साथे चाल्यो. देववैद्ये तेने वैदकने योग्य एवां शास्त्रोथी भरेलो कोथळो उपाडवा आप्यो. ते कोथळाने मायावडे अत्यंत भारवाळो कर्यो. अर्हद्दत्त तेवा असह्य भारने हमेशां वहन करतो विचारवा लाग्यो के "आटलो भार हुं निरंतर शी रीते वहन करी शकीश ?" एक दिवस कोइक स्थाने तेणे संयमधारी साधुओने जोया. ते वखते अर्हद्दत्तना मनमां विविध प्रकारनो उद्वेग थतो हतो. ते जाणीने देववैद्य तेने कह्युं के "जो तुं दीक्षा ग्रहण करे तो हुं तने छोडी दउं." ते सांभळीने महाभारथी पीडा पामेलो अर्हद्दत्त बोल्यो के "हुं वज्र जेवा आ भारने हमेशां उपाडी उपाडीने कुब्ज थइ गयो छुं; तेथी आवो भार उपाडवा करतां तो मारे व्रत लेवुं तेज सारुं छे." पछी ते देव तेने मुनि पासे दीक्षा ग्रहण करावीने स्वस्थाने गयो.

देवना गया पछी अर्हद्दत्त व्रत तजीने पाछो पोताने घेर गयो. देवे अवधिज्ञानथी तेने चारित्रथी भ्रष्ट जाण्यो; एटले फरीथी जलोदरनो व्याधि उत्पन्न कर्यो, अने पूर्वनीज जेम तेने फरीथी दीक्षा अपावी. ए प्रमाणे त्रण वार दीक्षा लइने तेणे मूकी दीधी. पछी चोथी वार दीक्षा अपावीने तेने व्रतमां स्थिर करवा माटे ते देव हमेशां तेनी पासेज रहेवा लाग्यो. एकदा माथे तृणनो भारो लइने चालतो ते देव कोइ अग्निथी बळता गाममां पेसवा लाग्यो. ते जोइने अर्हद्दत्ते तेने कह्युं के "घासनो भारो लइने आ अग्निथी बळता गाममां केम पेसे छे ?" देव बोल्यो के "ज्यारे तुं आम जाणे छे, त्यारे क्रोधादिक अग्निथी बळता गृहवासमां जइने तुं केम प्रवेश करे छे ?" ते सांभळीने पण बोध नहीं पामेला अर्हद्दत्तने साथे लइने आगळ चालतां ते देव सारो मार्ग मूकीने भयंकर अरण्य तरफ चाल्यो. ते जोइने अर्हद्दत्त बोल्यो के "सारो मार्ग मूकीने उन्मार्गमां केम चाले छे ?" देव बोल्यो के "ज्यारे तुं एम जाणे छे, त्यारे मुक्तिमार्गने मूकीने भवाटवीमां पेसवानी केम इच्छा करे छे ?" आवी रीते कह्या छतां पण अर्हद्दत्त बोध पाम्यो नहीं, तो पण 'कायर न थवुं एज संपत्तिनुं स्थान छे' एम जाणीने ते देव तेनी साथेज

आगळ चाल्यो. मार्गमां कोइ एक चैत्यमां लोकोथी पूजातां छतां नीचे मुखे पडता एक यक्षने तेणे दिव्य शक्तिथी बताव्यो. ते जोइने अर्हद्दत्ते कह्युं के "आ व्यंतर जेम लोकोथी पूजाय छे तेम तेम अधोमुख थइने नीचे पडतो जाय छे, माटे आ यक्षना जेवो बीजो कोइ अधन्य पृथ्वीपर जणातो नथी." ते सांभळी तेने देवे कह्युं के "संयम रूपी उंचे स्थाने स्थापन कर्या छतां पण तुं वारंवार नीचे पडे छे, माटे हे मूर्खशिरोमणि! तुं तेना करतां विशेष अधन्य छे." ते सांभळीने अर्हद्दत्ते तेने पूछयुं के "वारंवार आवी रीते बोलनार तमे कोण छो?" त्यारे ते देवे पोतानुं मूकना भववाळुं स्वरूप देखाडी तेना पूर्व भवनुं सर्व वृत्तान्त कह्युं. ते सांभळीने अर्हद्दत्ते तेने पूछ्युं के "हुं पूर्व भवे देव हतो तेनी खात्री शी?" एटले देव तेने वैताढ्य पर्वतपर लइ गयो, अने पुष्करिणी (वाव) मां गोपवेलां तेना नामथी अंकित एवां बे कुंडळो काढीने तेने देखाड्यां. ते जोइने अर्हद्दत्तने जातिस्मरण थयुं, तेथी प्रतिबोध पामीने ते भावचारित्र पाम्यो. आ रीते तेने धर्ममां स्थिर करीने ते मूक देव स्वस्थाने गयो.

"सर्व कर्ममां श्री जिनेश्वरे मोहने अति दुर्जय कहेलो छे, ते मोहनो मूक देवे त्याग कराव्यो त्यारेज अर्हद्दत्त धर्म पामीने मोक्षे गयो."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ एकविंशतितमस्तंभस्य पंचाधिकत्रिशततमः प्रबंधः ॥ ३०५ ॥

व्याख्यान ३०६ मुं.

ज्ञान तथा अज्ञान विषे.

मज्जत्यज्ञः किलाज्ञाने, विष्टायामिव शूकरः ।
ज्ञानी निमज्जति ज्ञाने, मराल इव मानसे ॥ १ ॥

भावार्थ—" अज्ञ एटले आत्मभाव अने परभावने नहीं जाणनारो माणस अज्ञान एटले अयथार्थ उपयोगमां विष्टामां शूकरनी जेम मग्न थाय छे, अने मानसरोवरमां राजहंसनी जेम ज्ञानी यथार्थ उपयोगवाळा तत्त्वावबोधमां (आत्मस्वरूपमां) मग्न थाय छे." आ संबंधमां साल ने महासालनुं दृष्टांत छे ते आ प्रमाणे—

साल महासालनी कथा.

पृष्ठचंपा नगरीना राजाना पुत्रो साल अने महासाल बन्ने युवराज हता. अन्यदा ते नगरीमां श्री वीरस्वामी समवसर्या. प्रभुने वांदवा माटे ते बन्ने भाइओ मोटी ऋद्धि सहित गया. त्यां श्री वीरप्रभुने नमीने धर्म श्रवण करी वैराग्य पामी पोताने घेर गया. पछी पोताना भाणेज गांगिलने राज्य सोंपीने जिनेश्वर पासे ते बन्नेए दीक्षा ग्रहण करी. स्थविर साधु पासे तेओए संपूर्ण अगियार अंगनो अभ्यास कर्यो. एकदा श्री वीरप्रभुनी आज्ञा लइने श्री गौतमस्वामीनी साथे पोताना कुटुंबने प्रतिबोध करवा माटे तेओ पृष्टचंपाए आव्या. तेमनुं आगमन सांभळीने गांगिल राजा तेमने वांदवा आव्यो. गणधर महाराजने तथा साल महासाल मुनिने नमीने ते देशना सांभळवा बेठो. ते वखते चार ज्ञानने धारण करनार श्री गौतमस्वामीए देशनानो आरंभ कर्यो—

निर्वाणपदमप्येकं, भाव्यते यन्मुहुर्मुहुः ।
तदेव ज्ञानमुत्कृष्टं, निर्बन्धो नास्ति भूयसा ॥ १ ॥

भावार्थ—" निर्वाणपद एटले कर्मरहित थवाना हेतुभूत एवा एक मोक्षपदनीज स्याद्वादना सापेक्षपणाए वारंवार भावना कराय एटले आत्माने तन्मय कराय, स्वरूपमां एकता थाय तेज उत्कृष्ट ज्ञान छे, जे ज्ञानवडे आत्मा अनादि काळथी नहीं प्रामेला आत्मसुखनो अनुभव करे छे. बाकी आत्मज्ञानथी

व्यतिरिक्त बीजा वाणीना विस्तारवाळा घणा एवा संवेदन ज्ञानवडे कांइ आत्मसुखनो निश्चय थतो नथी. केमके थोडुं पण अमृतसदृश ज्ञानज अनादि कर्मरोगनो नाश करनारुं छे."

वादांश्च प्रतिवादांश्च, वदन्तोऽनिश्चितांस्तथा ।
तत्त्वान्तं नैव गच्छन्ति, तिलपीलकवद्गतौ ॥ २ ॥

भावार्थ—"वाद अने प्रतिवाद तेमज अनिश्चित पदार्थने कहेनारा माणसो घाणीना बळदनी गतिनी जेम तत्त्वना पारने पामता नथी."

विस्तरार्थ—वाद एटले पूर्वपक्ष अने प्रतिवाद एटले उत्तरपक्ष तेने परना पराजय माटे तथा पोताना जयने माटे करवाथी वस्तुधर्मरूप तत्त्वना अंतने पामी शकातुं नथी. वळी पदार्थना स्वरूपनो निश्चय कर्या विना तेनुं अनिर्धारित स्वरूप कहेवाथी पोताना अत्यंत स्वाभाविक आत्मज्ञानना अनुभवने पामी शकातुं नथी. जेम घाणीमां नाखेलो वृषभ गमे तेटलुं फरे तोपण कोइ बीजा स्थानने पामतो नथी, तेम तत्त्वज्ञानने नहीं इच्छनारो मनुष्य अनेक शास्त्रोमां श्रम कर्या छतां पण तत्त्वना अनुभवनो स्पर्श मात्र पण करतो नथी. एज कारणथी साते नयो स्वेच्छा प्रमाणे ज्ञानना स्वरूपने कहे छे.

ज्ञानना चार निक्षेपा आ प्रमाणे छे--शब्दना आलाप रूप जे ज्ञान ते नामज्ञान कहेवाय छे. सिद्धचक्रादिकमां स्थापन करेलुं ज्ञानपद ते स्थापनाज्ञान कहेलुं छे. उपयोगरहित पाठ मात्र करवो ते द्रव्यज्ञान कहेवाय छे. तत्त्वार्थनुं ज्ञान जे पुस्तकमां लखेलुं होय छे ते पण द्रव्यज्ञान कहेवाय छे. उपयोग विना स्वाध्याय करवो ते पण द्रव्यज्ञान छे, अने उपयोगपरिणति ते भावज्ञान छे. तेमां भाषादिकना स्कंधरूप जे ज्ञान ते नैगम नयनी अपेक्षाए ज्ञान जाणवुं. संग्रहनयनी अपेक्षाए अभेद उपचारथी सर्व जीवो ज्ञानरूप जाणवा. व्यवहार नयनी अपेक्षाए पुस्तकादिकमां रहेलुं ज्ञान जाणवुं अने ऋजुसूत्रनये तत्परिणाम संकल्परूप ज्ञान जाणवुं. अथवा ज्ञानना हेतुभूत वीर्यने नैगमनय ज्ञान कहे छे, संग्रहनय आत्माने ज्ञान कहे छे, व्यवहारनय क्षयोपशम प्रमाणे ज्ञान संबंधी व्यवहार प्रवृत्तिने ज्ञान कहे छे, अने ऋजुसूत्र वर्तमान यथार्थ अयथार्थ वस्तुतत्त्वना बोधने ज्ञान कहे छे. शब्दनयनी अपेक्षाए सम्यग्दर्शन पूर्वक यथार्थ वस्तुस्वरूपना बोधरूप

लक्षणवाळुं, कारण तथा कार्यनी अपेक्षावाळुं, पोताने तथा परने प्रकाश करनारुं अने स्याद्वादथी युक्त जे ज्ञान तेने ज्ञान जाणवुं. समभिरूढनयनी अपेक्षाए ज्ञानवाची समग्र वचन पर्यायोनी शक्तिनी प्रवृत्ति रूप ज्ञान जाणवुं, अने एवंभूत नयनी अपेक्षाए केवळज्ञाननेज ज्ञान जाणवुं. अहीं सम्यग् रत्नत्रयना उपादेय लक्षणवाळुं परमज्ञान ते शुद्ध ज्ञान छे. कह्युं छे के —

पीयूषमसमुद्रोत्थं, रसायनमनौषधम् ।
अनन्यापेक्षमैश्वर्यं, ज्ञानमाहुर्मनीषिणः ॥ १ ॥

भावार्थ—" पंडितो समुद्र विना उत्पन्न थयेला अमृतरूप, औषध विना उत्पन्न थयेला जरामरणने नाश करनार रसायणरूप अने सैन्यादिक अन्य कोइ पण वस्तुनी अपेक्षारहित शक्रचक्रीपणाना ऐश्वर्यरूप—एवुं ज्ञान कहे छे."

ते माटे हे भव्य प्राणीओ! ज्ञाननो सम्यग् प्रकारे आदर करवो योग्य छे." इत्यादि गौतम गणधरनी देशना सांभळीने वैराग्य पामेला गांगिल राजाए पोताना पुत्रने राज्य सोंपी मातापिता सहित मोटा उत्सव पूर्वक दीक्षा ग्रहण करी. पछी साल, महासाल अने गांगिल विगेरेने साथे लइने श्री गौतमस्वामी जिनेश्वर पासे जवा माटे चंपा तरफ चाल्या. मार्गमां साल अने महासाल विचार करवा लाग्या के " आ अमारी बेन, बनेवी अने भाणेजने धन्य छे के जेओ अल्प काळमांज सर्वविरतिपणुं पाम्या. " ते वखते गांगिल विगेरे त्रणे जण पण एवो विचार करवा लाग्या के " आ साल अने महासालने धन्य छे के जेओए आपणने प्रथम राज्यलक्ष्मी आपी, अने हमणा महानंदसुखने पमाडनारुं चारित्र अपाव्युं. " आवी रीते ते पांचे जण लोकोत्तर ध्यानमां मग्न थइ क्षपक श्रेणिपर आरूढ थइने केवलज्ञान पाम्या. तेओ श्री प्रभु पासे आव्या, त्यारे श्री गौतमस्वामीनी साथे प्रभुनी प्रदक्षिणा करीने ते पांचे केवळीनी सभा तरफ चाल्या. एटले गौतमस्वामी बोल्या के "अरे! तमे सर्व अजाण्या हो तेम त्यां केम चाल्या जाओ छो? अहीं आवो, त्रण जगतना प्रभुने वंदना करो. " ते सांभळीने श्री वीरप्रभुए गौतमने कह्युं के " जिननी (केवळीनी) आशातना न करो." प्रभुनुं वचन सांभळीने गौतमस्वामीए तत्काळ तेमने खमाव्या. पछी तेमणे पोताना मनमां विचार्युं के—

दुर्भगं हरिणाक्षीव, भजतेऽद्यापि मां नहि ।
केवलज्ञानलक्ष्मीस्तत्, किं सेत्स्यामि नवाथवा ॥ १ ॥

भावार्थ—" हरिणनां सरखां नेत्रवाळी स्त्री जेम दुर्भागी पुरुषने भजे नहीं, तेम केवलज्ञाननी लक्ष्मी मने प्राप्त थती नथी, तो शुं हुं आ भवे सिद्धिने पामीश के नहीं ? " एम तेओ विचार करता हता, तेवामां तेमणे देववाणी सांभळी के " आजे श्री जिनेश्वरे कह्युं छे के जे कोइ मनुष्य पोतानी लब्धिवडे अष्टापद उपर जइ जिनेश्वरोने वंदना करे ते जरुर तेज भवे सिद्धिने पामे." आ प्रमाणेनी देववाणी सांभळीने गौतम गणधर श्री वीरप्रभुनी आज्ञा लइने अष्टापद पर्वत तरफ चाल्या.

आ अरसामां कौडिन्य, दिन्न अने सेवाल नामना तापसना आचार्यो " अष्टापद उपर पोतानी शक्तिवडे चडवाथी मुक्ति पामी शकाय " एवुं भगवाननुं वाक्य जनमुखथी सांभळीने पोताना पांचसो पांचसो शिष्यो (तापसो) सहित अष्टापद तरफ जवा प्रथमथी नीकळी चुक्या हता. तेमां प्रथम कौडिन्य तापस पांचसो तापसो सहित एकांतर उपवास करीने ते अष्टापदनी पहेली मेखलाए पहोंच्यो हतो. तेओ पारणाने दिवसे कंद विगेरेनुं भोजन करता हता. बीजो तापस पोताना परिवार सहित छठ तप करतो अने पारणामां पाकेलां पत्रादिकनुं भोजन करतो ते पर्वतनी बीजी मेखला सुधी पहोंच्यो हतो; अने त्रीजो तापस पोताना परिवार सहित अठ्ठम तप करतो पारणामां शुष्क सेवाल खातो ते पर्वतनी त्रीजी मेखला सुधी पहोंच्यो हतो. परंतु कोइ पण तापस अत्यंत क्लेश सहन कर्या छतां ते पर्वतना शिखर उपर पहोंची शक्या नहोता. ते तापसोए गौतमस्वामीने दूरथी आवता जोइने विचार्युं के " तपवडे करीने अति कृश थयेला अमे आ पर्वत उपर चडी शक्या नथी, तो आ स्थूल शरीरवाळा यति शी रीते चडशे ?" आ प्रमाणे ते सर्व तापसो विचार करता हता, तेटलामां तो श्री गौतमस्वामी जंघाचारण लब्धिथी सूर्यनां किरणोनुं अवलंबन करीने तत्काळ ते सर्व तापसोने ओळंगीने आगळ चाल्या, अने एक क्षणमां तेमने अदृश्य थइ गया. ते जोइने विस्मय पामेला सर्वे तापसो बोल्या के " आपणे तो आ साधुना शिष्य थइशुं." गौतमस्वामी तो पर्वतना शिखरपर जइने भरतचक्रीए करावेला चैत्यने जोइ तेमां स्थापित करेला चोवीश तीर्थंकरोने नम्या; अने—" जगचिंतामणि जगनाह[1] "

१ आ जगचिंतामणिनुं चैत्यवंदन गौतमस्वामीए अहीं बनाव्युं.

इत्यादि गाथावडे स्तुति करीने चैत्य बहार नीकळ्या. पछी रात्रि निर्गमन करवा माटे अशोक वृक्षनी नीचे बेठा.

ते वखते इन्द्रनो दिक्पाल कुबेर तीर्थंकरोने नमवा माटे अष्टापदे आव्यो. ते जिनेश्वरोने नमीने श्री गौतमस्वामी पासे आव्यो, अने तेमने वंदना करीने देशना सांभळवा बेठो. श्री गौतमस्वामी बोल्या के—

महाव्रतधरास्तीव्रतपःशोषितविग्रहाः ।
तारयंति परं ये हि, तरन्तः पोतवत्स्वयम् ॥ १ ॥

भावार्थ—"तीव्र तपस्यावडे जेओए पोताना देहनुं शोषण कर्युं छे एवा महाव्रतने धारण करनार मुनिओ नावनी पेठे पोते तरतां छतां बीजाने पण तारे छे."

ते सांभळीने 'लूखुं सूकुं अशन लेवाथी आवुं पुष्ट शरीर थाय नहीं' एम विचारीने कुबेर विकासित मुख करीने कांइक हस्यो. ते वखते तेनो अभिप्राय जाणीने गौतम गणधरे पुंडरीक साधुनुं अध्ययन प्रकाशित करी छेवटे कह्युं के—

कृशोऽपि पश्य दुर्ध्यानात्, कंडरीको ययावधः ।
पुष्टोऽपि पुंडरीकस्तु, शुभध्यानात् सुरोऽभवत् ॥ १ ॥

"हे कुबेर! जुओ के कंडरीक तपस्याथी कृश थयेल हतो छतां पण अशुभ ध्यानथी मरीने नरके गयो, अने पुंडरीक मुनि शरीरे पुष्ट हता छतां पण शुभ ध्यानथी देव थया.

ते सांभळीने कुबेर गणधरने खमावीने स्वस्थाने गयो. ते वखते कुबेरनो सामानिक देव के जे वज्रस्वामीनो जीव हतो ते समकित पाम्यो. तेने केटलाएक तिर्यग्जृंभक देव हतो एम कहे छे.

प्रातःकाळे गौतमस्वामी पर्वतपरथी उतरतां ते तापसो पासे आव्या, त्यारे सर्व तापसोए तेमने कह्युं के "तमे अमारा गुरु छो, अने अमे तमारा शिष्य छीए." गणधर बोल्या के "तमारा अने अमारा सर्वना गुरु श्री महावीर छे." पछी देवताए जेमने मुनिवेश आप्यो छे एवा ते तापसोए गौतमस्वामी पासे दीक्षा लीधी. गणधरे प्रासुक अने निर्दोष एवां पायसान्न (क्षीर) नुं एक पात्र भरी लावीने विधिपूर्वक अनुक्रम प्रमाणे तेमने बेसाडी अक्षीणमहानस लब्धिवडे क-

रीने यथेच्छ पारणुं कराव्युं. तेज वखते सेवालनुं भक्षण करनारा पांचसो ने एक साधु गणधरनी स्तुति करवामां मग्न थया सता जमता जमताज उज्वल केवलज्ञान पाम्या. सर्वे तृप्त थया पछी गणधरे पोते भोजन कर्युं. पछी ते सर्वने साथे लइने आगळ चाल्या. अनुक्रमे प्रभुना समवसरणनी नजीक आवतां छठ तप करनारा दिन्नादिक पांचसो, ने एक साधुने प्रभुना प्रातिहार्यनी लक्ष्मी जोतांज केवळज्ञान प्राप्त थयुं, अने कौडिन्यादिक ५०१ साधुओने प्रभुनुं दर्शन थतांज केवळज्ञान प्राप्त थयुं.

प्रभु पासे आवीने १५०३ मुनिथी परवरेला गौतमस्वामीए प्रभुने प्रदक्षिणा दीधा पछी ते सर्व साधुओ केवलीनी सभामां जवा लाग्या. एटले गणधर बोल्या के " अरे ! तमे सर्वे अहीं आवो, अने त्रण जगत्‌ना गुरुने नमन करो." ते सांभळीने भगवाने तेमने कह्युं के " केवळीनी आशातना न करो." ते सांभळीने गणधरे मिथ्यादुष्कृत आपी तेमने खमाव्या. पछी गणधरे विचार्युं के " हुं गुरुकर्मी छुं, तेथी आ भवे मोक्ष पामीश नहीं. आ में दीक्षा आपेला साधुओने धन्य छे के जेओ तत्काळ केवळज्ञान पाम्या. " आ प्रमाणे अधैर्य राखता गौतम गणधर प्रत्ये श्री वीरस्वामी बोल्या के " प्राणीओने मंद, तीव्र ने तीव्रतर स्नेह होय छे. चिरकाळना परिचयथी तमने मारा उपर तीव्र एवो प्रशस्त स्नेह थयेलो छे, तेथी तमने केवळज्ञान प्राप्त थतुं नथी; ते स्नेह नाश पामशे त्यारे तमने केवळज्ञान थशे. अहींथी काळधर्म पामीने आपणे बन्ने समान थवाना छीए, माटे तमे अधैर्य न राखो. " ए प्रमाणे प्रभुनां वचन सांभळीने श्री गौतमस्वामी प्रसन्न थइ संयम पालन करता सता प्रभुनी सेवा करवा लाग्या.

" आ प्रमाणे स्वभावना (आत्मज्ञानना) लाभथी साल, महासाल अने गांगिल विगेरे भूपो तथा सर्व तापसो तत्काळ केवळज्ञान पामीने अनंत सुखवाळा मोक्षपदने पाम्या. "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ एकविंशतितमस्तंभस्य
षडधिकत्रिशततमः प्रबंधः ॥ ३०६ ॥

व्याख्यान ३०७ मुं.

शमगुण विषे.

विकल्पविषयोत्तीर्णः, स्वभावालंबनः सदा।
ज्ञानस्य परिपाको यः, स शमः परिकीर्तितः ॥ १ ॥

भावार्थ—"संकल्पविकल्प (चित्तविभ्रम) ना विषयथी (विस्तारथी) निवर्तेलो अने सम्यग् रत्नत्रय स्वरूप जे आत्मानो स्वभाव तेनुं (गुणपर्यायनुं) निरंतर आलंबन करनार एवो आत्माना उपयोग लक्षणवाळा ज्ञाननो जे परिपाक—प्रौढ अवसर ते शम कहेलो छे."

शमना चार निक्षेपा आ प्रमाणे—नाम शम अने स्थापना शम तो पूर्वनी पेठे जाणवा. आगमथी द्रव्य शम ते शमना स्वरूपने जाणनार ज्ञानी जे तेना उपयोगमां वर्तता न होय ते. नोआगमथी द्रव्य शम ते मायाए करीने लब्धिनी सिद्धिने माटे अथवा देवगतिनी प्राप्ति विगेरे माटे उपकार अपकारना विपाकने शमन करवाना हेतुथी क्रोधादिकनो उपशम करे ते; अने भावशम ते आत्मस्वरूपमां उपयोगवाळा. तेमां आगमथी मिथ्यात्वने तजीने यथार्थ वस्तुना भासन पूर्वक चारित्रमोहनीय कर्मना उदयनो अभाव होवाथी क्षमादिक गुणनी जे परिणति ते शम कहेवाय छे. ते शम पण लौकिक अने लोकोत्तर भेदे करीने बे प्रकारनो छे. तेमां वेदांत मतवाळानो जे शम गुण छे ते लौकिक छे, अने जैन प्रवचनने अनुसरनारमां जे शम होय छे ते लोकोत्तर छे. ते लोकोत्तर गुणज खरेखरो शुद्ध छे; तेनी उपर मृगापुत्रनी कथा छे ते आ प्रमाणे—

मृगापुत्रनी कथा.

सुग्रीवपुरना राजानो पुत्र मृगापुत्र नामे हतो. ते एकदा महेलना गोखमां बेसीने नगरनुं स्वरूप जोतो हतो, तेवामां शमगुणना निधि समान एक मुनिने निमेषरहित दृष्टिथी प्रीतिपूर्वक जोतां तेने जातिस्मरणज्ञान उत्पन्न थयुं. एटले पूर्व भवे पोते चारित्र ग्रहण कर्युं हतुं तेनुं तेने स्मरण थयुं. पछी ते मृगापुत्र पोताना मातापिता पासे जइने बोल्यो के—

सुयाणि मे पंच महव्वयाणि, नरएसु दुक्खं च तिरिक्खजोणिसु ।
निविएणकामो ह्मि महएणवाओ, अणुजाणह पव्वइस्सामि अम्मो ॥१॥

भावार्थ—"हे मातपिता ! में पांच महाव्रतने सांभळ्यां छे, तथा नरकने विषे अने तिर्यंचयोनिने विषे जे दुःख पडे छे ते पण में जाण्युं छे; तेथी हुं संसाररूप महार्णवथी निर्वेद (वैराग्य) पाम्यो छुं; माटे मने अनुज्ञा आपो के जेथी हुं प्रव्रज्या अंगीकार करुं."

इत्यादिक वाक्योवडे देहना भोगोपभोगादिकनुं अनित्यपणुं कहीने तेणे प्रव्रज्या लेवानी अनुज्ञा मागी. ते सांभळीने मातपिताए अनेक युक्तिओवडे जीवन पर्यंत चारित्रनुं पालन अति दुष्कर बतावीने कह्युं के "हे पुत्र ! तारुं शरीर अति सुकोमळ छे. तुं चारित्र पाळवाने समर्थ नथी; केमके पांच इंद्रियो तथा मन जीतवा मुश्केल छे. लोढाना चणा चाववानी जेवुं चारित्र पाळवुं दुष्कर छे. देदीप्यमान अग्निनी ज्वाळानुं पान करवानी जेम अथवा मन्दराचळ पर्वतने तोळवानी जेम युवावस्थामां चारित्रनुं पालन करवुं अति दुष्कर छे. माटे वृद्धावस्थामां दीक्षा लेवा योग्य छे." ते सांभळीने मृगापुत्र बोल्यो के "हे मातापिता ! आ लोकमां निःस्पृह थयेला माणसने कांइ पण दुष्कर नथी. केमके में चारे गतिमां वाणीथी कही न शकाय तेवी अनेक वेदनाओ अनुभवी छे.

सव्वभवेसु असाया, वेअणा वेइआ मए ।
निमेसंतरमित्तं पि, जं साया नत्थि वेइआ ॥ १ ॥

भावार्थ—"में सर्व भवोमां असातावेदनी वेदी छे, एक निमेषमात्र पण सातावेदनी वेदी नथी."

में नरकादिकनी महा व्यथाओ सहन करी छे, तो पछी मारे दीक्षानुं पालन करवुं तेमां शुं मुश्केल छे ? माटे मारे अवश्य दीक्षा लेवीज छे. संयमनुं पालन करतां जे शम गुणना सुखनो आस्वाद मळे छे तेज मोटुं सुख छे. शाम्य सुखमां मग्न थयेलो जीव देशे उणा कोटी पूर्वना काळने पण सुखे सुखे दीनता रहित निर्गमन करे छे. एक निमेषमात्र पण प्रमादमां पडतो नथी. कह्युं छे के—

शमसूक्तसुधासिक्तं, येषां नक्तदिनं मनः ।
कदापि ते न दह्यन्ते, रागोरगविषोर्मिभिः ॥ १ ॥

भावार्थ—" जे महात्माओनुं मन रात्रिदिवस शम जे कषायाभाव तेनां सूक्त एटले आत्मस्वरूपतत्त्वनां वचनो ते रूपी अमृतथी सिंचन थयेलुं होय छे तेओ रागरूपी सर्पना विषोर्मिथी कदापि दग्ध थता नथी.

जगतना जीवो रागादिक सर्पथी डसाया सता विषयमां घूर्मित थइने परिभ्रमण करे छे. इष्ट वस्तुना संयोगनी अने अनिष्ट वस्तुना वियोगनी चिंता अहर्निश करीने अनेक प्रकारना संकल्पविकल्प करे छे, अने बहु प्रकारनी अग्रशोचादि[1] जे कल्पना तेना कल्लोलने ग्रहण करे छे; तेमज अनंत जीवोए अनंतीवार भोगवीने मूकी दीधेला जगतना उच्छिष्ट एवा अनेक पुद्गल स्कंधोनी याचना करे छे. माटे कोइ पण प्रकारे शम गुणने प्रगट करवो, एज निरूपम श्रेयस्कर छे. कह्युं छे के—

स्वयंभूरमणस्पर्द्धि, वर्धिष्णुसमतारसः ।
मुनिर्येनोपमीयेत, कोऽपि नासौ चराचरे ॥ १ ॥

भावार्थ—" स्वयंभूरमण समुद्रनी स्पर्धा करनार एवो समता रस जेना हृदयमां वृद्धि पाम्या करे छे तेवा मुनिने जेनावडे उपमा आपी शकाय एवो कोइ पण पदार्थ आ चराचर जगतमां नथी."

अर्ध रज्जु प्रमाण छेल्लो स्वयंभूरमण नामनो जे समुद्र तेना जळनी साथ स्पर्धा करे तेटलो समता रस जेना आत्मामां वृद्धि पाम्या करे छे एवा मुनि त्रिकाले पण विषयने ग्रहण करता नथी. तेओने अतीत काळमां भोगवेला भोगना स्मरणनो अभाव छे, वर्तमान काळे इन्द्रियगोचर एवा विषयोमां रमणतानो अभाव छे, अने अनागत काळे मनोज्ञ विषयोनी इच्छानो अभाव छे, एवा मुनिने जे उपमाने करीने उपमा अपाय एवो कोइ पण आ सचराचर जगतमां पदार्थ नथी; केमके सर्व पदार्थ तो अचेतन पुद्गल स्कंधोथी उत्पन्न थयेल अने रूपी छे अने समता रस तो सहज, आत्यंतिक अने निरूपम आत्मस्वभाव छे, तो तेनी साथे तेनी शी रीते उपमा आपी शकाय ? "

---

१ दुःख आवी पडवानो भय धरावी प्रथमथी जे शोकसंताप करवो ते.

इत्यादि विविध उपायोवडे मातापिताने प्रतिबोध पमाडीने तेमनी अनुज्ञाथी समग्र परिग्रहनो त्याग करी मृगापुत्रे दीक्षा ग्रहण करी. कह्युं छे के—

अणिस्सिओ इहलोए, परलोए अणिस्सिओ ।
वासिचंदणकप्पो अ, असणे अणसणे तहा ॥ १ ॥

भावार्थ—" आ लोकने विषे इच्छारहित अने परलोकने विषे पण इच्छारहित तेमज वासी ने चंदन अने अशन ने अनशन ए जेमने तुल्य छे एवा ते मुनि थया. " अर्थात् आ लोकना सुखने अर्थे के परलोकना सुखने अर्थे जे तप तपता नथी, वांसलाथी छेदन करनार अने चंदनथी विलेपन करनार उपर जेमने समभाव छे अने अशन ते आहारनो सद्भाव अने अनशन ते तेनो अभाव तेमां जे तुल्य मनोवृत्तिवाळा छे.

आ प्रमाणे घणां वर्षो सुधी चारित्रनुं पालन करीने मृगापुत्र मुनि एक मासनुं अनशन करी सर्व कर्म खपावी सिद्धिपदने पाम्या.

" जे माणसना हृदयमां अंतर्गत ध्यानने विशुद्ध करनार देदीप्यमान समता गुण होय छे, ते मृगापुत्र मुनींद्रनी जेम तत्काळ शुभ एवा रत्नत्रयनी पुष्टिप्रत्ये पामे छे. "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ एकविंशतितमस्तंभस्य
सप्ताधिकत्रिशततमः प्रबंधः ॥ ३०७ ॥

व्याख्यान ३०८ मुं.

पांच इन्द्रियोना स्वरूप विषे.

श्रुत्वेन्द्रियस्वरूपाणि, श्रीज्ञातनंदनास्यतः ।
स सुभद्रोऽनुचानोऽभूत्, पंचाक्षविषयोन्मुखः ॥ १ ॥

भावार्थ—" श्री महावीरस्वामीना मुखथी पांच इन्द्रियोना स्वरूपने सांभळी पांच इन्द्रियोना विषयथी पराङ्मुख थयेल ते सुभद्र अणगार (मुनि) थया. " तेनुं दृष्टांत आ प्रमाणे—

सुभद्रनी कथा.

श्री राजगृह नगरमां कोइ श्रेष्ठीनो पुत्र सुभद्र नामे हतो. ते जन्मथीज दरिद्रीपणुं पामेलो होवाथी निरंतर भिक्षावृत्तिथी उदरनिर्वाह करतो हतो. एकदा ते नगरमां श्री महावीरस्वामी गुणशील वनमां समवसर्या. ते परमात्माने वांदवा माटे राजा तथा सर्व पौरजनो जता हता. ते जोइने ते सुभद्र पण सर्व जननी साथे प्रभु पासे गयो. त्रण भुवनने तारवामां समर्थ अने जेने कोइनी उपमा न आपी शकाय एवी श्री जिनेश्वरनी वाणी सांभळीने आश्चर्य पामेला सुभद्रे विचार कर्यो के " अहो ! आज में निःसीम गुणना निधि समान कर्मकल्मषरहित एवा प्रभुने जोया. आजे मारो जन्म सफळ थयो. " पछी समग्र जगतना जीवोनो उद्धार करनार अने बोधिबीजने आपनार एवा श्री प्रभुए ते सुभद्रने उद्देशीने इन्द्रियो संबंधी व्याख्यान शरु कर्युं. ते आ प्रमाणे—

जितान्यक्षाणि मोक्षाय, संसारायाजितानि च ।
भवेत्तदन्तरं ज्ञात्वा, यद्युक्तं तत्समाचर ॥ १ ॥

भावार्थ—" जीतेल इन्द्रियो मोक्षने माटे थाय छे, अने नहीं जीतेल इन्द्रियो संसारने माटे थाय छे; माटे ते बन्नेनुं अंतर जाणीने जे युक्त लागे तेनुं आचरण कर. "

इन्द्रियो पांच छे—श्रोत्र, नेत्र, नासिका, जिह्वा अने स्पर्शन (काया). ते दरेक इन्द्रिय द्रव्य अने भावथी बबे प्रकारनी छे. द्रव्येन्द्रियना पण बे प्रकार छे. एक निर्वृति इन्द्रिय अने बीजी उपकरण इन्द्रिय. निर्वृति एटले इन्द्रियनो आकार. ते पण बाह्य अने अभ्यंतर भेदे करीने बे प्रकारनो छे. तेमां बाह्य आकार स्फुट छे. ते दरेक जातिने विषे जूदा जूदा स्वरूपवाळो कानना पापडी विगेरे जे बहार देखाय छे ते जाणवो. बाह्य आकार विचित्र आकृतिवाळो होवाथी अश्व, मनुष्य विगेरे जातिमां समान रूपवाळो नथी. अभ्यंतर आकार सर्व जातिमां समान होय छे. ते आ प्रमाणे-श्रोत्रनो अभ्यंतर आकार कदंब पुष्पना आ-

कार जेवा मांसना गोळारूप छे, नेत्रोनो अभ्यंतर आकार मसूरना धान्यनी जेवो होय छे, नासिकानो अभ्यंतर आकार अतिमुक्तकना[1] पुष्प जेवो होय छे, जिह्वानो आकार अस्त्रा जेवो होय छे, अने स्पर्शन इन्द्रियनी आकृति भिन्न भिन्न प्रकारनी होय छे, पण ते बाह्य अने अभ्यंतर एकज स्वरूपे होय छे. आ प्रमाणे निर्वृत्ति इन्द्रियनुं स्वरूप जाणवुं. उपकरण इन्द्रियनुं स्वरुप एवुं छे के जेम खड्गनी धारामां छेदन करवानी शक्ति छे, तेम शुद्ध पुद्गलमय शब्दादि विषयने ग्रहण करवानी जे शक्ति विशेष ते उपकरण इन्द्रिय जाणवी. ते इन्द्रियनो अति कठोर मेघगर्जनादिकवडे उपघात थाय तो बहेरापणुं विगेरे प्राप्त थाय छे. ए प्रमाणे द्रव्य इन्द्रियना निर्वृति अने उपकरण एवा बन्ने भेदनुं स्वरूप जाणवुं. हवे भाव इन्द्रियना पण बे प्रकार छे. लब्धि अने उपयोग. तेमां श्रोत्र विगेरे इंद्रियोना विषयवाळा सर्व आत्मप्रदेशने आवरण करनारां कर्मनो जे क्षयोपशम ते लब्धि इन्द्रिय जाणवी; अने पोतपोताना विषयमां लब्धिरूप इन्द्रियने अनुसारे आत्मानो जे व्यापार—प्रणिधान ते उपयोग इन्द्रिय जाणवी.

पांचे उपकरण इन्द्रियो अंगुलना असंख्येय भाग प्रमाण स्थूल (जाडाइमां) छे. तेमां श्रोत्र, नासिका अने नेत्र अंगुलना असंख्यातमा भागे पृथु छे, जिह्वा इन्द्रिय बेथी नव अंगुल विस्तारवाळी छे, अने स्पर्शनेन्द्रिय देहप्रमाण विस्तारवाळी छे.

पांचे इन्द्रियोना विषयनुं मान आ प्रमाणे छे—नेत्र विना बीजी चार इन्द्रियो जघन्यथी अंगुलना असंख्यातमा भागमात्रमां रहेला विषयने जाणे छे, तेथी वधारे नजीक रहेलाने जाणती नथी. नेत्र इन्द्रिय जघन्यथी अंगुलना संख्याता भागमां रहेला पदार्थने जोइ शके छे, पण अति समीपे रहेलां अंजन, रज, मेल विगेरेने जोइ शकती नथी. नासिका, जिह्वा अने स्पर्शन ए त्रण इन्द्रियो उत्कृष्ट नव योजनथी आवता गंध, रस तथा स्पर्शने ग्रहण करे छे. कर्ण इन्द्रिय उत्कृष्ट बार योजन दूरथी आवता शब्दने सांभळे छे, अने चक्षुरिन्द्रिय साधिक लाख योजन दूर रहेला रूपने जोइ शके छे. वळी—

एकाक्षादिव्यवहारो, भवेद्द्रव्येन्द्रियैः किल ।
अन्यथा बकुलः पंचाक्षः स्यात्पंचोपयोगतः ॥ १ ॥

---

१ अगथीआनां फूल.

रणन्नूपुरशृंगारचारुलोलेक्षणामुखात् ।
निर्यत्सुगन्धिमदिरागंडूषादेष पुष्यति ॥ २ ॥

भावार्थ—" एकेन्द्रियादिक व्यवहार द्रव्यइन्द्रियोए करीनेज थाय छे, नहीं तो बकुल वृक्ष पांचे इन्द्रियोना उपयोगवाळुं होवाथी पंचेन्द्रिय कहेवाय. पण ते एकेन्द्रियज छे. (१) पगमां शब्द करता नेउर विगेरे शृंगार धारण करेली सुंदर-अने चपळ नेत्रवाळी स्त्रीना मुखथी नीकळता सुगंधी मदिराना कोगळाथी बकुल वृक्ष पुष्पित थाय छे.

अहीं बकुल वृक्षने पांचे भावइन्द्रियोनो उपयोग आ प्रमाणे समजवो—

नूपुरना शब्दवाळा पादनो स्पर्श करवाथी प्रफुल्लित थाय छे तेथी कर्ण अने स्पर्श ए बे इन्द्रियोनो उपयोग, सुंदर नेत्रवाळी स्त्रीने लीधे प्रफुल्लित थाय छे तेथी नेत्रइंद्रियनो उपयोग अने सुगंधी मदिराना रसथी प्रफुल्लित थवाने अंगे रसेंद्रिय ने घ्राणेंद्रियनो उपयोग—एम पांचे इन्द्रियना विषयनो उपयोग जाणवो.

आ प्रमाणे इन्द्रियोना स्वरूपने जाणीने तेना शब्दादि विषयोमां क्षणमात्र पण मननी प्रवृति करवी नहीं. कह्युं छे के—

इंदिअधुत्ताणं अहो, तिलतुसमित्तं पि देसु मा पसरं ।
अह दिन्नो तो नीओ, जत्थ खणो वरिसकोडिसमो. ॥ १ ॥

भावार्थ—" अहो ! इन्द्रियरूपी धूर्तने तलना फोतरा जेटलो पण प्रसार (अवकाश) आपीश नहीं. जो कदाच तेने एक क्षणमात्र पण अवकाश आपीश तो ते जरुर कोटी वर्ष सुधी जशे नहीं. "

इन्द्रियो गोपववाना विषयमां ज्ञाताधर्मकथांग सूत्रने विषे बे काचबानुं दृष्टांत आपेलुं छे. ते सूत्रमां आ बे गाथाओ छे—

विसएसु इंदिआइं, रुंभंता रागदोसनिम्मुक्का ।
पावंति निव्वुइ सुहं, कुम्मुव्व मयंगदहसुहं ॥ १ ॥

अवरे उ अणत्थपरंपराओ पावंति पावकम्मवसा ।
संसारसागरगया, गोमाऊ अ गसिअ कुम्मुव्व ॥ २ ॥

भावार्थ—"रागद्वेषथी रहित थइने इन्द्रियना विषयोने रोकनारा प्राणीओ मृदंग द्रहना सुखने पामनारा काचबानी जेम निर्वृत्ति सुखने पामे छे अने बीजा संसारसागरमां पडेला प्राणीओ पापकर्मना वशथी शियाळे ग्रसित करेला काचबानी जेम अनर्थ परंपराने पामे छे."

ते बे काचबानी कथा नीचे प्रमाणे—

वाराणसी पुरीने विषे गंगानदीने कांठे मृदंग नामना द्रहमां गुप्तेंद्रिय अने अगुप्तेन्द्रिय नामना बे काचबाओ रहेता हता. ते बन्ने स्थलचारी कीडाओनुं मांस खावामां प्रीतिवाळा हता. तेथी एकदा तेओ द्रहनी बहार नीकळ्या हता, तेवामां बे शियाळीयाए तेमने जोया. ते काचबाओ पण शियाळने जोइने भय पाम्या, तेथी तेमणे पोताना चारे पग तथा ग्रीवाने संकोचीने पृष्ठनी ढालमां गोपवी दीधा, अने कांइ पण चेष्टा कर्या विना जाणे मरी गयेला होय तेम पड्या रह्या. बन्ने शियाळे पासे आवीने ते काचबाओने वारंवार उंचा उपाडीने पछाड्या, गुलांटो खवरावी तथा घणा पादप्रहार कर्या, परंतु ते काचबाने कांइ पण इजा थइ नहीं. पछी थाकी गयेला ते बन्ने शियाळ थोडे दूर जइने संताइ रह्या एटले पेला अगुप्तेंद्रिय काचबाए चपळताने लीधे एक पछी एक एम चारे पग तथा ग्रीवाने बहार काढी. ते जोइ बन्ने शियाळे तत्काळ दोडी आवीने तेनी डोक पकडीने मारी नांख्यो. बीजो गुप्तेंद्रिय काचबो तो अचपळ होवाथी चिरकाळ सुधी तेमनो तेम पड्यो रह्यो. पछी घणीवार सुधी रोकाइने थाकी गयेला ते शियाळ ज्यारे त्यांथी जता रह्या, त्यारे ते काचबो चोतरफ जोतो जोतो कुदीने जलदीथी द्रहमां जतो रह्यो, तेथी ते सुखी थयो.

पांचे अंगोने गोपवनार काचबानी जेम पांचे इन्द्रियोने गोपवनार प्राणी सुखी थाय छे, एवुं आ दृष्टांतनुं तात्पर्य छे.

आ पांचे इन्द्रियोनो प्रयोग प्रशस्त परिणाम अने अप्रशस्त परिणामे करीने बे प्रकारनो छे. तेमां श्रवण इन्द्रियनो देवगुरुना गुणग्राम अने धर्मदेशनादिकना

श्रवण करवामां शुभ अध्यवसायथी जे उपयोग कराय ते प्रशस्त कहेवाय छे अने इष्ट तथा अनिष्ट शब्दो श्रवण करीने रागद्वेषनुं जे निमित्त थाय ते अप्रशस्त उपयोग कहेवाय छे. चक्षु इन्द्रियनो देव, गुरु, संघ तथा शास्त्रो जोवामां अने पडिलेहण, प्रमार्जन विगेरेमां, इर्यासमितिमां तथा धर्मस्थानादिक जोवामां जे उपयोग कराय ते प्रशस्त छे अने हास्य, नृत्य, क्रीडा, रुदन, भांडचेष्टा, इन्द्रजाल, परस्पर युद्ध, तथा स्त्रीना सुरूप कुरूप अंगोपांग विगेरे जोवामां जे उपयोग कराय ते अप्रशस्त छे. नासिकानो अरिहंतनी पूजामां उपयोगी पुष्पो, केसर, कपूर, सुगंधी तेल विगेरेनी परीक्षामां, गुरु अने ग्लान मुनि विगेरेने माटे पथ्य के औषध आपवामां, तथा साधुओने अन्न, जळ, भक्ष्य, अभक्ष्य विगेरे जाणवामां उपयोग कराय ते प्रशस्त कहेवाय छे, अने रागद्वेष उत्पन्न करनार सुगंधी तथा दुर्गंधी पदार्थोमां उपयोग कराय तो ते अप्रशस्त छे. जिह्वा इन्द्रियनो स्वाध्याय करवामां, देवगुरुनी स्तुति करवामां परने उपदेश आपवामां, गुरु विगेरेनी भक्ति करवामां अने मुनिओने आहारपाणी आपतां ते वस्तुओनी परीक्षा करवामां उपयोग कराय ते प्रशस्त छे अने स्त्री विगेरे चार प्रकारनी विकथा करवामां, पापशास्त्रनो अभ्यास करवामां, परने ताप उपजाववामां अने रागद्वेष उत्पन्न करनार इष्ट अनिष्ट आहारादिकमां जे उपयोग कराय ते अप्रशस्त छे. स्पर्शइन्द्रियनो जिनप्रतिमानुं स्नानादिक करवामां तथा गुरु अने ग्लान साधु विगेरेनी वैयावच्च करवामां जे उपयोग कराय ते प्रशस्त छे, अने स्त्रीने आलिंगन विगेरे करवामां जे उपयोग कराय ते अप्रशस्त छे. आ प्रमाणे सर्व वस्तुओमां शुभ तथा अशुभ अध्यवसाय अने फळप्राप्तिने अनुसारे प्रशस्त तथा अप्रशस्त भाव जाणवो. तेवी रीते विचारतां अहीं चार भांगा थाय छे. ते आ प्रमाणे—केटलाएक जीवोने शुभ अध्यवसायना कारण (साधक कारण) भूत जिनबिंबादिक प्रशस्त वस्तु जोइने कालकशौकरिक विगेरेनी जेम अप्रशस्त बाधक भाव उदय पामे छे. केटलाक जीवोने शुभ अध्यवसायने साधनार साधक कारणभूत समवसरणादिक प्रशस्त वस्तु जोइने पंदरसो तापसोनी जेम प्रशस्त साधकभाव उत्पन्न थाय छे. केटलाक जीवोने बाधक कारणभूत अप्रशस्त वस्तु जोइने पण आषाढ नामना नर्तक ऋषिनी जेम प्रशस्त एवो साधकभाव वृद्धि पामे छे, अने केटलाक जीवोने अप्रशस्त बाधक वस्तु जोइने सुभूम चक्री, ब्रह्मदत्तचक्री विगेरेनी जेम अप्रशस्त बाधकभाव उत्पन्न थाय छे."

आ प्रमाणे श्री वीरप्रभुना मुखथी धर्मदेशना सांभळीने जेणे शरीमां पडेला चींथरानी कंथा ओढेली छे, अने जेना हाथमां मृत्तिकानुं रामपात्र रहेलुं छे एवो दरिद्री सुभद्र प्रतिबोध पाम्यो, तेथी तेणे तरतज सर्व मूर्च्छानो त्याग करीने दीक्षा ग्रहण करी. आकाशनी पेठे अस्खलित विहारवाळो थयो, अने प्रभुनी कृपाथी ते अगियार अंगना सूत्रार्थनो ज्ञाता थयो. एकदा पौरलोको ते मुनिनी पूर्वावस्था संभारीने हांसी करवा लाग्या के " अहो ! आ सुभद्र केवी राजसमृद्धि तजीने मुनि थयो छे ! हवे तो सारी रीते आहारादिक मळवाथी ते पूर्वनी अवस्था करतां वधारे सुखी थयो छे. पहेलां तो आ रंक रंकपुरुषोवडे पण निंद्य (निंदवा लायक) हतो, अने हवे तो इन्द्रादिक देवोने पण वंद्य (वंदन करवा योग्य) थयो छे. पहेलां तो तेने उच्छिष्ट (एठुं) भोजननी प्राप्ति पण दुर्लभ हती, अने हवे तो यथेच्छ भोजन मळे छे. आना वैराग्यनुं वृत्तांत ने तेनुं कारण आपणे बराबर समज्या छीए. "

इत्यादिक निंदा करता पौरलोकोने जोइने श्रेणिक राजाना पुत्र अभयकुमार मंत्रीए विचार्युं के " अहो ! आ पौरजनो विनाकारण महा वैराग्यवान ने त्यागीमां श्रेष्ठ एवा आ मुनिनी निंदा करे छे. परमार्थ तत्त्वने नहीं जाणनारा आ मूढ लोको आ निःस्पृह मुनि उपर फोगट वैर राखीने तेना गुणोने दोषपणे वहन करे छे. तेमज मुनिनी निंदा करवाथी तेओ दृढतर पापकर्मना समूहने उपार्जन करे छे. माटे मारे आ सर्व लोकोने कोइ प्रकारे प्रतिबोध करवो जोइए. " एम विचारीने अवसरज्ञ अभयकुमारे एकदा राजमार्गमां सर्व पौरजनो एकठा मळेला हता, ते वखते दूरथी सुभद्र मुनिने आवता जोइने पोताना वाहन परथी नीचे उतरी त्रण प्रदक्षिणा पूर्वक तेमने नमीने पूछ्युं के " हे पूज्य ! एककाळे केटली इन्द्रियोनो उपयोग होइ शके ? " गुरुए जवाब आप्यो के " एककाळे एकज इन्द्रियनो उपयोग होइ शके. " फरीथी मंत्रीए पूछ्युं के " एक एक इन्द्रिय सेवी सती दुःखदायी थाय के नहीं ? " मुनि बोल्या के " एक एक इन्द्रिय पण मृगादिकनी जेम आ लोकमां तथा परलोकमां महा अनर्थनुं कारण थाय छे. तो पछी पांचे इन्द्रियोनुं सेवन करवाथी केटलो अनर्थ थाय ? कह्युं छे के—

कुरंगमातंगपतंगभृंगमीना हताः पंचभिरेव पंच ।
एकप्रमादी स कथं न हन्याद्यः सेवते पंचभिरेव पंच॥ १ ॥

भावार्थ—" मृग, हाथी, पतंग, भ्रमर अने मत्स्य ए पांच प्राणीओ पांच इन्द्रियोमांथी एकेकना सेववावडे हणाया, एटले पांचथी पांच हणाया तो जे प्रमादी मनुष्य एकलो पांचे इन्द्रियोवडे पांचेना विषयोने सेवे छे ते केम न हणाय ? ते तो अवश्य हणाय. "

मृगो स्वेच्छाए अरण्यमां अटन करे छे, तेने पकडवा माटे पारधीओ सारंगी, वीणा विगेरेनो नाद करे छे, तेथी कर्णना विषयमां लुब्ध थयेला मृगो मोह पामीने ते संगीत सांभळवा आवे छे. ते वखते पारधीओ तेने जलदीथी हणी नाखे छे.

हाथीने पकडवा माटे दुष्ट पुरुषो एक मोटा खाडामां कागळनी हाथणी बनावीने राखे छे. ते हाथणीने जोइने तेनो स्पर्श करवाने उत्सुक थयेलो हाथी ते खाडामां पडे छे, त्यांथी ते नीकळी शकतो नथी. पछी क्षुधा अने तृषा विगेरेथी पीडा पामेला ते हाथीने निर्बळ थयेलो जाणीने केटलेक दिवसे तेने बांधे छे, अथवा मारी पण नांखे छे.

नेत्रना विषयमां आसक्त थयेलुं पतंगीयुं दीवानी ज्योतमां मोह पामीने तेमां पोताना देहने होमे छे—तेथी मरण पामे छे.

घ्राण इन्द्रियना विषयमां आसक्त थयेलो भ्रमर कमळना सुगंधथी मोह पामीने दिवसे ते कमळमां पेसे छे. पछी रात्रे ते कमळ बीडाइ जाय छे, एटले ते आखी रात्रि महा दुःख पामे छे.

जीह्वा इन्द्रियने वश थयेला मत्स्यो लोढाना कांटाना अग्र भागपर राखेली लोटनी गोळीओ जोइने तेमां लुब्ध थइ मांसनी बुद्धिथी ते गोळीओ खावा जाय छे, एटले तरतज लोहना कांटाथी वींधाइने मरण पामे छे.

आ प्रमाणे इन्द्रियोनुं स्वरूप सुभद्र मुनिना मुखथी सांभळीने अभयकुमारे सर्व पौरलोकोने कह्युं के " हे पौरजनो ! तमारामांथी जे कोइ मात्र एक एक इन्द्रियने वश करे, अने तेनुं प्रभुनी साक्षीए पच्चख्खाण ले तेने हुं आ महा मूल्यवाळुं रत्न आपुं. " ते सांभळीने ते लोकोमांथी कोइ पण तेम करवाने तैयार थयो नहीं, सर्व जनो मौन धरी रह्या. त्यारे अभयकुमारे मुनिने कह्युं के " हे

स्वामी ! आपे तो श्री वीर प्रभुनी साक्षीए पांचे इन्द्रियोना विषयोनुं प्रत्याख्यान कर्युं छे, तेथी आ पांच रत्नो आप ग्रहण करो." मुनि बोल्या के "ए रत्नोने हुं शुं करुं ? मने तो कांचन अने पाषाणमां समान बुद्धि छे. में तो त्रिविधे त्रिविधे शरीरनी सुश्रुषा करवानो अने परिग्रहमात्रनो त्याग करेलो छे. इन्द्रादिकना सुखमां पण मने त्रिकाळे पण इच्छा नथी." ते सांभळीने सर्व पौरलोको विस्मय पामी कहेवा लाग्या के "अहो ! आ मुनि खरेखरा निःस्पृह छे. आपणे मूर्खोए आज सुधी तेनी फोगट निंदा करी." आ प्रमाणे तेमना मुखथी मुनिनी स्तुति सांभळीने कृतार्थ थयेलो अभयकुमार मुनिने नमन करी जैनधर्मनो महिमा वधारीने पोताने घेर गयो, अने सुभद्र मुनि शुभ उपयोगथी पूर्ण थया सता आत्मकार्य साधवामां तत्पर थया.

"इन्द्रियोना विषयो प्राप्त थाय त्यारे श्री वीरप्रभुना वाक्यनुं स्मरण करीने ते विषयोपर जरा पण विश्वास करवो नहीं. जुओ ! इन्द्रियोने वश करवाथी सुभद्र मुनिए एकांते रहीने आत्मभाव प्रगट कर्यो."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ एकविंशतितमस्तंभस्य
अष्टोत्तरत्रिशततमः प्रबंधः ॥ ३०८ ॥

व्याख्यान ३०९ मुं.

इन्द्रियोनुं स्वरूप. (शरु)

आत्मानं विषयैः पाशैर्भववासपराङ्मुखम् ।
इन्द्रियाणि निबध्नन्ति, मोहराजस्य किंकराः ॥ १ ॥

भावार्थ—" भववासथी एटले संसारमां रहेवाथी पराङ्मुख थयेला एवा उद्विग्न वैरागी आत्माने पण मोहराजाना किंकर रूप इंद्रियो विषय रूपी पाश

वडे बांधी ले छे, अने तेने पाछा संसारमां भमावे छे. " ते उपर सुकुमारिकानो संबंध छे ते आ प्रमाणे—

सकुमारिका साध्वीनी कथा.

वसंतपुरना राजाना ससक अने भसक नामना पुत्रोए वैराग्यथी दीक्षा लीधी. अनुक्रमे तेओ गीतार्थ थया. पछी तेमणे पोतानी बेन सुकुमारिकाने प्रतिबोध पमाडी दीक्षा आपी. ते सुकुमारिका अत्यंत स्वरुपमान होवाथी अनेक युवान पुरुषोनां चित्तनुं आकर्षण करती हती. तेथी ते युवान पुरुषो साध्वीना उपाश्रयमां प्रवेश करीने सुकुमारिकाना रूपने रागदृष्टिथी जोता हता. ते उपद्रवनो वृत्तांत महत्तरा साध्वीए तेना भाइओने कह्यो. एटले तेओ सुकुमारिकाने एक जूदा मकानमां राखीने तेनी रक्षा करवा लाग्या. सुकुमारिकाने गुप्त राखेली जाणीने युवान पुरुषोए ते बन्ने भाइओनी साथे युद्ध करवा मांड्युं. ते जोइने सुकुमारिकाने विचार थयो के " मारा माटे मारा भाइओ मोटो क्लेश पामे छे; माटे अनर्थ करनारा एवा आ मारा शरीरने धिक्कार छे ! " इत्यादि विचार करीने वैराग्यथी तेणे अनशन ग्रहण कर्युं. तेथी केटलेक दिवसे तेनुं शरीर एटलुं बधुं क्षीण थइ गयुं के तेना भाइओए अतिशय मोहना वशथी तेने मृत्यु पामेली जाणी. एटले ते बन्नेए गाम बहार तेने अरण्यमां परठवी दीधी. त्यां शितळ वायुना स्पर्शथी तेने शुद्धि आवी. तेवामां कोइ सार्थवाहे तेने जोइ, एटले ' आ कोइ स्त्रीरत्न छे ' एम जाणी ते तेने पोताना मुकाममां लइ गयो. पछी अभ्यंग, उद्वर्तन तथा औषध विगेरे करीने तेणे अनुक्रमे तेने पूर्वनी जेवी सुंदर रूपवती करी. पछी सुकुमारिका ते प्रकारनी भवितव्यताथी अने कर्मनी विचित्रताने लीधे " आ सार्थवाह मारो अनुपम उपकारी अने वत्सल छे " एम मानवा लागी. तेथी सार्थवाहना कहेवा प्रमाणे तेनी स्त्री थइने केटलोक काळ तेने घेर रही. एकदा तेणे पोताना बन्ने भाइओ (मुनि) ने जोया. एटले तेमने वंदना करीने तेणे पोतानो सर्व वृत्तान्त निवेदन कर्यो. ते सांभळीने तेओए सार्थवाह पासेथी तेने छोडावीने फरीथी प्रतिबोध आप्यो के—

सरित्सहस्रदुःपूर-समुद्रोदरसोदरः ।
तृप्तौ नैवेन्द्रियग्रामो, भव तृप्तोऽन्तरात्मना ॥ १ ॥

भावार्थ—" हे भव्य प्राणी ! हजारो नदीओना जळथी पण जेनुं उदर पूर्ण थतुं नथी एवा समुद्रनी जेवो इन्द्रियसमूह कदापि तृप्ति पामतो नथी. माटे अन्तरात्माए करीनेज तुं तृप्त था. "

विस्तरार्थ—हे भव्य ! आ इन्द्रियो कोइ पण वखत तृप्त थतीज नथी. केमके नहीं भोगवेला भोगनी इच्छा रहे छे, भोगवती वखते तेमां आसक्ति रहे छे, अने भोगवायेला भोगनुं स्मरण रह्या करे छे. एटले त्रणे काळमां इन्द्रियोनी अशुद्ध प्रवृत्ति छे, अने इन्द्रियोना विषयोमां आसक्त थयेला जीवनी तेना भोग वडे कदापि तृप्ति थतीज नथी. ते इंद्रियोनो समूह केवो छे ? हजारो नदीओना प्रवाहवडे पण नहीं पूराता समुद्र जेवो छे. ते इंद्रियोनो अभिलाष शमसंतोष वडेज पूरी शकाय तेम छे. तेने माटे आ हित कथन छे. तेथी हे उत्तम जीव ! तुं तारा आत्मस्वरूपे करीनेज तृप्त था.

आ जीव संसारचक्रमां रहेला परभवोने आत्मपणे (पोतापणे) मानीने ' आ शरीरज आत्मा छे ' एवी रीतना बाह्य भावने विषे आत्मबुद्धि धारण करी बाह्यात्मापणाने पामवाथी मोहमां आसक्त थयो सतो अनन्त पुद्गल परावर्त सुधी संसारचक्रमां पर्यटण करे छे. तेज जीव निसर्गथी (स्वयमेव) अथवा अधिगमथी (परना उपदेशथी) आत्मरूप तथा पर रूपनो विभाग करीने ' हुं शुद्ध छुं ' एवो निश्चय करी सम्यक् रत्नत्रय स्वरूपवाळा आत्मानेज आत्मरूपे जाणी तथा रागादिकनो परभावपणे निश्चय करी सम्यग्दृष्टिवाळो अन्तरात्मा थाय छे, (तेज अंतरात्मा कहेवाय छे); अने तेज अंतरात्मा सम्यग्दर्शननी प्राप्तिने अवसरे निर्धार करेला संपूर्ण आत्मस्वरूपनी प्राप्ति थवाथी परमात्मा बने छे, माटे इन्द्रियोना विषयोनो त्याग करवो योग्य छे. कह्युं छे के—

पुरः पुरः स्फुरत्तृष्णामृगतृष्णानुकारिषु ।
इन्द्रियार्थेषु धावन्ति, त्यक्त्वा ज्ञानामृतं जडाः ॥ १ ॥

भावार्थ—" जड पुरुषो ज्ञानरुपी अमृतनो त्याग करीने आगळ आगळ स्फुरणायमान थती भोगपिपासा (विषयतृष्णा) रूपी मृगतृष्णा जेवा रूप रस गंध स्पर्श शब्द लक्षण इन्द्रियोना विषयो तरफ दोडे छे, आतुर थाय छे. " तेने अर्थे अनेक प्रकारनां यत्न, दंभ, व्यापार, मुंडन विगेरे कर्म करे छे.

तत्त्वने नहीं जाणनारा (तत्त्वविकळ) लोको इन्द्रियोना भोगने सुखरूप माने छे, परंतु ते सुख नथी पण भ्रांतिज छे. कह्युं छे के—

त्रारमणंतं भुत्ता, वंता चत्ताय धीरपुरिसेहिं ।
ते भोगा पुण इच्छइ, भोत्तुं तिह्लाउलो जीवो ॥ १ ॥

भावार्थ—" धीर पुरुषोए अनन्तीवार भोगवेला, वमन करेला अने त्यागेला भोगोने तृष्णार्थी आकुलव्याकुल थयेलो जीव फरीफरीथी भोगववाने इच्छे छे."

तेथीज चक्रवर्ती, वासुदेव, मांडलिक राजाओ अने कंडरीक विगेरे अनेक पुरुषो विषयोमां मोह पामवाथी नरकमां दीन अवस्थाने पाम्या छे. घणुं कहेवाथी शुं ! विषयनो जरा पण विश्वास करवो नहीं. अहो ! पूर्व भवे आस्वादन करेला समता सुखनुं स्मरण करीने लवसत्तम देवताओ अनुत्तर विमानना सुखने पण तृण समान गणे छे. इन्द्रादिक पण विषयनो त्याग करवामां असमर्थ होवाथी मुनिओना चरणकमळमां पृथ्वीपर आळोटे छे, माटे अनादिकाळथी अनेकवार भोगवेला विषयोनो त्यागज करवो; तेनो किंचित मात्र पण संग करवो नहीं. पूर्वपरिचित (पूर्वे भोगवेला) विषयनुं स्मरण पण करवुं नहीं. निर्ग्रंथ मुनिजनो तत्त्व जाणवानी इच्छाथी शास्त्रअवलोकनवडेज काळ निर्गमन करे छे; अने 'निर्मळ' निःसंग तथा निष्कलंक एवा सिद्धभावनो अमे क्यारे स्पर्श करशुं ' इत्यादिक ध्यानमांज मग्न रहे छे. "

आ प्रमाणेना बंधु मुनिना उपदेशनां वाक्यो सांभळीने सुकुमारिकाए फरीथी चारित्र ग्रहण कर्युं, अने निर्मळ अंतःकरणथी तेनुं प्रतिपालन करीने अनुक्रमे स्वर्गे गइ.

" धीर पुरुषोने विषे मुख्य एवा ते मुनिए विविध प्रकारना विषयरूपी रज्जुथी बंधाया विनाज भ्रष्ट थयेली पोतानी बेननो शीघ्र उद्धार कर्यो, अने ते पण पापने आलोवीने स्वर्गसुखने पामी. "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ एकविंशतितमस्तंभस्य
नवाधिकत्रिशततमः प्रबंधः ॥ ३०९ ॥

व्याख्यान ३१० मुं.

इन्द्रियोनो जय करवा विषे.

स्यादक्षाणां जयो त्यागात्त्यागोऽत्र परवस्तुषु ।
जनन्यादिष्वभिष्वंगं, स एव निर्जरां श्रयेत् ॥ १.॥

भावार्थ—" इन्द्रियोनो जय त्याग करवाथी थाय छे. त्याग एटले माता विगेरे परवस्तुने विषे अभिष्वंग जे राग तेथी रहित थवुं ते. ते त्यागज निर्जरानो आश्रय करे छे, अर्थात् तेना त्यागथीज निर्जरा थाय छे. " आ प्रसंग उपर सुभानुकुमारनी कथा छे ते आ प्रमाणे—

सुभानुकुमारनी कथा.

आ भरतक्षेत्रने विषे मगध देशमां सुवप्रा नामे पुरी छे, तेमां अरिदमन नामे राजा हतो. तेने धारिणी नामे पट्टराणी हती. तेने देवसमान कांतिवाळो सुभानु नामे कुमार थयो हतो. ते कुमार युवावस्था पाम्यो त्यारे तेने तेना पिताए रूप, लावण्य अने कळावाळी एकसो कन्याओ परणावी. ते स्त्रीओनी साथे विषयसुख भोगवतो भानुकुमार सुखे सुखे दिवसो निर्गमन करतो हतो. एकदा श्री संभवनाथ स्वामी ते नगरीना उद्यानमां समवसर्या. ते वृत्तांत वनपाळे आवीने भानुकुमारने कह्यो के " अनेक केवळी, अनेक विपुलमति, अनेक ऋजुमति, अनेक अवधिज्ञानी, अनेक पूर्वधर, अनेक आचार्य, अनेक उपाध्याय, अनेक तपस्वी, अनेक नवदीक्षित मुनिओ तथा अनेक देवदेवीओथी परिवरेला सर्वज्ञ, सर्वदर्शी अने आकाशमां जेमनी आगळ धर्मचक्र चाले छे एवा श्री संभवनाथ स्वामी आपणा उद्यानमां समवसर्या छे. " ते सांभळी भानुकुमार पोतानी सोए स्त्रीओ सहित मोटी समृद्धिथी वांदवा नीकळ्यो; अने समवसरणमां रहेला प्रभुने वंदना करीने विनयपूर्वक योग्यस्थाने बेठो. ते वखते स्वामीए देशनानो आरंभ कर्यो के-" सर्व धर्मने विषे मुख्य हेतु परभावनो त्याग करवो तेज छे. तेमां स्व-द्रव्य, स्व-क्षेत्र, स्व-काल अने स्व-भाव पणाए करीने स्यादस्ति नामना पहेला

भांगाथी ग्रहण करेलो जे आत्मानो परिणाम ते पोताना आत्माने विषे रहेलो स्वधर्म छे. तेनो समवाय संबंधे करीने अभेद होवाथी ते आत्मधर्म तजवा योग्य नथी; पण अनादि काळथी चाल्या आवता मिथ्यादृष्टिपणाए करीने कुदेवादिकने विषे आसक्ति विगेरे जे अप्रशस्त भाव छे तेना ग्रहणनो त्याग करवो योग्य छे. तेमां नामथी त्याग शब्दना आलाप रूप छे. शास्त्र, यतिधर्म अने जिनपूजा विगेरेमां स्थापन करेलो त्याग ते स्थापना त्याग छे. बाह्यवृत्तिथी इन्द्रियोना अभिलाषनो आहारनो अने उपाधि विगेरेनो जे त्याग करवो ते द्रव्यत्याग छे अने अंतरंग वृत्तिथी राग, द्वेष तथा मिथ्यात्व विगेरे आश्रव परिणतिनो त्याग करवो ते भावत्याग छे.

विष गरल अनुष्ठानवडे करीने जे त्याग ते नैगम, संग्रह ने व्यवहार नये समजवो, कडवा विपाकनी भीतिथी जे त्याग ते ऋजुसूत्र नये जाणवो, तद्धेतु-क्रियापणे त्याग ते शब्द ने समभिरुढ नये समजवो, अने वर्जवाना यत्नवडे सर्वथा वर्जन ते एवंभूत नये समजवुं.[1]" इत्यादि अनेक युक्तिवाळा उपदेशने सांभळीने चारित्रमोहनीय कर्मना क्षयोपशमवडे सर्वविरति ग्रहण करवानी जेनी बुद्धि थइ छे एवो भानुकुमार प्रभुना चरणकमळमां वंदना करीने बोल्यो के "शरणरहित प्राणीओने शरण आपवामां सार्थवाह समान, अने भवसमुद्रथी तारनार एवा हे प्रभु ! हे स्वामी ! मने सर्वविरति सामायिकनो उपदेश करो (आपो) के जेथी विषय कषायादिकनो त्याग वृद्धि पामे." ते सांभळीने भगवाने तेने सामायिक चारित्र आप्युं. तेणे महाव्रत ग्रहण पूर्वक साधुपणुं अंगीकार कर्युं. तेज वखते तेनुं आयुष्य पूर्ण थवाथी ते कुमार मृत्यु पामीने स्वर्गे गयो. तेवामां ते कुमारनो पिता परिवार सहित प्रभुने वांदवा आव्यो. त्यां पोताना पुत्रने मरेलो जोइने तेने अति खेद थयो. तेनी माता पण पुत्रवियोगथी विलाप करती रुदन करवा लागी. ते वखते भानुकुमारनो जीव तत्काळ देवपणुं पामीने प्रभुनी पासे आव्यो. त्यां पोताना मातापिताने विलाप करतां जोइने ते देवे तेमने कह्युं के "तमने एवुं शुं दुःख पड्युं छे के परम सुखदायक एवा श्री जिनेश्वरना चरणकमळने पामीने पण तमे रुदन करो छो?" ते सांभळीने राजा तथा राणी बोल्यां के "अमारो अत्यंत प्रिय पुत्र मृत्यु पाम्यो, तेनो अमारे वियोग थयो, ते दुःख अमाराथी सहन थतुं

१ आ सात नये त्याग बराबर गुरुगमथी समजवा योग्य छे.

नथी." देव बोल्यो के " हे राजा! ते पुत्रनुं शरीर तमने प्रिय छे के तेनो जीव प्रिय छे ? जो तेनो जीव प्रिय होय तो ते हुं छुं, माटे मारापर प्रीति करो, अने जो तेनुं शरीर प्रिय होय तो आ तेना पडेला शरीरपर प्रीति करो. हे माता ! तमे केम वारंवार विलाप करो छो? तमारो पुत्र कये ठेकाणे—शरीरमां के जीवमां क्यां रहेलो छे? तेनुं शरीर अने जीव ए बन्ने तमारी पासेज छे, माटे रुदन करवुं युक्त नथी." ते सांभळीने राजा बोल्यो के " तारे विषे अथवा आ पडेला शरीरने विषे एके उपर अमने प्रीति थती नथी." देव बोल्यो के " त्यारे तो स्वार्थज सर्व प्राणीने इष्ट छे, अने परमार्थ कोइने इष्ट नथी एवुं थयुं. आ जगतना सर्व पदार्थ अनित्य छे, असत्य एवो सर्व संबंध अवास्तविक छे. तेमां तमे केम मोह पामो छो? सर्व लौकिक संबंध भ्रांतिरूपज छे हे मातपिता ! विरतिरहित प्राणीओनो संबंध अनादि काळथी होय छे; पण ते अध्रुव छे, माटे हवे शाश्वत रहेनारा अने शुद्ध एवा शील शम दमादि बन्धुओनो संबंध करवा योग्य छे. मारो ने तमारो संबंध पण अनादि छे; परंतु ते अनित्य होवाथी हवे हुं नित्य एवा शमदमादि बंधुओ साथे संबंध जोडवा इच्छुं छुं—तेनो आश्रय करुं छुं. एक समता रूपी कांतानेज हुं अंगीकार करुं छुं, अने समान क्रियावाळी ज्ञातिने हुं आदरुं छुं. बीजा सर्व बाह्य वर्गनो (बाह्य कुटुंबनो) त्याग करीने हुं धर्मसंन्यासी थयो छुं. उदयिक संपदाओनो त्याग करवाथीज क्षयोपशमिक स्वसंपदा प्राप्त थाय छे, अने त्यार पछी क्षायिक भावनी रत्नत्रयरूप संपदा प्राप्त थाय छे." इत्यादि देवना करेला उपदेशथी राजा पोताना समग्र कुटुंब सहित प्रतिबोध पाम्यो; एटले तेमणे श्रीमान् संभवनाथ स्वामी पासे दीक्षा ग्रहण करी अने महानंदपदनी साधनामां प्रवर्त्या. अनुक्रमे महानंदपद प्राप्त कर्युं.

" पोतानो आत्मधर्म तिरोहित थयो होय ते प्रशस्त योगना सेवनथी सम्यक् प्रकारे आविर्भावने पामे छे-प्रगट थाय छे, माटे सुभानुकुमारनी जेम परवस्तुपरना रागनो तत्काळ त्याग करवो, जेथी प्रशस्त योग प्राप्त थाय."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ एकविंशतितमस्तंभस्य
दशाधिकत्रिशततमः प्रबंधः ॥ ३१० ॥

व्याख्यान ३११ मुं.

ज्ञानयुक्त क्रिया फळदायी छे.

जिताक्षः साम्यशुद्धात्मा, तत्त्वबोधी क्रियापरः ।
विश्वांभोधेः स्वयं तीर्णः, अन्यानुत्तारणे क्षमः ॥ १ ॥

भावार्थ—" साम्यपणाए करीने जेनो आत्मा शुद्ध छे, जेणे इन्द्रियोनो जय करेलो छे, जे तत्त्वने जाणे छे अने जे शुद्ध क्रियामां तत्पर छे, ते प्राणी पोते संसारसागरने तरे छे अने बीजाने तारवा समर्थ थाय छे."

तत्त्वबोधी एटले यथार्थ स्वरूपने जाणनार, क्रियापर एटले आत्मसाधनना कारणने अनुसरनारी योगप्रवृत्तिरूप अथवा आत्मगुणने अनुसरनारी आत्मवीर्यनी प्रवृत्तिरूप एवी जे क्रिया तेमां तत्पर थयेलो. जे कराय ते क्रिया कहीए. ते क्रिया साधक अने बाधक एवा भेदे करीने बे प्रकारनी छे. तेमां आ अनादि संसारमां अशुद्ध एवी काया विगेरेना व्यापारथी उत्पन्न थयेली जे क्रिया ते बाधक क्रिया कहेवाय छे, अने शुद्ध एवी समिति गुप्ति विगेरेथी उत्पन्न थयेली कायादिकनी क्रिया ते साधक क्रिया कहेवाय छे. आ शुद्ध क्रिया अशुद्ध क्रियाने दूर करे छे. संसारनो नाश करवा सारु संवर अने निर्जरारूप क्रिया करवी ते भाव क्रिया कहेवाय छे. बीजी नाम क्रिया, स्थापना क्रिया, अने द्रव्य क्रिया पूर्वनी जेम जाणी लेवी.

नैगम नय क्रिया करवाना संकल्पनेज क्रिया कहे छे. संग्रह नय सर्वे संसारी जीवोने सक्रिय कहे छे. व्यवहार नय शरीर पर्याप्ति पूर्ण थया पछीनी क्रियाने क्रिया कहे छे. ऋजुसूत्र नय कार्यनुं साधन करवा माटे योगवीर्यनी प्रवृत्तिना परिणाम रूप क्रियाने क्रिया कहे छे. शब्द नय आत्म वीर्यनी स्फुरणारूप क्रियाने क्रिया कहे छे. समभिरुढ नय आत्मगुणनुं साधन करवा माटे कराती सकळ कर्त्तव्य व्यापाररूप क्रियाने क्रिया कहे छे; अने एवंभूत नय आत्मतत्त्वना एकत्वपणारूप वीर्यनी तीक्ष्णताने उत्पन्न करवामां एकांत सहायकारक गुणपरिणमन रूप क्रियानेज क्रिया कहे छे. अहीं स्वरूपनुं ग्रहण अने परभावनो त्याग तद्रूप क्रिया

ज मोक्षने साधनारी छे. माटे ज्ञानतत्त्ववडे करीने आत्मतत्त्व साधवा माटे सम्यक् क्रिया करवी जोइए. कह्युं छे के—

" ज्ञानाचारादयोऽपीष्टाः शुद्धस्वस्वपदावधि " । पोतपोतानुं शुद्ध स्थान प्राप्त थाय त्यां सुधी ज्ञानाचार विगेरे पण इष्ट मानेला छे. आनुं तात्पर्य ए छे के—क्षायिक सम्यक्त्व प्राप्त थाय त्यां सुधी निरंतर निःशंकता विगेरे आठ दर्शनाचारनुं सेवन करवुं. केवळज्ञान प्राप्त थाय त्यांसुधी काळ, विनय विगेरे आठ ज्ञानाचारनुं निरंतर सेवन करवुं. यथाख्यात चारित्र प्राप्त थाय त्यां सुधी समिति गुप्ति रूप आठ चारित्राचारनुं सेवन करवुं. शुक्लध्यान प्राप्त थाय त्यां सुधी तपाचारनुं सेवन करवुं अने सर्व संवर प्राप्त थाय त्यां सुधी वीर्याचारनुं सेवन करवुं. आ पांच आचारनुं पालन कर्या विना मोक्षनी प्राप्ति थती नथी. माटे ज्ञानपूर्वक क्रियामां तत्पर थयेलो, समताए करीने शुद्ध आत्मावाळो अने जीतेन्द्रिय पुरुष भवसमुद्रथी पोते तरी जाय छे, अने पोताने शरणे आवेला बीजाओने पण उपदेश आपीने तारवा समर्थ थाय छे. ते आत्मारामी कहेवाय छे.

ज्ञान क्रियायुक्त होय तोज हितने माटे थाय छे, एकलुं ज्ञान कांइ पण हित करी शकतुं नथी. कह्युं छे के—

क्रियाविरहितं हन्त, ज्ञानमात्रमनर्थकम् ।
गतिं विनापथज्ञोऽपि, नाप्नोति पुरमीप्सितम् ॥ १ ॥

भावार्थ—" क्रियारहित एवुं मात्र जाणवारूप संवेदन ज्ञान के जे वाणीना व्यापाररूप अने मनना विकल्परूप छे ते अनर्थक छे, वंध्य छे, एटले मुक्तिने साधनारुं नथी; केमके (पुरना) मार्गने जाणनारो माणस पण गतिरूप क्रिया कर्या विना कदी पण इच्छित पुरने पामतो नथी. "

तेज वातने दृढ करवा माटे कहे छे—

स्वानुकूलां क्रियां काले, ज्ञानपूर्णोऽप्यपेक्षते ।
प्रदीपः स्वप्रकाशोऽपि, तैलपूर्त्यादिकं यथा ॥ २ ॥

भावार्थ—" तत्त्वबोधनी प्राप्तिरूप स्पर्शज्ञाने करीने पूर्ण छतां पण कार्यसाधनसमये स्वकार्यने अनुकूळ एवी क्रियानी अपेक्षा राखे छे; ते माटेज मुनि

महाराज आवश्यकादि क्रिया यथोक्त काळे करे छे. केमके दीवो पोते प्रकाशमान छतां पण तेल पूरवा विगेरेनी अपेक्षा राखे छे. अर्थात् स्वयंप्रकाशी छतां तेल, वाट, पवनथी रक्षण विगेरेनी अपेक्षा रहे छे

क्रिया करवानुं फळ आ प्रमाणे कह्युं छे के—

गुणवद्बहुमानाद्यैर्नित्यस्मृत्या च सत्क्रिया ।
जातं न पातयेद्भावमजातं जनयेदपि ॥ १ ॥

भावार्थ—" संयमादिक गुणवाळानुं बहुमान करवावडे, आदि शब्दे करीने पापनी दुगंच्छा (निंदा) करवावडे अने अतिचारनी आलोचनादि करवा वडे, वळी पूर्वे ग्रहण करेला व्रतनुं निरंतर स्मरण करवावडे थयेली जे सत् क्रिया, अर्थात् ते ते गुणयुक्त थती शुभ क्रिया ते उत्पन्न थयेला भावनो नाश थवा देती नथी, अने नहीं उत्पन्न थयेला शुक्लध्यानादिक भावने उत्पन्न करे छे. "

श्रेणिक राजाने तथा कृष्ण वासुदेव विगेरेने गुणीना बहुमानथी, मृगावतीने पापना पश्चात्तापथी, अतिमुक्त मुनिने अतिचारनी आलोचना करवाथी अने रतिसुंदरीने धर्ममां स्थिरता राखवाथी–इत्यादि अनेक कारणोथी अनेक भव्यजनोने परमानंदपदनी प्राप्ति थइ छे. अहीं प्रसंगोचित रतिसुंदरीनी कथा छे ते आ प्रमाणे—

रतिसुंदरीनी कथा.

साकेतपुरमां जीतशत्रु राजाने रतिसुंदरी नामे पुत्री हती. तेज नगरमां श्रेष्ठीनी पुत्री ऋद्धिसुंदरी, मंत्रीनी पुत्री बुद्धिसुंदरी अने पुरोहितनी पुत्री गुणसुंदरी नामे हती. ए चार सखीओ सुंदर रूपवाळी हती, श्रावक धर्म पाळनारी सती परस्पर प्रेमवाळी हती अने देवगुरुना स्थळमां (देरासरे ने उपाश्रयमां) एकठी मळीने धर्मगोष्ठी करती हती. तेओए धर्मक्रिया करतां परपुरुषनो नियम लीधेलो हतो.

हवे नंदपुरनो राजा चार सखीओ पैकी राजपुत्री रतिसुंदरीने परण्यो. तेनुं रूप अने लावण्य सर्वत्र श्लाघा पाम्युं; तेथी हस्तिनापुरना राजाए एक दिवस दूत मोकलीने रतिसुंदरीनी मागणी करी. ते सांभळीने नंदपुरना राजाए दूतने कह्युं के " एक सामान्य माणस पण पोतानी पत्नीने आपतो नथी तो हुं

शी रीते मारी पत्नीने आपीश ? माटे तुं तारे स्थाने पाछो चाल्यो जा." ते सांभळीने दूते जइने पोताना राजाने सर्व वात कही, तेथी राजाए नंदपुरपर चडाइ करी. बन्ने राजानुं युद्ध थतां हस्तिनापुरना राजानो जय थयो. ते रतिसुंदरीने बळात्कारथी लइने पोताना पुरमां आव्यो. पछी तेणे रतिसुंदरीनी प्रार्थना करी, त्यारे ते बोली के " मारे चार मास सुधी शीलव्रत पाळवानो नियम छे." ते सांभळीने राजाए विचार्युं के "चार मास पछी पण ते मारेज आधीन छे. क्यां जवानी छे ? " एम विचारी दिवसो निर्गमन करवा लाग्या. रतिसुंदरी हमेशां तेने प्रतिबोध आपवा लागी, पण राजानो राग तेना परथी जरा पण ओछो थयो नहीं. एकदा राजा बोल्यो के " हे भद्रे ! तुं हमेशां मने उपदेश आपे छे, तुं तपवडे अति कृश थइ गइ छे, तेमज शरीरपरथी सर्व शृंगार काढी नांख्या छे, तोपण मारुं मन तारामां अति आसक्त छे. तारां बीजां अंगना तो हुं शुं वखाण करुं ? परंतु एक तारा नेत्रनुं पण वर्णन हुं करी शकतो नथी." ते सांभळीने रतिसुंदरीए पोतानां नेत्रोनेज शीललोपनुं कारण जाणी राजानी समक्ष तत्काळ छरीवडे बन्ने नेत्रो काढीने राजाना हाथमां आप्यां. ते जोइ राजाने अत्यंत खेद थयो. तेने रतिसुंदरीए सारी रीते धर्मोपदेश आप्यो. राजाए प्रतिबोध पामीने तेने खमावी; अने मारे माटे आ स्त्रीए पोतानां नेत्रो काढी नांख्यां एम जाणीने मनमां अति दुःखी थयो. राजानुं दुःख निवारण करवा माटे रतिसुंदरीए देवतानुं आराधन कर्युं. तत्काळ देवताए रतिसुंदरीने नवां, नेत्र आप्यां. पछी राजाना आग्रहथी केटलाक दिवस रोकाइने पछी रतिसुंदरीए दीक्षा ग्रहण करी.

बीजी श्रेष्ठीनी पुत्री जे ऋद्धिसुंदरी नामे हती, ते ताम्रलिप्ती नगरीमां श्रीवणिक नामना धनाढ्यने परणी हती. ते वणिक तेने साथे लइने वेपार माटे समुद्ररस्ते चाल्यो. मार्गमां वहाण भांगवाथी ते दंपती एक पाटियानुं अवलंबन करीने तरतां तरतां कोइ एक द्विपे नीकळ्या. त्यां तेमणे एक ध्वजा उंची करी राखी. ते जोइने कोइ बीजा वणिके पोतानुं वहाण ते द्विपे लइ जईने ते बन्नेने तेमां लइ लीधा. ते बीजो वणिक ऋद्धिसुंदरीने जोइने तेनापर मोह पाम्यो, तेथी ऋद्धिसुंदरीना पतिने तेणे गुप्त रीते समुद्रमां नांखी दीधो. पछी तेणे ऋद्धिसुंदरीनी प्रार्थना करी. त्यारे तेणे तेने समजाववा माटे घणो उपदेश कर्यो, तोपण ते वणिकनो मोह ओछो थयो नहीं. ते बोल्यो के "तारे माटे तो तारा पतिने में समु-

द्रमां नाखी दीधो छे." ए वात जाणीने तेणे काळ निर्गमन करवा माटे कांइक मिष बताव्युं. आगळ चालतां ते वहाण पण भांग्युं. ऋद्धिसुंदरी दैवयोगे मळेला एक पाटियाथी तरीने सोपारक नामना नगरमां आवी. तेज नगरमां तेनो पति पण पाटियाथी तरीने प्रथमथी आवेलो हतो. तेनी साथे तेनो मेळाप थयो. पेलो बीजो वणिक पण पाटियुं मळवाथी तरीने तेज नगरमां आव्यो. तेने पोताना पापने लीधे कुष्ठनो व्याधि थयो. एकदा ते पेला दंपतीनी नजरे पड्यो; एटले तेने व्याधिथी पीडायेलो जोइने तेनो पूर्व उपकार स्मरण करी ते दंपतीए औषध विगेरेथी तेने नीरोगी कर्यो. ते वणिके ते दंपती पासे पोताना पापनी क्षमा मागी; त्यारे ते दंपतीए तेने उपदेश करीने धर्म पमाड्यो. पछी ते बन्ने वणिको व्यापार करी धन उपार्जन करीने पोतपोताना नगरमां गया. पछी केटलाक काळ सुखमां निर्गमन करीने ऋद्धिसुंदरीए दीक्षा लइ आत्मसाधन कर्युं.

आ बे सखीओनी कथा कही. हवे बीजी बे सखीनी कथा आगळ कहेवामां आवशे.

"प्रशांत चित्तवडे इन्द्रियोना जयपूर्वक करेली क्रियाज सफळ थाय छे, तेथी रतिसुंदरीनी जेम कष्ट प्राप्त थाय छतां पण सुशील स्त्रीओ पोताना कर्तव्यने तजती नथी."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ एकविंशतितमस्तंभस्य
एकादशाधिकत्रिशततमः प्रबंधः ॥ ३११ ॥

व्याख्यान ३१२ मुं.

तृप्त ने अतृप्तनुं स्वरूप.

विषयोर्मिविषोद्‍गारः, स्यादतृप्तस्य पुद्‍गलैः ।
ज्ञानतृप्तस्य तु ध्यानसुधोद्‍गारपरंपरा ॥ १ ॥

भावार्थ—"पौद्गलिक सुखथी अतृप्त एवा मनुष्यने पुद्गलोए करीने विषयनी ऊर्मिरूपी विषना उद्गार प्राप्त थाय छे (ओडकार आवे छे), अने ज्ञानथी तृप्त थयेलाने तो ध्यानरूपी अमृतना उद्गारनी परंपरा प्राप्त थाय छे."

आत्मस्वरूपना स्वादथी रहित-जेणे तेनो स्वाद लीधो नथी एवा पुरुषने अंगराग, स्त्रीओनुं आलिंगन विगेरे पुद्गलोए करीने इन्द्रियविलास रूप विषना उद्गार प्राप्त थाय छे; अने आत्मतत्त्वना अवबोधथी तृप्त एटले पूर्ण थयेला पुरुषने तो शुभध्यान रूपी अमृतना उद्गारनी परंपरा प्राप्त थाय छे. आ प्रसंग उपर बुद्धिसुंदरीनी कथा छे ते आ प्रमाणे—

बुद्धिसुंदरीनी कथा.

त्रीजी जे बुद्धिसुंदरी नामे प्रधानपुत्री हती ते अत्यंत रूपवती हती. तेने एकदा राजाए जोइ, तेथी तेनापर मोह पामीने दूती मोकली तेनी प्रार्थना करी; पण बुद्धिसुंदरी अन्य नरने इच्छती नहोती, एटले राजानी मागणी तेणे कबूल करी नहीं, तेथी क्रोध पामेला राजाए कांइक प्रपंच करीने प्रधानने तेना कुटुंब सहित केद कर्यो. पछी राजाए प्रधानने कह्युं के " ज्यारे तुं मारी आज्ञा कबूल करीश त्यारे तने हुं छोडीश." प्रधाने कह्युं के " हे स्वामी ! आप आज्ञा करो, ते मारे प्रमाण छे." ते सांभळीने राजाए सर्वने छोडी दीधा ने बुद्धिसुंदरीने अन्तःपुरमां राखी तेनी प्रार्थना करी. बुद्धिसुंदरी बीलकुल राजाने इच्छती नहोती. तेणे राजाने उपदेश आप्यो के—

> संसारे स्वप्नवन्मिथ्या, तृप्तिः स्यादभिमानिकी ।
> तथ्या तु भ्रान्तिशून्यस्य, स्वात्मवीर्यविपाककृत् ॥ १ ॥

भावार्थ—आ संसारमां अभिमानथी उत्पन्न थयेली तृप्ति स्वप्न जेवी मिथ्या छे, पण भ्रान्तिरहित पुरुषने आत्मवीर्यनो विपाक करनारी जे तृप्ति तेज सत्य तृप्ति छे.

विस्तरार्थ—हे राजा! द्रव्यथी चार गतिरूप अने भावथी मिथ्यात्वादिक भाववाळा आ संसारमां " में छळ-बळ करीने आ कार्य कर्युं, मारा जेवो जगतमां कोइ नथी." एवा अभिमानथी उत्पन्न थयेली तृप्ति स्वप्नी जेम मिथ्या एटले मात्र कल्पनारूपज छे, केमके ते तृप्ति विनश्वर छे, परवस्तु छे तथा आत्म-

सत्तानो रोध करनार आठ प्रकारना कर्मना बंधमां कारणभूत एवा रागद्वेषने उत्पन्न करनार छे. माटे ते मृगतृष्णा जेवी तृप्ति सुखनो हेतु नथी. परंतु भ्रान्ति रहित एटले सम्यग्ज्ञाने करीने सहित पुरुषने स्वभाव ने विभावना अनुभववाळी जे तृप्ति छे तेज सत्य अने सुखनो हेतु छे. केमके ते तृप्ति आत्मवीर्यनो विपाक जे पुष्टि तेने करनार छे.

सुखीनो विषयातृप्ताः, नेन्द्रोपेन्द्रादयोऽप्यहो ।
भिक्षुरेकः सुखी लोके, ज्ञानतृप्तो निरंजनः ॥ २ ॥

शब्दार्थ—" अहो ! आ जगतमां विषयोथी अतृप्त एवा इन्द्र, उपेन्द्र विगेरे सुखी नथी; मात्र ज्ञानथी तृप्त थयेला निरंजन एवा एक भिक्षुज सुखी छे. "

विस्तरार्थ—" अहो ! इंद्र ते देवोना स्वामी अने उपेंद्र ते चक्रवर्त्ती वासुदेव विगेरे ते कोइ आ जगतमां सुखी नथी; केमके तेओ मनोहर इन्द्रियोना विषयोने सेवता छतां निरंतर अतृप्त रहे छे. अनेक वनिताओना विलासथी, षड्रस भोजनना ग्रासथी, सुगन्धी कुसुमना वासथी अने रहेवाना सुंदर आवासथी, तेमज मृदु शब्दना श्रवणथी अने सुंदर स्वरूपोना निरिक्षणथी असंख्य काळ सुधी इंद्रियोना विषयोनो अनुभव करतां छतां पण तेओ तृप्त थता नथी; परंतु ते तृप्त थायज केम ? कारणके सर्व विषयो तृप्तिना हेतुज नथी. मात्र तेमां सुखादिकनो असदारोपज करेलो छे. आ चौद रज्जु प्रमाण लोकमां मात्र एक भिक्षुज के जे आहारादिकमां लुब्ध नथी, संयमयात्रा माटेज तीक्ष्ण शीलनुं पालन करे छे, अने सर्व परिग्रहनो त्याग करे छे, तेज सुखी छे; केमके तेओ ज्ञान जे आत्मस्वरूपनो अवबोध तेना आस्वादनवडे तृप्त थयेल छे. वळी ते रागादिक अंजननी श्यामता रहित छे, अने आत्मधर्मनाज भोक्ता छे.

आ प्रमाणे अनेक प्रकारे उपदेश आप्यो, तोपण राजा बोध पाम्यो नहीं, त्यारे ते बुद्धिसुंदरीए पोताना जेवीज एक पोली पुतळी करावीने तेमां मदिरा भरी. पछी घणे दिवसे ज्यारे राजा आसक्तिनां वचनोथी तेने बोलाववा लाग्यो, त्यारे बुद्धिसुंदरीए पाछळथी गुप्त रीते ते पुतळीनुं मुख उघाडयुं. तरतज तेमांथी अत्यंत दुर्गन्ध नीकळ्यो. ते जोइ राजा बोल्यो के " शुं आ शरीर आवुं

दुर्गन्धवाळुं छे ? " तोपण राजानो मोह तेनापरथी ओछो थयो नहीं. त्यारे बुद्धिसुंदरीए महेलनी उंची बारीएथी पोतानो देह पडतो मूक्यो, तेथी ते मूर्छा पामी. ते जोइने राजा अति खेद पामी तेनी आसनावासना करवा लाग्यो. अनुक्रमे बुद्धिसुंदरी सावध थइ, एटले राजाए परस्त्रीगमननो नियम कर्यो. केटलेक काळे बुद्धिसुंदरी दीक्षा लइ आत्मज्ञानवडे थती सत्य तृप्तिने प्राप्त करी मोक्षपद पामी.

" संपूर्ण तृप्तिथीज शील विगेरे सर्व सद्गुणो शुभ आत्मामां शोभाने प्राप्त थाय छे, तेथी बुद्धिसुंदरीनी जेम तेनी प्रशंसा आखा जगतमां थाय छे, अने छेवट ते मोक्षपदने पामे छे. "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ एकविंशतितमस्तंभस्य द्वादशाधिकत्रिशततमः प्रबंधः ॥ ३१२ ॥

व्याख्यान ३१३ मुं.

लेप्य अने अलेप्य विषे.

संसारे निवसन् स्वार्थ-सज्जः कज्जलवेश्मनि ।
लिप्यते निखिलो लोको, ज्ञानसिद्धो न लिप्यते ॥१॥

भावार्थ—" स्वार्थमां आसक्त थयेलो समग्र लोक काजळना गृह समान आ संसारमां वसतो सतो (कर्मवडे) लेपाय छे, पण ज्ञानथी सिद्ध थयेलो मनुष्य लेपातो नथी. "

रागादिक पापस्थानक रूप काजळना गृहमां अने ते रागादिकना निमित्तभूत धन स्वजनादिकने ग्रहण करवारूप संसारमां वसवाथी अहंकारादिक स्वार्थमां सज्ज (तत्पर) थयेलो माणस लेपाय छे, पण हेय अने उपादेयनी परीक्षाए करीने वस्तुस्वरूपने जाणनारो ज्ञानी लेपातो नथी. आ संबंधमां गुणसुंदरीनी कथा छे ते आ प्रमाणे—

गुणसुंदरीनी कथा.

चोथी पुरोहितनी पुत्री जे गुणसुंदरी हती. तेने श्रावस्ती नगरीना राजाना पुरोहितनो पुत्र परण्यो हतो. ते गुणसुंदरी उपर साकेतपुरनो रहेवासी कोइ ब्राह्मण मोह पाम्यो हतो; तेथी ते ब्राह्मणे भिल्लनी पल्लीमां जइने पल्लीपतिने कह्युं के " तमे श्रावस्ती नगरीमां लूंट करो, हुं तमने मदद करीश. तेमां जेटलुं धन आवे ते सर्व तमारे राखवुं अने एक गुणसुंदरी मने आपवी. " एम कहीने ते ब्राह्मण पल्लीपतिने तेना अनुचरो सहित श्रावस्ती लइ गयो. त्यां लूंट करी, तेमांथी ते ब्राह्मण गुणसुंदरीने लइने कोइक नगरमां गयो. त्यां तेणे गुणसुंदरीने पोतानी स्त्री थवा कह्युं. त्यारे ते बोली के " हाल मारे नियम छे. " एम कहीने केटलाक दिवसो निर्गमन कर्या. पछी औषधना प्रयोगथी ते तद्दन अशुचि शरीर राखवा लागी. तेनुं तेवुं दुर्गंधयुक्त शरीर जोइने ब्राह्मणने वैराग्य उत्पन्न थयो. ते जाणीने गुणसुंदरीए तेने कह्युं के " मने मारा पिताने घेर लइ जा." त्यारे ते ब्राह्मणे तेने तेना पिताने घेर पहोंचाडी. एकदा ते ब्राह्मणने सर्प डस्यो. ते वखते गुणसुंदरीए तेने सज्ज कर्यो. पछी तेने गुरु पासे लइ जइने धर्मदेशना संभळावी. गुरु बोल्या के " निर्लेप गुणथी युक्त एवो जीव अनेक गुणोने पामे छे. चैतन्यनुं समग्र परभावना संयोगना अभावे करीने स्वभावमां अवस्थित रहेवापणुं ते निर्लेप गुण कहेवाय छे. कह्युं छे के—

> लिप्यते पुद्गलस्कन्धो, न लिप्ये पुद्गलैरहम् ।
> चित्रैर्व्योमाञ्जनैनैव, ध्यायन्निति न लिप्यते ॥ १ ॥

अर्थ—" पुद्गलोथी पुद्गल स्कंधो लेपाय छे, हुं लेपातो नथी—जेम विचित्र प्रकारना अंजनोवडे पण आकाश लेपातुं नथी तेम. आ प्रमाणे ध्यातो सतो प्राणी (कर्मथी) लेपातो नथी. "

भावार्थ—परस्पर एकठा मळवाथी आश्लेष अने संक्रमादिवडे पुद्गलना स्कन्धो लेपाय छे, एटले अन्य पुद्गलोथी उपचयने पामे छे; परंतु हुं निर्मळ चित् स्वरूप आत्मा पुद्गलना आश्लेषवाळो नथी. वास्तविक रीते जीवने अने पुद्गलने तादात्म्य संबंध छेज नहीं, मात्र संयोग संबंध छे, ते पण उपाधिजन्य छे.

जेम आकाश विचित्र अंजनथी लेप्या छतां पण लेपातुं नथी, तेम अमूर्त आत्मस्वभाववाळो हुं एक क्षेत्रमां रहेला पुद्गलोथी पण लेपातो नथी. आ प्रमाणे ध्यान करतो जीव कदापि लेपातो नथी. "

जे आत्मस्वभावने जाणनार आत्मा आत्मवीर्यनी शक्तिने आत्मामां वापरे छे, ते नवां कर्मोथी लेपातो नथी; केमके ज्यांसुधी आत्मशक्ति परानुयायिनी होय छे त्यांसुधी आश्रव थाय छे, अने ज्यारे आत्मशक्ति स्वरूपानुयायिनी थाय छे त्यारे संवर थाय छे. कह्युं छे के—

तपःश्रुतादिना मत्तः, क्रियावानपि लिप्यते ।
भावनाज्ञानसंपन्नो, निःक्रियोऽपि न लिप्यते ॥ २ ॥

भावार्थ—" तप अने श्रुतादिकथी मत्त एवो मनुष्य क्रियावान होय तोपण ते लेपाय छे. अने भावनाज्ञानथी युक्त क्रिया न करे तोपण ते लेपातो नथी. "

जिनकल्पी साधु विगेरेना जेवी क्रियानो अभ्यासी छतां पण तप अने श्रुतादिकनो अभिमानी होय छे तो ते नवां कर्म ग्रहण करवावडे लेपाय छे; केमके आहारादिकनी लालचथी धर्मना अभ्यासमां जे प्रवृत्ति करवी ते धर्म नथी, तेमां शुभ भावनानी अपेक्षा छे. तेथीज तेवा शुभ भावनाज्ञानथी संपन्न मनुष्य क्रिया न करे तोपण कर्मथी लेपातो नथी. कह्युं छे के—

न कम्मुणा कम्म खवंति वाला, अकम्मुणा कम्म खवंति वीरा ।
मेहाविणो लोभमयावतीता, संतोसिणो नो पकरंति पावं ॥ १ ॥

भावार्थ—" अज्ञानी माणसो कर्म करीने (शुभ क्रिया करवावडे करीने पण) कर्मने खपावता नथी. वीर पुरुषो कर्म (शुभ क्रिया) नहीं कर्या छतां पण कर्मने खपावे छे. बुद्धिवाळा माणसो लोभ ने मदथी रहित होय छे, तेवा संतोषी पापकर्म करताज नथी. "

जहा कुम्मो सअंगाइं, सए देहे समाहरे ।
एवं पावाइ मेहावी, अज्झप्पेण समाहरे ॥ २ ॥

भावार्थ—" जेम काचबो पोताना अंगोने पोताना देहमांज संकोची ले छे, तेम बुद्धिशाळी माणसो शुभ अध्यासवडेज पापनो संहार करे छे. "

आ प्रमाणे गुरुए धर्मोपदेश आप्यो, ते सांभळीने ते ब्राह्मणे प्रतिबोध पामी परस्त्रीगमनना निषधनो नियम लीधो. गुणसुंदरी पोताना रूपने अने सौन्दर्यने कृश करवा माटे चारित्र लइ तप करवा लागी. ते अनुक्रमे स्वर्गसुखने पामी.

आ प्रमाणे पूर्वे वर्णन करेली रतिसुंदरी विगेरे चारे सखीओ स्वर्गे गइ. त्यांथी च्यवीने चंपानगरीमां चार जूदा जूदा श्रीमंत गृहस्थनी पुत्रीओ थइ. ते चारे विनयंधर नामना श्रेष्ठीपुत्रनी साथे परणी. एकदा राजाए ते चारेने समान स्वरूपवाळी जोइ. जाणे एकज माताथी उत्पन्न थयेली होय तेवी समान लावण्यवाळी जोइने तेनापर राजा मोहित थयो; तेथी राजाए विनयंधर श्रेष्ठीनी साथे कपटमैत्री करी. विनयंधर राजानो मानीतो थवाथी राजाना अन्तःपुरमां पण स्वेच्छाए गमनागमन करवा लाग्यो. एकदा राजाए विनयंधरना हाथथी नीचेनी गाथा कागळपर लखावी.

एसच्छेर विचक्खणि, अज्ज उ भच्चस्स तुह विओअंमि ।
सा रयणी चउमासा, जामसहस्सं च वोलीणा ॥ १ ॥

भावार्थ—" हे विचक्षण स्त्री ! आ आश्चर्य छे के आजे आ भृत्यने तारा वियोगथी चार प्रहरवाळी रात्री पण हजार प्रहर जेटली लांबी थइ. "

आ गाथा लखावीने राजाए पोतानी पासे राखी. केटलाक दिवसो गया पछी विनयंधर तो ते वात पण भूली गयो. पछी राजाए ते गाथा सभामां बतावीने कह्युं के " आ गाथा विनयंधरे मारा अंतःपुरमां मोकली छे. " आ प्रमाणे ते श्रेष्ठीनी चार स्त्रीओने ग्रहण करवा माटे राजाए तेनापर खोटुं कलंक मूकी तेने कारागृहमां नांख्यो, अने तेनी चारे स्त्रीओने पकडी लावीने अंतःपुरमां राखी. त्यां ते चारे स्त्रीओ बे भवमां पाळेला शीलव्रतना प्रभावथी तथा पतिव्रतनो लोप न करवाथी अत्यंत कद्रुपी थइ गइ. ते जोइने राजाए भय पामी श्रेष्ठीने छोडी दीधो तथा ते स्त्रीओने मुक्त करी. ते स्त्रीओनो शीलप्रभाव पृथ्वीपर विस्तार पाम्यो.

"ते चारे स्त्रीओना अंग उपर कदापि कुशीलनो लेश पण स्पर्श करवा पाम्यो नहीं; अने आ लोकना अनेक प्रकारनां भोगसुखो प्राप्त थया छतां पण तेओ तेमां लेपाइ नहीं, तेथी शुद्ध कर्म करीने स्वर्गसुखने पामी."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ एकविंशतितमस्तंभस्य त्रयोदशाधिकत्रिशततमः प्रबंधः ॥ ३१३ ॥

व्याख्यान ३१४ मुं.

मंत्रीपणानी निंदा विषे.

ध्यायत्यशुभकर्माणि, प्रत्यहं राष्ट्रचिन्तया ।
अनेकपापपाथोधिं, मंत्रित्वं नाद्रियेत् सुधीः ॥ १ ॥

भावार्थ—"निरंतर देशना रक्षणनी चिंताथी मंत्रीने अशुभ कर्मोनुं ध्यान करवुं पडे छे, माटे एवा अनेक प्रकारनां पापना समुद्र समान प्रधानपदने डाह्या माणसे आदरवुं (स्वीकारवुं) नहीं." आ प्रसंग उपर शकटाल मंत्रीनी कथा छे ते नीचे प्रमाणे—

शकटाल मंत्रीनी कथा.

पाटलिपुर नगरमां कोणिकना पुत्र उदायी राजाना वंशमां नंद नामे राजा थयो. तेने शकटाल नामे मंत्री हतो. ते मंत्रीने लक्ष्मीवती नामनी पत्नीथी स्थूलभद्र अने श्रीयक नामना बे पुत्रो थया हता. ते नगरमां चातुर्यलक्ष्मी अने स्वरूपलक्ष्मीना भंडार जेवी कोशा नामनी वेश्या रहेती हती. एकदा ते कोशाने जोइने स्थूलभद्र तेनापर मोहित थइ तेने घेर गयो अने त्यां रह्यो. विविध प्रकारना विलास करतां ते बन्नेने अत्यंत निवड प्रेम बंधायो. अत्यंत अनुरागी एवा ते बन्नेना शरीर भिन्न हतां पण तेमनुं मन भिन्न नहोतुं, तेथी नख अने मांसनी

जेम तेश्रो एकबीजाना वियोगने सहन करी शकता नहोता. आवी दृढ प्रीति बंधायाथी स्थूलभद्र पोताने घेर पण जतो नहीं, रात्रीदिवस कोशाने घेरज पड्यो रहेतो. आ प्रमाणे तेणे बार वर्ष त्यां निर्गमन कर्यां.

अहीं राजानी सभामां हमेशां वररूचि नामनो कवि एकसो ने आठ नवा श्लोको बनावीने नंद राजानी स्तवना करतो हतो. ते सांभळीने प्रसन्न थयेलो राजा शकटाल मंत्रीनी सामुं जोतो हतो; पण ते कवि मिथ्यादृष्टि होवाथी मंत्री तेना श्लोकोनी प्रशंसा करतो नहोतो, तेथी राजा प्रसन्न थया छतां पण तेने कांइ पण दान आपतो नहोतो. आ प्रमाणे थवाथी 'राजा मंत्रीने आधीन छे' एम वररुचिना जाणवामां आव्युं. पछी कविए मंत्रीने प्रसन्न करवानी तजवीज करतां लोकोना मुखथी जाण्युं के 'मंत्री पोतानी स्त्रीने आधीन छे.' तेथी ते कवि पोताना स्वार्थने माटे मंत्रीनी स्त्रीनी सेवा करवा गयो. एकदा मंत्रीनी स्त्रीए प्रसन्न थइने तेने कह्युं के "तमारे जे काम होय ते मने कहो.' त्यारे ते बोल्यो के "हुं रोज राजा पासे नवा श्लोको करीने लइ जाउं छुं, तेनी प्रशंसा जो मंत्री करे तो मने द्रव्यनो लाभ थाय. एटलुं मारुं काम करवानुं छे." पछी तेना उपरोधथी मंत्रीनी स्त्रीए मंत्रीने तेना श्लोकनी प्रशंसा करवा आग्रह कर्यो. मंत्रीए कह्युं के "हुं जैनधर्मी छुं, माटे ते मिथ्यात्वीनी प्रशंसा करवी मारे योग्य नथी. तोपण हे प्रिया! तारा आग्रहथी हुं तेनी प्रशंसा करीश." पछी राजसभामां ज्यारे वररूचि श्लोको बोल्यो, त्यारे मंत्रीए तेनी कवित्वशक्तिनी प्रशंसा करी; तेथी हर्षित थयेला राजाए तेने एकसो आठ दीनार इनाम तरीके आप्या. पछी तेज प्रमाणे ते कवि हमेशां एकसो आठ नवा श्लोको बोली तेटलुं इनाम राजा पासेथी लेवा लाग्यो. आम थवाथी भंडार खाली थतो जोइने मंत्रीए राजाने निषेध करीने कह्युं के "हवे तो आ कवि जूना श्लोको बोले छे, माटे तेने कांइ इनाम आपवुं योग्य नथी. जो आपने मारा वाक्यपर विश्वास न होय तो मारी सात पुत्रीओ आपनी पासे आ कविना बोलेला श्लोको बोली बतावशे." ते सांभळीने आश्चर्य पामेला राजाए मंत्रीनी साते पुत्रीओने बोलावीने जवनिकामां बेसाडी. ते पुत्रीओनां अनुक्रमे यक्षा, यक्षदिन्ना, भूता, भूतदिन्ना, सेणा, वेणा अने रेणा एवां नाम हतां. ते सातमां मोटी यक्षा हती, ते एक वखत सांभळेलुं शास्त्र तत्काळ ग्रहण करती हती. एवी रीते बीजी बे वार सांभळवाथी, एम अनुक्रमे सातमी सात वार सांभळवाथी

ग्रहण करती हती. हवे ते वररूचिने आज्ञा थतां ते १०८ श्लोक बोल्यो. ते सांभळीने यक्षाए तेज प्रमाणे ते श्लोको बोली देखाड्या. बीजीवार सांभळवाथी बीजी पुत्रीए पण तेज प्रमाणे बोली बताव्या. एवी रीते अनुक्रमे साते पुत्रीओ बोली गइ. ते सांभळीने राजाए 'पारकां काव्यो पोताना ठरावीने बोले छे!' एम कही वररूचिनो तिरस्कार करीने तेने काढी मूक्यो. पछी खेद पामेलो वररूचि गंगाने किनारे गयो. त्यां एक यंत्र गोठवी तेमां एकसो ने आठ दीनारनी एक पोटकी बांधीने गंगाना जळमां गुप्त राखी. प्रातःकाळे गंगानी स्तुति करी ते यंत्रने पगवती दबाव्युं, एटले पेली दीनारनी पोटकी उडीने तेना हाथमां पडी. एवी रीते ते हमेशां करवा लाग्यो. ते जोइ लोकोए विस्मय पामी राजाने कह्युं के "अहो! गंगा पण आ कविने हमेशां स्तुति करवाथी १०८ दीनारनुं दान आपे छे." ते वात राजाए मंत्रीने कही. त्यारे मंत्री बोल्यो के "हे स्वामी! आपणे काले प्रातःकाळे जोवा जइशुं." रात्रीने समये मंत्रीए पोताना एक खानगी माणसने शीखवीने गंगाने किनारे मोकल्यो. ते दूत वृक्षनी घटामां पक्षीनी जेम संताइने रह्यो. तेवामां ते वररूचि छानी रीते आवीने गंगाना जळमां रहेला यंत्रमां एकसो ने आठ दीनारनी पोटकी मूकीने घेर गयो. पाछळथी पेला माणसे ते पोटकी काढी लइने तेने ठेकाणे कठण कांकरा भरी दीधा अने पेली पोटकी मंत्री पासे जइने तेने आपी. प्रातःकाळे वररूचि ब्राह्मण गंगा किनारे जइने तेनी स्तुति करवा लाग्यो. ते वखते मंत्री सहित राजा तथा सर्व पौरजनो त्यां आव्या. ते कवि वारंवार स्तुति करीने पेला यंत्रने पगवती दबाववा लाग्यो; पण दुर्भागीना मनोरथनी जेम तेना हाथमां कांइ आव्युं नहीं. तेथी ते जळमां हाथ नांखीने पोते मूकेली पोटकी शोधवा लाग्यो! ते जोइ मंत्री बोल्यो के "आजे गंगानदी तने कांइ आपती नथी, परंतु पोतेज स्थापन करेलुं द्रव्य वारंवार शुं काम शोधे छे? ले आ तारुं द्रव्य. आजे आ गंगा मारापर प्रसन्न थइ छे, तेथी मारा हाथमां तारुं धन आव्युं छे." एम कही पोतानी पासे राखेली पेली दीनारनी पोटली मंत्रीए बतावी. ते जोइ राजाए पोतेज आपेला द्रव्यने ओळखी ते ब्राह्मणनी घणी निंदा करी, अने सौ पोतपोताने ठेकाणे गया; परंतु मंत्रीनी आ कृतिथी खेद पामेलो वररूचि निरंतर मंत्रीनां छिद्र जोवा लाग्यो.

एकदा श्रीयकनो विवाहप्रसंग आव्यो. तेने माटे मंत्री सर्व सामग्री तैयार

करवा लाग्यो. ते वखते तेने घेर अनेक शस्त्रो, वस्त्र, अश्व, हाथी विगेरे जोइने ते वररूचिने छिद्र मळ्युं. एटले तेणे निशाळना सर्व छोकराओने एक श्लोक शीखव्यो. ते आ प्रमाणे—

यत्कर्ता शकटालोऽयं, तन्न जानाति पार्थिवः ।
हत्वा नन्दं तस्य राज्ये, श्रीयकं स्थापयिष्यति ॥ १ ॥

भावार्थ—" शकटाल मंत्री जे करे छे ते राजा जाणतो नथी. ते मंत्री नंदराजाने मारीने तेना राज्यपर श्रीयकने स्थापन करशे. "

आ श्लोक छोकराओ गाममां सर्वत्र बोलता हता. ते श्लोक राजाना सांभळवामां पण आव्यो. एटले राजाए विचार्युं के—

बालका यच्च भाषंते, भाषन्ते यच्च योषितः ।
औत्पातिकी च या भाषा, सा भवत्यन्यथा न हि ॥१॥

भावार्थ—" बाळको जे बोले छे, स्त्रीओ जे बोले छे, अने जे आकाशवाणी थाय छे अथवा अकस्मात् कोइ बोली जाय छे ते कदि असत्य थतुं नथी. "

एम विचारी खात्री करवा माटे राजाए पोताना दूतने मंत्रीने घेर जोवा मोकल्यो. दूते जइ आवीने–तैयारी संबंधीनी सर्व हकीकत कही बतावी. तेथी राजा मंत्रीपर अत्यंत गुस्से थयो. पछी सभा वखते मंत्रीए आवीने प्रणाम कर्यो, ते वखते राजाए कोपथी अवळुं मुख कर्युं. राजानी मनोवृत्तिने जाणनार मंत्रीए तत्काळ घेर आवी श्रीयकने कह्युं के " राजा कोइ पिशुनना वाक्यथी मारापर अत्यंत कोपायमान थया छे, तेथी अकस्मात् आपणा कुळनो नाश करशे, माटे हे वत्स ! हुं सभामां जइने ज्यारे राजाने प्रणाम करुं, त्यारे तुं खड्गवडे मारुं माथुं कापी नांखजे. पछी राजा तेम करवानुं कारण तने पूछे, त्यारे तुं कहेजे के–स्वामीनो अभक्त एवो पिता होय तो ते पण वध करवा योग्य छे. " ते सांभळीने रोतां रोतां श्रीयक बोल्यो के " हे पिता ! शुं एवुं घोर कर्म चांडाळ पण कदापि करे ? " मंत्रीए कह्युं के "तुं आवा विचारो करवाथी आपणा शत्रुना मनोरथ पूर्ण करीश; माटे यमराजना जेवो प्रचंड राजा ज्यांसुधी आपणा आखा कुटुंबनो नाश न करे,

तेटलामां मात्र मारा एकनाज नाशथी आखा कुटुंबनुं तुं रक्षण करी ले. वळी हुं मुखमां ताळपुट विष नांखी राजाने प्रणाम करीश, एटले मृत्यु पामेला एवा मारा शिरने छेदतां तने पितृहत्यानुं पातक लागशे नहीं." आ प्रमाणे मंत्रीना बोधथी श्रीयके पितानी आज्ञा कबूल करी. पछी राजाने नमता मंत्रीनुं मस्तक राजानी समक्ष श्रीयके कापी नांख्युं. ते जोइ राजा संभ्रमथी बोल्यो के "हे वत्स! तें आवुं दुष्कर्म केम कर्युं?" श्रीयक बोल्यो के "स्वामीए एमने द्रोह करनार जाण्या, तेथी में तेमनुं मस्तक छेद्युं छे, भृत्यज तो स्वामीना अभिप्राय प्रमाणे वर्तनाराज होय छे." परिशिष्ट पर्वमां आ संबंधमां कह्युं छे के—

भृत्यानां युज्यते दोषे, स्वयं ज्ञाते विचारणा ।
स्वामिज्ञाते प्रतीकारो, युज्यते न विचारणा ॥ १ ॥

भावार्थ—"भृत्यनो दोष पोते जाण्यो होय तो तेमां विचार करवो योग्य छे; पण भृत्यनो दोष स्वामीए जाण्यो होय तो तेनो प्रतीकारज योग्य छे, तेमां विचार करवो योग्य नथी."

पछी राजानी आज्ञाथी श्रीयके पितानुं सर्व मृतकार्य कर्युं. पछी नन्दराजाए श्रीयकने कह्युं के "राज्यना सर्व कार्यभार सहित आ मंत्रीपणानी मुद्रा ग्रहण कर." श्रीयक बोल्यो के "हे पूज्य! पिता तुल्य मारो मोटो भाइ स्थूलभद्र नामे छे, ते कोशा वेश्याने घेर पितानी कृपाथी निर्बाधपणे भोगविलास भोगवे छे, तेने बार वर्ष व्यतीत थइ गयां छे; माटे ते मारो मोटो भाइ पिताना स्थानने योग्य छे." ते सांभळी राजाए स्थूलभद्रने बोलावीने मंत्रीपद ग्रहण करवा कह्युं. त्यारे स्थूलभद्र बोल्यो के "हे स्वामी! हुं विचार करीने ते अंगीकार करीश." राजाए कह्युं के "हमणाज विचार करी ले." ते सांभळीने स्थूलभद्र अशोक वाडीमां जइ विचार करवा लाग्यो के "राज्यनो कारभार करनारा मारा पितानो चपळ कर्णवाळा राजाए अकाळ मृत्युथी नाश कर्यो. माटे राज्यना अधिकारीओने सुख क्यांथी होय? कह्युं छे के—

त्यक्त्वा सर्वमपि स्वार्थं, राजार्थं कुर्वतामपि ।
उपद्रवन्ति पिशुना, उद्बद्धानामिव ढिकाः ॥ १ ॥

भावार्थ—" सर्व स्वार्थनो त्याग करीने राजानुं कार्य करनार भृत्योने पण उंचे बांधेला (शब)ने जेम कागडाओ उपद्रव करे तेम पिशुनो (चाडियाओ) उपद्रव करे छे. "

यथा स्वदेहद्रविण—व्ययेनापि प्रयत्यते ।
राजार्थे तद्वदात्मार्थे, यत्यते किं न धीमता ॥ २ ॥

भावार्थ—" जेम लोको राजाने माटे पोताना देह अने धननो व्यय करीने पण यत्न करे छे, तेम बुद्धिमान लोको आत्माने माटे केम यत्न नथी करता ? "

आ प्रमाणे वैराग्यनी भावना भावतां स्थूलभद्रे पोताना केशनो लोच करी रत्नकंबलनी दशीयोनुं रजोहरण (ओघो) बनावी सभामां आवी राजाने कह्युं के " में तो आ प्रमाणे विचार्युं तमने धर्मलाभ हो. " एम कही ते तत्काळ राजभुवनमांथी बहार नीकळ्या. ते जोइने " शुं आ कपट करी वेश्याने घेर पाछो जाय छे ? " एवा अविश्वासथी राजा गवाक्षमांथी ते बाजु जोइ रह्यो. पण स्थूलभद्र तो कोही गयेला शबनी दुर्गन्धथी जेम नाक मरडीने चाले तेम ते वेश्याना घर तरफ मों मरडीने चाल्या गया. ते जोइने राजाए विचार्युं के "अहो ! आ तो पूज्य वीतराग जेवा छे, तेने माटे मारा करेला खोटा विचारने धिक्कार हो !" एम ते आत्मनिंदा करवा लाग्यो.

स्थूलभद्रे श्रीसंभूतिविजय आचार्य पासे जइ सामायिकना उच्चारपूर्वक दीक्षा अंगीकार करी.

पछी राजाए मंत्रीनी जग्याए श्रीयकने स्थापन कर्यो. श्रीयक हमेशां कोशाने घेर तेने दिलासो आपवा जवा लाग्यो. तेने जोइने कोशा स्थूलभद्रना विरहदुःखथी रुदन करती हती. एकदा श्रीयके कोशाने कह्युं के " हे आर्ये ! आपणे शुं करीए ? पेला पापी वररुचिए मारा पितानो घात कराव्यो अने तमने स्थूलभद्रनो विरह कराव्यो. " कोशा बोली के " तमे तेनुं वैर लेवानो उपाय विचारीने मने कहो तो हुं करुं. " ते बोल्यो के " जो ते वररुचि मद्यपान करे तो वैरनो बदलो लेवानो वखत आवे, माटे तुं तेने मद्यपान करे तेवुं कर. " कोशाए तेनुं वाक्य स्वीकारी वररुचिने मद्य पीतो कर्यो. पछी ते वात कोशाए श्रीयकने कही.

ते सांभळीने श्रीयक हर्ष पाम्यो. पछी एकदा श्रीयक राजसभामां गयो हतो तेवे वखते राजा शकटाल मंत्रीना गुणोनुं स्मरण करीने तेनी प्रशंसा करवा लाग्यो. त्यारे श्रीयक बोल्यो के " हे स्वामी ! शुं करीए ? मद्यपान करनार वररुचिए आ सर्व पापकर्म कर्युं छे. " राजाए पूछ्युं के " शुं ए वररुचि मद्यपान करे छे ? " श्रीयक बोल्यो के " हे स्वामी ! ते हुं आपने बतावीश. " पछी बीजे दिवसे सर्व सभा भराइ हती, वररुचि पण आवेलो हतो, ते वखते श्रीयक मंत्रीए शीखवी राखेला अनुचर पासे राजाने तथा सभाना सर्व लोकोने एक एक कमळनुं पुष्प अपाव्युं. तेमां वररुचिने मींढोळना चूर्णथी मिश्रित करेलुं कमळ अपाव्युं. राजा विगेरे सर्व जनो ते कमळने सुंघीने तेना सुगन्धनी प्रशंसा करवा लाग्या; तेथी वररुचि पण पोताना कमळने सुंघवा लाग्यो, तेथी रात्रीए पीधेली चंद्रहास मदिरानुं तेणे तरतज वमन कर्युं. ते जोइ सर्व लोकोए तेनो तिरस्कार कर्यो; एटले ते सभामांथी जतो रह्यो. पछी लोकोमां थती पोतानी निन्दाने दूर करवाना हेतुथी तेणे सुरापानना प्रायश्चित्त माटे विद्वानोने पूछ्युं के " सुरापाननुं शुं प्रायश्चित्त ? " ब्राह्मणो बोल्या के " शास्त्रमां–तापितत्रपुषः पानं मदिरापानपापहृत् । एटले तपावेला सीसाना रसनुं पान करे तो मदिरापाननुं पाप दूर थाय एम कह्युं छे. " ते सांभळीने वररुचिए सीसाना रसनुं पान कर्युं, तेथी ते तत्काळ मृत्यु पाम्यो.

अहीं स्थूलभद्र मुनि गुरुनी सेवा करतां श्रुतसमुद्रना पारने पाम्या. जे कारण माटे भोगादिकनो तेणे त्याग कर्यो हतो ते कार्य तेणे सारी रीते निरंतर साधवा मांड्युं.

" उंचा प्रकारना मंत्रीपदने हुं शुं करुं ? में मूर्खाइने लीधे बाल्यावस्थाथीज स्त्रीना भोगविलासवडे युवावस्था गुमावी छे. " एवी रीते श्रीयकना मोटा भाइ स्थूलभद्र मुनि भावना भावता हता.

" हे आत्मा ! स्त्रीनी साथे भोगविलास करतां सर्व इन्द्रियोना विषयनुं सुख अनेक प्रकारे इच्छानुसार भोगव्युं; तो पछी पराधीन एवा मंत्रीपदमां शुं विशेष सुख मळवानुं छे ? " एम धारीने तेमणे स्वाधीन एवुं मुनिपद धारण कर्युं. "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ एकविंशतितमस्तंभस्य
चतुर्दशाधिकत्रिशततमः प्रबंधः ॥ ३१४ ॥

व्याख्यान ३१५ मुं.

निःस्पृहता विषे.

स्वरूपप्राप्तितोऽधिक्यं, प्राप्तव्यं नावशिष्यते ।
इत्यात्मराजसंपत्त्या, निःस्पृहो जायते मुनिः ॥ १ ॥

भावार्थ—" स्वरूपनी प्राप्तिथी बीजुं कांइ पण विशेष पामवा लायक अवशेष रहेतुं नथी, तेथी आत्मारूपी राजानी संपत्ति पामीने मुनि तद्दन स्पृहा रहित थाय छे."

स्वरूप ते ज्ञानादि रत्नत्रय, अनंतवीर्य, अव्याबाध, अमूर्त्त, आनंदरूप अने अविनाशी एवुं जे सिद्धत्व तेनुं शुद्ध पारिणामिक लक्षण जाणवुं. तेनी प्राप्ति थया पछी बीजी कोइ पामवा योग्य वस्तु बाकी रहेती नथी; तेथी करीने आत्मारूपी राजानी संपत्ति पामवाथी बुद्धिपरिज्ञावडे तजी दीधा छे द्रव्य भाव आश्रव जेणे एवा मुनि निःस्पृह थाय छे. अर्थात् सर्व शरीरादिकना परिग्रहमां मूर्च्छारहित थाय छे. आ प्रसंग उपर कालवैशिक राजर्षिनो संबंध छे ते आ प्रमाणे—

कालवैशिक मुनिनी कथा.

मथुरानगरीनो राजा जितशत्रु एकदा काली नामनी वेश्यापर मोहित थयो, एटले तेने पोताना अंतःपुरमां राखी. तेनी साथे विलास करतां तेने कालवैशिक नामे पुत्र थयो. ते पुत्र एकदा रात्रे सुतो हतो, तेवामां तेणे शियालनो शब्द सांभळी पोताना भृत्योने पूछयुं के " आ कोनो शब्द संभळाय छे ? " भृत्योए कह्युं के " हे कुमार ! शियाळनो शब्द संभळाय छे. " त्यारे कुमारे कह्युं के " ते शियाळने चरणमांथी बांधीने अहीं लइ आवो. " भृत्योए वनमां जइने एक शियाळने बांधी लावीने कुमारने सोंप्युं. पछी क्रीडामां आसक्त कुमार तेने वारंवार मारवा लाग्यो. तेना मारथी शियाळ ' खी खी ' शब्द वारंवार करतुं; परंतु ते जेम जेम 'खी खी' शब्द करतुं, तेम तेम कुमार वधारे हसतो. एवी रीते निरंतर मारतां ते शियाळ मरण पाम्युं, अने अकाम निर्जराथी मरीने व्यंतरपणुं पाम्युं.

एकदा युवावस्था पामेलो कुमार वनमां क्रीडा करवा गयो. त्यां कोइ साधुना मुखथी तेणे नीचे प्रमाणे धर्मदेशना सांभळी—

निष्कासनीया विदुषा, स्पृहा चित्तगृहाद्बहिः ।
अनात्मरतिचांडाली–संगमंगीकरोति या ॥ १ ॥

भावार्थ—" आत्मसमाधि साधवामां उद्यत थयेला पंडित पुरुषे स्पृहा जे पराशा तेने चित्तरूपी घरनी बहार काढी मूकवी; केमके ते स्पृहा अनात्म जे परभाव तेमां रति जे प्रीति तद्रुपी चांडालीनो संग करनारी छे. " माटे स्पृहाने तजी देवी. वळी—

जे परभावे रत्ता, मत्ता विसएसु पावबहुलेसु ।
आसापासनिबद्धा, भमंति चउगइमहारन्ने ॥ २ ॥

भावार्थ—" जेओ परभावमां रक्त छे, जेओ घणां पापवाळा इंद्रियोना विषयोमां मत्त छे, अने जेओ आशाना पाशमां बंधायेला छे तेओ चार गतिरूप महा अरण्यमां भ्रमण करे छे."

जेओए परवस्तुनी आशारूपी पाश काढी नांख्या छे एवा मुनिजनो स्वरूपचिंतन अने स्वरूपरमणना अनुभवमां लीन अने पीन (पुष्ट) थइने तत्त्वानंदमां रमे छे–क्रीडा करे छे. कह्युं छे के—

तिणसंथारनिसन्नो, मुनिवरो भट्टरागमयमोहो ।
जं पावइ मुत्तिसुहं, कत्तो तं चक्कवट्टी वि ॥ १ ॥

भावार्थ—" तृणना संथारापर बेठेला, अने जेना राग, मद अने मोह नाश पाम्या छे एवा श्रेष्ठ मुनि जे मुक्तिना सुखने पामे छे ते सुखनी प्राप्ति चक्रवर्तीने पण क्यांथी होय ? "

आयसहावविलासी, आयविसुद्धोवि यो निये धम्मे ।
नरसुरविसयविलासं, तुच्छं निस्सार मन्नंति ॥ २ ॥

भावार्थ—" जे आत्मा पोताना स्वरूपमांज विलासी छे, अने जे आत्मा पोताना धर्ममांज विशुद्ध छे, ते आत्मा मनुष्य तथा देवताना विषयविलासने तुच्छ अने निःसार माने छे."

इत्यादि धर्मवाक्य सांभळीने प्रतिबोध पामेला राजकुमारे दीक्षा ग्रहण करी. अन्यदा एकलविहार प्रतिमाने अंगीकार करी विहार करतां ते मुनि मुद्गशैल नामना नगरे आव्या. ते वखते तेने अर्शनो व्याधि थयो हतो. ते व्याधिथी पीडाता छतां ते मुनि कोइ वखत मनमां पण तेना प्रतीकारनुं चिंतन करता नहोता; केमके ते पोताना शरीर उपर पण निःस्पृह हता. ते नगरनो राजा मुनिनो बनेवी थतो हतो, तेथी तेनी राणी के जे मुनिनी ब्हेन हती तेणे पोताना भाइने अर्शना व्याधिथी पीडा पामता जाणीने तथा तेने औषध लेवानो अभिग्रह छे ते वात पण जाणीने स्नेहना वशथी अर्शने नाश करनार औषधथी मिश्र करेलुं भोजन ते मुनिने आप्युं. मुनिए ते आहार वापर्यो. परंतु ते वापरती वखत तेनी अंदर औषध छे एम जाणीने पश्चात्ताप करता सता तेणे विचार्युं के "में उपयोग राख्यो नहीं, तेथी आ अयोग्य कार्य माराथी थयुं अने अर्शना जंतुनो नाश न करवा संबंधी अभिग्रहनो में भंग कर्यो; परंतु आ सर्व अनर्थ आहारनी इच्छाथी थयो छे, माटे हुं आहारनोज सर्वथा त्याग करुं." एम विचारीने पुरमांथी बहार नीकळी पासेना पर्वतपर जइ तेमणे मोटुं अनशन[1] स्वीकार्युं. ते मुनिने अनशन ग्रहण करेला जाणीने तेना शरीरनुं उपद्रवथी रक्षण करवा माटे राजाए पोताना किंकरोने तेमनी पासे राख्या.

हवे पेलो शियाळ जे मरीने व्यन्तर थयो हतो तेणे अवधिज्ञानवडे पूर्व भवनुं वैर स्मरण करी मुनिने उपद्रव करवा माटे बाळक सहित शियाळणी विकूर्वी; परन्तु ज्यांसुधी राजाना किंकरो ते मुनि पासे रहेता, त्यां सुधी ते शियाळणी मुनिने उपद्रव करी शकती नहीं. पण ज्यारे ते किंकरो पाछा नगरमां जता त्यारे ते शियाळणी 'खी खी' शब्द करती मुनिने वारंवार बटकां भरती हती, मुनि तो ते शियाळणीए उपजावेली पीडाने तथा अर्शना व्याधिनी पीडाने शांत चित्ते सहन करता सता निःस्पृह भावने मूकता नहीं, परंतु धर्मध्यानमांज स्थिर रहेता हता. आवी रीते आर्त्तध्यानने वधारनार रोग संबंधी दुःख प्राप्त थवाथी तथा रौद्रध्यानने वधारनार शियाळणीना उपद्रवनुं दुःख प्राप्त थवाथी पण ते मुनिए आर्त्त तथा रौद्र ध्यान कर्युं नहीं. ए प्रमाणे पंदर दिवस सुधी शियाळणीए करेली महाव्यथाने सहन करता महासत्त्ववाळा मुनि पंदर दिवसनुं अनशन पाळी सर्व कर्मनो क्षय करी केवळज्ञान पामी मोक्षे गया.

---

१ मरण पर्यंत आहार न ग्रहण करवो ते महा अनशन.

इति निस्पृह भावतो रुजं, परिषेहे मुनिकालवैशिकः ।
सकलैरपि साधुभिस्तथा, सहनीयोऽयमुदारनिःस्पृहः ॥ १ ॥

भावार्थ—"आ प्रमाणे निःस्पृह भावने धारण करनार कालवैशिक मुनिए जेवी रीते व्याधिने सहन कर्यो, तेवी रीते सर्व साधुओए आ उदार निःस्पृह गुण धारण करवो."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ एकविंशतितमस्तंभस्य
पंचदशाधिकत्रिशततमः प्रबंधः ॥ ३१५ ॥

एकवीशमो स्तंभ संपूर्ण.

उपदेश प्रासाद.

स्तंभ २२ मो.

व्याख्यान ३१६ मुं.

सम्यक्त्व ने मुनिपणानी एकता विषे.

मन्यते यो जगत्तत्त्वं, स मुनि परिकीर्तितः ।
सम्यक्त्वमेव तन्मौनं, मौनं सम्यक्त्वमेव च ॥ १ ॥

भावार्थ—" जे जगतना तत्त्वने माने छे (जाणे छे) तेने आचार्योए मुनि कहेला छे, ते मुनिपणाने विषेज सम्यक्त्व रहेलुं छे, अने जे मुनिपणुं छे ते सम्यक्त्वज छे. "

विस्तरार्थ—शम, संवेग, निर्वेद, अनुकंपा ने आस्तिक्यता ए पांच लक्षणे लक्षित एवा अने जीव अजीवात्मक जगतने जाणनारा जे होय ते मुनि कहीए. जे जेवुं जाण्युं ते तेज प्रमाणे कर्युं, एम होवाथी तेमनुं सम्यक्त्व तेज मुनित्व छे, अने मौनपणुं—निर्ग्रंथत्व तेज सम्यक्त्व छे. अहीं शुद्ध श्रद्धाए करीने निश्चय करेला आत्मस्वभावमां जे रहेवुं ते चरण कहेवाय छे. सम्यग् दर्शनवडे निर्धारित करेलुं अने सम्यग्ज्ञानवडे विभक्त करेलुं जे आत्मस्वरूप तेनुं उपादेयपणुं एटले तेनुं तेवीज रीते अनुभववुं-तेमां रमण करवुं ते चारित्र अथवा मुनिपणुं कहेवाय छे; माटे एवंभूत नये सम्यग्दृष्टिए सम्यक् श्रद्धा पूर्वक तेनुं तद्वत् आचरण करवुं. चोथा गुणठाणे हता त्यारे साध्यपणे जे धार्युं हतुं ते तेज प्रमाणे प्रवृत्ति करीने सिद्धावस्थामां मुनिपणावडे निष्पादन कर्युं, तेथी शुद्ध सिद्धत्व धर्मनो निरधार तेज सम्यक्त्व समजवुं अने सम्यक्त्व तेज मुनिपणुं समजवुं. आ संबंधमां कुरुदत्तनो संबंध छे ते नीचे प्रमाणे—

कुरुदत्तनी कथा.

हस्तिनापुरमां कुरुदत्त नामे एक श्रेष्ठीनो पुत्र महा सुखी हतो. ते एकदा

धर्मदेशनाने समये श्री गुरुमहाराज पासे गयो. त्यां तेणे स्याद्वादरूप आप्त वाक्य हृदयमां धारण कर्युं. गुरुमहाराजे कह्युं के " आत्मज्ञाननी प्राप्ति माटे अनेक अन्य दर्शनीओ परस्पर वादविवाद करे छे. रेचक, कुंभक अने पूरक वायुनुं अवलंबन करीने प्राणायाममां प्रवृत्त थाय छे, अने मौन धारण करीने पर्वत तथा वननी गुफाओमां परिभ्रमण करे छे; तोपण तेओ श्री अर्हंते कहेला आगमनुं श्रवण कर्या विना स्याद्वादरूपी आप्तवाक्यथीज थइ शके तेवी स्वभाव तथा परभावनी परीक्षा करी शकता नथी, अने स्वस्वभावना अवबोध विना तेओनी कार्यसिद्धि पण थती नथी. कह्युं छे के—

आत्माज्ञानभवं दुःख—मात्मज्ञानेन हन्यते ।
अभ्यस्यंस्तत्तथा तेन, येनात्मा ज्ञानवान् भवेत् ॥ १ ॥

भावार्थ—" आत्माना अज्ञानथी उत्पन्न थयेलुं दुःख आत्मज्ञानवडेज नाश पामे छे; माटे तेवी रीते अभ्यास करवो जोइए के जेथी आत्मा ज्ञानमय थाय."

अहीं उपादान स्वरूपमां कर्ता विगेरे छ कारकरूपी चक्रमय आत्माज छे, आत्मा पोतेज कर्ता छे. कार्यरूप, करणरूप, संप्रदान, अपादान अने अधिकरण पण आत्मा पोतेज छे. महाभाष्यमां पण कह्युं छे के " आत्मा एटले जीव कर्ता रूप छे. ते पोताना आत्माने एटले अनंत शुद्ध धर्म (प्रकट करवा) रूप कार्यने, आत्माए करीने एटले आत्मशक्तिरूप करणवडे करीने, आत्माने माटे एटले आत्मस्वरूप प्रगट करवा माटे, आत्माथी एटले आत्मभावथी–परभावथी पृथक् एवा अपादान रूप आत्माथी, आत्मारूप आधारने विषे एटले अनन्त धर्मपर्यायोना पात्रभूत आत्माने विषे प्रकट करे छे. " तेथी करीनेज मुनि आत्मस्वरूपमां मग्न रहे छे. जेम सोजाथी थयेली शरीरनी पुष्टता असत्य छे (इष्ट नथी), अने जेम वधस्थानपर लइ जवाता वध्य माणसने पहेरावेल कणेरनी माळा विगेरे अलंकार असत्य छे–शोभा आपनारा नथी, तेवी रीते संसारना स्वरूपने–भवना उन्मादने जाणनार मुनि समस्त परभावनो त्याग करीने अनन्त गुणरूप आत्मस्वरूपमांज तृप्त रहे छे. संसारनुं स्वरूप असार छे, निष्फळ छे, अभोग्य छे

(भोगववाने अयोग्य छे), तुच्छ छे, इत्यादि जाणीने मुनि आत्मस्वरूपमांज मग्न रहे छे."

आ प्रमाणे गुरुना मुखथी अध्यात्म स्वरूप सांभळीने प्रतिबोध पामेला कुरुदत्ते दीक्षा ग्रहण करी. पछी श्रुतनो अभ्यास कर्यो, अने एकलविहार प्रतिमा अंगीकार करी, अर्थात् एकला विचरवा लाग्या. ते विहार करतां करतां एकदा साकेत नगरनी पासे चोथी पोरसीए मंदराचळना जेवी धीरता धारण करीने कायोत्सर्गे रह्या; ते समये केटलाएक चोरो कोइ गाममां गायोनुं धण हरीने ते मुनिनी पासे थइने चाल्या गया. केटलीक वारे तेमनी पाछळ गायोनी शोध करनारा नीकळ्या. तेओ पण ते मुनिनी नजीक आव्या. त्यां बे मार्ग जोइने तेओए मुनिने पूछयुं के "हे साधु! गायोनुं हरण करनार ते चोरो कये रस्ते गया?" ते सांभळ्या छतां पण मुनिए तेमने कांइ जवाब आप्यो नहीं. कह्युं छे के "एकेन्द्रिय जीवोने पण वाणीना अनुच्चार रूप मौन तो सुलभ छे, सुप्राप्य छे, पण ते मौन मोक्षसाधक नथी; परंतु रम्यारम्य पुद्गळोने विषे प्रवृत्ति नहीं करवा रूप जे मौन तेज उत्तम छे, प्रशस्य छे." तेवा उत्तम मौनने धारण करनार अने आत्मस्वरूपमांज लीन थयेला ते कुरुदत्त मुनि सत्य छतां पण सावद्य वाक्य शी रीते बोले? कह्युं छे के "न सत्यमपि भाषेत, परपीडाकरं वचः" सत्य छतां पण परने पीडा करनारुं वचन बोलवुं नहीं. मुनिए कांइ पण जवाब आप्यो नहीं, तेथी क्रोधथी विह्वळ थयेला ते दुष्ट लोकोए जळथी आर्द्र थयेली माटी लइने ते मुनिना मस्तक उपर पाळ बांधी; अने तेमां चिताना बळता अंगारा नांखीने त्यांथी जता रह्या. ते अंगाराथी मुनिनुं मस्तक बळवा लाग्युं, तोपण मुनि तो एवोज विचार करवा लाग्या के "हे जीव! तारा कलेवरने उत्पन्न थता आ दुःखने तुं सहन कर, केमके स्ववशपणे दुःख सहन करवुं तेज दुर्लभ छे; बाकी परवशपणे तो तें घणुं दुःख सहन कर्युं छे ने करीश, पण तेमां कांइ गुण (लाभ) थशे नहीं; लाभ तो स्ववशे सहन करवाथीज थशे." ए प्रमाणे विचार करतां मुनिए मस्तक अथवा मन जरा पण कंपाव्युं नहीं, अने ते उपसर्गने सम्यक् प्रकारे सहन करी परलोकनुं साधन कर्युं.

"जेओ कुरुदत्त मुनिनी जेम मौन व्रतमांज मुनिपणुं रहेलुं छे एवी

भावना भावता सता निर्दंभपणे सम्यग् ज्ञानादिक त्रण रत्ननुं परिपालन करे छे तेओ स्याद्वाद धर्मना आराधनथी थता सुखने प्राप्त करे छे."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ द्वाविंशतितमस्तंभस्य षोडशाधिकत्रिशततमः प्रबंधः ॥ ३१६ ॥

व्याख्यान ३१७ मुं.

विद्या अविद्या विषे.

य: पश्येन्नित्यमात्मानं, सा विद्या परमा मता ।
अनात्मसु ममत्वं य–दविद्या सा निगद्यते ॥ १ ॥

भावार्थ—"जे निरंतर आत्मानेज जुए छे ते श्रेष्ठ विद्या मानेली छे, अने आत्माथी व्यतिरिक्त पदार्थने विषे जे ममता ते अविद्या कहेली छे."

आत्माथी व्यतिरिक्त पुद्गलोने विषे ममता एटले 'आ शरीर मारुं छे, हुं शरीररूपज छुं' एवी रीते जे मानवुं ते अविद्या एटले भ्रांतिज छे. आ अर्थने यथार्थ अवधारण करवाने माटे समुद्रपाळनो संबंध जाणवा योग्य छे ते आ प्रमाणे—

समुद्रपाळनी कथा.

चंपानगरीमां समुद्रदत्त नामे एक श्रेष्ठी रहेतो हतो. ते श्री वीरस्वामीनी देशना सांभळीने प्रतिबोध पाम्यो हतो; तेथी ते श्रावकधर्म पाळतो हतो, अने निर्ग्रंथप्रवचनप्रवीण हतो. निर्ग्रंथप्रवचनमां कह्युं छे के—

तरंगतरलां लक्ष्मी–मायुर्वायुवदस्थिरम् ।
अदभ्रधीरनुध्याये–दभ्रवद्भंगुरं वपु: ॥ १ ॥

भावार्थ—" निर्मळ बुद्धिवाळा (पुष्टबुद्धिवाळा) माणस तरंगना जेवी चंचळ लक्ष्मीनुं, वायुना जेवा अथिर आयुष्यनुं अने वादळानी जेवा क्षणभंगुर शरीरनुं चिंतवन करे छे." अर्थात् लक्ष्मी, आयु अने शरीरने ते ते पदार्थोनी जेवा अस्थिर माने छे, तेमां स्थिरपणानी बुद्धि राखता नथी. लक्ष्मीने तरंग जेवी चपळ माने छे, आयुष्यने प्रतिसमय विनश्वर अनेक विघ्नोपयुक्त माने छे. अने शरीरने वादळानी जेम भंगुर–भंग थवाना शीळवाळु माने छे. वळी—

शुचीन्यप्यशुचीकर्तुं, समर्थेऽशुचिसंभवे ।
देहे जलादिना शौचं, भ्रमो मूढस्य दारुणः ॥ २ ॥

भावार्थ—" कर्पूरादिक पवित्र पदार्थोने पण अपवित्र करवाने समर्थ तथा रक्त अने वीर्यरुप अपवित्र पदार्थथी उत्पन्न थयेला एवा आ शरीरने विषे जळादिकवडे जे शौचविधि मानवो ते मूर्ख माणसनो मोटो भ्रम छे. " अर्थात् इंद्रियोना आयतनभूत शरीरमां जळमृत्तिकाना संयोगवडे श्रोत्रियादिकनी जेम पवित्र थवानुं मानवुं ते भयकारी छे; कारणके आ शरीर तो कर्पूरादि सुगंधवाळा अने शुचि पदार्थोने पण अशुचि (अपवित्र) करवाने समर्थ छे. देहना संगथी बावनाचंदनादिकनुं विलेपन पण अशुचि थइ जाय छे. तेनी उत्पत्तिना संबंधमां पण कह्युं छे—

सुक्कं पिउणो माउए सोणियं, तदुभयं पि संसट्टं ।
तप्पढमाए जीवो, आहारे तत्थ उप्पन्नो ॥ ३ ॥

भावार्थ—" पितानुं शुक्र (वीर्य) अने मातानुं रुधिर ए बेना मिश्रणमां प्रथम तेनो ज आहार लेतो सतो जीव उत्पन्न थाय छे. "

एटला माटे अस्थिर, अपवित्र, उपाधियुक्त, नवां कर्मबंधनमां कारणभूत अने द्रव्यभाव अधिकरणरूप एवा आ शरीरना शा संस्कार करवा ? माटे तेना (शरीरना) संस्कारनुं निवारण करीने आत्मस्वरूपमां आत्मानुंज पवित्रपणुं करवुं योग्य छे. कह्युं छे के—

यः स्नात्वा समताकुंडे, हित्वा कश्मलजं मलम् ।
पुनर्न याति मालिन्यं, सोऽन्तरात्मा परः शुचिः ॥ १ ॥

भावार्थ—" जे समतारूप कुंडमां स्नान करीने पापथी उत्पन्न थयेला मळनो त्याग करी फरीथी मलिन थतो नथी ते अन्तरात्मा परम शुचि जाणवो."

समुद्रपाळ श्री वीरस्वामीना प्रसादथी आवा प्रकारना धर्मनो जाणकार अने तेमां प्रवीण हतो. ते एकदा समुद्र रस्ते वहाणमां बेसीने व्यापार करतो पिहुंड पुर आव्यो. ते पुरमां रहेनारा कोइ वणिके तेने पोतानी पुत्री परणावी. ते स्त्री गर्भवती थइ. पछी तेने लइने समुद्रपाळ पोताना देश तरफ चाल्यो. मार्गमां वहाणमां ज ते स्त्रीए पुत्र प्रसव्यो, तेनुं नाम तेणे समुद्रपाळ पाडयुं. अनुक्रमे ते श्रेष्ठी क्षेमकुशळे पोताने घेर आवी पहोंच्यो. ते पुत्र युवावस्था पाम्यो, एटले मातापिताए तेने रूपवती कन्या परणावी. तेनी साथे विषयसुख अनुभवतो ते दिवसो निर्गमन करवा लाग्यो. एकदा ते गामनी शोभा जोवा माटे गवाक्षमां बेठो हतो, तेवामां तेणे रक्तचंदननुं विलेपन करेलो, राता कणेरनी माळा पहेरावेलो अने वधस्थान तरफ लइ जवातो एक वध्य पुरुष जोयो. तेने जोइने ते बोल्यो के " अहो ! अशुभ कर्मनो केवो माठो विपाक प्राणी अनुभवे छे ! जुओ ! आ बिचारो आवी रीते वधस्थान तरफ लइ जवाय छे." इत्यादि विचार करतां तेने प्रतिबोध थयो. तेथी तेणे विचार्युं के—

अविद्यातिमिरध्वंसे, दृशा विद्याञ्जनस्पृशा ।
पश्यन्ति परमात्मान–मात्मन्येव हि योगिनः ॥ १ ॥

भावार्थ—" योगीओ अविद्यारूप अंधकारनो नाश थवाथी विद्यारूपी अंजनथी लिप्त थयेली दृष्टिवडे आत्माने विषेज परमात्माने जुए छे."

षट्चक्रना वायुने रुंधीने समाधि दशामां रहेला योगीओ आत्माने विषेज समस्त कर्मजाळनी विटंबणाथी रहित अने उत्कृष्टपणे प्राप्त थयेल सिद्धस्वरूपवाळा परमात्माने तत्त्वबुद्धिरूप अंजनथी व्याप्त एवी दृष्टिवडे अयथार्थ उपयोगरूप अंधकारनो नाश थवाथी सम्यग् दृष्टिपणाने लीधे जुए छे.

इत्यादि शुभ ध्यानमां आरूढ थयेला समुद्रपाळे मातापितानी आज्ञा लइने दीक्षा ग्रहण करी. श्री उत्तराध्ययनमां कह्युं छे के "महाक्लेश आपनार एवा सर्व संगनो त्याग करीने तथा क्लेशदायक अने महाभयनुं कारण एवा मोहनो त्याग

करीने धर्मनी रूचिवाळा पुरुषे पांच महाव्रत अने शीलनुं परिपालन करवुं तथा परिषहो सहेवा." परंतु मात्र व्रतनो स्वीकार करीनेज रहेवुं नहीं, तेनुं अप्रमत्त-पणे परिपालन करवुं, तेमज काळने उचित एवी प्रत्युपेक्षणा (पडिलेहणा) विगेरे क्रियाओ करीने देशमां तथा गाममां, जेवी रीते संयमनी हानि न थाय तेवी रीते विहार करवो. वळी कोइ पण इष्ट वस्तु जोइने तेना अभिलाषी थवुं नहीं, अने स्त्री, पशु, पंडग विगेरेथी रहित एवा उपाश्रयनुं सेवन करवुं. तेवी रीते आचरण करवाथी ते केवो थाय ? ते विषे कह्युं छे के " सत्ज्ञानने पामेलो मुनि अनुत्तर एवा क्षांत्यादि धर्मनो संचय करीने (आचरीने) यशस्वी थइ केवळ-ज्ञान पामी आकाशमां सूर्य प्रकाशे तेम जगतमां प्रकाशे छे, अने छेवट पुण्य-पापनो सर्वथा क्षय करीने अपुनरागमनवाळा मोक्षपदने पामे छे."

"योगीजनो लोकोत्तर एवी ज्ञानदृष्टिए करीने पोताना आत्मामांथी मिथ्या अविद्यानो नाश करी समुद्रपाळनी जेम शुद्ध आत्मस्वरूपनो निश्चय करे छे, निरधार करे छे, तेने धारण करे छे."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ द्वाविंशतितमस्तंभस्य
सप्तदशाधिकात्रिशततमः प्रबंधः ॥ ३१७ ॥

व्याख्यान ३१८ मुं.

विवेक गुण विषे.

कर्म जीवं च संश्लिष्टं, सर्वदा क्षीरनीरवत् ।
विभिन्नीकुरुते योऽसौ, मुनिहंसो विवेकवान् ॥ १ ॥

भावार्थ—" सर्वदा दूध अने जळनी जेम एकरूप थइ गयेला एवा कर्म अने जीवने आ विवेकी मुनिरूपी हंस पृथक् करे छे."

कर्म ज्ञानावरणी आदिक अने जीव सच्चिदानंदरूप ते सर्व काळ दूध ने जळनी जेम एकीभूत थयेला छे. तेने लक्षणादि भेद करीने जे पृथक् करे छे ते मुनिहंस विवेकवान् कहेवाय छे. विवेचन ते विवेक. हेय (त्याग करवा लायक) अने उपादेय (ग्रहण करवा लायक) नी जे परीक्षा ते विवेक कहेवाय छे तेमां, धन उपार्जन करवामां, राजनीतिमां अने कुळनीति विगेरेमां जे निपुणता ते लौकिक विवेक—द्रव्यविवेक कहेवाय छे, अने लोकोत्तर एवो भावविवेक तो धर्मनीति जाणनारने होय छे. तेमां पण स्वजन, द्रव्य अने पोताना देहादिकमां जे राग–तेनी वहेंचण करवी अर्थात् करवा योग्य नथी एम विचारवुं, ते बाह्यविवेक कहेवाय छे; अने अशुद्ध चेतनाथी उत्पन्न थयेल ज्ञानावरणादिक द्रव्यकर्म तथा विभावादिक भावकर्म–तेनी जे वहेंचण करवी–विभाग करवो ते अभ्यंतर विवेक कहेवाय छे. कह्युं छे के—

देहात्माद्यविवेकोऽयं, सर्वदा सुलभो भवेत् ।
भवकोट्यापि तद्भेदे, विवेकस्त्वतिदुर्लभः ॥ १ ॥

भावार्थ—" देह एज आत्मा छे इत्यादि जे अविवेक ते तो सर्वदा सुलभ छे; पण ते बन्नेना भेदमां (भेद संबंधी) जे विवेक ते कोटीभवे पण अति दुर्लभ छे. "

विस्तरार्थ—" आत्माना त्रण भेद छे. बाह्यात्मा, अन्तरात्मा अने परमात्मा. जेने देह, मन, वाणी विगेरेमां आत्मत्व बुद्धि छे, एटले देहज आत्मा छे विगेरे. ए प्रमाणे सर्व पौद्गलिक प्रवर्तनमां जेने आत्मत्व बुद्धि छे ते बाह्यात्मा कहेवाय छे. ते मिथ्यादृष्टि छे. कर्म सहित अवस्थामां पण ज्ञानादि उपयोग लक्षणवाळा, निर्विकार, अमर, अव्याबाध अने समग्र परभावथी मुक्त एवा आत्माने विषेज जेने आत्मबुद्धि छे ते अन्तरात्मा कहेवाय छे. अविरति सम्यग्दृष्टि (चोथा) गुणस्थानकथी आरंभीने बारमा क्षीणमोह गुणस्थानक सुधी अंतरात्मा कहेवाय छे, अने जे केवळज्ञान तथा केवळदर्शनना उपयोगवाळा छे ते परमात्मा कहेवाय छे. ते तेरमा चौदमा गुणस्थानके होय छे. आवा भेदना विवेके करीने सर्व साध्य छे.

देह ते शरीर अने आदिशब्दथी मन वाणी ने काया तेने विषे ' आज

आत्मा छे ' एम जे मानवुं ते अविवेक छे. ते अविवेक संसारमां सर्वदा सुलभ छे; ने शरीर अने आत्मानी भिन्नतानुं जे विवेचन करवुं ते विवेक छे; तेवो विवेक कोटीभवे पण अति दुर्लभ छे. सम्यग्दृष्टि जीवनेज तेवुं भेदज्ञान होय छे. "

संयमास्त्रं विवेकेन, शाणेनोत्तेजितं मुनेः ।
धृतिधारोल्बणं कर्म–शत्रुच्छेदक्षमं भवेत् ॥ १ ॥

भावार्थ—" विवेकरूपी शराणे करीने तेजस्वी करेलुं अने धृति (संतोष) रूप तीच्ण धारवाळुं परभावनिवृत्तिरूप जे संयमरूपी शस्त्र ते ज्ञानावरणादि कर्मरूपी शत्रुनो नाश करवाने समर्थ थाय छे. "

आ जीव अनादिकाळथी मिथ्यात्व, असंयम अने अज्ञानथी अधिष्ठित थयेलो होवाथी संसारमां परिभ्रमण करे छे. तेज जीव त्रिलोकना वत्सल एवा जिनेश्वरे कहेला श्रेष्ठ आगमना तत्त्वरसनुं पान करवावडे स्व–परना विवेकने प्राप्त करीने परभाव अने विभागथी निवृत्त थइ परम स्वरूपनो साधक थाय छे. आ संबंधमां उदाहरण छे ते नीचे प्रमाणे—

श्रमणभद्रनी कथा.

चंपानगरीमां जितशत्रु राजाने श्रमणभद्र नामे पुत्र हतो. तेणे एक दिवस धर्मघोष नामना गुरुमहाराज पासे धर्मोपदेश सांभळ्यो के—

यथा योधैः कृतं युद्धं, स्वामिन्येवोपचर्यते ।
शुद्धात्मन्यविवेकेन, कर्मस्कन्धोर्जितं तथा ॥ १ ॥

भावार्थ—" जेम सुभटोए करेलुं युद्ध राजाने विषे उपचार कराय छे, एटले युद्धनुं जयपराजयरूपी फळ राजामां आरोपण कराय छे—आ राजा जीत्यो ने आ राजा हार्यो एम कहेवाय छे, तेम अविवेक अने असंयमे करीने बंधायेला कर्मस्कंधोना साम्राज्यनो आरोप पण शुद्ध आत्माने विषेज कराय छे. "

इत्यादि धर्मोपदेश सांभळीने कामभोगथी विरक्त थयेला ते महात्माए दीक्षा ग्रहण करी. गुरुनी कृपाथी ते श्रमणभद्र मुनि श्रुतसागरनो पार पाम्या,

अने गुरुनी आज्ञाथी एकलविहार प्रतिमा अंगीकार करी. अन्यदा ते मुनि नीची भूमिवाळा प्रदेशोमां विहार करतां शरदृऋतुने समये कोइ मोटा अरण्यमां रात्रीने विषे प्रतिमा धारण करीने रह्या. त्यां सोयनी जेवा तीक्ष्ण मुखवाळा हजारो डांसो ते मुनिना कोमळ शरीर उपर लागीने तेमनुं लोही पीवा लाग्या. डंखवामां तत्पर एवा निरंतर वळगी रहेला ते डांसोए करीने सुवर्णना वर्ण जेवा ते मुनि जाणे लोहना वर्ण जेवा होय तेम श्यामवर्ण थइ गया. ते डांसोना डंखथी मुनिना शरीरमां महा वेदना थती हती तोपण क्षमाधारी ते मुनि तेने सहन करता हता, अने ते डांसोने उडाडता पण नहोता. उलटो ते एवो विचार करता हता के " आ व्यथा मारे शी गणत्रीमां छे ? आथी अनन्तगणी वेदना नरकमां में अनन्तीवार सहन करी छे. केमके—

परमाधार्मिकोत्पन्ना, मिथोजाः क्षेत्रजास्तथा ।
नारकाणां व्यथा वक्तुं, पार्यते ज्ञानिनापि न ॥ १ ॥

भावार्थ—" नारकीओनी परमाधार्मिके उत्पन्न करेली, परस्परनी करेली तथा क्षेत्रथी उत्पन्न थयेली व्यथानुं संपूर्ण वर्णन करवाने ज्ञानीओ पण समर्थ नथी. " वळी

अन्यद्वपुरिदं जीवाज्जीवश्चान्यः शरीरतः ।
जानन्नपीति को दक्षः, करोति ममतां तनौ ॥ २ ॥

भावार्थ—" आ शरीर जीवथी भिन्न छे, अने आ जीव शरीरथी जूदो छे. ए प्रमाणे जाणता छतां पण कयो डाह्यो माणस शरीरपर ममता करे ? "

" देह ए पुद्गळनो पिंड छे, अने ते अनित्य छे. जीव अमूर्त अने अचळ (नित्य) छे. ते जीव अनन्त ज्ञान, दर्शन अने चारित्र धर्मवाळो छे, चैतन्य स्वरूप छे, स्व (पोताना) रूपनो कर्त्ता छे, स्व-रूपनो भोक्ता छे, स्व-रूपमांज रमण करनार छे, भवभ्रमणथी श्रान्त थयेलो छे अने पौद्गलिक परभावना कर्तृत्वादि धर्मथी रहित छे "

इत्यादि विवेक करीने शुभ भाव भावता सता ते मुनि ते महा व्यथाने सहन करता हता. ते डांसोथी तेमना शरीरनुं सघळुं लोही शोषाइ गयुं, तेथी

तेज रात्रीए ते मुनि काळ करीने स्वर्गे गया.

" आ प्रमाणे विवेक गुणने हृदयमां धारण करवाथी श्रमणभद्र मुनि स्वर्गसुखने पाम्या. तेज प्रमाणे बीजा पण निपुण मुनिवरोए आ जिनवचनने अंगीकार करवा."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ द्वाविंशतितमस्तंभस्य अष्टादशाधिकात्रिशततमः प्रबंधः ॥ ३१८ ॥

व्याख्यान ३१९ मुं.

माध्यस्थ्य गुण विषे.

रागकारणसंप्राप्ते, न भवेद्रागयुग्मनः ।
द्वेषहेतौ न च द्वेष-स्तन्माध्यस्थ्यगुणः स्मृतः ॥ १ ॥

भावार्थ—" रागनुं कारण प्राप्त थया छतां पण जेनुं मन रागयुक्त थतुं नथी, तेमज द्वेषनुं कारण प्राप्त थया छतां पण जेना मनमां द्वेष उत्पन्न थतो नथी ते माध्यस्थ्य गुण कहेवाय छे." आ प्रसंग उपर कथा कहे छे—

अर्हन्मित्रनी कथा.

कोइ एक नगरमां अर्हद्दत्त अने अर्हन्मित्र नामना बे भाइओ रहेता हता. तेमां अर्हन्मित्रनो आत्मा हमेशां धर्ममां प्रीतिवाळो हतो. ते हमेशां गुरुमहाराजना मुखथी धर्मोपदेश सांभळतो हतो. एकदा श्री गुरुए व्याख्यानमां माध्यस्थ्य गुणनुं वर्णन कर्युं. ते आ प्रमाणे—

स्थीयतामनुपालंभं, मध्यस्थेनान्तरात्मना ।
कुतर्ककर्करक्षेपै-स्त्यज्यतां बालचापलम् ॥ १ ॥

भावार्थ—" हे भव्य प्राणीओ ! कुतर्करूपी कांकरा नांखवावडे बाळ अज्ञ-एकांत ज्ञानमां रक्त तेनुं जे चापल्य ते मूकी दो; अर्थात् कुतर्के करीने वस्तुस्वरूपनी अपेक्षारहित वचनवाळी चपळतानो त्याग करो, अने मध्यस्थ एटले रागद्वेष रहित एवा अन्तरात्माए (साधक आत्माए) करीने आत्मस्वरूपना घातरूप उपालंभ रहित रहो."

स्वस्वकर्मकृतावेशाः, स्वस्वकर्मभुजो नराः ।
न रागं नापि च द्वेषं, मध्यस्थस्तेषु गच्छति ॥ २ ॥

भावार्थ—" प्राणीओ पोतपोताना कर्मना उदयथी शुभ के अशुभ फळनी प्राप्ति थये सते पोतपोताना कर्मना फळनेज भोगवे छे. एम धारीने समान चित्तवृत्ति धारक माध्यस्थ गुणधारी माणस ते शुभाशुभ कर्मना उदयमां राग के द्वेषने धारण करता नथी."

मनः स्याद्व्यापृतं यावत्, परदोषगुणग्रहे ।
कार्यं व्यग्रं वरं ताव—न्मध्यस्थेनात्मभावने ॥ ३ ॥

भावार्थ—" ज्यारे मन परना दोष अथवा गुणने ग्रहण करवामां प्रवृत्त थाय, त्यारे मध्यस्थ पुरुषे ते मनने आत्मभावनामां सारी रीते व्यग्र करवुं-रोकी राखवुं तेज श्रेष्ठ छे."

आ श्लोके करीने—" अमूर्त एवा आत्माना अगुरुलघुपणुं, षट् गुण हानि वृद्धिए परिणमन अने उत्पाद, व्यय, ध्रौव्य विगेरे लक्षणवाळा स्वरुपनुं चिंतन करवामां व्यग्र थयेला प्राणीने संसारना गुणदोषनुं चिंतन करवानो अवकाशज मळतो नथी; तेथी करीने निर्ग्रंथ मुनिओ तेनुंज चिंतन करे छे, भावना चक्रने भावे छे, द्रव्यानुयोग ग्रन्थना प्रश्नो करे छे, अने परस्पर स्वभाव विभावना परिणमननुं अवलोकन करे छे इत्यादि सूचित थाय छे." वळी

विभिन्ना अपि पन्थानः, समुद्रं सरितामिव ।
मध्यस्थानां परं ब्रह्म, प्राप्नुवन्त्येकमक्षयम् ॥ ४ ॥

भावार्थ—"नदीओने समुद्र प्रत्ये मळवाना अनेक जूदा जूदा मार्गो होय

छे, तेम मध्यस्थ पुरुषो पण अनेक मार्गोवडे एक अक्षय परब्रह्मने पामे छे; अर्थात् द्रव्याचरणथी आरंभीने शुक्लध्यान सुधीना सर्व साधनो—मार्गसाधननी पद्धतिओ जूदी जूदी छतां सम्यक् दृष्टि अपुनर्बंधकथी मांडीने जिनकल्पी विगेरे मध्यस्थ भाववर्ती जीवोने ते सर्व एक परब्रह्मने पमाडे छे; केमके सर्व साधनो-उपायो एक शुद्ध आत्मस्वरूपमांज अवतरे छे, अने ते सर्वनुं मोक्ष साधन करवुं ते एकज साध्य छे."

स्वागमं रागमात्रेण, द्वेषमात्रात् परागमम् ।
न श्रयामस्त्यजामो वा, किं तु मध्यस्थया दृशा ॥ ५ ॥

भावार्थ—" अमे रागमात्रे करीनेज जिनागमनो आश्रय करता नथी. एटले के अमारी कुळपरंपराथी चालतो आवेलो धर्म आ छे, माटे अमारे तेनोज आश्रय करवो जोइए एम धारीने तेनो आदर करता नथी, तेमज कपिलादिक परशास्त्र परकीय छे एवा द्वेषमात्रथीज अमे तेनो त्याग करीए छीए तेम नथी. पण यथार्थ वस्तुस्वरूपनी प्ररूपणावडे ते सम्यग्ज्ञाननुं कारण छे, एम मध्यस्थ दृष्टिवडे परीक्षा करीनेज अमे तेनो आश्रय करीए छीए." कह्युं छे के—

पक्षपातो न मे वीरे, न द्वेषः कपिलादिषु ।
युक्तिमद्वचनं यस्य, तस्य कार्यः परिग्रहः ॥ १ ॥

भावार्थ—"मारे वीरस्वामीना पर पक्षपात नथी, तेमज कपिलादिक (अन्य धर्मीओ) उपर द्वेष नथी; पण जेनुं वचन युक्तिवाळुं होय तेनुंज वचन ग्रहण करवा लायक छे." एवो मारो निश्चय छे.

न श्रद्धयैव त्वयि पक्षपातो, न द्वेषमात्रादरुचिः परेषु ।
यथावदाप्तत्वपरीक्षया तु, त्वमेव वीरं प्रभुमाश्रयामः ॥२॥

भावार्थ—" हे वीरस्वामी ! मात्र श्रद्धाए करीनेज तमारे विषे मारो पक्षपात छे एम नथी, तेमज मात्र द्वेषथीज बीजाओपर अरुचि छे एम पण नथी; परंतु यथास्थित आप्तपणानी परीक्षाए करीनेज तमने (वीरभगवानने) अमे आश्रयीए छीए—तमारो आश्रय करीए छीए."

इत्यादि गुरुना मुखथी धर्मदेशना सांभळीने अर्हन्मित्रे स्वदारासंतोषरूप नियम ग्रहण कर्यो. हवे तेना मोटा भाइनी वहु ते दियरपर आसक्त थइने हावभाव कटाक्षपूर्वक मधुर वाणीथी तेने निरंतर अनुकूळ उपसर्ग करवा लागी; परंतु अर्हन्मित्र तेनापर किंचित् पण आसक्त थयो नहीं; आ प्रमाणेनुं स्त्रीचरित्र जोइने पोताना व्रतना रक्षण माटे तेणे पांच महाव्रत उच्चरी दीक्षा ग्रहण करी. तेनापर आसक्त थयेली ते मोटा भाइनी वहु मरीने कूतरी थइ. एकदा अर्हन्मित्र मुनि विहार करतां ते कूतरी हती त्यां आव्या. तेने जोइने ते कूतरीए तेने पतिनी जेम आलिंगन कर्युं. ते जोइ लज्जाथी मुनि नासी गया. ते कूतरी पण मरीने मोटा अरण्यमां वानरी थइ. भवितव्यताना योगथी ते अरण्यमां ते मुनि आवी चड्या. तेने जोइने ते वानरी प्रथमनीज जेम रागथी तेने आलिंगन करवा लागी. ते जोइ बीजा साधु ते मुनिनी वानरीपति कहीने मश्करी करवा लाग्या. ते सांभळीने लज्जाथी क्रोधयुक्त थइने मुनि त्यांथी नासी गया. ते वानरी मरीने यक्षिणी थइ. ते मुनिने जोइने तेने जातिस्मरण थयुं.[1] तेथी तेणे विचार्युं के " आ मुनिनी में घणा भवथी वांछा करी छे, पण ते हजु मने इच्छता नथी, तेथी आजे तो हुं तेने आलिंगन करुं. " एम विचारीने तेणे मुनिने आलिंगन कर्युं. ते जोइने मुनि त्यांथी नाठा. मार्गमां नदीने ओळंगवा माटे ते मुनि जळमां प्रवेश करता हता तेवामां ते यक्षिणीए ते मुनिनो एक पग छेदी नांख्यो. ते जोइने शासनदेवीए ते यक्षिणीने ताडना करी कह्युं के " हे पापिणी ! तुं आ मुनिनो पराभव करे छे ते योग्य नथी. तारो पूर्वभव सांभळ. " एम कही तेने तेनो पूर्वभव कह्यो. ते सांभळीने ते यक्षिणीए मुनिने मिथ्यादुष्कृत आपीने खमाव्या. पछी शासनदेवीए पोताना दिव्य प्रभावथी मुनिनो छेदायेलो पग साजो कर्यो. मुनि पण विशेष प्रकारे संयमनुं प्रतिपालन करीने स्वर्गे गया. त्यांथी च्यवी अनुक्रमे मोक्षपद पामशे. (आ कथा प्रथम लखी गया छतां प्रसंगने लीधे अहीं फरीवार लखी छे).

" पोताना मोटा भाइनी स्त्रीए घणी विडंबना पमाडी तेमज अन्य जनोए

१ सामान्य व्यंतरीओनुं अवधिज्ञान बहु अल्प होय छे, तेथी तेनावडे ते ओळखी के जाणी शकती नथी पण जातिस्मरण थवाथी जाणी शके छे.

मश्करी करी तोपण अर्हन्मित्रे मध्यस्थभाव छोड्यो नहीं. ते प्रमाणे सर्व मुनिए आचरण करवुं."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ द्वाविंशतितमस्तंभस्य एकोनविंशत्यधिकत्रिशततमः प्रबंधः ॥ ३१९ ॥

व्याख्यान ३२० मुं.

निर्भयता गुण विषे.

एकं ब्रह्मास्त्रमादाय, निघ्नन्मोहचमूं मुनिः ।
बिभेति नैव संग्राम–शीर्षस्थ इव नागराट् ॥ १ ॥

भावार्थ—"ब्रह्मज्ञान एटले आत्मस्वरूपनो अवबोध तेरूप अद्वितीय शस्त्रने–ब्रह्मास्त्रने ग्रहण करीने संग्रामने मोखरे रहेला गजवरनी जेम मोहरूपी सैन्यने हणता एवा आत्मस्वरूपमां आसक्त मुनि कोइ वखत पण भय पामता नथी. कष्टमां पड्या सता पण कर्मना पराजयमां प्रवर्त्ते छे–तेनो भय धरावता नथी; केमके ते शरीरादिक समग्र परभावथी विरक्त होय छे." आ संबंधमां स्कंदक ऋषिनी कथा छे ते आ प्रमाणे—

स्कन्दक मुनिनी कथा.

श्रावस्ती नगरीमां जितशत्रु राजानो पुत्र स्कन्दक नामे हतो. ते राजाने पुरन्दरयशा नामे एक कन्या हती. तेने राजाए कुंभकार नगरना राजा दंडकने परणावी हती. ते दंडक राजाने पालक नामनो दुष्ट अने अभव्य पुरोहित हतो.

अन्यदा वीशमा तीर्थंकर श्री मुनि सुव्रतस्वामी श्रावस्तीनगरीमां समवसर्या. तेमनुं आगमन सांभळीने पोताने धन्य मानतो स्कन्दक प्रभुने वांदवा गयो. त्यां प्रभुनी देशना सांभळीने तेणे श्रावकधर्म अंगीकार कर्यो. एकदा पालक पुरोहित

कांइक राजकार्य माटे श्रावस्ती नगरीए आव्यो. तेणे राजसभामां मुनीओनी निंदा करी. ते सांभळी स्कन्दके तेनो पराजय करी निरुत्तर कर्यो; तेथी ते पालक स्कन्दकनी उपर द्वेष धारण करतो पोताने स्थाने गयो. अनुक्रमे भोगविलास संबंधी सुख भोगवीने विरक्त चित्तवाळा स्कन्दके पांचसो माणस सहित श्री जिनेन्द्र पासे दीक्षा ग्रहण करी. अनुक्रमे गीतार्थ थया, त्यारे प्रभुए ते पांचसो साधुने तेना शिष्य तरीके आप्या.

एकदा स्कन्दकाचार्ये श्री प्रभुने पूछ्युं के "हे स्वामी! जो आपनी आज्ञा होय तो हुं मारी व्हेनना देशमां जाउं." प्रभु बोल्या के "त्यां सर्व साधुओने मरण पर्यंतनो उपद्रव उत्पन्न थशे." स्कन्दके पूछ्युं के "हे स्वामी! ते उपसर्गमां अमे सर्वे आराधक थइशुं के विराधक थइशुं?" स्वामीए कह्युं के "एक तमारा विना बीजा सर्वे साधुओ आराधक थशे." ते सांभळीने निर्भय एवा स्कन्दके विचार्युं के "जे विहारमां आटला बधा साधु आराधक थाय ते खरेखर शुभकारीज विहार छे." एम विचारीने ५०० साधुओ सहित स्कन्दकाचार्ये त्यांथी विहार कर्यो. अनुक्रमे कुंभकार नगरना उपवनमां आव्या. तेमना आववाना खबर सांभळीने दुष्ट पालके स्कन्दक उपरनुं प्रथमनुं वेर लेवा माटे ते उद्यानमां प्रथमथी गुप्त रीते विविध प्रकारनां शस्त्रो दाटी राख्यां. पछी तेणे राजाने कह्युं के "हे स्वामी! आपणा गामना उद्यानमां स्कन्दक आव्या छे, ते पोतेज महा बळवान छे, उपरांत भुजदंडना प्रचंड विक्रमवाळा अने साधुना वेषने धारण करनारा पांचसो सुभटोने साथे लाव्या छे, ते सर्वेनां शस्त्रो ते उद्याननी पृथ्वीमां तेणे गुप्त राख्यां छे; ज्यारे तमे तेने वांदवा जशो त्यारे ते तमने मारीने तमारु राज्य लइ लेवाना छे. आपने मारा वचनपर विश्वास न आवतो होय तो आप जातेज जइने उद्यानमां संताडेलां शस्त्रो जोइ खात्री करो." ते सांभळीने राजा पालकनी साथे उद्यानमां गया. त्यां पालके तेने गुप्त राखेलां शस्त्रो काढीने बताव्यां. ते जोइ राजाए क्रोधथी सर्व साधुओने बंधावीने ते पालकनेज सोंप्या, अने तेने कह्युं के "हे पालक! तारी मरजीमां आवे तेवी शिक्षा आ सर्वने कर." ते सांभळीने हर्ष पामेलो पालक सर्व साधुओने मनुष्यने पीलवाना यंत्र (घाणी) पासे लइ गयो. पछी तेणे सर्वने कह्युं के "तमे सर्वे तमारा इष्ट देवनुं स्मरण करो; केमके आ घाणीमां नांखीने तमने सर्वने हुं हमणां पीली नांखीश." ते सांभळीने जीववानी

तथा मरवानी इच्छाथी रहित-निर्भय एवा सर्वे साधुओए अंतिम आराधना करी. पछी ते दुष्ट पालक आचार्यने घाणी पासे बांधी राखी तेनी नजरे एक पछी एक साधुने घाणीमां नाखीने पीलवा लाग्यो ! ! सूरिए किंचित् पण खेद कर्या विना समयने योग्य एवां वाक्योथी ते सर्वनी निर्यामणा करी. ते आ प्रमाणे--

> भिन्न: शरीरतो जीवो, जीवाद्भिन्नश्च विग्रह: ।
> विदन्निति वपुर्नाशे-ऽप्यन्तः खिद्येत कः कृती ॥ १ ॥

भावार्थ—" जीव शरीरथी भिन्न छे. अने शरीर जीवथी भिन्न छे. ए प्रमाणे जाणनार कयो पंडित पुरुष शरीरनो नाश थाय तोपण अंतःकरणमां खेद करे ? "

इत्यादि अनेक युक्तिथी सूरिए बोध पमाडेला, शत्रु तथा मित्रने विषे समान दृष्टिवाळा अने क्षमारूपी धनवाळा ते सर्व साधुओ अनुक्रमे केवळज्ञान पामीने मोक्षे गया. आ प्रमाणे ते पापी पालके चारसो ने अठ्ठाणुं साधुओनो नाश कर्यो! पछी छेवटना एक क्षुल्लक (बाळक) साधुने पीलवा तैयार थयेला पालकने आचार्ये कह्युं के " हे पालक ! आ दया करवा योग्य बाळकने पीलतो जोवाने हुं शक्तिमान नथी, माटे तेनी पहेलां मने पील, अने पछी तेने पीलजे ! " ते सांभळीने आचार्यने वधारे दुःखी करवानी इच्छाथी तेना देखतां पालके प्रथम ते बाळक साधुनेज पीलवा मांड्यो. ते पण महा धैर्यवान बाळसाधु गुरुनी निर्यामणाथी मोक्षे गया. पालकना एवा दुष्कृत्यने जोइने दुःखित हृदयवाळा आचार्ये क्रोध करीने विचार्युं के " आ पापीए परिवार सहित मारो नाश कर्यो, छेवट एक क्षुल्लक साधुने पण में कह्या छतां एक क्षणवार पण बचाव्यो नहीं; तो हवे जो मारा दुष्कर तपनुं कांइ फळ होय तो आवता जन्ममां आ दुष्ट पुरोहित, राजा अने आ आखा देशनो हुं बाळनार थाउं. " आ प्रमाणे निदान करीने स्कन्धकाचार्य ते पापीथी पीलाइ मृत्यु पामी वह्निकुमारमां देव थया.

हवे तेज दिवसे स्कंदक सूरिनी व्हेन पुरंदरयशाने विचार थयो के " केम आजे नगरमां साधुओ जणाता नथी ? " आ प्रमाणे विचार करे छे तेवामां स्कन्दकाचार्यनुं लोहीवाळुं रजोहरण उपाडीने कोइ गीध पक्षीए भवितव्यताने योगे ते राणीनी पासेज पडतुं मूक्युं. ते लइने उखेळतां तेने मालम पड्युं के " आ कांबळनो ककडो मेंज मारा भाइने तैयार करीने दीक्षा वखते आप्यो हतो. " आ

निशानीथी मुनिओने हणायेला जाणीने खेद पामेली राणीए राजाने कह्युं के "रे दुष्ट ! आ शुं मोटुं अकार्य कर्युं ? आ महापापथी तने मोटी व्यथा प्राप्त थशे." एम कहीने वैराग्यथी पुरन्दरयशा दीक्षा लेवा उत्सुक थइ. ते जाणीने तरत ज शासनदेवताए तेने श्री मुनिसुव्रतस्वामी पासे मूकी, त्यां तेणे दीक्षा लइ परलोकनुं कार्य साध्युं.

हवे पेला स्कन्दक देवताए अवधिज्ञानवडे पोतानो पूर्व वृत्तान्त जाणी महा क्रोधथी आखा देश सहित कुंभकारनगरने बाळी नांख्युं. तेथी ते स्थान मोटुं अरण्य थयुं. ते देशनो राजा दंडक होवाथी त्यां थयेलुं अरण्य हजु सुधी पण दंडकारण्यने नामे प्रसिद्ध छे.

" गुणना समूहने धारण करनारा चारसो ने नवाणुं साधुओए जेम निर्भयतारूप गुणनो त्याग कर्यो नहीं, तेम साधुओए पण ते गुणनो त्याग करवो नहीं, अने स्कन्दकाचार्यनी जेम क्रोध करवो नहीं. "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ द्वाविंशतितमस्तंभस्य विंशत्यधिकत्रिशततमः प्रबंधः ॥ ३२० ॥

व्याख्यान ३२१ मुं.

आत्मप्रशंसा विषे.

गुणैर्यदि न पूर्णोऽसि, कृतमात्मप्रशंसया ।
गुणैरेवासि पूर्णश्चेत्, कृतमात्मप्रशंसया ॥ १ ॥

भावार्थ—" जो केवळज्ञानादिक गुणोए करीने पूर्ण न हो तो आत्मश्लाघाथी सर्युं, केमके गुणरहित आत्मानी शी प्रशंसा करवी ? अने जो सम्यग् रत्नत्रयादिक गुणोए करीने पूर्ण हो, तोपण आत्मानी प्रशंसा करवाथी सर्युं.

केमके वाणीवडे मात्र आत्मानी श्लाघा करवाथी शुं ? शुद्ध गुणो पोतानी जाते ज प्रगट थाय छे."

आलंबिता हिताय स्युः, परैः स्वगुणरश्मयः ।
अहो स्वयं गृहीतास्तु, पातयन्ति भवोदधौ ॥ २ ॥

भावार्थ—"अन्य जनोए पोताना गुणरूप रज्जुनुं आलंबन कर्युं होय तो ते कल्याणने माटे थाय छे; पण ते गुणरूपी रज्जुनुं पोतेज ग्रहण कर्युं होय तो ते भवसमुद्रमां नांखे छे, ते मोटुं आश्चर्य छे."

पोताना गुणनुं अन्य जनो स्मरण चिंतन विगेरे करे तो तेमनुं कल्याण थाय छे अने पोताने सुखने माटे थाय छे, पण पोते ज पोताना गुणनी श्लाघा करे तो ते उलटा भवसागरमां नांखे छे, माटे पोताना गुणनी श्लाघा कदि पण पोते करवी नहीं. आ प्रसंग उपर मरिचिकुमारनी कथा छे ते आ प्रमाणे—

मरिचिकुमारनी कथा.

भरत चक्रवर्तीनो पुत्र मरिचिकुमार एक वखत चक्रीनी साथे आदीश्वर भगवानने वंदन करवा गयो. त्यां श्री ऋषभस्वामीना मुखथी स्याद्वाद धर्मनुं श्रवण करी प्रतिबोध पामीने तेणे दीक्षा ग्रहण करी. स्थविर मुनिओनी पासे रहीने अगियार अंग भण्या अने स्वामीनी साथे चिरकाळ विहार कर्यो.

एकदा ग्रीष्मऋतुना तापथी पीडा पामेला मरिचि मुनि चारित्रावरण कर्मनो उदय थवाथी आ प्रमाणे विचारवा लाग्या के "मेरुपर्वत जेटला भारवाळा अने वहन न थइ शके तेवा मुनिना गुणोने वहन करवा सुखनी आकांक्षावाळो हुं निर्गुणी हवे समर्थ नथी, तो शुं हवे हुं लीधेला व्रतनो त्याग करुं ? ना, त्याग करवाथी तो लोकमां मारी हांसी थाय; परंतु व्रतनो सर्वथा भंग न थाय अने मने क्लेश पण न थाय तेवो एक उपाय मने सुझ्यो छे, ते ए के आ पूज्य मुनिवरो हमेशां मन वचन अने कायाना त्रणे दंडथी रहित छे, पण हुं तो ते त्रणे दंडथी पराभव पामेलो छुं, माटे मारे त्रिदंडनुं चिन्ह हो. आ मुनिओ जितेन्द्रिय होवाथी केशनो लोच करे छे, अने हुं तेथी जीतायेलो होवाथी मारे अस्त्राथी मुंडन हो, तथा मस्तकपर शिखा हो. आ मुनिओ महाव्रतने धारण करनारा छे, अने

हुं तो अणुव्रतने धारण करवा समर्थ छुं. आ मुनिओ सर्वथा परिग्रहथी रहित छे, पण मारे तो एक मुद्रिकामात्र परिग्रह हो. आ मुनिओ मोहना ढांकण रहित छे, अने हुं तो मोहथी आच्छादित छुं, तेथी मारे माथे छत्र धारण करवापणुं हो. आ महा ऋषिओ पगमां उपानह पहेर्या विना विचरे छे, पण मारे तो पगनी रक्षा माटे उपानह हो. आ मुनिओ शीलवडेज सुगंधी छे, पण हुं शीलथी भ्रष्ट होवाथी मारे दुर्गंधीने सुगंध माटे चंदननां तिलकादि हो. आ मुनिओ कषायरहित होवाथी श्वेत वस्त्र धारण करे छे, पण हुं क्रोधादिक कषायवाळो होवाथी मारे कषाय रंगवाळा वस्त्र हो. आ मुनिओ बहु जीवोनी हिंसावाळा सचित्त जळना आरंभने तजे छे, पण मारे तो स्नान तथा पान परिमित जळथी हो." आ प्रमाणे चारित्रनो निर्वाह करवा संबंधी कष्ट सहन करवामां कायर थयेला मरिचिए पोतानी बुद्धिथी विकल्प करीने परिव्राजकनो नवो वेष अंगीकार कर्यो.

तेने तेवो नवीन वेषधारी जोइने सर्व लोक धर्म पूछता हता; परंतु मरिचि तो श्री जिनेश्वरे प्ररूपेलो साधुधर्मज कहेतो हतो. सर्वनी पासे ज्यारे ते एवी शुद्ध धर्मदेशनानुं प्ररूपण करतो, त्यारे लोको तेने पूछता के "त्यारे तमे पोते केम तेवा धर्मनुं आचरण करता नथी?" तेना जवाबमां ते कहेतो के "हुं ते मेरु समान भारवाळा चारित्रने वहन करवा समर्थ नथी." एम कहीने पोताना सर्व विकल्प कही बतावतो हतो. ए प्रमाणे तेमना संशय दूर करीने प्रतिबोध पमाडेला ते भव्य जीवो ज्यारे दीक्षा लेवा तैयार थता, त्यारे तेमने मरिचि श्री युगादीश पासेज मोकलतो हतो. आ प्रमाणे आचार पाळतो मरिचि स्वामीनी साथेज विहार करतो हतो. अनुक्रमे विहार करतां स्वामी फरीथी विनीतानगरीमां समवसर्या. भरतचक्रीए आवीने प्रभुने वंदना करी. पछी भविष्यमां थवाना तीर्थंकर, चक्रवर्ती, वासुदेव विगेरेनुं स्वरूप पूछयुं; एटले प्रभुए ते सर्वनुं वर्णन यथास्थित कर्युं. फरीथी चक्रीए पूछयुं के "हे स्वामी! आ पर्षदामां एवो कोइ जीव छे के जे आ भरतक्षेत्रमां आपनी जेवो तीर्थंकर थवानो होय?" स्वामी बोल्या के "आ तारो पुत्र मरिचि आ भरतक्षेत्रमां वीर नामे चोवीशमा तीर्थंकर थशे अने प्रथम वासुदेव थशे, तथा महाविदेहक्षेत्रमां चक्रवर्ती थशे." ते सांभळीने भरतचक्री मरिचि पासे जइ तेने प्रदक्षिणा पूर्वक वंदना करीने बोल्या के "तमारुं आ परिव्राजकपणुं वंदन करवा योग्य नथी; पण तमे भावी तीर्थंकर छो, तेथी हुं तमने वांदुं

छुं." एम कहीने प्रभुए कहेलुं सर्व वृत्तांत चक्रीए मरिचिने कही बताव्युं. ते सांभळीने मरिचि महा हर्षथी पोतानी काखलीनुं त्रण वार आस्फोटन करीने उंचे स्वरे बोल्यो के " हुं पहेलो वासुदेव थइश, मूका नगरीमां हुं चक्रवर्ती थइश, तथा छेल्लो तीर्थंकर पण हुं थइश. तेथी हवे मारे बीजी कांइ पण इच्छा नथी." वळी

> आद्योऽहं वासुदेवानां, पिता मे चक्रवर्तिनाम् ।
> पितामहस्तीर्थकृता-महो मे कुलमुत्तमम् ॥ १ ॥

भावार्थ—" हुं वासुदेवोमां पहेलो, मारा पिता चक्रवर्तीओमां पहेला, अने मारा पितामह तीर्थंकरोमां पहेला, अहो ! मारुं कुळ केवुं उत्तम छे ? " इत्यादि आत्मप्रशंसा करवाथी तेणे नीच गोत्रकर्म उपार्जन कर्युं.

एकदा ते मरिचिना शरीरमां व्याधि उत्पन्न थयो. तेनी सारवार कोइ साधुए करी नहीं, तेथी ते ग्लानि पामीने विचार करवा लाग्यो के "अहो ! आ साधुओ दाक्षिण्यगुणथी रहित छे. मारी सारवार करवी तो दूर रही, पण मारा सामुं पण जोता नथी, अथवा में आ खोटो विचार कर्यो; केमके आ मुनिजनो पोताना देहनी पण परिचर्या करता नथी, तो पछी मारी भ्रष्ट चारित्रवाळानी सारवार तो शेनीज करे ? माटे हवे तो आ व्याधि शांत थाय एटले एक शिष्य करुं." एम विचारतां केटलेक दिवसे मरिचि व्याधिरहित थयो.

अन्यदा तेने कपिल नामनो एक कुलपुत्र मळ्यो. तेनी पासे मरिचिए आर्हत धर्मनो उपदेश कर्यो. ते सांभळी कपिले तेने पूछ्युं के " शुं तमारा मतमां तो धर्म रहेलोज नथी ? " ते सांभळीने तेने जिनोक्त धर्ममां आळसु जाणी शिष्य करवानी इच्छावाळा मरिचिए कह्युं के " जैनमार्गमां पण धर्म छे, अने मारा मार्गमां पण धर्म छे. " ते सांभळीने कपिल मरिचिनो शिष्य थयो. आवो मिथ्या धर्मनो उपदेश करवाथी मरिचिए एक कोडाकोड सागरोपम प्रमाण संसार उपार्जन कर्यो. पछी ते पापनी आलोचना कर्या विना अनशनवडे मृत्यु पामीने ब्रह्म देवलोकमां देवता थयो. कपिल पण पोताना परिव्राजक धर्मनो उपदेश दइ घणा शिष्यो करी मृत्यु पामीने ब्रह्म देवलोकमां देवता थयो. ते कपिल देवे अवधिज्ञानवडे पोतानो पूर्व भव जाणीने मोहथी पृथ्वीपर आवी पोते प्रकट करेला सांख्य मतनो आसुर विगेरेने बोध कर्यो. त्यारथी आरंभीने सांख्य दर्शननी प्रवृत्ति थइ.

केमके "घणुं करीने सुखे थइ शके तेवी क्रियामां लोकोनी प्रवृत्ति विशेष थाय छे." तेओ कहे छे के "पचीश तत्त्वने जाणनार माणस क्रिया करे अथवा न करे तोपण ते निश्चे मोक्षपद पामे छे." आवो तेमनो (ज्ञानवादीनो) मत छे. आ स्थळे बीजुं घणुं कहेवानुं छे. ते श्री हेमचंद्राचार्ये रचेला त्रिषष्टि शलाका पुरुष चरित्रना दशमा पर्वथी जाणी लेवुं. अहीं तो आत्मप्रशंसा न करवी एटलुंज आ उपदेशनुं तात्पर्य छे.

"आत्मप्रशंसा करवाथी मरिचिए नीच गोत्रकर्म उपार्जन कर्युं, अने उत्सूत्रनी प्ररूपणा करवाथी असंख्य भव कर्या, माटे भव्य प्राणीओए ते प्रमाणे करवुं नहीं."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ द्वाविंशतितमस्तंभस्य
एकविंशत्यधिकत्रिशततमः प्रबंधः ॥ ३२१ ॥

व्याख्यान ३२२ मुं.

तत्त्वदृष्टि विषे.

रूपे रूपवती दृष्टि–र्दृष्ट्वा रूपं विमुह्यति ।
मज्जत्यात्मनि नीरूपे, तत्त्वदृष्टिस्त्वरूपिणी ॥ १ ॥

भावार्थ—"पुद्गलना स्वरूपने ग्रहण करनारी दृष्टि (चक्षु) श्वेतादिक रूपने जोइने ते रूपमां (वर्णादिमां) मोह पामे छे; पण रूपरहित एवी ज्ञानरूप—आत्मचैतन्यशक्तिलक्षण तत्त्वदृष्टि तो निरूप (रूपरहित) आत्माने विषेज मग्न थाय छे; माटे अनादिकाळथी बाह्य दृष्टिनो त्याग करीने आत्मस्वरूपना उपयोगवाळी आन्तर दृष्टि करवी."

ग्रामारामादि मोहाय, यद्दृष्टं बाह्यया दृशा ।
तत्त्वदृष्ट्या तदेवान्त-र्नित्यं वैराग्यसंपदे ॥ २ ॥

भावार्थ—"बाह्य दृष्टिवडे जे गाम, उद्यान विगेरे जोवामां आवे ते मोहने माटे थाय छे, एटले असंयमनी वृद्धि माटे थाय छे. तेज ग्रामादिकने स्वपरना भेदवाळी-कृत्रिम अने अकृत्रिमना विचारवाळी तत्त्वदृष्टिवडे अन्तःकरणना उपयोगथी जोवामां आवे तो ते निरंतर वैराग्यनी संपत्तिने माटे थाय छे." आ प्रसंग उपर एक दृष्टांत छे ते आ प्रमाणे—

एक आचार्यनुं दृष्टान्त.

ज्ञान अने चारित्रवडे प्रधान, श्रुतना रहस्यनो पार पामेला अने भव्यजीवोने तारवामां समर्थ एवा कोइ एक आचार्य अनेक साधुगण सहित गामे गाम विहार करीने वाचनाए करी (उपदेश आपवावडे) सर्व श्रमणसंघने बोध करता हता. ते आचार्य पांच समिति अने त्रण गुप्तिथी युक्त हता, अने सर्व संयोगमां अनित्यादिक बार भावना भावता हता. ते विहारना क्रमे करीने एकदा एक मोटा वनमां आव्या. ते वन अनेक लता विगेरेए करीने नीलवर्ण लागतुं हतुं, अने तेमां अनेक पक्षीओना समूहे निवास करेलो हतो. ते वननी पुष्प, पत्र अने फळनी लक्ष्मी (शोभा) जोइने सर्व मुनिओ प्रत्ये आचार्य बोल्या के "हे निर्ग्रंथो ! आ पत्र, पुष्प, गुच्छ, गुल्म अने फळोने जुओ. तेमां रहेला जीवो चैतन्यलक्षणरूप अनन्त शक्तिवाळा छतां तेने आवरण करीने रहेला ज्ञानावरण, दर्शनावरण, चारित्रमोहनी, मिथ्यात्वमोहनी अने अंतरायकर्मना उदये करीने दानादिक कांइ पण थइ न शके तेवा एकेन्द्रिय भावने पामेला छे. तेओ वायुथी कंपता, बळहीन, दुःखी, आत्माने कोइ पण प्रकारना शरण विनाना अने जन्म-मरणना भावथी युक्त छे. अहो ! तेओ अनुकंपा करवा योग्य छे. मन, वचन अने नेत्रादिथी रहित एवा आ बिचारा पर कोण दया न करे ?" एम कही सर्वना मनमां संवेग उत्पन्न करीने आगळ चाल्या, तेवामां एक मोटुं नगर आव्युं. ते नगरमां अनेक प्रकारनां गीत अने वाजित्रोना शब्दथी विवाहादिक उत्सवो थता प्रगट रीते देखाता हता, तेथी स्वर्गना जेवुं ते मनोहर लागतुं हतुं. ते नगरने जोइने फरीए सर्व

साधुओने कह्युं के "हे मुनिओ ! आजे आ नगरमां मोह राजानी धाड पडी छे, तेथी आ लोको उछळथा करे छे तेओ आत्मिक भये करीने व्याप्त छे, अहीं प्रवेश करवो आपणाने योग्य नथी. आ लोको लोभपाशथी बंधायेला छे, माटे तेओ अनुकंपाने योग्य छे, परंतु तेओ मोह मदिरानुं पान करीने उन्मत्त थयेला होवाथी उपदेशने योग्य नथी, माटे आपणे आगळ चालो." ते सांभळीने साधुओ बोल्या के "हे गुरु ! आपे अमने सारो उपदेश कर्यो." इत्यादि शुभ योगमां तत्पर थयेला तेओ विहार करवा लाग्या. आवी रीते आत्मतत्त्वनी दृष्टिमां तत्पर थयेलाने ग्राम, नगर, अरण्य सर्व वैराग्यनां कारणपणे थाय छे. आ अन्वय दृष्टांत छे. हवे व्यतिरेक दृष्टांत कहे छे—

कोइ गच्छमां आचार्ये पोताना आयुष्यनो अंत आवेलो जाणीने बीजा सारा शिष्यने अभावे एक स्थूल सामाचारीने जाणनार शिष्यने आचार्यपदे स्थापन कर्यो. ते नवा आचार्य सर्वत्र प्रतिष्ठा पामवाथी आगमादिक शास्त्रना अध्ययनमां प्रमादी थया. तेओ श्रुतार्थना जाण नहोता, छतां गुरुना महिमाथी सर्वत्र ख्याति पाम्या हता. ते सूरि विहार करतां करतां अन्यदा पृथ्वीतिलक नामना नगरे आव्या. त्यां श्रावकोए पुरप्रवेश वखते एवो महोत्सव कर्यो के जेथी तेमनो महिमा अधिक रीते प्रसिद्ध थयो, तथा शासननी पण घणी उन्नति थइ. ते नगरमां पूर्वे अनेक जैन आचार्योए आवीने राजसभामां घणा परवादीओनो पराभव करेलो हतो. ते वादीओ आ वखते पण आ आचार्यनी आवी उन्नति जोइने इर्ष्यावाळा थया; परंतु पूर्वे पराभव पामेला होवाथी फरीथी पोताना महत्त्वनी हानि थवानो भय धरावता हता, तेथी प्रथम ते आचार्यनुं शास्त्रपरिज्ञान केवुं छे ? तेनी परीक्षा करवा माटे पोताने अनुकूळ एवा एक श्रावकने केटलाक प्रश्न शीखवीने तेमनी पासे मोकल्यो. ते श्रावक हमेशां आचार्य पासे जइने विधिपूर्वक तेनी सेवा करवा लाग्यो. एकदा तेणे सूरिने प्रश्न कर्यो के "हे गुरु! पुद्गलने केटली इंद्रिय होय ?" ते सांभळी तत्त्वदृष्टिरहित सूरिए चिरकाळ सुधी विचार कर्यो, तेवामां पूर्वे कोइ वखत सांभळेलुं तेने याद आव्युं के "पुद्गल एक समयमां लोकांत सुधी जइ शके छे." आवुं स्मरण थवाथी सूरिए विचार्युं के "पंचेन्द्रिय विना आटली बधी शक्ति क्यांथी होय ?" एम हृदयमां निश्चय करीने तेणे जवाब आप्यो के "हे भाइ ! पुद्गलने पांच इंद्रियो होय छे." आ

जवाब ते श्रावके पेला परवादीओने कह्यो, एटले तेओए धार्यु के " आ सूरिने पोताना शास्त्रनुं पण परिज्ञान नथी, तो पछी परधर्मना शास्त्रनुं परिज्ञान तो क्यांथी ज हशे ? " एम विचारी सूरिना ज्ञानना पारने जाणनारा ते वादीओए राजसभामां तेमने बोलावीने ते सूरिनो पराजय कर्यो; तेथी घणा लोको जैन धर्मथी भ्रष्ट थया. ते जोइ संघे मळीने सूरिने त्यांथी घणे दूर विहार कराव्यो. आवा तत्त्वज्ञानरहित आचार्यो ग्राम, आराम, उपाश्रय, श्रावक अने संघ विगेरेमां आसक्त थइने उपदेश आपता सता पण तेवा प्रकारनुं शुद्ध ज्ञान न होवाथी उत्सूत्र प्ररूपणा करे छे, अने तेथी करीने तेओ पोताना आश्रितोने तारवाने बदले उलटा भवसागरमां डुबावे छे. कह्युं छे के—

जं जयइ अगीयत्थो, जं च अगीयत्थनिस्सिओ होइ ।
वट्ठावेइ य गच्छं, अणंतसंसारिओ होइ ॥ १ ॥

भावार्थ—" जे पोते अगीतार्थ होय तथा जे अगीतार्थनी निश्रावाळा होय ते गच्छनी वृद्धि करता सता अनन्त संसारी थाय छे." माटे तत्त्वदृष्टिविकळ अने अबहुश्रुते धर्मदेशना आपवी योग्य नथी.

" जेओए शुभ एवी तत्त्वविचारदृष्टि प्राप्त करेली छे तेओ विभाव (पुद्गलादिक) वस्तुओने विषे राग करता नथी, अने उपवनमां के उपाश्रयमां मोह पामता नथी. आवा साधुओज पृथ्वीपर तत्त्वदृष्टिवाळा थाय छे."

आ प्रबंध उपयोगी होवाथी फरीने लखवामां आव्यो छे.

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ द्वाविंशतितमस्तंभस्य
द्वाविंशत्यधिकत्रिशततमः प्रबंध ॥ ३२२ ॥

व्याख्यान ३२३ मुं.

संपत्तिनी क्षणभंगुरता विषे.

संपत्स्वस्थिरतां ज्ञात्वा, पुत्रदाराहयादिषु ।
भूमिपालः प्रबुधो द्राक्, शास्त्रज्ञोक्तसुभाषितैः ॥ १ ॥

भावार्थ—" शास्त्रज्ञ पंडिते कहेला सुभाषितवडे पुत्र, स्त्री अने अश्वादिक संपत्तिमां अस्थिरता जाणीने भूमिपाळ नामनो राजा तत्काळ प्रतिबोध पाम्यो. " आ अर्थनुं समर्थन करवा माटे ते राजानुं दृष्टांत कहे छे—

भूमिपाळ राजानी कथा.

पृथ्वीपुरमां भूमिपाल राजा राज्य करतो हतो. ते पुरमां एक शास्त्रमां प्रवीण ब्राह्मण हतो, ते एक वेश्यामां आसक्त थयो हतो. एकदा कौमुदी उत्सवमां राजानी राणी सर्व अलंकार पहेरी रथमां बेसीने जती हती. ते वखते ते वेश्या राणीना कंठमां रहेलो हार जोइने मोह पामी; तेथी तेणे पेला पंडितने कह्युं के " हे प्राणेश ! जो तमारे मारा शरीरसुखने अनुभववानी इच्छा होय अर्थात् मारापर अधिक प्रीति होय तो राणीना कंठमां रहेलो हार चोरीने मने लावी आपो. " ते सांभळी वेश्याने आधीन थयेलो विषयनो भिक्षु ते पंडित चोरी करवा माटे चोरनी जेम गुप्त रीते राजमंदिरमां गयो. त्यां राजाने जागतो जोइने छानी रीते राजाना पलंगनी नीचे संताइ रह्यो. ते वखते राजाए संपत्तिना गर्वथी एक श्लोकना त्रण पद रच्यां; पण चोथुं पद तेनाथी बनी शक्युं नहीं, तेथी ते त्रण पद राजा वारंवार बोलवा लाग्यो. ते आ प्रमाणे—

चेतोहरा युवतयः स्वजनानुकूलाः
सद्बान्धवाः प्रणयनम्रगिरश्च भृत्याः ।
गर्जन्ति दन्तिनिवहास्तरलास्तुरंगाः

भावार्थ—मारे चित्तने हरण करे तेवी स्त्रीओ छे, अनुकूळ स्वजनो छे, सारा बांधवो छे, प्रणय करीने नम्र वाणी बोलनारा भृत्यो छे, आंगणामां हस्तिना

समूहो गर्जना करी रह्या छे तथा चंचळ घोडाओ छे—

आ त्रण पद वारंवार राजाना मुखथी बोलाता सांभळीने ते पंडित चोथुं पद पूरुं करीने बोल्यो के—

संमीलने नयनयोर्न हि किंचिदस्ति ॥१॥

'पण आंखो मींचाया पछी तेमानुं कांइज नथी, अर्थात् मृत्यु थाय एटले ते सर्व निष्फळ छे."

आ चोथुं पद सांभळीने एकदम आश्चर्य पामेलो राजा विचार करीने बोल्यो के "अहो ! पहेरेगीरोने छेतरीने मारा महेलमां कोण आव्युं छे ? देव, दानव अथवा मनुष्य जे हो ते एकदम प्रगट थाओ." ते सांभळीने जेनो देह कंपायमान थइ रह्यो छे एवो ते पंडित प्रगट थइने बोल्यो के "हे स्वामी ! आपनो गर्व हरण करवाना हेतुथी चोथुं पद पूरुं करवा माटे आ नवीन मार्गथी हुं अहीं आव्यो छुं." राजाए कह्युं के "सत्य बोल, असत्य शामाटे बोले छे ?" त्यारे ते पंडिते सर्व सत्य वात राजाने कही संभळावी. ते सांभळीने राजाए तेने हार आप्यो, अने 'गुरु होवाथी अवध्य छे' एम विचारीने तेने छोडी मूक्यो.

पछी ते पंडिते कहेला चोथा पदथी प्रतिबोध पामेलो राजा प्रातःकाळे राजसभामां गयो. ते वखते कंचुकीना मुखथी श्रीमान् सुधर्म गुरुनुं आगमन सांभळीने हर्षपूर्वक ते गुरु पासे जइ तेमने वंदना करी योग्य स्थाने बेठो. ते वखते गुरुए नीचे प्रमाणे धर्मदेशना आपी.

बाह्यदृष्टिप्रचारेषु, मुद्रितेषु महात्मनः ।
अन्तरेवावभासन्ते, स्फुटाः सर्वाः समृद्धयः ॥ १ ॥

भावार्थ—" महात्माने बाह्य दृष्टिना प्रचारोनो रोध थवाथी सर्व समृद्धिओ अंतःकरणमांज स्फुट रीते भासे छे. "

स्वरूप अने पररुपना भेदज्ञानवडे शुद्ध आत्मस्वरुपना अनुभवमां लीन थयेला महात्माने सर्व समृद्धिओ अंतःकरणमांज स्फुट भासे छे. ' हुं स्वरुपानंदमय छुं, हुं निर्मळ, अखंड अने सर्व प्रकाशक ज्ञानवाळो छुं, इंद्र चंद्रादिकनी संपत्तिओ तो औपचारिक छे, अने हुं तो अविनाशी तथा अनंत पर्यायवाळी संपत्ति

थी युक्त छुं." आवी रीतना आत्मस्वरूपना ज्ञानथी युक्त थयेला महात्माने पोताना आत्मामांज सर्व संपत्तिओ भासे छे; पण बाह्य दृष्टिप्रचार एटले विषयोमां प्रवर्तती जे इन्द्रियो तेमनो प्रचार बंध थाय त्यारेज सर्व संपत्तिओ भासे छे; केमके चंचळ उपयोगवाळा इंद्रियोना प्रचारथी आत्मानी अंदर रहेली, अमूर्त अने कर्मथी आवरेली आत्मस्वरूपनी संपत्ति जणातीज नथी, पण इन्द्रियोनी चंचळता रोकवाथी स्थिर चैतन्यना उपयोगवडे कर्ममळना पटलथी ढंकायेली एवी आत्मसंपत्ति पण जोवामां आवे छे.

समाधिनन्दनं धैर्य, दंभोलिः समता शची ।
ज्ञानं महाविमानं च, वासवश्रीरियं मुनेः ॥ २ ॥

भावार्थ—"मुनिने क्रीडा करवा माटे समाधिरूप नंदनवन छे, धैर्यरूपी वज्र छे, समतारूपी इंद्राणी छे, अने ज्ञानरूपी मोटुं विमान छे; माटे मुनि पासे आ प्रमाणे इन्द्रनी सर्व समृद्धि छे."

अहीं मुनि एटले आत्मस्वरूपना ज्ञानना अनुभवमां लीन थयेलाने उपर प्रमाणे इंद्रनी शोभा होय छे. तेमां ध्याता, ध्यान अने ध्येयना एकपणाए करीने निर्विकल्प आनंदरूप समाधिने नंदनवन कहेलुं छे. इंद्रने नंदनवन क्रीडाना सुखने माटे छे, तेवीज रीते मुनिने पण समाधि क्रीडासुखने माटे छे. धैर्य एटले आत्मवीर्य अर्थात् औदयिक भावमां अक्षुब्धता—तद्रूप वज्र कहेलुं छे. समतारूपी स्वधर्मपत्नी (इंद्राणी) कही छे, अने सर्व वस्तुना अवबोधवाळुं ज्ञान तद्रूप महा विमान कहेलुं छे. इत्यादि ऋद्धिथी परिवृत्त मुनि इंद्र जेवाज लागे छे. वळी—

विस्तारितक्रियाज्ञान—चर्मछत्रो निवारयन् ।
मोहम्लेच्छमहावृष्टिं, चक्रवर्ती न किं मुनिः ॥ ३ ॥

भावार्थ—"क्रियारूपी चर्मरत्नने अने ज्ञानरूपी छत्ररत्नने जेणे विस्तार्युं छे, अने ते साधनवडे मोहरूपी म्लेच्छोए करेली महा वृष्टिनुं निवारण करे छे एवा मुनि शुं चक्रवर्ती नथी? छेज."

आ बे श्लोकनुं तात्पर्य एवुं छे के "देवोमां इंद्र श्रेष्ठ छे अने मनुष्योमां

चक्रवर्ती श्रेष्ठ छे. ते बन्नेनी समृद्धिनुं सुख मुनिना स्वभावमांज अन्तर्भाव पाम्युं छे, तो बीजाना सुखनुं तो शुं कहेवुं ?" वळी तीर्थंकरनी समृद्धिनुं सुख पण मुनिना आत्मस्वभावमां समायेलुं छे. ते आ प्रमाणे—

रत्नैस्त्रिभिः पवित्रा या, श्रोतोभिरिव जाह्नवी ।
सिद्धयोगस्य साप्यर्हत्पदवी न दवीयसी ॥ १ ॥

भावार्थ—"स्वर्ग, मृत्यु अने पातालना त्रण प्रवाहे करीने गंगानदीनी जेम त्रण रत्ने करीने पवित्र एवी जे ज्ञानादि अनंत चतुष्टयवाळी, आठ प्राति-हार्यथी युक्त अने जगतने धर्मोपदेशवडे उपकार करनारी तीर्थंकरनी पदवी, ते पण अष्टांग योगना साधनथी सिद्ध थयेला मुनिने कांइज दूर नथी; अर्थात् त्रिलोकमां अद्भुत परमार्थने आपवा विगेरे रूप अतिशयवाळी तीर्थंकरनी समृद्धि पण यथार्थ मार्गमां रहेला साधक पुरुषनी पासेज छे."

माटे सर्व उपाधिनो त्याग करीने आत्माना रत्नत्रयनी साधना करवी, जेथी सर्व समृद्धिओ प्राप्त थाय." इत्यादि धर्मोपदेश सांभळीने प्रतिबोध पामेला भूमिपाळ राजाए सर्व बाह्य संपत्तिओने क्षणभंगुर जाणी तेनो त्याग करीने साधु-धर्म (चारित्र) अंगीकार कर्यो.

" भूमिपाळ राजानी जेम बाह्य संपत्तिओ क्षणभंगुर छे–नाशवंत छे एवो निश्चय हृदयमां धारण करवो, जेथी आत्मामांज रहेली इंद्रनी तथा चक्रवर्तीनी सर्व संपत्तिओ सहेजे प्राप्त थशे."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ द्वाविंशतितमस्तंभस्य
त्रयोविंशत्यधिकत्रिशततमः प्रबंध ॥ ३२३ ॥

व्याख्यान ३२४ मुं.

कर्मनी विचित्रता विषे.

दुःखं प्राप्य न दीनः स्यात्, सुखं प्राप्य न विस्मितः ।
जगत् कर्मविपाकस्य, जानन् परवशं मुनिः ॥ १ ॥

भावार्थ—"आ चराचर जगत शुभ अने अशुभ उदयवाळा कर्मविपाकने परवश छे, एम जाणनार तत्त्वरसिक मुनि अशातादिक दुःखने पामीने दीन थता नथी; केमके कर्म करती वखते विचार कर्यो नहीं, तो हवे तीव्र रसवडे बंधायेला कर्मना उदयमां दीनता शी करवी ? एम समजे छे, तेमज शातादिक सुखने पामीने विस्मित (हर्षित) थता नथी; केमके ए पण शुभ कर्मना विपाक छे एम जाणे छे. वळी--

येषां भ्रूभंगमात्रेण, भज्यन्ते पर्वता अपि ।
प्राप्तायां दुर्दशायां ते, प्राप्यन्ते क्वापि नाशनम् ॥ २ ॥

भावार्थ—"जेओनी भृकुटीना भंगमात्रे करीने पर्वतो भांगी जाय छे एवा महा शक्तिवान् पुरुष पण दुर्दशा प्राप्त थाय छे त्यारे कोण जाणे क्यां नाश पामी जाय छे तेनी खबर पण पडती नथी." आ प्रसंग उपर एक कथा छे ते नीचे प्रमाणे—

कदंब विप्रनी कथा.

काकंदी पुरीमां सोमशर्मा नामे एक ब्राह्मण रहेतो हतो. तेने कदंब नामे पुत्र हतो. ते शौचधर्ममां अति आग्रही हतो. अपवित्र के नीच माणसनी छायामात्रनो पण स्पर्श थतां ते सर्व वस्त्र सहित स्नान करतो; तथा लोको तेने पाणीनो पिशाच एवे नामे बोलावता हता. ते मुख अने नासिकाने वस्त्रना छेडावती ढांकीने सर्वत्र हुं हुं करतो अटन करतो हतो. कोइ माणसना वस्त्रनो छेडो तेने अडकी जतो तो ते तेनापर द्वेष करतो. आवी रीते शौच धर्म पाळतां केटलेक काळे ते गलत्कुष्ठ विगेरे व्याधिथी ग्रस्त थयो, तेथी तेनो कोइ पण स्पर्श

करतुं नहीं. वैद्य पण तेनो चेप लागवाना भयथी तेनी नाडी पण जोता नहीं. कह्युं छे के—

ज्वरो भगंदरः कुष्टः, क्षयश्चैव चतुर्थकः ।
एते संस्पर्शतो रोगाः, संक्रमन्ति नरान्नरम् ॥ १ ॥

भावार्थ—"ज्वर, भगंदर, कुष्ट अने चोथो क्षय, ए रोगो स्पर्श करवाथी एक माणसथी बीजा माणसमां संक्रमण करे छे."

आ व्याधिथी तेनो शौचधर्म नष्ट थयो, अने शरीरमां अति वेदना थवा लागी. एकदा ते कोइ यतिनी पासे गयो. त्यां यतिए तेने धर्मोपदेश आप्यो. कदंबे यतिने पूछ्युं के "तमे स्नान करता नथी, तो तमारी शुद्धि शी रीते थाय छे ?" मुनिए जवाब आप्यो के "आ शरीर सदा अशुचिज छे, तेनुं स्नान करवाथी शी रीते शुचिपणुं थाय ? माटे मननी शुद्धिज जोवी जोइए; केमके रस, लोही, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा, शुक्र अने वसा, इत्यादि अशुचिनां स्थानरूप शरीरनुं शुचिपणुं क्यांथी होय ? अहो ! नव द्वारमांथी निरन्तर अशुचि रसने झरवावाळा अने अशुचिथी व्याप्त एवा आ देहमां शौचनो संकल्प मात्र करवो, ते पण महामोहनुं विलसितज छे." आ प्रमाणेनो उत्तर सांभळी कदंबे विचार्युं के "हुं तो फोगटज शौचवाद करुं छुं, खरेखरा तो आ साधुओज पवित्र छे; केमके "ब्रह्मचारी सदा शुचिः" ब्रह्मचारी निरंतर पवित्रज छे." इत्यादि विचार करीने पछी तेणे फरीथी गुरुने पूछ्युं के "हे स्वामी ! मने शरीरमां महादुःसह पीडा थाय छे, एक क्षणमात्र पण शांति थती नथी, तेनुं शुं कारण ?" गुरु बोल्या के "कर्मनी घटना उंटना पृष्ठ जेवी महा विषम छे. जाति, कुळ, देह, विज्ञान, आयु, बळ, भोग अने संपदा विगेरेनी विषमता जोइने आ संसारमां विद्वान माणसने प्रीति केम थाय ? नज थाय. वळी रत्नत्रयी परिणत अने तीव्र क्षयोपशमवाळा मुनि अपूर्व करणना बळथी उपशमश्रेणि पामीने चारित्र परिणामपर आरूढ थइ सर्वथा मोहोदय रहित थाय छे अने ते केवळीनी हदे पहोंचे छे; तोपण दुष्ट कर्मने लीधे अर्थात् सत्तामां रहेला मोहनीय कर्मना उदयथी अथवा आयु कर्मनो अंत थवाथी (आयुष्य पूर्ण थवाथी) त्यांथी पण भ्रष्ट थाय छे अने चार गतिमां परिभ्रमण करे छे. दुष्ट मोहनीयना वशथी प्राणीने अनंत

संसार परिभ्रमण करवुं पडे छे; तेथी कोइपण प्रयत्ने चेतनाने कर्माधीन करवी नहीं, स्वाधीन करवी. वळी कर्मनी विषमता एवी छे के कोइ रंक माणस शुभ कर्मना उदयथी एक क्षणमात्रमां राजा थाय छे, अने कोइ राजा अशुभ कर्मना उदयथी क्षणमात्रमां रंक थाय छे. पुराणमां पण कह्युं छे के—

याद्दशं क्रियते चित्तं, देहिभिर्वर्णनादिषु ।
ताद्दशं कविवन्नूनं, जायते सततं जने ॥ १ ॥

भावार्थ—" स्तुति-निंदा विगेरेमां कविओनी जेम प्राणीओ जेवुं चित्त करे छे तेवुं लोकमां निरंतर प्राप्त थाय छे. "

एकदा ब्रह्मा विगेरे घणा देवो एकत्र मळीने पोतपोताना उत्कर्षनुं वर्णन करता हता, ते वखते शनिश्चर बोल्यो के " हुं सर्व देवादिकने सुख दुःख आपवा समर्थ छुं. " ते सांभळी शंकरे कह्युं के " तुं केवुं सुख दुःख आपे छे ते जोइशुं, मने बतावजे. " एम कहीने महादेव स्वस्थाने जइने ते वात पार्वतीने कही. पछी शिवे पोते पाडानुं रूप लीधुं, अने पार्वतीए भेंशनुं रूप कर्युं. पछी नगरनी अशूचिमय खाळमां जइने बन्ने जणा रह्या. त्रण दिवस रहीने ते बन्ने त्यांथी नीकळीने घेर आवी पोतानां मूळ स्वरूपवाळा थया. पछी शंभूए शनि पासे जइने कह्युं के " तारी दशा काले पूरी थइ. तें तो मने कांइ पण दुःख आप्युं नहीं. " शनि बोल्यो के "तमे क्यां रह्या हता?" त्यारे शंकरे पोतानी स्थिति कही बतावी. त्यारे शनि बोल्यो के " हुं कांइ लाकडी लइने कोइने मारतो नथी, पण तेवा प्रकारनी बुद्धि आपुं छुं के जेथी पोतानी जातेज ते दुःखमां पडे छे. तमे त्रण दिवस सुधी अशुचिमय खाळमां रह्या, तेथी वधारे कयुं दुःख? माटे हुंज लोकोने दुःखादिक आपुं छुं, पण ते कर्मनी प्रेरणाथीज आपुं छुं. " ते सांभळी शिव बोल्या के " ए वात सत्य छे के जीवो कर्मथीज करेलां सुखदुःखने पामे छे. " पछी सर्व देवोए " कृतकर्मक्षयो नास्ति " एटले करेलां कर्मनो भोगव्या विना नाश थतो नथी, एम अंगीकार कर्युं. "

आ प्रमाणे श्री गुरुना मुखथी कर्मविपाकनुं स्वरूप सांभळीने ते कदंब विप्र बोल्यो के " जो मने पण आ रोगनी शांति थाय तो हुं पण गुरु जेवो थाउं." त्यारे गुरु बोल्या के " सर्व औषधो मूकीने एक नवकार मंत्रनेज छ मास

सुधी गणया कर; तारे बीजुं कांइ पण ध्यान करवुं नहीं." कदंबे गुरुना कहेवाथी नवकारनुंज ध्यान करवा मांडयुं. तेथी तेनो कुष्ट व्याधि नाश पाम्यो, एटले ते उत्तम श्रावक थयो. पछी सर्व द्रव्यनो सन्मार्गे व्यय करी चारित्र लइने अनुक्रमे स्वर्गे गयो.

"मिथ्यात्वादिक हेतुए करीने पोते करेलुं कर्म दारुण विपाकने आपे छे, एम सांभळीने कदंब ब्राह्मण पोताना स्वरूपने पाम्यो. तेवी रीते बीजाओए पण प्रवर्तवुं."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ द्वाविंशतितमस्तंभस्य
चतुर्विंशत्याधिकात्रिशततमः प्रबंधः ॥ ३२४ ॥

व्याख्यान ३२५ मुं.

कर्मनां फळ विषे.

स्वात्मनोच्छृंखलेनात्तं, तद्भुक्त्या कर्म हीयते ।
अक्षयत्वमहो एकं, ढंढणर्षिकुमारवत् ॥ १ ॥

भावार्थ—"अहो! ढंढणऋषि कुमारनी जेम पोतेज उद्धतपणाथी बांधेलुं क्षय न थाय तेवुं कर्म तेनुं फळ भोगव्याथीज क्षय पामे छे." तेमनुं दृष्टांत आ प्रमाणे—

ढंढणऋषि कुमारनी कथा.

कुबेरे बनावेली द्वारकानगरीमां श्री कृष्ण वासुदेव बळभद्रनी साथे राज्य करता हता. ते वासुदेवने ढंढणा नामे राणी हती. तेनी कुक्षिथी उत्पन्न थयेलो ढंढण नामनो कुमार हतो. ते युवावस्थाने पाम्यो, एटले तेने कृष्णवासुदेवे मोटा उत्सवथी सौन्दर्यमां देवकन्यानो पण तिरस्कार करे तेवी घणी राज्यकन्याओ पर-

णावी, तेनी साथे ढंढणकुमार पंचेन्द्रिय संबंधी सुखभोग भोगववा लाग्यो. एकदा ते नगरीमां श्री नेमिनाथ प्रभु समवसर्या. वनपाळना मुखथी ते खबर सांभळीने प्रभुने वांदवा माटे सर्व परिवार सहित श्री कृष्ण ढंढणकुमारने साथे लइने गया. समवसरण नजीक आव्या एटले राज्य संबंधी पांच [1]चिन्होनो त्याग करीने त्रण प्रदक्षिणापूर्वक स्वामीने वंदना करी, अने विनयथी नम्र देह राखीने भगवाननी पासे बेठा. पछी स्वामीए सर्व प्राणीओनी भाषाने अनुसरती वाणीवडे देशना आपी. ते सांभळीने जेने संवेग उत्पन्न थयो छे एवा ढंढणकुमारे महा प्रयत्ने मातापितानी आज्ञा मेळवी भगवंतनी पासे दीक्षा लीधी. पछी भगवाननी पासे ग्रहण अने आसेवना नामनी बे प्रकारनी शिक्षा शीखतां तेमणे सांभळ्युं के " मुनिए छ कारणे आहार लेवो. ते आ प्रमाणे—

छुहवेअणवेयावच्चे, संजम झ्झाण पाणरक्खणट्टाए ।
इरियं च विसोहेउं, भुंजइ नो रूवरसहेउं ॥ १ ॥

भावार्थ—" क्षुधा वेदनानुं शमन, वैयावृत्य, संयम, ध्यान, प्राणरक्षा अने इर्यापथिकीनुं शोधन ए छ हेतुए मुनि आहार करे, पण रूप के रसना हेतुथी आहार करे नहीं. " तेनी व्याख्या करे छे—

१ क्षुधा तृषानी वेदना छेदवा माटे मुनिए आहार लेवो. २ दश प्रकारनी वैयावृत्त्यने माटे आहार लेवो, केमके क्षुधादिकथी पीडायेलो माणस वैयावृत्य करवा समर्थ थतो नथी. ३ पडिलेहणा प्रमार्जनादि लक्षणवाळा संयमने पाळवा माटे आहार लेवो, केमके आहारादिक विना कच्छ, महाकच्छ विगेरेनी जेम संयमनुं पालन थइ शके नहीं. ४ सूत्र ने अर्थनुं चिंतन करवामां एकाग्रतारूप जे प्रणिधान- तेने माटे भक्त पान ग्रहण करवुं, केमके क्षुधातृषाथी दुर्बळ थयेलाने दुर्ध्यान प्राप्त थवानो संभव छे, तो पछी ते सूत्रार्थनुं चिंतन तो क्यांथीज करी शके ? ५ प्राण एटले पोतानुं जीवित तेना रक्षण माटे आहार पाणी लेवां, केमके अविधिवडे क्षुधा तृषा सहन करीने पोताना प्राणनो पण नाश करे तो तेथी पण हिंसा थाय छे. तथा ६ इर्यापथिकी एटले चालती वखते मार्ग शोधवो, तेने माटे आहारादिक ग्रहण करवो, केमके क्षुधा अने तृषाथी आकुळव्याकुळ थयेलो माणस नेत्रवडे बराबर जोइ शके नहीं, तेथी मार्गमां रहेला जीवादिकनुं निरीक्षण

[1] खड्ग, छत्र, मोजडी, मुकुट ने चामर आ पांच राजचिन्हो जाणवां.

दुष्कर थाय. आ छ हेतुथी मुनि आहारादिक ग्रहण करे, पण रूप एटले शरीरना सौन्दर्यने माटे अथवा जिह्वा इंद्रियना रसना लोभथी आहार ग्रहण करे नहीं.

हवे जे छ कारणोथी आहारादिकनुं ग्रहण न करे ते कहे छे—

अहव न जिमिज्ज रोगे, मोहुदये सयणमाइउवसग्गे।
पाणिदया तवहेउ, अंते तणुमोयणत्थं च ॥ २ ॥

भावार्थ—अथवा रोगमां, मोहना उदयमां, स्वजनादिकना उपसर्गमां, प्राणीनी दयामां, तपमां अने छेवट शरीरना त्यागमां एटला कारणे मुनि आहारादिक ग्रहण करे नहीं." तेनी व्याख्या करे छे—

१ ज्वर, अक्षिरोग, अजीर्ण विगेरे व्याधि होय त्यारे आहार ले नहीं. २ पुरुषवेद विगेरे लक्षणवाळा मोहनो उदय थाय त्यारे अर्थात् प्रबळ वेदोदयादि होय त्यारे आहार ले नहीं. ३ माता, पिता, स्त्री विगेरे स्वजनो अथवा देवता विगेरे व्रतभंग माटे उपद्रव करता होय त्यारे आहार ले नहीं. ४ जीवदया माटे एटले वर्षाऋतुमां धुंवाडमां रहेला अप्काय जीवोनी रक्षा माटे अथवा सूक्ष्म देडकीओ विगेरे जीवोथी व्याप्त थयेली पृथ्वी होय त्यारे ते जीवोनी रक्षा माटे आहार ले नहीं—लेवा नीकळेज नहीं. ५ चतुर्थादिक तप करवाने माटे आहार करे नहीं. तथा ६ छेवट मरण वखते संयम पाळवाने असमर्थ थयेला देहनो त्याग करवा माटे आहार ले नहीं."

इत्यादि नेमिनाथ प्रभुना मुखथी कहेली शिक्षाने धारण करता ढंढणर्षि आसक्तिरहित थइने "जे कांइ प्रासुक अन्न मळी गयुं ते खाइ लीधुं" एवी रीते विचरवा लाग्या.

एकदा ते मुनिने पूर्वे करेला अन्तराय कर्मनो उदय थयो, तेथी ते भिक्षाने माटे ज्यां ज्यां जाय त्यां त्यां शुद्ध भिक्षा पामे नहीं; तेथी तेणे एवो अभिग्रह लीधो के " आज पछी ज्यारे हुं मारी पोतानी लब्धिथी अन्न पामीश त्यारेज पारणुं करीश, नहीं तो पारणुं नहीं करुं; बीजा मुनिओए लावेलो आहार हुं करीश नहीं." एवो अभिग्रह लइने प्रभुनी साथे विहार करतां अन्यदा द्वारका नगरीमां आव्या. त्यां पण तेवीज रीते पोते विष्णुना पुत्र छतां अने जगत्

गुरुना शिष्य छतां, स्वर्गनी लक्ष्मीने पण जीतनार एवी समृद्धिवाळी द्वारका नगरीमां पण मोटा श्रीमंतोना घरमां पर्यटन करतां ढंढणमुनि पोताने योग्य कांइ पण आहार पाम्या नहीं. एक दिवस कोइ बीजा मुनि ढंढणमुनिनी साथे गोचरी गया तो तेने पण आहार मळ्यो नहीं; तेथी बीजा मुनिओए प्रभुने पूछ्युं के "हे भगवान्! आ ढंढणऋषि क्या कर्मने लीधे श्रावकना घरथी पण भिक्षा पामता नथी?" भगवान् बोल्या के "तेना पूर्वभवनुं वृत्तान्त सांभळो—

पूर्वे धान्यपुर नामना गाममां पारासर नामे एक ब्राह्मण रहेतो हतो. ते राजानो नियोगी (अधिकारी) होवाथी राजाए तेने ते गाममां पांचसो सांतीनो (तेटला खेतरनो) अधिकार आप्यो हतो. एकदा खेडुतोने माटे भोजन आव्युं हतुं, बळदो माटे घास आव्युं हतुं अने सर्वे भूख तरसथी थाकी गया हता, तोपण ते पारासरे ते पांचसो खेडुतोने जमवानी रजा आपी नहीं, अने कह्युं के "मारा खेतरमां एक एक चास खेडीने पछी सर्व भोजनादिक करो." ते सांभळी पराधीन खेडुतोए तेना कहेवा प्रमाणे कर्युं. आ वखते तेणे अन्तराय कर्म बांध्युं. त्यांथी मृत्यु पामी घणा भव भ्रमण करीने कांइक पुण्यना प्रभावथी अहीं कृष्णना पुत्र थया छे, तेणे वैराग्यथी दीक्षा लीधी छे अने अभिग्रह धारण करेलो छे. ते गोचरी माटे जेवी रीते जाय छे तेवीज रीते पूर्वना कर्मे करीने भिक्षा विनाज पाछा आवे छे; पण तेनामां कैलास पर्वत करतां पण अनंतगणुं स्थैर्य छे, केमके तेने भिक्षा मळती नथी तोपण ते उद्वेग पामता नथी, तेमज बीजाओनी निंदा करता नथी; परंतु दीनता धारण कर्या विनाज हमेशां अलाभपरिषहने सहन करे छे, अने सर्व प्रकारे परपुद्गळथी उत्पन्न थयेला तथा अनेक जीवनी हिंसादिवडे नीपजेला आहारना दोषोनुं चिंतन करीने अनाहारीना गुणोनी प्रशंसा करता सता मोटी सकाम निर्जरा करे छे."

आ प्रमाणे श्री जिनेन्द्रना मुखथी सांभळीने सर्व साधुओ आश्चर्य पामी ढंढणमुनिनी प्रशंसा करवा लाग्या. अनुक्रमे अलाभपरिषह सहन करतां ढंढणर्षिने छ मास व्यतीत थया. ते अवसरे प्रभुने वांदवा माटे आवेला श्री कृष्णे धर्मदेशना थइ रह्या पछी प्रभुने पूछ्युं के "हे भगवन्! अढार हजार शीलांगरूपी रथमां बेठेला आ अढार हजार मुनिओमां विशेष दुष्कर कार्य करनार कोण छे?" त्रिभुवनपतिए कह्युं के "हे कृष्ण! सर्वे साधुओ दुष्कर क्रिया, गुणरत्न-

संवत्सरादि तप, जिनकल्पनी तुलना अने बावीश परिषहोनुं सहन करवुं इत्यादि स्खलना पाम्या विना करे छे, तोपण ते सर्वेमां मायारूपी पृथ्वीने विदारण करवामां खेडुत समान तमारो पुत्र ढंढणर्षि हालमां अति उत्कृष्ट छे. ते अदीन मनवडे छ मासथी अलाभपरिषहने सहन करे छे." ते सांभळीने श्रीकृष्णे विचार कर्यो के "अहो! मारा पुत्रना जन्म तथा जीवितव्यने धन्य छे के जेनी शुद्ध वृत्तिनी त्रिकाळना समस्त पदार्थोने जाणनार श्री तीर्थंकर पोते बार पर्षदानी समक्ष प्रशंसा करे छे." पछी श्रीकृष्णे भगवानने पूछ्युं के "ते महामुनि अत्यारे क्यां छे ते कहो के जेथी हुं तेमने वंदन करुं." ते सांभळीने करमां रहेला निर्मळ जळनी जेम सर्व विश्वने जोनारा प्रभुए कह्युं के "हे मुकुन्द! ते मुनि अत्यारे भिक्षाने माटे द्वारिकापुरीमां गया छे. ते तमे पुरीमां प्रवेश करशो त्यारे भिक्षाने माटे अटन करता तमने सामा मळशे." ते सांभळीने जेणे अनेक प्राणीओने सिद्धिनी सन्मुख कर्या छे एवा कृपानिधि श्रीनेमिनाथ स्वामीने प्रणाम करीने श्रीकृष्ण पुरी तरफ चाल्या. पुरमां पेसतांज तेणे दूरथी जेनुं शरीर अति कृश थयेलुं हतुं, कक्षामां जेणे भिक्षानुं पात्र राखेलुं हतुं, तीर्थंकरे पोतेज प्रशंसा करेली होवाथी त्रण भुवनमां जे अद्वितीय सुपात्र हता अने अनादिकाळथी संचित करेला कर्मरूपी दर्भना मूळने जेमणे दातरडुं मुकी दीधुं हतुं, एवा ते मुनिने जोइने विचार्युं के "शुं आज ढंढणर्षि हशे के कोइ बीजा साधु हशे? पण श्री जिनेश्वरे कह्युं छे के 'पुरमां प्रवेश करतां ते तमने सामा मळशे' माटे खरेखर आ तेज मुनि छे. अहो! प्रथम आनुं स्वरुप देवकुमार जेवुं हतुं. आज केवुं निस्तेज थयेलुं छे?" एम विचारीने हर्षथी श्रीकृष्णे हाथीपरथी उतरी त्रण प्रदक्षिणापूर्वक पृथ्वीतळ सुधी मस्तक नमावी वंदना करीने हाथ जोडी निराबाध विहारादिनी पृच्छा करी. पछी तेमनी स्तुति करवा लाग्या के "हे मुनि! आजनो दिवस मारो सफळ थयो, अत्यारनो क्षण सुलक्षणवाळो थयो अने अत्यारनो प्रहर मने सुखदायी थयो, के जेमां आपना वंदननो उत्सव मने प्राप्त थयो." इत्यादि स्तुति करता श्रीकृष्णने छोडीने ते निःस्पृही मुनि आगळ चाल्या. आ सर्व हकीकत कोइ गृहस्थे पोताना गोखमां बेठा बेठा जोइ, तेथी तेणे विचार कर्यो के "अहो! आ कोइ महामुनि छे के जेने श्रीकृष्णे पोते वंदना करी." एम विचारी नीचे उतरीने ते गृहस्थे मुनिने पोताने घेर लइ जइने सिंहकेसरीआ मोदक वहोराव्या. ते लइने मुनि प्रभु पासे गया. प्रभुना चरणने नमीने मुनि बो-

ल्या के " हे स्वामी ! आजे मारो अभिग्रह परिपूर्ण थयो." प्रभु बोल्या के " हे ढंढण ! ए आहार तारी लब्धिथी तने मळ्यो नथी, पण हरिए तारी स्तुति करी तेथी ते वणिके तने प्रतिलाभित कर्यो छे; माटे ते हरिनी लब्धिथी मळ्यो छे." आ प्रमाणे परमात्मानुं वचन सांभळीने हृष्टतुष्ट थयेला मुनि अत्यंत प्रीतिभाव पाम्या. घणे मासे आहार मळ्या छतां पण लोलुपता अने उत्सुकतादिक दोषथी रहित, अभिग्रहमां आसक्त अने प्रभुना परमभक्त एवा ते निःस्पृह मुनिए विचार्युं के " परनी लब्धिथी मळेली आ भिक्षा त्याग करवा योग्य छे." एम विचारीने ते मुनि इंट पकववाना नींभाडा पासे गया अने त्यां शुद्ध स्थंडिलमां ते मोदकनुं चूर्ण करीने राखमां नाखता नाखता पोताना आत्मानी निंदा करवा लाग्या के " अहो ! अभिग्रहनी अपेक्षा विनानो जे आहार तेना अभिलाषी थयेला मने धिक्कार छे, अने अहो ! भगवानना ज्ञानने धन्य छे के जेणे मारा अभिग्रहनुं रक्षण कर्युं. सूक्ष्म ज्ञान विना अंतरमां रहेला सूक्ष्म भावने कोण जाणी शके ?" आ प्रमाणे शुक्लध्यानमां आरूढ थयेला मुनिए मोदकनुं चूर्ण करवाना मिषथी सर्व कर्मोने चूरी नांखी तत्काळ केवळज्ञान प्राप्त कर्युं. पछी देवताओए रचेला सुवर्णकमळपर बेसी ते केवळी मुनिए पोतानाज अंतराय कर्म संबंधी देशना आपीने कह्युं के " हे भव्य प्राणीओ ! आ प्रमाणे अंतराय कर्मनुं फळ जाणीने कोइए कोइने पण अन्तराय करवो नहीं." पछी श्री जिनेश्वर पासे आवी प्रभुने प्रदक्षिणा करी 'नमस्तीर्थाय' एम बोलीने केवळीनी सभामां बेठा. अनुक्रमे मोक्षपदने पाम्या.

" कर्मनुं फळ अहींज मळे तो ते सारुं छे, केमके ते कर्मने जीतवा माटे तेनो प्रतीकार करनार मळी शके; तेथीज ढंढणऋषि जिनेन्द्रना गुणोनुं ध्यान करीने सर्व कर्मनो क्षय करी केवळज्ञानने पाम्या."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ द्वाविंशतितमस्तंभस्य पंचविंशत्यधिकत्रिशततमः प्रबंधः ॥ ३२५ ॥

व्याख्यान ३२६ मुं.

चित्तनी एकाग्रता विषे.

तैलपात्रधरो यद्वद्राधावेधोद्यतो यथा ।
क्रियास्वनन्यचित्तः स्याद्भवभीतस्तथा मुनिः ॥ १ ॥

भावार्थ—" जेम तेलना पात्रने धारण करनारो, अथवा जेम राधावेध करवाने तैयार थयेलो माणस एकचित्ततावाळो थाय छे, तेम भवथी भय पामेला मुनि पण क्रियाने विषे एकाग्रचित्तवाळा थाय छे."

जेम मरणना भयथी भय पामेलो माणस तेलना पात्रने धारण करीने प्रमादरहित रहे छे, तेज प्रमाणे मुनि आत्मगुणना घातथी भय पामीने संसारमां अप्रमादी रहे छे. कोइ राजाए कोइ लक्षणोपेत माणसने उपदेश आपवा माटे गुन्हेगार ठरावीने तेनो वध करवानी आज्ञा आपी. ते वखते सभाजनोए राजाने विनंति करी के " हे स्वामी ! एनो अपराध माफ करो, तेने मारो नहीं." त्यारे राजाए कह्युं के " जो ते तेलथी भरेला मोटा थाळने धारण करीने स्थाने स्थाने अनेक प्रकारना नाटक अने वाजित्रोथी व्याकुळ थयेला आखा नगरमां भ्रमण करी तेलनुं एक बिंदु पण पड्या विना अहीं आवे तो हुं तेने मारुं नहीं; पण जो तेलनुं एक बिंदु पण पडे तो तत्काळ तेना प्राणनो नाश करीश." ए वात पेला माणसे कबूल करी. अने तेज प्रमाणे अनेक जनोथी व्याप्त थयेला मार्गमां नाटक वाजित्रादि तरफ दृष्टि पण कर्या विना माथे तेलनो थाळ राखी एक चित्ते चालवामां उपयोग राखीने तेलनुं बिंदु पण पाड्या विना आखुं नगर फरीने आव्यो, तेज प्रमाणे मुनि पण अनेक प्रकारना सुखदुःखथी व्याकुळ एवा आ संसारमां आत्मसिद्धिने माटे प्रमादरहित थाय छे. वळी जेम स्वयंवरमां कन्याने परणवा माटे राधावेध करवा तैयार थयेलो माणस स्थिर चित्तवाळो थाय, तेम भवथी भय पामेला मुनि संसारमां भ्रमण करवाथी अने गुणना आवरणादिक महा दुःखथी भय पामीने समिति गुप्तिरूप क्रियाओमां एकचित्त थाय छे. कह्युं छे के—

अमिसलुद्धेण वणे, सीहेण य दाढचक्कसंगहिया ।
तह वि हु समाहिपत्ता, संवरजुत्ता मुणिवरिंदा ॥ १ ॥

भावार्थ—" वनने विषे मांसमां लुब्ध थयेला सिंहे दाढरूप चक्रथी ग्रहण कर्या, तोपण संवरमां युक्त एवा मुनिवरो समाधिने प्राप्त थया. " आ अर्थनुं समर्थन करवा माटे सुकोशल मुनिनो संबंध छे ते आ प्रमाणे—

सुकोशल मुनिनी कथा.

अयोध्या नगरीमां कीर्तिधर नामे राजा राज्य करतो हतो. तेने सहदेवी नामे पट्टराणी हती. अन्यदा राजाए सुकोशल नामनो पुत्र थये सते तेनी बाल्यवयमांज दीक्षा लीधी. सुकोशल मोटो थयो एटले देशनो अधिपति थयो. केटलेक काळे कीर्तिधर मुनि पृथ्वीपर विहार करतां अयोध्यानगरीमां आव्या. मध्यान्ह समये गोचरीने माटे तेमणे नगरीमां प्रवेश कर्यो. ते वखते सहदेवी राणीए तेने जोइने विचार कर्यो के " जो कदाच सुकोशल आ तेना पिता कीर्तिधर मुनिने जोशे तो ते नक्की दीक्षा लेशे. " एम विचारीने तेणे पोताना सेवकने कहीने ते मुनिने नगर बहार काढी मूकाव्या. ते जोइने सुकोशलनी धात्री (धाव माता) रुदन करवा लागी. सुकोशले तेने पूछ्युं के " हे माता ! तमे केम रुओ छो ? " ते बोली के " तमारा पिता कीर्तिधर मुनिने तमारी माताए नगर बहार कढावी मूक्या तेथी हुं रोउं छुं. " ते सांभळी राजा सर्व समृद्धि सहित वांदवा गयो. त्यां मुनिने वांदीने धर्मदेशना सांभळी. पछी राजाए पूछ्युं के " हे स्वामी ! महान् उपसर्ग प्राप्त थया छतां पण मुनिजनो पोताना निर्भयता गुणनुं रक्षण शी रीते करता हशे ? " मुनि बोल्या के—

विषं विषस्य वह्नेश्च, वह्निरेव यदौषधम् ।
तत्सत्यं भवभीतानामुपसर्गेऽपि यन्न भीः ॥ १ ॥

भावार्थ—" विषनुं औषध विष छे अने अग्निनुं औषध अग्नि छे, ते सत्य छे; केमके भवथी भय पामेलाने उपसर्गमां पण भय होतो नथी. "

जेम कोइ माणस विषथी पीडा पाम्यो होय तो ते विषनुं औषध विषज करे छे, जेम सर्पथी डंखायेलो माणस लींबडो विगेरे चाववाथी भय पामतो नथी,

अथवा कोइ अग्निथी दग्ध थयेलो माणस अग्निदाहनी पीडानुं निवारण करवा माटे फरीथी अग्निनो ताप अंगीकार करे छे ते सत्य छे; केमके भवथी भय पामेला मुनिओ अनादि काळना संचय करेला कर्मनो क्षय करवामां उद्यमवंत थयेला होवाथी उपसर्गोवडे घणा कर्मनो क्षय थतो मानीने भयभीत थता नथी; केमके मोक्षरूप साध्य कार्यमां निर्भयता गुण सहायकारक छे.

स्थैर्यं भवभयादेव, व्यवहारे मुनिर्व्रजेत् ।
स्वात्मारामसमाधौ तु, तदप्यन्तर्निमज्जति ॥ २ ॥

भावार्थ—" भवना भयथीज एटले नरक तथा निगोदादिकमां प्राप्त थता दुःख उद्वेगादिकथी भय पामीने तत्त्वज्ञानी मुनि एषणादिक व्यावहारिक क्रियामां स्थिरताने धारण करे छे; तेथी ते भवनुं भय पण ज्ञानानंदमय आत्मसमाधिमां लीन थइ जाय छे, एटले विनाश पामी जाय छे. अर्थात् आत्मध्यानमां लीन थयेला सुखदुःखमां समान अवस्थावाळा मुनिओने भयनो अभावज होय छे."

आ संसारमां मग्न थयेला जीवोने धर्मनी इच्छाज थती नथी. इंद्रियोना सुखनो स्वाद लेवामां तल्लीन थयेला प्राणीओ मदोन्मत्तनी जेम विवेकरहितपणे ज्यां त्यां भटके छे. दुःखथी उद्वेग पामीने ते दुःखना नाश माटे अनेक उपायना चिंतनथी व्याकुळ थइ भुंडनी जेम महामोहरूपी भवसागरमां परिभ्रमण करे छे. वधारे शुं कहेवुं ? सर्व सिद्धिने आपनारा श्रीमान् वीतरागने वंदनादिक पण करता नथी, अने इंद्रियो संबंधी विषयसुख मेळववाने माटे जन्म पर्यंत करेला तप, उपवास विगेरे कष्टकारी अनुष्ठानने हारी जाय छे. निदानना दोषोने पण गणता नथी. मोक्षना हेतुरूप जैनशासनने देवादिक सुखना हेतुरूप मानीने मोह पामे छे तथा मिथ्यात्वथी वासित थयेला ते जीवो ऐश्वर्यादिक मेळववाने माटे मत्स्यनी जेम भवसमुद्रमां भटके छे, माटे हे सुकोशल राजा ! भवने विषे निरंतर उद्वेग(वैराग्य) धारण करवो तेज योग्य छे अने तेज मोटा उपसर्गोमां पण सहायकारक छे एम जाणवु."

आ प्रमाणे गुरुना मुखथी उपदेश सांभळीने प्रतिबोध पामेला सुकोशल राजाए तेमनी पासे दीक्षा लीधी. पछी सहदेवी राणी पुत्रना वियोगथी तथा पतिपरना द्वेषथी मृत्यु पामीने कोइ वनमां वाघण थइ. दैवयोगे विहार करतां की-

तिधर तथा सुकोशल मुनि तेज वनमां आवी चातुर्मासिक तप करीने रह्या. तपने अन्ते पारणाने दिवसे भिक्षा माटे जतां वाघणे ते बन्नेने जोया, एटले तेनी सामे क्रोधथी दोडी. तेने आवती जोइने बन्ने मुनिए प्राणांत उपसर्ग जाणी कायोत्सर्ग कर्यो. वाघणे तेमने पाडी दीधा ने खावा लागी. ते वाघणथी भक्षण कराता सुकोशल मुनि क्षपकश्रेणिपर आरूढ थइ केवळज्ञान पामीने मोक्षे गया. पछी कीर्तिधर मुनिनुं भक्षण करतां ते मुनिना मुखमां सुवर्णनी रेखाथी मढेला दांत तेणे जोया, एटले उहापोह करतां तेने जातिस्मरण ज्ञान थयुं. पोताना पतिने ओळखीने तेने अत्यंत पश्चात्ताप थयो, एटले तरतज ते वाघणे अनशन अंगीकार कर्युं अने मरण पामीने आठमा सहस्रार देवलोकमां गइ. कीर्तिधर मुनि पण शुक्ल ध्यानवडे काळ करीने अजरामर (मोक्ष) पदने पाम्या.

" भवथी उद्वेग पामेला सुकोशल मुनिए उपसर्ग पाम्या छतां पण तत्त्वदृष्टि राखीने दृढतानो त्याग कर्यो नहीं, तेमज कीर्तिधर मुनिए पण स्थिरतानो त्याग कर्यो नहीं; तेवीज रीते बीजा मुनिओए पण तत्त्वदृष्टि अने उपसर्गमां स्थिरता धारण करवी. "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ द्वाविंशतितमस्तंभस्य
षड्विंशत्यधिकत्रिशततमः प्रबंधः ॥३२६॥

व्याख्यान ३२७ मुं.

लोकसंज्ञा विषे.

निर्वेदी एटले भवथी वैराग्य पामेलो अने मोक्षनुं साधन करवामां उद्यमवंत थयेलो प्राणी लोकसंज्ञामां मोह पामतो नथी; केमके लोकसंज्ञा धर्मना साधननो व्याघात करनारी छे, तेथी त्याग करवा योग्यज छे. कह्युं छे के—

लोकमालंब्य कर्तव्यं, कृतं बहुभिरेव चेत् ।

तदा मिथ्यादृशां धर्मो, न त्याज्यः स्यात् कदाचन ॥ १ ॥

भावार्थ—" घणा माणसोए जे कर्युं ते करवुं–एम जो लोकनुं अवलंबन लइए, तो पछी मिथ्यात्वीनो धर्म कदापि तजवा लायक थायज नहीं; केमके मिथ्या धर्मनुं आचरण घणा लोको करे छे. "

आ जगतमां म्लेच्छ आचारनुं आचरण करनारा घणा लोको छे. कह्युं छे के 'अनार्यो करतां आर्य थोडा छे, आर्यो करतां जैनधर्मी थोडा छे, अने जैनोमां पण जैन धर्मनी परिणतिवाळा बहु थोडा छे. माटे घणा लोकोनुं अनुसरण करवुं नहीं.' वळीः—

श्रेयोऽर्थिनो हि भूयांसो, लोके लोकोत्तरे च न ।
स्तोका हि रत्नवणिजः, स्तोकाश्च स्वात्मसाधकाः ॥ १ ॥

भावार्थ—" [1]आ दुनियामां धन, स्वजन अने शरीरादिकना सुखनी प्रार्थना करनाराओ–तेने इच्छनाराओ घणा छे; पण अमूर्त आत्माना स्वभावने प्रगट करवारूप लक्षणवाळा लोकोत्तर कार्यमां प्रवृत्ति करनारा–तेना अर्थी घणा होता नथी ते योग्य छे; केमके बधा वेपारीओमां रत्नना वेपारी थोडाज होय छे, तेमज जीवोमां आत्मानुं साधन करनारा—निरावरणपणुं उत्पन्न करनारा पण थोडा ज होय छे. "

सर्वत्राप्यधिगम्यन्ते, पापिनो नेतरे जनाः ।
भूयांसो वायसाः सन्ति, स्तोका यच्चाषपक्षिणः ॥ २ ॥

भावार्थ—" सर्व स्थाने पापी जनो मळी आवे छे, पण इतर एटले धर्मी माणसो मळी आवता नथी; केमके दुनियामां कागडाओ घणा छे, पण चाष पक्षीओ तो थोडाज छे. " आ प्रसंग उपर एक कथा कहे छे—

श्वेतश्याम प्रासादनी कथा.

एकदा श्रेणिक राजानी सभामां श्रेष्ठी, सेनापति, सार्थवाह, दूत, द्वारपाळ, मंडळिक राजाओ, युवराज, अमात्य, महामात्य अने सेवको विगेरे सर्व

1 आ अर्थ टीकाने अनुसारे कर्यो छे.

बेठा हता. ते वखते धर्मचर्चा चालतां " आ नगरमां धर्मी लोको घणा छे के अधर्मी घणा छे? " एवो प्रश्न थयो. ते वखते सर्व सभासदोए कह्युं के " पापी घणा छे अने धर्मिष्ठ थोडा छे. " त्यारे राजाए आग्रहपूर्वक अभयकुमार मंत्रीने पूछयुं, त्यारे ते बोल्या के " हे स्वामी! धर्मिष्ठ लोको घणा छे अने पापी थोडा छे. " ते सांभळीने राजाए अति आग्रहथी पूछयुं के " ते शी रीते ? " त्यारे अभयकुमारे कह्युं के " हुं बतावी आपीश. " पछी तेणे गामनी बहार एक श्वेत अने एक श्याम एवां बे चैत्यो कराव्यां, अने त्रिक, चत्वर, राजमार्ग अने बीजा मोटा मार्ग विगेरे आखा नगरमां पटह वगडाव्यो के " आजे सर्व लोकोए गाम बहार जवुं. तेमां जेओ धर्मी होय तेओए श्वेत प्रासादमां जवुं, अने जेओ पापी होय तेओए श्याम प्रासादमां जवुं. " आवी उद्घोषणा सांभळीने सर्व लोको पोतपोतानी संपत्ति अनुसार वस्त्रादिक पहेरीने श्वेत चैत्यमां गया. मात्र कोइ मामो भाणेज बेज जण श्याम चैत्यमां गया. पछी अभयमंत्रीनी प्रेरणाथी सर्व परिवार सहित श्रेणिक राजा गाम बहार पेला चैत्य पासे आव्या. त्यां सर्व लोकोने श्वेत प्रासादमां जोइने राजाए पूछयुं के " हे पौरजनो ! तमे सर्वे श्वेत प्रासादमां केम पेठा छो? " ते सर्वे बोल्या के " हे महाराजा ! अमे सर्वे पोतपोताना कुळक्रमथी आवता धर्मनुं आचरण करनारा होवाथी धर्मी छीए. तेथी आ प्रासादमां आव्या छीए. " ते सांभळीने " अहो ! प्राणातिपात, मृषावाद, अदत्तादान, परस्त्रीगमन अने द्यूत विगेरे साते व्यसनना दोषनी खाणरूप आ सर्व लोको पोताने धर्मवाळा कहे छे. आ प्रमाणे होवाथी अभयमंत्रीनुं वचन सत्य थयुं. " एम मानतो राजा श्याम प्रासादमां गयो. त्यां मात्र मामा भाणेजने जोइने तेमने राजाए पूछयुं के " तमे बे आ चैत्यमां केम आव्या ? " तेओ बोल्या के " हे स्वामी ! अमे पहेलां श्री सुधर्मास्वामीनी पासे मांस अने मदिरानो नियम लीधो हतो, ते नियमनो अमे भंग कर्यो, तेथी अमे महा पापी छीए; केमके 'व्रतलोपी महापापी' व्रतनो लोप करनार महापापी कहेवाय छे; तेथी अमे आ प्रासादमां आव्या छीए. "

बीजी कोइ कथामां एम कहेलुं संभळाय छे के—सुदर्शन श्रेष्ठी के जेणे राजगृही नगरीना लोकोपर अर्जुनमालीथी थता उपसर्गनुं निवारण कर्युं हतुं ते श्रेष्ठी पोतानी स्त्री सहित मनमां विचार करीने ते श्याम चैत्यमां गया हता, अने

बीजा सर्वे श्वेत चैत्यमां गया हता. श्वेत चैत्यमां उपर प्रमाणे सर्व लोकोने पूछीने राजा श्रेणिके श्याम चैत्यमां पेसतांज सुदर्शन श्रेष्ठीने जोइ अभयकुमारने पूछयुं के "जेनुं धर्मीपणुं बाळगोपाळ सर्वमां प्रसिद्ध छे, अने जेना धर्मनी कीर्ति त्रण लोकमां विख्यात छे, एवा आ श्रेष्ठी आ पापप्रासादमां केम पेठेला छे?" मंत्रीए कह्युं के "आप त्यां जइने तेने पूछो. जेथी आपना संशयनी निवृत्ति थाय." ते सांभळीने राजा परिवार सहित त्यां गया. पालखीमांथी उतरीने तेणे श्रेष्ठीने पूछयुं के "तमे तो महा धर्मिष्ठ छो. अने आ श्याम प्रासादमां केम पेठा छो?" श्रेष्ठी बोल्या के "हे स्वामी! श्री महावीर स्वामीए बतावेलो श्रावक धर्म पण हुं यथाविधि पाळी शकतो नथी; केमके निरंतर षट्काय जीवनी हिंसा थाय छे. माटे हुं शी रीते धर्मी कहेवाउं? गाडरीया प्रवाहनी जेम लोकसंज्ञानो त्याग करीने जे धर्मरसिक श्रावको श्री महावीरना वाक्यने यथास्थित पाळे छे तेओज खरा धर्मिष्ठ छे, तेमां पण संपूर्ण धर्मरसिक तो मुनिओज छे. केमके—

> प्राप्तः षष्ठं गुणस्थानं, भवदुर्गाद्रिलंघनम् ॥
> लोकसंज्ञारतो न स्यान्मुनिर्लोकोत्तर स्थितिः ॥ १ ॥

भावार्थ—" लोकोत्तर स्थितिवाळा मुनि भवरूपी विषम पर्वतने उल्लंघन करनारुं, सर्वविरतिरूप, प्रमत्त नामनुं छठुं गुणस्थानक पामीने लोकसंज्ञामां आसक्त थता नथी; अर्थात् सर्व लोकोए जे कर्युं ते करवुं एम गतानुगतिक न्यायमां आसक्त थता नथी—तेमां आग्रही थता नथी; केमके मुनि लोकनी मर्यादा बहार रहेला छे. लोक विषयमां उत्सुक छे अने मुनि तो निष्काम छे. लोक पौद्गलिक संपत्तिने श्रेष्ठ माने छे अने मुनि ज्ञानादिक संपत्तिने श्रेष्ठ माने छे; माटे तेवा मुनिने लोकसंज्ञाथी शुं? कांइज नहीं." कह्युं छे के—

> आत्मसाक्षिकसद्धर्मसिद्धौ किं लोकयात्रया ।
> तत्र प्रसन्नचन्द्रस्य, भरतस्य च निदर्शनम् ॥ २ ॥

भावार्थ—" आत्मसाक्षीए सद्धर्मनी सिद्धि थाय छे तो पछी लोकसंज्ञानी शी जरुर छे? अहीं प्रसन्नचंद्र मुनि तथा भरत चक्रीनुं दृष्टांत जाणी लेवुं."

लोकसंज्ञानो त्याग करीने आत्मस्वरूपना उपयोगरूप भोगसुखमां मग्न थयेला मुनिओ उदय पामेला इंद्रियसुखने बळता एवा पोताना घरथी थता प्रकाश जेवुं माने छे; केमके तेमां कांइ पण खरुं सुख नथी." इत्यादिक सुदर्शन श्रेष्ठीए प्रकाश करेलुं धर्मनुं स्वरूप सांभळीने संशयरहित थयेला श्रेणिक राजाए सुदर्शन श्रेष्ठीने प्रणाम करीने सर्व पौरजनोनी समक्ष तेमने मोटुं सन्मान आपतां कह्युं के "अहो ! मारुं नगर श्रेष्ठ छे के जेमां तमारा जेवा पवित्र अने धर्मिष्ठ मनुष्यो रहे छे." इत्यादि स्तुति करीने राजा पोताना मंदिर तरफ गया, अने पौरजनो पण ते श्रेष्ठीनीज प्रशंसा करता पोतपोताने स्थाने गया.

"लोकसंज्ञानो त्याग करीने जिनेन्द्रना मार्गना अनुभवथी आनंद पामेला सन्मातिवाळा तत्त्वज्ञ पुरुष लोकमां प्रतिष्ठा पामीने शुद्ध आत्मधर्मने विस्तारे छे."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ द्वाविंशतितमस्तंभस्य
सप्तविंशत्याधिकात्रिशततमः प्रबंधः ॥ ३२७ ॥

व्याख्यान ३२८ मुं.

चक्षु स्वरूप.

चर्मचक्षुर्भृतः सर्वे, देवाश्चावधिचक्षुषः ।
सर्वचक्षुर्धराः सिद्धाः, साधवः शास्त्रचक्षुषः ॥ १ ॥

भावार्थ—"सर्वे लोको चर्मचक्षुने धारण करनारा होय छे, देवताओ अवधिज्ञानरूप चक्षुवाळा छे, सिद्ध जीवो सर्व चक्षु (केवळज्ञान) ने धारण करनारा छे, अने साधुओ शास्त्ररूपी चक्षुने धारण करनारा छे."

स्याद्वादनी रीतिए शास्त्र एटले जे शासन (उपदेश) करे ते. भारत, रामायण विगेरे ग्रंथो आ लोक संबंधी शिक्षा मात्र आपनारा होवाथी ते ग्रंथो शास्त्रनी संज्ञा पामता नथी. जैनागम पण जेने सम्यग् दृष्टिपणानी परिणति होय तेवा शुद्ध प्ररूपकनेज मोक्षनुं कारण थाय छे, पण तेनी मिथ्या प्ररूपणा करी होय तो ते भवनुं कारण थाय छे.

ते विषे श्री नन्दीसूत्रमां कह्युं छे के "इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं सम्मत्तपरिग्गहियं सम्मसुअं, मिच्छत्तपरिग्गहियं मिच्छसुअं।" आ द्वादशांगी गणिपिटक समकितवंते ग्रहण कर्युं होय तो ते सम्यक्श्रुत कहेवाय छे, अने मिथ्यात्वीए ग्रहण कर्युं होय तो ते मिथ्याश्रुत थाय छे.

मूळ श्लोकमां 'शास्त्र' शब्द छे ते शास्त्र एटले अनेकांत मत व्यवस्थापक वाक्योनो समूह, ते चक्षु जेमने होय तेओने शास्त्र चक्षुवाळा निर्ग्रंथ साधुओ जाणवा. अहीं आर्यरक्षित सूरिनो संबंध छे ते आ प्रमाणे—

आर्यरक्षित सूरिनी कथा.

दशपुर नामना नगरमां सोमदेव नामे एक ब्राह्मण रहेतो हतो. तेने सोमा नामनी पत्नी हती. ते बंने जैन धर्ममां दृढ हता. तेमने आर्यरक्षित अने फल्गुरक्षित नामे बे पुत्रो हता. तेमां मोटो पुत्र आर्यरक्षित पाटलीपुर जइने सांगोपांग वेदादि शास्त्रोनो अभ्यास करीने पोताना नगरमां आव्यो. ते वखते राजाए मोटा उत्सवपूर्वक तेने हस्तीपर बेसाडी पुरप्रवेश कराव्यो, अने इनाम विगेरे आपी सन्मान कर्युं. पछी ते राजाए करेला सत्कार सहित पोतानी माताने वंदन करवा घेर गयो. तेने जोइ तेनी माता "हे पुत्र! तुं सारो छे?" एटलुंज बोलीने मौन रही. माताने उदासीन देखीने आर्यरक्षित बोल्यो के "हे माता! मारी साथे केम बोलता नथी? अने सर्व लोकने पूज्य एवा सर्व शास्त्रना पारने पामेला मने जोइने तमे केम आनंद पामता नथी?" ते सांभळीने तेनी माता बोली के "हे पुत्र! स्वपरनो नाश करनारां, हिंसानो उपदेश करनारां अने नरकने आपनारां आ शास्त्रो भणवाथी शुं? आ शास्त्रोना प्रभावथी तुं घोर दुःखसमुद्रमां पडीश, एवुं जाणवाथी मने शी रीते आनंद थाय? माटे जो तुं दृष्टिवादनो अभ्यास करे तो मारो आत्मा प्रसन्न थाय." विनीत पुत्रे विवेकथी माताने पूछ्युं के "ते

शास्त्र क्यां भणाय छे ? " माता बोली के " तोसलिपुत्र नामना गुरु पासे. " पछी आर्यरक्षित मातानुं वचन अंगीकार करी प्रातःकाळे मातानी रजा लइ भणवा चाल्या, तेवामां तेने मळवा माटे आवतो तेना पितानो मित्र ब्राह्मण साडानव शेरडीनां सांठा लइने सामो मळ्यो. ते ब्राह्मण प्रेमथी आर्यरक्षितने मळीने बोल्यो के " तमारे माटे हुं आ शेरडीना सांठा लाव्यो छुं ते ल्यो." ते बोल्यो के " ए सांठा मारी माताने आपजो, हुं कार्य माटे जाउं छुं. " एटले ते ब्राह्मणे तेनी माता पासे जइने साडा नव सांठा आपी आर्यरक्षित साथे थयेली वात कही. ते सांभळीने माताए विचार्युं के " जरुर आ शुकनथी एवुं सूचवन थाय छे के मारो पुत्र साडा नव पूर्वनो अभ्यास करशे. "

अहीं आर्यरक्षित पोते गुरुने वंदनादिक करवानी रीतिथी अज्ञात होवाथी दृढरथ नामना श्रावकने साथे लइने गुरु पासे गया, अने श्रावकनी विधि प्रमाणे गुरुने वांदीने बेठो. पछी ते दृढरथे गुरुने आर्यरक्षितनी जाति, कुळ विगेरे कहीने विशेषमां एटलुं कह्युं के " आ चौद विद्यानो पारगामी थयो छे, अने तेने गइ काले राजाए हस्तीपर बेसाडीने पुरप्रवेश कराव्यो छे." पछी आर्यरक्षिते गुरुने कह्युं के " हे गुरु ! हुं दृष्टिवाद भणवा माटे आप पूज्यने आश्रये आव्यो छुं. ते भणावीने मारापर कृपा करो." ते सांभळीने गुरु बोल्या के "जो एम होय तो तुं दीक्षा ग्रहण कर, जेथी अनुक्रमे तने दृष्टिवादनो अमे अभ्यास करावीए. " ते सांभळीने आर्यरक्षिते गुरु पासे दीक्षा लीधी. पछी तेणे गुरुने कह्युं के " मारा अहीं रहेवाथी राजा, स्वजनो तथा पौरलोको रागने लीधे बळात्कारे मने चारित्रथी भ्रष्ट करशे. " ते सांभळीने गुरु गच्छ सहित आर्यरक्षितने लइने अन्य स्थाने गया. आ शिष्यनी चोरी प्रथमज श्री महावीर स्वामीना शासनमां थइ.

पछी तोसलीपुत्र गुरूने जेटलुं ज्ञान हतुं ते सर्व आर्यरक्षिते ग्रहण कर्युं. पछी गुरुनी आज्ञाथी वधारे भणवा माटे ते श्री वज्रस्वामी पासे जवा नीकळ्या. मार्गमां कोइ ग्राममां श्री भद्रगुप्त नामना सूरि हता. तेमने जइने आर्यरक्षिते वंदना करी. आर्यरक्षितने सर्व गुण युक्त जोइ ओळखीने हर्षथी आलिंगन आपी सूरि बोल्या के " हे वत्स ! मारुं जीवित अल्प रह्युं छे, तेथी हुं अनशन करवा इच्छुं छुं, माटे तुं मारो निर्यामक था, एम हुं याचना करुं छुं." आर्यरक्षि-

ते तेमनुं वचन अंगीकार कर्युं. पछी भद्रगुप्त सूरिए अनशन लइने आर्यरक्षितने कह्युं के "हे वत्स ! तुं वज्रस्वामीनी साथे एक उपाश्रयमां रहीश नहीं, पण भिन्न स्थाने रहीने तेमनी पासे श्रुतनो अभ्यास करजे; केमके जे सोपक्रम आयुष्यवाळो जीव वज्रस्वामीनी साथे एक रात्री पण रहे ते वज्रस्वामी साथे मृत्यु पामे एम छे." आ प्रमाणेनुं तेमनुं वचन अंगीकार करी तेमनी निर्यामणा करीने तेमना मृत्यु पाम्या बाद आर्यरक्षित वज्रस्वामीए अलंकृत करेली नगरीए गया. प्रथम रात्री गामनी बहार रह्या. ते रात्रीने पाछले पहोरे वज्रस्वामीने स्वप्नुं आव्युं के "मारा पात्रमां रहेलुं सर्व दूध कोइ अतिथि पी गयो." प्रातःकाळे आर्यरक्षित मुनि वज्रसूरि पासे आवी तेमने विधिपूर्वक वंदना करीने तेमनी पासे बेठा; एटले सूरिए तेने स्वागत पूछीने कह्युं के "क्या उपाश्रयमां तुं रह्यो छे ?" ते बोल्या के "हुं गामनी बहार रह्यो छुं." त्यारे वज्रसूरि बोल्या के "हे तोसलीपुत्रना शिष्य सोमपुत्र ! तुं बहार रहीने शी रीते अभ्यास करी शकीश ?" आर्यरक्षिते कह्युं के "हे स्वामी ! श्री भद्रगुप्त सूरिनी शिक्षाथी में भिन्न उपाश्रयनो आश्रय कर्यो छे." ते सांभळीने वज्रस्वामीए उपयोग आप्यो, एटले ते निमित्त जाणीने बोल्या के "ज्ञानना सागर समान ते पुज्य सूरिए तने युक्तज कह्युं छे." पछी श्री वज्रस्वामीए तेने पूर्वनी वाचना आपवा मांडी अने आर्यरक्षिते ग्रहण करवा मांडी. अनुक्रमे थोडा समयमांज तेणे नव पूर्वनो अभ्यास करी लीधो. पछी दशमुं पूर्व भणवाने प्रवर्त्तेला आर्यरक्षित मुनिने गुरुए कह्युं के "हवे दशमा पूर्वना यमकने जलदी भण." एटले आर्यरक्षित ते कठीनतावाळा यमकने पण शिघ्र भणवा लाग्या.

अहीं आर्यरक्षितना वियोगथी पीडा पामता तेना मातापिताए तेने बोलाववा माटे फल्गुरक्षितने मोकल्यो; एटले ते नानो भाइ मोटा भाइ पासे आवीने बोल्यो के "हे भाइ ! तमे आपणा कुटुंबने प्रतिबोध आपो, मारी साथे घेर चालो, अने मने पण तमारी दीक्षा आपो." ते सांभळीने तेणे नाना भाइने दीक्षा आपीने गुरुने विनंति करी के "हे स्वामी ! आपनी आज्ञा होय तो हुं मारा मावापने प्रतिबोध करवा माटे मारे गाम जाउं." गुरु बोल्या के "हे वत्स ! तुं अभ्यास कर, घेर जा नहीं." यमकनी विषमताथी खेद पामेला तेणे फरीथी गुरुने पूछयुं के "हे स्वामी ! में दशमा पूर्वमां केटलो अभ्यास कर्यो ?" गुरु ह-

सीने बोल्या के " हे वत्स ! दशमा पूर्वनुं एक बिंदुमात्र तें ग्रहण कर्युं छे, अने समुद्र जेटलुं बाकी रह्युं छे; परंतु तुं खेद केम करे छे ? तुं उद्यमी छो, वळी बुद्धिशाळी छो, तेथी जलदी पार पामी जइश. " आ प्रमाणे गुरुए तेने अभ्यास करवाने माटे उत्साहित कर्यो, तोपण ते नाना भाइ सहित वारंवार गुरु पासे जइने कहेवा लाग्यो के " आ मारो भाइ मने बोलाववा माटे अहीं आव्यो छे, माटे आप मने त्यां जवानी आज्ञा आपो. " त्यारे गुरुए श्रुतनो उपयोग आप्यो. ते उपरथी तेमने जणायुं के " आ आर्यरक्षित गया पछी शीघ्र पाछो आवशे नहीं, अने मारुं आयुष्य बहु थोडुं रह्युं छे, तेथी दशमुं पूर्व तो मारामांज रहेशे, कोइ ग्रहण करशे नहीं. " आ प्रमाणे भावीभाव जाणीने श्री वज्रस्वामीए तेने जवानी रजा आपी. पछी आर्यरक्षित मुनि पोताना भाइ फल्गुरक्षितनी साथे दशपुर नगरे आव्या. त्यां धर्मदेशना आपीने पोताना समग्र कुटुंबने प्रतिबोध पमाड्यो, अने राजा पण समकित पाम्यो.

एकदा श्री सौधर्मेन्द्र महाविदेह क्षेत्रमां विचरता श्री सीमंधर जिनेश्वरने वंदना करवा गया. त्यां प्रभुना मुखथी सूक्ष्म निगोदनुं स्वरूप सांभळीने तेणे प्रभुने पूछ्युं के " हे स्वामी ! भरतक्षेत्रमां आवुं सूक्ष्म निगोदनुं स्वरूप कहेनार कोइ छे ? " प्रभुए कह्युं के " आर्यरक्षित छे. " ते सांभळीने इन्द्र भरतक्षेत्रमां आव्या. त्यां आर्यरक्षित सूरिने वंदना करीने सूक्ष्म निगोदनुं स्वरूप पूछ्युं, एटले सूरिए सूक्ष्म निगोदनुं स्वरूप यथास्थित कही बताव्युं. ते सांभळीने हर्ष पामेला इन्द्र स्वस्थाने गया. त्यारपछी श्री आर्यरक्षित स्वामीए अनुयोग पृथक् पृथक् स्थापन कर्या, अने प्रांते आयुष्य पूर्ण थतां अनशन करीने स्वर्गे गया.

" कामक्रीडा संबंधी सुखनां स्थानभूत एवी नवोढा स्त्रीनो त्याग करीने नवीन शास्त्रार्थ ग्रहण करवामां उद्यमी थयेला आर्यरक्षित सूरि देवेन्द्रने पण वंदन करवा योग्य थया; माटे बीजा भव्य प्राणीओए पण तेवी रीते वर्तवुं. "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ द्वाविंशतितमस्तंभस्य
अष्टाविंशत्यधिकत्रिशततमः प्रबंधः ॥ ३२८ ॥

व्याख्यान ३२९ मुं.

मूर्च्छा तजवा विषे.

मूर्च्छाच्छन्नधियां सर्वं जगदेव परिग्रहः ।
मूर्च्छाया रहितानां तु, जगदेवापरिग्रहः ॥ १ ॥

भावार्थ—" मूर्च्छाथी जेनी बुद्धि आच्छादित थयेली छे एवा माणसोने आखुं जगत परिग्रहरूप छे, अने मूर्छाथी रहित थयेलाने जगतज अपरिग्रहरूप छे. "

मूर्छामां मग्न थयेला जीवोने सर्व जगत पोतानुं थयुं नथी, तोपण तेना परिग्रहरूपज छे; केमके ते 'हुं सर्व जगतनो स्वामी थाउं, तेनो भोक्ता थाउं' एवी इच्छाथी युक्त छे, अने मूर्छाए करीने रहित थयेला प्राणीने 'पौद्गलिक सर्व वस्तु आत्माथी भिन्न छे अने अग्राह्य छे.' एम विचारीने सर्वनो त्याग करवाथी जगत परिग्रह रूपे नथी. अहीं कोइने संदेह थाय के " जीव अने पुद्गळ (शरीर) एक क्षेत्र अवगाहीने रहेला होवाथी जीवने ते पुद्गळनो परिग्रह केम न कहेवाय ? " तेनो उत्तर कहे छे के 'जीवने ते पुद्गळ उपर रागद्वेषनी परिणति थाय, तोज ते परिग्रहपणाने पामे छे, अने रागद्वेषनी परिणतिनो त्याग करवाथी श्रमण गुण प्रगट थाय छे.' आ प्रसंग उपर संयत मुनिनो संबंध छे ते आ प्रमाणे—

संयत मुनिनी कथा.

कांपिल्यपुर नामना नगरमां संयत नामे राजा राज्य करतो हतो. ते एकदा मृगया रमवा वनमां गयो. मांसना स्वादमां लुब्ध थयेलो ते राजा अश्व उपर चढीने त्रास पामेला मृगोनी पाछळ तेमनो वध करवा दोड्यो. ते वनना कोइएक प्रदेशमां एक मुनि धर्मध्यानमां मग्न रहेला हता. ते मुनिनी पासे आवतां मृगोने ते हणवा लाग्यो. तेवामां मुनिने जोइने ते भय पाम्यो, एटले तेणे वंदना करीने राजा बोल्यो के " हे पूज्य ! आ मृगना वधथी थयेलो मारो अपराध माफ करो."

मुनि तो ध्यानमां होवाथी मौन रहेला हता तेथी तेमणे राजाने कांइ जवाब आप्यो नहीं, एटले तो राजा अधिक भयभ्रांत थयो, अने विचार करवा लाग्यो के " क्रोध पामेला आ मुनि कोण जाणे शुं करशे ? " फरीथी ते हाथ जोडीने भयथी बोल्यो के " हुं संयत नामे राजा छुं, माटे मारापर कृपा करी मारी साथे बोलो. तमे क्रोध पामेला जणाओ छो, तेथी तेजवडे कोटी मनुष्योने भस्म करवा समर्थ छो. " आ प्रमाणे सांभळीने मुनि बोल्या के " हे राजन् ! तने अभय छे. तने कोइ बाळीने भस्म करतुं नथी. " ए रीते राजाने आश्वासन आपीने मुनिए तेने धर्मोपदेश आप्यो के " हे राजा ! आ संसार अनित्य छे, तो तुं हिंसामां केम आसक्त थाय छे ? नरकना हेतुभूत हिंसा करवी तने योग्य नथी. जेम तने मृत्युनो भय छे तेम बीजा प्राणीओने पण मरणनो भय छे, माटे परलोकना हितनुं कार्य कर. स्त्री, पुत्रो अने आ देह पण जीवतानी पाछळ जीवे छे, अर्थात् तेणे मेळवेला द्रव्यादिकनो उपभोग करे छे. पण ते जीव मृत्यु पामे छे त्यारे ते स्त्री पुत्रादिक तेनी पाछळ जता नथी. माटे तेओ शी रीते आ जीवना सहायभूत थाय ? तेथी ते सर्व कृतघ्नीओ उपर आस्था करवी योग्य नथी. माटे तुं सर्व परिग्रहनो त्याग करीने चारित्रने अंगीकार कर. " इत्यादि धर्मोपदेश सांभळीने राजाए तत्काळ राज्यऋद्धिनो त्याग करीने ते गर्दभालि मुनिनी पासे प्रव्रज्या ग्रहण करी.

हवे ते संयत मुनि सामाचारीमां आसक्त थइने अप्रतिबद्धपणे विहार करता कोइ गाममां गया. त्यां कोइ एक मुनि स्वर्गथी च्यवीने क्षत्रिय राजा थया हता, तेने कांइक निमित्त मळवाथी जातिस्मरण ज्ञान थयुं हतुं, तेथी वैराग्य पामीने तेणे पण दीक्षा लीधी हती. ते मुनिए विहार करतां संयत मुनिने जोया. एटले तेनी परीक्षा करवा माटे तेणे पूछयुं के " हे मुनि ! तमारुं नाम शुं ? गोत्र शुं ? अने शा माटे तमे आ प्रव्रज्या अंगीकार करी छे ? " ते सांभळीने संयत मुनिए जवाब आप्यो के " मारुं नाम संयत मुनि छे, मारुं गोत्र गौतम छे. गर्दभालि नामना आचार्ये मने उपदेश आपीने जीवहिंसाथी निवृत्ति पमाड्यो छे, अने मुक्तिरूप फळ बतावीने तेनी प्राप्ति माटे मने दीक्षा आपी छे. " ते सांभळीने संयत मुनिना गुणथी जेनुं चित्त हर्षित थयुं छे एवा ते क्षत्रिय मुनिए फरीथी कह्युं के " क्रियावादी प्रमुख सर्वे एक एक अंशनुं ग्रहण करवाथी यथार्थ वस्तु-

स्वरूपने जाणी शकता नथी अने कही पण शकता नथी. तेथी असत्प्ररूपणानो त्याग करीने तमारे सद्धर्मशील थवुं. (स्याद्वाद धर्ममां दृढ थवुं.) वळी

परिग्रहग्रहावेशा–दुर्भाषितरजःकिराः ।
श्रूयन्ते विकृताः किं न, प्रलापा लिंगिनामपि ॥ १ ॥

भावार्थ—" परिग्रहरूपी ग्रह (भूतादिक) ना आवेशथी उत्सूत्र भाषणरूप रजवडे व्याप्त थयेला अने दोषरूप विकारवाळा जैनवेषविडंबकोना पण प्रलापो (असंबद्ध वचनव्यूहो) शुं नथी संभळाता ? अर्थात् संभळाय छे, "

परिग्रहरूप जे ग्रह तेना आवेशथी ग्रस्त अने परिग्रहमां आसक्त थयेला मुनिवेषधारी पण ज्ञानपूजनादिकनो उपदेश करीने परिग्रह मेळववानी इच्छाथी उत्सूत्र प्ररूपणा करे छे.

फरीथी पण क्षत्रिय मुनिए महा पुरुषोना दृष्टांतवडे स्थिर करवा माटे संयत मुनिने कह्युं के श्री उत्तराध्यनना अढारमा अध्ययनमां कह्युं छे के—

एयं पुरायपयं सोच्चा, अत्थधम्मोवसोहियं ।
भरहो वि भारहं वासं, चिच्चा कामाइ पव्वए ॥ १ ॥

भावार्थ—" आ प्रमाणे अर्थ अने धर्मथी उपशोभित एवुं पुण्यपद (पवित्र पद) सांभळीने भरतचक्रीए पण भरतक्षेत्रनो अने कामादिकनो त्याग करीने प्रव्रज्या ग्रहण करी. "

आ प्रमाणे ते क्षत्रिय मुनिए भरतादिकथी मांडीने महाबळ मुनि पर्यंत अनेक महा पुरुषोनां दृष्टान्तथी " परिग्रह रहित मुनिओने ज्ञानपूर्वक क्रियाओ फळदायी छे." एम उपदेश करीने फरीथी कह्युं के " जेम भरतादिके स्याद्वाद तत्त्वनो आश्रय कर्यो हतो, तेवी रीते तमारे पण तेज धर्ममां दृढ चित्तवाळा थवुं. " ए प्रमाणे सांभळीने संयत मुनिए हर्ष पामी ते मुनिनो उपदेश अंगीकार कर्यो. पछी चिरकाळ विहार करीने अनुक्रमे केवळज्ञान पामी ते संयत मुनि मोक्षे गया.

" हिंसाने तथा ममता (परिग्रह)ने तजीने तथा क्षत्रिय साधुए कहेला

एवां वचनने सांभळीने संयत मुनि चारित्र पाळवामां विशेष आदरवाळा थया ते प्रमाणे बीजा विद्वानोए पण अनुसरवुं."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ द्वाविंशतितमस्तंभस्य
नवविंशत्यधिकत्रिशततमः प्रबंधः ॥ ३२९ ॥

व्याख्यान ३३० मुं.

अनुभव विषे.

व्यापारः सर्वशास्त्राणां, दिक्प्रदर्शन एव हि ।
पारं तु प्रापयत्येको-ऽनुभवो भववारिधेः ॥ १ ॥

भावार्थ—" सर्व शास्त्रोनो व्यापार तो दिग्दर्शन मात्रज छे, परंतु भवसमुद्रना पारने तो एक अनुभवज पमाडे छे."

सर्व शास्त्रोनो तथा अनुयोग कथादिकनो (धर्म व्याख्यानादिकनो) जे व्यापार एटले अभ्यास श्रवण विगेरे छे, ते मात्र दिग्दर्शनज छे. जेम कोइ वटेमार्गु कोइ माणसने कोइ गामनो मार्ग पूछे छे तो ते माणस तेने मात्र मार्गज बतावे छे; पण गामनी प्राप्ति तो पोताना पग चलाववाथीज थाय छे. ए प्रमाणे शास्त्रनो अभ्यास मात्र तत्त्वसाधनना विधिनेज बतावे छे; पण संसारसागरना पारने तो एक अनुभवज पमाडे छे. श्री सुयगडांग विगेरे सूत्रोमां अध्यात्म भावे करीनेज सिद्धि कहेली छे. तेथी सद्गुरुना चरणनी सेवा करनारे आत्मस्वरूपना भासनमां तन्मयपणुं उपजाववुं. आ प्रसंग उपर आभिरीने ठगनार वणिकनी कथा छे ते आ प्रमाणे—

आंभिरीवंचक वणिक् कथा.

कोइ गाममां एक वणिक हतो, ते दुकाने बेसीने हमेशां वेपार करतो हतो. एकदा तेनी दुकाने कोइ अति सरल स्वभावनी आभीरी बे रुपीआ लइने कपास लेवा आवी. तेणे वणिकना हाथमां बे रुपीआ आपी तेनो कपास आपवा कह्युं, एटले ते वणिके "हालमां कपास बहु मोंघो छे." एम कहीने अर्धा अर्धा रुपीआनी बे धारण तोळीने तेने एक रुपीआनो कपास आप्यो. ते अति सरल स्वभाववाळी आभारी "बे वखत जोखी आपवाथी बे रुपीआनो मने कपास आप्यो." एम जाणीने ते कपास लइने जलदी पोताने घेर गइ. पछी ते वणिके विचार्युं के "आजे एक रुपीओ फोगटनो मळ्यो छे, माटे आज तो हुं तेनुं उत्तम भोजन जमुं." एम विचारीने ते रुपीआनुं घी, खांड, घउं विगेरे खरीदीने घेर मोकल्युं, अने पोतानी स्त्रीने तेना घेबर करवानुं कहेवराव्युं. ते स्त्रीए घेबर तैयार कर्या; तेवामां बीजा कोइ गाममां रहेतो तेनो जमाइ पोताना मित्र सहित कांइ काम सारु त्यां आव्यो. तेने जोइने हर्षित थयेली पेला वणिकनी स्त्रीए ते बन्नेने घेबर जमाड्या. "स्त्रीओने जमाइपर अति स्नेह होय छे."

तेओ जमीने गया पछी ते वणिक भोजनने माटे घेर आव्यो, त्यारे हमेशनी जेवुं स्वाभाविक भोजन जोइने तेणे पोतानी स्त्रीने पूछ्युं के "हे प्रिया! तें आजे घेबर केम कर्या नहीं?" स्त्रीए जवाब आप्यो के "हे स्वामी! घेबर तो कर्या हता, पण ते सत्पात्रने जमाड्या छे. आजे कांइ काम माटे आपणा जमाइ तेना मित्र सहित अहीं आव्या हता, तेने जवानी उतावळ हती, तेथी तेने ते घेबर जमाड्या छे." ते सांभळीने वणिक खेदयुक्त थइ विचार करवा लाग्यो के "में बीजाने माटे थइने बिचारी आभीरीने नकामी छेतरी, तेने छेतरवानुं पाप मने लाग्युं, अने घेबर तो बीजाए खाधा. मूर्ख पुरुषो स्त्री पुत्रादिकने माटे अत्यंत पाप कर्म करे छे, पण ते पापनुं फळ तो तेने पोतानेज भोगववुं पडे छे." एम विचारी ते गाम बहार जइने देहचिंता करी पाछो वळतां सूर्यना तापवडे ग्लानि पामवाथी एक वृक्ष नीचे विश्रान्ति लेवा बेठो; तेवामां कोइ मुनिने गोचरी जता जोइने तेणे कह्युं के "हे पूज्य! अहीं आवो. जरा विश्रांति ल्यो अने मारी एक वात सांभळो." ते सांभळीने ज्ञानी मुनिए कह्युं के "हुं मारा पोताना कार्य माटे उतावळे जाउं छुं, तेथी हुं रोकाइश नहीं." वणिक बोल्यो के "हे महाराज!

शुं बीजाने कामे पण कोइ जता हशे के जेथी आप एवुं बोल्या के—हुं मारा पोताना कार्य माटे जाउं छुं ?" मुनि बोल्या के "बीजाना कार्य माटे घणा जीवो क्लेश पामे छे; तेमां प्रथम तो स्त्रीपुत्रादिकने माटे क्लेश पामतो एवो तुंज दृष्टांत रूप छे." आ एकज वाक्यथी प्रतिबोध पामीने ते वणिके मुनिने कह्युं के "आप तपनुं पारणुं विगेरे करो. पछी हुं आपनी पासे आवीश." पछी मुनी निर्दोष आहारवडे देहने भाडुं आपीने स्वाध्याय ध्यान करवा लाग्या. ते वखते ते वणिके तेमनी पासे जइ धर्मनुं श्रवण कर्युं, ते आ प्रमाणे—

अतीन्द्रियं परं ब्रह्म, विशुद्धानुभवं विना ।
शास्त्रयुक्तिशतेनापि, न गम्यं यद्बुधा जगुः ॥ १ ॥

भावार्थ—" उत्कृष्ट एवुं ब्रह्म इंद्रियोने गोचर नथी; तेथी विशुद्ध अनुभव विना शास्त्रनी सेंकडो युक्तिओथी—अनेक आगमरहस्यना अवबोधथी पण ते प्राप्त थतुं नथी एम पंडितो कहे छे."

न सुषुप्तिरमोहत्वा—न्नापि च स्वापजागरौ ।
कल्पनाशिल्पविश्रान्ते-स्तुर्या चानुभवे दशा ॥ २ ॥

भावार्थ—"आत्मअनुभव अवस्थामां, मोह नहीं होवाथी सुषुप्ति अवस्था होती नथी, तेमज संकल्पविकल्पनो पण अभाव होवाथी स्वाप तथा जागर अवस्था पण होती नथी, परंतु ते त्रणे दशाथी भिन्न एवी तुर्य (चोथी) दशा होय छे."

दशा चार छे—तेमां अति शयन करवारूप शुषुप्ति अवस्था मिथ्यात्वीने होय छे, शयनरूप अवस्था सम्यग् दृष्टिने होय छे. जागर दशा अप्रमत्त मुनिने होय छे, अने तुर्य दशा तो उत्तरोत्तर सयोगीकेवळी पर्यंत होय छे. ग्रंथांतरमां तीव्रनिद्राघूर्णित चित्तवाळाने सुषुप्ति अवस्था कही छे, ते अनुभव ज्ञानवाळाने होती नथी; केमके अनुभवी मोहथी रहित होय छे. तेमज स्वाप तथा जागर दशा पण अनुभवीने होती नथी, केमके ते कल्पनायुक्त छे, अने अनुभवमां कल्पनानो अभाव होय छे, तेथी संपूर्ण नय पत्तने आधारे अनुभवमां तुर्य (उजागर) दशाज कहेली छे."

इत्यादि गुरुना उपदेशथी प्रतिबोध पामेला वणिके गुरुने कह्युं के "हे

१ कल्पना ते विकल्पचेतना तेनुं शिल्प ते विज्ञान, तेमां ज विश्रांति ते 'कल्पना शिल्प विश्रांति' जाणवी.

गुरु ! बंधुवर्गनी रजा लइने दीक्षा लेवा माटे हुं अहीं पाछो आवुं त्यां सुधी आप अहींज रहेजो." एम कहीने घेर जइ तेणे सर्व स्वजनोने तथा पोतानी स्त्रीने कह्युं के "आ दुकानना व्यापारथी मने घणो अल्प लाभ मळे छे, माटे घणो लाभ मेळववा सारु मारे परदेश व्यापार करवा जवुं छे; तेने माटे अहीं बे सार्थवाह छे. तेमां एक सार्थवाह एवो छे के ते पोतानुं धन आपीने इच्छित नगरमां लइ जाय छे अने मेळवेला धनमां पोते भाग लेतो नथी; अने बीजो सार्थवाह एवो छे के ते पोतानुं धन आपतो नथी अने तेनी सेवा करतां ते प्रथमनुं उपार्जन करेलुं सर्व धन पण लइ ले छे; तो तमे सर्व कहो के हुं कया सार्थवाहनी साथे जाउं ?" त्यारे सर्व बोल्या के " तमे पहेला सार्थवाहनी साथे जाओ." ते सांभळीने ते वणिक सर्वे बंधुओने लइने बहार उद्यानमां आव्यो. त्यां बंधुओए "सार्थवाह क्यां छे ?" एम पूछयुं. त्यारे ते बोल्यो के " आ वृक्षनी नीचे बेठेला सिद्धिपुरीना सार्थवाह आ साधु छे. ते पोताना धर्मरुपी धनने आपीने हमेशां व्यापार करावे छे, अने तेमां जे लाभ मळे छे तेमांथी ते लेशमात्र पण ग्रहण करता नथी. तेथी आनी साथे इच्छेली एवी मुक्तिपुरीए हुं जइश. बीजो सार्थवाह ते स्त्री, स्वजन विगेरे जाणवा. ते पूर्वनुं धर्मरूपी धन लइ ले छे, अने नवुं धन बिलकुल आपता नथी; माटे तमेज मने आनंदथी कह्युं छे के पहेला सार्थवाह जोडे जाओ; तेथी हुं तमारा सर्वेनो संबंध मूकीने आ मुनिनोज आश्रय करुं छुं."

इत्युदीर्य स वणिग् मुनिपार्श्वे, बन्धुमोहमपहाय महात्मा ।
प्राप सानुभवधर्ममुदारं, सौख्यमत्र परत्र च लेभे ॥ १ ॥

भावार्थ—"एम कहीने ते महात्मा वणिक बंधु विगेरेना मोहनो त्याग करीने मुनिनी पासेथी अनुभववाळा उदार धर्मने अंगीकार करीने आ लोक तथा परलोकनुं सुख पाम्यो."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ द्वाविंशतितमस्तंभस्य
त्रिंशत्यधिकत्रिशततमः प्रबंधः ॥ ३३० ॥

॥ समाप्तोऽयं द्वाविंशतितमः स्तंभः ॥

उपदेश प्रासाद.

स्तंभ २३ मो

व्याख्यान ३३१ मुं.

योग विषे.

मनोवाक्काययोगानां, चापल्यं दुःखदं मतम् ॥
तत्त्यागान्मोक्षयोगानां, प्राप्तिः स्यादुज्झितादिवत् ॥१॥

भावार्थ—" मन वचन अने कायानी चपळता दुःखदायक कहेली छे. ते चपळतानो त्याग करवाथी उज्झितमुनि विगेरेनी जेम मोक्षयोगनी प्राप्ति थाय छे."

उज्झितमुनिनी कथा.

नंदिपुरमां रत्नशेखर नामे राजा राज्य करतो हतो. तेने रत्नमती विगेरे राणीओ हती. तेमने मृतवत्साना[1] दोषने लीधे जेटलां बाळको थतां ते सर्व मरी जतां हतां. ते दोषना निवारण माटे तेणे अनेक उपायो कर्या, पण ते सर्व निष्फळ थया. एकदा राणीने एक पुत्रनो प्रसव थयो. ते पुत्रने मरण पामेलोज धारीने उकरडामां नांखी दीधो. दैववशे ते पुत्र मरण पाम्यो नहीं तेथी तेने उकरडामांथी पाछो लइ लीधो. तेनुं नाम उज्झित कुमार पाड्युं. अनुक्रमे ते युवावस्था पाम्यो; परंतु स्वभावेज मनमां अत्यंत अहंकारी थयो. शरीरवडे पण एवो अहंकारी थयो के कोइने मस्तक पण नमावे नहीं, तेम वाणीथी पण दुर्वचन बोलनारो थयो. आखा जगतने तृण समान गणतो सतो स्तंभनी जेम अक्कड रहीने पोताना माता-

१ मरेला बाळक अवतरे तेवो दोष.

पिताने पण नमे नहीं. एकदा ते लेखशाळामां गयो, त्यां भ नार गुरुने उंचे आसने बेठेला जोइने तेणे कह्युं के "तुं अमारा अने अमारी रैयतना आवेला दाणानो खानार थइने उंचा आसनपर बेसे छे, अने मने नीचे बेसाडे छे." एम कहीने गुरुने लात मारी नीचे पाडी दीधा. ते वात सांभळीने 'आ कुपुत्र छे' एम जाणी राजाए तेने पोताना देशमांथी दूर कर्यो.

उज्झित कुमार चालतो चालतो एक तापसना आश्रममां गयो. त्यां पग उपर पग चढावीने ते तापसोनी सामे बेठो. एटले तापसोए तेने शिखामण आपी के "हे भाग्यशाळी! विनय राख." ते बोल्यो के "मस्तकपर जटाजुट राखनारा अने आखे शरीरे भस्म चोळनारा नग्न बावाओने विषे विनय शो?" तेनुं तेवुं गर्विष्ठ वचन सांभळीने तापसोए तेने तरत त्यांथी काढी मूक्यो; एटले ते क्रोधथी बोल्यो के "अरे! मारा पितानुं हुं राज्य पामीश त्यारे तमारो निग्रह करीश." एम कहीने बडबडतो बडबडतो ते आगळ चाल्यो. मार्गमां तेने एक सिंह मळ्यो. तेने जोइने हाथमां तीक्ष्ण खड्ग लइ अहंकारथी तेनी सन्मुखज चाल्यो. सिंहनी साथे युद्ध थतां सिंह तेने खाइ गयो. ते मरीने गर्दभ थयो. त्यांथी मरीने उंट थयो. त्यांथी मरीने फरीथी नंदिपुरमांज पुरोहितनो पुत्र थयो. बाल्यावस्थामां ज ते चौद विद्यानो पारगामी थयो. त्यां पण अहंकारथीज मृत्यु पामीने तेज नंदीपुरमां गायन करनारो डुंब[1] थयो. तेने जोइने पुरोहितने तेनापर घणो स्नेह थवा लाग्यो. एवामां कोइ केवळज्ञानी ते गामे पधार्या. तेने पुरोहिते नम्रताथी पूछयुं के "हे पूज्य! आ डुंबना पर मने घणो प्रेम थाय छे तेनुं शुं कारण?" त्यारे केवळीए तेना पूर्व भवनुं सर्व वृत्तान्त कह्युं. ते सांभळीने ते गायकने जातिस्मरण ज्ञान थयुं; तेथी ते केवळी परमात्मानां वचन सांभळवानो रसिक थयो. पछी गायके पोताना उद्धारनो उपाय पूछ्यो; त्यारे श्री केवळीए अनेक स्याद्वाद पक्षथी युक्त एवुं मन, वचन अने काया रूप त्रण योगनी शुद्धिनुं स्वरूप प्रकाशित कर्युं, तथा मोक्षना हेतुरूप पांच योगना स्वरूपनुं पण निरूपण कर्युं. ते आ प्रमाणे—

मोक्षेण योजनाद्योगः, सर्वोऽप्याचार इष्यते ॥
विशिष्य स्थानवर्णार्था—लंबनैकाग्रगोचरः ॥ १ ॥

---

१ डुंब ढेढनी एक जाति छे.

भावार्थ—" सर्व आचार मोक्षनी साथे योग करनार होवाथी योगरूप कहेला छे. तेमां पण स्थान, वर्ण, अर्थ, आलंबन अने एकाग्रता ए पांचने विशेषे करीने योगरूप मानेला छे. "

अहीं मिथ्यात्वादिकना कारणभूत एवा मन, वचन, कायाना योग कर्मवृद्धि करवाना हेतुभूत होवाथी ग्रहण करवा नहीं; पण मोक्ष साधनना हेतुभूत योगनुंज ग्रहण करवुं. समग्र कर्मनो जे क्षय ते मोक्ष छे. मोक्षनी साथे जोडनार होवाथी ते योग कहेवाय छे. जिनशासनमां कहेलो चरण सप्तति, करण सप्तति रूप सर्व आचार मोक्षना उपायभूत होवाथी योग छे. तेमां पण स्थान, वर्ण, अर्थ, आलंबन अने एकाग्रता ए पांच प्रकारना योगने विशेषे करीने मोक्षसाधनना उपायमां हेतु मानेला छे. अनादि काळथी परभावमां आसक्त थयेला प्राणीओ भवभ्रमण करनारा होवाथी पुद्गळना भोगविलासमां मग्न थयेला होय छे. तेमने आ योग प्राप्त थता नथी; परंतु अमारे तो एक मोक्षज साध्य छे एम धारीने जे प्राणी गुरुस्मरण तथा तत्त्वजिज्ञासा विगेरे योगवडे निर्मळ, निःसंग अने परमानंदमय आत्मस्वरूपने संभारीने तेनीज कथा सांभळवामां प्रीति राखे छे ते प्राणीने परंपराए आ योग सिद्ध थाय छे; पण मरुदेवा मातानी जेम सर्व प्राणीओने अल्प प्रयासे सिद्धि प्राप्त थती नथी; केमके मरुदेवा माताने तो आशातनादिक दोष अत्यंत अल्प हता, तेथी तेने प्रयास विनाज सिद्धि प्राप्त थइ हती; अने बीजा जीवोने तो आशातनादि दोष अत्यंत होय छे, तथा गाढ कर्मना बंधनवाळा होवाने लीधे तेमने तो स्थानादिक क्रमे करीनेज सिद्धि प्राप्त थाय छे.

तेमां स्थान एटले वंदना करवी, कायोत्सर्गे उभा रहेवुं, वीरादिक आसन वाळवा तथा मुद्राओ करवी विगेरे, वर्ण एटले अक्षरोना शुद्ध उच्चार करवा, अर्थ एटले वाक्यनो भावार्थ चिंतववो, आलंबन एटले अर्हत्स्वरूपवाच्य पदार्थमांज उपयोग राखवो, अने एकाग्रता एटले शुद्ध स्वरूपमां निश्चळता थवी. ज्यां सुधी ध्याननी एकता न थाय त्यांसुधी अंगन्यास (आसन), मुद्रा अने वर्णनी शुद्धिपूर्वक आवश्यक, चैत्यवंदन, पडिलेहण विगेरे क्रियाओ उपयोगनी चपळताना निवारण माटे अवश्य करवी; केमके ते सर्व जीवोने अतिशय हितकारी छे, अने स्थान, वर्णना क्रमथी तत्त्वनी प्राप्ति थाय छे.

हवे ते पांचे योगमां बाह्य अने अभ्यंतर साधकपणुं बतावे छे. योगपंचकमां स्थान अने वर्ण ए बे कर्मयोग बाह्य छे, अने बाकीना त्रण ज्ञानयोग ते अभ्यंतर छे. आ पांचे प्रकारना योग देशविरति अने सर्वविरतिने विषे अवश्य होय छे. आ पांच योग चपळतानी निवृत्तिमां कारणरूप छे. मार्गानुसारी विगेरेमां आ योग बीज मात्र होय छे."

आ प्रमाणे केवळीना मुखथी धर्मोपदेश सांभळीने संसारनी अनित्यता जाणी पुरोहित अने डुंब बन्ने शुद्ध धर्मने अंगीकार करी पाळीने स्वर्गे गया. त्यांथी च्यवीने अनुक्रमे मुक्तिने पामशे.

'स्थान विगेरे पांच प्रकारना सुयोग मोक्षनी प्राप्तिमां कारणरूप छे. ते योगने मन, वचन अने कायानी शुद्धिपूर्वक उज्झित साधुए धारण कर्या, ते प्रमाणे बीजा भव्य जीवोए पण आ योगने विषे आदर करवो.'

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ त्रयोविंशतितमस्तंभस्य
एकत्रिंशदधिकत्रिशततमः प्रबंधः ॥ ३३१ ॥

व्याख्यान ३३२ मु.

यज्ञ विषे.

ब्रह्माध्ययननिष्ठावान्, परब्रह्मसमाहितः ।
ब्राह्मणो लिप्यते नाघै-र्नियागप्रतिपत्तिमान् ॥ १ ॥

भावार्थ—" ब्रह्म नामना अध्ययनमां निष्ठावाळो, परब्रह्ममां सावधान अने निरंतर याग जे कर्मदहन तेनी प्रतिपत्तिवाळो ब्राह्मण एटले मुनि पापथी लेपातो नथी."

आचारांग सूत्रना प्रथम श्रुतस्कंधना नवमा ब्रह्म अध्ययनमां कहेली मर्यादामां वर्तनार, परब्रह्म एटले शुद्ध आत्मस्वरूप अणवावडे करीने समाधिवाळो

अने कर्मदहन करवा रूप जे याग तेनी अत्यंत निष्पत्तिवाळो एवो ब्राह्मण एटले द्रव्यभावथी ब्रह्मचर्यनुं पालन करनार मुनि पापकर्मथी लिप्त थतो नथी. हवे याग एटले यज्ञ तेनुं वर्णन करे छे.

यज्ञ बे प्रकारनो छे. द्रव्ययज्ञ अने भावयज्ञ. तेमां गोमेध, नरमेध, गजमेध, छागमेध विगेरे द्रव्ययज्ञमां अवश्य प्राणीनो वध थाय छे. ते द्रव्ययज्ञना करावनारा आचार्यो निर्दयताथी एवां वाक्यो बोले छे के—

यज्ञार्थं पशवः सृष्टाः, स्वयमेव स्वयंभुवा ।
यज्ञोस्य भूत्यै सर्वस्य, तस्माद्यज्ञे वधोऽवधः ॥

इत्यादि.

"ब्रह्माए पोते यज्ञने माटेज पशुओ उत्पन्न कर्यां छे, अने यज्ञ आ सर्व जगत्ना कल्याण माटे छे, तेथी यज्ञमां जे वध थाय ते वध (हिंसा) कहेवाय नहीं." औषधिओ, पशुओ, वृक्षो, पक्षीओ अने तिर्यंचो यज्ञमां मरण पामवाथी उंची गति (स्वर्ग) ने पामे छे. तल, व्रीहि, जव, अडद, जळ, मूळ अने फळ विधिपूर्वक आपवाथी मनुष्योपर पितृदेवताओ एक मास सुधी प्रसन्न रहे छे, मत्स्यनुं मांस आपवाथी बे मास सुधी प्रसन्न रहे छे, हरिणनुं मांस आपवाथी त्रण मास, घेटाना मांसथी चार मास, पक्षीना मांसथी पांच मास, बकराना मांसथी छ मास, पृषत् जातिना मृगना मांसथी सात मास, एण जातिना मृगना मांसथी आठ मास, रुरुजातिना मृगना मांसथी नव मास, भुंड अने महिषना मांसथी दश मास, ससला अने काचबाना मांसथी अगियार मास, गायनुं मांस; दुध अथवा खीरथी एक वर्ष, अने घरडा बकराना मांसथी बार वर्ष सुधी पितृदेवनी तृप्ति थाय छे. आ प्रमाणे स्मृतिमां कहेला हकीकतने अनुसारे पितृना तर्पणने माटे मूढ पुरुषो जे हिंसा करे छे ते पण दुर्गतिने माटेज छे. ए प्रमाणे योगशास्त्रना बीजा प्रकाशमां कह्युं छे.

प्रबोध चिंतामणिमां स्मृतिने अनुसरनारा स्मार्त्तोने शिक्षावचन कह्युं छे के " जो ब्राह्मणो वेदना मंत्रो शक्तिवाळा छे एम कहेता होय तो हणवानो व्यापार कर्या विनाज मात्र मंत्र बोलवाथीज बकराओना प्राण जवा जोइए. जो वेदना मंत्रोनी शक्ति विषे कांइ पण प्रमाण होय तो हणाता बकराओने वेदना न थवी

जाइए. जो वेदना मंत्रोनी अतिशयवाळी शक्ति होय तो शांतिने माटे होमेला वाघथी देवताओ केम प्रसन्न थता नथी ? वळी वेदना मंत्रोथी परणेली स्त्रीओने विधवा थयेली जोइने पंडित पुरुष वेदनी निर्दोषता शी रीते कहेशे ? पंचेंद्रिय प्राणीनो वध करतां पण जेओनुं मन शंका पामतुं नथी तेओने कुंथुवा, पुरा विगेरे झीणा जीवोनी हिंसा करतां तो क्यांथीज दया आवशे ? जेओनो हिंसा ए धर्म छे. जळ तीर्थ छे, गाय पूज्य छे, गुरु गृहस्थाश्रमी छे, अग्नि देव छे अने ब्राह्मण पात्र छे तेओने शुं कहेवुं ? "

श्री धनपाळ पंडिते द्रव्ययागनी श्लाघा पण करी नहोती. ते विषे एवी कथा छे के—श्री भोजराजाए यज्ञमां वध करवा माटे एक बोकडो आण्यो हतो, ते बोकडो बें बें शब्द करतो हतो. ते जोइने बीजा सर्व पंडितोए यज्ञनी श्लाघा करी. त्यारे राजाए धनपाळ पंडितने कह्युं के " तुं पण बुद्धि अनुसार यज्ञनी स्तुति कर. " ते सांभळीने श्रावकधर्म पाळनार धनपाळ पंडिते कह्युं के " हे राजन् ! आ बकरो तमने एम कहे छे के—

नाहं स्वर्गफलोपभोगरसिको नाभ्यर्थितस्त्वं मया ।
संतुष्टस्तृणभक्षणेन सततं साधो न युक्तं तव ॥
स्वर्गे यान्ति यदि त्वया विनिहता यज्ञे ध्रुवं प्राणिनो ।
यज्ञं किं न करोषि मातृपितृभिः पुत्रैस्तथा बान्धवैः ॥ १ ॥

भावार्थ—" हुं स्वर्गफळना उपभोगमां रसिक नथी, में कांइ तमारी पासे तेनी याचना करी नथी, हुं तो तृणनुं भक्षण करीने निरंतर संतुष्ट छुं; माटे हे भला माणस ! तमारे मने मारवो योग्य नथी. जो कदाच यज्ञमां हणेला प्राणीओ स्वर्गमांज जता होय, तो तमे माता, पिता, पुत्र अने बांधवादिकवडे केम यज्ञ करता नथी ? "

आ श्लोक सांभळीने राजाने क्रोध चढ्यो. पण फरी समय पामीने धनपाळ पंडिते तेने प्रसन्न कर्या; परंतु पोताना व्रतनियमनो भंग कर्यो नहीं. आ प्रसंग उपर एक बीजो पण संबंध छे. ते नीचे प्रमाणे—

रविगुप्त ब्राह्मणनी कथा.

अवन्ति नगरीमां रविगुप्त नामे एक ब्राह्मण रहेतो हतो. ते हमेशां वेद-

शास्त्रनी युक्तिथी लोकोनी पासे यज्ञधर्मनो उपदेश करतो हतो अने कहेतो के "वेदमां कहेली हिंसा करवाथी दोष नथी, पण उलटुं यज्ञाचार्यने, यज्ञ करनारने तथा होमेला बकरा विगेरेने मोटुं फळ प्राप्त थाय छे." इत्यादि उपदेश करतो ते आयुष्य पूर्ण थतां मरण पामीने त्रीजी नरकमां उत्पन्न थयो. त्यांथी नीकळ्या पछी अनंत काळ सुधी भवभ्रमण करीने कांपिल्यपुरमां वामदेव नामे ब्राह्मण थयो. त्यां पण अश्वमेधादिक यज्ञोनो उपदेश करवा लाग्यो, तथा रात्रीभोजन विगेरे बावीशे अभक्ष्यनुं भक्षण करवा लाग्यो. तेने सुमित्र नामे श्रावक मित्र थयो हतो. ते सुमित्र तेने निरंतर शिखामण आपतो हतो के "दीन शब्द करता बकराओने हणीने धर्म माननारा, निर्दय, नपुंसक जेवा, यज्ञ करनारा ब्राह्मणो कसाइथी पण अधिक पापी छे. 'हिंसाने पण वेदमां अहिंसा कहेली छे' ए प्रमाणे आगमना रागथी मिथ्या कहेनारा विचारशून्य हृदयवाळा ब्राह्मणो चार्वाकनी शा माटे निंदा करे छे? अर्थात् ते करतां चार्वाक घणा सारा छे." ते सांभळीने वामदेव बोल्यो के "हे मित्र! जैनोए तने मुग्ध होवाथी छेतर्यो छे, माटे तुं आम बोले छे." सुमित्रे कह्युं के "निःस्पृही मुनिओ बीजाने शा माटे छेतरे? तेथी तेने शो लाभ मेळववो छे? तेने कांइ स्पृहा तो छ नहीं." आ प्रमाणे सुमित्र तेने वारंवार समजावतो हतो, पण ते वामदेव प्रतिबोध पामतो नहोतो.

एकदा नजीकना कोइ गामे विवाहप्रसंग हतो, ते निमित्ते सुमित्र वामदेवने साथे लइने त्यां जवा चाल्यो. मार्गमां कोइ ग्राम नजीक आव्या एटले त्यां रोकाया. ते वखते संध्यासमय थयो हतो, एटले सुमित्रे तो चतुर्विध आहारनुं प्रत्याख्यान कर्युं. वामदेव तो रात्रीएज रसोइ करीने जमवा बेठो. ते वखते तेणे मित्रने बोलाव्यो के "हे मित्र! भोजन करवा चाल, हजु घणी रात्री गइ नथी, संध्यासमयज छे. आपणे दीपकनो सारो प्रकाश करीने जमवा बेसीए." सुमित्र बोल्यो के "रात्रीभोजनना जे दोषो कहेला छे ते दोषो अंधकारमां जमवाथी पण लागे छे अने सांकडा मुखवाळा पात्रमां जमवाथी पण लागे छे, तेमज दीवा करवाथी पण बीजी बहु हिंसा लागे छे; केमके रात्रे दीवानी ज्योतना आकर्षणथी अनेक पतंगिया विगेरे जीवो आवी आवीने ते दीवाना पात्रमां पडे छे अने तेनी ज्योतमां बळी जाय छे. माटे मारे रात्रीभोजनना विषयमां द्विविध त्रिविधे करीने प्रत्याख्यान छे." ते सांभळीने ते वामदेव जैनगुरुनी निंदा करतो खावा बेठो. हवे

रांधवानी तपेलीमां दैवयोगे अजाणतां सर्प रंधाइ गयो हतो. तेथी खाइ रह्या पछी वामदेवने विष चढयुं. सुमित्रे नवकार मंत्र भणीने ते विष उतार्युं. पछी सुमित्र तेने केवळी पासे लइ गयो. त्यां वामदेव पोतानो पूर्वभव सांभळीने प्रतिबोध पाम्यो. पछी वामदेवे केवळी गुरुने भावयज्ञनुं स्वरूप पूछयुं. त्यारे केवळी बोल्या के—

इन्द्रियाणि पशून् कृत्वा, वेदीं कृत्वा तपोमयीम् ।
अहिंसा आहुतीर्दद्या—देष यज्ञः सनातनः ॥ १ ॥

भावार्थ—"इन्द्रियोने पशुरूप करीने अने तपरूपी वेदी (कुंड) करीने अहिंसारूपी आहुति देवी, ए सनातन भावयज्ञ कहेलो छे."

केवळीना वाक्यथी प्रतिबोध पामेलो वामदेव भावयज्ञ करवामां रसिक थयो. पछी तेणे पोताना पिताने जइने कह्युं के " हुं दीक्षा लउं छुं. " पिताए जवाब आप्यो के " तुं पुत्ररहित छे, माटे 'अपुत्रस्य गतिर्नास्ति' पुत्ररहित माणसनी सद्गति थती नथी. " ते सांभळीने वामदेव बोल्यो के—

जायमानो हरेद् भार्यां, वर्धमानो हरेद्धनम् ।
म्रियमाणो हरेत् प्राणान्, नास्ति पुत्रसमो रिपुः॥ १ ॥

भावार्थ—"पुत्र उत्पन्न थतांज भार्यानुं हरण करे छे,मोटो थतां धननुं हरण करे छे, अने कदी मरण पामे तो प्राणोनुं हरण करे छे, माटे पुत्र समान बीजो कोइ शत्रु नथी."

इत्यादि युक्तिथी मातापिताने प्रतिबोध पमाडीने वामदेवे दीक्षा ग्रहण करी अने आत्मकार्य साध्युं.

"केवळीना वाक्यथी द्रव्ययज्ञनो त्याग करीने भावयज्ञ करवामां रसिक थयेला वामदेवे वक्रतानो त्याग करी शीघ्रताथी शिवसुख प्राप्त कर्युं."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ त्रयोविंशतितमस्तंभस्य
द्वात्रिंशदधिकत्रिशततमः प्रबंधः ॥३३२॥

व्याख्यान ३३३ मुं.

द्रव्यपूजा–भावपूजा.

स्याद्भेदोपासनारूपा, द्रव्यार्चा गृहमेधिनाम् ।
अभेदोपासनारूपा, साधूनां भावपूजना ॥ १ ॥

भावार्थ—" गृहस्थीओने भेदउपासनारूप द्रव्यपूजा होय छे, अने साधुओने अभेदउपासनारूप भावपूजा होय छे. "

भेदउपासना रूप एटले आत्माथी अर्हन् परमेश्वर जुदा छे, प्राप्त थयेला आत्मानंदना विलासी छे. तेनी उपासना एटले निमित्त आलंबनरूप सेवा ते रूप द्रव्यपूजा गृहस्थीओने योग्य छे, अने साधुओने तो अभेद उपासना एटले परमात्माथकी पोतानो आत्मा अभिन्न छे एवा प्रकारनी भावपूजा योग्य छे. जो के अर्हन् भगवानना गुणनुं स्मरण करवुं, तेमनुं बहुमान करवुं, एवा उपयोगरूप सविकल्प भावपूजा गृहस्थीओने पण छे, तोपण उपयोगवाळी आत्मस्वरूपना एकत्वरूप भावपूजा तो मुनिओनेज योग्य छे. आ प्रसंग उपर एक संबंध छे ते नीचे प्रमाणे—

धनसार वणिकनी कथा.

श्रीपुर नगरमां जितारी नामे राजा राज्य करतो हतो. ते नगरमां धनसार नामनो एक वणिक रहेतो हतो. ते अत्यंत दरिद्री होवाथी कोइ पण स्थाने आदर पामतो नहीं, परंतु ते स्वभावे सरळ हतो, अने हमेशां सद्गुरु पासे धर्मोपदेश श्रवण करतो हतो. एकदा तेणे विनयपूर्वक दीन वाणीथी गुरुने पूछ्युं के " हे स्वामी ! हुं दरिद्री, दुःखी अने निर्धन केम थयो ? " गुरुए कह्युं के " तें पूर्व भवे श्रीजिनेश्वरनी पूजा करी नथी, तेथी दुःखी थयो छे. हवे आ जन्ममां तुं द्रव्यपूजा तथा भावपूजा कर, जेथी तारा दुःखनो क्षय थाय. तेमां भावपूजानुं स्वरूप पूर्वाचार्योए एवुं कह्युं छे के—

दयांभसा कृतस्नानः, सन्तोषशुभवस्त्रभृत् ।
विवेकतिलकभ्राजो, भावनापावनाशयः ॥ १ ॥
भक्तिश्रद्धानघुसृणो–न्मिश्रपाटीरजद्रवैः ।
नवब्रह्मांगयुग्देवं, शुद्धमात्मानमर्चय ॥ २ ॥

भावार्थ—"हे उत्तम! द्रव्य अने भावथी स्वपरना प्राणरक्षणरूप दया रूपी जळवडे स्नान करीने, पौद्‌गलिक सुखनी इच्छाना अभावरूप संतोष–तद्रूप वस्त्रने धारण करीने, स्वपरना विभागनुं जे ज्ञान–तद्रूप विवेकनुं तिलक करीने तथा अरिहंतना गुणगानमां एकाग्रतारूप भावनावडे करीने पवित्र अंतःकरणवाळो थइ, भक्ति अने श्रद्धारूप चंदनथी मिश्र एवा केसरना द्रवे करीने नव प्रकारना ब्रह्मचर्यरूप नव अंगोने धारण करनार अनंत ज्ञानादि पर्यायवाळा शुद्ध आत्मारूप देवनी पूजा कर."

पछी क्षमारूपी पुष्पनी माळा अर्पण कर, बे प्रकारना धर्मरूप बे अंगलुहणा आगळ धर, ध्यानरूपी सार अलंकारोने तेना अंगमां निवेशन कर, आठ मदस्थानना त्यागरूपी अष्टमंगळ तेना पासे आळेख, ज्ञानरूपी अग्निमां शुभ संकल्परूपी काकतुंड (अगरु) नो धूप कर, पूर्वधर्मरूपी लवण उतारी धर्मसंन्यासरूप वह्नि स्थापन करीने तेमां क्षेपन कर अने पछी आत्मसामर्थ्यरूप आरति उतार.

इत्यादि भावपूजानुं स्वरूप बीजा ग्रंथोथी जाणी लेवुं.

जिनेश्वरनी पूजा, स्नात्र, गुणसमूहनी स्तुति अने स्तवना विगेरे करवाथी दर्शन रहित (मिथ्यात्वी) जीवोने दर्शन (समकित)नी प्राप्ति थाय छे, अने जेने दर्शन गुण प्राप्त थया होय छे तेने क्षायिक भावनी उत्पत्ति थाय छे, तथा जिनपूजा रत्नत्रयीनी प्राप्तिनुं कारण थाय छे. श्री गौतमस्वामीए भगवानने पूछयुं छे के "हे भगवान्! जिनेश्वरनी स्तुती, स्तवन अने मंगळ भणवाथी जीवोने शुं थाय?" भगवाने कह्युं के "हे गौतम! स्तुति, स्तवन अने मंगळथी जीवोने ज्ञान, दर्शन अने चारित्रनो लाभ थाय." वळी जिनेश्वरनी पूजा

करवाथी पौद्गलिक संपत्ति पण प्राप्त थाय छे, धन, धान्य, राज्य, चक्रवर्तीपणुं तथा इन्द्रपणानी लक्ष्मी पण प्राप्त थाय छे अने छेवट चिदानंद संपत्ति (मुक्ति) पण प्राप्त थाय छे. ए प्रमाणे श्री जिनेश्वरनी सेवा बन्ने प्रकारनी लक्ष्मीनी प्राप्तिमां कारणभूत छे. "

इत्यादि गुरुमुखथी धर्मदेशना सांभळीने धनसारे गुरुने पूछीने " आजथी श्री अर्हन्तनी पूजा कर्या विना मुखमां पाणी पण नांखवुं नहीं. " एवो अभिग्रह ग्रहण कर्यो. ते दिवसथीज आरंभीने ते श्रेष्ठी हमेशां जिनप्रतिमानी केसर, चंदन, कर्पूर (बरास) विगेरे सुगंधी द्रव्योथी अने सुगंधी एवा जाइ, पद्म, चंपो, केतकी, मालती, मचकुंद विगेरेनां ताजां पुष्पोथी पूजा करवा लाग्यो. ए प्रमाणे त्रिकरण शुद्धिवडे निरंतर बहुमानथी श्री जिनेन्द्रनी प्रभुताने ज्ञान द्रष्टिरूप मार्गमां उतारीने पूजा करतां ते धनसारे घणुं पुण्य उपार्जन कर्युं. ते पुण्यना तात्कालिक उदयथी तेना घरमां अनेक प्रकारनी लक्ष्मी प्रगट थइ; एटले विशेषे करीने जिनभक्ति करता एवा ते श्रेष्ठीए जिनचैत्य, जिनबिंब, पुस्तक अने चतुर्विध संघ ए साते क्षेत्रमां घणुं धन खरच्युं. ए प्रमाणे हमेशां द्रव्यपूजा, भावपूजा करतां धनसार श्रेष्ठी समकित पामी, देवनुं आयुष्य बांधी मनुष्यभवनुं आयुष्य पूर्ण थतां प्रथम स्वर्गमां देवता थयो. त्यांथी च्यवीने महाविदेह क्षेत्रमां उत्तम कुळने विषे उत्पन्न थइ सद्गुरु समीप दीक्षा लइ मुक्तिसुखने पामशे.

" आ श्राद्धधर्मी धनसार श्रेष्ठीए जिनेश्वरनी पूजानुं फळ शीघ्रपणे आ भवमांज मेळव्युं, अने पछीना भवमां चारित्र लइने भावपूजानी विशुद्धिवडे ते मुक्तिने पाम्यो. तेनुं द्रष्टांत सांभळीने अन्य भव्य प्राणीओए पण द्रव्य तथा भाव ए बन्ने प्रकारनी पूजा अवश्य करवी. "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ त्रयोविंशतितमस्तंभस्य
त्रयस्त्रिंशदधिकात्रिशततमः प्रबंधः ॥ ३३३ ॥

व्याख्यान ३३४ मुं.

ध्यान विषे.

ध्याता ध्यानं तथा ध्येय-मेकतावगतं त्रयम् ।
तस्य ह्यनन्यचित्तस्य, सर्वदुःखक्षयो भवेत् ॥ १ ॥

भावार्थ—" ध्यान करनार, ध्यान अने ध्येय ते ध्यावाने योग्य-ए त्रणेनी ऐक्यतारूप ध्यान जेने प्राप्त थयेलुं छे ते एकाग्र चित्तवाळाना-तद्रूप चेतनावाळाना-अर्हत्स्वरूप ने आत्मस्वरूपने तुल्य उपयोगपणे ग्रहण करनारना आत्मिक गुणने आवरण करनारा-रोकनारा सर्व दुःखोनो (सर्व कर्मोनो) क्षय थाय छे." आ प्रसंगमां क्षपकमुनिनो संबंध छे ते आ प्रमाणे—

क्षपक मुनिनी कथा.

कोइ एक मुनि निरंतर मासक्षपणादिक अनेक दुस्तप तपस्यानुं आचरण करता सता एक उद्यानमां रहीने आत्मस्वरूपनुं ध्यान करता हता. तेमना गुणथी प्रसन्न थयेली कोइ देवी हमेशां ते मुनिने वंदन करी तथा स्तुति करीने कहेती के " हे मुनि ! मारा पर प्रसाद करीने मारा योग्य कांइ कार्य बतावशो." एकदा ते मुनि कोइ ब्राह्मणनां दुष्ट वचन सांभळीने क्रोध पामी तेनी साथे युद्ध करवा लाग्या. मुनि तपस्यावडे अति कृश थयेला होवाथी ते ब्राह्मणे तेने मुष्टि विगेरेना प्रहारथी मारीने पृथ्वीपर पाडी नांख्या. फरीथी मुनि क्रोध करीने युद्ध करवा लाग्या; तोपण तेने ते ब्राह्मणे प्रहार करी पाडी नांख्या. एम अनेक वार ते ब्राह्मणे तेमने प्रहारादिवडे जर्जरित करी नाख्या, एटले ते मुनि पराजय पामीने मांड मांड पोताने स्थाने आव्या. बीजे दिवसे प्रातःकाळमां हंमेशनी जेम ते देवीए आवीने मुनिने वंदना करी, पण मुनिए देवीनी सामुं पण जोयुं नहीं, तेम कांइ बोल्या पण नहीं; तेथी ते देवीए पूछयुं के " हे स्वामी ! क्या अपराधथी मारी साथे आजे तमे बोलता नथी ?" मुनि उंचे स्वरे बोल्या के "काले पेला ब्राह्मणे मने मार्यो तोपण तें मारुं रक्षण कर्युं नहीं, तेमज मारा ते शत्रुनो तें कांइ अपकार पण कर्यो नहीं; माटे मात्र मीठां वचन बोलीने प्रीति बतावनारी एवी तने हवे हुं बोलाववा

इच्छतो नथी." ते सांभळीने स्मितथी अधरोष्ठने कांतिमान करती देवी बोली के "हे मुनि! ज्यारे तमे बन्ने एक बीजाने वळगीने युद्ध करता हता, ते वखते कौतुक जोवानी इच्छावाळी हुं पण त्यांज हती; परंतु ते वखते में तमने बन्नेने समान क्रोधवाळा जोया. तेथी 'आ बेमां साधु कोण अने ब्राह्मण कोण?' ए हुं जाणी शकी नहीं; तेथी करीने तमारी रक्षा अने ब्राह्मणने शिक्षा हुं करी शकी नहीं." ते सांभळीने जेनो क्रोध शान्त थयो छे एवा मुनि बोल्या के "हे देवी! तें मने आजे बहु सारी प्रेरणा करी, तेथी हवे हुं आ क्रोधरूपी अतिचार दोषनुं मिथ्यादुष्कृत आपुं छुं. हे देवी! में ध्यान संबंधी शास्त्रनो घणा यत्नथी अभ्यास कर्यो छे, श्रवण कर्युं छे अने बीजाने शीखव्युं पण छे, तेमज तेनुं अनुमोदन पण कर्युं छे. तोपण खरे वखते ते मने स्मरणमां आव्युं नहीं.

शून्यं ध्यानोपयोगेन, विंशतिस्थानकाद्यपि ।
कष्टमात्रं त्वभव्याना–मपि नो दुर्लभं भवेत् ॥ १ ॥

भावार्थ—"ध्यानना उपयोग विना मात्र कायक्लेशरूप वीश स्थानक विगेरे तप अभव्य प्राणीओने पण दुर्लभ नथी, अर्थात् घणा अभव्य प्राणीओ पण तेवुं तप करे छे." चित्तनी एकाग्रता रूप जे ध्यान–तेना उपयोगथी शून्य एवा वीशस्थानक विगेरे तपसमूह मात्र कायक्लेशरूपज छे, ते तो अभव्योने पण दुर्लभ नथी. बाह्याचरण तो जैनोक्त पण घणा प्रकारे अभव्योए पूर्वे कर्या छे.

हवे ध्यान करवानुं स्वरूप कहे छे–

जितेन्द्रियस्य धीरस्य, प्रशान्तस्य स्थिरात्मनः ।
स्थिरासनस्य नासाग्र–न्यस्तनेत्रस्य योगिनः ॥ १ ॥
रुद्धबाह्यमनोवृत्ते–र्धारणाधारया रयात् ।
प्रसन्नस्याप्रमत्तस्य, चिदानन्दसुधालिहः ॥ २ ॥
साम्राज्यमप्रतिद्वंद्व–मन्तरेव वितन्वतः ।
ध्यानिनो नोपमा लोके, सदेवमनुजेऽपि हि ॥ ३ ॥

भावार्थ—"जेणे इन्द्रियोनो जय करेलो छे, जे आत्मवीर्यना सामर्थ्य-वडे परिषह अने उपसर्गोथी अकंप्य छे, जेना क्रोधादिक कषाय शांत थयेला छे, जेनो आत्मा साधन परिणतिमां सुखमय होवाथी स्थिर छे, जेणे चपळताना निरोधने माटे आसन स्थिर करीने नासिकाना अग्रभागे दृष्टिने स्थापन करेली छे (रत्नत्रयमां मग्न छे), ध्येयमां चित्तने स्थिर करवुं ते धारणा तेना आधारथी जेणे बाह्य मनोवृत्तिनो रोध करेलो छे, जे मनना कालुष्यथी रहित प्रसन्न छे, जे अज्ञानादिक आठ प्रमादथी रहित अप्रमत्त छे, जेणे चिदानंदरूप अमृतनो स्वाद लीधो छे, अने जे अन्तःकरणमांज अद्वितीय साम्राज्यनो एटले बाह्याभ्यंतर विपक्ष रहित स्वगुणसंपदारुप स्वभावपरिवारोपेत ठकुराइनो स्वाधीन करवारुप विस्तार करे छे, एवा ध्यानी मुनिनी उपमा देवताओमां के मनुष्योमां कांइ पण नथी. अहीं तिर्यंच ने नारक दुर्गति होवाथी ग्रहण करेल नथी, अर्थात् त्रिभुवनमां सहजानंदविलासीनी तुलना करी शकाय एवुं उपमा सादृश्य छेज नहीं."

हे देवी ! आ प्रमाणे अनेक प्रकारना ध्यानशास्त्रनुं उल्लंघन करीने में अयोग्य कर्युं, ते ठीक कर्युं नहीं."

त्यारपछीथी ते मुनि निरंतर निश्चल चित्तथी ध्यान करवा लाग्या. देवादिके करेला उपसर्गोमां पण प्रथमनी जेम चपळता करी नहीं. मेरुनी जेवुं निश्चळध्यान ध्याइने अंते स्वर्गे गया. पछी ते मुनिने भक्तिपूर्वक नमन करीने पेली देवी पोताने स्थाने गइ.

"ध्यानथी भ्रष्ट थयेल मुनि अज्ञानी जेवोज छे; माटे कष्टमां पण मुनिए ध्याननो त्याग करवो नहीं ए आ कथानो सार छे."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ त्रयोविंशतितमस्तंभस्य चतुस्त्रिंशदधिकत्रिशततमः प्रबंधः ॥ ३३४ ॥

व्याख्यान ३३५ मुं.

—•—

दुर्ध्याननां ६३ स्थानोनुं स्वरूप.

त्रिषष्टिध्यानस्थानानि, उत्पन्नान्यार्त्तरौद्रतः ।
तत्स्वरूपं लिखामि द्वि–तीयप्रकीर्णसूत्रतः ॥ १ ॥

भावार्थ—" आर्त्तध्यान अने रौद्रध्यानथी उत्पन्न थयेलां त्रेसठ ध्याननां स्थानको छे. तेनुं स्वरूप बीजा प्रकीर्ण सूत्रथी (आउरपच्चक्खाणथी) अत्रे लखुं छुं. "

आतुर प्रत्याख्यान नामना प्रकीर्णक सूत्र (पयन्ना सूत्र) मां " अन्नाण झाणे " इत्यादि पाठ छे. तेमां दुर्ध्याननां त्रेसठ स्थानको गणाव्यां छे.

१ अज्ञान ध्यान—" अज्ञानज कल्याणकारी छे; केमके तेमां व्याख्यान वांचवुं, भणवुं, भणाववुं विगेरे आयासनो अभाव छे. " एम मनमां विचारवुं, ते अज्ञानध्यान कहेवाय छे. ते ध्यान ज्ञानपंचमीनी कथामां कहेला वसुदेवाचार्ये कर्युं हतुं, माटे तेवुं दुर्ध्यान ध्यावुं नहीं.

२ अनाचार ध्यान—अनाचार ते दुष्टाचार दोषयुक्त आचरण, ते संबंधी ध्यान ते कोकण देशी साधुए क्षेत्रमां अग्नि सळगाववा रूप कर्युं हतुं; तथा देवता थयेला शिष्य कहेवा नहीं आववाथी चारित्रनो त्याग करवाने इच्छता आषाढसूरिए ते ध्यान कर्युं हतुं.

३ कुदर्शन ध्यान—बौद्धादिक मिथ्यादर्शननुं ध्यान सुराष्ट्र श्रावके कर्युं हतुं.

४ क्रोध ध्यान—कुलवालुक, गोशालक, पालक, नमुंचि, शिवभुति विगेरेए कर्युं हतुं.

५ मान ध्यान—बाहुबलि, सुभूम चक्री, परशुराम, हठथी आवेला संगमदेव विगेरेए कर्युं हतुं.

६ माया ध्यान—अन्यने छेतरवारूप मायाध्यान अषाढाभूति मुनिए लाडु वहोरवा माटे कर्युं हतुं.

७ लोभ ध्यान—सिंहकेसरिया लाडुना इच्छक साधुए कर्युं हतुं.

८ राग ध्यान—रागने अभिष्वंगमात्र समजवो. तेना काम राग, स्नेह राग अने दृष्टि राग ए त्रण प्रकार छे. तेमां विष्णुश्रीना उपर विक्रमयश राजाने कामराग थयो हतो. दामन्नकना ससरानुं पोताना पुत्रनुं मरण सांभळीने स्नेह रागने लीधे हृदय फाटी गयुं हतुं, अने कपिलने दृष्टिराग (दर्शननो राग) थवाथी ब्रह्मदेवलोकमांथी आवीने पोताना मतना रागथी पोताना शिष्योने 'आसुरे रमसे' इत्यादि कह्युं हतुं. आ त्रणे प्रकारना रागनुं ध्यान न करवुं.

९ अप्रीति ध्यान--अप्रीति एटले अन्य उपर द्रोहनो अध्यवसाय अथवा द्वेष. ते ध्यान यज्ञनी शरुआत करावनारा मधुपिंग अने पिप्पल विगेरेने थयुं हतुं, तथा हरिवंशनी उत्पत्तिमां वीरक देवने थयुं हतुं.

१० मोह ध्यान—वासुदेवना शबने उपाडीने छ मास सुधी फरनारा बळभद्रने थयुं हतुं.

११ इच्छा ध्यान—इच्छा एटले मनमां धारेलो लाभ मेळववानी उत्कट अभिलाषा, तेनुं ध्यान ते इच्छाध्यान. ते बे माषा सुवर्णना अर्थी कपिलने कोटी सुवर्णना लोभमां पण इच्छानो अंत आव्यो नहोतो तेनी जेम समजवुं.

१२ मिथ्या ध्यान—मिथ्या एटले विपर्यस्त (अवळी) दृष्टिपणुं, तेनुं ध्यान ते मिथ्याध्यान. ते जमालि गोविंद विगेरेने थयुं हतुं.

१३ मूर्छा ध्यान—मूर्छा एटले प्राप्त थयेला राज्यादिक उपर अत्यंत आसक्ति, तेनुं ध्यान ते मूर्छाध्यान. ते पुत्रोने उत्पन्न थतांज मारी नांखनार अथवा खोड खापणवाळा करनार कनकध्वज राजाने थयुं हतुं.

१४ शंका ध्यान—शंकन ते शंका एटले संशय करवो-तेनुं ध्यान ते शंकाध्यान, ते आषाढसूरिना अव्यक्तवादी शिष्योने थयुं हतुं.

१५ कांक्षा ध्यान-एटले अन्य अन्य दर्शननो अथवा पोताना दर्शननो आ-

ग्रह अर्थात् कांक्षा, तेनुं ध्यान ते कांक्षाध्यान. ते " हे कपिल ! त्यां पण धर्म छे अने अहीं मारा मतमां पण धर्म छे. " एम बोलनारा मरिचिने थयुं हतुं.

१६ गृद्धि ध्यान—एटले आहारादिकने विषे अत्यंत आकांक्षानुं ध्यान. ते मथुरावासी मंगुसूरिने तथा व्रतनो त्याग करनार कंडरिक राजाने थयुं हतुं.

१७ आशा ध्यान-एटले पारकी वस्तु मेळववानी अभिलाषानुं ध्यान. ते निर्दय ब्राह्मणना पाथेय प्रत्ये पाथेय विनाना मूलदेवने थयुं हतुं.

१८ तृषा ध्यान—तृषापरिषहना उदयथी उत्पन्न थयेली पीडा, ते पीडाए करीने थतुं जे ध्यान ते तृषाध्यान. आ ध्यान पिता साधुनी साथे जतां मार्गमां तृषाथी पीडायेला क्षुल्लक साधुने थयुं हतुं.

१९ क्षुधा ध्यान—क्षुधाना परवशपणाथी थतुं ध्यान ते क्षुधा ध्यान. ते राजगृही नगरीना उद्यानमां आवेला लोकोने मारवा तैयार थयेला द्रमकने थयुं हतुं.

२० पथि ध्यान—एटले अल्प काळमां इष्ट स्थाने पहोंचवानुं ध्यान. ते ध्यान पोतनपुरना मार्गने शोधता वल्कलचिरीने थयुं हतुं.

२१ विषममार्ग ध्यान—घणा विकट मार्गनुं ध्यान. सनत्कुमारने शोधनार महेन्द्रसिंहने अथवा ब्रह्मदत्तने शोधनार वरधेनुने थयुं हतुं.

२२ निद्रा ध्यान—एटले निद्राने आधीन थयेलानुं ध्यान. ते ध्यान स्त्यानर्द्धि निद्राए करीने पाडानुं मांस खानार, हस्तिना दांत खेंची काढनार, तथा मोदकना अभिलाषी साधुने थयुं हतुं.

२३ निदान ध्यान—एटले बीजा भवमां स्वर्गनी अथवा मनुष्यपणानी समृद्धि मेळववानी इच्छाथी नव प्रकारनां नियाणां करवा संबंधी ध्यान. ते नंदीषेण, संभूति अने द्रौपदी विगेरेने थयुं हतुं.

२४ स्नेह ध्यान—स्नेह एटले मोहना उदयथी पुत्रादिकने विषे थती प्रीतिविशेषरूप ध्यान. ते मरूदेवा, सुनंदा अने अर्हन्नकनी माताने थयुं हतुं.

२५ काम ध्यान—काम एटले विषयनो अभिलाष तेनुं ध्यान ते काम ध्यान. ते हासा अने प्रहासा देवीए देखाडेला विषयसुखना लोभथी कुमारनंदी

सोनीने थयुं हतुं तथा रावणने थयुं हतुं.

२६ अपमान ध्यान—अपमान एटले परगुणनी प्रशंसा सांभळीने थती इर्ष्या अथवा चित्तनी कालुष्यता (मलिनता), तेनुं ध्यान ते अपमान ध्यान. ते बाहु अने सुबाहुनी प्रशंसाने नहीं सहन करनार पीठ अने महापीठने तथा स्थूलभद्रनी प्रशंसाने सहन नहीं करी शकनार सिंहगुफावासी मुनिने थयुं हतुं.

२७ कलह ध्यान—एटले क्लेश करावबानुं ध्यान. ते रूक्मिणी अने सत्यभामाना संबंधमां तथा कमलामेलाना दृष्टांतमां नारदने थयुं हतुं.

२८ युद्ध ध्यान—एटले शत्रुना प्राणव्यपरोपणना अध्यवसाय रूप ध्यान. ते हल्ल तथा विहल्ल नामना बंधुना विनाश माटे चेडाराजानी साथे युद्ध करनारा कौणिकने थयुं हतुं.

२९ नियुद्ध ध्यान—प्राणना अपहाररूप अधम युद्ध रहित यष्टि मुष्टि विगेरेथी जे जय मेळववो ते नियुद्ध कहेवाय छे, तेनुं ध्यान ते नियुद्ध ध्यान. ते ध्यान बाहुबळी तथा भरतराजाने थयुं हतुं.

३० संग ध्यान—संग एटले त्याग कर्या छतां पण फरीथी तेना संयोगनी अभिलाषा तेनुं ध्यान ते संगध्यान. ते राजिमती प्रत्ये रथनेमिने तथा नागिला प्रत्ये भवदेवने थयुं हतुं.

३१ संग्रह ध्यान—अत्यंत अतृप्तिवडे धनादिकनो संग्रह करवानुं ध्यान ते संग्रह ध्यान. ते मम्मण श्रेष्ठीने थयुं हतुं.

३९ व्यवहार ध्यान—पोताना कार्यना निर्णय माटे राजादिक पासे न्याय करावबो ते व्यवहार कहेवाय छे तेनुं ध्यान ते व्यवहार ध्यान. ते बे सपत्नीओने पोतपोतानो पुत्र ठरावबा माटे थयुं हतुं.

३३ क्रयविक्रय ध्यान—लाभने माटे अल्प मूल्यवडे वधारे मूल्यवाळी. वस्तु खरीद करवी ते क्रय कहेवाय छे अने घणुं मूल्य लइने अल्प मूल्यवाळी वस्तु वेचवी ते विक्रय कहेवाय छे. ते क्रयविक्रयनुं ध्यान आभीरीने कपास आपनार वणिकने थयुं हतुं.

३४ अनर्थदंड ध्यान—एटले प्रयोजन विना हिंसादिक करवानुं ध्यान.

ते अत्यंत उन्मत्तपणाने लीधे द्वैपायन मुनिने कष्ट आपनार शांब विगेरेने थयुं हतुं.

३५ आभोग ध्यान—आभोग एटले ज्ञानपूर्वक व्यापार, तेनुं ध्यान ते आभोग ध्यान. ते ब्राह्मणनां नेत्रो धारीने वडगुंदानुं मर्दन करनारा ब्रह्मदत्त चक्रीने थयुं हतुं.

३६ अनाभोग ध्यान—अनाभोग एटले अत्यंत विसरण, तेथी थतुं ध्यान ते अनाभोगध्यान. ते प्रसन्नचंद्रने थयुं हतुं.

३७ ऋण ध्यान—ऋण ते देवुं, ते आपवा माटे थतुं ध्यान ते ऋणध्यान. ते एक घांचीने पोतानी बेननुं देवुं देवा माटे थयुं हतुं.

३८ वैर ध्यान—एटले मातपितादिकना वधथी अथवा राज्यना अपहारथी उत्पन्न थतुं ध्यान. ते परशुराम तथा सुभूमने थयुं हतुं अने सुदर्शनना कामरागवाळी व्यंतरी थयेली अभया राणीने थयुं हतुं.

३९ वितर्क ध्यान—वितर्क एटले राज्यादिक ग्रहण करवानी चिंता तेनुं ध्यान. ते नंदराजानुं राज्य लेवानी इच्छावाळा चाणाक्यने थयुं हतुं.

४० हिंसा ध्यान—एटले पाडा विगेरेनी हिंसा करवानुं ध्यान. ते कुवामां नांखेला कालसौकरिकने थयुं हतुं.

४१ हास्य ध्यान—हास्य करवानुं ध्यान. ते चंडरुद्र आचार्यनुं हास्य करनार मित्र सहित शिष्यने थयुं हतुं.

४२ प्रहास ध्यान—प्रहास ते उपहास. निंदा अथवा स्तुतिरूप तेनुं ध्यान ते प्रहासध्यान. ते 'हे नैमित्तिक मुनि! हुं तमने वंदन करुं छुं' ए प्रमाणे वार्तिकमुनि प्रत्ये मश्करीमां बोलतां चंडप्रद्योत राजाने थयुं हतुं.

४३ प्रद्वेष ध्यान—अति द्वेषवाळुं ध्यान ते प्रद्वेषध्यान. ते मरुभूति तरफ कमठने तथा श्री महावीरस्वामीना कानमां खीला नांखनार गोपने थयुं हतुं.

४४ परुष ध्यान—परुष एटले अति निष्ठुर कर्म तेनुं ध्यान ते परुष ध्यान. ते ब्रह्मदत्त पुत्र उपर चुलणी राणीने तथा युगबाहु भाइ उपर मणिरथने थयुं हतुं.

४५ भय ध्यान—भय ए मोहनी अंतर्गत रहेली नोकषाय प्रकृति छे तेनुं ध्यान. ते गजसुकुमालने उपसर्ग करनारा सोमिल ससराने थयुं हतुं.

४६ रूप ध्यान—आदर्शादिकमां जे जोवुं ते रूप कहेवाय छे; तेनुं ध्यान ते रूपध्यान बे प्रकारनुं छे. स्वरूपध्यान अने पररूप ध्यान. तेमां "मारुं रूप सारुं छे" एम जे मानवुं ते स्वरूप ध्यान सनत्कुमारने थयुं हतुं, अने पररूपध्यान श्रेणिक राजानुं चित्र आळेखेल फलक (पाटीयुं) जोइने सुज्येष्ठा अने चेलणाने थयुं हतुं.

४७ आत्मप्रशंसा ध्यान—पोतानी प्रशंसा कराववानुं ध्यान शकटाल मंत्रीना मुखथी पोतानी कवितानी प्रशंसा कराववा इच्छनारा वररुचिने थयुं हतुं तथा कोशा वेश्याने पोतानी कळाकुशळता बतावनार रथकारने थयुं हतुं

४८ परनिंदा ध्यान—ते कुरगडुक प्रत्ये चार साधुने थयुं हतुं.

४९ परगर्हा ध्यान—पारकी गर्हा एटले अन्य जनो पासे परना छता अछता दोष प्रगट करवा ते. आ ध्यान संघप्रमत्त दुर्बलिका पुष्पमित्रनी गर्हा करनार गोष्ठामाहिलने थयुं हतुं.

५० परिग्रह ध्यान—धन धान्यादिक परिग्रह नवा मेळववानुं ध्यान अथवा गयेली समृद्धिने पाछी मेळववानुं ध्यान ते परिग्रह ध्यान. ते ध्यान चारुदत्तने थयुं हतुं. तथा मुनिपति साधु विहार करतां तेनो रोध करनार कुंचिक श्रेष्ठीने थयुं हतुं.

५१ परपरिवादध्यान—अन्यना अछता दोषो अन्य पासे प्रगट करवा ते परपरिवाद कहेवाय छे तेनुं ध्यान ते परपरिवाद ध्यान. ते सुभद्रा प्रत्ये तेनी सासु तथा नणंदने थयुं हतुं.

५२ परदूषण ध्यान—पोते करेला दोषनो बीजा निर्दोष प्राणी उपर आरोप करवो ते परदूषण कहेवाय छे. ते संबंधी ध्यान ते परदूषणध्यान. ते पतिनी हत्यारूप पोताना दोषने भद्रक वृषभ उपर आरोपण करनार जिनदासनी स्त्रीने थयुं हतुं.

५३ आरंभ ध्यान—आरंभ ते बीजाने उपद्रव करवो, ते संबंधी ध्यान ते आरंभ ध्यान. ते कुरुड अने उकुरुड मुनिने तथा द्वीपायन ऋषिने थयुं हतुं.

५४ संरंभ ध्यान—संरंभ ते विषयादिकनो तीव्र अभिलाष ते संबंधी ध्यान ते संरंभ ध्यान. ते माताना उपरोधथी व्रत पाळतां छतां पण विषयनी अभिलाषवाळा क्षुल्लककुमारने थयुं हतुं.

५५ पाप ध्यान—परस्त्रीसेवन विगेरे पापकर्मनुं अनुमोदन एटले तेवे प्रसंगे 'आणे आ ठीक कर्युं' एम जे बोलवुं ते पाप कहेवाय छे. तेनुं ध्यान ते पापध्यान. ते "आ भोगीभ्रमर राजाने धन्य छे" इत्यादि अनुमोदन करनारा लोकोने थयुं हतुं.

५६ अधिकरण ध्यान--पापनी उत्पत्तिना कारणरूप जे अधिकरण ते संबंधी ध्यान ते अधिकरणध्यान. ते वापी कूपादिक कराववामां तत्पर थयेला नंद मणिकारने थयुं हतुं.

५७ असमाधिमरण ध्यान--'आ असमाधिवडे मरण पामो' एवुं असमाधिमरणध्यान स्कन्दकाचार्य प्रत्ये चुल्लक साधुने पहेलां यंत्रमां पीलता अभव्य एवा पालक पुरोहितने थयुं हतुं.

५८ कर्मोदयप्रत्यय ध्यान–कर्मना उदयने आश्रीने थयेलुं ध्यान ते कर्मोदय प्रत्ययध्यान. ते प्रथम शुभ परिणाम छतां पछीथी कोइ पण अशुभ कर्मना उदयथी अशुभ परिणामवाळा थयेला विष्णुने अंतकाळे थयुं हतुं.

५९ ऋद्धिगौरव ध्यान—राज्य ऐश्वर्य विगेरे समृद्धिवडे पोतानी उत्कृष्टतारूप गौरवता (मोटाइ)नुं ध्यान ते ऋद्धिगौरवध्यान. ते दशार्णभद्रने थयुं हतुं.

६० रसगौरव ध्यान--जिह्वा इन्द्रियवडे ग्रहण कराता रस(भोजन)नी गौरवतानुं ध्यान ते रसगौरवध्यान; अर्थात् "मारी रसवती (भोजन)मां जेवो रस छे तेवो बीजानी रसवतीमां शुं होय?" एवुं अभिमानपूर्वक जे ध्यान ते. खाइ संबंधी जळना द्रष्टांतमां कहेला जितशत्रु राजाने सुबुद्धि मंत्री पासे पोतानी रसवतीना रसनी प्रशंसा करतां थयुं हतुं.

६१ सातागौरव ध्यान--सुखना गर्वनुं ध्यान. एटले 'हुंज सुखी छुं' एवा अभिमानवाळुं ध्यान घणा सुखी देखाता जीवोने थाय छे.

६२ अविरह ध्यान—अविरह ध्यान एटले पुत्रादिकनो विरह न थाओ एवुं चिंतवन. आ ध्यान 'बे पुत्रनो विरह न थाओ' एवी बुद्धिथी 'आ साधुओ मांस खाय छे माटे ते राक्षस जेवा छे, तेथी तेनी पासे जवुं नहीं.' एम कहीने पुत्रोने छेतरनार भृगु पुरोहित तथा तेनी स्त्री यशाने थयुं हतुं. तेमज देवताए प्रतिबोध कर्या छतां पण वारंवार व्रतनो त्याग करनार मेतार्यने थयुं हतुं.

६३ अमुक्तिमरण ध्यान—मुक्ति ते मोक्षगति; तेथी रहित ते अमुक्ति, एटले संसारना सुखनी अभिलाषा, तेणे करीने मरण पामवानुं जे ध्यान ते 'अमुक्तिमरण ध्यान' कहेवाय छे. ते 'मुक्तिने विघ्न करनारुं आ नियाणुं न कर' एम चित्र नामना पोताना भाइ साधुए वारंवार निवारण कर्या छतां पण 'चक्रवर्त्तीनी संपत्तिनो अनुभव कर्या विना हुं मुक्तिनी पण इच्छा करतो नथी' एवा तीव्र अशुभ भावथी नियाणुं करनारा संभूति मुनिने थयुं हतुं.

"मिथ्यादुष्कृत आपवा लायक आ त्रेसठ दुर्ध्याननां स्वरूपने सांभळीने विवेकी पुरुषोए अनेक प्रकारनां कर्मोनुं बंधन करावनारां आ सर्व दुर्ध्यानोनो तत्त्वमार्गमां प्रवृत्ति करतां सर्वथा त्याग करवो."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ त्रयोविंशतितमस्तंभस्य पंचत्रिंशदधिकात्रिशततमः प्रबंधः ॥ ३३५ ॥

व्याख्यान ३३६ मुं.

तप विषे.

मूलोत्तरगुणश्रेणिप्राज्यसाम्राज्यसिद्धये ।
बाह्यमाभ्यन्तरं चेत्थं, तपः कुर्यान्महामुनिः ॥ १ ॥

भावार्थ—"मूल गुण तथा उत्तर गुणना समूहवडे महान् साम्राज्यनी सिद्धिने माटे महामुनिओए आ बाह्य तथा अभ्यंतर तप करवुं."

ज्ञान, चारित्रादिक मूळ गुणो अने समिति, गुप्ति विगेरे उत्तर गुणो कहेवाय छे, तेनी श्रेणि एटले विशेषे करीने ते गुणोनो उद्भव, तेणे करीने प्रचूर एवा साम्राज्यनी सिद्धिने माटे एटले स्वकार्य जे गुणनिष्पत्तिरूप तेने अर्थे परमनिर्ग्रंथ एवा महामुनिओ बाह्य तथा अभ्यंतर तप करे; तेमां अन्य लोकोने उल्लासनुं कारण तथा

प्रभावनानुं मूळ होवाथी बाह्य तप करवानी जरुर छे, अने बीजा लोकोथी जाणी शकाय तेवुं नहीं छतां आत्मगुणनी एकतारूप होवाथी अभ्यंतर तप करवानी आवश्यकता छे. आ प्रसंग उपर नंदन ऋषिनो संबंध छे ते आ प्रमाणे—

नंदन ऋषिनी कथा.

आ भरतक्षेत्रमां छत्रिका नामनी नगरीमां जितशत्रु नामे राजा राज्य करतो हतो. तेनी भद्रा नामनी पट्टराणीए नन्दन नामना पुत्रने जन्म आप्यो हतो. ते कुमार अनुक्रमे युवावस्था पाम्यो, एटले तेने पितानुं राज्य मळ्युं. राज्यनुं पालन करतां ते नन्दनराजाने जन्मथी आरंभीने चोवीश लाख वर्ष व्यतीत थयां. एकदा पोट्टिल नामना आचार्य विहारना क्रमथी ते नगरीमां समवसर्या. तेमने वंदन करवा माटे नन्दन राजा उद्यानमां गया. त्यां गुरुने विधिपूर्वक वंदना करी धर्म श्रवण करवा बेठा. गुरुए आ प्रमाणे उपदेश आप्यो के—

ज्ञानमेव बुधाः प्राहुः, कर्मणां तापनात्तपः ।
तदाभ्यन्तरमेवेष्टं, बाह्यं तदुपबृंहकम् ॥ १ ॥

भावार्थ—" आत्मप्रदेशनी साथे संश्लिष्ट थइने रहेलां कर्मोने तपाववाथी सूक्ष्म ज्ञाननेज पंडित पुरुषो तप कहे छे. तेमां प्रायश्चित्तादिक अभ्यंतर एवुं तप इष्ट छे, अने अनशनादिक बाह्य तप ते अभ्यंतर तपने वृद्धि पमाडनार छे, एटले द्रव्यतप भावतपनुं कारण छे, तेथी बाह्यतप पण इष्ट छे. "

तदेव हि तपः कार्यं, दुर्ध्यानं यत्र नो भवेत् ।
येन योगा न हीयन्ते, क्षीयन्ते नेन्द्रियाणि च ॥ २ ॥

भावार्थ—" जे तप करवाथी दुर्ध्यान न थाय, मन वचन अने कायाना योगनी हानि न थाय तथा इन्द्रियो क्षीण न थाय तेवुंज तप करवुं. "

इत्यादि धर्मदेशना सांभळीने प्रतिबोध पामेला नन्दनराजाए वैराग्यथी पोट्टिलाचार्य पासे दीक्षा लीधी. निरंतर मासक्षपणे करीने चारित्रना गुणने वृद्धि पमाडनारा ते नन्दन मुनि गुरु साथे ग्रामादिकमां विहार करवा लाग्या. ते मुनिए बे अशुभ ध्यान (आर्त्त-रौद्र) नो त्याग कर्यो हतो, सर्वदा त्रण दंड, त्रण गारव अने त्रण शल्यथी रहित हता. तेमना चार कषाय क्षीण थया हता, चार संज्ञानो

त्याग कर्यो हतो, ते चार प्रकारनी विकथाथी विमुक्त हता, चार प्रकारना धर्ममां आसक्त हता तथा चार प्रकारना उपसर्गोथी तेमनो धर्मउद्यम स्खलना पामतो नहोतो. ते मुनि पंच महाव्रतनुं धाम हता, पांच प्रकारना स्वाध्यायनुं स्थान हता, निरंतर पांच समितिने धारण करता हता अने दुःसह परिषहोनी परंपराने सहन करता हता. आ प्रमाणे निःस्पृह एवा ते नंदनमुनिए एक लाख वर्ष सुधी तप कर्युं. तेमां तेणे अगियार लाख ने एंशी हजार मासक्षपण कर्या; तेमज तेज भवमां अर्हद्भक्ति विगेरे वीश स्थानकोना आराधनवडे करीने ते महातपस्वीए दुःखे मेळवी शकाय तेवुं तीर्थंकरनामकर्म उपार्जन कर्युं. मूळथीज अतिचाररूप कलंकरहित चारित्रनुं पालन करीने आयुष्यना अंतसमये तेमणे नीचे प्रमाणे आराधना करी.

"अव्यवहार राशिमां अनन्त जन्तुओ साथे अथडावाथी जे अकाम निर्जरावडे मारुं कर्म कपायुं ते पीडानी पण हुं अनुमोदना करुं छुं. जिनेश्वरनी प्रतिमा, चैत्य, कलश अने मुकुट विगेरेमां जे मारो पृथ्वीमय देह थयो होय तेनुं हुं अनुमोदन करुं छुं. जिनेन्द्रना स्नात्र करवाना पात्रमां दैवयोगे जे मारो जळमय देह प्राप्त थयो होय तेनुं हुं अनुमोदन करुं छुं. श्री जिनेन्द्रनी पासे धूप करवाना अंगारामां तथा दीवामां जे मारो अग्निमय देह थयो होय तेने हुं अनुमोदन आपुं छुं. अरिहंत पासे धूपने उखेवतां-तेने प्रज्वलित करवामां तथा मार्गमां श्रान्त थयेला संघनी शांतिने माटे जे मारो वायुमय देह वायो होय तेने हुं अनुमोदुं छुं. मुनिओनां पात्र तथा दंडादिकमां अने जिनेश्वरनी पूजाना पुष्पोमां जे मारो वनस्पति देह थयो होय तेनी हुं अनुमोदना करुं छुं. कोइ पण स्थाने सत्कर्मने योगे जिनधर्मने उपकार करनारो मारो त्रसमय देह थयो होय तेने हुं अनुमोदुं छुं. काळ, विनय विगेरे जे आठ प्रकारे ज्ञानाचार कहेलो छे, तेमां कांइपण अतिचार थयो होय तेने हुं त्रिविधे (मन वचन कायावडे) निंदु छुं. निःशंकित विगेरे जे आठ प्रकारे दर्शनाचार कहेलो छे. तेमां मने जे कांइ अतिचार लाग्यो होय तेने हुं त्रिविधे वोसिरावुं छुं. मोहथी अथवा लोभथी जे में सूक्ष्म तथा बादर प्राणीओनी हिंसा करी होय तेने पण हुं त्रिविधे वोसिरावुं छुं. हास्य, भय, क्रोध के लोभादिकना वशथी में जे कांइ असत्य भाषण कर्युं होय ते सर्वनी निंदा करवापूर्वक हुं आलोचना करुं छुं. रागथी अथवा द्वेषथी थोडुं के घणुं जे कांइ अदत्त परद्रव्यनुं में ग्रहण कर्युं होय ते सर्वनो हुं

त्याग करुं छुं. में पूर्वे तिर्यंच, मनुष्य के देव संबंधी मैथुननुं मनथी वचनथी के कायाथी सेवन कर्युं होय तेने हुं त्रिविधे त्रिविधे तजुं छुं. लोभना दोषथी बहु प्रकारे में धन, धान्य अने पशु विगेरेनो जे संग्रह कर्यो होय तेने हुं त्रिविधे तजुं छुं. स्त्री, पुत्र, मित्र, बन्धु, धान्य, घर अने बीजी कोइ पण वस्तुमां में जे कांइ ममता करी होय तेनो हुं त्रिविधे त्रिविधे त्याग करुं छुं. इन्द्रियोथी पराभव पामीने-रसेंद्रियना परवशपणाथी में जे चारे प्रकारनो आहार रात्रे वावर्यो होय (खाधो होय) तेने पण हुं त्रिविधे निंदुं छुं. क्रोध मान, माया, लोभ, राग, द्वेष, क्लेश, चाडी, परनिंदा, जूठुं आळ अने बीजुं पण जे कांइ चारित्राचार संबंधी में दुष्ट आचरण कर्युं होय ते सर्वने हुं त्रिविधे तजुं छुं. बाह्य तथा अभ्यंतर तपने विषे जे कांइ अतिचार लाग्यो होय तेने हुं त्रिविधे त्रिविधे निंदुं छुं. धर्मक्रिया करवामां में जे कांइ छता वीर्यने गोपव्युं होय ते वीर्याचार संबंधी अतिचारनी पण हुं त्रिविधे निंदा करुं छुं. जे कोइ मारो मित्र होय अथवा अमित्र होय अने स्वजन होय अथवा शत्रु होय ते सर्वे मारा अपराधने खमो, हुं ते सर्वने खमुं छुं, अने सर्वनी साथे हुं समान छुं. में तिर्यंचना भवमां तिर्यंचोने, नारकीना भवमां नारकीओने, मनुष्यना भवमां मनुष्योने तथा देवभवमां देवताओने जे कांइ दुःखमां स्थापन कर्या होय—दुःख आप्युं होय ते सर्व मारो अपराध क्षमा करो, हुं ते सर्वेने खमावुं छुं, अने मारो ते सर्वने विषे मैत्रीभाव छे. जीवित, यौवन, लक्ष्मी, रूप अने प्रियजननो समागम, ते सर्व वायुए चळित करेला समुद्रना तरंगनी जेवा चपळ छे. आ जगतमां व्याधि, जन्म, जरा अने मृत्युथी ग्रसित थयेला प्राणीओने जिनेश्वरे कहेला धर्म विना बीजुं कोइ शरण नथी. सर्वे जीवो स्वजन पण थयेला छे, अने परजन पण थयेला छे, तो तेमने विषे कयो पंडित पुरुष जरा पण प्रतिबंध करे ? कोइ न करे. अरिहंत मारुं शरण हो, सिद्ध मारुं शरण हो, साधु मुनिराजनुं मारे शरण हो अने केवळीए कहेलो धर्म मने शरणभूत हो. अत्यारथी जीवनपर्यंत हुं चतुर्विध आहारनो त्याग करुं छुं, अने छेल्ला श्वासोश्वासे आ देहने पण हुं तजुं छुं."

आ प्रमाणे ते नन्दन मुनिए दुष्कर्मनी निंदा, सर्व जीवोनी क्षमापना, शुभ भावना, चार शरण, नमस्कारनुं स्मरण अने अनशन ए छए प्रकारनी आराधना करीने धर्मगुरुने तथा साधु साध्वीने खमाव्या. पछी समाधिमां स्थित

थयेला ते मुनि साठ दिवसनुं अनशन पाळीने पचीश लाख वर्षनुं आयुष्य संपूर्ण करी, ममतारहितपणे काळधर्म पामीने दशमा प्राणत नामना देवलोकमां देवपणे उत्पन्न थया. त्यां वीश सागरोपमनुं आयुष्य तेणे पूर्ण कर्युं. आयुष्यने अंते पण तेओ अधिक अधिक कांतिवडे देदीप्यमान रह्या. बीजा देवताओ छ मास आयुष्य बाकी रहे त्यारे अत्यंत कांतिहीन थाय छे अने वधारे मोह पामे छे; परंतु तीर्थंकरोने तो पुण्यनो उदय नजीक होवाथी छ मास अवशेष आयुष्य रहे, त्यारे पण देह कांति विगेरे घटवाने बदले उलटा अधिक वृद्धिमान थाय छे. ते देव त्यांथी च्यवीने श्री महावीरस्वामी नामे चरम तीर्थंकरपणे उत्पन्न थया.

" श्री वर्धमान स्वामीना जीवे समकित पाम्या पछीना पचीशमा भवे जे तप कर्युं ते तप अमारा जेवाने महा उत्तम भावमंगळरूप थइ अक्षय सुख संपत्ति प्रत्ये आपो. "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ त्रयोविंशतितमस्तंभस्य
षट्त्रिंशदधिकत्रिशततमः प्रबंधः ॥ ३३६ ॥

व्याख्यान ३३७ मुं.

रोहिणी व्रत विषे

श्री वासुपूज्यमानम्य, तपोऽतिशयप्रकाशकम् ।
रोहिण्याः सुकथायुक्तं, रोहिणीव्रतमुच्यते ॥ १ ॥

भावार्थ—" श्री वासुपूज्यस्वामीने नमस्कार करीने तपना अतिशयने प्रकाश करनारुं अने रोहिणीनी सत्कथाथी युक्त एवुं रोहिणीव्रतनुं स्वरूप कहीए छीए. "

रोहिणीनी कथा.

चंपापुरीमां श्रीवासुपूज्यस्वामीना पुत्र मघवा नामे राजा राज्य करता हता. तेने लक्ष्मी नामे सदाचारवाळी राणी हती. ते राणीने आठ पुत्रो उपर एक रोहिणी नामे पुत्री थइ. राजाए ते पुत्रीना जन्म वखते मोटो उत्सव कर्यो. अनुक्रमे रूप अने सौभाग्यथी युक्त एवी ते पुत्री युवावस्था पामी; एटले राजाए विचार्यु के " आ पुत्रीने योग्य वर मळे तो सारुं. " एम विचारीने राजाए स्वयंवरनी इच्छाथी घणा राजकुमारोने आमंत्रण कर्युं; तेथी सर्व देशना राजकुमारो पोतपोताना वैभव सहित त्यां आवीने स्वयंवरमंडपमां बेठा. रोहिणी पण स्नान तथा विलेपनादि करी, सारां वस्त्रो पहेरी अने मुकुट, तीलक, कुंडळ, कंठाभरण, प्रालंबक, हार, अर्धहार, बाजुबंध, कडां, वींटी, कटीमेखळा, झांझर अने किंकिणी विगेरे अलंकारो धारण करीने सुखासन (पालखी) मां बेसी मंडपमां आवी. त्यां प्रतिहारीए दरेक राजकुमारोनां पृथक् पृथक् नाम गोत्र विगेरेनुं वर्णन कर्युं; ते सांभळीने रोहिणीए नागपुरना राजकुमार अशोकना कंठमां वरमाळा आरोपण करी, एटले राजाए बीजा सर्व राजकुमारोनुं वस्त्रादिकवडे सन्मान करीने रजा आपी. पछी विधिपूर्वक अशोककुमार साथे रोहिणीनो विवाह कर्यो. अशोककुमार रोहिणीने लइने नागपुर आव्यो. केटलेक काळे अशोकना पिताए अशोकने राज्य सोंपी दीक्षा ग्रहण करी.

अशोक राजाने रोहिणी साथे भोगविलास करतां आठ पुत्रो तथा चार पुत्रीओ थइ. एकदा पत्नीनी साथे राजा गवाक्षमां बेठा हता, ते वखते रोहिणीए कोइ एक स्त्रीने पुत्रना मरणथी रुदन करती अने हृदय तथा माथुं कुटती जोइने हर्षथी राजाने पूछ्युं के " हे स्वामी ! आ केवी जातनुं नाटक छे ?" राजाए कह्युं के " हे प्रिया ! गर्व न कर. " राणी बोली के " धन, यौवन, पति, पुत्र अने पितामह विगेरे संबंधी सर्व प्रकारना सुखथी हुं पूर्ण छुं, तथापि हुं गर्व करती नथी; परंतु आवुं नाटक में कोइ पण वखत जोयुं नथी." राजाए कह्युं के " ते स्त्रीनो पुत्र मरी गयो छे तेथी ते रुए छे.", राणी बोली के " आवुं नाटक क्यां शीखी हशे ?" राजाए कह्युं के " ले हुं ते तने शीखवुं." एम कहीने राजाए लोकपाल नामनो सौथी नानो पुत्र जे राणीना उत्संगमां हतो, तेने लइने बारीथी पडतो मूक्यो. ते पुत्रने अधरथीज पुरदेवीए झीली लीधो, अने तेने सिंहासनपर

बेसाड्यो. पुत्रना पडवाथी पण राणीने रुदन आव्युं नहीं, तेथी राजाने आश्चर्य थयुं. तेवामां ते नगरमां जिनेश्वरना रुप्यकुंभ अने सुवर्णकुंभ नामना बे शिष्यो परिवार सहित आव्या. ते जाणीने राजा तेमनी पासे गयो अने तेमने वंदना करीने राजाए नम्रताथी पूछ्युं के " हे पूज्य ! कया कर्मथी मारी राणी दुःखनुं नाम पण जाणती नथी ?" गुरु बोल्या के" हे राजन् ! सांभळ—

आ नगरमां पूर्वे धनमित्र नामे एक श्रेष्ठी रहेतो हतो, तेने दुर्गंधा नामनी अति दुर्भागी पुत्री हती. ते युवावस्था पामी तोपण तेने कोइ पुरुष परणवानी इच्छा करतो नहीं. धनमित्र एक कोटी द्रव्य आपवानुं कहेतो, तोपण तेने कोइ पुरुष परण्यो नहीं. एकदा कोइ चोरने प्राणांत शीक्षा थइ, तेने मारवा माटे राजाना सेवको लइ जता हता. ते जोइने श्रेष्ठीए ते चोरने छोडावी पोताने घेर आण्यो. ते चोरने दुर्गंधा आपी. रात्रे दुर्गंधाना शरीरना तापथी पीडा पामीने ते चोर नाशी गयो. त्यारपछी एक दिवस ते गाममां कोइ ज्ञानी गुरु पधार्या. तेमने धनमित्र श्रेष्ठीए पुत्रीना दुर्भाग्यनुं कारण पूछ्युं. त्यारे गुरु बोल्या के " उज्जयंत पर्वत पासे गिरिपुर नामना नगरमां पृथ्वीपाळ नामे राजा राज्य करतो हतो. तेने सिद्धिमती नामनी राणी हती. एकदा राजा तथा राणी उपवनमां गया हता, त्यां मासोपवासी श्रीगुणसागर नामना मुनिने गोचरी जतां तेमणे जोया. राजाए मुनिने वंदना करी, अने पछी राणीने कह्युं के "हे प्रिये ! आ मुनि जंगमतीर्थ छे. माटे तुं घेर जइने प्रासुक आहारवडे तेमने प्रतिलाभ." राजानी आज्ञाथी इच्छा विना राणी पाछी वळी, अने घेर जइ क्रोधथी मुनिने कडवा तुंबडानुं शाक वहोराव्युं. मुनिए तेने कडवुं जाणीने परठववानो विचार कर्यो, पण तेथी अनेक जीवनी हिंसा थवानुं धारीने पोतेज तेनो आहार करी गया, अने शुभध्यानवडे केवळज्ञान पामी मुक्तिसुखने वर्या. राजाए ते वृत्तांत सांभळीने राणीने काढी मूकी. ते राणीने सातमे दिवसे कोढनो व्याधि थयो. तेनी व्यथाथी आर्तध्यानवडे मरण पामीने ते छट्ठी नरके गइ. त्यांथी नीकळी तिर्यंचनो भव करी अनुक्रमे सर्व नरकमां उत्पन्न थइ. पछी अनुक्रमे उंटडी, कूतरी, शीयाळणी, भूंडणी, घो, उंदरडी, जू, कागडी, चांडाळी अने छेवटे गधेडी थइ. ते गधेडीना भवमां मृत्यु वखते तेणे नवकार मंत्र सांभळ्यो. तेना पुण्यथी ते मरीने आ तमारी पुत्री थइ छे, पूर्वनुं पापकर्म थोडुं बाकी रहेवाथी आ भवमां ते दुर्भागी थइ छे. " आ प्रमाणे पोतानो

पूर्वभव सांभळतां दुर्गन्धाने जातिस्मरण ज्ञान उत्पन्न थयुं. पोताना पूर्वभवने जोइने तेणे गुरुने पूछ्युं के "हे भगवन्! मने आ दुःखसागरथी तारो." गुरु बोल्या के "तुं सात वर्ष अने सात मास सुधी रोहिणीनुं व्रत कर. तेमां जे दिवस रोहिणी नक्षत्र होय ते दिवसे उपवास करीने श्री वासुपूज्यस्वामीनुं ध्यान करवुं, तेमनुं नवुं चैत्य करावबुं, अने व्रत पूर्ण थाय त्यारे उद्यापन करवुं, तेमां अशोक वृक्षनी नीचे अशोक तथा रोहिणी सहित श्री वासुपूज्यस्वामीनुं रत्नमय बिंब भरावबुं. ते तपना महिमाथी तुं आवता भवमां अशोक राजानी रोहिणी नामनी स्त्री थइने तेज भवमां सिद्धिपदने पामीश, अने आ तप करवाथी तने घणुं सुख प्राप्त थशे. ते उपर दृष्टांत कहुं छुं ते सांभळ—

सिंहपुरमां सिंहसेन नामे राजा हतो. तेने दुर्गन्ध नामनो पुत्र हतो. ते कुमार सर्वने अनिष्ट हतो, कोइने गमतो नहीं. तेथी राजाए एकदा श्री पद्मप्रभस्वामीने पूछ्युं के "हे भगवन्! कया कर्मथी मारा पुत्रने दुर्गंधीपणुं प्राप्त थयुं छे?" प्रभु बोल्या के "हे राजन्! नागपुरथी बार योजन दूर नील नामे एक पर्वत छे. त्यां एक शिला छे. तेनी उपर कोइ तपस्वी साधु ध्यान करता हता, तेना प्रभावथी त्यां पाराधीनां शस्त्रो जीवहिंसामां प्रवर्ती शकतां नहि. तेथी कोइ एक पाराधीने मुनि उपर क्रोध चढ्यो. पछी ज्यारे मुनि भिक्षाने माटे गाममां गया, त्यारे ते शीलानी नीचे तेणे घास तथा लाकडां नांख्यां अने पोते गुप्त रीते संताइ रह्यो. थोडी वारे मुनि भिक्षा लइने आव्या, अने आहार करीने शीला उपर ध्यान धरीने बेठा. ते वखते पेला पाराधीए ते शीला नीचे अग्नि मूक्यो. तेना तापने सहन करता ते मुनि शुभध्यानथी केवळज्ञान पामी मोक्षे गया. ते पाराधी घोर पापकर्मथी कोढियो थयो. त्यांथी घणा भवमां भ्रमण करीने कोइ श्रावकने घेर पशुपाळ थयो. त्यां ते नवकार मंत्र शीख्यो. एकदा अरण्यमां पशु चारवा गयो. त्यां निद्रावश थयो, तेटलामां दावानळ लागवाथी ते बळवा लाग्यो, एटले नवकार मंत्रनुं ध्यान कर्युं, तेना प्रभावशी ते पशुपाळ मरण पामीने तारो पुत्र थयो छे. शेष रहेला पापकर्मना दोषथी आ भवमां ते दुर्गन्धपणुं पाम्यो छे." ते सांभळीने कुमारने जातिस्मरण थयुं. पछी श्री जिनेश्वरे तेने रोहिणी तप करवानो उपदेश आप्यो. कुमार ते तप करीने शरीरनुं सुगन्धपणुं पाम्यो. माटे हे दुर्गन्धा! तुं पण ते तपनुं आचरण कर."

आ प्रमाणे सांभळीने दुर्गन्धाए विधिपूर्वक उद्यापन सहित रोहिणी तप कर्युं. तेना प्रभावथी तेज भवमां ते सुगंधीपणुं पामीने स्वर्गे गइ. त्यांथी च्यवीने ते मघवा राजानी पुत्री रोहिणी नामे थइ. ते तारी राणी थइ छे. हे अशोक राजा! ते तपना पुण्यथी जन्मथी आरंभीने ते दुःखने के रुदनने जाणतीज नथी." आ प्रमाणे श्रीवासुपूज्यस्वामीना शिष्यना मुखथी सर्व हकीकत सांभळीने अशोकराजाए फरीथी पूछ्युं के "हे गुरु! अमारे बन्नेने परस्पर अति स्नेह थवानुं शुं कारण?" गुरु बोल्या के "सिंहसेन राजाए सुगन्धकुमारने राज्य सोंपी दीक्षा ग्रहण करी. पछी सुगन्ध राजा जैनधर्मनुं पालन करीने महाविदेह क्षेत्रमां पुष्कलावती विजयमां पुंडरिकिणी नामनी पुरीमां अर्ककीर्ति नामे चक्रवर्ती राजा थयो. त्यां साधुना संयोगथी दीक्षा लइने अनुक्रमे मृत्यु पामी बारमा देवलोके देव थयो. त्यांथी च्यवीने तुं रोहिणीना मनने आनंद आपनारो अशोक राजा थयो छे. तमे बन्नेए पूर्वे समान तप कर्युं हतुं, तेथी तमारे परस्पर अतिशय प्रेम छे.

वळी हे अशोक राजा! तारा मोटा सात पुत्रो गुणी थया, तेनुं कारण ए छे के "मथुरा नगरीमां अग्निशर्मा ब्राह्मणने सात पुत्रो हता. ते सर्व दरिद्री हता. एकदा तेओए सर्व अलंकारथी विभूषित अने महाभाग्यवान राजपुत्रोने क्रीडा करता जोइने विचार्युं के "आपणे पूर्वे कांइ पण पुण्य कर्युं नथी, जेथी आ भवे स्वप्नमां पण सुख जोयुं नहि; माटे दीक्षा ग्रहण करीए." एम विचारीने ते साते ब्राह्मणना पुत्रोए चारित्र लीधुं. त्यांथी मृत्यु पामीने देव थइ त्यांथी च्यवी ते साते तारा पुत्रो थया छे; अने सौथी नानो जे आठमो पुत्र छे ते पूर्वभवे वैताढ्य पर्वत उपर क्षुल्लक नामे विद्याधर हतो, ते शाश्वत जिनप्रतिमानी पूजा करीने ते पूजाना प्रभावथी सौधर्म देवलोकमां गयो. त्यांथी च्यवीने आ तारो आठमो पुत्र थयो छे. तेने तें बारीथी नांखी दीधो हतो, पण तेने अधरथीज क्षेत्रदेवताए लइ लीधो हतो.

वळी तारी आ चार पुत्रीओ छे तेनो वृत्तांत एवो छे के—वैताढ्य पर्वतपर कोइ विद्याधरने चार पुत्रीओ हती. तेओए एकदा ज्ञानी गुरुने पूछ्युं के "हे पूज्य! अमारुं आयुष्य हवे केटलुं बाकी छे?" गुरु बोल्या के "तमारुं आयुष्य घणुं थोडुं बाकी छे; परंतु तमारुं चारेनुं एकज

वखते मृत्यु थशे." ते सांभळीने तेओ बोली के "थोडा आयुष्यमां अमे शुं पुण्य करीए?" गुरु बोल्या के "अन्तर्मुहूर्त मात्र पण करेलुं पुण्य निष्फळ थतुं नथी, तो तमोने पण मोटुं फळ मळशे; माटे तमे पंचमी तपनुं आराधन करो." ते सांभळीने ते चारेए जीवन पर्यंत पंचमीनुं तप अंगीकार कर्युं. पछी गुरुए कह्युं के "आजेज शुक्ल पक्षनी पंचमी छे." ते सांभळीने ते चारेए उपवासनुं पच्चख्खाण करी घेर जइने देवपूजादिक धर्मक्रिया करी. रात्रे एक साथे मळीने धर्म जागरण करवा लागी. ते प्रसंगे 'आ तप पूर्ण थये आपणे मोटुं उद्यापन करशुं' एवो ते चारे विचार करती हती, तेवामां अकस्मात् ते चारेना मस्तकपर वीजळी पडी; तेथी मृत्यु पामीने तपना प्रभावथी ते स्वर्गे गइ. त्यांथी च्यवीने ते चारे आ तारी पुत्रीओ थइ छे."

आ प्रमाणे गुरुना मुखथी सांभळीने अशोकराजा विगेरे सर्वे संदेह रहित थइ श्रावकधर्म अंगीकार करीने पोताने घेर गया. पछी केटलेक काळे श्री वासुपूज्य स्वामी पासेज राजा राणी विगेरेए दीक्षा ग्रहण करी अने उग्र तपवडे कर्मनो क्षय करी, केवळज्ञानरूप अक्षय भंडार मेळवीने मोक्षपदने पाम्या.

"हे भव्य प्राणीओ! श्री वासुपूज्य स्वामीनी स्तुतिवडे, पूजनवडे अने त्रिकाळ देववंदनवडे रोहिणी तपमां यत्न करीने तमे महापुण्यने उपार्जन करो."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ त्रयोविंशतितमस्तंभस्य सप्तत्रिंशदधिकत्रिशततमः प्रबंधः ॥ ३३७ ॥

व्याख्यान ३३८ मुं.

सप्तनय विषे.

धावन्तोऽपि नयाः सर्वे, स्युर्भावे कृतविश्रमाः ॥
चारित्रगुणलीनः स्यादिति सर्वनयाश्रितः ॥ १ ॥

भावार्थ—" सर्वे नयो पोतपोताना पक्षनुं स्थापन करवा माटे दोडे छे, तोपण ते सर्वे भावमां एटले शुद्ध आत्मधर्ममां विश्राम पामे छे अर्थात् स्थिर थाय छे, तेथी मुनिराज पण सर्व नयनो आश्रय करीने चारित्र गुणमां लीन थाय छे."

चारित्रनो अर्थ एवो छे के— 'चय' एटले आठ कर्मनो संचय, तेने 'रिक्त' एटले खाली करवुं–कर्म रहित थवुं ते चारित्र कहेवाय छे. ते चारित्ररूप गुण तेमां लीन थवुं–वधता पर्यायवाळा थवुं, तेनी अंदर सर्व नयनो आश्रय एवी रीते थाय छे के—द्रव्यनयने कारणपणे ग्रहण करवा अने भावनयने कार्यपणे ग्रहण करवा. साधनमां उद्यमरूप क्रियानय लेवा अने तेमां विश्रांतिरूप ज्ञाननय लेवा. ए प्रमाणे सर्व नयमां आसक्ति राखवी.

श्री अनुयोग द्वारमां कह्युं छे के—

सव्वेसिं पि नयाणं, बहुविह वत्तव्वयं निसामित्ता ॥
तं सव्वनयविसुद्धं, जं चरणगुणट्ठिओ साहू ॥ १ ॥

भावार्थ—" सर्व नयनी बहु प्रकारनी वक्तव्यता सांभळीने सर्व नयथी विशुद्ध एवो जे चारित्र गुण तेने विषे साधु स्थित थाय छे."

आ प्रसंग उपर एक कथा छे ते नीचे प्रमाणे—

एक पोपटनी कथा.

कोइ एक गच्छमां एक तपस्वी आचार्य वृद्ध होवाथी एक गाममांज रहेता हता. तेनो एक शिष्य अति चपळ होवाथी क्रियामां अनादरवाळो हतो. तेणे एकदा गुरुने कह्युं के " हुं युवान छुं, तेथी मैथुन विना रही शकतो नथी." ते

सांभळीने गुरुए तेने गच्छथी बहार कर्यो. ते साधु बाल्यावस्थामांज समग्र शास्त्रो भण्यो हतो, तेथी लोकोने आधीन करीने प्राणवृत्ति करवा लाग्यो. अनुक्रमे आयुष्य पूर्ण थतां ते आर्त्तध्यानवडे मृत्यु पामीने एक वृक्षनी कोटरमां पोपट थयो. त्यां एकदा कोइ साधुनुं दर्शन थतां तेने जातिस्मरण ज्ञान उत्पन्न थयुं, एटले तेणे पोताना पूर्व भवनुं सर्व स्वरूप जाण्युं, अने धर्मना सर्व प्रबंध पण समज्यो.

एक दिवस ते वनमां एक भिल्ल पक्षीओ पकडवा आव्यो. केटलाक पक्षीओ पकडीने ते आ पोपटने पण पकडवा आव्यो. तेनो एक पग हाथमां आव्यो ते खेंचीने माळामांथी बहार काढतां तेनुं एक नेत्र काणुं थयुं. पछी ते भिल्ल पक्षीओने वेचवा माटे चौटामां गयो. त्यां बीजा पक्षीओने वेचवा माटे जतां पेला पोपटने एक जिनदत्त नामना श्रावकनी दुकाने मूकी गयो. त्यां ते पोपटे मनुष्य-वाणीथी पोतानुं सर्व वृत्तांत जिनदत्तने कह्युं. ते सांभळीने तेने साधर्मिक जाणी जिनदत्ते तेने वेचातो लीधो अने एक पांजरामां राख्यो. पछी ते पोपटे जिनदत्तना आखा कुटुंबने श्राद्धधर्मी कर्युं; पण जिनदत्तनो पुत्र जिनदास कोइ श्रेष्ठीनी रूपवती कन्याने जोइने तेनामां आसक्त थयो हतो, तेथी ते धर्म श्रवण करतो नहीं. तेने एकदा पोपटे कह्युं के "केम तारा चित्तमां श्रद्धा थती नथी?" त्यारे ते जिनदासे पोताना हृदयनी साची वात कही संभळावी. ते सांभळी पोपट बोल्यो के "तुं स्वस्थ था. ते श्रेष्ठीपुत्री हुं तने परणावीश." एम कहीने ते पोपट त्यांथी उडीने ते श्रेष्ठीने घेर गयो. त्यां ज्यारे ते श्रेष्ठीनी पुत्री विवाहनी इच्छाथी दुर्गादेवीनुं पूजन करीने वरनी प्रार्थना करवा लागी, त्यारे ते पोपट प्रच्छन्न रहीने बोल्यो के "जो तारे वरनी इच्छा होय तो तुं जिनदत्तना पुत्रने वर." ते सांभळीने ते पुत्रीए हर्षथी पोताना पिताने देवीनुं वाक्य कही जिनदत्तना पुत्रने परणवानी इच्छा जणावी. तेना पिताए ते वात स्वीकारीने जिनदास साथे तेनो विवाह कर्यो. पछी ते वहु बीजी वहुओमां 'हुं देवदत्ता[1] छुं' एम कही गर्व करती अने विरुद्ध धर्मी होवाथी पोपटनो उपदेश पण सांभळती नहीं. त्यारे पोपटे सर्व स्वजनोनी समक्ष हास्य करीने दुर्गादेवीनुं वृत्तांत प्रगट करी बताव्युं. त्यारे तेना स्वजनो 'हे वहु! तमे देवदत्ता छो के पक्षिदत्ता छो?' एम कहीने तेनुं हास्य करवा लाग्या; तेथी ते वहु पोपटना उपर द्वेष करवा लागी. एकदा सर्व स्वज-

१ देवताए आपेली.

नो कार्यमां व्यग्र हता तेवे वखते पोपटनुं एक पींछु खेंचीने ते बोली के " हे पोपट ! तुं तो पंडित छे ! " ते सांभळीने पोपटे मनमां विचार्युं के-" अरे ! आ मारी वाणीना दोषनुं फळ छे. " कह्युं छे के—

आत्मनो मुखदोषेण, बध्यन्ते शुकसारिकाः ।
बकास्तत्र न बध्यन्ते, मौनं सर्वार्थसाधनम् ॥ १ ॥

" पोताभी वाणीना दोषथी पोपट अने सारिका बंधाय छे, पण बगला-बंधाता नथी; माटे मौनज सर्व अर्थने साधनार छे. "

एम विचारीने पोपट बोल्यो के " हुं पंडित नथी, पंडित तो धनश्रेष्ठी छे. " वहुए पूछयुं के " ते शी रीते ? " त्यारे पोपट बोल्यो के " कोइ एक गाममां घणा आंधळा माणसो हता. ते पोतपोताना चोकमां बेसीने हास्य, गीत अने दंभादिक वातो करीने दिवसो निगर्मन करता हता. ते गाममां कोइ शेठ रहेतो हतो. ते पोतानी दुकाने बेसी सोनामहोरोनी परीक्षा करतो हतो. तेनी पासे एकदा एक आंधळो आवीने उभो रह्यो, अने विनयथी ते शेठनी प्रशंसा करीने बोल्यो के " हे शेठजी ! मने स्पर्श करवा माटे मारा हाथमां एक सोना-महोर आपो. " ते सांभळीने सरल स्वभाववाळा ते शेठे तेना हाथमां एक सोना-महोर आपी. ते आंधळे सोनामहोर लइने पोताना वस्त्रने छेडे मजबूत गांठ बांधीने छुपावी दीधी. थोडीवारे ते शेठे सोनामहोर मागी, त्यारे ते अंध बोल्यो के " हे पुण्यशाळी शेठ ! में मारी महोर तमने जोवा माटे आपी हती, ते में लइने मारी गांठे बांधी छे. हुं ते तमने आपीश नहीं, केमके मारी आजीविकाने माटे मारी पासे आटलुंज धन छे; तेनी तमे केम इच्छा करो छो ? " एम कहीने ते अंध पोकार करवा लाग्यो के ' आ शेठ मारी महोर लइ जाय छे.' ते सांभ-ळीने त्यां घणा लोको भेगा थइ गया, अने ते शेठनी निंदा करवा लाग्या; तेथी ते शेठ उलटो झंखवाणो पडी गयो. पछी शेठे एक चतुर माणसने पोतानी सर्व हकीकत कहीने तेनी सलाह पूछी, त्यारे ते चतुर माणसे तेने कह्युं के " हमेशां रात्रे आ गामना सर्व आंधळा एक जग्याए एकठा थाय छे, अने त्यां पोते मेळवेला द्रव्य विगेरेने परस्पर देखाडे छे. त्यां तुं जइने गुप्त रीते उभो रहेजे, अने ज्यारे ते अंध ए महोर बीजाने देखाडवा काढे त्यारे तुं लइ लेजे. " ते सांभळीने ते

शेठ आंधळाओने एकठा मळवाना स्थानके गयो. त्यां पेला आंधळाए हर्षथी पोतानुं पांडित्य प्रकाश करीने गांठे बांधेली सोनामहोर छोडी बीजा आंधळाने बतावषा माटे पोतानो हाथ लांबो कर्यो, एटले तरतज पेला शेठे ते महोर लइ लीधी. बीजा आंधळाए कह्युं के " केम नथी आपतो ? " त्यारे पेलो आंधळो बोल्यो के " आपी ते शुं ? " एज बोलतां ते बन्ने आंधळाओने परस्पर मोटुं युद्ध थयुं, अने शेठ तो पोतानी महोर मळी जवाथी स्वस्थ थइ पोताने स्थानके चाल्यो गयो. त्यारथी " अन्धो अन्ध पीलाय " एवी लोकमां कहेवत चाले छे.

आ वातनो उपनय एवो छे के " एकांतवादीने सर्व नयो अंध सदृश छे अने अनेकांत पक्षने जाणनारने नेत्रवाळा शेठनी तुल्य छे. तत्त्वने पण तेज पामे छे, बीजाओ तत्त्वने पामता नथी. आ कथामां पेला शेठे मौन धारण करीने पोतानुं कार्य साध्युं, माटे ते पंडित छे. "

आ प्रमाणे पोपटना मुखथी कथा सांभळीने ते वहु जती रही. फरीथी पाछी आम तेम जतां ते वहुए पोपटनुं बीजुं पींछुं खेंचीने कह्युं के " हे पोपट ! तुं तो पंडित छे ! " ते सांभळीने पोपटे हजामनी स्त्रीनी कथा कही. ए प्रमाणे कथाओ कहीने पोपटे आखी रात्री निर्गमन करी. प्रातःकाळे तद्दन पांखो विनाना थइ गयेला ते पोपटने पांजरानी बहार काढ्यो. तेवामां एक श्येनपक्षीए तेने मुखमां ग्रहण कर्यो. तेवामां बीजो श्येन पक्षी आव्यो; एटले ते बन्नेनुं युद्ध थयुं. ते वखते पहेला श्येनना मुखमांथी पोपट पडी गयो. ते अशोकवाडीमां पड्यो. त्यां तेने पडतांज कोइ दासपुत्रे लइने तेने एकांतमां राखी साजो कर्यो. पछी ते दासपुत्रे पोपटने कह्युं के " हे पोपट ! मने आ गामनुं राज्य अपाव. " पोपटे कह्युं के " प्रयत्न करीश. "

हवे ते गामनो राजा वृद्ध हतो अने अपुत्रीओ हतो, परंतु ते बीजा कोइने राज्य आपवानी इच्छा धरावतो हतो; तेथी राजा कुळदेवीनुं ध्यान करीने रात्रे सुतो हतो. ते समये पेलो पोपट राजाना पलंगने माथे रहेला क्रीडामयूरना देहमां प्रवेश करीने बोल्यो के " हे राजा ! तुं दासपुत्रने राज्य आपजे, बीजाने आपीश तो सात दिवसमां राज्य नष्ट थशे. " ते सांभळीने 'आ कुळदेवीनुं वाक्य छे' एम जाणी राजाए दासपुत्रने राज्य आप्युं. दासपुत्रे ते पोपटनेज राजा

कर्यो, अने तेनी आज्ञा बधे जाहेर करी. पछी ते पोपटे धर्मना उपदेशथी जिनदास श्रावकना कुटुंबने तथा पेला महेश्वरी (मेश्री) श्रेष्ठीना कुटुंबने प्रतिबोध पमाडी शुद्ध श्रावक कर्या अने तेमने वैराग्य उपजाव्यो. अंते पोते संवेग पामीने अनशन कर्युं; अने मृत्यु पामीने शुभ ध्यानना प्रभावथी सहस्रार नामना आठमा देवलोकमां देवपणे उत्पन्न थयो.

देवलोकमां पण ते परम श्रावक होवाथी धर्मकथा करवा लाग्यो; तेथी सर्व देवोमां ते अति विद्वान गणायो. त्यांथी च्यवीने महाविदेह क्षेत्रमां मनुष्यपणे उत्पन्न थइ सिद्धिपदने पामशे.

ज्ञानवान् मनुष्य अवश्य संवेगनुं भाजन थाय छे; तेथी करीनेज भगवती सूत्रमां कह्युं छे के 'ज्ञान आलोकमां, परलोकमां अने तेथी पण आगळना सर्व भवमां हितकारी छे.' वळी 'ज्ञानक्रियाभ्यां मोक्षः स्यात्'—' ज्ञान अने क्रियाथी मोक्ष थाय छे ' एम पण कह्युं छे, माटे ज्ञान अने क्रिया बंनेनो खप करवो.

" सर्व नयनुं रहस्य संयम कहेलुं छे; माटे हमेशां ज्ञान अने क्रियावडे आप्त पुरुषोए तेनुं सेवन करवुं. "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ त्रयोविंशतितमस्तंभस्य अष्टत्रिंशदधिकत्रिशततमः प्रबंधः ॥ ३३८ ॥

व्याख्यान ३३९ मुं.

शीलनी दृढता विषे.

स्त्रीनी साथे लांबा वखतनो सहवास छतां पण उत्तम पुरुषो पोतानी दृढताने छोडता नथी. कह्युं छे के—

> दिनमेकमपि स्थातुं, कोऽलं स्त्रीसन्निधौ तथा ।
> चतुर्मासीं यथाऽतिष्ठत्, स्थूलभद्रोऽक्षतव्रतम् ॥ १ ॥

भावार्थ—" जेवी रीते स्थूलभद्र मुनि व्रतनो भंग कर्या विना चार मास सुधी स्त्रीसमीपे रह्या, तेवी रीते बीजो कयो पुरुष एक दिवस पण रहेवाने समर्थ छे ? कोइज नथी."

स्थूलभद्र मुनिनी कथा.

एकदा वर्षाऋतु आवतां श्रीसंभूतविजय सूरिने वंदना करीने त्रण मुनिओए जूदा जूदा अभिग्रह लीधा. तेमां पहेला मुनिए कह्युं के "हुं चार मास सुधी सिंहनी गुफाने मोढे उपवास करीने कायोत्सर्गे रहीश." बीजा मुनिए कह्युं के " हुं चार मास सुधी दृष्टिविष सर्पना बीलने मोढे कायोत्सर्ग धारण करीने उपोषित रहीश." अने त्रीजाए कह्युं के " हुं चार मास सुधी कूवाना भारवट उपर कायोत्सर्ग करीने उपोषित रहीश." ते त्रणे मुनिओने योग्य जाणीने गुरुए तेमने आज्ञा आपी. पछी स्थूलभद्र मुनिए उठीने गुरुने विज्ञप्ति करी के " हुं चार मास सुधी उग्र तप कर्या विना षड्रसवाळा भोजननो आहार करीने कोशा वेश्याना घरमां रहीश." गुरुए उपयोग दइने तेने योग्य धारीने तेम करवानी आज्ञा आपी. पछी सर्वे मुनिओ पोते अंगीकार करेला स्थाने गया. ते वखते समता गुणवाळा अने उग्र तपने धारण करनारा ते मुनिवरोने जोइने ते सिंह, सर्प अने कूवानो रेंट फेरवनार ए त्रणे शांत थइ गया.

स्थूलभद्र पण कोशाने घेर गया. त्यां तेमने आवता जोइने कोशाए विचार्युं के " आ स्थूलभद्र चारित्रथी उद्वेग पामी व्रतनो भंग करीने आव्या जणाय छे, माटे हजु सुधी मारुं भाग्य जागतुं छे." एम विचारीने कोशा एकदम

उठी मुनिने मोतीथी वधावी बे हाथ जोडी उभी रहीने बोली के " पूज्य स्वामी! आप भले पधार्या. आपना आगमनथी आजे अंतराय क्षय थवाने लीधे मारुं पुण्य प्रगट थयुं छे. आजे मारापर चिंतामणि, कामधेनु, कल्पवृक्ष तथा कामदेव विगेरे देवताओ प्रसन्न थया एम हु मानुं छुं. हवे हे नाथ! प्रसन्न थइने मने जलदीथी आज्ञा आपो. आ मारुं चित्त, वित्त, शरीर अने घर ए सर्व आपनुंज छे, मारुं यौवन प्रथम आपेज सफळ कर्युं छे. हमणां हीमथी बळी गयेली कमलिनीनी जेम आपना विरहथी दग्ध थयेला आ मारा शरीरने निरंतर आपना दर्शन तथा स्पर्शवडे आनंदित करो." ते सांभळीने स्थूलभद्र बोल्या के 'आ कामशास्त्रने अनुसारे बनावेली तारी चित्रशाळा मने चार मास सुधी रहेवा आप." ते सांभळीने कोशाए तरतज चित्रशाळा साफ करीने रहेवा आपी. त्यां मुनि समाधि धारण करीने रह्या. कोशाए आपेलो कामदेवने प्रदीप्त करनार षड्रसयुक्त आहार करीने पण मुनि स्थिर मन राखीने रह्या. कोशा वस्त्राभूषण पहेरीने अनेक प्रकारना हावभाव करती मुनिने क्षोभ पमाडवा तेमनी पासे आवी. ते वखते मुनिए कह्युं के "साडा त्रण हाथ दूर रहीने तारे नृत्य विगेरे जे करवुं होय ते करवुं." पछी ते कोशा साडा त्रण हाथ दूर रहीने कटाक्षथी मुनि सामुं जोवा लागी, लज्जानो त्याग करीने पूर्वे करेली क्रीडानुं स्मरण कराववा लागी, अने गात्रने वाळवानी चतुराइथी त्रिवळीवडे सुंदर एवो मध्य भाग देखाडती, तथा वस्त्रनी गांठ बांधवाना मिषथी गंभीर नाभिरूपी कूपने प्रगट करती कोशा तेमनी समक्ष विश्वने मोह पमाडनारुं नाटक करवा लागी; तोपण स्थूलभद्र जरा पण क्षोभ पाम्या नहीं. पछी ते कोशा पोतानी सखीओने लइने आवी. तेमांथी एक निपुण सखी बोली के " हे पूज्य! कठिनतानो त्याग करीने उत्तर आपो केमके मुनिओनुं मन हमेशां करुणाए करीने कोमळ होय छे, भाग्यहीन पुरुषोज प्राप्त थयेला भोगने गुमावे छे, माटे हे पाप रहित मुनि! आपना वियोगथी कृश थयेली अने आपनेज माटे मरवाने तैयार थयेली आ तमारी कामातुर प्रियाना मनोरथने सफळ करो. फरीथी पण आ तपस्या तो सुखे प्राप्त थशे, पण आवी प्रेमी युवती फरीथी मळशे नहीं." ते सांभळीने मुनिए कोशाने कह्युं के "अनंतीवार अनेक भवमां कामक्रीडादि करेल छे, तोपण हजु सुधी शुं तुं तेनीज इच्छा करे छे? शुं हजु तने तृप्ति थइ नथी के जेथी मारी सन्मुख आ नृत्यादिक प्रयत्नो करे छे? जो कदाच आवुं नृत्य प्रशस्त भाववडे परमात्मानी स्तुतिपूर्वक तेमनी पासे कर्युं होय तो सर्व सफळ थाय; परंतु तुं तो भोगनी इच्छा-

थी दीन वाणी बोले छे, अने सखीओने लावीने भोगप्राप्तिने माटे प्रयत्न करे छे, परंतु तुं शामाटे आ जन्म तथा जीवनने वृथा गुमावे छे ? हे बुद्धिशाळी कोशा ! ते सर्व प्रयत्न पोताना आत्माना हितने विषेज कर." आ प्रमाणेनां स्थूलभद्र मुनिनां वचनो सांभळीने कोशाए विचार्युं के "आ मुनिनुं जितेन्द्रियपणुं मारा जेवी असंख्य चतुर नायिकाथी पण जीती शकाय तेवुं नथी." एम विचारीने ते बोली के "हे मुनिराज ! में अज्ञानताने लीधे आपनी साथे पूर्वे करेली क्रीडाना लोभथी आजे पण क्रीडानी इच्छावडे आपने क्षोभ पमाडवा माटे अनेक उपायो कर्या छे, हवे ते मारो अपराध क्षमा करो." पछी मुनिए तेने योग्य जाणीने श्रावकधर्मनो उपदेश कर्यो. ते पण प्रतिबोध पामीने श्राविका थइ, अने "नंदराजाए मोकलेला पुरुष विना बीजा सर्व मारे बंधु समान छे" एवो अभिग्रह लीधो.

हवे वर्षाऋतु पूर्ण थइ त्यारे पेला त्रणे साधुओ पोतपोताना अभिग्रहनुं यथाविधि प्रतिपालन करीने गुरु पासे आव्या. तेमां प्रथम सिंहनी गुफा पासे रहेनार साधुने आवता जोइने गुरु कांइक उठीने बोल्या के "हे वत्स ! दुष्कर कार्य करनार ! तुं भले आव्यो, तने साता छे ?" तेज प्रमाणे बीजा बे साधुओ आव्या, त्यारे तेमने पण तेज रीते गुरुए आवकार आप्यो. पछी स्थूलभद्रने आवता जोइने गुरु उभा थइने बोल्या के "हे महात्मा ! हे दुष्कर दुष्कर कार्यना करनार ! तुं भले आव्यो." ते सांभळीने पेला त्रणे साधुओए इर्ष्याथी विचार्युं के "आ स्थूलभद्र मंत्रीनो पुत्र होवाथीज तेमने गुरु बहुमानथी बोलावे छे. चित्रशाळामां रहेला, षड्रस भोजननो आहार करनारा अने स्त्रीओना संगमां वसेला आ स्थूलभद्रने गुरुए अति दुष्कर कार्य करनार कह्यो, तो हवे अमे पण आवता चातुर्मासमां तेवोज अभिग्रह करशुं." एम विचारीने महा कष्टे आठ मास व्यतीत कर्या. पछी वर्षाकाळ आव्यो त्यारे सिंहगुफावासी अभिमानी साधुए सूरिने कह्युं के "आ चातुर्मास हुं स्थूलभद्रनी जेम कोशाना घरमां रहीश." गुरुए विचार्युं के "जरुर आ साधु स्थुलभद्रनी स्पर्धाथी आवो अभिग्रह करे छे." पछी गुरुए उपयोग आपीने तेने कह्युं के "हे वत्स ! ए अभिग्रह तुं न ले, ते अभिग्रहनुं पालन करवामां तो स्थूलभद्र एकज समर्थ छे, बीजो कोइ समर्थ नथी. केमके—

अपि स्वयंभूरमणस्तरीतुं शक्यते सुखम् ।
अयं त्वभिग्रहो धर्तुं, दुष्करेभ्योऽपि दुष्करः ॥ १ ॥

" कदाच स्वयंभूरमण समुद्र पण सुखेथी तरी शकाय, पण आ अभिग्रह धारण करवो ते तो दुष्करथी पण दुष्कर छे. "

आ प्रमाणेना गुरुए कहेला वचननी अवगणना करीने ते वीरमानी साधु कोशाने घेर गया. कोशाए तेने जोइने विचार्युं के " जरुर आ साधु मारा धर्मगुरुनी स्पर्धाथीज अहीं आव्या जणाय छे." एम विचारीने तेणे ते मुनिने वंदना करी. मुनिए चातुर्मास रहेवा माटे चित्रशाळा मागी–ते तेणे आपी. पछी कामदेवने उद्दीपन करनार षड्रस भोजन कोशाए मुनिने वहोराव्युं, मुनिए तेनो आहार कर्यो. पछी मध्याह्न समये प्रथमनीज जेम वस्त्राभूषण पहेरीने कोशा मुनिनी परीक्षा करवा आवी. तेना हावभाव, कटाक्ष तथा नृत्यादिक जोइने मुनि क्षणवारमांज क्षोभ पाम्या. अग्नि पासे रहेल लाख, घी अने मीणनी जेम ते मुनिए कामावेशने आधीन थइने भोगनी याचना करी. त्यारे कोशाए तेने कह्युं के " हे स्वामी ! अमे वेश्याओ इन्द्रनो पण द्रव्य विना स्वीकार करती नथी." त्यारे मुनि बोल्या के " मने कामज्वरथी पीडा पामेलाने भोगसुख आपीने प्रथम शांत कर. पछी द्रव्य मेळववानुं स्थान पण तुं बतावीश तो त्यां जइने ते पण हुं तने मेळवी आपीश ! " ते सांभळीने तेने बोध करवा माटे कोशाए तेने कह्युं के " नेपाल देशनो राजा नवीन साधुने लक्ष मूल्यवाळुं रत्नकंबल आपे छे, ते तमे मारे माटे लइ आवो; पछी बीजी वात करो." ते सांभळीने अकाळे वर्षाऋतुमांज मुनि नेपाल तरफ चाल्या. त्यां जइ त्यांना राजा पासेथी रत्नकंबल मेळवीने कोशानुं ध्यान करता ते मुनि तरतज पाछा फर्या. मार्गमां चोर लोको रहेला हता. तेमने तेना पाळेला पक्षीए कह्युं के " लक्ष धन आवे छे." एम वारंवार ते पक्षीए कह्युं. तेवामां मुनि पण ते चोरनी नजीक आव्या; एटले तेने पकडीने चोर लोकोए सर्व जोयुं, पण कांइ द्रव्य जोवामां आव्युं नहीं, तेथी मुनिने छोडी मूक्या. फरीथी ते पक्षीए कह्युं के " लक्ष द्रव्य जाय छे." ते सांभळीने फरीथी साधुने पाछा बोलावीने चोरना राजाए कह्युं के " अमे तने अभय आप्युं, पण सत्य बोल, तारी पासे शुं छे ? " त्यारे साधु बोल्या के " हे चोरो ! सत्य वात सांभळो.

आ वांसनी पोली लाकडीमां में वेश्याने आपवा माटे रत्नकंबल राखेलुं छे. " ते सांभळीने चोरोए तेने रजा आपी. साधुए आवीने कोशाने ते रत्नकंबल आप्युं. ते लइने कोशाए पग लूही तेने घरनी खाळना कादवमां नाखी दीधुं. ते जोइने साधुए खेदयुक्त थइ कह्युं के " हे सुंदरी ! घणी मुश्केलीथी आणेलुं आ महामूल्यवाळुं रत्नकंबल तें कादवमां केम नाखी दीधुं ? " कोशाए कह्युं के " हे मुनि ! ज्यारे तमे एम जाणो छो, त्यारे गुणरत्नवाळा आ तमारा आत्माने तमे नरकरूपी कादवमां केम नांखो छो ? त्रण भुवनमां दुर्लभ एवा रत्नत्रयने नगरनी खाळ जेवा मारा अंगमां केम फोगट नांखी दो छो ? अने एकवार वमन करेला संसारना भोगने फरीने खावानी इच्छा केम करो छो ?" इत्यादि कोशानां उपदेशवाळां वाक्यो सांभळीने प्रतिबोध पामेला मुनिए वैराग्यथी कोशाने कह्युं के" हे पापरहित सुशीला ! तें संसारसागरमां पडतां मने बचाव्यो ते बहु सारुं कर्युं. हवे हुं अतिचारथी उत्पन्न थयेला दुष्कर्मरूप मेलने धोवाने माटे ज्ञानरूप जळथी भरेला गुरुरूपी द्रहनो आश्रय करीश." कोशाए पण तेमने कह्युं के "तमारे विषे मारुं मिथ्यादुष्कृत हो; केमके हुं शीलव्रतमां स्थित हती छतां तमने में कामोत्पादक क्रियावडे खेद पमाड्यो छे; परंतु तमने बोध करवा माटेज में तमारी आशातना करी छे ते क्षमा करजो, अने हमेशां गुरुनी आज्ञाने मस्तकपर चढावजो. " ते सांभळीने ' इच्छामि ' एम कही सिंहगुफावासी मुनि गुरु पासे आव्या.

गुरु विगेरेने वंदना करीने " हुं मारा आत्माने निंदुं छुं " एम कही ते मुनि बोल्या के " सर्व साधुओमां एक स्थूलभद्रज अति दुष्कर कार्यना करनार छे, एम जे गुरुए कह्युं हतुं ते योग्य छे. पुष्पफळना रसने (स्वादने), मद्यना रसने, मांसना रसने अने स्त्रीविलासना रसने जाणीने जेओ तेनाथी विरक्त थाय छे ते अति दुष्कर कार्यना करनारा छे. तेने हुं वंदना करुं छुं. वळी सत्त्व विनानो हुं क्यां अने धीर बुद्धिवाळा स्थूलभद्र क्यां ? सरसवनो कण क्यां अने हेमाद्रि पर्वत क्यां ? खद्योत क्यां अने सूर्य क्यां ? " आ प्रमाणे कहीने ते मुनि आलोचना लइ दुष्कर तप करवा लाग्या.

अहीं कोशा पोताना स्थूलभद्र गुरुनी नीचे प्रमाणे स्तुति करवा लागी—

सार्धद्वादशकोटीनां, स्वर्णं यो मामदाद्गृहे !
स द्वादशव्रतान्येवं, साधुत्वेऽपि ददावहो ॥ १ ॥

भावार्थ—" जेणे साडाबार करोड सोनामहोरो मारा घरमां आवीने मने आपी हती तेणेज साधु अवस्थामां पण मारे त्यां आवीने मने बार व्रत आप्यां. "

येन दत्तं पुरा दानं, तेनैव दीयते पुनः ।
चातको रटते नित्यं, दानं यच्छेत् पयोमुचः ॥ २ ॥

भावार्थ—" जेणे प्रथम दान आप्युं होय छे तेज फरीथी पण दान आपे छे. जुओ ! चातक पक्षी जळने माटे निरंतर याचना करे छे अने मेघ निरंतर दान आपे छे. "

धनदानादयाचित्वमाजन्मनिर्मितं सुखम् ।
व्रतदानाद्भवेऽनन्ते, सौख्यदो मम सर्वदा ॥ ३ ॥

भावार्थ—" स्थूलभद्रे धननुं दान आपीने आ जन्मपर्यंत अयाचक वृत्तिनुं मने सुख आप्युं, अने व्रतनुं दान आपीने अनंत भवनुं सुख मने आप्युं; एटले सर्वदा ते तो मने सुख आपनार ज थया. "

आ स्थूलभद्र मुनीन्द्रना गुणनुं वर्णन चोराशी चोवीशी सुधी सर्व तीर्थंकरो करशे.

" घणा दिवस सुधी स्त्रीओना संगमां रह्या छतां पण स्थूलभद्र मुनिए पोताना शीलनो भंग कर्यो नहीं. ते जोइने बीजा साधुओए पण सिंहगुफावासी मुनिना जेवुं स्त्रीना संबंधमां निःशंक मन करवुं नहीं. "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ त्रयोविंशतितमस्तंभस्य
एकोनचत्वारिंशदधिकात्रिशततमः प्रबंधः ॥ ३३९ ॥

व्याख्यान ३४० मुं.

—>>◎<<—

मनुष्यभवनी दुर्लभता विषे.

संबन्धैर्दशभिर्ज्ञेयो, मनुष्यभवदुर्लभः ।
तन्मध्ये पाशकज्ञातं, लिख्यते पूर्वशास्त्रतः ॥ १ ॥

भावार्थ—" दश दृष्टांते करीने मनुष्यभव दुर्लभ छे एम जाणवुं. ते दश दृष्टांतमांथी आ स्थळे पूर्व शास्त्रने अनुसारे पाशानुं दृष्टांत लखीए छीए.

पाशानुं दृष्टांत (चाणाक्यनी कथा).

गोल्लदेशमां चणक नामनो एक जैन ब्राह्मण रहेतो हतो. तेने चणेश्वरी नामनी पत्नी हती. ते स्त्रीथी चाणाक्य नामनो जन्मथीज दांतवाळो पुत्र थयो हतो. एकदा तेने घेर कोइ ज्ञानी मुनि आहार माटे आव्या. ते वखते मुनिने नमीने ते दंपतीए पूछ्युं के "हे पूज्य ! आ पुत्र दांत सहित जन्म्यो छे तेनुं शुं फळ ?" मुनि बोल्या के " ए बाळक राजा थशे. " ते सांभळी चणकने खेद थयो; अने " मारो पुत्र राज्यना आरंभथी अधोगति न पामो " एम विचारीने तेणे ते बाळकना दांत घसी नांख्या. पछी ते वात चणके फरीने पाछी तेज मुनिने कही. त्यारे मुनि बोल्या के " हवे ते बाळक प्रधानश्रेष्ठ थशे. "

अनुक्रमे वृद्धि पामतो चाणाक्य सकळ कळामां कुशळ थयो. ते युवान थयो त्यारे एक ब्राह्मणनी कन्या साथे परण्यो. ते निर्धन हतो, तोपण संतोषी होवाथी धनने माटे बहु प्रयत्न करतो नहीं. अन्यदा तेनी स्त्री पोताना भाइना लग्न होवाथी पिताने घेर गइ; पण निर्धनताने लीधे तेना भाइओनी स्त्रीओ विगेरेए तेने आदरमान आप्युं नहीं, अने भोजनादिकमां पण पंक्तिभेद कर्यो. ते जोइ पोताना अति दुर्भाग्यथी लज्जा पामीने ते पतिने घेर आवी. तेने अत्यंत शोकातुर जोइने चाणाक्ये आग्रहथी शोकनुं कारण पूछ्युं. त्यारे अश्रुनी वृष्टि करती तेणे पोताना पराभवनी वात कही संभळावी. ते सांभळीने चाणाक्ये विचार्युं के—

कलावान् कुलवान् दाता, यशस्वी रूपवानपि ।
विनाश्रियं भवेन्मर्त्यो, निस्तेजाः क्षीणचन्द्रवत् ॥ १ ॥

" कळावान, कुळवान, दातार, यशस्वी अने रूपवान छतां पण मनुष्य जो लक्ष्मी विनानो होय तो ते क्षय पामता चंद्रनी जेम तेजरहित देखाय छे."

माटे नन्दराजा ब्राह्मणोने घणुं धन आपे छे तेथी त्यां जाउं. एम विचारीने चाणाक्य तरतज पाटलीपुत्र गयो. त्यां राजसभामां जइने राजानाज सिंहासन पर बेठो. थोडीवार एक निमित्त जाणनार सिद्धपुत्रनी साथे नन्दराजा सभामां आव्या. त्यां सिंहासन पर बेठला चाणाक्यने जोइने ते सिद्धपुत्र बोल्यो के " आ ब्राह्मण नंदवंशनी छाया (मर्यादा) नुं उल्लंघन करीने सिंहासन पर बेठो छे." ते सांभळीने राजानी दासीए चाणाक्यने कह्युं के " हे पूज्य! आ बीजा सिंहासन पर बेसो." ते बोल्यो के "आ बीजा आसन पर मारुं कमंडळु रहेशे." एम कहीने ते बीजा आसनपर कमंडळु मूक्युं. अने पोते ते सिंहासनपरथी उठ्यो नहीं. त्यारे दासी त्रीजुं सिंहासन लावी. तेनापर चाणाक्ये दंड मूक्यो, दासी चोथुं आसन लावी, तेनापर तेणे अक्षमाळा मूकी, अने पांचमा आसन पर तेणे ब्रह्मसूत्र मूक्युं. त्यारे दासी बोली के "अहो, आ ब्राह्मण केवो धृष्ट अने मूर्ख छे!" ते सांभळीने क्रोध पामेलो चाणाक्य दासीने पगनी लात मारीने सर्व लोक सांभळतां बोल्यो के--

कोशैश्च भृत्यैश्च निबद्धमूलं, पुत्रैश्च मित्रैश्च विवृद्धशाखम् ।
उत्पाट्य नन्दं परिवर्तयामि, महाद्रुमं वायुरिवोग्रवेगः ॥ १ ॥

भावार्थ—" भंडार अने भृत्योवडे जेनुं मूळ मजबुत थयेलुं छे, अने पुत्रो तथा मित्रोवडे जेनी शाखाओ वृद्धि पामेली छे एवा नन्दरूपी महावृक्षने उग्र वेगवाळा वायुनी जेम हुं मूळथी उखेडीने भमावीश."

ते सांभळीने " आ भिक्षुक ब्राह्मणथी शुं थवानुं छे?" एम धारी राजाए पण तेनी उपेक्षा करी. एटले ते चाणाक्य त्यांथी नीकळीने भमतो भमतो नंद राजाना मयूरपोषकना गाममां आव्यो. त्यां ते परिव्राजकनो वेष धारण करीने रह्यो. ते गामना ग्रामणी (गामेती)नी पुत्रीने चंद्र पीवानो दोहद थयो हतो, ते दोहदने पूर्ण करवा कोइ समर्थ थयुं नहोतुं; तेथी तेना पिताए चाणाक्यने कह्युं, त्यारे ते बोल्यो के "जो ते पुत्रीना गर्भमां रहेलो पुत्र मने आपवानुं कबुल करो

तो हुं तेनो दोहद पूर्ण करुं. " ते सांभळीने " गर्भवती पुत्री दोहद पूर्ण न थवाथी मरी न जाओ " एम धारी तेओए चाणाक्यनुं वचन कबूल कर्युं. पछी चाणाक्ये एक छिद्रवाळो वस्त्रनो मंडप कराव्यो, ते मंडपनी उपर छानी रीते ते छिद्रने धीरे धीरे ढांकवा माटे एक गुप्त माणसने राख्यो ने ते छिद्रनी नीचे मंडपमां दूधथी भरेलो एक थाळ मूक्यो. कार्तिकी पूर्णिमानी रात्रे चंद्रनुं प्रतिबिंब ते थाळमां पड्युं, ते प्रतिबिंब ते गर्भिणीने बतावीने चाणाक्य बोल्यो के " आ चंद्रनुं पान कर. " पछी प्रसन्न थयेली ते स्त्रीए चंद्रपाननी बुद्धिथी थाळमांनुं दूध पीवानो आरंभ कर्यो. जेम जेम ते स्त्री थाळमांथी दूध पीती गइ, तेम तेम मंडप उपर गुप्त रहेला पुरुष धीरे धीरे ते छिद्र ढांकवा मांड्युं. एवी रीते बधुं दूध पूर्ण थयुं त्यारे ते आखुं छिद्र ढांकी दीधुं. ए प्रमाणे तेनो दोहद चाणाक्ये पूर्ण कर्यो. पूर्ण समये ते स्त्रीए पुत्रने जन्म आप्यो. तेनुं चंद्रगुप्त एवुं नाम पाड्युं.

चाणाक्य तो अनेक प्रयत्नो करीने द्रव्य उपार्जन करवा लाग्यो. अहीं चंद्रगुप्त प्रौढ वयनो थयो, एटले समान वयवाळा बाळकोनी साथे राजानी जेम क्रीडा करवा लाग्यो. तेमां देश, पुर, गोकुळ, हाथी, घोडा अने अमात्य विगेरेनी स्थापना करतो हतो अने तेमांथी अनेक प्रकारनुं दान आपतो हतो. तेवामां भमतो भमतो चाणाक्य त्यां आव्यो. ते बोल्यो के " हे बाळक ! मने पण कांइक आप. " चन्द्रगुप्ते कह्युं के " आ गायो लइ ले. " चाणाक्ये कह्युं के " ए गायो लेतां मने बीक लागे छे. " त्यारे चन्द्रगुप्त बोल्यो के " बीश नहीं, आ पृथ्वी वीर पुरुषनेज भोगववा लायक छे. " ते सांभळीने हर्ष पामेला चाणाक्ये बीजा बाळक पासेथी तेनुं नाम तथा गोत्रादिक जाणीने ए पोतानोज बाळक छे, एम निश्चय करी तेने कह्युं के "हे वत्स ! चाल, हुं तने साचुं राज्य आपुं." ते सांभळीने तरतज ते तेनी साथे जवा तैयार थयो, एटले तेने लइने चाणाक्य नाशी गयो.

पछी तेणे सैन्य तैयार करीने प्रथम पाटलीपुरनेज घेरो घाल्यो. नंदराजाए क्षणवारमां तेना थोडा सैन्यने जीती लीधुं; एटले चाणाक्य चंद्रगुप्तने लइने नासी गयो. तेनी पाछळ नंदराजाना स्वारो दोड्या, तेमांथी एक स्वार दूरथी चाणाक्य अने चंद्रगुप्तना जोवामां आव्यो. तेथी चाणाक्ये चंद्रगुप्तने पासेना सरोवरमां संताडीने पोते धोबीनुं काम करवा लाग्यो. तेवामां ते घोडेस्वारे पासे आवीने तेने

पूछयुं के "चंद्रगुप्त अहींथी जतो हतो, तेने तें जोयो छे?" ते बोल्यो के "ते आ सरोवरमां पेठो छे." ते सांभळीने ते स्वार मात्र लंगोटी मारीने ते सरोवरना जळमां पेठो; एटले चाणाक्ये तेनुंज खड्ग लइने तेनुं माथुं छेदी नाख्युं. पछी तेना घोडा उपर चंद्रगुप्तने बेसाडीने चाणाक्य आगळ चाल्यो. चालतां चालतां तेणे चंद्रगुप्तने पूछयुं के "हे वत्स! ज्यारे में ते घोडेस्वारने सरोवरमां मोकल्यो, त्यारे तें शुं धार्युं?" ते बोल्यो के,' जे उत्तम पुरुषो करे छे ते उत्तमज होय छे, एम में धार्युं हतुं." आ प्रमाणेना तेना विनयवाळा वाक्यथी चाणाक्य घणो खुशी थयो. थोडे दूर जतां चंद्रगुप्तने क्षुधित जाणीने चाणाक्ये भोजनने माटे जतां मार्गमां कोइ ब्राह्मणने तरतनोज करंबो खाइने आवतो जोइ तेनुं पेट चीरी तेमांथी ते भोजन लइ ते वती चंद्रगुप्तने जमाड्यो. चंद्रगुप्त भूख्यो होवाथी भोजनना रसनो विपर्यय जाणी शक्यो नहीं.

पछी ते मौर्यवंशी चंद्रगुप्तनी साथे संध्यासमये एक गाममां आव्यो. त्यां भिक्षाने माटे भमतां ते एक दरिद्रीने घेर गयो. ते वखते एक डोसीए पोतानां बाळकोने उनी उनी राब पीरसी हती. तेमांथी एक वधारे भूख्या बाळके वचमां हाथ नांख्यो, तेथी तेनी आंगळीओ दाझी एटले ते रोवा लाग्यो. तेने पेली डोसीए कह्युं के "अरे मूढ! तुं पण चाणाक्यना जेवो जड जणाय छे." ते सांभळीने भिक्षुरूप चाणाक्ये डोसीने पूछयुं के "हे माता! तमे अहीं चाणाक्यनुं दृष्टांत केम आप्युं?" डोसी बोली के "जेम चाणाक्ये आजुबाजुनो देश साध्या विना पहेलां पाटलीपुत्रनेज रुंध्युं, तेथी ते मूर्ख निंदाने पात्र थयो, तेम आ बाळके पण प्रथम धीमे धीमे अडखे पडखेथी राब चाख्या विना वचमांज हाथ नांख्यो, तेथी ते चाणाक्यनी उपमाने पाम्यो." ते सांभळीने चाणाक्ये डोसीनी शिक्षा सत्य मानी.

पछी अनुक्रमे चाणाक्ये पर्वत नामना एक राजानी साथे गाढ मित्राइ बांधी. एकदा तेणे पर्वत राजाने कह्युं के "जो तमारी इच्छा होय तो नंदराजानुं उन्मूलन करीने तेनुं राज्य आपणे वहेंची लइए." ते वात कबूल करीने पोताना सैन्य सहित पर्वतराजा चंद्रगुप्तने साथे राखीने नंदराजानो देश साधवा लाग्यो. छेवट नंदनी राजधानी पाटलीपुत्रने घेरो घाल्यो; पण ते नगरी बळथी लइ शकाय तेवुं नथी, एम धारीने भिक्षुनो वेष लइ चाणाक्य ते पुरमां पेठो. त्यां वास्तुशास्त्र-

ने अनुसारे सर्व मकानो जोवा लाग्यो. तेवामां एक स्थाने महा प्रतापी सात देवीओ-इन्द्रनी कुमारिकाओनी मूर्त्तिओ तेणे जोइ. पछी तेमना प्रभावथीज आ पुरनो भंग थतो नथी, एम जाणीने ते देवीओने उखेडी नांखवानो उपाय विचारवा लाग्यो. तेवामां पुरना रोधथी कायर थयेला पोरजनोए ते भिक्षुने पूछ्युं के "हे पूज्य ! आ पुरनो रोध क्यारे मटशे ?" चाणाक्ये जवाब आप्यो के—"ज्यांसुधी आ सात देवीओनी प्रतिमाओ अहीं प्रतिष्ठित छे, त्यांसुधी पुरनो रोध शी रीते मटे ?" आ प्रमाणेना ते धूर्तना कहेवाथी छेतरायेला लोकोए ते देवीओने तेना स्थानथी तरतज उखेडी नांखी. तेज वखते चंद्रगुप्त तथा पर्वते ते पुर जीती लीधुं. आ प्रमाणे तेणे प्रथम नंदराजानो देश साधीने पछी पाटलीपुर लीधुं. ते वखते नंदनुं पुण्य क्षीण थयेलुं होवाथी तेणे चाणाक्य पासे धर्मद्वार माग्युं, त्यारे ते बोल्यो के "हे नंदराजा ! तुं एक रथमां जेटलुं लइ जवाय तेटलुं लइने निर्भयताथी पुर बहार चाल्यो जा." नंद पण पोतानी बे स्त्रीओ, एक कन्या अने सारभूत द्रव्य रथमां लइने नगर बहार नीकळ्यो. तेज वखते चंद्रगुप्त विगेरे सौ नगरमां पेठा. सामसामे मळतां नंदनी कन्या अनुरागथी चंद्रगुप्तनी सामुं जोइ रही. ते जोइने नंदराजाए पुत्रीने कह्युं के "हे वत्स ! जो आ पति तने पसंद होय तो खुशीथी तेने अंगीकार कर." पितानी आज्ञा थवाथी ते कन्या पोताना रथमांथी उतरीने चंद्रगुप्तना रथ उपर चढवा लागी. तेना चढतांज चंद्रगुप्तना रथना चक्रना नव आरा भांगी गया. तेथी 'आ स्त्री अमंगळ करनारी छे' एम धारीने चंद्रगुप्ते तेने अटकावी. एटले चाणाक्य बोल्यो के "हे वत्स ! ते स्त्रीनो तुं निषेध न कर. आ आराना भंगरूप शुकनथी तारो नव पेढी सुधी तारो वंश रहेशे." ते सांभळीने चंद्रगुप्ते ते कन्याने पोताना रथमां बेसाडी, अने नंदना राजद्वारमां आव्यो.

राजमहेलमां एक कन्या बहु रूपवती हती. तेने जन्मथीज नंदराजाए धीमे धीमे महा उग्र विष खवडाववा मांड्युं हतुं, एटले ते विषकन्या थइ गइ हती. ते विषकन्याने जोइने पर्वतराजाए विषयांध थइ तेनो संग कर्यो. तेथी ते कन्यानुं विष तत्काळ पर्वतने चड्युं. तेणे चंद्रगुप्तने कह्युं के "मने विष व्याप्युं छे, माटे तेनो जलदीथी कांइ उपाय कर." ते सांभळी चंद्रगुप्त तेनो उपाय करवा उत्सुक थयो. ते वखते चाणाक्ये नेत्रनी संज्ञाथी चंद्रगुप्तनो निषेध कर्यो; अने शिखामण आपी के—

तुल्यार्थं तुल्यसामर्थ्यं, मर्मज्ञं व्यवसायिनम् ।
अर्धराज्यहरं मित्रं, यो न हन्यात्स हन्यते ॥ १ ॥

" तुल्य संपत्तिवाळा, समान सामर्थ्यवाळा, गुप्त वात जाणनार, सरखो व्यापार करनार अने अर्धा राज्यनो भागीदार एवा मित्रने पण जे हणतो नथी ते पोतेज हणाय छे."

पछी विषथी व्याप्त थयेलो ते पर्वत तरतज मृत्यु पाम्यो, एटले तेनुं राज्य पण चंद्रगुप्तने आधीन थयुं.

हवे चंद्रगुप्तना राज्यमां नंदना माणसो चोरी करवा लाग्या; तेथी चाणाक्य कोइ बीजा रक्षक (कोटवाळ)नी शोध करवा लाग्यो. शोधतां शोधतां ते नलद नामना तंतुवायने घेर गयो. ते वखते तंतुवाय मकोडाना बीलमां अग्नि नांखतो हतो. ते जोइने चाणाक्ये तेने पूछयुं के "आ तुं शुं करे छे ?" कुविंदे जवाब आप्यो के " आ दुष्ट मकोडा मारा पुत्रने डंखे छे, माटे सर्व मकोडानो उच्छेद करवा माटे तेना बीलमां हुं अग्नि मूकुं छुं." आ प्रमाणे ते कुविंदनी वाणीथी तेने उद्यमी जाणीने चंद्रगुप्त पासे तेने पुरना अध्यक्षनी जग्या अपावी; एटले मौर्य वंशनुं साम्राज्य कंटक (शत्रु) रहित थयुं.

एकदा "चंद्रगुप्त पासे धन नथी" एम जाणीने चाणाक्ये पुरना लोकोनी साथे मद्यपाननी गोष्ठी करी. मदिराना आवेशथी पुरना लोको उन्मत्त थइने नाच करवा लाग्या अने पडवा लाग्या. ते वखते अवसरने जाणनार चाणाक्य पण गांडो बनीने बोल्यो के "मारे धातुनां रंगेलां बे वस्त्रो छे, त्रिदंड छे, अने सुवर्णनी कुंडी छे, तेमज राजा मारे आधीन छे; माटे मारा नामनी झाझ पखाज वगाडो." ते सांभळीने झाझ वगाडनाराओए चाणाक्य मंत्रीना नामनी झाझ वगाडी. ते सांभळीने एक गृहस्थ पुरुष मदिराना उन्मत्तपणाथी हाथ उंचो करीने कोइने पण नही कहेली एवी पोतानी लक्ष्मीनुं वर्णन करतां कह्युं के "अरे ! एक हजार योजन सुधी कोइ शेठ चाले तेने पगले पगले लाख लाख द्रव्य आपुं, तेटला धननो हुं स्वामी छुं, माटे मारा नामनुं ढोलकुं वगाडो."

ते सांभळीने 'हुं पहेलो बोलुं' 'हुं पहेलो बोलुं' एवी चडसाचडसीथी

बीजो बोल्यो के "एक आढक तलने वावीए, अने ते सारी रीते पाळीने तेमांथी जेटला तल नीपजे तेटला लक्ष दीनार मारा घरमां छे; तेथी मारा नामनुं ढोलकुं वगाडो."

त्रीजो बोल्यो के "वर्षाऋतुनी पहेली वृष्टिथी गिरिनी नदीमां जेटलुं पूर आवे, ते पूरने एक दिवसना माखणथी पाळ बांधीने हुं रोकी शकुं तेटलुं माखण दररोज मारे त्यां थाय छे; माटे मारा नामनुं ढोलकुं वगाडो."

चोथो बोल्यो के "मारे घेर एटला बधा अश्वो छे के एक दिवसेज उत्पन्न थयेला वछेरानी केशवाळीथी आखुं नगर वींटाइ जाय; माटे मारा नामनुं ढोलकुं वगाडो."

पांचमो बोल्यो के "मारा घरमां एक शाली (डांगर) नो दाणो एवो छे के ते जूदी जूदी जातनी शालीना बीजोने उत्पन्न करे छे, अने बीजो शालीनो दाणो एवो छे के तेने वारंवार लणीए छतां वारंवार उग्याज करे छे. आ बे रत्नो मारे घेर छे; माटे मारा नामनुं ढोलकुं वगाडो."

आ प्रमाणे मद्यना आवेशथी सर्व जनोए पोतानी समृद्धि प्रगट करी. कह्युं छे के—

कुविअस्स आउरस्स य, वसणपत्तस्स रागरत्तस्स ।
मत्तस्स मरंतस्स य, सब्भावा पायडा हुंति ॥ १ ॥

भावार्थ—" कोपमां आवेलो, महा व्याधिवाळो (आतुर), दुःखमां पडेलो, रागमां आसक्त थयेलो, उन्मत्त थयेलो अने मरवा तैयार थयेलो—आटला माणसो पोतानी सत्य वात प्रगट करे छे."

पछी चाणाक्य मंत्रीए सर्व स्वस्थ थया त्यारे तेमनी पासेथी योग्यता प्रमाणे थोडुं थोडुं धन लीधुं. त्यारपछी फरीथी लोकोनुं धन लेवा माटे तेणे दिव्य पासा बनाव्या. पछी सोनामहोरोनो थाळ भरीने ते चौटामां लइ जइ माणसो प्रत्ये बोल्यो के " जे माणस मने द्यूतमां जीते तेने आ सर्व महोरो आपी दउं, अने जो हुं जीतुं तो मात्र एकज सोनामहोर लउं." ते सांभळीने लोभने आधीन थयेला लोको तेनी साथे रमवा लाग्या, परंतु द्यूतक्रीडामां हुंशी-

आर एवो कोइ पण माणस ते मंत्रीने जीती शक्यो नहीं. संपत्तिना पाशरूप अने पोतानी इच्छानुसार पडनारा पासाना प्रभावथी लोकोने जीतीने चाणाक्य मंत्रीए चंद्रगुप्तनो भंडार सुवर्णथी भरी दीधो.

" कदाच दिव्य प्रभाव विगेरे बळथी कोइ माणस आ चाणाक्य जेवा मंत्रीने पण जीती शके, परंतु जे माणस प्रमादथी मनुष्यजन्मने हारी जाय ते फरीथी मनुष्यभवने पामी शकतो नथी."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ त्रयोविंशतितमस्तंभस्य चत्वारिंशदधिकत्रिशततमः प्रबंधः ॥ ३४० ॥

व्याख्यान ३४१ मुं.

औत्पातिकी बुद्धि विषे.

औत्पत्तिक्यादिबुद्धिज्ञो, रोहको जतनासु यत् ।
महामान्योऽभूत्तथा धार्यो, धर्मवद्भिर्गुणोत्तरः ॥ १ ॥

भावार्थ—" औत्पातिकी विगेरे बुद्धिने जाणनार रोहक जेम लोकोमां अति मान्य थयो तेम धर्मी माणसोए ते श्रेष्ठ गुणने धारण करवो."

रोहकनी कथा.

अवन्तीनगरीनी पासे नट नामना गाममां भरत नामे एक नट रहेतो हतो. तेनी पहेली स्त्री मरण पामी हती, पण ते स्त्रीथी उत्पन्न थयेलो औत्पातिकी बुद्धिवाळो रोहक नामे एक पुत्र हतो. भरत बीजी स्त्री साथे परण्यो हतो. ते स्त्री रोहकने खावा पीवानुं बराबर आपती नहीं; तेथी एक वखत रोहके तेने कह्युं के " हे मा! तुं मने सारी रीते राखती नथी, तेनुं फळ हुं तने बतावीश." त्यारे ते बोली के " हे शोकना पुत्र! तुं मने शुं करवानो हतो?" ते बोल्यो के " हुं

एवुं करीश के जेथी तुं मारा पगमां पडीश." आम कह्या छतां पण ते रोहकने गणकारती नहीं. एक दिवस रात्रे रोहके एकदम उठीने तेना पिताने कह्युं के "रे रे पिता! आ कोइ पुरुष आपणा घरमांथी नीकळीने नासी जाय छे, जुओ!" ते सांभळीने भरते शंका लावीने विचार्युं के "जरुर मारी स्त्री कुलटा छे." एम वहेम लावीने ते तेनापर प्रीतिरहित थयो. तेनी साथे बोलवुं पण बंध कर्युं; तेथी ते स्त्रीए 'आ रोहकनुं काम छे' एम जाणीने पुत्रने कह्युं के "हे पुत्र! आ तें शुं कर्युं के जेथी तारा पिता एकदम माराथी पराङ्मुख थया? हे पुत्र! मारो अपराध क्षमा कर." रोहक बोल्यो के "त्यारे ठीक छे, हवे तुं खेद करीश नहीं, हुं पाछुं ठेकाणे लावीश." पछी ते स्त्री रोहकनी मरजी बराबर साचववा लागी. पछी एक दिवस रात्रे तेना पिता चांदनीमां बेठा हता, ते वखते तेनी शंका दूर करवा माटे रोहके बाळचेष्टाथी पोताना शरीरनी छायाने आंगळीवती बतावीने पिताने कह्युं के "हे पिता! आ कोइ माणस जाय छे, जुओ!" ते सांभळीने भरते हाथमां खड्ग लइने पूछ्युं के "अरे क्यां जाय छे? बताव." त्यारे रोहके आंगळीवडे पोतानी छाया बतावीने कह्युं के "आ रह्यो, में तेने रोकी राख्यो छे." ते जोइने भरते विचार्युं के "खरेखर, पहेलां पण आवोज माणस तेणे दीठो हशे; तेथी में मारी सुशीळ प्रियापर शंका करी ते ठीक कर्युं नहीं." एम निश्चय करीने ते पाछो पोतानी स्त्री पर प्रेमी थयो. पण रोहके विचार्युं के "में मारी अपर मानुं अप्रिय कर्युं छे, तेथी कोइक वखत ते मने विष विगेरेथी मारी नांखशे, माटे तेनाथी चेतता रहेवुं." एम विचारीने ते हमेशां पोताना पितानी साथेज जमवा लाग्यो.

एकदा रोहक तेना पितानी साथे अवंतीनगरीए गयो, ते नगरीनी शोभा जोइने ते विस्मय पाम्यो. पछी पितानी साथे घेर जवा ते नगरी बहार नीकळ्यो. बहार आवतां कांइ चीज भूली जवाथी रोहकने त्यां क्षिप्रानदीने कांठे मूकीने भरत पाछो नगरीमां गयो. रोहके नदीनी वालुकामां बेठा बेठा किल्ला सहित आखी अवन्तीनगरी आळेखी. तेवामां अश्व उपर चढीने तेज नगरीनो राजा त्यां आव्यो. ते रोहके चित्रेली नगरीनी वच्चे थइने चालवा लाग्यो, एटले रोहके तेने कह्युं के "हे राजपुत्र! आ मार्गे न चालो." राजाए तेनुं कारण पूछ्युं. त्यारे ते बोल्यो के "अरे! आ राजदरबारने तमे जोता नथी?" राजाए नीचे उतरीने

आखी नगरी यथार्थ चित्रेली जोइने पूछ्युं के "रे बाळक! पहेलां तें आ नगरी जोइ हती, के आजेज प्रथम जोइ?" ते बोल्यो के "ना, में कोइ वखत जोइ नथी, मात्र आजेज नटगामथी अहीं आव्यो छुं." ते सांभळीने राजाए आश्चर्य पामीने विचार्युं के "अहो! आ बाळकनी बुद्धि केवी तीव्र छे?" पछी राजाए तेनुं नाम पूछ्युं. त्यारे ते बोल्यो के "मारुं नाम रोहक छे." तेवामां रोहकनो पिता गाममांथी आव्यो, एटले तेनी साथे रोहक पोताने गाम गयो.

अहीं राजाए विचार्युं के "मारे चारसो ने नवाणुं मंत्रीओ छे; परंतु ते सर्वनी बुद्धि एकज मंत्रीमां होय एवो एक मंत्री जोइए, जेथी राज्यनुं तेज वृद्धि पामे." एम विचारीने रोहकनी परीक्षा करवा माटे राजाए नटगामना मुख्य माणसोने उद्देशीने हुकम कर्यो के "तमारा गामनी बहार एक मोटी शिला छे, ते शिलाने उपाड्या विनाज राजाने बेसवा योग्य एक मंडप करी तेनुं ढांकण ते शिलानुं करो." आ प्रमाणे राजानी आज्ञा सांभळीने सर्व लोको अनेक प्रकारनी चिंता करवा लाग्या. विचार करतां मध्याह्न समय थयो; तेवामां रोहके आवीने तेना पिताने कह्युं के "हे पिता! मने बहु भूख लागी छे, तेथी भोजन करवा माटे घेर चालो." भरत बोल्यो के "हे वत्स! तुं तो निश्चिंत छे, गामना कष्टने तुं कांइ जाणतो नथी." रोहक बोल्यो के "शुं कष्ट छे?" त्यारे भरते राजानी आज्ञा कही देखाडी. ते सांभळीने रोहक बोल्यो के "चिंता न करो, तमे राजाने योग्य मंडप करवा माटे ते शिलानी नीचे खोदो. पछी ज्यां ज्यां घटे त्यां त्यां तेनी नीचे थांभलाओ गोठवो, अने ते शिलाने उपाड्या विनाज भोंयरानी जेम फरती भींत विगेरे करो." ते सांभळीने सर्व लोको हर्ष पामी जमवा उठ्या. पछी भोजन करीने रोहकना कहेवा प्रमाणे मंडप तैयार कर्यो. राजा पण ते मंडपने जोइने प्रसन्न थयो. पछी तेणे गामना लोकोने पूछ्युं के "आ कोनी बुद्धिथी मंडप कर्यो?" लोको बोल्या के "भरतना पुत्र रोहकनी बुद्धिथी."

एकदा राजाए ते गाममां एक मेंढो मोकलीने हुकम कर्यो के "आ मेंढो अत्यारे जेटलो तोलमां छे तेटलोज पंदर दिवसे पाछो आपवो. तोलमां जरा पण न्यूनाधिक थवो न जोइए." ए प्रमाणे राजानो निर्देश सांभळीने सर्वे जनो गाम बहार सभा करी एकठा थया. पछी रोहकने बोलावीने राजानो हुकम कही बताव्यो. त्यारे रोहक बोल्यो के "एक वरु पकडी लावीने तेनी पासे आ मेंढाने

बांधवो, अने तेने सारो खोराक आपी पुष्ट करवो." ते सांभळीने लोकोए ते प्रमाणे कर्युं. पंदर दिवसे ते मेंढो राजाने पाछो सोंप्यो. राजाए तेने तोळ्यो तो तेटलोज तोलमां थयो. पछी राजाए एक कूकडो मोकल्यो अने कहेवराव्युं के "बीजा कूकडा विना आ कूकडाने युद्ध करावबुं." ते सांभळीने लोकोए रोहकना कहेवाथी ते कूकडानी सामे एक आरीसो मूक्यो. तेमां ते कूकडाए पोतानुं प्रतिबिंब जोइने बीजो कूकडो छे एम जाणी ते प्रतिबिंब साथे अहंकारथी युद्ध करवा मांडयुं. ते वात राजाने चरपुरुषोए कही. ते सांभळी राजा खुशी थयो. पछी राजाए आज्ञा करी के "नदीनी रेतीनां दोरडां वणीने अहीं मोकलावो." त्यारे रोहकना कहेवाथी लोकोए प्रत्युत्तर कहेवराव्यो के "हे राजा! तमारा भंडारमां रेतीनां जूनां दोरडां पड्यां हशे, तेमांथी एक दोरडुं नमुना माटे मोकलो के जेथी तेने अनुसारे अमे दोरडां वणीने मोकलीए." ते सांभळीने राजा मौन थइ गयो. एकदा राजाए मरवानी तैयारीवाळो, रोगी अने वृद्ध हाथी नट गाममां मोकलावीने कहेवराव्युं के "आ हाथी मरी गयो एम कह्या विना हमेशां तेना खबर मने मोकलवा." अहीं तो तेज रात्रे हाथी मृत्यु पाम्यो. प्रातःकाळे राजाने केवी रीते खबर आपवा तेनो विचार न सूझवाथी लोकोए रोहकने पूछ्युं; एटले तेना कहेवा प्रमाणे गामना अधिपतिए राजा पासे जइ निवेदन कर्युं के "हे देव! आजे हाथी बेसतो नथी, उठतो नथी, आहार के नीहार करतो नथी, अने बीजी कांइ पण चेष्टा करतो नथी." राजाए पूछ्युं के "अरे, शुं हाथी मरी गयो?" तेणे कह्युं के "हे राजा! आप एवुं बोलो छो, अमे एम बोलता नथी." ते सांभळीने राजा मौन थयो. पछी फरीथी राजाए नटगाममां हुकम मोकल्यो के "तमारा गामना कूवानुं पाणी घणुं सारुं छे, माटे ते कूवो अहीं जलदीथी मोकलो." त्यारे लोकोए रोहकनी बुद्धिथी राजाने विज्ञप्ति करी के "हे देव! गामडीओ कूवो स्वभावथीज बीकण होय छे, माटे नगरनो मार्ग बतावनार एक अहींनो कूवो त्यां मोकलो, के जेथी ते कूवानी साथे अमारो गामडीओ कूवो आवी शके." ते सांभळीने राजा मौन रह्यो. अन्यदा राजाए आदेश कर्यो के "अग्निना संबंध विना खीर रांधीने मोकलो." त्यारे लोकोना पूछवाथी रोहके तेमने कह्युं के "चोखाने घणा जळमां पलाळीने सूर्यनां किरणथी तपावी करीष अने पलाल विगेरे घासनी बाफमां ते चोखा ने दूधथी भरेली तपेली मूको; जेथी खीर थइ जशे." लोकोए ते प्रमाणे करीने खीर राजाने मोकलावी. ते जोइने राजा अति

विस्मय पाम्यो. पछी रोहकनी बुद्धिनुं अतिशयपणुं जाणीने तेने पोतानी पासे आववानी आज्ञा करवा साथे कहेवराव्युं के " शुक्ल पक्षमां के कृष्ण पक्षमां आववुं नहीं, रात्रे अथवा दिवसे आववुं नहीं, छायामां अथवा तडके आववुं नहीं, अधर रहीने अथवा पगे चालीने आववुं नहीं, मार्गे के उन्मार्गे आववुं नहीं, अने स्नान करीने अथवा स्नान कर्या विना आववुं नहीं. " आ प्रमाणेनो हुकम सांभळीने रोहके कंठ सुधी स्नान कर्युं, अने गाडाना पैडांना बे चीलाना मध्य भागने रस्ते, नाना घेटा उपर बेसीने माथे चालणीनुं छत्र धारण करीने, संध्या समये अमावास्या उपरांत पडवाने दिवसे ते राजानी पासे गयो. त्यां " खाली हाथे राजानुं, देवनुं अने गुरुनुं दर्शन करवुं नहीं. " एवी लोकश्रुति जाणीने माटीनो एक पिंड हाथमां राखीने राजाने प्रणाम करी ते पिंड राजानी पासे भेट तरीके धर्यो. राजाए पूछयुं के " हे रोहक ! आ तुं शुं लाव्यो ? " तेणे जवाब आप्यो के " हे देव ! तमे पृथ्वीना पति छो, तेथी हुं पृथ्वी लाव्यो छुं. " ते सांभळीने राजा प्रसन्न थयो. ते रात्रे राजाए रोहकने पोतानी पासे सुवाड्यो. रात्रीनो पहेलो प्रहर गयो त्यारे राजाए तेने बोलाव्यो के " अरे रोहक ! तुं जागे छे के उंघे छे ? " ते बोल्यो के "देव ! जागुं छुं." राजाए पूछयुं के "शुं विचार करे छे ? " रोहक बोल्यो के " हे देव ! हुं एवो विचार करतो हतो के—पीपळाना पांदडानुं डींट मोटुं के तेनी शिखा मोटी ? " ते सांभळीने राजाने पण संशय थयो. तेथी तेणे कह्युं के "तें ठीक विचार कर्यो, पण तेनो निर्णय शो कर्यो ?" ते बोल्यो के " ज्यां सुधी शिखानो अग्र भाग सूकाइ न जाय त्यां सुधी बन्ने सरखां होय छे." पछी बीजो प्रहर पूर्ण थतां राजाए पूछयुं के " अरे ! जागे छे के उंघे छे?" रोहक बोल्यो के "देव ! जागुं छुं." राजाए पूछयुं के "शुं विचार करे छे ? " त्यारे ते बोल्यो के "हे देव ! बकरीना पेटमांथी जाणे सराणे उतारेली होय तेवी तेनी लींडीओ बराबर गोळ थइने बहार नीकळे छे, तेनुं शुं कारण ? " राजाए रोहकनेज तेनुं कारण पूछयुं, त्यारे ते बोल्यो के " बकरीना उदरमां संवर्तक नामनो वायु रहे छे, तेना प्रभावथी लींडीओ एवी गोळ थाय छे. " पछी रोहक सुइ गयो. राजाए त्रीजे प्रहरे रोहकने बोलाव्यो के "अरे जागे छे के उंघे छे?" ते बोल्यो के " जागुं छुं." राजाए पूछयुं के " शुं विचार करे छे?" ते बोल्यो के " हे देव ! खीसकोलीनुं जेटलुं मोटुं पूंछडुं छे तेटलुंज तेनुं शरीर पण हशे के कांइ न्यूनाधिक हशे ?" राजाए तेनो निर्णय तेनेज पूछयो, त्यारे ते

बोल्यो के "हे देव! बन्ने सरखां होय छे." पछी रोहक सूइ गयो. राजा प्रातः-काळे जाग्यो, त्यारे रोहकने बोलाव्यो, पण निद्रावश होवाथी तेणे जवाब आप्यो नहीं. त्यारे राजाए क्रीडाथी रोहकने जराक सोटी लगाडी, एटले रोहक जागी गयो. राजाए पूछ्युं के "अरे केम उंघे छे के?" ते बोल्यो के "देव जागुं छुं." राजाए कह्युं "के त्यारे केम घणीवारे बोल्यो?" रोहके जवाब आप्यो के "हे देव! हुं विचार करतो हतो के राजा केटला पुरुषथी उत्पन्न थयो हशे? (राजाने केटला बाप हशे?)" ते सांभळीने राजा लज्जा पामीने जरावार मौन रह्यो. पछी थोडीवारे पूछ्युं के "अरे, बोल! हुं केटला पुरुषथी उत्पन्न थयो छुं?" रोहक बोल्यो के "पांच पुरुषथी." फरीथी राजाए पूछ्युं के "कया कया पांचथी?" ते बोल्यो के "एकतो कुबेर भंडारीथी, केमके कुबेर भंडारीना जेवी तमारामां दानशक्ति छे. बीजा चंडाळथी, केमके शत्रुना समूह प्रत्ये तमे चंडाळनी जेवो कोप करो छो. त्रीजा धोबीथी, केमके जेम धोबी वस्त्र नीचोवीने पाणी काढी नांखे छे तेम तमे पण माणसोने नीचोवीने तेनुं धन लइ ल्यो छो. चोथा वींछीथी, केमके तमे भरनिद्रामां सूतेला बाळकने पण निर्दय वींछीनी जेम सोटी मारीने पीडा उपजावो छो, अने पांचमा तमारा पिताथी तमे उत्पन्न थया छो, के जेणे राज्यमां अने न्यायमां तमने स्थापन कर्या छे." ते सांभळीने राजा बहु आश्चर्य पाम्यो. पछी राजाए पोतानी मा पासे एकांतमां जइने नमन करी पूछ्युं के "हे माता! कहो, हुं केटला पुरुषथी उत्पन्न थयो छुं?" माताए कह्युं के "हे वत्स! ए तुं शुं पूछे छे? तारा पिताथीज तुं उत्पन्न थयो छे." त्यारे राजाए रोहके कहेली वात करीने कह्युं के "हे माता! ते रोहक प्राये खोटी बुद्धिवाळो नथी, माटे सत्य कहो." एम बहु आग्रहथी राजाए पूछ्युं, त्यारे तेनी माताए कह्युं के "हे वत्स! ज्यारे तुं गर्भमां हतो त्यारे एक दिवस हुं गाम बहार उद्यानमां कुबेर देवनी पूजा करवा गइ हती. ते प्रतिमानुं अत्यंत स्वरूप जोइने में तेनो हाथवडे स्पर्श कर्यो, तेथी मने काम व्याप्त थवाथी भोगनी इच्छा थइ हती. त्यांथी पाछा आवतां मार्गमां एक स्वरूपवान चंडाळने जोइने तेनी साथे भोगनी इच्छा थइ हती. आगळ चालतां एक रूपवंत धोबीने जोइने पण तेवीज इच्छा थइ हती. पछी घेर आवी त्यारे उत्सव होवाथी खावाने माटे लोटनो वींछी कर्यो हतो, में तेने हाथमां लीधो. तेना स्पर्शथी कामोद्दीपन थवाने लीधे तेनी साथे पण भोगनी इच्छा

थइ हती. ए प्रमाणे इच्छा मात्रथी तारे बीजा चार पिता थया हता, बाकी परमार्थथी तो एक तारो पिताज सत्य पिता छे." ते सांभळीने राजा माताने नमन करीने रोहकनी बुद्धिथी विस्मय पाम्यो, अने तेने सर्व मंत्रीओमां प्रथम पद आप्युं.

आ कथानो उपनय एवो छे के "पूर्वे पोते नहीं जोयेलुं, नहीं सांभळेलुं अने मनमां पण नहीं चिंतवेलुं गूढ कार्य पण बुद्धिना प्रभावथी जाणी-समजी शकाय छे. तेवी रीतेज धर्मकार्यमां पण सूक्ष्म अर्थने ग्रहण करवामां बुद्धिनो उपयोग करवो; जेथी आ लोकमां ने परलोकमां अत्यंत हितकारी थाय."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ त्रयोविंशतितमस्तंभस्य
एकचत्वारिंशदधिकत्रिशततमः प्रबंधः ॥ ३४१ ॥

व्याख्यान ३४२ मुं.

बे प्रकारना आयुष्य.

वर्तमानभवायुष्कं, द्विविधं तच्च कीर्तितम् ।
सोपक्रमं भवेदाद्यं, द्वितीयं निरुपक्रमम् ॥ १ ॥

भावार्थ—"वर्तमान भवनुं आयुष्य बे प्रकारनुं कहेलुं छे, तेमां पहेलुं सोपक्रम अने बीजुं निरुपक्रम."

घणा काळ सुधी भोगववा लायक आयुष्य पण आगळ कहेवामां आवशे एवा अध्यवसानादिक उपक्रमोथी थोडा काळमां भोगवी लेवाय ते सोपक्रम आयुष्य कहेवाय छे. जेम लांबी करेली दोरीने एक छेडे अग्नि सळगाव्यो होय तो ते दोरी अनुक्रमे लांबी मुदते बळी रहे छे, अने तेज दोरीने एकठी करीने तेमां अग्नि

मूक्यो होय तो ते एकदम जलदीथी बळी जाय छे; तेवीज रीते सोपक्रम आयुष्य थोडा काळमां पूरुं थइ जाय छे, अने जे आयुष्य तेना बंध समये गाढ निकाचित बांध्युं होय ते अनुक्रमेज भोगवाय छे. सेंकडो उपक्रमथी पण ते क्षीण थइ शकतुं नथी. तेवुं आयुष्य निरुपक्रम कहेवाय छे.

हवे उपक्रम कहे छे—पोतानाज मनमां उत्पन्न थयेला अध्यवसायादिक अने बीजाए उत्पन्न करेला विष तथा शस्त्रादिकथी जे पोताना जीवितनो अंत आवे ते सर्व उपक्रम कहेवाय छे. पूर्वसूरिओए ते उपक्रमना अध्यवसाय विगेरे सात भेदो कहेला छे, ते आ प्रमाणे—

अज्झवसाण निमित्ते, आहारे वेयणा पराघाए ।
फासे आणापाणू, सत्तविहं झिज्झए आउ ॥ १ ॥

भावार्थ—" अध्यवसान, निमित्त, आहार, वेदना, पराघात, स्पर्श अने श्वासोश्वास ए सात प्रकारे आयुष्यनो क्षय थाय छे. "

विवेचन – अध्यवसानना त्रण प्रकार छे—राग, भय अने स्नेह. तेमां रागनो अध्यवसान पण मरणनो हेतु थाय छे. जेम कोइ एक अति रूपवान युवान मुसाफर अरण्यमां तृषातुर थवाथी प्रपा (पाणीना परब) ने स्थाने गयो. त्यां पाणी पानारी स्त्रीए जळ लावीने तेने पायुं. पछी मुसाफर पेली स्त्रीए ना कह्या छतां पण त्यांथी चालतो थयो. ते स्त्री तेनी सामुंज जोइ रही, अने ज्यारे ते मुसाफर अदृश्य थयो, त्यारे ते स्त्री तेनी उपरना उत्कट रागना अध्यवसायथी तरतज मृत्यु पामी.

भयना अध्यवसायथी कृष्ण वासुदेवने जोइने सोमिल ब्राह्मण हृदयस्फोट थवावडे मरी गयो: तेमज मृगावतीनो स्वामी शतानिक राजा चंडप्रद्योत राजाने सैन्य सहित आवतो सांभळीने तेना भयथी मरण पाम्यो.

स्नेहना अध्यवसायथी मरण पामेलानुं दृष्टांत ए छे के " तुरंगपुरमां नरवर नामे राजा हतो. तेने भानु नामे मंत्री हतो. ते मंत्रीने सरस्वती नामनी पत्नी हती. ते दंपतीने परस्पर अत्यंत स्नेह हतो, ते वात राजाना सांभळवामां आववाथी तेनी परीक्षा करवानो राजाने विचार थयो. एकदा राजा मंत्री सहित मृगया रमवा माटे वनमां गयो, त्यां कोइ प्राणीनुं रुधिर मंत्रीना वस्त्र तथा अश्वपर ल-

गाडीने राजाए ते अश्व गाममां तेने घेर मोकली दीधो. पोताना प्रिय स्वामी विना तेनां वस्त्र तथा अश्वने रुधिरवाळां जोइने " हाय ! हाय ! मृगया रमवा गयेला मारा पतिने कोइ सिंहादिके मारी नांख्या " एम धारीने सरस्वती जाणे वज्रथी हणायली होय तेम भूमिपर पडीने मरण पामी. ते वात जाणीने राजाने अत्यंत खेद थयो. पछी ते भानुमंत्री प्रियावियोगना दुःखथी योगी थइने गंगा किनारे गयो. ते सरस्वती मृत्यु पामीने गंगानदीने किनारे आवेला महारथपुरना राजानी पुत्री थइ. भानु मंत्री बार वर्ष व्यतीत थया पछी भिक्षाने माटे अटन करतो ते राजमंदिरे गयो. त्यां ते कन्या तेने जोइने भिक्षा लइ तेने आपवा आवी पण ते मंत्रीना दर्शनथी जाणे चित्रमां आळेखेली होय तेम स्तब्ध थइ गइ. तेना हाथमां रहेलुं अन्न कागडा लइ गया, पण ते योगीने आपी शकी नहीं. योगी तो कांइक जोइ विचारीने अन्यत्र चाल्यो गयो. पछी ते कन्याए पोतानी बे सखीओ साथे संकेत कर्यो के " आ भवमां तो ए योगीज मारा पति छे, बीजा कोइने हुं इच्छती नथी. " ते वृत्तांत राजाना जाणवामां आववाथी तेणे सर्व योगीओने एकठा कर्या, तेमांथी ते कन्याए ते मंत्रीयोगीने ओळखी काढ्यो. पछी ते कन्याने जातिस्मरण थवाथी तेणे पोताना पूर्व भवनी वात कही बतावी. ते सांभळीने राजाना कहेवाथी योगीए ते कन्यानो स्वीकार कर्यो; ते वखते अवसरने जाणनार पंडितो बोल्या के—

भानुश्च मंत्री दयिता सरस्वती, मृत्युं गता सा नृपकैतवेन ।
गंगागतस्तां पुनरेव लेभे, जीवन्नरो भद्रशतानि पश्यति ॥ १ ॥

भावार्थ—" भानुमंत्रीने सरस्वती नामे स्त्री हती. ते राजाना कपटथी मृत्यु पामी हती. ते स्त्रीने गंगाकिनारे गयेलो मंत्री फरीथी पण पाम्यो, माटे जीवतो माणस सेंकडो कल्याणो जुए छे. "

आ दृष्टांत स्त्रीने आश्रीने कह्युं. हवे पुरुषने आश्रीने बीजुं दृष्टांत आ प्रमाणे छे-"कोइ वणिकने रूपवती युवती हती. ते बन्नेने परस्पर गाढ स्नेह हतो. एकदा व्यापारने माटे परदेश जवानी इच्छाथी तेणे स्त्रीनी रजा मागी. ते सांभळीनेज ते स्त्री मूर्छा पामी. तेने शीत उपचारवडे सज्ज करी, त्यारे तेणे पतिने कह्युं के " जो तमारे अवश्य परदेश जवुंज होय तो तमारी एक प्रतिमा करीने मने

आपो, जेथी तेने आधारे हुं दिवसो निर्गमन करुं " ते सांभळीने ते श्रेष्ठी पोतानी मूर्त्ति करीने प्रियाने आपी देशांतर गयो. ते स्त्री ते प्रतिमानुं निरंतर देवथी पण अधिक आराधन करवा लागी. एकदा ते गाममां चोतरफ अग्निनो उपद्रव थयो, ते वखते ते स्त्री पोताना पतिनी प्रतिमा हाथमां राखीने स्थिर बेसी रही. पोतानुं शरीर बळीने भस्म थइ गयुं, तोपण तेणे हाथमांथी प्रतिमा मूकी नहीं. केटलाएक दिवसो पछी ते वणिक परदेशथी घेर आव्यो. ते वखते पोतानी प्रियाने जोइ नहीं, एटले तेणे तेनी सखीने पूछयुं के—

*नवसतशसिसमवदनि, हरहाराहारवाहनानयणि ।
जलसुतरिपुगतिगमणि, सा सुंदरि कत्थ हे सयणि ॥१॥

" हे सखी ! सोळ कळायुक्त चंद्रना जेवा मुखवाळी. मृग सरखां नेत्रवाळी अने हंस जेवी गतिवाळी मारी मनोहर प्रिया क्यां छे ? " सखीए जवाब आप्यो के " हे सखीना नाथ ! सांभळो. आ नगरमां चोतरफथी अग्नि लाग्यो हतो, ते वखते भयने लीधे तमारी मूर्त्तिने झालीने ते बेसी रही हती. तेमां तेनुं शरीर बळीने भस्म थइ गयुं, एटले तेना प्राण छुट्या; पण तमारी मूर्त्तिने वळगेला तेना पाणि एटले हाथ छुट्या नहीं. " आ प्रमाणे सखीनी वाणी सांभळतांज ते वणिकना प्राण चाल्या गया.

अहीं कोइने शंका थाय के राग अने स्नेहमां शो तफावत छे ? तो तेनो जवाब ए छे के रूपादिक जोवाथी जे प्रीति उत्पन्न थाय ते राग; अने सामान्य रीते स्त्रीपुत्रादिक उपर जे प्रीति थाय ते स्नेह कहेवाय छे.

आ प्रमाणे त्रण प्रकारना अध्यवसायथी आयुष्यनो क्षय थाय छे (१). बीजुं निमित्तथी एटले दंड, शस्त्र, रज्जु, अग्नि, जळमां पतन, मूत्र पूरीषनो रोध अने विषनुं भक्षण विगेरे कारणोथी पण आयुष्यनो क्षय थाय छे (२). आहारथी एटले घणुं खावाथी, थोडुं खावाथी अथवा बिलकुल आहार नहीं मळवाथी आयुष्यनो क्षय थाय छे. संप्रति राजाना पूर्व भवनो जीव द्रमक के जे साधु थयो हतो ते दीक्षानेज दिवसे अति आहारथी मृत्यु पाम्यो हतो (३). वेदनाथी एटले

*नव ने सात सोळ कळायुक्त चंद्र. हर एटले शीव, तेना हार सर्प, तेनो आहार पवन. तेनुं वाहन हरण. अने जळ एटले समुद्र तेना पुत्र मोती, तेना शत्रु-तेनो आहार करनार हंस. आ प्रमाणे अर्थ समजवो.

शूळ विगेरेथी तथा नेत्रादिकना व्याधिथी आयुष्यनो क्षय थाय छे (४). पराघातथी एटले भींत, भेखड विगेरे पडवाथी अथवा वीजळी विगेरेना पडवाथी आयुष्यनो क्षय थाय छे (५). स्पर्शथी एटले त्वक् विषादिना समुद्भावथी तथा सर्प विगेरेना स्पर्शथी (डंशथी) आयुष्यनो क्षय थाय छे. ब्रह्मदत्त चक्रीना मृत्यु पछी तेना पुत्रे चक्रीना स्त्रीरत्नने कह्युं के " मारी साथे भोगविलास कर. " त्यारे स्त्रीरत्ने कह्युं के "हे वत्स! मारो स्पर्श पण तुं सहन करी शकीश नहीं." ते वात तेणे साची मानी नहीं. त्यारे ते स्त्रीरत्ने एक अश्वने तेना पृष्टथी कटी सुधी स्पर्श कर्यो, एटले तरतज ते अश्व सर्व वीर्यना क्षयथी तत्काळ मृत्यु पाम्यो. एज प्रमाणे एक लोढाना पुरुषने स्पर्श कर्यो तो ते पण लय पामी गयो (गळी गयो) (६). श्वासोश्वासथी एटले दम विगेरेना व्याधिने लीधे घणा श्वासोश्वास लेवाथी अथवा श्वास रुंधावाथी आयुष्यनो क्षय थाय छे (७). आ सात प्रकारना उपक्रम सोपक्रमी आयुष्यवाळाने होय छे.

त्रेसठ शलाका पुरुष विगेरे उत्तम पुरुषो, चरम देहधारी,[1] असंख्याता वर्षना आयुष्यवाळा (जुगलीया) मनुष्य अने तिर्यंचो. देवताओ तथा नारकी जीवो निरुपक्रम आयुष्यवाळा होय छे. ते शिवाय बीजा सर्व जीवो सोपक्रम अने निरुपक्रम एवां बन्ने प्रकारना आयुष्यवाळा होय छे. अहीं कोइने शंका थाय के " स्कन्दकाचार्यना पांचसो शिष्यो तथा अर्णिकापुत्र आचार्य, झांझरिया मुनि विगेरे मुनिओ चरमशरीरी होवाथी निरुपक्रम आयुष्यवाळा होवा जोइए, छतां तेओ उपक्रमथी केम मृत्यु पाम्या ? " तेनो उत्तर ए छे के " ते मुनिओने जे जे उपक्रमो थया ते मात्र तेमने कष्टने अर्थे समजवा; आयुष्यना क्षयमां कारणभूत समजवा नहीं. तेमनुं आयुष्य तो पूर्णज थयुं हतुं, माटे तेमने निरुपक्रम आयुष्यवाळाज जाणवा. "

सोपक्रम आयुष्यवाळा जीवो पोताना आयुष्यने त्रीजे भागे, नवमे भागे के सत्तावीशमे भागे अथवा छेवट मरण वखते छेल्ला अंतर्मुहूर्ते आवता भवनुं आयुष्य बांधे छे. अहीं कोइ आचार्यो सत्तावीशमा भागथी उपर पण आवता भवना आयुष्यना बंधनी कल्पना करे छे, तेमज त्रण त्रण भागनी कल्पना पण छेल्ला अंतर्मुहूर्त सुधी करे छे.

---

1 तेज भवमां मोक्षे जवावाळा होवाथी छेल्लुंज शरीर धरवावाळा.

निरुपक्रम आयुष्यवाळा जीवोने माटे आयुष्यना बंधनो काळ एवो छे के देवताओ, नारकीओ तथा असंख्याता वर्षना आयुष्यवाळा तिर्यंच अने मनुष्यो (जुगलीको) पोतानुं आयुष्य छ मास बाकी रहे त्यारे आगामी भवनुं आयुष्य बांधे छे. ते शिवायना बीजा निरुपक्रम आयुष्यवाळा (चरमशरीरी शिवायना चक्रवर्ती, बळदेवादिक शलाका पुरुषो) जीवो पोताना आयुष्यने त्रीजे भागे अवश्य आगामी भवनुं आयुष्य बांधे छे.

अहीं सोपक्रम आयुष्यना विषय पर कोइ शिष्य प्रश्न करे छे के "जो कोइ पण कर्म तेमनो काळ प्राप्त थया विना भोगवाय, तो कृतनाश[1] अने[2] अकृतागम ए बंने दूषणो प्राप्त थशे; केमके पूर्वे घणी स्थितिवाळुं कर्म (आयुष्यकर्म) बांध्युं हतुं ते तेटली मुदत सुधी भोगवायुं नहीं माटे कृतनाश नामनो दोष आव्यो; तथा आत्माए अल्पस्थितिवाळुं कर्म (आयुष्यकर्म) बांध्युं नहोतुं ते भोगव्युं, माटे अकृतागम नामनो दोष प्राप्त थयो." आ प्रश्ननो गुरु जवाब आपे छे के "हे शिष्य ! मोटी स्थितिवाळा कर्मनो कांइ उपक्रम करीने नाश थतो नथी, परंतु अध्यवसाय विशेषथी ते कर्म उतावळे थोडी मुदतमां भोगवी लेवाय छे. अहीं युक्तिथी एम समजवानुं छे के सोपक्रम आयुष्यवाळा जीवो जेम घणा काळ सुधी भोगववा लायक आयुष्यकर्मने एकठुं करीने थोडा काळमां भोगवी ले छे तेम सर्व कर्मोने उपक्रम लागे छे; केमके प्रायः सारां माठां अनिकाचित एवां सर्व कर्मोनी शुभाशुभ परिणामादिना वशथी अपवर्तना थाय छे, तथा निकाचित कर्मोनी पण तीव्र तपवडे स्फुरणायमान थता शुभ परिणामना वशथी अपवर्तना थाय छे. ते विषे पूज्यपाद श्री जिनभद्रगणि क्षमाश्रमणे कह्युं छे के—

सव्वपगइणमेवं, परिणामवसादुवक्कमो होज्जा ॥
पायमनिकाइयाणं, तवसाओ निकाइयाणं पि ॥ १ ॥

भावार्थ—"प्राये करीने अनिकाचित एवो सर्व कर्मप्रकृतिनो एज प्रमाणे परिणामना वशथी उपक्रम थाय छे, अने निकाचित प्रकृतिनो पण उग्र तपथी उपक्रम थाय छे."

---

१ करेलानो नाश. २ नहि करेलानी प्राप्ति.

जेम घणा काळ सुधी चाले तेटलुं घणुं धान्य पण कोइ माणस भस्मक वातना व्याधिथी थोडा काळमांज खाइ जाय छे, एटले ते धान्यनी वर्तमान स्थितिनो नाश थइ गयो एम धारवुं नहीं; परंतु व्याधिना बळथी घणुं धान्य थोडा काळमां खवाइ गयुं; तेवीज रीते लांबी मुदत सुधी भोगववा लायक कर्म थोडी मुदतमां भोगवी लीधुं तेम जाणवुं; अथवा जेम आम्रफळ विगेरेने खाडामां नांखी उपर घास विगेरे ढांकी राखीए तो ते फल थोडी मुदतमां पाकी जाय छे, तेवी रीते तेवां अनिकाचित कर्म पण थोडी मुदतमां भोगवाइ जाय छे."

वळी शिष्य प्रश्न करे छे के "अपवर्तना करवाथी थोडा काळमां अथवा अपवर्तना न करे तो जेटली स्थितिवाळुं होय तेटला चिरकाळे पण जे कर्म बांध्युं होय ते सर्व जो आपना कहेवा प्रमाणे अवश्य भोगववुंज पडतुं होय तो प्रसन्नचंद्र विगेरेए सातमी नरकने योग्य कर्म बांध्युं हतुं, तेने तेवा प्रकारना दुःखविपाकनो भोग तो सांभळवामां आवतो नथी. ते तो शुभ भावथी थोडा काळमांज केवळज्ञान पाम्या छे, तो 'सर्व कर्म वेदवुंज पडे छे' एम जे आपे कह्युं ते व्यर्थ थशे."

आ प्रश्ननुं गुरुमहाराज समाधान आपे छे के "जे कर्म बांधेलुं छे ते कर्मप्रदेशथी तो सर्व जीवो अवश्य भोगवे छेज; पण रसना अनुभावथी तो कोइक कर्म भोगवाय छे, अने कोइक कर्म नथी पण भोगवातुं. तेनुं कारण ए छे के शुभ परिणामना वशथी ते कर्मना रसनी अपवर्तना (क्षय) थाय छे; तेथी प्रसन्नचंद्रादिके सातमी नरक योग्य कर्मोना प्रदेशो नीरस (रस विनाना) भोगव्या छे, पण विपाक उदयथी भोगव्या नथी."

वळी शिष्य कहे छे के "ज्यारे प्रसन्नचंद्रादिके जे कर्म रसवाळुं बांध्युं हतुं ते कर्मने नीरसपणे भोगव्युं, त्यारे तो पूर्वनीज जेम कृतनाश अने अकृतागम नामना बन्ने दोषो प्राप्त थया."

गुरु तेनो खुलासो आपे छे के—"तथाप्रकारना उत्तम परिणामथी जो कर्मना रस क्षय पामे तो तेमां शुं अनिष्ट थयुं ? जेम सूर्यना उग्र तापथी इक्षुना सांठामां रहेलो रस सुकाइ जाय, तो तेमां कृतनो नाश ने अकृतनो आगम शुं थयो ? हे बुद्धिमान् ! ते तुं कहे. वळी जो कदाच जे कर्म जेवी रीते बांध्युं ते कर्म तेवीज रीते अवश्य भोगववुं पडतुं होय, तो पापनो क्षय नहीं थतो होवाथी सर्व तपनो विधि व्यर्थ थशे, तेमज तेज भवमां सिद्धि पामनारा जीवोने पण कर्म अ-

वशेष रहेशे, एटले कोइनी पण मुक्ति थशे नहीं; माटे कोडाकोडी सागरोपमनी स्थितिवाळुं कर्म पण प्रदेशे करीने नीरसपणे भोगवाय छे एम मानवुं. वळी हे शिष्य ! असंख्य भवमां बांधेलुं भिन्न भिन्न गतिने आपनारुं कर्म ते भवे पण सत्तामां होय छे; तेथी जो सर्व कर्मनो विपाकवडेज अनुभव लेवो पडतो होय तो ते एक भवमां भिन्न भिन्न भवना अनुभवनो संभव थवो जोइए, परंतु तेम थतुं नथी. वळी औषधथी साध्य रोगनो जेम नाश थाय छे तेम जे कर्म बांधती वखते तेवा प्रकारना परिणामवडे बांध्युं होय ते कर्म उपक्रमथी साध्य थाय छे; अने असाध्य रोग जेम औषधथी जतो नथी तेम तेवा प्रकारना तीव्र अध्यवसाय (परिणाम) थी जे कर्म बांध्युं होय ते योग्य काळे विपाकवडे भोगववाथीज नाश पामे छे; केमके कर्मबंधना अध्यवसायस्थानको विचित्र छे, अने असंख्य लोकाकाशना प्रदेश प्रमाण छे. ते स्थानकोमां केटलांएक सोपक्रम कर्मने उत्पन्न करनारां छे, अने केटलांएक निरुपक्रम कर्मना बंधने उत्पन्न करनारां छे; तेथी जेवा अध्यवसायथी जे कर्म बांध्युं होय ते कर्म तेवी रीते भोगववुं पडे छे. आ प्रमाणे होवाथी तें कहेला दोषनो अहीं जरा पण अवकाश नथी. वळी जेम घणा शिष्यो एकज शास्त्र साथेज भणता होय तेमां बुद्धिनी तरतमताथी भेद पडे छे; तथा जेम अमुक योजन लांबा मार्गमां घणा माणसो एक साथे चाल्या होय छतां तेमनी गतिनी तरतमताथी जवाने स्थाने पहोंचवाना काळमां भेद देखाय छे (कोइ वहेला पहोंचे छे, कोइ विलंबे पहोंचे छे), तेवीज रीते एक सरखी स्थितिवाळुं कर्म घणा जीवोए बांध्युं होय, तेमां पण परिणामना भेदथी तेनो भोगकाळ भिन्न भिन्न थाय छे. लोकप्रकाशमां कह्युं छे के—

पिंडीभूतः पटः क्लिन्नश्चिरकालेन शुष्यति ।
प्रसारितः स एवाशु, तथा कर्माप्युपक्रमैः ॥ १ ॥

भावार्थ—" जेम भीनुं वस्त्र पिंडरूप करीने मूक्युं होय तो ते लांबी मुदते सूकाय छे, अने तेज वस्त्र लांबुं कर्युं होय तो जलदी सूकाइ जाय छे, तेवीज रीते कर्म पण उपक्रमोथी जलदी क्षय पामे छे. "

आ सर्व हकीकत उपरथी समजवानुं ए छे के जे भवमां प्रथम कहेला सात उपक्रमो निरंतर आयुष्यक्षयना हेतुरूप उपस्थित छे. अने तेथी ते आयुष्यनो

विश्वास नथी के ते क्यारे पूरुं थशे ? माटे कामादिकनो त्याग करीने एक धर्मज सारभूत छे एम समजी तेनुं अवलंबन ग्रहण करवुं, ए आ व्याख्याननुं गूढ रहस्य छे. ग्रंथकार कहे छे के—

यस्मिन्नायुषि सुस्नेहं, प्रत्यहं धार्यते नरः ।
प्रतिक्षणं क्षयं तस्य, मत्वा मा मुंच सन्मतिम् ॥ १ ॥

भावार्थ—"मनुष्य जे आयुष्यना उपर निरंतर स्नेह राखे छे ते आयुष्य प्रतिक्षणे क्षय पामे छे एम जाणीने हे भव्य प्राणी ! तुं सारी मतिने छोडीश नहीं."

आ संबंधमां पूर्वाचार्ये पण कह्युं छे के—

क्षणयामदिवसमासच्छलेन, गच्छन्ति जीवितदलानि ।
इति विद्वानपि कथमिह, गच्छसि निद्रावशं रात्रौ ॥ १ ॥

भावार्थ—"क्षण, प्रहर, दिवस अने मासना मिषथी आयुष्यनां दळियां (भागो) चाल्यांज जाय छे, एम जाणतां छतां विद्वान पण रात्रीए निद्राने वश केम थाय छे ?"

ब्रह्मदत्त चक्रीने आयुष्यनी चंचळताना प्रतिबोध करवा माटे मुनिए कह्युं हतुं के—

इह जीविए राय असासयंमि, धणियं तु पुण्णाइ अकुव्वमाणो ।
से सोअइ मच्चुमुहोवणीए, धम्मं अकाऊण परंमि लोए ॥ १ ॥

भावार्थ—"हे राजा ! आ जीवीत अशाश्वत छे. तेमां एक घडी पण जेणे पुण्यादिक कार्य कर्युं नथी ते मृत्युना मुखने पामीने धर्म नहीं करवाथी परलोकमां जइ शोक करे छे."

आ प्रमाणे शास्त्रनां वचनोथी आयुष्य क्षणभंगुर छे एम जाणीने भव्य प्राणीओए धर्मकार्यमां प्रवृत्ति करवी.

"शास्त्रकाराए आयुष्य क्षीण थवाना सात उपक्रमो कहेला छे, ते प्रमाणे आज पण जीवोमां आवे छे. तेथी विजळी, ध्वजा अने शरद् ऋतुना वादळा जेवुं चंचळ आयुष्य जाणीने उत्तम जीवोए निरंतर सन्मति धारण करवी."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ त्रयोविंशतितमस्तंभस्य
द्विचत्वारिंशदधिकत्रिशततमः प्रबंधः ॥ ३४२ ॥

व्याख्यान ३४३ मुं.

बीजी अशरण भावना विषे.

पितृमातृकलत्रायुर्वैद्यमंत्रसुरादिकाः ।
नैव त्रायन्ति जीवानां, कृतान्तभयमुत्थिते ॥ १ ॥

भावार्थ—"ज्यारे यमराजनो भय प्राप्त थाय छे, अर्थात् मृत्यु आवे छे त्यारे प्राणीओनुं माता, पिता, स्त्री, आयु, वैद्य, मंत्र के देवादिक पण रक्षण करी शकता नथी."

उपरना श्लोकमां कह्या प्रमाणे देवो पण मृत्युथी रक्षण करी शकता नथी. ते विषे कह्युं छे के—

स्नेहादाश्लिष्य शक्रेणार्धासने ऽध्यास्यते स्म यः ।
श्रेणिकः सोऽप्यशरणो, ऽश्रोतव्यां प्राप तां दशाम् ॥ १ ॥

भावार्थ—"इन्द्रे स्नेहथी आलिंगन करीने जेने पोताना अर्धा आसन पर बेसाड्या हता तेवा श्रेणिक राजा पण शरण रहित थइने न सांभळी शकाय तेवी ते (मृत्यु) दशाने पाम्या." वळी

वैरादास्कन्दकाचार्य, मुनिपंचशतीं घ्नतः ।
न कश्चिदभवत्राता, पालकादन्तकादिव ॥ २ ॥

भावार्थ—" स्कन्दकाचार्य सहित पांचसो मुनिने हणनारा यमराज जेवा पालक पुरोहितथी तेनुं रक्षण करवाने कोइ पण समर्थ थयुं नहीं. "

षष्टिपुत्रसहस्राणि, सगरस्यापि चक्रिणः ।
तृणवत्राणरहितान्यदहज्ज्वलनप्रभः ॥ ३ ॥

भावार्थ—" सगरचक्रीना पण शरण रहित साठ हजार पुत्रोने तृणनी जेम ज्वलनप्रभे (भुवनपतिना इंद्रे) बाळी नांख्या हता. " ते कथा आ प्रमाणे—

सगर चक्रीना पुत्रोनी कथा.

अयोध्या नगरीमां जितशत्रु नामे राजा हतो. तेने विजया नामे पत्नी हती. ते थकी अजितनाथ स्वामी उत्पन्न थया हता. जितशत्रु राजानो नानो भाइ सुमित्रविजय नामे हतो. तेने यशोमती नामनी स्त्रीथी सगर नामे पुत्र उत्पन्न थयो हतो. ते सगर चक्रवर्ती थया हता. तेने साठ हजार पुत्रो हता. तेमां सौथी मोटो जन्हुकुमार नामे हतो. तेणे एकदा चक्रीने प्रसन्न कर्या. त्यारे चक्रीए तेने वरदान आप्युं. एटले जन्हुकुमार बोल्यो के " आपनी कृपाथी सर्व भाइओ सहित दंडादिक रत्नने लइने समग्र पृथ्वी जोवानी मारी इच्छा थइ छे. " ते सांभळीने चक्रीए सैन्य सहित तेने जवानी रजा आपी.

जह्नुकुमार आगळ जतां चार योजन विस्तारवाळा अने आठ योजन उंचा अष्टापद पर्वतने जोइने भाइओ सहित तेना उपर चड्यो. त्यां तेणे बे कोश पहोळुं, त्रण कोश उंचुं अने चार कोश लांबुं, चार द्वारवाळुं रत्नमय चैत्य जोयुं. तेमां रहेली पोतपोताना देह सरखा प्रमाणवाळा ऋषभदेव विगेरे चोवीशे तीर्थंकरोनी प्रतिमानुं पूजन करीने भरत विगेरेना सो भाइओना सो स्तूपोने वंदना करी. पछी ते पर्वतनी शोभा जोइने सगरनो पुत्र जह्नुकुमार घणो हर्ष पाम्यो. पछी "आ चैत्य कोणे करावेलुं छे?" एम तेणे मंत्रीने पूछ्युं. मंत्रीए कह्युं के " हे कुमार! तमारा पूर्वज भरतचक्रीए आ चैत्य कराव्युं छे. " ते सांभळीने जह्नुए सेवकोने आज्ञा करी के " आ भरतक्षेत्रमां आवो बीजो पर्वत तमे शीघ्र शोधी

लावो के जेथी आपणे पण तेना उपर आवुं चैत्य करावीए." तेनी आज्ञा थतां अनेक सेवकोए चारे दिशामां जोइ जोइने पाछा आवी कह्युं के "हे कुमार ! आवो पर्वत बीजे क्यांइ पण नथी." त्यारे जह्नुकुमार बोल्यो के "ठीक छे. त्यारे आपणे आ पर्वतनीज रक्षा करीए. आगळ उपर काळना अनुभावथी लोको लुब्ध थशे. तेथी तेओ अहीं आवीने उपद्रव करशे, माटे आनी रक्षा करवी ते पण महा फळदायी छे." एम कहीने जह्नुकुमारे दंडरत्नवडे ते पर्वतनी फरती एक हजार योजन उंडी खाइ क्षणवारमां खोदी. ते दंडरत्नवडे पृथ्वी खोदती वखते नागकुमारोना क्रीडाग्रहो माटीना वासणनी माफक भांगी गया. ते जोइने उपद्रवथी भय पामेला नागदेवोए पोताना इंद्र ज्वलनप्रभ पासे जइने ते वृत्तांत कह्यो. ते सांभळीने कोपायमान थयेला ज्वलनप्रभे सगरचक्रीना पुत्रो पासे आवीने कह्युं के "हे मूर्खो ! आ पृथ्वीने शामाटे खोदी नांखी ? नागकुमार देवो क्रोध पामशे तो तमने सर्वेने हणी नांखशे." ते सांभळीने जह्नुकुमार बोल्यो के "तीर्थनी रक्षा करवा माटे अमे आ काम कर्युं छे, माटे हे सर्पेन्द्र ! अज्ञानथी थयेला आ अपराधने आप क्षमा करो." ते सांभळीने "हवे आवुं काम करशो नहीं." एम कहीने सर्पेन्द्र स्वस्थाने गयो.

इंद्रना गया पछी जह्नुकुमारे पोताना भाइओ साथे विचार कर्यो के "आ खाइ पाणी विना काळे करीने धूळथी पूराइ जशे माटे तेने गंगानदीना जळथी भरी दइए तो ठीक." ते वात सर्वेए स्वीकारी, एटले जह्नुकुमारे दंड-रत्न वडे खेंचीने गंगानदीनो प्रवाह लावी ते खाइमां नांख्यो. तेथी तेना जळवडे सर्पना घरोमां फरीथी विशेष उपद्रव थयो. फरीथी सर्व देवोने क्षोभ पामेला जोइने क्रोधायमान थयेला ज्वलनप्रभे तेमना वधने माटे मोटा दृष्टिविष सर्पोने मोकल्या. तेओए बहार आवीने सगरना पुत्रो सामुं विषनी वृष्टि करनारी दृष्टिवडे जोयुं के तरतज ते सगरना सर्वे पुत्रो भस्मीभूत थइ गया. ते जोइने शोक करता सैन्यने शान्त्वन आपीने मंत्री बोल्या के "हवे शोक करवाथी सर्युं ! कोइ पण भाविभावने उल्लंघन करी शकतुं नथी."

पछी ते सर्वे सामन्तादिक सैन्य सहित अयोध्या तरफ आवतां तेमणे विचार्युं के "स्वामीना सर्वे पुत्रो भस्म थया अने आपणे अक्षत शरीरवाळा आव्या ते घणुंज लज्जास्पद छे, तेथी चक्रीनी पासे आपणाथी आ वात शी रीते कहेवाशे ?" एम विचारीने तेओ निरंतर शोकातुर रहेता हता. ते वृत्तांत जाणीने

कोइ एक ब्राह्मणे[1] तेमने ते हकीकत पूछी, एटले तेओए सर्व वात कही बतावी. ते सांभळीने पेला ब्राह्मणे तेमने कह्युं के "तमारे कांइ फिकर करवी नहीं, हुं राजाने ए वात निवेदन करीश." पछी ते ब्राह्मण कोइ अनाथ मडदुं उपाडीने राजमंदिर पासे लइ गयो. त्यां ते शबने मूकीने मोटे स्वरे विलाप करवा लाग्यो. ते सांभळीने चक्रीए तेने रोवानुं कारण पुछ्युं, त्यारे ते ब्राह्मण बोल्यो के "मारे आ एकज पुत्र छे. तेने मोटो सर्प डस्यो छे, तेथी ते निश्चेष्ट थइ गयो छे. माटे हे देव! तमे तेने जीवाडो." ते सांभळीने राजाए विषवैद्योने बोलावी तेनो उपाय करवा फरमाव्युं. तेवामां कोइ माणसे त्यां आवीने कह्युं के "जेना घरमां आज सुधी कोइ माणस मरण पाम्युं न होय तेना घरमांथी भस्म लावो, तो हुं आने जीवतो करुं." ते सांभळीने राजाए आखा नगरमां सर्व घेर तेवी भस्म लाववाने माटे माणसो मोकल्या. तेओ पाछा आवीने बोल्या के "हे स्वामी! अमे आखी नगरी जोइ, पण ज्यां कोइ माणस मरण पाम्युं न होय एवुं एक पण घर मळ्युं नहीं." ते सांभळी चक्री पण बोल्या के "अमारा घरमां पण घणा पूर्वजो मरण पामेला छे; तो सर्वने विषे सामान्य रीते प्रवर्तनारुं ज मृत्यु तेनी प्राप्तिथी हे ब्राह्मण! तुं शामाटे खेद करे छे? मरेला पुत्रनो तुं शामाटे शोक करे छे? शोक तजी दइने कांइक आत्म साधन कर; केमके तुं पण अजरामर नथी." ते सांभळी पेलो ब्राह्मण बोल्यो के "हे देव! ते सर्व हुं जाणुं छुं, पण आ पुत्र विना आजेज मारा कुळनो क्षय थशे, माटे हे स्वामी! कोइ पण प्रकारे आने जीवाडीने मने पुत्रभिक्षा आपो." राजा बोल्यो के "हे ब्राह्मण! मंत्र, तंत्र तथा शास्त्रोने अगोचर अने अदृश्य शत्रुरूप विधिना उपर कयो पंडित पुरुष पण पराक्रम करी शके? कोइ न करी शके, माटे तुं शोकने तजी दे." ब्राह्मण बोल्यो के "स्वामी! सर्व वस्तुनो विरह सहन थइ शके छे, पण कुळने उद्योत करनार पुत्रनो विरह कोइ सहन करी शकतुं नथी." चक्रीए कह्युं के "अनन्ता भवोमां अनंता पुत्रो थया छे. पोते पण अनंतीवार अनंत कुळोमां पुत्रपणे उत्पन्न थयो छे. तेमां कोनुं कुळ दीपाव्युं अने कोनुं नहीं? माटे हे ब्राह्मण! फोगट शामाटे शोक करे छे? कह्युं छे के—

अशरण्यमहो विश्वमराजकमनायकम् ।
यदेतदप्रतीकारं, ग्रस्यते यमरक्षसा ॥ १ ॥

---

१ आ ब्राह्मणनुं रूप लइने आवेल सोधर्मेंद्र हता एम अन्यत्र कहेलुं छे.

" अहो ! आ विश्व शरण विनानुं, राजा विनानुं अने नायक विनानुं छे. केमके जेनो कांइ उपायज नथी, एवी रीते आ विश्वने यमरूपी राक्षस गळी जाय छे."

योऽपि धर्मप्रतीकारो, न सोऽपि मरणं प्रति ।
शुभां गतिं ददानस्तु, प्रतिकर्तेति कीर्त्यते ॥ २ ॥

" जे धर्मरूप उपाय छे ते पण मरणनो उपाय नथी; परंतु ते शुभ गतिने आपनार छे माटे तेनी प्रशंसा थाय छे."

ते सांभळीने ब्राह्मण बोल्यो के " हे स्वामी ! बीजाने दुःखी जोइने घणा लोको वैराग्यनुं वर्णन करे छे, पण ज्यारे तेवुं दुःख पोतानेज प्राप्त थाय त्यारे जेनुं चित्त स्थिरता न मूके तेज प्रशस्य कहेवाय." चक्रीए कह्युं के " जेओ पोतानुं वचन पाळे नहीं तेओने मायाबीज जाणवा." ब्राह्मण बोल्यो के " त्यारे हे राजा ! तमारा साठे हजार पुत्रो एकज समये मृत्यु पाम्या छे, माटे तमे पण शोक करशो नहीं." ते सांभळीने एकदम भ्रांतिमां पडेलो राजा कांइक विचार करे छे, तेटलामां तो प्रथमथी संकेत करी राखेला ते सामन्तादिके आवीने सर्व वृत्तांत कह्युं. ते सांभळीने चक्री जाणे वज्रथी हणायो होय तेम तत्काळ मूर्छा पामीने पृथ्वीपर पड्यो. पछी सेवकोना करेला अनेक उपचारोथी सावध थयो छतो अनेक प्रकारे विलाप करवा लाग्यो. त्यारे ते ब्राह्मण बोल्यो के "हे स्वामी ! मने 'शोक' करवानो निषेध करीने अत्यारे आपज केम शोक करो छो ? वियोग कोने दुःसह न होय ? परंतु जेम वडवाग्निने समुद्र सहन करे छे. तेम धीर पुरुष तेवा विरहना दुःखने सहन करे छे. बीजाने शिखामण आपवी त्यारेज शोभे छे के ज्यारे समय आवे त्यारे पोताना आत्माने पण शिखामण आपे." आ प्रमाणेनां ते ब्राह्मणनां वाक्योथी बहुवारे चक्रीए धैर्य लावीने ते पुत्रोनी ऊर्ध्वदेही क्रिया करी.

एवा अवसरे अष्टापद पासेना प्रदेशोमां रहेनारा मनुष्योए आवीने चक्रीने विज्ञप्ति करी के " हे स्वामी ! आपना पुत्रोए जे गंगानदीनो प्रवाह अष्टापदनी खाइमां लावीने नाख्यो छे ते खाइने पूर्ण करीने हवे गामोने डुबाववा लाग्यो छे. माटे तेनुं निवारण करी अमारुं रक्षण करो." ते सांभळीने राजाए जह्नुना पुत्र भगीरथने ते कार्य माटे आज्ञा करी; तेथी भगीरथे त्यां जइने अष्टम

तप करवावडे सर्पराजने प्रसन्न करी तेनी आज्ञाथी दंडवडे खेंचीने ते प्रवाहने गंगानदीमां पाछो लइ जइ पूर्व तरफना समुद्रमां उतार्यो. त्यारथी गंगा अने सागरना संगमनुं ते स्थळ तीर्थरूप थयुं, अने गंगा नदी पण जह्नुना लइ जवाथी जाह्नवी अने भगीरथे तेने समुद्रमां उतारी, तेथी भागीरथी एवा नामथी प्रसिद्ध थइ. पछी भगीरथे पाछा आवीने मोटा उत्सवथी अयोध्यामां प्रवेश कर्यो.

त्यार पछी चक्रीए शत्रुंजयगिरिनो सातमो उद्धार करी अजितनाथ स्वामी पासे दीक्षा लइ उग्र तप कर्युं. अनुक्रमे केवळज्ञान पामीने बोंतेर लाख पूर्वनुं आयुष्य पूर्ण करी मोक्षपदने पाम्या.

अन्यदा भगीरथ राजाए श्री जिनेश्वरने पूछ्युं के " हे स्वामी ! जह्नुकुमार विगेरे साठे हजार भाइओ सर्वे समान आयुष्यवाळा केम थया ? " स्वामीए कह्युं के " पूर्वे कोइ मोटो संघ यात्राने माटे समेताद्रि तरफ जतां मार्गमां कोइ नाना गामडा पासे आव्यो. त्यां साठ हजार चोरो रहेता हता. तेमने कोइ एक कुंभारे घणा वार्या, तोपण तेओए ते संघने लुंट्यो. त्यांथी संघ महाकष्टे आगळ गयो. ते वखते ए साठे हजार लुंटाराओए एक साथे निकाचित पापकर्म बांध्युं. एकदा ते गामना रहीश कोइ चोरे बीजा गाममां जइने चोरी करी. ते चोरने पगले पगले गामना रक्षको ते चोरना गाम सुधी आव्या. पछी आ गाममां बधा चोरज वसे छे, एम निश्चय थवाथी तेमणे ते गामना दरवाजा बंध करीने चोतरफथी अग्नि सळगाव्यो. ते दिवसे पेलो कुंभार कार्य माटे बीजे गाम गयो हतो, तेथी तेना विना बीजा सर्वे मृत्यु पाम्या. त्यांथी मरीने ते सर्वे अरण्यमां चुडेलना गुच्छ[1] रूपे उत्पन्न थया. त्यां सर्वे एकत्र थइने पडेला हता, तेवामां कोइ हस्तीए आवीने तेमने पगवडे चांपी नाख्या. तेथी मरण पामीने अनेक कुयोनिमां चिरकाळ सुधी परिभ्रमण कर्युं. छेवटे आ भवना आगला भवमां कांइक पुण्य उपार्जन कर्युं, तेना प्रभावथी ते साठे हजार चक्रीना पुत्र थया. परंतु पूर्वे करेला पापकर्मना कांइक अवशेष रहेवाथी तेओ एक साथेज मरण पाम्या. पेलो जे कुंभार हतो तेनो जीव अनेक भवो फरीने आ तुं भगीरथ थयो छे." आ प्रमाणे जह्नुकुमारादिनो तथा पोतानो पूर्वभव सांभळीने भगीरथे प्रतिबोध पामी श्रावकधर्म अंगीकार कर्यो. तेनुं प्रतिपालन करीने अनुक्रमे ते सद्गतिने पाम्यो.

---

१ मातृवाहक नामना बेइंद्रिजीवो.

" त्रण लोकने भयंकर एवो यमरूपी राक्षस आ अनाथ जगतने हणवा माटे निरंतर इच्छा कर्या करे छे. तेथी तेना भयना निवारणने माटे सर्वदा अशरण भावना भाववी, के जेथी सुखना स्थानरूप वैराग्यनी प्राप्ति थाय."

इत्यब्दादिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ त्रयोविंशतितमस्तंभस्य त्रिचत्वारिंशदधिकत्रिशततमः प्रबंधः ॥ ३४३ ॥

व्याख्यान ३४४ मुं.

संसारनी असारता विषे.

संसारासारतां वीक्ष्य, केचित्सुलभबोधिनः ।
शीघ्रं गृह्णन्ति साम्यत्वं, श्रीदत्तश्रेष्ठिवद्यथा ॥ १ ॥

भावार्थ—" केटलाएक सुलभबोधी जीवो संसारनी असारताने जोइने श्रीदत्त श्रेष्ठीनी जेम तत्काळ समताने धारण करे छे." ते कथा आ प्रमाणे—

श्रीदत्त श्रेष्ठीनी कथा.

मंदिरपुरमां सुरकांत नामे राजा हतो. ते गाममां सोमश्रेष्ठी नामे नगरशेठ हतो. ते राजानो मानीतो हतो. तेने सोमश्री नामनी पत्नी हती. तेनाथी उत्पन्न थयेलो श्रीदत्त नामे तेमने पुत्र हतो. एकदा सोमश्रेष्ठी पोतानी भार्या साथे वनमां क्रीडा करवा गयो हतो. त्यां पाछळथी सुरकांत राजा पण आव्यो. राजा सोमश्रीने जोइने तेनापर आसक्त थयो. तेथी तेने बळात्कारथी लइ जइने पोताना अंतःपुरमां राखी. सोमश्रेष्ठी प्रियाना विरहथी पारावार खेद पामीने घेर आव्यो.

पछी तेणे प्रधानमंडळ पासे ते वृत्तांत कही राजाने समजाववानुं कह्युं. ते प्रधानोए पण राजाने घणी रीते समजाव्यो, परंतु राजाए मान्युं नहीं. तेथी प्रधानोए आवीने शेठने कह्युं के

माता यदि विषं दद्यात्, पिता विक्रयते सुतम् ।
राजा हरति सर्वस्वं, का तत्र प्रतिवेदना ॥ १ ॥

भावार्थ- " ज्यारे माताज पुत्रने विष आपे, पिताज तेने वेचे, अने राजाज सर्वस्व हरी ले, त्यारे तेनो शो इलाज ? कांइ नहीं. "

पछी श्रेष्ठीए घेर आवीने पोताना पुत्रने कह्युं के " वत्स ! आपणा घरमां छ लाख द्रव्य छे तेमांथी साडा पांच लाख द्रव्य लइने हुं जाउं छुं. तुं कोइ बळवान राजाने सेवीने ते राजाना बळथी तारी माताने हुं छोडावीश. " एम कहीने श्रेष्ठी तेटलुं धन लइ कोइ दिशामां चाल्यो. श्रीदत्त घेर रह्यो. तेने केटलेक काळे एक पुत्री थइ. ते वखते तेणे विचार कर्यो के " माता-पितानो विरह, धननो नाश, पुत्रीनो जन्म अने गामनो राजा विरुद्ध-अहो दैव ! अवळुं होय त्यारे शुं शुं न थाय ? " पछी पुत्री ज्यारे दश दिवसनी थइ त्यारे श्रीदत्त शंखदत्त नामना मित्रनी साथे वेपार करवा माटे वहाणमां बेसीने परदेश चाल्यो. क्रमे करीने बन्ने मित्रो सिंहलद्वीप आव्या. त्यां नव वर्ष सुधी वेपार करीने विशेष लाभनी इच्छाथी ते बन्ने मित्रो कटाहद्वीपे गया. त्यां पण बे वर्ष रह्या. एकंदर आठ क्रोड द्रव्य उपार्जन करीने घणी जातनां करीयाणां, हाथी, घोडा विगेरे लइने पोताना देश तरफ चाल्या. मार्गमां एक वखत ते बन्ने मित्रो वहाणनी उपली भूमिपर बेठा बेठा समुद्रनी शोभा जोता हता, तेवामां समुद्रना जळमां तरती एक पेटी तेमणे जोइ. ते जोइने बन्ने बोल्या के " आ पेटीमां जे कांइ होय ते आपणे बन्नेए वहेंची लेवुं. " पछी तेणे पोताना सेवको पासे ते पेटी कढावीने उघाडी, तो तेमां लिंबडानां पांदडांमां भरेली कांइक श्याम वर्णवाळी एक अचेतन थइ गयेली कन्या दीठी. तेने जोइने "आ शुं ! " एम सर्वे बोल्या. त्यारे शंखदत्ते कह्युं के "खरेखर आ बाळाने सर्पदंश थवाथी मरेली धारीने कोइए पेटीमां नांखी समु-

द्रमां मूकी दीधी छे, पण जूओ ! हुं तेने हमणाज जीवती करुं छुं." एम कहीने जळ मंत्रीने तेनापर छांट्युं के तरतज ते कन्याने चेतन आव्युं. पछी तेने खान, पान, स्नान अने अंगलेपन विगेरे उपचारो कर्या, एटले ते सर्व अंगे सुंदर देखावा लागी. एकदा शंखदत्ते श्रीदत्तने कह्युं के " में आने जीवती करी छे, माटे हुं तेने परणीश. " त्यारे श्रीदत्त बोल्यो के " एम बोल नहीं, एमां आपणा बन्नेनो भाग छे; माटे तुं मारी पासेथी तेनुं जे मूल्य थाय तेना अर्धा नाणा ले. तेने तो हुंज परणीश. तें तो तेने जीवित दान आप्युं छे, माटे तुं तो तेनो पितातुल्य थयो." ए प्रमाणे ते बन्ने मित्रो विवाद करवा लाग्या. कह्युं छे के—

हा ! नार्यो निर्मिताः केन, सिद्धिस्वर्गार्गलाः खलु ।
यत्र स्खलन्ति ते मूढाः, सुरा अपि नरा अपि ॥ १ ॥

भावार्थ—" अहो ! मोक्षनी अने स्वर्गनी अर्गलारूप स्त्रीओने कोणे बनावी के ज्यां देवताओ अने माणसो मूर्ख बनीने स्खलनाने पामे छे ? "

ते बन्नेनो विवाद जोइने वहाणना मालेके कह्युं के " हे शेठियाओ ! आ वहाण आजथी बे दिवसे सुवर्णपुरने कांठे पहोंचशे, त्यां डाह्या माणसो तमारा विवादनो निर्णय करी आपशे, माटे त्यां सुधी तमे झगडो बंध राखो." ते सांभळीने बन्ने जण मौन रह्या. पछी श्रीदत्ते विचार्युं के " आ मारा मित्रे आ कन्याने जीवितदान आप्युं छे, माटे लोको तो तेनेज ते कन्या आपवानुं कहेशे, तेथी हुं अत्यारथीज ते कन्याने मेळववानो उपाय करुं. " एम विचारीने नावनी उपली भूमिपर बेसीने तेणे एकदम मित्रने बोलाव्यो के " हे मित्र ! जलदी अहीं आव, अहीं आव, मोटुं कौतुक जोवानुं छे. बे मुखवाळो मत्स्य वहाणनी नीचे जाय छे. " ते सांभळीने शंखदत्त आवीने नीचे जुए छे, तेटलामां तेने श्रीदत्ते समुद्रमां नांखी दीधो. पछी नावना लोकोने विश्वास पमाडवा माटे ते फोगटनो पोकार करवा लाग्यो. अनुक्रमे तेना वहाणो क्षेमकुशळ सुवर्णपुरे पहोंच्या. त्यां श्रीदत्त ते कन्याने लइने रह्यो. पछी त्यांना राजा पासे जइने तेणे मोटी भेट करी, एटले राजाए तेनुं घणुं सन्मान कर्युं. पछी श्रीदत्त ते कन्यानी साथे लग्न करवा माटे सारुं मुहूर्त्त शोधवा लाग्यो.

हवे ते हमेशां राजसभामां जतो हतो; त्यां एकदा तेणे राजानी चमरधा-

रिणीने जोइ, एटले तेना सौन्दर्यथी मोह पामीने तेणे कोइ माणसने तेनुं स्वरूप पूछयुं. त्यारे ते माणस बोल्यो के " आ सुवर्णरेखा नामनी वेश्या छे. आ वेश्यानी सामे एकवार वात पण ते करी शके छे के जे तेने एक साथे पचास हजार द्रव्य आपे छे. " ते सांभळीने तेनापर आसक्त थयेला श्रीदत्ते पचास हजार द्रव्य मोकलीने ते सुवर्णरेखाने पोताने त्यां बोलावी. पछी पेली कन्याने तथा वेश्याने-बंनेने एक रथमां बेसाडीने ते श्रीदत्त क्रीडा करवा माटे वनमां गयो. त्यां एक वानर घणी वानरीओ साथे क्रीडा करतो करतो ते वनमां आव्यो. तेने जोइने श्रीदत्त बोल्यो के—

> धिग्जन्म पशुजन्तूनां, यत्र नास्ति विवेकता ।
> कृत्याकृत्यविभागेन, विना जन्म निरर्थकम् ॥ १ ॥

भावार्थ—" पशुओना जन्मने धिक्कार छे के जेनामां बिलकुल विवेक रहेलो नथी. कार्य अने अकार्यना विवेचन विना तेनो जन्म निरर्थक छे. "

अहो ! माता, बहेन विगेरेना विवेकरहित एवो आ पशुओनो जन्म शा कामनो ?" ते सांभळीने क्रोधायमान थयेल ते वानर दांत पीसीने बोल्यो के " रे दुराचारी ! तुं दूर सळगता पर्वतने जुए छे, पण पगनी नीचे रहेला अग्निने जोतो नथी ? सुइ अने सरसव जेवडां परनां छिद्रोने जुए छे पण पोताना मोटां बीलां जेवडां दोषोने जोतो नथी ? अरे अधममां पण अधम! मित्रने समुद्रमां नाखीने भोगने माटे पोतानीज माताने तथा पुत्रीने पडखामां राखी बेठो छे अने मारी निंदा करे छे ? " ए प्रमाणे ते वानर तेनी निर्भर्त्सना करीने कुदका मारतो पोताना यूथमां दाखल थइ गयो. श्रीदत्त विचार करवा लाग्यो के "आ वेश्या मारी माता शी रीते ? अने आ कन्या मारी पुत्री शी रीते ? ते तो समुद्रमांथी मळी छे, अने मारी माता तो कांइक श्याम वर्णवाळी अने शरीरे उंची हती, अने आ वेश्या तो गौर वर्णवाळी अने शरीरे नीची छे. " एम विचारीने तेणे वेश्याने पूछयुं; त्यारे ते बोली के " अरे शेठ ! हुं तो तमने ओळखतीए नथी. पशुना वचनथी तमे केम भ्रांतिमां पडो छो ? " तोपण श्रीदत्तनी शंका मटी नहीं, तेथी ते वानरने शोधवा माटे आम तेम फरवा लाग्यो, तेवामां त्यां तेणे एक मुनिने जोया. तेमने वंदना करीने श्रीदत्ते पोतानो संदेह पूछयो, एटले मुनि बोल्या के " हुं अवधिज्ञानथी जाणुं छुं तेथी कहुं छुं के

वानरे जे कह्युं छे ते सत्य छे. प्रथम तारी पुत्रीनी वात कहुं छुं—तुं तारी पुत्रीने दश दिवसनी मूकीने वहाणमां बेसी परदेश गयो हतो. त्यारपछी तारा गाममां शत्रुना सैन्यनो उपद्रव थयो. ते वखते तारी स्त्री पुत्रीने लइने भागी, ते गंगाने किनारे आवेला सिंहपुरमां पोताना भाइने घेर गइ. त्यां ते अगियार वर्ष सुधी रही. एकदा ते कन्याने सर्प डस्यो. तेनी माताए तथा मामाए तेना अनेक उपायो कर्या, पण विष उतर्युं नहीं तेथी तेने मरेली धारीने माताए स्नेहने लीधे एक पेटीमां नांखीने गंगानदीमां वहेती मूकी. ते पेटी तने मळी; तेथी आ कन्या तारी पुत्री छे. हवे तारी मातानुं वृत्तात सांभळ—सूरकांत राजाए तारी माताने अंतःपुरमां राखी हती. तेने छोडाववा माटे तारो पिता साडा पांच लाख द्रव्य लइने गुप्त रीते समर नामना पल्लीपति पासे जइ तेनी सेवा करवा लाग्यो. तेना कहेवाथी पल्लीपतिए मोटा सैन्य साथे आवीने ते गाम भांग्युं. सूरकांत राजा त्यांथी नासी गयो. पछी तारा पिताने आगळ करीने ते पल्लीपति पुरमां प्रवेश करतो हतो, तेवामां तारा पिताना कपाळमां एक बाण लागवाथी ते तरतज मृत्यु पाम्यो.

अन्यथा चिंतितं कार्यं, दैवेन कृतमन्यथा ।
वर्षति जलदाः शैले, जलमन्यत्र गच्छति ॥ १ ॥
अन्यथा चिंतितं कार्यं, दैवेन कृतमन्यथा ।
प्रियाकृते हि प्रारंभः, स्वात्मघाताय सोऽभवत ॥ २ ॥

" अन्यथा प्रकारे चिंतवेलुं कार्य दैवयोगे अन्यथा (विपरीत) थयुं. केमके वरसाद तो पर्वतपर वरसे छे, पण पाणी अन्य स्थाने जतुं रहे छे, तेवीज रीते जे कार्य जुदी रीते चिंतव्युं हतुं ते कार्य दैवयोगे विपरीत थयुं; केमके प्रियाने छोडाववा माटे करेलो प्रारंभ पोतानाज घातने माटे थयो. "

पछी तारी माता कोइ भिल्लना हाथमां पकडाइ. त्यांथी पण नासीने वनमां भटकतां तेणे कोइ वृक्षना फळनुं भक्षण कर्युं. ते फळना प्रभावथी तेनुं शरीर कांइक नीचुं अने गौर वर्णवाळुं थयुं. 'मणि, मंत्र तथा औषधिनो महिमा अचिंत्य छे.' त्यांथी कोइ देश तरफ व्यापारार्थे जता कोइ वणिक लोकोए तेने जोइने " आ कोइ वनदेवता छे " एम भ्रांति पामीने " तुं कोण छे ? " एम पूछ्युं, त्यारे ते बोली के " हुं कोइ देवी नथी, पण मनुष्यणी छुं. " तेथी ते

वणिक लोकोए तेने लइने सुवर्णपुरमां वेची. ते रूपवान होवाथी विभ्रमवती नामनी वेश्याए एक लक्ष द्रव्य आपीने तेने वेचाती लीधी. पछी तेने नृत्य विगेरे शीखवी तेनुं सुवर्णरेखा एवुं नाम राख्युं. ते क्रमे करी राजानी चामर वींझनारी थइ. ते आ सुवर्णरेखा तारी माता छे. तेणे तने ओळख्यो छे, पण लज्जाथी तथा लोभथी तेणे पोतापणुं प्रगट कर्युं नथी." ते सांभळीने श्रीदत्ते पूछ्युं के "हे स्वामी! आपनुं वचन सत्य छे, परंतु वानरने आ वातनी क्यांथी खबर?" मुनिए कह्युं के "तारो पिता तारी माताना ध्यानथीज मरीने व्यंतर थयो छे. तेणे अहीं भमतां तने तथा सोमश्रीने जोइने अकार्य करवा प्रवृत्त थयेला एवा तने वानरना शरीरमां प्रवेश करीने ते कार्यनो निषेध कर्यो छे." ते सांभळीने श्रीदत्ते विचार्युं के "अहो! कर्मनी केवी विषम गति छे!" फरीथी मुनि बोल्या के "ते व्यंतर फरीथी पाछो आवीने पूर्वना मोहने लीधे पोतानी प्रियाने लइ जशे." तेवामां तेज वानर आवीने सोमश्रीने उपाडी बीजा वनमां चाल्यो गयो. ते जोइ श्रीदत्त माथुं धूणावतो मुनिने नमी कन्या सहित स्वस्थाने गयो.

अहीं वृद्ध वेश्याए दासीने पूछ्युं के "सुवर्णरेखा क्यां छे?" दासीए कह्युं के "पचास हजार द्रव्य आपीने श्रीदत्त श्रेष्ठी तेने लइ वनमां गयो छे." वृद्ध वेश्याए कह्युं के "तेने बोलावी लाव." एटले दासीए आवीने दुकाने बेठेला श्रीदत्तने पूछ्युं के "अमारी स्वामिनी क्यां छे?" श्रीदत्त बोल्यो के "हुं जाणतो नथी." ते सांभळीने दासीए वृद्ध वेश्याने ते श्रीदत्तनुं वचन जणाव्युं. एटले वृद्ध वेश्याए राजा पासे जइ पोकार करीने कह्युं के "हे स्वामी! हुं छेतराणी छुं, श्रीदत्ते सुवर्णरेखाने लइ जइने कांइक संताडी दीधी छे." ते सांभळीने राजाए श्रीदत्तने बोलावीने पूछ्युं. त्यारे "हुं सत्य वात कहीश तो कोइ मानशे नहीं" एम जाणीने तेणे कांइ पण जवाब आप्यो नहीं. तेथी राजाए तेने कारागृहमां नाख्यो अने तेनी पुत्रीने दासी करवाना हेतुथी पोताने घेर राखी. पछी कारागृहमां रहेला श्रीदत्ते विचार्युं के "सत्य वात कहेवाथीज कोइ पण रीते हुं छूटी शकीश." एम धारीने कारागृहना रक्षकद्वारा तेणे राजाने विज्ञप्ति करी के "हे स्वामी! हुं सत्य वात कहुं छुं." त्यारे राजाए तेने सभामां बोलाव्यो. एटले तेणे वानर उपाडी गया संबंधी वृत्तांत कही संभळाव्युं. ते सांभळीने सर्व जन हसवा लाग्या के-अहो! केवुं सत्य बोल्यो? कह्युं छे के—

असंभाव्यं न वक्तव्यं, प्रत्यक्षं यदि दृश्यते ।
यथा वानरगीतानि, तथा तरति सा शिला ॥ १ ॥

भावार्थ—" जो के प्रत्यक्ष जोयेल होय तो पण असंभवित वात बोलवी नहीं. जेवी रीते वनमां वानराओ गीत गाय छे ए असंभवित हतुं तेम जळमां शिला तरे छे ते पण असंभवित छे. " आ दृष्टांत अन्य स्थळेथी जाणी लेवुं.

पछी ते सांभळीने " आ वणिक हजु पण सत्य बोलतो नथी." एम धारीने क्रोध पामेला राजाए तेने मारवानो हुकम कर्यो. एटले श्रीदत्ते विचार्युं के " पूर्वे करेला अशुभ कर्मनो उदय थयो छे, तो हवे खेद करवाथी शुं थाय ? " ते अवसरे उद्यानपाळे आवीने राजाने कह्युं के " हे देव ! उद्यानमां मुनिचंद्र केवळी पधार्या छे." ते सांभळीने राजा परिवार सहित उद्यानमां गयो. मुनिने वांदीने राजाए देशनानी याचना करी. त्यारे केवळी बोल्या के " हे राजा ! सत्यवादी श्रीदत्तने मारवानो तें हुकम आप्यो छे ते तने धर्मश्रवणनी अभिलाषावाळाने योग्य नथी." ते सांभळीने राजा लज्जा पाम्यो. पछी श्रीदत्तने बोलावी पोतानी पासे बेसाडीने राजा तेनुं स्वरूप पूछतो हतो, तेवामां ते वानर सुवर्णरेखाने पृष्ठपर राखीने त्यां आव्यो, अने पृष्ठपरथी तेने उतारीने ते सभामां बेठो. ते जोइने सर्व माणसो आश्चर्य पामी श्रीदत्तनी प्रशंसा करवा लाग्या. पछी श्रीदत्ते केवळीने पूछ्युं के " हे स्वामी ! कया कर्मने लीधे मने माता तथा पुत्री साथे विषयनी अभिलाषा थइ ? " मुनि बोल्या के " पूर्वना संबंधथी थइ छे, ते हकीकत सांभळ—कांपिल्यपुरमां चैत्र नामनो एक ब्राह्मण हतो. तेने गौरी अने गंगा नामनी बे स्त्रीओ हती ते एकदा मैत्र नामना मित्रनी साथे भिक्षावृत्तिने माटे कोंकण देशमां गयो. त्यां बन्ने मित्रोए घणुं धन मेळव्युं. एकदा चैत्रने सूतेलो जोइने मैत्रे विचार्युं के " आने हणीने हुं सर्व धन लइ लउं." फरीथी पाछो तेने विचार थयो के " मने विश्वासघातीने धिक्कार छे ! " एम विचारीने ते पाछो स्वस्थ थयो. पछी ते बन्ने मित्रो लोभथी भमता भमता एक वनमां पेठा. ते वनमां वैतरणी नदी हती. तेनी खबर नहीं होवाथी ते बन्ने तेने उतरवा लाग्या; एटले तेमां बूडीने मरण पाम्या. त्यांथी अनेक भवमां भ्रमण करीने चैत्रनो जीव तुं थयो, अने मैत्रनो जीव शंखदत्त थयो. ते शंखदत्ते पूर्वभवे तने मारवानुं धार्युं हतुं. ते कर्मथी तें तेने आ जन्ममां समुद्रमां

नांख्यो. चैत्रनी स्त्रीओ जे गौरी अने गंगा हती ते पतिना वियोगथी वैराग्य पामीने तापसणी थइ. एकदा गौरीए अति तृषा लागवाथी सेवा करनारी पासे पाणी माग्युं. ते वखते ते दासीने निद्रा आवती हती, तेथी आळसने लीधे तेणे उत्तर आप्यो नहीं. त्यारे गौरी क्रोधथी बोली के " अरे ! शुं तने साप करड्यो छे के मरेला जेवी थइने उत्तर पण आपती नथी ? " ते वचनवडे गौरीए दृढ पापकर्म बांध्युं. गंगाए पण एकदा पोतानी काम करनारीने कांइ कार्य माटे मोकली हती, ते बहुवारे पाछी आवी त्यारे गंगाए तेने कह्युं के " अरे ! आटली वार तने कोइए बंदीखाने नांखी हती ? " एम बोलतां ते गंगाए पण दुष्ट कर्म बांध्युं. त्यारपछी एक दिवस कोइ वेश्याने घणा पुरुषो साथे विलास करती जोइने गंगाए विचार्युं के " आ वेश्याने धन्य छे के जे भ्रमरोथी पुष्पलतानी जेम अनेक कामी पुरुषोथी वींटायेली छे, हुं तो मंदभागी छुं के जेनो पति पण तजीने दूर देश गयो छे." आवा विचारथी तेणे दुष्ट कर्म उपार्जन कर्युं. त्यांथी मरण पामीने ते बन्ने ज्योतिषी थइ. त्यांथी च्यवीने गौरीनो जीव तारी पुत्री थयो अने गंगानो जीव तारी मातापणे उत्पन्न थयो. तेमनी साथे पूर्वभवे पत्नीनो संबंध होवाथी तने तेनापर कामराग उत्पन्न थयो." आ प्रमाणेनुं संसारनुं स्वरूप सांभळी वैराग्य पामेलो श्रीदत्त बोल्यो के " हे स्वामी ! मने पापीने मारा मित्रनो मेळाप थशे के नहीं ? " गुरुए कह्युं के " खेद न कर, एक क्षणवारमांज ते अहीं आवशे." एम वार्ता करे छे तेवामां त्यां शंखदत्त आव्यो. श्रीदत्तने त्यां बेठेलो जोइने शंखदत्तनी आंखो क्रोधथी लाल थइ गइ. ते जोइने गुरुए शंखदत्तने कह्युं के " हे भद्र ! कोप न कर; केमके क्रोधरूपी अग्निथी गुणरूपी रत्नो बळी जाय छे. ते अग्निने जे उपशमरूपी जळवडे बुझावतो नथी ते सेंकडो दुःख सहन करे छे. देहरूपी घरमां क्रोधरुपी अग्नि प्रवेश करे छे, त्यारे त्रण दोष (त्रिदोष) उत्पन्न करे छे. पोताने तपावे, परने तपावे, अने परसाथेना स्नेहनो नाश करे." ते सांभळीने शंखदत्त कांइक शांतचित्त थयो. पछी श्रीदत्ते उठीने तेने पोतानी पासे बेसाडी केवळी प्रत्ये पूछ्युं के " आ मारो मित्र समुद्रमांथी शी रीते नीकळीने अहीं आव्यो ? " गुरु बोल्या के "समुद्रमां तेने एक काष्ठनुं पाटीयुं हाथमां आव्युं. तेने आधारे तरीने ते सात दिवसे सारस्वत नगर पासे नीकळ्यो. त्यां तेने तेनो मामो मळ्यो. तेणे तेने स्वस्थ कर्यो. पछी तेणे तेना मामाने " सुवर्णकूळ अहींथी केटलुं दूर छे ? " एम पूछ्युं.

त्यारे तेना मामाए कह्युं के " अहींथी वीश योजन दूर छे, त्यां हाथीओथी भरेलां वहाणो आव्यां छे एम संभळाय छे. " ते सांभळीने मामानी रजा लइने ते अहीं आव्यो, अने अहीं तने जोइने तने क्रोध उत्पन्न थयो. " आ प्रमाणे कहीने पछी गुरुए शंखदत्तने फरीथी पूर्वभव कहीने बोध पमाड्यो.

आ प्रमाणे केवळीनी देशना सांभळीने राजाए श्रावकना बार व्रतो ग्रहण कर्यां. श्रीदत्ते शंखदत्तनी साथे पोताने घेर जइने अर्धुं द्रव्य तथा पोतानी पुत्री तेने आपी, अने पोतानुं धन जिनभुवन, बिंबप्रतिष्ठा, ज्ञानभक्ति-इत्यादि सात क्षेत्रमां खरचीने मोटा उत्सवपूर्वक केवळी पासे जइने दीक्षा ग्रहण करी. अनुक्रमे निरतिचार चारित्र पाळीने मोक्षपद प्राप्त कर्युं.

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ त्रयोविंशतितमस्तंभस्य चतुश्चत्वारिंशदधिकत्रिशततमः प्रबंधः ॥ ३४४ ॥

व्याख्यान ३४५ मुं.

हुताशिनीना पर्व विषे.

पर्व हुताशिनीसंज्ञं, लौकिकं पापरूपकम् ।
हेयं लोकोत्तरधर्मज्ञै-र्भवसंततिवर्धकम् ॥ १ ॥

भावार्थ—" हुताशिनी (होळी) नामनुं पर्व लौकिक अने पापरूप होवाथी लोकोत्तर धर्मने जाणनारा उत्तम जीवोए भवनी परंपराने वधारनार ते पर्वनो त्याग करवो. " आ अर्थनुं समर्थन करवा माटे हुताशिनीनो संबंध जाणवा योग्य छे ते आ प्रमाणे—

हुताशिनी (होळी) नी कथा.

आ भरतक्षेत्रमां जयपुर नामनुं एक नगर हतुं. जेमां

छत्रेषु दंडश्चिकुरेषु बन्धः, शारीषु मारिश्च मदो गजेषु।
हारेषु वै छिद्रविलोकनानि, कन्याविवाहे करपीडनं च॥१॥

" छत्रने विषेज दंड हतो, स्त्रीओना केशपाशने विषेज बंध थतो, क्रीडाना सोगठांनेज 'मार' एम कहेवामां आवतुं, हस्तीओने विषेज मद रहेतो, मुक्ताफळना हारने विषेज छिद्र जोवामां आवतां, अने कन्याना विवाहमांज करपीडन करवामां आवतुं (हाथ पकडवामां आवतो); पण ते नगरना लोकोमां दंड, बंधन, मारी, मद, छिद्र के करपीडन हतुं नहीं. "

ते नगरमां अनेक चतुर पुरुषो वसता हता. मोटा मोटा शिखरवाळा प्रासादो (मंदिरो) अने मोटा मोटा महेलो जेमां होय ते कांइ नगर कहेवातुं नथी; पण ज्यां विद्वान लोको घणा रहेता होय ते जो के गामडुं होय तोपण नगर कहेवाय छे. ते नगरमां कोइ मागण देखातोज नहीं, छतां कदाच कोइ देखातो-तो ते लोकोने प्रतिबोध करवा माटेज भमतो हतो. कह्युं छे के—

द्वारं द्वारमटन्तो हि भिक्षुकाः पात्रपाणयः ।
कथयन्त्येव लोकानामदत्तफलमीदृशम् ॥ १ ॥

" हाथमां पात्र राखीने घेर घेर भटकता भिक्षुको लोकोने एम कहे छे के दान नहीं देनारने आवुं (अमारा जेवुं) फळ मळे छे. "

ते नगरमां जयवर्मा नामे राजा हतो, अने ते राजाने मानवा लायक मनोरथ नामे शेठ हतो. तेने लक्ष्मी नामनी स्त्री हती. ते स्त्रीथी शेठ बहु सुखी हतो. कह्युं छे के—

संसारश्रान्तदेहस्य, तिस्रो विश्रामभूमयः ।
अपत्यं च कलत्रं च, सतां संगतिरेव च ॥ १ ॥

" संसारमां श्रांत थयेला देहने (मनुष्यने) त्रण विश्रान्तिनां स्थानक छे. पुत्र, स्त्री अने सज्जनोनी संगति. "

ते श्रेष्ठीने चार पुत्रो हता अने एक अनेक देवोनी पूजाभक्ति विगेरेथी प्राप्त थयेली होलिका नामनी पुत्री हती. ते पुत्री युवावस्था पामी त्यारे तेने तेना पिताए कोइ श्रेष्ठीना पुत्र साथे परणावी; परंतु तेनो संसारसंबंध थया अगाउज ते श्रेष्ठीपुत्र विसूचिकाना व्याधिथी मरण पाम्यो. पूर्व भवे जिनेश्वरनी आज्ञानुं आराधन करेलुं न होवाथी बाल्यावस्थामां ज होलिकाने विधवापणुं प्राप्त थयुं. ए बनावथी तेना मावापने पण घणुं दुःख थयुं. कह्युं छे के—

पुत्रश्च मूर्खो विधवा च कन्या, शठं च मित्रं चपलं कलत्रं ।
विलासकाले धनहीनता च, विनाग्निना पंच दहन्ति कायम् ॥१॥

" मूर्ख पुत्र, विधवा कन्या, शठ मित्र, चपळ स्त्री अने विलास करवाने वखते (युवावस्थामां) निर्धनता-ए पांच अग्नि विनाज मनुष्यना शरीरने बाळी नांखे छे. "

बाळविधवापणुं प्राप्त थवाना संबंधमां कह्युं छे के—

कुरंडरंडत्तण दोहगाइ, विंझत्त निंदू विसकन्नगाइ ।
जम्मंतरे खंडियबंभधम्मा, ताऊण कुज्जा दढसीलभावं ॥

" कुशिळणीपणुं, बाळविधवापणुं, दुर्भागीपणुं, वंध्यापणुं, काकवंध्यापणुं[1] अने विषकन्यापणुं, इत्यादिक जन्मांतरमां ब्रह्मचर्य खंडन करवाथी प्राप्त थाय छे, माटे शीळव्रतमां दृढ भाव राखवो. "

पछी ते होलिकाने तेना मावापे पोताने घेर लावीने राखी. होलिका निरंतर घरनी मेडी उपर गोखमां बेसी रहेती हती, अने मदोन्मत्तनी जेम कामव्यथाथी पीडा पाम्या करती हती. कह्युं छे के—

बालरंडा तपस्वी च, कीलबद्धश्च घोटकः ।
अन्तःपुरगता नारी, नित्यं ध्यायन्ति मैथुनम् ॥ १ ॥

" बाळ विधवा, तापसी, खीले बांधी राखेलो अश्व अने राजाना अन्तःपुरमां रहेली स्त्री निरंतर मैथुननुंज ध्यान करे छे. " वळी—

---

१ मृत पुत्रो प्रसवे ते.

नर सासरे स्त्री पीहरे, यति कुसंगतवास ।
नदीतीरे तरु माल कहे, यदि तदि होय विणास ॥ २ ॥

" पुरुष सासरे रहेवाथी, स्त्री पियरमां रहेवाथी, यति कुसंगतमां वसवाथी अने वृक्षो नदीने कांठे रहेवाथी ज्यारे त्यारे पण विनाश पामे छे एम माल कवि कहे छे. "

शास्त्रमां कह्युं छे के—

सीसा य जे संजमजोगजुत्ता, पुत्ताय जे गेहभरे नियुत्ता ।
वियारबुद्धी कुलबालियव्वा, होउण तेसिं उवसंतिमेइ ॥ १ ॥

भावार्थ—" जेओ संयमयोगथी युक्त होय तेज शिष्यो कहेवाय छे, जेओ गृहभारमां जोडायेला होय तेज पुत्रो कहेवाय छे, अने जे सद्विचारयुक्त बुद्धिवाळी होय तेज कुळबालिका कहेवाय छे. तेमने कदि विकारबुद्धि थाय छे तोपण ते उपशांतिने पामे छे. "

माटे शिष्यने, पुत्रने तथा कुळवधूने पोतपोताना कार्यमां अवलंबन सहित एटले जोडायेला राखवा. आ होलिका तो तद्दन आलंबन रहित बीलकुल नवरी हती, तेथी तेना कामविकार केम वृद्धि न पामे ? कह्युं छे के—

यौवनं धनसंपत्तिः, प्रभुत्वमविवेकिता ।
एकैकमप्यनर्थाय, किमु यत्र चतुष्टयम् ॥ १ ॥

भावार्थ—" युवावस्था, धनसंपत्ति, प्रभुत्व (अधिकारीपणुं) अने अविवेकीपणुं, आमांनुं एक एक पण अनर्थकारी छे, तो ज्यां चारे भेगा होय त्यां तो शुं कहेवुं ? "

एकदा ते होलिका पोताना महेलना गोखमां बेठी हती ते वखते बंगदेशना राजानो पुत्र कामपाल क्रीडा माटे जतां अश्वपर बेसीने त्यांथी नीकळ्यो. तेने जोइने ते होलिकाए तेना पर कामदेवना बाणरूप कटाक्ष नांख्या; एटले कामपाळ पण तेना रूपथी मोह पामीने वारंवार तेनी सामुं जोवा लाग्यो. कह्युं छे के,—

दिट्ठि दिट्ठपसरो, पसरेण रइ रईइ सब्भावो ।

सब्भावेण य नेहो, पंच य बाणा अणंगस्स ॥ १ ॥

भावार्थ—" प्रथम जोवुं, जोवाथी दृष्टिनो प्रसार, दृष्टिप्रसारथी रति, रतिथी सद्भाव अने सद्भावथी स्नेह उत्पन्न थाय छे, ते पांचे कामदेवनां बाणो छे."

आ प्रमाणे बन्नेने परस्पर स्नेह थवाथी पोतपोताने घेर पण तेओ परस्परनुं ध्यान करवा लाग्या. खावामां, पहेरवामां के बीजा कोइ पदार्थमां तेओ प्रीति पाम्या नहीं. कह्युं छे के—

नेम म करजो कोइ, गोरसु नितु नितु इम भणे ।
नेह पसाइं योय, जिम दहियडो विलोडिउ ॥ १ ॥
आइ फिरो सहु कोइ, अणगमतो आठे पुहर ।
जो मन विसम्यो होइ, सो मुझ किमे न विसरे. ॥२॥

भावार्थ—" कोइ पण स्नेह करशो नहीं " एम हमेशां गोरस कहे छे; केमके स्नेह (माखण) ना वशथी दहींने वलोवावुं पडे छे. " १

" अणगमता माणसो आठ पहोर भले आवे जाय, पण जेना पर मन विश्राम पाम्युं छे तेमने ते कोइ रीते विसरतुं नथी. " २

एकदा होलिकाने तेना पिताए पूछ्युं के " हे पुत्री ! तुं केम दुःखित, म्लान मुखवाळी अने अति कृश देखाय छे ? " ते सांभळीने तेणे कांइ उत्तर आप्यो नहीं. त्यारे पिताए विचार्युं के " आ बिचारी बाळविधवा शुं बोले ? पूर्व कर्मना उदयथी ते अति दुःखियारी थइ छे; केमके हजारो गायोमां पण वाछडा जेम पोतानी माताने ओळखी तेनी पासे जाय छे, तेम पूर्वे करेलुं कर्म पण तेना कर्त्तानी पासेज जाय छे. तोपण आ पुत्रीने हुं कांइक भणवा विगेरेनुं अवलंबन करी आपुं के जेथी तेना दिवसो निर्गमन थाय. "

हवे ते नगरमां एक चंद्ररुद्र नामे ब्राह्मण रहेतो हतो. ते द्रव्यना लोभथी भांडचेष्टा करतो हतो, तेथी ते भांडना नामेज ओळखातो हतो. तेने ढुंढा नामनी एक पुत्री हती. ते युवावस्था पामी, तोपण तेने कोइ ब्राह्मण परण्यो नहीं. तेथी चंद्ररुद्रे तेने अचळभूति नामना कोइ भांड साथे परणावी; एटले सरखे सरखो योग मळ्यो. जुगारीनी पुत्रीने गंठीचोरनो पुत्र परण्यो. ए जुगते जुगती जोड

मळी जाणे रत्नाकरमां रत्न मळी गयुं ! उंटना विवाहमां गधेडा गीत गानार थया, पछी परस्परना वखाण करे. गधेडा कहे के–'अहो ! उंटभाइनुं केवुं सुंदर रूप छे ?' त्यारे उंट कहे के 'अहो ! गधेडाभाइनुं केवुं सुंदर गायन छे ?' हवे ते ढुंढा परणी के तरतज पिताना तथा पतिना बन्नेना कुळनो क्षय थयो; तेथी उदरनिर्वाहन माटे ते ढुंढा परिव्राजिकानो वेष धारण करीने कामण, मारण, उच्चाटन विगेरे पापकर्मथी आजीविका करवा लागी.

एकदा ते ढुंढा भिक्षाने माटे भ्रमण करती मनोरथ श्रेष्ठीने घेर गइ. श्रेष्ठीए तेने बेसवा माटे आसन आपी कुशळता पूछी. त्यारे ते धर्मना अक्षरो बोली के–

काला कुशल किम पूछीए, नितु उगंते भाण ।
जरा आवे जोवण खसे, हाणी विहाण विहाण ॥ १ ॥

भावार्थ–" हे काला शेठ ! तमे कुशळता शी पूछो छो ? हंमेशां सूर्य उगे छे के युवावस्था घटे छे ने जरावस्था आवे छे; वहाणे वहाणे हानि थती जाय छे, त्यां कुशळतानी शी वात ?

काया पाटण हंस राजा, पवणु फिरे तलारो ।
तिण पाटण वसे जोगी, जाणे जोग विचारो ॥ २ ॥

भावार्थ–" कायारूपी नगर छे, त्यां हंसरूपी राजा रहे छे, तेमां पवनरूपी कोटवाळ फरे छे, ते नगरमां एक जोगी वसे छे, ते जोगना विचारो जाणे छे."

इक खोलडि पंचहिं जण रुंधी, तिन्ह सगलहि जूजूइबुद्धि ।
कह भाउ मा घरु किम नंदे, जत्थ कुटुंबउ अप्पण छंदइ ॥३॥

भावार्थ–" एक झुंपडी पांच जणे रुंधी छे. ते पांचे जणनी जूदी जूदी बुद्धि छे. तो हे भाइ ! कहे के ज्यां आखुं कुंटुंब स्वच्छंदे चाले छे ते घर शुं आनंद आपे ? "

जर कुत्तो जोवण ससा, काल आहेडी मित्त ।
बिहु वयरि विच झुंपडा, कुशल किं पूछे मित्त ॥ ४ ॥

भावार्थ–" हे मित्र ! जरारूपी कूतरो छे, जोबन (युवावस्था) रूपी

ससलो छे, अने काळरूपी आहेडी (शिकारी) छे. तेमांना बे दुश्मनने वच्चे आ शरीररूपी झुंपडुं रहेलुं छे. तेमां हे मित्र ! तमे शी कुशळता पूछो छो ?"

तेनां आवां वचनो सांभळीने श्रेष्ठीए विचार्युं के "अहो ! युवावस्था छतां पण आनामां केवो विस्मय उत्पन्न करे तेवो वैराग्य छे ?"

धातुषु क्षीयमाणेषु, शमः कस्य न जायते ।
प्रथमे वयसि यः साधुः, स साधुरिति मे मतिः ॥ १ ॥

भावार्थ—"धातुओ क्षीण पामे त्यारे तो पछी कोने समता न उत्पन्न थाय ? सौने थाय; पण प्रथम वयमां जे साधु (वैराग्यवान) होय तेज खरो साधु, एम हुं तो मानुं छुं."

पछी श्रेष्ठीए तेने विनंति करी के "हे स्वामिनी ! मारी पुत्री बाळ विधवा छे, तेने तमे धर्मनो अभ्यास करावो, के जेथी तेना चित्तमां वैराग्य उत्पन्न थाय; केमके जे माणस जेवो संग करे तेवो ते स्वल्प काळमां थइ जाय छे. पुष्पनी साथे रहेवाथी तल पण सुगंधी थाय छे, अने चंदनना वनना संगथी बीजां वृक्षो पण चंदनरूप थइ जाय छे; मात्र जेना हृदयमां गांठ छे एवा वांसज चंदनरूप थता नथी." ते सांभळीने ढुंढा बोली के तपस्वीओने गृहस्थीओनो संग करवो गुणकारी नथी. कह्युं छे के—

द्वाविमौ पुरुषौ लोके, शिरःशूलकरौ परौ ।
गृहस्थश्च निरालंबी, सालंबी च यतिर्भवेत् ॥ १ ॥

भावार्थ—"गृहस्थ आलंबन रहित (दरिद्री) होय, अने यति आलंबन सहित (मायावी-द्रव्यवान्) होय तो ते बे पुरुषो आ दुनियामां अत्यंत मस्तकमां शूळ उत्पन्न करनारा छे."

दंभी माणसोने नकार (ना कहेवी ते) गुणकारी छे. केमके—

मनमांहि भावे मुंड हलावे, नं नं कही कही लोक सुणावे ।
मनकी बात कबहु को जाणे, कपट चिन्ह ए माल वखाणे ॥१॥

भावार्थ—"मनमां गमतुं होय पण माथुं हलावे, ना ना कहीने लोकोने

समजावे, पण मननी वात कोण जाणे ? आ प्रमाणे माल कविए कपटनुं चिन्ह कहेलुं छे. "

पछी ढुंढाए पोतानो अभिप्राय जणाव्यो के " कृपण माणसनो मोटो धवल महेल होय तोपण ते शा कामनो ? पण ज्यां पंथीजनोने विश्रांति मळती होय तेवुं झुंपडुं घणुं सारुं. "

आ प्रमाणेनां तेनां निःस्पृहतानां वचनो सांभळीने श्रेष्ठी तेने मानपूर्वक होलिका पासे लइ गयो, अने तेने कह्युं के " हे पुत्री ! आ तारी गुरुणी छे. तेनी पासे तुं अभ्यास करजे अने तेनी सेवा करजे." त्यारथी आरंभीने ते होलिका ढुंढा साथे रहेवा लागी, पण मनमां कामपाळना संगनी इच्छा होवाथी ते भणती नहीं. कह्युं छे के " जेने कांइ सहज पण बोध नथी तेनी पासे घणी वातो करवाथी पण शुं ? कूतरानुं पूंछडुं निरंतर नळीमां राख्युं होय तोपण ते सरल थतुं नथी." एकदा ढुंढाए पूछ्युं के " हे पुत्री ! तुं सदा उद्विग्न केम जणाय छे ? " त्यारे होलिकाए पोतानी सत्य वात तेने कही. ते सांभळीने ढुंढा बोली के " तुं जरा पण उद्वेग करीश नहीं. हुं तारुं काम थोडा काळमांज सिद्ध करी आपीश. " एम कहीने ढुंढाए कामपाळने घेर जइने तेने कह्युं के " तमारा चित्तने हरण करनारी होलिकाने तमारो संबंध नहीं थाय तो तमारा विरहनी पीडाथी ते मरण पामशे. " ते सांभळीने कामपाळ बोल्यो के " अमारा बन्नेनो मेळाप कये स्थाने थाय ? " ते बोली के " सूर्यना मंदिरमां तमारे आववुं, त्यां ते पण आवशे." ते सांभळीने कामपाळ हर्ष पाम्यो, पण ते मूर्ख विचार न कर्यो के परस्त्री साथे प्रेम राखतां केटली मुदत सुधी क्षेमकुशळ रहेशे ? केमके सापने साथरे सुनारने क्यां सुधी क्षेम रहे ? परस्त्रीना प्रेमथीज तोरण सहित लंकानगरी बळी गइ, अने वनो श्यामवर्ण थइ गयां. माटे परस्त्री साथे प्रेम करनारना शिर उपर कानज नथी एम जाणवुं. पछी कामपाळे पोतानुं कार्य साधवा माटे ते ढुंढाने सन्मानपूर्वक विदाय करी. कह्युं छे के—

सत सायर मि फर्या, जंबूदीव पइट्ठ ।
कारण विणु जो नेहडो, सो में कहीं न दीठ ॥ १ ॥

भावार्थ—" जंबूद्वीपनी प्रदक्षिणा देतो देतो सात सागर हुं फर्यो, पण

कारण विनानो स्नेह में कोइ ठेकाणे जोयो नहीं."

पछी ढुंढाए होलिका पासे आवीने सर्व वृत्तांत तेने कह्यो. प्रातःकाळे सूर्यनी पूजा माटे सर्व सामग्री लइने ते होलिका ढुंढा गुरुणी साथे सूर्यना चैत्ये गइ. त्यां कामपाळ पण आव्यो. पछी घणा दिवसनी विरहपीडाने लीधे ते कामपाळे तेने गाढ आलिंगन कर्युं, त्यारे ते मायावी होलिका मनमां कांइक विचार करीने पोकार करवा लागी के "हे लोको! दोडो, दोडो, आ परस्त्रीना शीलव्रतने भंग करनार लुब्ध पुरुषने पकडो, पकडो." एम मोटेथी बूम पाडवा लागी. कह्युं छे के—

नामृतं न विषं किंचिदेकां मुक्त्वा नितंबिनीम् ।
सैवामृतलता रक्ता, विरक्ता विषवल्लरी ॥ १ ॥

भावार्थ—"एक स्त्री सिवाय बीजुं कांइ पण अमृत नथी के विष पण नथी; ते स्त्रीज जो रक्त होय तो अमृतलता छे, अने विरक्त होय तो तेज विषलता छे."

होलिकानी बूम सांभळीने तेनो पिता दोडी आव्यो, अने तेणे कामपाळने पूछ्युं के "अरे! केम तुं परस्त्रीना कंठमां वळगी पड्यो?" ते सांभळीने महा धूर्त कामपाळे कह्युं के "मारी स्त्री तमारी पुत्रीना जेवीज छे, तेथी में जाण्युं के 'आ मारी स्त्री छे' एम धारीने में तेने आलिंगन कर्युं." एम कहीने ते कामपाळ जतो रह्यो. पछी होलिकाए पोताना मातापिताने कह्युं के "अहो! सती स्त्रीओमां प्रधान एवी मने परपुरुषनो स्पर्श थयो, तेथी हुं दुषित थइ. माटे हवे हुं अग्निमां प्रवेश करीश. मारुं जीवित हवे अधन्य छे. तेथी अहींज आ सूर्य चैत्यनी पासेज आ देहने भस्मसात् करीश."

रोयंति रुयावंति य, अलियं जंपंति पत्तियावंती ।
कवडेण खयंति विसं, मरंति नवि देंति सब्भावं ॥ १ ॥

भावार्थ—"पतिव्रतानो डोळ राखती कुलटा स्त्रीओ पोते रुए छे, बीजाने रोवरावे छे, असत्य बोले छे, विश्वास पमाडे छे, कपटथी विष खाय छे, अने छेवट मरी पण जाय छे, परंतु पोतानो सद्भाव (खरी वात) कोइने जणावती नथी."

होलिकानां आवां वचनो सांभळीने तेना मातपिताए शिखामण दीधी के " हे पुत्री ! तुं केम बहु आग्रह करे छे ? तेणे अजाणतां भ्रांतिथी तारो स्पर्श कर्यो छे, तेथी निर्विकारीनो दोष लागतो नथी. कह्युं छे के—

गृह्णाति दन्तैः शिशुमाखुमोतुः पद्मं च वंशं दशति द्विरेफः ।
भार्यां सुतां श्लिष्यति वै मनुष्यस्तत्रापि नित्यं मनसः प्रमाणम् ॥१॥

भावार्थ–" बिलाडी पोताना दांतवडे पोताना बच्चांने पकडे छे तथा उंदरने पण पकडे छे, भमरो कमळने डसे छे तथा वांसने पण डसे छे, अने पुरुष पोतानी स्त्रीने आलिंगन करे छे तथा पुत्रीने पण आश्लेषे छे; परंतु ते सर्वमां मनज प्रमाण छे. "

इत्यादि उपदेश आपी तेने समजावीने तेनो पिता तेने घर तेडी गयो. आ वृत्तांत जाहेरमां आववाथी लोकोमां ते होलिका महासतीना नामथी प्रख्यात थइ. पछी ते प्रातःकाळे, सायंकाळे, रात्रीए, गमे ते वखते स्वेच्छाथीज ढुंढाने छेतरी–तेने साथे राख्या विना सूर्यचैत्यमां जवा लागी. कह्युं छे के—

यात्रा जागर दूरवारिभरणं मातुर्गृहेऽवस्थिति–
र्वस्त्रार्थं रजकोपसर्पणमपि स्याचर्चिकामेलनम् ।
स्थानभ्रंश सखीनिवासगमनं भर्तुः प्रवासादिका,
व्यापाराः खलु शीलखंडनकराः प्रायः सतीनामपि ॥ १ ॥

भावार्थ—" एकला यात्राए जवुं, बीजी स्त्रीओनी साथे जागरण करवुं, दूर पाणी भरवा जवुं, माने घेर (पियर) वधारे रहेवुं, लुगडां लेवा देवा माटे धोबीने घेर जवुं, गरबे रमवा जवुं, स्थानथी भ्रष्ट थवुं (पारके घेर जवुं), सखीना निवासमां जवुं अने पतिनुं परदेशगमन थवुं, इत्यादि व्यापारो सती स्त्रीओने पण प्राये शीलखंडन करनारा थाय छे. "

एकदा फागण मासनी पूर्णिमानी रात्रीए होलिका सूर्यना चैत्यमां गइ. त्यां कामपाळ पण आव्यो हतो. बन्ने जण क्रीडा करता सता सुखे बेठा हता. ढुंढा तापसी चैत्यनी पासेनी पर्णकुटीमां सुती हती. ते वखते ते बन्नेए विचार कर्यो

के "आपणुं कार्य तो सिद्ध थयुं, पण आ ढुंढा आपणो सर्व मर्म जाणे छे, तेथी ते कोइवार आपणने दुःखदायी थशे, माटे तेने मारी नांखवा योग्य छे. कह्युं छे के—

उपाध्यायश्च वैद्यश्च, नर्तक्यश्च परस्त्रियः ।
सूतिका दूतिका चैव, सिद्धे कार्ये तृणोपमाः ॥ १ ॥

भावार्थ—"उपाध्याय (महेताजी), वैद्य, नृत्य करनारी, परस्त्री, सूतिका (सुयाणी) अने दूती (संदेशो लइ जनारी) ए बधां कार्य सिद्ध थया पछी तृण समान छे."

मंत्रबीजमिदं पक्कं, रक्षणीयं यथा तथा ।
मनागपि न भिद्येत, तद्भिन्नं न प्ररोहति ॥ २ ॥

भावार्थ—"आ मंत्ररूपी परिपक्क बीजनुं एवी रीते रक्षण करवुं के ते जरा पण भेदाय नहीं, केमके भेद पामवाथी ते उगतुं नथी."

सुगुप्तस्यापि दंभस्य, ब्रह्माप्यन्तं न गच्छति ।
कोलिको विष्णुरूपेण, राजकन्यां निषेवते ॥ ३ ॥

भावार्थ—"सारी रीते छुपावेला दंभनो पार ब्रह्मा पण पामी शकता नथी. जुओ एक कोळी विष्णुनुं रूप धारण करीने राजकन्या भोगवतो हतो." आ दृष्टांत पंचतंत्रादिकथी जाणी लेवां.

पछी होलिकाए ते पर्णकुटीनी फरतां काष्ठ विगेरे गोठवीने तेमां एक मनुष्यनुं शब नांखीने ढुंढा सहित ते झुंपडी बाळी दीधी. पछी होलिका तथा कामपाळ त्यांथी नासी देशान्तर गया. रागातुर थयेली पापी नारी शुं नथी करती ? कह्युं छे के—

मारइ पियभत्तारं, हणइ सुयं तह पणासए अत्थं ।
नियगेहंपि पलिवइ, नारी रागाउरा पावा ॥

भावार्थ—"पोताना प्रिय भर्त्तारने मारे छे, पुत्रने हणे छे, द्रव्यनो नाश

१ गुप्त हकीकत–छानुं करेलुं कार्य.

करे छे, अने पोताना घरने पण बाळी मूके छे. रागातुर पापी स्त्री एटलां वानां करे छे. "

पछी प्रातःकाळे ते चैत्य पासेनी झुंपडी बळेली जोइने लोको परस्पर पूछवा लाग्या के "अरे ! आ शुं थयुं ?" तेवामां भद्रक मनोरथ श्रेष्ठी पोताना घरमां ढुंढा तापसीने तथा होलिकाने नहीं जोवाथी खेद पामीने बोल्यो के "जरुर एक चितामां ए बन्ने जणी बळी मरी. प्रथम में महा प्रयत्ने तेने अग्नि प्रवेश करतां अटकावी हती; परंतु पोताना पापनी निवृत्ति माटे तेणे पोतानुं सतीपणुं सत्य करी बताव्युं. तापसी पण तेनी साथेना स्नेहने लीधे बळी मुइ." ते सांभळीने-"अहो! आ होलिका सतीनी भस्म महा पवित्र छे, तेनुं अंगपर विलेपन कर्याथी जरुर सर्व दुःखनो नाश थशे." एम बोलता लोको तेनी चिताने पगे लागवा लाग्या अने तेनी भस्म लइने माथे चढाववा लाग्या. त्यारपछी दर वर्षे फाल्गुन शुदि पूर्णिमानी रात्रिए ते स्थाने सर्व लोको इन्धन, छाणा विगेरेनो ढगलो करीने हुताशिनी सळगाववा लाग्या. ए प्रमाणे सर्वत्र होळीनुं पर्व प्रख्यात थयुं.

एकदा कामपाळे होलिकाने कह्युं के "धन विना मनोरथ पूर्ण थता नथी; माटे हुं द्रव्यने माटे परदेश जाउं." ते सांभळीने होलिका बोली के "हे स्वामी! तमारे माटे में जाति कुळादिकनो त्याग कर्यो छे, तमारो विरह एक क्षण पण हुं सहन करी शकुं तेम नथी." ते सांभळीने कामपाळे मोहने लीधे तेनुं वचन सत्य मान्युं, अने जवानो विचार बंध राख्यो; केमके " लीलावाळी स्त्रीओना स्वाभाविक विलासो पण मूढ पुरुषना हृदयमां स्फुरणायमान थया करे छे. कमळ उपर स्वाभाविक राग होवाथी त्यां भ्रमराओ वृथा भ्रमण कर्या करे छे."

अन्यदा होलिकाए कह्युं के "हे प्रिय ! में सर्व विचार कर्यो, पण मारा पिताना घर सिवाय बीजे कोइ स्थाने धननो लाभ जणातो नथी." त्यारे कामपाळ बोल्यो के "आपणे मोटुं अकार्य करीने नीकळी गया, तेथी हवे पाछुं त्यां शी रीते जवाय ?" ते बोली के "हुं एवी दंभ रचना करीश के जेथी पिता विगेरे सर्व जनो अनुकूळ थशे. आपणे नीकळ्या पछी ते गाममां महापूज्य अने मान्य एवुं होलीनुं पर्व लोकोमां प्रसर्युं छे, माटे त्यां ज जवुं योग्य छे." एम विचारीने ते बन्ने जयपुर गामनी नजीक आव्या. पछी होलिकाए कामपाळने कह्युं के "तमे मारा बापनी दुकाने जइने एम कहो के "हे शेठ! मारी स्त्रीने माटे एक

साडी मूल्य लइने आपो." ते सांभळीने कामपाळ मनोरथ शेठनी दुकाने जइने तेनी पासेथी मूल्य आपीने एक साडी लइ होळी पासे आव्यो. ते साडी जोइने होळीए कह्युं के "आवी साडी शुं कामनी? बीजी सारी लइ आवो." एटले कामपाळे फरीथी जइने बीजी साडी लावी बतावी. ते साडी पण होळीए पाछी मोकली. त्यारे मनोरथ शेठे कह्युं के "तमे वारंवार जाव-आव करो छो ते करतां तमारी स्त्रीनेज अहीं लावो. एटले तेने गमे तेवी साडी लइ ले." ते सांभळीने कामपाळे होळीने जइने ते शेठनुं वाक्य कह्युं; एटले तरतज होळी शेठने हाट गइ. त्यां ते बीजी बीजी साडीओ जोवा लागी. ते वखते शेठ अनिमेष दृष्टिए ते होळीनी सामुं वारंवार जोवा लाग्यो, एटले प्रथमथी शिखवी राख्या प्रमाणे कामपाळ बोल्यो के "हे शेठ! तमे सुपात्र थइने परस्त्रीना सामुं केम जोया करो छो?" शेठे कह्युं के "हुं कामना विकारथी जोतो नथी, पण मारी पुत्रीना जेवुं आनुं रूप लावण्य जोइने मने विचार थयो के शुं तेज मारी पुत्री फरीथी मनुष्यरूपे अहीं आवी छे? केमके ते तो अग्निमां प्रवेश करीने सती थइ छे." कामपाळ बोल्यो के "आ स्त्रीनुं नाम पण होळीज छे, पण आ तो मारी पत्नी छे." आ प्रमाणेना भ्रमथीज पूर्वे में पण सूर्य चैत्यमां मारी पत्नी धारीने तमारी पुत्रीने आलिंगन कर्युं हतुं. आजे तमने पण मारी पत्नी उपर पोतानी पुत्रीनो भ्रम थयो, पण सरखां रूप-लावण्यवाळां घणां स्त्री पुरुषो आ दुनियामां होय छे; तेमां तमारो कांइ दोष नथी." ते सांभळीने शेठे स्नेहथी ते बन्नेने पुत्री तथा जमाइ करीने घेर राख्या. अहो! स्त्रीओनी केवी गूढ मति होय छे! कह्युं छे के—

> लब्भइ वारिहि पारं, लब्भइ पारं च सव्वसत्थाणं।
> महिलाचरियाणं पुणो, पारं न लहेइ बंभा वि ॥ १ ॥

भावार्थ—"समुद्रनो पार पामी शकाय, तथा सर्व शास्त्रोनो पार पण पामी शकाय, परंतु स्त्रीचरित्रना पारने ब्रह्मा पण पामी शकता नथी."

हवे पेली ढुंढा तापसी के जे पर्णकुटीमां बळी गइ हती ते शुभ अध्यवसाये मरीने व्यंतर जातिमां देवी थइ हती. तेणे विभंग ज्ञानथी पोतानो पूर्व भव जाणीने जयपुरना लोको उपर कोप करीने विचार्युं के "अहो! आ लोको महा असती अने जीवती होळीने पूजे छे अने तेनी स्तुति करे छे, पण मने तो

कोइ संभारतुं पण नथी." एम विचारीने ते गाम उपर एक मोटी शिला विकु-र्वीने ते बोली के "मने संतोष आपनार एक मनोरथ श्रेष्ठी विना बीजा सर्वने हमणां ज आ शिलाथी चूर्ण करी नांखीश." ते सांभळीने राजा विगेरे सर्व लोक भय पामीने मनोरथ श्रेष्ठीने शरणे गया. त्यारे ते श्रेष्ठीए पूजा बलिदान विगेरे करीने कह्युं के "देव के दानव जे कोइ होय ते प्रगट थइने जे इच्छा होय ते कहो, अमे नगरना सर्व लोको ते प्रमाणे करशुं." ते सांभळीने ढुंढा व्यंतरी पूर्वनो सर्व वृत्तांत कहीने बोली के "होळीनुं पर्व आवे त्यारे सर्व पौरजनो भांडचेष्टा करे, परस्पर गाळो दे, धूळ उछाळे, शरीरे कादव चोळे इत्यादि करे तो आ उपद्रव हुं शांत करुं." ते सांभळीने लोकोए ते प्रमाणे अंगीकार कर्युं. त्यारथी धूळेटीनुं पर्व सर्वत्र प्रसर्युं. "लोक गाडरिया प्रवाह जेवो छे, ते परमार्थने समजतो नथी."

अहीं उपदेशवचन आ प्रमाणेनां धारी राखवां के "एक असंबंध वाक्य बोलवाथी, गाळी प्रदानादि करवाथी जीव अनेक भवमां भोगववुं पडे तेवुं पाप-कर्म बांधे छे, माटे अशुभ प्रलापनो त्याग करीने द्रव्यथी हुताशिनी पर्वने सर्वथा तजवुं अने भावथी बुद्धिपूर्वक शुभ वाक्यने अंगीकार करवुं. स्वपरने हितकारी वाक्यो बोलवां."

"दुष्ट वाक्यना विस्तारवाळुं, मिथ्यात्वथी भरेलुं अने संसारसागरमां डुबावनारुं आ होळी अने रजनुं लौकिक पर्व श्री जिनेन्द्र आगमना तत्त्वनी इच्छावाळा लोकोए अवश्य त्याग करवुं."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ त्रयोविंशतितमस्तंभस्य पंचचत्वारिंशदधिकत्रिशततमः प्रबंधः ॥ ३४५ ॥

॥ संपूर्णोऽयं त्रयोविंशतितमः स्तंभः ॥

श्री उपदेश प्रासाद

(भाषांतर.)

स्तंभ २४ मो.

व्याख्यान ३४६ मुं.

यशोभद्रसूरि अने बलभद्रसूरि मुनि.

तपस्वी रूपवान् धीरः, कुलीनः शीलदार्ढ्ययुक् ।
षट्त्रिंशद्गुणाढ्योऽभूच्छ्रीयशोभद्रसूरिराट् ॥ १ ॥

भावार्थ—" तपस्वी, रूपवान्, धीर, कुलीन अने शीळ पाळवामां दृढतावाळा श्री यशोभद्रसूरि आचार्यना छत्रीश गुणोथी युक्त थया. " तेनी कथा नीचे प्रमाणे—

यशोभद्रसूरिनी कथा.

पल्लीपुरीमां ज्यारे श्री यशोभद्र मुनिने आचार्यपदवी मळी, ते वखते तेणे जीवित पर्यन्त हमेशां आठ कवळवडेज आयंबिल करवानो अभिग्रह लीधो. एवो नियम धारण करीने इर्यासमितिपूर्वक मार्गमां विचरता ते सूरिने एक महिमावाळी सूर्यनी प्रतिमाए जोइने मनमां विचार्युं के " अहो ! आ सूरि जो मारा भुवनमां पधारे तो मारो जन्म सफळ थाय. " एम विचारीने सूर्ये आकाशमां वादळां विकुर्वीने जळनी वृष्टि करवा मांडी. ते वखते ' माराथी अप्कायनी विराधना न थाओ ' एम धारीने सूरिए समीप होवाथी ते सूर्यनाज चैत्यमां प्रवेश कर्यो. ते सूरिना तपना प्रभावथी सूर्ये प्रत्यक्ष थइने वरदान मागवानुं कह्युं; केमके देवनुं दर्शन निष्फळ होतुं नथी; तोपण इच्छारहित सूरि कांइ पण माग्या विनाज पोताना उपाश्रये गया. त्यारे सूर्ये ब्राह्मणनुं रूप लइने स्वर्ग नरकादिकमां रहेला सर्व जीवोने जोइ शकाय तेवी एक अंजननी शीशी तथा एक दिव्य पुस्तक सूरिने आप्युं. ते पुस्तक मात्र वांचवाथी सूरिने सर्व विद्याओ पाठसिद्ध थइ गइ. पछी ' आ विद्याओ पाश्चात्य मुनिओने अयोग्य छे' एम विचारीने सूरिए पोताना

शिष्य बळभद्र मुनिने बोलावीने कह्युं के "आ पुस्तकने उघाड्या विना ज एम ने एम सूर्यना चैत्यमां जइने तेने आपी आव. कहेजे के मारा गुरुने तमे जे थापण आपी हती ते पाछी ल्यो." ए प्रमाणे कहीने गुरुए बळभद्र मुनिने मोकल्या. गुरुए ते पुस्तक उघाडवानी सखत मना करी हती, तोपण तेणे त्यां जइने चैत्यनी बहार ते पोथी छोडीने तेमांथी मंत्रोनी आम्नायनां त्रण पानां चोरीने गुप्त राख्यां. पछी चैत्यमां जइने सूर्यनी प्रतिमाने गुरुनुं वचन कही ते पुस्तक आप्युं, एटले ते प्रतिमाए पण हाथ लांबो करीने ते लइ लीधुं. पछी बळभद्र मुनि चैत्यनी बहार आवीने जुए छे तो संताडेलां पानां जोयां नहीं; तेथी ते पोताना आत्माने उपालंभ देवा लाग्यां के "मने धिक्कार छे केमके में गुरुनी आज्ञा उल्लंघी अने संताडेलां पत्र पण कोण जाणे क्यां गयां?" एम खेद करतां तेनां नेत्रोमां अश्रु भराइ गयां. ते जोइने सूर्ये तेने कह्युं के "हे मुनि! शा माटे खेद करो छो? ल्यो आ त्रण पत्रो, तेवडे शासननी उन्नति वधारजो." ते लइने तेणे ते त्रण पत्रोमां रहेली विद्याने पाठमात्रथीज सिद्ध करी लीधी.

एकदा गुरु बहिर्भूमि (स्थंडिल) गया हता अने प्रासुक जळने तेने माटे कहेला काळथी कांइक अधिक काळ सुधी प्रासुक राखवा माटे बकरानी लींडीओ आणी राखेली पासे पडी हती, ते वखते बळभद्र मुनिए भूली न जवाय तेटला माटे संजीविनी विद्यानी आवृत्ति करी. ते विद्याना प्रभावथी जेटली लींडीओ हती तेटला बकरा बकरीओ थइ गयां; तेवामां गुरु बहिर्भूमिथी आव्या. उपाश्रयमां बकरांओनो बूत्कार शब्द सांभळीने गुरुए बळभद्र मुनिने उपालंभ आप्यो. त्यारे ते मुनिए कह्युं के "हे गुरु! थयुं न थयुं थवानुं नथी. हवे हुं शुं करुं? आप आज्ञा आपो." गुरु बोल्या के "जीवरक्षाने माटे अजापाळ (गोवाळ) नुं स्वरूप धारण करीने तथा साधुवेषने गुप्त करीने बे वाडा भिन्न भिन्न करी एकमां बकरीओ अने एकमां बकराओ राखवां. तेमनी संततिनी वृद्धि न थवा देवा माटे बकरा तथा बकरीनो मेळाप थवा देवो नहीं. तेओने भक्षण पण अचित्त आपवुं. आ प्रमाणे ते सर्व जीवे त्यां सुधी यत्नथी तेमनुं रक्षण करवुं." आ प्रमाणे ते बकरांनो रक्षानो उपदेश करीने सूरिए अन्य स्थाने विहार कर्यो.

पछी बळभद्र मुनि गुरुमहाराजनी आज्ञानो स्वीकार करीने कोइ गिरिनी

गुफामां रही अव्यक्त वेषे बकरानां टोळांने औषधि (सुकुं घास) चरावका लाग्या अन तेनी लींडीओवडे होम करवा लाग्या. त्यां अनुक्रमे तेणे घणी विद्याओ सिद्ध करी.

एकदा रैवतगिरिनुं तीर्थ बौद्ध लोकोए दबाव्युं, अने [1]रायखेंगार राजाने तथा तेनी राणीने तेओए पोताना उपासक बौद्धधर्मी कर्या; तेथी एवुं थयुं के श्वेतांबरोनो ते तीर्थमां प्रवेश पण बंध थयो. एकदा त्यां श्वेतांबरना चोराशी संघो एकठा थया. तमणे दर्शन करवा जवानी मागणी करी, ते वखते राजाए आज्ञा करी के "बौद्ध धर्मनो अंगीकार करीने पछी देवने वंदन करवा जाओ." ते सांभळीने सर्व अत्यंत खेद पाम्या. पछी कोइ कन्याना देहमां अंबादेवीने उतारीने तेने श्वेतांबरोए कह्युं के "हे देवी! संघना विघ्ननुं निवारण करवामां सहायभूत थाओ." देवीए कह्युं के "बोद्धना व्यंतरोए तीर्थ रुंध्युं छे, तेथी बीजा सहायकारक विना एकली मारी शक्ति तेनी सामे चाले तेम नथी. शासननो उद्योत करवामां सूर्य समान अने जीवन पर्यंत तपमां आसक्त एवा श्री यशोभद्र स्वामी तो स्वर्गे गया छे; परंतु एक बळभद्र मुनि अमुक स्थाने बीराजे छे, ते मुनिने जो तमे लावो तो ते तीर्थ पाछुं वळे." ते सांभळीने संघपतिओए ते मुनिने बोलाववा माटे एक सांढणी मोकली, तेना पर बेसीने केटलाक माणसो बळभद्र मुनिवाळा वनमां गया. त्यां एक माणस बकरां चारतो हतो, तेने तेओए पूछयुं के "अहीं बळभद्र मुनि क्यां रहे छे ?" ते सांभळीने अजापालनो वेष धारण करनार ते बळभद्र मुनिज बोल्या के "अमुक गुफामां जाओ, त्यां ते बेठा छे." एम कहीने ते माणसो ते स्थाने पहोंच्या पहेलां बळभद्र मुनि त्यां जइने साधुवेषे बेठा. पछी ते उंटपर बेसीने आवेला श्रावकोए त्यां आवीने तेमने संघनी कहेवरावेली विज्ञप्ति कही संभळावी. ते सांभळीने बळभद्र मुनि बोल्या के "तमे त्यां जाओ, हुं जलदीथी आवुं छुं." एम कहीने तेओने रजा आपी. पछी पोते आकाशमार्गे संघनी भक्ति करवा त्यां गया, अने जीर्णदुर्ग (जुनागढ) ना राजा खेंगार पासे जइने तेने कह्युं के "हे राजा! संघनी यात्रामां अंतराय न कर. आ तीर्थ बौद्ध लोकोनुं नथी." राजा बोल्यो के "बौद्ध धर्म अंगीकार करे तोज देवने वंदन थवानुं छे, ते शिवाय थवानुं नथी." ते सांभळीने मुनिए राजाना शरीर उपर मंत्रेला अक्षत छांटवा विगेरेथी तेने वेदना उत्पन्न

---

१ आ रायखेंगार सिद्धराज जयसिंहनां वखतमां थइ गया छे ते न समजवा.

करी. पछी संघमां आवीने विद्याबळथी संघनी फरतो अग्निनो किल्लो अने तेने फरती जळनी खाइ बनावीने अंदर सुखेथी रह्या.

अहीं असह्य व्याधिनी पीडाथी रुष्टमान थयेला राजाए संघनो संहार करवा माटे सैन्य सहित सेनापतिने मोकल्यो. ते सेनापति संघना पडाव पासे आव्यो, पण तेनी फरतो अग्निनो प्राकार तथा जळनी खाइ जोइने भय पाम्यो; एटले तेणे दूरथी मुनिने विनंतिपूर्वक कह्युं के "हे मुनि! राजाने कोपायमान न करो." ते सांभळीने पोतानो अतिशय (शक्ति) बताववा माटे मुनिए ते सेनापति अथवा मंत्रीने कह्युं के "मारुं बळ केटलुं छे ते जुओ." एम कहीने राता कणेरना वृक्षनी एक सोटी संहारनी रीते चोतरफ[1] फेरवी, एटले समीपे रहेला सर्व वृक्षोनां शिखरो पृथ्वीपर पडी गयां. ते जोइने मंत्रीए मुनिने कह्युं के "उंदर मात्र उपरनी ढांकणी पाडी नांखवाने समर्थ होय छे, पण ते पाछी ढांकवाने समर्थ होतो नथी." ते सांभळीने बळभद्र मुनिए श्वेत कणेरना वृक्षनी सोटी लइने तेने सृष्टानी रीते[2] फेरवी, एटले ते वृक्षोनां शिखरो हतां तेवां पाछां जोडाइ गयां. ते जोइने चमत्कार पामेला मंत्रीए राजा पासे जइने राजाने मुनिनुं सामर्थ्य जणाव्युं, तेथी भय पामेलो राजा मुनि पासे आवी तेने वंदना करीने बोल्यो के "हे महाराजा! मारो अपराध क्षमा करो. बाळक पितानी अवज्ञा करे छे, पण पिता तेना पर क्रोध करता नथी." मुनि बोल्या के "जो तुं जैनधर्म अंगीकार करीश तो तने आराम थशे." ते सांभळीने मुनिना वचनथी राजाए जैनधर्म अंगीकार कर्यो. पछी श्रीसंघे मोटा उत्सवथी श्रीरैवत गिरि तीर्थना अधिप श्रीनेमिनाथजीनी यात्रा करी.

"यशोभद्रसूरि तथा बलभद्र मुनि जैनशासनना प्रभावक थया. तेमने हुं भक्तिगुण धारण करीने निरंतर वंदना करुं छुं अने तेमनी स्तुति करुं छुं."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ चतुर्विंशतितमस्तंभस्य षट्चत्वारिंशदधिकत्रिशततमः प्रबंधः ॥ ३४६ ॥

१—२ आ संहार ने सृष्टया बंने प्रकारनी विशेष समजण गुरुगमथी मेळववी.

व्याख्यान ३४७ मुं.

सुलभबोधिनुं स्वरूप.

लोभिता बहुभिर्भोगैः, पित्रादिभिर्निरन्तरम् ।
धर्मप्राप्ति समीहन्ति, ते स्युः सुलभबोधिनः ॥ १ ॥

भावार्थ—"पिता विगेरेए निरंतर घणा प्रकारना भोगथी लोभ पमाड्या छता पण जेओ धर्मनी प्राप्तिनेज इच्छे छे तेओ सुलभबोधि कहेवाय छे." आ श्लोकनो भावार्थ नीचे जणावेला दृष्टांतथी जाणवो.

छ मुनिओनी कथा.

चित्र अने संभूति मुनिना जीव पूर्व भवे क्षितिप्रतिष्ठ नामना पुरमां बे गोप हता. ते परस्पर अति प्रीतिवाळा हता. अन्यदा ते बन्ने गोपो साधुना संगथी चारित्र लइ तेनुं प्रतिपालन करी देवता थया. त्यांथी च्यवीने पृथ्वीपुर नगरमां कोइ एक श्रेष्ठीना सहोदर पुत्रो थया. ते बन्नेने बीजा चार महर्धिक श्रेष्ठीपुत्रो मित्र थया. ते छए मित्रोए चिरकाळ सुधी संसारना सुखभोग भोगवीने एकदा गुरु पासे धर्मोपदेश सांभळी इन्द्रियोनुं दमन करी हर्षथी चारित्र ग्रहण कर्युं. पछी तेओ विविध प्रकारनां शास्त्रो भणीने छेवट अनशन करी प्रथम स्वर्गमां नलिनीगुल्म नामना विमानमां चार पल्योपमना आयुष्यवाळा देवो थया.

त्यांथी आयुष्य पूर्ण थतां बे गोपना जीवो विना बीजा चारे जीवो प्रथम चव्या. तेमां एक कुरुदेशमां इषुकारपुरनो राजा इषुकार नामे थयो, बीजो देव ते राजानी राणी थयो, बीजो तेज राजानो भृगु नामनो पुरोहित थयो अने चोथो ते भृगु पुरोहितनी यशा नामे पत्नी थयो. हवे ते पुरोहित वृद्ध उमरनो थवा आव्यो, तोपण तेने कांइ संतति थइ नहीं; त्यारे ते पुत्रनी चिंताथी मनमां अत्यंत आकुळव्याकुळ थवा लाग्यो.

अन्यदा पेला बे गोप देवो अवधिज्ञानथी 'अमे भृगु पुरोहितपुत्रो थइशुं' एम जाणीने साधुना वेषे भृगुने घेर आव्यां. तेमने जोइने हर्षथी भृगु तथा

तेनी स्त्री तेमने नम्या. पछी तेमना उपदेशथी श्रावकधर्म पामीने भृगुए पूछयुं के " हे पूज्य ! मारे पुत्र थशे के नहीं ? " मुनि बोल्या के " तमारे बे पुत्रो थशे, पण ते बाल्यावस्थामांज दीक्षा ग्रहण करशे, ते वखते तमारे तेने अंतराय करवो नहीं. " ते सांभळीने दंपतीए तेमनुं वचन अंगीकार कर्युं. देवो स्वस्थाने गया.

अन्यदा ते बन्ने देवो स्वर्गथी च्यवीने यशानी कुक्षिमां अवतर्या. त्यारे भृगुए विचार्युं के " मारा पुत्रो जन्मथीज कोइ पण साधुने जुए नहीं तो ठीक. " एम धारीने ते भार्या सहित कोइ नाना गाममां जइने रह्यो. पछी समय पूर्ण थये यशाए बे पुत्रोने जन्म आप्यो. ते पुत्रो वृद्धि पामतां विद्या भणवाने योग्य वयना थया. ते वखते तेना मातापिताए तेमने शीखव्युं के " हे पुत्रो ! जे मुनिओ माथे मुंडन करेला, हाथमां दंड धारण करनारा अने नीची दृष्टि राखीने दंभथी बगलानी जेम चालनारा होय छे तेओ बाळकोने पकडीने मारी नांखे छे अने राक्षसोनी जेम तेमनुं मांस खाइ जाय छे; माटे तमारे ते साधुओनी पासे जवुं नहीं. तेओ प्रथम विश्वास उत्पन्न करीने पछी मारी नांखे छे. " आ प्रमाणे सांभळीने ते बाळको साधुने जोवा पण इच्छता नहीं.

अन्यदा ते बन्ने भाइओ स्वेच्छाए क्रीडा करता गाम बहार गया हता; तेवामां दैवयोगे गाममांथी बहार नीकळीने तेमनी सन्मुख आवता मुनिओने जोइने ते बन्ने भाइओ त्रास पामी वन तरफ नाठा. मार्गमां एक मोटो वटवृक्ष आव्यो. तेनापर ते बन्ने चडी गया. साधुओ पण तेज वटवृक्षनी नीचे आव्या अने पृथ्वी प्रमार्जीने जयणार्थी जीवोने दूर करी गाममांथी पात्रमां आणेलुं भोजन खावा बेठा. ते भोजनमांथी एक दाणो पण पृथ्वीपर पडवा दीधो नहीं, तेमज जमतां बचकारानो शब्द पण कर्यो नहीं. ए प्रमाणे ते साधुओनुं चालवुं, बोलवुं, खावुं तथा जोवुं विगेरे समग्र चेष्टन जीवरक्षापूर्वक जोइने वट उपर रहेला ते बन्ने भाइओए विचार कर्यो के " आ मुनिओ तो अन्न खाय छे, मांस खाता नथी, माटे आपणा मातापिताए आपणने खोटा समजाव्या छे, अने तेथी आपणे अत्यार सुधी खोटी भ्रांतिमां रह्या छीए; परंतु आवा साधुओ आपणे पूर्वे कोइ पण स्थाने जोया छे खरा. " एम ध्यान करतां बन्नेने जातिस्मरण ज्ञान थयुं; तेथी पूर्वे ग्रहण करेला चारित्रनुं स्मरण करीने प्रतिबोध पामेला ते बन्ने विचार करवा लाग्या के " अहो ! मातापिताए मोहने वश थइने आपणने मृषावाणीथी छेतर्या छे. "

एम विचारी बन्ने भाइओए वट उपरथी नीचे उतरी मुनिओने वंदन कर्युं, अने तेमनी स्तुति करी. पछी पोताने घर आवी पिताने कह्युं के—

असासयं दट्ठुमिमं विहारं, बहु अंतरायं न हि दीहमाउं।
तम्हा गिहंमि न रइं लभामो, आमंतयामो चरिस्सामु मोणं ॥१॥[1]

भावार्थ—" आ प्रत्यक्ष विहार एटले मनुष्यभवनी स्थिति अशाश्वत एटले अनित्य-क्षणभंगुर जोइने तथा तेमां रोगादिक घणां विघ्नो अने अल्प आयुष्य (क्रोड पूर्वनुं नहीं) जोइने अमे गृहस्थाश्रममां किंचित् पण प्रीति पामता नथी, माटे अमे मौनव्रत एटले चारित्र ग्रहण करवा तमारी रजा मागीए छीए."

ते सांभळीने तेना पिता बोल्या के " हे पुत्रो ! तमे वेदनुं वचन जाणता नथी. वेदमां कह्युं छे के 'अनपत्यस्य गतिर्नास्ति' पुत्ररहित मनुष्यनी गति नथी; तथा 'पुत्रेण जायते लोकः' पुत्रथी लोक उत्पन्न थाय छे, ए प्रमाणे वेदमां कह्युं छे. वळी 'अथ पुत्रस्य पुत्रेण स्वर्गलोके महीयते.' पुत्रनो पण पुत्र होय तो तेथी ते स्वर्गलोकमां पूजाय छे, एम पण कह्युं छे. ते माटे तमे वेदनो अभ्यास करीने, ब्राह्मणोने संतोष पमाडीने, पुत्रोने घर मूकीने तथा स्त्रीओना विलास भोगवीने पछी दीक्षा ग्रहण करजो." आ प्रमाणे सांभळीने बन्ने पुत्रो बोल्या के " हे पिता ! वेद भणवाथी ते वेद शरण के रक्षण करी शकता नथी; केमके तेने भणवा मात्रथी ते कांइ दुर्गतिमां पडतानुं रक्षण करी शकता नथी. स्मृतिमां कह्युं छे के—

अकारणमधीयानो, ब्राह्मणस्तु युधिष्ठिर ।
दुःकुलनाप्यधीयन्ते, शीलं तु मम रोचते ॥ १ ॥

भावार्थ—" हे युधिष्ठिर ! 'वेद भण्यो माटे ते ब्राह्मण छे,' एम वेदाध्ययन कांइ ब्राह्मणपणानुं कारण नथी; केमके वेद तो नीच कुळवाळा पण भणे छे, परंतु हुं तो शीलनेज पसंद करुं छुं; एटले के जे सदाचरणी छे तेज ब्राह्मण छे." वळी—

शिल्पमध्ययनं नाम, वृत्तं ब्राह्मणलक्षणम् ।
वृत्तस्थं ब्राह्मणं प्राहुर्नेतरान् वेदजीवकान् ॥ २ ॥

---

१ श्री उत्तराध्ययन सूत्रना १४ मा अध्ययनमां आ गाथा छे.

भावार्थ —" भणवुं ते तो एक जातनी शिल्पकळा छे पण ब्राह्मणनुं लक्षण तो सारां आचरण छे, माटे सदाचरणमां रहेला होय तेज ब्राह्मण कहेवाय छे; बीजा वेदथी आजीविकाना करनारा ते कांइ ब्राह्मण कहेवाता नथी."

वळी हे पिता ! आपे विप्रोने संतोष पमाडवानुं जे कह्युं ते तो नरकमां नांखवानोज हेतु छे. कारण के तेओ कुमार्गनी प्ररुपणा करे छे, अने पशुवधादिमां प्रवर्ते छे. तेमज पुत्रादिक पण नरकमां पडता जीवोने शरणरूप थता नथी. वेद जाणनार पण कहे छे के—

यदि पुत्राद्भवेत्स्वर्गो, दानधर्मो न विद्यते ।
मुषितस्तत्र लोकोऽयं, दानधर्मो निरर्थकः ॥ १ ॥

भावार्थ—"जो कदाच पुत्रथी स्वर्ग मळतुं होय अने दानधर्मनी जरुर न होय, तो पछी सर्व जगत छेतरायुं छे अने दानधर्म निरर्थक जणाय छे." अर्थात् दानधर्मनुं शास्त्रमां श्रवण करीने तेमां प्रवर्तता लोको छेतराया छे एम जणाय छे, पण खरी रीते तेम नथी, दानादि धर्मज स्वर्गने आपनार छे. पुत्रथी स्वर्ग मळतुं नथी. जुओ—

बहुपुत्रा दुली गोधा, ताम्रचूडस्तथैव च ।
तेषां च प्रथमं स्वर्गः, पश्चाल्लोको गमिष्यति ॥ २ ॥

भावार्थ—"जो पुत्रथीज स्वर्गनी प्राप्ति थती होय तो गरोळीने, गोधाने तथा कूकडा विगेरेने घणा पुत्रो होय छे; तेथी प्रथम तेओ स्वर्गे जशे अने पछी बीजा लोको जशे." परंतु ए वात असत्य छे.

वळी तमे स्त्रीविलासनुं सुख भोगववानुं कह्युं, पण ते क्षणभंगुर छे. ते विषे श्री उत्तराध्ययन सूत्रना चौदमा अध्ययनमां परमात्माए कह्युं छे के—

खणमित्तसुखा बहुकालदुक्खा, पगामदुक्खा अनिगामसुखा ।
संसारमुक्खस्स विवक्खभूया, खाणी अणत्थाण उ कामभोगा ॥१॥

भावार्थ—"स्त्रीना कामभोगनुं सुख एक क्षण मात्रनुं छे अने तेमां घणा

कालनुं दुःख रहेलुं छे. वळी तेमां दुःख घणुं छे अने सुख स्वल्प छे. संसारथी मुक्त थवानी इच्छावाळाने ते शत्रुभूत छे तथा अनर्थनी खाणरूप छे."

"वळी हे पिता! निरंतर संसारनां कार्यो कर्या करीए, तोपण जींदगी पर्यंत तेनी समाप्ति थती नथी; माटे धर्ममां प्रमाद करवो ए केम योग्य कहेवाय? जे दिवस गया ते फरीने आवता नथी. तेथी धर्म नहीं करनारना दिवसो निष्फळ जाय छे. वळी अधर्मनुं मूळ कारण गृहस्थाश्रम छे, माटे तेनो त्याग करवो तेज कल्याणकारी छे."

आ प्रमाणेनां पुत्रोनां वचनथी प्रतिबोध पामीने भृगु पुरोहित बोल्यो के "हे पुत्रो! तमे कह्युं ते सत्य छे, परंतु हालमां आपणे गृहस्थाश्रममां रहीने तमे अने अमे सर्वे साथे देशविरति ग्रहण करीए; पछी यौवनावस्था व्यतिक्रमशे त्यारे वृद्धावस्थामां आपणे सर्व चारित्र ग्रहण करशुं." पुत्रो बोल्या के "हे पिता! जेने मृत्युनी साथे मित्राइ होय, अथवा जे मृत्युना पंजामांथी नासी शके तेम होय अथवा जे एम जाणे के हुं मरवानो नथी तेने तेम करवुं योग्य छे; पण तेवुं तो कांइ पण नथी. तेथी तेवुं धारनारने मूर्ख जाणवो; केमके मृत्युने नहीं आववानो कोइ पण वखत नथी. ते तो तेने गमे त्यारे आवे छे, माटे आपणे आजेज धर्मने अंगीकार करीए. विषयादिकनां सुख तो आपणे अनन्तीवार पाम्या छीए." इत्यादि पुत्रोनां वचन सांभळीने व्रतनी इच्छावाळो थयेलो भृगु पोतानी स्त्रीने धर्ममां विघ्न करनार जाणीने तेना प्रत्ये बोल्यो के "हे वसिष्ठगोत्रमां उत्पन्न थयेली स्त्री! आ पुत्रो विना मारे गृहस्थाश्रममां रहेवुं योग्य नथी. जेम शाखा विनाना वृक्ष अने भृत्य विनानो राजा शोभतो नथी, तेम हुं पण पुत्ररहित शोभतो नथी; माटे हुं तेमनी साथे दीक्षा लेवा इच्छुं छुं." ते सांभळीने यशा बोली के "हे स्वामी! आ प्रत्यक्ष मळेला कामभोगो तजवा योग्य नथी. दीक्षा ग्रहण करवी ते बीजा भवमां भोग मेळववानी इच्छाथी छे, ते भोग तो आ जन्ममांज प्राप्त थया छे; तो पछी दीक्षा शामाटे ग्रहण करवी?" त्यारे भृगु बोल्यो के "हे प्रिया! हुं असंयमरूप जीवितने माटे एटले के परलोकना सुखने माटे दीक्षा ग्रहण करतो नथी, पण संयम विनानुं जीवित निष्फळ छे, माटेज हुं भोगोने तजुं छुं. वळी जीवित, मरण, लाभ, अलाभ, सुख अने दुःख विगेरेमां समपणानी भावना करीने मुक्ति मेळववा माटेज दीक्षा लेवी योग्य छे." आ प्रमाणेनां तेनां वाक्यथी प्रतिबोध

पामेली ते बोली के " आपणा पुत्रोने धन्य छे के जेओ आपणी पहेलांज व्रत लेवानी इच्छावाळा थया. तेओनी स्थिरताज आपणने पण धर्म आपनार थइ छे." आ प्रमाणे सर्व प्रतिबोध पामवाथी चार जणाए साथे दीक्षा ग्रहण करी.

आ वृत्तांत सांभळीने इषुकार राजा भृगुए त्याग करेला तेना गृहादिकनुं ग्रहण करवा माटे तेने घेर आव्यो. ते वखते तेनी कमळा नामनी राणी राजाने वारंवार कहेवा लागी के " ब्राह्मणे वमन करेला गृहना सारने तमे खावा इच्छो छो; तेथी तमे वमननुं भक्षण करनारा थाओ छो, ते तमारा जेवाने उचित नथी. वळी तमारी आवी उत्कट इच्छा पूर्ण थवा माटे समग्र जगतनु धन तमारे आधीन होय तोपण ते पूर्ण थाय तेम नथी, तेमज ते जरामरणना दुःखने अटकाववा समर्थ नथी; केमके आ जगतमां जन्म धारण करनारने अवश्य मरण प्राप्त थाय छे." कह्युं छे के—

कश्चित्सखे त्वया दृष्टः, श्रुतः संभावितोऽथवा !
क्षितौ वा यदि वा स्वर्गे, यो जातो न मरिष्यति ॥ १ ॥

भावार्थ—" हे मित्र ! आ पृथ्वी उपर अथवा स्वर्गमां तें एवो कोइ प्राणी जोयो छे, सांभळ्यो छे, अथवा संभावना पण करी छे के जे जन्मेलो मृत्यु न पामे ? अर्थात् एवो कोइज नथी."

माटे हे स्वामी ! धर्म विना बीजुं कोइ रक्षण करनार नथी. आ चारेए आ सर्व अनित्य जाणीनेज तेने तज्युं छे, अने हुं पण ते जाणीने परिग्रह आरंभथी निवृत्ति पामी छुं, माटे हे नाथ ! हुं व्रत ग्रहण करीश." आ प्रमाणेनी राणीनी वाणीथी तेज वखते प्रतिबोध पामेलो राजा राणी सहित दुस्त्यज कामभोगने तथा मोटा राज्यने तजीने निर्ग्रंथ थयो.

आ प्रमाणे उपर कहेला छए जीवो कहेला क्रम प्रमाणे प्रतिबोध पाम्या, अने सर्व मोहनो त्याग कर्यो. तेओनां चित्त पूर्व जन्ममां करेला धर्मना अभ्यासनी भावनाथी भावित थयेलां हतां; तेथी अल्प काळमांज तेओए केवळज्ञान पामीने अजरामर पदने प्राप्त कर्युं.

" पूर्व भवे अरिहंतना शासनमां ते छ जीवोनां चित्त धर्मथी वासित

थयां हतां; तेथी तेओने जलदीथी आत्मतत्त्वनी प्राप्ति थइ, आवा प्राणीओ सुलभबोधि कहेवाय छे. ”

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ चतुर्विंशतितमस्तंभस्य सप्तचत्वारिंशदधिकत्रिशततमः प्रबंधः ॥ ३४७ ॥

व्याख्यान ३४८ मुं.

प्रत्येकबुद्ध विषे.

जे चार प्रत्येकबुद्ध एक साथेज स्वर्गमांथी च्यव्या, साथेज दीक्षा ग्रहण करी, साथेज केवळज्ञान पाम्या अने साथेज मोक्षे गया, तेमनुं स्वरूप अहीं कहीए छीए—

तत्रादौ वृषभं वीक्ष्य, प्रतिबुद्धस्य धीनिधेः ।
करकंडुमहीजानेश्चरितं वच्मि तद्यथा ॥ १ ॥

भावार्थ—“ ते चार प्रत्येक बुद्धोमां प्रथम वृषभने जोइने प्रतिबोध पामेला बुद्धिना भंडाररूप करकंडु राजानुं चरित्र कहीए छीए. ” ते आ प्रमाणे—

करकंडु राजानी कथा.

चंपापुरीमां दधिवाहन नामे राजा हतो, तेने पद्मावती नामे राणी हती. ते एकदा गर्भिणी थइ, त्यारे गर्भना प्रभावथी तेने एवो दोहद थयो के हुं राजानो वेष धारण करीने, राजाए जेने माथे छत्र धारण कर्युं छे एवी, पट्टहस्तीपर बेसीने उद्यानमां विचरुं. ते दोहद पूर्ण नहीं थवाथी कृष्णपक्षना चंद्रनी जेम ते प्रतिदिन कृश थवा लागी. राजाए तेनुं कारण पूछ्युं, त्यारे राणीए दोहदनी वात कही. तेथी राजाए तेनो दोहद पूर्ण करवा माटे तेनी साथेज हाथीपर बेसी राणीने माथे छत्र धारण कर्युं अने तेवी रीते राजा वनमां गयो. ते वखते अकस्मात् जळवृष्टि थइ. ते

वृष्टि प्रथम होवाथी पृथ्वीमांथी गन्ध प्रगट थयो, ते गन्ध सुंघवाथी मदोन्मत्त थयेलो हाथी वन तरफ दोड्यो. राजाए तेने अंकुश विगेरेथी घणो निवार्यो, पण ते अटक्यो नहीं; तेथी कायर थइने राजाए राणीने कह्युं के "हे प्रिया! दूर पेलो वटवृक्ष देखाय छे, तेनी नीचे थइने आ हाथी नीकळशे, ते वखते तुं ते वटनी शाखा मजबूत रीते पकडी लेजे, हुं पण पकडी लइश. पछी हाथीने जवा दइने आपणे नगर तरफ जइशुं." पछी ज्यारे ते हाथी वटनी नीचे थइने नीकळ्यो, त्यारे राजाए तो तत्काळ तेनी शाखा पकडी लीधी; पण राणी ते शाखा पकडी शकी नहीं; तेथी प्रियानो वियोग थवाथी राजा विलाप करतो पाछो वळीने ते हाथीनांज पगलांने अनुसारे चंपानगरीमां गयो. अहीं हाथी चालतां चालतां अति तृषातुर थयो; तेथी ते मोटा अरण्यमां एक तळाव आव्युं तेमां पेठो. ते अवसर जाणीने राणी तेनापरथी उतरी तळावना पाणीने तरीने कांठे आवी. पछी तेणे विचार्युं के 'पूर्वना अशुभ कर्मने लीधे मारे अकस्मात् आपत्ति आवी पडी छे; परंतु हवे रुदन करवाथी तो उलटो सात कर्मनो दृढ बंध थशे, माटे हमणां तो आ अरण्यनुं उल्लंघन करुं त्यां सुधीने माटे सागारी अनशन ज अंगीकार करुं.'

पछी ए प्रमाणे अभिग्रह लइने ते कोइक दिशामां चाली. मार्गमां एक तापसे तेने दीठी; एटले पूछ्युं के "अरे तुं वनदेवी छे के किंनरी छे?" त्यारे ते बोली के "हुं जैनधर्मी चेटकराजानी पुत्री मनुष्यणी छुं." एम कहीने पोतानुं सर्व वृत्तांत तेणे ते तापसने कही संभळाव्युं. ते सांभळीने तापस बोल्यो के "हुं तारा पितानो भाइ छुं, माटे तुं भय पामीश नहीं." एम कहीने ते तापसे तेने आश्वासन आपी वन फळादिकवडे तेनो सत्कार कर्यो. पछी तेने नजीकना कोइ नगरमां ते तापसे पहोंचाडी. ते राणी कामभोगथी निर्वेद पामीने साध्वीओनी पासे जइ तमने वांदीने बेठी. त्यारे साध्वीए तेने पूछ्युं के "हे श्राविका! तुं क्यांथी आवी छे?" त्यारे राणीए दीक्षा लेवानी इच्छाथी एक गर्भ विना बीजी सर्व वात कही संभळावी. ते सांभळीने साध्वी बोल्या के "हे उत्तम आशयवाळी! विद्युत् जेवा चपळ सांसारिक सुखनी आशा छोडीने चारित्र ग्रहण कर." ते सांभळीने विरक्त थयेली राणीए दीक्षा ग्रहण करी. पछी अनुक्रमे तेना गर्भनी वृद्धि थइ. ते जोइने साध्वीओए पूछ्युं, त्यारे तेणे सत्य वात कही. पछी साध्वीओए तेने गुप्त स्थाने राखी. गर्भसमय पूर्ण थतां तेणे शय्यातरने घेर एक पुत्रने

जन्म आप्यो. पछी ते पुत्रने तेना पिताना नामवाळी मुद्रिका पहेरावी रत्नकंबलमां वींटीने तेणे स्मशानमां मूकी दीधो, अने तेने कोण लइ जाय छे ते जोवा माटे संताइने उभी रही. तेवामां ते स्मशाननो धणी त्यां आव्यो. तेणे ते पुत्रने जोइ उपाडी लइने पोतानी स्त्रीने आप्यो. ते चांडाळनी पाछळ जइ तेनुं घर जोइने राणी उपाश्रये पाछी आवी. पछी हमेशां राणी तेने घेर जइने मोदक विगेरे आपी मोहथी तेने लाड लडाववा लागी. ते पुत्रना शरीरमां जन्मथीज कंडु एटले खरजनो व्याधि थयो. एकदा ते पुत्र बीजा बाळको साथे क्रीडा करतां बोल्यो के "हुं तमारो राजा छुं, माटे तमे मने कर आपो." बाळको बोल्या के "शुं आपीए ?" तेणे कह्युं के "तमे तमारा करथी (हाथथी) मने खुब खजवाळो, तेथी हुं प्रसन्न थइश." पछी बाळको तेने खजवाळता सता करकंडुना नामथी बोलाववा लाग्या. अनुक्रमे ते पुत्र युवावस्था पाम्यो, त्यारे ते स्मशाननी रक्षा करवा लाग्यो.

एकदा बे मुनि विहार करता करता त्यां आव्या. तेमां एक मुनि लक्षण शास्त्रना जाण हता. तेणे वांसनी जाळमां एक दंड जोइने बीजा मुनिने कह्युं के "आ दंड हजु चार आंगळ मोटो थाय त्यां सुधी राह जोया पछी तेने जे माणस ग्रहण करे ते राजा थाय." ते वाक्य एक करकंडुए अने एक ब्राह्मणे सांभळ्युं. पछी ते दंड ज्यारे चार आंगळ वध्यो त्यारे ते ब्राह्मणे तेने खोदीने काढ्यो. ते जोइने करकंडुए तेनी साथे मोटो कजीओ करीने ते दंड लइ लीधो. लोकोए हसीने तेने पूछ्युं के " तुं आ दंडने शुं करीश ? " त्यारे ते बोल्यो के " आना प्रभावथी हुं राजा थइश. " लोकोए कह्युं के " तुं राजा थाय त्यारे आ ब्राह्मणने एक गाम आपजे. " ते वचन अंगीकार करीने करकंडु पोताने घेर गयो. पेला ब्राह्मणे विचार्युं के " करकंडुने हणीने पण दंड लउं. " तेनो आवो अभिप्राय जाणीने भय पामेलो करकंडु त्यांथी नासीने कांचनपुर गयो. त्यां थाकी जवाथी गाम बहार उद्यानमां ते सुतो. तेज दिवसे ते गामना राजा पुत्र विना मरी जवाथी प्रधानोए पांच दिव्य प्रगट कर्या. ते दिव्योथी करकंडुने राज्य मळ्युं; एटले ते हस्तीपर आरूढ थइने नगरप्रवेश करतो हतो: तेवामां पेला ब्राह्मणे आवीने तेने अटकाव्यो अने बोल्यो के " अरे चांडाल ! तने राज्य घटे नहीं." ते सांभळीने करकंडुए पेलो दंड हाथमां लइने भमाड्यो, एटले भय पामीने ते ब्राह्मण नासी गयो. पछी प्रधानोए तेने राज्याभिषेक कर्यो. पछी करकंडु राजाए सर्व चांडाळोने ब्राह्मण कर्या. कह्युं छे के—

दधिवाहनपुत्रेण, राजा च करकंडुना ।
वाटधानकवास्तव्या-श्चांडाला ब्राह्मणीकृताः ॥ १ ॥

भावार्थ—“ दधिवाहन राजाना पुत्र करकंडु राजाए वाटधानकना रहीश चांडाळोने ब्राह्मण कर्या. ”

एकदा पेला ब्राह्मणे आवीने करकंडुने कह्युं के “ हे राजा ! तमे मने पूर्वे एक गाम आपवानुं वचन आप्युं छे ते गाम आपो. ” राजाए कह्युं के “ बोल, तने कयुं गाम आपुं ? ” त्यारे ते बोल्यो के “ मने चंपानगरीनी नजीकमां एक गाम आपो.” ते सांभळीने करकंडु राजाए चंपापुरीना राजा दधिवाहन उपर लेख लखी आप्यो के “ आ ब्राह्मणने एक गाम आपजो.” ते ब्राह्मणे चंपापुरी जइने दधिवाहन राजाने ते कागळ आप्यो. ते वांचीने क्रोधथी रक्त नेत्रवाळो थयेलो दधिवाहन राजा बोल्यो के “ अरे ब्राह्मण ! चांडाळना हाथे लखेला कागळना स्पर्श करवाथी हुं मलीन थयो छुं; माटे तुं सत्वर चाल्यो जा, नहीं तो तुं पण हमणां मारा कोपाग्निमां पतंगरूप थइ जइश. ” ते सांभळीने ब्राह्मणे त्यांथी शीघ्रपणे करकंडु पासे जइने ते वृत्तांत कह्युं; तेथी क्रोध पामेला करकंडुए मोटुं सैन्य लइने चंपापुरी घेरी लीधी. बन्ने राजाना सैन्योने परस्पर महा युद्ध थयुं. ते वात दधिवाहननी राणी जे साध्वी थयेला हता तेमणे सांभळी, तेथी ते प्रथम करकंडु पासे आव्या; एटले करकंडु उठीने सामो जइ तेमने नम्यो. पछी साध्वीए तेने एकांतमां लइ जइने पूर्वनी सर्व हकीकत कहीने कह्युं के “ हे पुत्र ! पोताना पिता साथे युद्ध करवुं ते योग्य नथी. कदाच तने आ वातनो विश्वास न आवतो होय तो जन्मवखते तारा हाथमां में पहेरावेली तारा पिताना नामवाळी मुद्रिका जो.” करकंडु ते जोइने शंकारहित थयो सतो बोल्यो के “ हे माता ! तमे मारा पितानी पासे जइ आ वातनो बोध करो.” एटले ते साध्वी त्यांथी दधिवाहन पासे गया, अने तेने पण पूर्वनुं सर्व वृत्तांत कह्युं. राजाए पूछयुं के “ ते गर्भ क्यां गयो ? ” साध्वी बोल्या के “ हे राजा ! जेणे तमारुं नगर घेर्युं छे तेज ते गर्भ छे.” इत्यादि सर्व वृत्तांत सांभळीने आनंद पामेलो राजा पुत्रने मळवा उत्कंठित थइ तेनी सामो चाल्यो. तेमने आवता जोइ करकंडु पण पगे चालतो सन्मुख गयो, अने पिताना चरणमां पड्यो. पिताए तेने बे हाथे पकडी लइने आलिंगन कर्युं. पछी अनुक्रमे दधिवाहन राजाए तेने राज्य सोंपीने दीक्षा ग्रहण करी. करकंडु राजा न्यायथी बन्ने राज्य चलाववा लाग्यो.

एकदा करकंडु राजा गोकुळ (गायोनो वाडो) जोवा गयो. त्यां तेणे रुपा जेवो अति श्वेत एक वाछडो जोयो. तेने जोतांज तेनापर अति प्रेम आववाथी तेमणे गायो दोनारने कह्युं के "आ वाछरडाने मात्र तेनी मानुंज दूध पावुं एम नहीं, पण बीजी गायोनुं दूध पण तेने हमेशां पावुं." ते सांभळीने ते गोपालक पण ते प्रमाणे करवा लाग्यो; एटले ते वाछडो चंद्रनी कांति साथे पण स्पर्धा करे तेवो अने अत्यंत पुष्ट थयो. राजा तेने बीजा वृषभो साथे युद्ध करावतो, पण कोइ सांढ तेने जीती शकतो नहीं. पछी केटलोक काळ व्यतीत थया पछी एकदा राजा गोकुळ जोवा गयो. त्यां नाना वाछरडाओ जेने लात प्रहार करे छे एवो एक वृद्ध वृषभ जोइने राजाए गोपाळने पूछ्युं के "पेलो महावीर्यवाळो पुष्ट वृषभ क्यां छे?" गोपाळे कह्युं के "हे देव! ते ज आ वृषभ छे, पण ते वृद्धावस्थाथी व्याप्त थयेलो छे." ते सांभळीने राजाए विचार्युं के "अहो! सर्व पदार्थो अनित्य छे. प्रत्यंचाना टंकार शब्दथी पक्षीओनी जेम जेना भंभारवथी (धडुकवाथी) बळवान वृषभो पण नासी जता हता ते आजे नाना वाछरडाओनी लातोना प्रहारने सहन करे छे. जेनुं स्वरूप जोइने चंद्रना दर्शननी पण इच्छा थती नहीं ते आजे तेनी सामे जोवाथी पुरीषनी जेम जुगुप्सा उत्पन्न करे छे; तेथी आ पराक्रम, आ वय, आ रूप, आ राज्य अने आ वैभव विगेरे सर्व ध्वजाना छेडानी जेवां चंचळ छे एम प्रत्यक्ष भास थाय छे; तेम छतां पण माणसो अज्ञानने लीधे ते वातने समजता नथी; माटे हुं तो आत्मतत्त्वने प्राप्त करनार स्वभावधर्मानुयायी धर्मनुं सेवन करी जन्मनुं साफल्य करुं." ए प्रमाणे विचार करीने पोतेज पोताना हाथवडे मस्तकपरना केशनो लोच करीने देवताए आपेला मुनिवेषने धारण करी आत्मधर्ममां रागी थयेला ते प्रत्येकबुद्ध करकंडुमुनि पृथ्वीपर विहार करवा लाग्या.

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ चतुर्विंशतितमस्तंभस्य
अष्टचत्वारिंशदधिकत्रिशततमः प्रबंधः ॥ ३४८ ॥

व्याख्यान ३४९ मुं.

बीजा प्रत्येकबुद्ध विषे.

अथ प्रत्येकबुद्धस्य, बुद्धस्येन्द्रध्वजेक्षणात् ।
राज्ञो द्विमुखसंज्ञस्य, ज्ञातं वक्ष्यामि तद्यथा ॥ २ ॥

भावार्थ—" हवे इन्द्रध्वज जोवाथी बोध पामेला (बीजा) प्रत्येकबुद्ध द्विमुख नामना राजानुं चरित्र कहीए छीए. "

द्विमुख राजानी कथा.

कांपिल्यपुरमां हरिवंशी यव नामे राजा राज्य करतो हतो. तेने गुणमाळा नामनी राणी हती. एकदा सभामां बेठेला राजाए देशांतरथी आवेला दूतने पूछ्यु के " हे दूत! बीजा राज्यमां छे एवुं मारा राज्यमां शुं नथी?" दूते कह्युं के " हे देव! आपना राज्यमां एक चित्रसभा नथी " ते सांभळीने राजाए चित्रकारने तथा सुतारने बोलावीने कह्युं के "मारे माटे एक चित्रसभा ताकीदे तैयार करो." तेओए राजानी आज्ञाथी शुभ समये सभानुं खातमुहूर्त्त करीने पायो खोदवानो आरंभ कर्यो. खोदतां खोदतां पांचमे दिवसे पृथ्वीना तळमांथी कांतिवडे अत्यंत देदीप्यमान एक मुकुट प्रगट थयो. ते रत्नमय मुकुट जोइने हर्ष पामेला राजाए सर्व कारीगरोने वस्त्रादिकनी पहेरामणी करीने खुशी कर्या. अनुक्रमे कारिगरोए सुशोभित पुतळीओ विगेरेथी शोभायमान देवसभाना जेवी सभा तैयार करी. पछी शुभ दिवसे राजा पेलो दिव्य मुकुट धारण करीने ते नवी सभामां बेठो. ते वखते नवरत्नवाळा हारना प्रभावथी जेम रावणना दश मस्तक देखाता हता, तेम ते मुकुटना प्रभावथी राजाना मुख बे देखावा लाग्या; तेथी लोकमां ते राजानुं द्विमुख एवुं नाम प्रसिद्ध थयुं. ते राजाने अनुक्रमे सात पुत्रो थया, पण एके पुत्री थइ नहीं. तेथी कोइ यक्षनी आराधना करीने तेणे एक पुत्री मागी. तेना प्रभावथी मदनमंजरी नामनी गुणवान अने रूपवान एक पुत्री थइ.

एकदा उज्जयिनीना राजाए दूतना मुखथी सांभळ्युं के " कांपिल्यपुरना

राजाने मुकुटना प्रभावथी बे मुख थयां छे. " ते सांभळीने लोभथी चंडप्रद्योत राजाए ते मुकुटने माटे एक चतुर दूतने तेनी पासे मोकल्यो. ते दूत द्विमुख राजा पासे आवी तेने नमीने बोल्यो के " तमारा मस्तकपर रहेला मुकुटरत्नने अमारा राजा माटे सत्वर आपो, नहींतो युद्ध करवा माटे तैयार थाओ. " ते सांभळीने द्विमुख राजा बोल्यो के " जो तारो राजा मने चार वस्तुओ आपे तो हुं आ मुकुटरत्न आपुं. ते चार वस्तु आ प्रमाणेः— अनलगिरि नामनो गन्धहस्ती, अग्निभीरु रथ, शिवा नामनी पद्मिनी राणी अने लोहजंघ नामनो दूत. " ते सांभळीने दूते जइने चंडप्रद्योत राजाने ते वृत्तांत कह्युं; तेथी कोपाग्निथी प्रज्व-लित थयेला प्रद्योतराजाए तरतज प्रयाणभेरी वगडावी अने सैन्य सहित ते अवंति (पांचाळ) देश तरफ चाल्यो. तेना सैन्यमां बे लाख हाथीओ, पचास हजार अश्वो, बे हजार अश्वरथो अने शत्रुने विपत्ति आपनारा सात करोड पत्तिओ (पायदळ) हता. द्विमुख राजा पण चरना मुखथी प्रद्योतने आवतो सांभळी सैन्य सहित सन्मुख चाल्यो.

बे सैन्य एकठा मळ्या एटले प्रद्योते पोताना सैन्यमां अति दुर्भेद्य गरुडव्यूह रच्यो अने द्विमुखे पोताना सैन्यमां सार्द्धव्यूह रच्यो. बन्ने सैन्य वच्चे महा युद्ध थयुं; पण दिव्य मुकुटना प्रभावथी द्विमुख राजा जीतायो नहीं; एटले श्रांत थयेलो प्रद्योत राजा नाठो. तेने द्विमुखे ससलानी जेम पकडी लीधो, अने क्रौंचबंधनथी बांधी पगमां दृढ बेडी नांखी केद कर्यो. कह्युं छे के—

महानपि जनो लोभात्, कां कां आपद नाश्नुते ।

" मोटा माणसो पण लोभने वश थवाथी कइ कइ आपत्तिने पामता नथी ? अर्थात् बधी आपत्तिओ पामे छे. "

थोडा वखत पछी अनुक्रमे तेने बंधनमुक्त करीने राजाए मानथी पोताना अर्ध आसनपर बेसाड्यो. एकदा राजपुत्री मदनमंजरीने जोइने तेनापर गाढ अनु-राग थवाथी प्रद्योत अत्यंत आकुळव्याकुळ थयो. कामज्वरना दाहथी पुष्पशय्यामां पण ते किंचित् शांति पाम्यो नहीं. वर्ष जेवडी मोटी थइ पडेली ते रात्रीने महा कष्टे निर्गमन करीने प्रातःकाळे ते राजसभामां आव्यो. तेने अति उद्विग्न थयेलो जोइने द्विमुख राजाए पूछयुं के "हे अवन्तीपति ! तमारा मनमां शी चिंता पेठी

छे के जेथी हिमथी कमलिनीनी जेम तमारुं मुख ग्लानि पामेलुं जणाय छे ? तेनुं कारण जणाव्या सिवाय तेनो उपाय शी रीते थइ शकशे ? " ते सांभळीने प्रद्योत दीर्घ निःश्वास मूकीने लज्जानो त्याग करी बोल्यो के " जो मारुं कुशळ इच्छता हो तो तमारी पुत्री मने आपो, नहीं तो हुं अग्निमां प्रवेश करीश. " ते सांभळीने पुत्रीने योग्य वरनी प्राप्ति थयेली मानी मोटा उत्सवथी द्विमुखे पोतानी पुत्री तेने परणावी. पछी प्रद्योतराजा पोताना जन्मनी सफळता मानी द्विमुखनी रजा लइने हर्षथी पोतानी पुरीए गयो.

एकदा इंद्रोत्सवनो दिवस आववाथी द्विमुख राजाए पौरजनोने इन्द्रध्वज स्थापन करवानी आज्ञा करी; तेथी पौरजनोए इन्द्रध्वजना स्तंभने उभो करीने तेने श्वेत ध्वजाओ, पुष्पमाळाओ अने पुष्कळ घुघरीओथी शणगार्यो. पछी वाजित्रना नादपूर्वक तेनी पुष्पफळादिकवडे पूजा करी. पछी केटलाएक तेनी पासे नृत्य करवा लाग्या अने केटलाएक गीत गावा लाग्या. ए प्रमाणे सात दिवस सुधी महोत्सव प्रवर्त्यो. आठमे दिवसे पूर्णिमाने रोज राजाए पण मोटी समृद्धिथी त्यां आवीने तेनी पूजा करी. उत्सव पूर्ण थया पछी पौरजनो ते इंद्रध्वजने शोभाववा माटे धरावेला पोतपोताना वस्त्रादिक लइ गया, अने काष्ट मात्र बाकी रहेला ते स्तंभने पाडीने पृथ्वीपर नाखी दीधो.

बीजे दिवसे विष्टा अने मूत्रथी लींपायेलो, अपवित्र स्थाने पडेलो अने बाळको जेनापर चडीने क्रीडा करता हता एवो ते स्तंभ बहार नीकळेला राजाए जोयो. ते जोइने वैराग्य पामेला राजाए विचार कर्यो के " जे महाध्वज गइ काले सर्व लोकोथी पूजातो हतो तेज महाध्वज आजे मोटी विडंबनाने पामे छे, माटे लक्ष्मीनी शोभा सर्व क्षणभंगुर छे. कह्युं छे के—

आयाति याति च क्षिप्रं, या संपत् सिन्धुपूरवत् ।
पांसुलायामिव प्राज्ञा—स्तस्यां को नाम रज्यते ॥ १ ॥

भावार्थ—" जे संपत्ति नदीना पूरनी जेम अथवा समुद्रनी भरतीनी जेम जलदी आवे छे अने जलदी जाय छे ते पांसुली स्त्रीना जेवी संपत्ति उपर हे डाह्या पुरुषो ! कोण आसक्ति करे ? "

माटे हुं प्रायः विडंबनाभूत एवी आ राज्यसंपदाने तजीने मुक्ति आप-

नारी समतारूप साम्राज्यसंपदानो आश्रय करुं." एम विचारी जेनो ममतारूपी अग्नि शांत थयो छे एवा ते द्विमुख राजाए तेज वखते पोतेज केशनो लोच करीने देवदत्त मुनिवेषने धारण करी पृथ्वीपर विहार कर्यो.

श्रीउत्तराध्ययन सूत्रना नवमा अध्ययनमां श्री वीरस्वामीए कह्युं छे के-

करकंडु कलिंगेसु, पांचालेसु दुमुहो ।
नमिराया विदेहेसु, गंधारेसु च नग्गइ ॥ १ ॥

भावार्थ—"कलिंग देशमां करकंडु राजा, पांचाल देशमां द्विमुख राजा, विदेह देशमां नमि राजा अने गांधार देशमां नग्गति राजा थया छे."

आ चारे राजाओ पुष्पोत्तर विमानथी एक काळे च्यव्या, एक काळे दीक्षा लीधी, अने एक काळे मोक्षपदने पाम्या छे.

आ चारे राजाओ मुनि थया पछी एकत्र मळतां तेमने परस्पर संवाद थयो हतो. ते हकीकत आ प्रमाणे छे—आ चारे मुनिओ विहार करतां करतां एकदा क्षितिप्रतिष्ठपुरमां आव्या. त्यां गामनी बहार कोइ एक यक्षनुं चार द्वारवाळुं चैत्य हतुं. तेमां पूर्वाभिमुखे ते व्यंतरनी प्रतिमा रहेली हती. तेमां प्रथम पूर्वना द्वारथी करकंडु मुनिए प्रवेश कर्यो. पछी दक्षिण तरफना द्वारथी द्विमुखमुनिए प्रवेश कर्यो. ते वखते यक्षे विचार्युं के "हुं साधुथी पराङ्मुख केम रहुं ?" एम धारीने तेणे दक्षिण तरफ बीजुं मुख कर्युं. पछी नमिमुनिए पश्चिमना द्वारथी प्रवेश कर्यो, त्यारे पण ते यक्ष त्रीजुं मुख करीने सन्मुख रह्यो. पछी उत्तरना द्वारथी नग्गति मुनिए प्रवेश कर्यो, त्यारे यक्षे ते तरफ चोथुं मुख कर्युं. आ प्रमाणे ते यक्ष मुनिनी भक्तिथी चतुर्मुख थयो.

हवे करकंडु मुनिने लुखी खरज हजु सुधी पण देहमां हती, तेथी शरीरे खरज आववाथी तेणे खरज खणवानुं अधिकरण लइने खरज खणी. पछी तेने संताडता जोइने द्विमुख मुनि बोल्या के "हे करकंडु मुनि ! तमे राज्यादिक सर्वनो त्याग कर्यो छे त्यारे आटली आ खरज खणवानी वस्तुनो संचय शामाटे करो छो ?" ते सांभळीने करकंडु मुनि तो कांइ बोल्या नहीं, पण नमिराजर्षिए द्विमुख मुनिने कह्युं के "हे मुनि ! तमे राज्यादि सर्व कार्यनो त्याग करीने निर्ग्रंथ थया छो, तोपण अन्य दोषने जोवारूप कार्य तो हजु करो छो, ते हवे

तमने निःसंगने योग्य नथी." ते सांभळीने दुर्गतिरहित थयेला नग्गति मुनिए नमिमुनिने कह्युं के "हे मुनि! तमे एमने कहो छो, पण तमे ज्यारे सर्वनो त्याग करीने मोक्षने माटेज उद्यमी छो, त्यारे शामाटे वृथा अन्यनी निंदा करो छो?" पछी करकंडु मुनि सर्वने उद्देशीने बोल्या के—"मोक्षनी इच्छावाळा मुनिओने अहितथी रोकनार साधु, निंदक शी रीते कहेवाय? केमके—

या रोषात् परदोषोक्तिः, सा निन्दा खलु कथ्यते।
सा तु कस्यापि नो कार्या, मोक्षमार्गानुसारिभिः॥ १॥

भावार्थ—"क्रोधथी परनो दोष कहेवो ते निंदा कहेवाय छे. ते निंदा मोक्षमार्गने अनुसरनारा मुनिओए कोइनी पण करवी नहीं."

हितबुद्ध्या तु या शिक्षा, सा निन्दा नाभिधीयते।
अत एव च सान्यस्य, कुप्यतोऽपि प्रदीयते॥ ॥ २॥

भावार्थ—"हितबुद्धिथी जे शिखामण आपवी ते निन्दा कहेवाती नथी, माटे तेवी शिक्षा सामो माणस कोप करे तोपण आपवी."

आगममां पण कह्युं छे के—

रूसउ वा परो मा वा, विसं वा परिअत्तओ।
भासिअव्वा हिआ भासा, सपक्खगुणकारिया॥ १॥

भावार्थ—"सामो माणस कोप करो अथवा न करो अथवा तो विष जेवी कडवी लागो; परंतु शत्रुने पण गुण करे तेवी हितकारी भाषा बोलवी."

आ प्रमाणे श्री करकंडु मुनिए उपदेश आप्यो, ते त्रण मुनिओए हर्षथी अंगीकार कर्यो; अने करकंडु मुनि शरीर खणवानी वस्तुनो त्रिविधे त्रिविधे त्याग करीने संपूर्ण निःस्पृही थया. त्यारथी खरज आवे ते वखते पण तेने खणवा रूप तेनो सत्कार तजी दीधो. द्विमुख मुनिए विचार्युं के "में साधु थइने पण करकंडु मुनिने खजवाळतां जोइ तेनी निंदा करी, ते में योग्य कर्युं नहीं; माटे आजथी मारे समताज राखवी." आ प्रमाणे सर्वे मुनिओए पोतपोताना वचनने शाम्य रहित अयोग्य मानीने विशेषे समता धारण करी. पछी तेओए यथारुचि त्यांथी

विहार कर्यो. छेवटे ते चारे साथेज केवळज्ञान पामी मोक्षे गया.

आ प्रमाणे शमगुणथी शोभता चारे प्रत्येकबुद्धोनुं संप्रदायने अनुसारे टुंकुं चरित्र अहीं लख्युं छे.

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ चतुर्विंशतितमस्तंभस्य नवचत्वारिंशदधिकत्रिशततमः प्रबंधः ॥ ३४९ ॥

व्याख्यान ३५० मुं.

प्रत्येकबुद्ध नग्गतिनुं चरित्र.

अथ नग्गतिसंज्ञस्य, संबुध्धस्याम्रपादपात् ।
तुर्यप्रत्येकबुद्धस्य, कथां वक्ष्यामि तद्यथा ॥ १ ॥

भावार्थ—हवे आम्रवृक्षने जोइने बोध पामेला नग्गति नामना चोथा प्रत्येकबुद्धनी कथा कहेवामां आवे छे, ते आ प्रमाणे—

गांधार देशमां सिंहरथ नामे राजा हतो. तेने एकदा विपरीत शीखवेला बे घोडाओ भेटमां आव्या. ते अश्वनी गतिनी परीक्षा करवा माटे एक अश्वपर चडीने राजा क्रीडा करवा गयो. ते विपरीत शिक्षा पामेलो अश्व नदीना पूरनी जेम दोडतो बार योजन दूर नीकळी गयो अने एक महारण्यमां राजाने लावी मूक्यो. राजाए ते अश्वनी लगाम खेंची खेंचीने श्रांत थवाथी तेने मूकी दीधी, एटले तरतज ते अश्व त्यां उभो रह्यो. पछी राजाए नीचे उतरीने अश्वने वृक्ष साथे बांधी फळादिकथी प्राणवृत्ति करी. पछी रात्रीवासो करवा माटे ते पासेना पर्वतपर चड्यो. त्यां एक सात माळनुं मंदिर जोइने राजा तेमां पेठो. ते महेलमां एक मृग सरखां नेत्रवाळी कन्या तेना जोवामां आवी. ते कन्याए राजाने जोइने तरत उभा थइ तेने आसन आप्युं. पछी राजाए तेने पूछ्युं के " हे सुभगा ! तुं कोण

छे ? अने अहीं एकली केम रहे छे ?" ते बोली के " प्रथम तमे मने गान्धर्व विवाहथी परणो, पछी हुं मारुं सर्व वृत्तांत तमने कहीश." ते सांभळीने राजाए तेनी साथे गान्धर्वविवाह कर्यो. पछी ते स्त्री पोतानुं वृत्तांत कहेवा लागी के "हे स्वामी ! आ भरतक्षेत्रमां क्षितिपुर नामे नगरमां जितशत्रु नामे राजा हतो. तेणे एकदा चित्रशाळा करवा माटे चित्रकारोने बोलावीने आज्ञा करी के "आ शहेरमां तमारां जेटलां घर होय तेटला विभाग करीने तमे आ सभा चितरो." चितारा-ओ ते प्रमाणे भाग पाडीने सभा चितरवा लाग्या. ते चित्रकारोमां एक वृद्ध चित्र-कार हतो. तेने सहायभूत कोइ नहोतुं. मात्र एक कनकमंजरी नामे तेने पुत्री हती. ते हमेशां पिताने माटे त्यां खावानुं लइने आवती. ते वृद्ध चित्रकार ज्यारे खावानुं आवतुं त्यारे शौच माटे बहार जतो. एकदा कनकमंजरी भोजन लइने राजमार्गे आवती हती ते वखते राजा घोडेस्वार थइने घोडो दोडावतो त्यांथी नीकळ्यो. तेने जोइने भय पामेली कनकमंजरी दोडीने सभामंडपमां आवती रही. ते समये राजा पण सभा जोवा माटे त्यां आव्यो. तेणे चित्र जोतां जोतां भींतपर चित्रेलुं एक मोरनुं पींछुं लेवा माटे एकदम पोतानो हाथ तेना उपर नांख्यो; एटले ते पींछुं तो हाथमां आव्युं नहीं, पण उलटो आंगळीनो नख भांगी गयो. तेथी लज्जित थयेला राजाने जोइने कनकमंजरी विलासपूर्वक हास्य करीने बोली के " हवे मांचो (खाटलो) चारे पायाथी पूर्ण थयो." ते सांभळीने राजाए आ-ग्रहथी तेने पूछ्युं के "शी रीते पूर्ण थयो ?" त्यारे ते बोली के " आजे खा-वानुं लइने हुं अहीं आवती हती, त्यारे राजमार्गे में कोइ माणसने अश्व दो-डावतो जतो जोयो, ते पहेलो मूर्ख. तेने मूर्खाइरूप मांचानो पहेलो पायो समजवो; केमके राजमार्ग बाळको, स्त्रीओ अने वृद्धो विगेरेना जवा आववाथी सांकडो थ-येलो होय छे; तेथी डाह्या पुरुषो त्यां त्वराथी अश्व दोडावता नथी. बीजो मूर्ख अहींनो राजा छे; केमके तेणे परनुं दुःख जाण्या विनाज बीजा युवान चित्रकारो-नी जेटलोज भाग चितरवा माटे मारा वृद्ध अने पुत्र विनाना पिताने आप्यो छे. त्रीजो मूर्ख मारो पिता छे, केमके ज्यारे हुं भोजन लइने आवुं छुं त्यारेज ते देह-चिंता माटे बहार जाय छे, पण आगळ के पाछळ जता नथी; अने चोथा मूर्ख तमे; केमके भींत उपर मयूर क्यांथी होय के जेनुं पींछुं लेवा तमे हाथ लंबाव्यो ? एटली पण खबर न पडी, माटे ते चोथो पायो." आ प्रमाणे ते कन्यानां वाक्यो

सांभळीने तेने सत्य मानी राजाए विचार्युं के " आनी साथे लग्न करीने मारो जन्म सफळ करुं." पछी राजाना कहेवाथी मंत्रीए तेना पिता पासे कनकमंजरीनी मागणी करी, तेथी हर्ष पामीने तेणे पोतानी पुत्री राजाने परणावी.

एकदा कनकमंजरी पोतानो वारो होवाथी दासीनी साथे राजाना शयनगृहमां आवी. राजा सुतो, त्यारे प्रथमथी संकेत करी राखेली दासीए कनकमंजरीने कह्युं के "हे देवी! तमने अद्भुत कथाओ घणी आवडे छे. माटे तेमांथी एक आजे कहो." त्यारे ते बोली के " राजा उंघी जशे त्यारे कहीश." ते सांभळीने तेनी वार्ता सांभळवानी इच्छाथी राजाए खोटी निद्रानो देखाव कर्यो, एटले कनकमंजरीए वार्ता कहेवा मांडी के " एक श्रेष्ठीए एक हाथनुं चैत्य कराव्युं, अने तेमां चार हाथनी देवप्रतिमा स्थापन करी." ते सांभळी दासीए पूछ्युं के " एक हाथना चैत्यमां चार हाथनी प्रतिमा केम रही शके ?" ए मारा संशयने दूर करो; त्यारे राणी बोली के "अत्यारे तो निद्रा आवे छे, काले कहीश." एम कहीने राणी सुइ गइ. बीजे दिवसे तेनुं समाधान सांभळवानी इच्छाथी राजाए तेनेज वारो आप्यो. पछी पहेली रात्रीनी जेम राजा खोटी निद्रा लेवा लाग्यो, त्यारे दासीए पूछ्युं के " हे स्वामिनी ! कालनी शंकानो जवाब आपो." त्यारे राणी बोली के "चार हाथनी प्रतिमा एटले ते प्रतिमाने चार बाहु हती, पण ते चार हाथ उंची नहोती, अर्थात् उंचाइमां तो एक हाथनो नानो हती, तेथी एक हाथ उंचा चैत्यमां ते रही शकी." पछी दासीए बीजी वार्ता कहेवानुं कह्युं, त्यारे राणी बोली के " कोइ वनमां रातो अशोक वृक्ष हतो तेने सेंकडो शाखाओ हती, पण तेनी छाया पृथ्वीपर बीलकुल पडती नहोती." त्यारे दासीए पूछ्युं के " एवडा मोटा वृक्षने छाया केम न होय ? होवीज जोइए." राणी बोली के "अत्यारे तो निद्रा आवे छे; काले जवाब आपीश." एम कही सुइ गइ. त्रीजे दिवसे पण राजाए तेने वारो आप्यो. एटले रात्रे पूर्वनी जेम दासीए पूछ्युं, त्यारे राणीए तेनो खुलासो आप्यो के " ते वृक्ष कुवा उपर हतुं, तेथी तेनी छाया कुवामां पडती हती, एटले ते पृथ्वीपर पडती नहोती." आ प्रमाणे कनकमंजरीए छ मास सुधी वार्ताओ कहीने राजाने वश कर्यो; तेथी बीजी राणीओ कनकमंजरी उपर कोपायमान थइने तेनां छिद्रो शोधवा लागी.

हवे कनकमंजरीने एवो नियम हतो के ते हमेशां एकवार ओरडो बंध करीने पोताना पितानां घरनां लूगडां पहेरी राजाए आपेलां उत्तम वस्त्रो तथा आभूषणो काढी नांखीने पूर्वावस्थानुं स्मरण करी पोताना आत्मानी निंदा करती के "अरे जीव! तुं मद करीश नहीं, ऋद्धिगौरव करीश नहीं, केमके कदाचित् राजा कोहेलो कूतरीनी जेम तने घरमांथी काढी पण मूके; माटे अहंकार न करीश." आ प्रमाणेनी तेनी चेष्टा मात्र जोइने बीजी राणीओए राजाने कह्युं के "हे स्वामी! चितारानी दीकरी जे तमारी मानीती छे ते हमेशां कांइक कामण करे छे, माटे ते तमे जाते प्रमाद मूकीने जुओ अने तमारी खात्री करो; नहीं तो तेनी उपरना मोहथी तमे कांइ पण काम करवा जेवा रहेशो नहीं (नकामा थइ जशो)." ते सांभळीने राजा पोते प्रच्छन्न रीते ते जोवा माटे गयो. ते वखते कनकमंजरीने हमेशनी जेम पोताना आत्माने शिखामण आपती जोइ. तेनां तेवां वचनो सांभळीने संतुष्ट थयेला राजाए विचार कर्यो के—

मदोन्मत्ता भवत्यन्ये, स्वल्पायामपि संपदि ।
असौ तु संपदुत्कर्षं, संप्राप्तापि न माद्यति ॥

"बीजी स्त्रीओ थोडी संपत्तिमां पण मदोन्मत्त थयेली छे, परंतु आ तो मोटी समृद्धि पाम्या छतां पण गर्व करती नथी." मारी बीजी राणीओ इर्ष्याथी आना गुणने पण दोषरूपे जुए छे; परंतु दुर्जननो एवो स्वभावज होय छे. कह्युं छे के—

जाड्यं ह्रीमति गण्यते व्रतरूचौ दंभः शुचौ कैतवं ।
शूरे निर्घृणता ऋजौ विमतिता दैन्यं प्रियालापिनि ॥
तेजस्विन्यवलिप्तता मुखरता वक्तर्यशक्तिः स्थिरे ।
तत्को नाम गुणो भवेत् स गुणिनां यो दुर्जनैर्नांकितः ॥१॥

भावार्थ—"दुर्जनो लज्जावंतने विषे जडता गणे छे, व्रतनी रुचिवाळाने विषे दंभनो आरोप करे छे, पवित्रने विषे कपट कहे छे, शूरवीरने निर्दय कहे छे, सरल स्वभाववाळाने मूर्ख कहे छे, प्रिय वचन बोलनारने दीन कहे छे, तेजस्वी होय तो गर्विष्ठ कहे छे, वक्ता होय तो वाचाळ कहे छे अने स्थिरतावाळो होय

तो अशक्तिमान कहे छे, माटे एवो कयो गुण छे के जेने दुर्जनोए कलंकित कर्यो नथी ? " अर्थात् तेणे सर्व गुणोने कलंकवडे अंकित करेला छे.

आ प्रमाणे विचारीने राजाए तेने पट्टराणी करी. एकदा राजाए पट्टराणी साथे धर्मोपदेश सांभळीने श्रावकधर्म अंगीकार कर्यो. पछी अनुक्रमे ते चित्रकारनी पुत्री धर्मनुं आराधन करीने स्वर्गे गइ, त्यांथी च्यवीने ते वैताढ्य पर्वत उपर दृढशक्ति राजानी पुत्री थइ. ते पुत्री ज्यारे युवावस्था पामी त्यारे तेने जोइने मोह पामेलो वासव नामनो खेचर तेनुं हरण करीने आ पर्वतपर लाव्यो. अहीं विद्याना बळथी आ प्रासाद बनावीने ते परणवाने तैयार थयो. तेवामां ते कन्यानो मोटो भाइ अहीं आव्यो एटले वासवनुं ने तेनुं युद्ध थयुं. तेने परिणामे बन्ने जण मृत्यु पाम्या. पोताना भाइना मरणथी ते कन्या शोकातुर थइ, अने अत्यंत रुदन करवा लागी. तेवामां कोइ व्यंतर देवे आवीने कह्युं के " हे वत्से ! तुं केम रुदन करे छे ? " तेनो जवाब ते आपे छे, तेटलामां ते कन्यानो पिता त्यां आव्यो. तेने आवतो जोइने ते देवे ते कन्याने शवरूप करी नांखी. दृढशक्ति राजाए पुत्रने तथा पुत्रीने मरेलां जोइने उद्वेग पामी संसारनी असारता जाणी पोताने हाथे लोच करी चारित्र अंगीकार कर्युं. त्यारपछी ते देवे मायानुं हरण करी ते कन्याने सचेतन करी, अने ते बन्नेए मुनिने वंदना करी. पछी मुनिना पूछवाथी ते कन्याए पोताना भाइनुं वृत्तांत कह्युं. त्यारे मुनि बोल्या के " में हमणां त्रण शब केम जोयां हतां ? " एटले ते देव बोल्यो के " में मारी माया तमने बतावी हती. " मुनिए पूछ्युं के " शामाटे ? " देव बोल्यो के " आ कन्या पूर्वे चित्रकारनी पुत्री, जितशत्रु राजानी राणी अने परम श्राविका हती. तेणे पोताना पिताना मृत्यु समये पंच नमस्कारादिकवडे तेनी निर्यामणा करी हती; तेथी ते चित्रकार मरीने व्यंतरदेव थयो छे ते हुं छुं, में अवधिज्ञानथी आ मारी पूर्व भवनी पुत्रीने शोकातुर जोइने पूर्व भवना प्रेमथी तेनी आश्वासना करी. ते वखते तमने आवता जोइने में विचार्युं के हवे आ पुत्री तेना पिता साथे जती रहेशे; तेथी मने तेनो विरह थशे, एम जाणीने तेने चेष्टारहित करी हती. पछी तमने निःस्पृही (मुनि) थयेला जोइने में मारी माया दूर करी. हे मुनिराज ! ते मारा अपराधने क्षमा करो. " मुनि बोल्या के " तमे मने धर्मप्राप्तिमां हेतुभूत थवाथी मारा उपकारी थया छो. " एम कहीने मुनिए त्यांथी अन्यत्र विहार कर्यो.

पछी ते कन्याने जातिस्मरण थवाथी पोताना पूर्वभवना पिता ते देवने ओळखीने तेणे पूछ्युं के " हे पिता ! मारो पति कोण थशे ? " देवे अवधिज्ञानथी जाणीने कह्युं के " हे पुत्री ! तारो पूर्वभवनो पति स्वर्गथी च्यवीने सिंहरथ नामे राजा थयो छे. ते अश्ववडे हरण कराइने अहीं आवशे अने ते तारो पति थशे, माटे धीरज राखीने तुं अहींज रहे. " आ प्रमाणे प्रियाए कहेलुं वृत्तांत सांभळीने सिंहरथ राजाने पण जातिस्मरण थवाथी ते संदेहरहित थयो. पछी ते स्त्रीनी साथे राजा एक मास सुधी त्यां आनंदथी रह्यो.

एकदा ते स्त्रीए राजाने कह्युं के " हे प्रिय ! तमारुं नगर अहींथी घणे दूर छे, माटे मारी पासेथी तमे प्रज्ञप्ति विद्या ग्रहण करो." राजाए ते विद्या ग्रहण करीने विधिपूर्वक तेनुं साधन कर्युं. पछी विद्या सिद्ध करीने राजा आकाशमार्गे पोताना नगरमां गयो, त्यांथी पाछो ते पर्वतपर आव्यो. एवी रीते ते राजा वारंवार पर्वत उपर जतो अने पाछो पोताना नगरमां आवतो; तेथी लोकोए नग एटले पर्वत पर आनी गति छे एम जाणीने तेनुं नग्गति एवुं सार्थक नाम पाड्युं. ते विद्याधरनी पुत्री कनकमाळा तो ते व्यंतर देवना कहेवाथी ते पर्वतपरज रही; तेथी नग्गति राजाए त्यां नवुं नगर वसाव्युं.

एकदा कार्तिकी पूर्णिमाने दिवसे राजा सैन्य सहित नगर बहार नीकळीने रयवाडीए जवा चाल्यो. त्यां नवीन पल्लवोथी रक्त अने मांजरोथी पीत देखातो एक सदा फळवाळो छत्राकार आम्रवृक्ष जोयो; एटले ते मनोहर वृक्षनी एक मांजर राजाए मांगळिकने माटे ग्रहण करी अने त्यांथी चागळ चाल्यो. पाछळथी आखा सैन्ये तेनां पत्र, पल्लव अने मांजर लइने ते वृक्षने ठुंठारूप करी नांख्युं. थोडी वारे राजा पाछो वळी तेज जग्याए आव्यो. त्यारे तेणे "पेलो आंबो क्यां छे ?"एम मंत्रीने पूछ्युं. त्यारे मंत्रीए ते ठुंठुं बताव्युं. ते जोइने फरीथी राजाए पूछ्युं के "ते आवो केम थइ गयो ? " मंत्रीए कह्युं के " हे स्वामी ! आ वृक्षनी एक मंजरी प्रथम आपे ग्रहण करी, त्यारपछी सैन्यना सर्व लोकोए तेनां पत्र, पुष्प तथा फळ विगेरे लइने जेम चोर लोको धनिकने लक्ष्मी विनानो करी नाखे तेम तेने शोभारहित करी नाख्यो." ते सांभळीने राजाए विचार कर्यो के " अहो ! लक्ष्मी (शोभा) केवी चंचळ छे ? जुओ ! आ अद्‌भूत लक्ष्मीवाळो आम्रवृक्ष क्षणवारमां लक्ष्मी रहित थइ गयो. जे प्रथम संतोष करनार होय ते क्षणांतरमांज वमन

करेला भोजननी जेम जोवा योग्य पण रहेतुं नथी. जेम जळना बुद्बुदो (परपोटा) अने संध्या समयनी कांति स्थिर रहेती नथी, तेम सर्व संपत्तिओ पण अस्थिर छे एम निश्चय थाय छे."

आ प्रमाणे विचार करीने पोतानी मेळे केशनो लोच करी देवदत्त मुनिवेष धारण करीने गान्धार देशना राजा नग्गतिए चारित्र अंगीकार कर्युं, अने त्यांथी ते चोथा प्रत्येकबुद्धे पृथ्वीपर विहार कर्यो.

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ चतुर्विंशतितमस्तंभस्य
पंचाशदधिकत्रिशततमः प्रबंधः ॥ ३५० ॥

व्याख्यान ३५१ मुं.

केटलाक लज्जाथी पण ग्रहण करेला व्रतने तजता नथी ते विषे.

लज्जातो गृहीतां दीक्षां, निर्वहति यदा नरः ।
तदा सत्त्वेषु योग्यात्मा, लक्ष्यते भवदेववत् ॥ १ ॥

भावार्थ—" ज्यारे माणस लज्जाथी पण ग्रहण करेली दीक्षानुं पालन करे छे, त्यारे ते भवदेवनी जेम धैर्यवान पुरुषोमां योग्य आत्मा जणाय छे." आ अर्थनुं समर्थन करवा माटे संप्रदायागत भवदेवनो संबंध कहेवामां आवे छे.

भवदेवनी कथा.

सुग्राम नामना गाममां राठोडवंशी आर्यवान् नामनो एक कौटुंबिक (कणबी) रहेतो हतो. तेने रेवती नामे स्त्री हती, अने भवदत्त तथा भवदेव नामे बे पुत्रो हता. तेमांना भवदत्ते संसारथी विरक्त थइने वैराग्यथी सुस्थित नामना आचार्य पासे दीक्षा लीधी. गुरुनी साथे विहार करतां ते भवदत्त मुनि गीतार्थ थया.

एकदा कोइ साधु गुरुनी रजा लइने पोताने गाम पोताना नाना भाइने प्रतिबोध आपवा माटे गया; पण त्यां तेनो भाइ तो विवाहना कार्यमां व्यग्र हतो, तेथी तेणे पोताना मोटा भाइ मुनिने आवेला पण जाण्या नहीं; एटले खेदयुक्त थइने ते मुनिए गुरु पासे पाछा आवी सर्व वृत्तांत कह्युं. ते सांभळीने भवदत्त मुनि बोल्या के "अहो! तमारा भाइनुं हृदय तो बहु कठण लागे छे के जेथी तमारो सत्कार पण तेणे कर्यो नहीं." त्यारे ते मुनि बोल्या के "त्यारे तमे तमारा नाना भाइने दीक्षा अपावो." ते सांभळी भवदत्त बोल्या के "ज्यारे गुरु ते देश तरफ विहार करशे त्यारे ते कौतुक तमने बतावीश."

अन्यदा गुरुमहाराज विहार करतां करतां भवदत्तना गाम तरफ गया; त्यारे गुरुनी आज्ञा लइने भवदत्त पोताने घेर गया. ते वखते भवदेव नागदत्तनी नागिला नामनी कन्याने तरतमांज परण्यो हतो. भवदत्त मुनिए भाइने घेर जइ धर्मलाभ आप्यो त्यारे तेना स्वजनोए तेमने प्रासुक अन्नथी प्रतिलाभ्या. ते समये कुळाचारने लीधे भवदेव पोतानी स्त्रीने शणगारवाना प्रारंभमां तेना वक्षःस्थळ पर चंदनना रसथी अंगराग करतो हतो, त्यां तेणे मोटा भाइने आवेला सांभळ्या; एटले तेने अर्धी शणगारेली पडती मूकीने तरतज ते मुनिने वांदवा आव्यो. पछी भवदत्त-मुनिए त्यांथी पाछा वळी गुरु पासे आवतां नाना भाइना हाथमां घीनुं पात्र आप्युं. तेमने वळाववा माटे आवेला सर्व स्वजनो थोडे दूर जइने अनुक्रमे पाछा वळ्या; पण भवदेव तो भवदत्त मुनिए करवा मांडेली बाल्यक्रीडानी वातो सांभ-ळतो सांभळतो भाइनी (मुनिनी) साथेज चाल्यो. अनुक्रमे पोताना भाइ सहित भवदत्त मुनिने आवता जोइने सर्व साधुओ बहु विस्मय पाम्या, अने तेमनी प्रशंसा करवा लाग्या के "अहो! आ भवदेव शुं बाल्यवयमांज दीक्षा लेशे?" पछी भवदत्त मुनि गुरुने नमीने बोल्या के "आ मारो भाइ आपनी पासे दीक्षा लेवा आव्यो छे." त्यारे गुरुए भवदेवने पूछ्युं के "तारे दीक्षा लेवी छे?" ते सांभळी भवदेवे विचार्युं के "मारा मोटा भाइनुं वचन मिथ्या न थाओ." एम विचारीने ते बोल्यो के "हे गुरु! हुं दीक्षा माटेज आव्यो छुं." ते सांभळीने गुरुए तेने दीक्षा आपी. अनुक्रमे ते वृत्तांत तेना स्वजनोए जाण्यो, एटले तेओ त्यां आव्या, पण तेणे दीक्षा लीधेली देखीने पाछा गया.

हवे भवदेव मुनि मोटा भाइना उपरोधथी व्रतनुं पालन करतो हतो, पण

योगीना हृदयमां परमात्मानी जेम तेना हृदयमां नागिलानुं चिंतन थया करतुं हतुं. केटलाक वर्ष पछी भवदत्त मुनि अनशन ग्रहण करीने सौधर्म देवलोकमां देवता थया. त्यारे भवदेवे विचार्युं के "अहो भवदत्त तो स्वर्गे गया; हवे मारे व्रतनो परिश्रम शा माटे करवो? मारा जीवितने धिःक्कार छे! केमके हुं अर्धी शणगारेली प्राणप्रियानो त्याग करीने अहीं आव्यो छुं, माटे हवे तो घेर पाछो जाउं." एम विचारीने संयमथी भ्रष्ट मनवाळो थइ ते पोताना नगर तरफ चाल्यो. त्यां नगरनी बहारना उपवनमां एक वृद्ध स्त्रीने बीजी कांइक जरा आवेली स्त्री साथे जोइने तेणे पूछ्युं के "हे डोशी! आ गाममां भवदेवनी स्त्री नागिला रहे छे ते कुशळ छे?" ते सांभळीने कांइक जरा आवेली स्त्री नागिलाज हती तेथी तेणे भवदेवने ओळखीने पूछ्युं के "हे मुनि! शुं तमेज नागिलाना पति छो?" भवदेव बोल्यो के "हा, तेज हुं छुं. मारा मोटा भाइ काळ करी स्वर्गे जवाथी भोगमां उत्सुक एवो हुं अहीं आव्यो छुं, माटे तुं मने नागिलाना खबर आप." ते सांभळी नागिला बोली के "हे महात्मा! हुंज ते नागिला छुं. मारा देहमां तमे शुं लावण्य जुओ छो?" इत्यादि घणी सारी रीते तेने उपदेश कर्यो, तोपण भवदेवनी आसक्ति ओछी थइ नहीं, तेवामां नागिलानी साथे हती ते सखीना पुत्र त्यां आवीने कह्युं के "हे माता! एक वासण लावो, एटले में प्रथम खाधेली खीर हुं तेमां ओकी काढुं. मारे आज जमवानुं नोतरुं आव्युं छे, माटे हुं त्यां जइने जमी आवीश. पछी ज्यारे मने भूख लागशे त्यारे हुं ओकी काढेली खीर खाइश." ते सांभळीने ते वृद्धा बोली के "हे पुत्र! श्वानथी पण अधिक जुगुप्सा करवा लायक आ कार्य करवुं ते तने योग्य नथी." भवदेव पण बोल्यो के "हे बाळक! वमन करेलानी खावानी इच्छा करवाथी तुं श्वानथी हलको गणाइश." त्यारे नागिला बोली के "हे महात्मा! तमे एवुं जाणो छो, छतां प्रथम वमन (त्याग) करेली एवी जे हुं तेने हवे पाछा केम चाहो छो? लाजता नथी? दुर्गंधी एवा मारा देहमां सारुं शुं जुओ छो?" इत्यादि नागिलानी युक्तियुक्त वाणीथी प्रतिबोध पामेलो भवदेव फरीथी गुरु पासे गयो, अने फरीथी चारित्र ग्रहण करी गुरुए कहेला तपनो स्वीकार करी छेवटे अनशनथी काळ करीने सौधर्म देवलोकमां देवता थयो.

त्यांथी च्यवीने ते शिवकुमार थयो. त्यां दीक्षा लेवा उत्सुक छतां ज्यारे मातापिताए तेने दीक्षानी आज्ञा आपी नहीं त्यारे घेर रहीने भावमुनि थइ नि-

रंतर छठने पारणे आयंबिल तप करवा लाग्यो. एवी रीते बार वर्ष सुधी तप करीने ते भावमुनि काळ करीने ब्रह्मदेवलोकमां अद्भुत कांतिवाळो विद्युन्माली देवता थयो.

"आ प्रमाणे भवदेवे प्रथम लज्जाना वशथी दीक्षा लइने तेनुं द्रव्यथी घणां वर्ष सुधी पालन कर्युं; पछी स्त्रीना वचनथी प्रतिबोध पामीने शुद्ध व्रत धारण कर्युं, अने तेनुं प्रतिपालन करी सद्गतिनुं भाजन थयो."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ चतुर्विंशतितमस्तंभस्य
एकपंचाशदधिकत्रिशततमः प्रबंधः ॥ ३५१ ॥

व्याख्यान ३५२ मुं.

जंबूस्वामीनुं चरित्र.

गणाधिपेऽथ संप्राप्ते, पंचमे पंचमीं गतिम् ।
जंबूर्विकासयामास, शासनं पापनाशनम् ॥ १ ॥

भावार्थ—"पांचमा गणधर सुधर्मास्वामी पांचमी गति (मोक्ष) पाम्ये सते श्रीजंबूस्वामीए पापने नाश करनारा जैनशासननो विकास कर्यो."

श्रीजंबूस्वामीनी कथा.

एकदा वैभारगिरि उपर श्री महावीरस्वामी समवसर्या. ते सांभळीने श्रेणिक राजा सर्व समृद्धिथी त्यां जइ प्रभुने वांदी देशना सांभळवा बेठा. ते सभामां चार देवीओ सहित बेठेला कोइ अति देदीप्यमान कांतिवाळा देवने जोइने राजाए प्रभुने पूछ्युं के "हे स्वामी! सर्व देवोमां आ देव अति कांतिमान छे तेनुं शुं कारण?" त्यारे प्रभु बोल्या के "पूर्वे तमाराज देशमां भवदत्त अने भवदेव नामना बे भाइओ हता. तेमां मोटा भाइ भवदत्ते चारित्र ग्रहण कर्युं ह-

तुं. पछी केटलेक काळे भवदत्तना आग्रहथी भवदेवे पण अर्धी शणगारेली नागिला नामनी पत्नीनो त्याग करीने चारित्र ग्रहण कर्युं. केटलेक वर्षे भवदत्त मुनि स्वर्गे गया पछी भवदेव चारित्रथी भग्न परिणामवाळो थयो, तेने फरीथी नागिलाए ज स्थिर कर्यो. ते भवदेव मृत्यु पामीने सौधर्म देवलोकमां देवता थयो.

भवदत्तनो जीव स्वर्गथी च्यवीने महाविदेह क्षेत्रमां पुंडरीकिणी नामनी पुरिमां वज्रदत्त नामना चक्रीनी यशोधरा नामनी राणीथी पुत्रपणे उत्पन्न थयो. ते कुमार अनुक्रमे युवावस्था पाम्यो, त्यारे पिताए तेने घणी कन्याओ परणावी. एकदा ते राजकुमार पोतानी स्त्रीओ सहित महेलनी अगाशीमां बेठो हतो. ते वखते आकाशमां विचित्र वर्णवाळां वादळांओ तथा मेघ जोइने ते आनंद पाम्यो. क्षणवारमां प्रचंड वायु वावा लाग्यो, एटले सर्व वादळांओ अने मेघ वीखराइने जतां रह्यां. ते जोइने राजकुमारे विचार्युं के "आ वादळांओनी जेम यौवन, धन, सौन्दर्य विगेरे सर्व अनित्य छे." एम निश्चय करीने गुरु पासे जइ तेणे दीक्षा लीधी. अनुक्रमे अवधिज्ञान पामी पृथ्वीपर विहार करवा लाग्या.

तेज विदेह क्षेत्रमां वीतशोक नामना पुरमां भवदेवनो जीव सौधर्म देवलोकमांथी च्यवीने शिवकुमार नामे राजपुत्र थयो. ते एकदा पोताना महेलना गवाक्षमां बेठो हतो, तेवामां ते मुनि के जे पोताना पूर्वभवना भाइ हता ते त्यां थी नीकळ्या तेने जोइने शिवकुमार अति हर्ष पाम्यो. पछी मुनि पासे जइ वंदना करीने तेणे पोताना स्नेहनुं कारण पूछ्युं; त्यारे ते ज्ञानी मुनिए पूर्वनी सर्व वात कही संभळावी. ते सांभळीने ते दीक्षा लेवा उत्सुक थयो; परंतु मातपितानी आज्ञा नहीं मळवाथी ते खेद पामीने पौषधशाळामां जइ निरंतर छठ्ठ तप करी पारणाने दिवसे आचाम्ल व्रत करवा लाग्यो. ए प्रमाणे बार वर्ष सुधी तप करी भावयतिपणुं स्वीकारी त्यांथी काळ करीने ब्रह्म देवलोकमां आ विद्युन्माली नामे देव थयो छे." ते सांभळीने श्रेणिक राजाए तेनुं भावि वृत्तांत पूछ्युं. त्यारे श्री जिनेश्वर बोल्या के "आजथी सातमे दिवसे आ देव च्यवीने आज नगरीमां ऋषभ नामना श्रेष्ठीनी धारिणी नामनी स्त्रीना गर्भथी जंबू नामे पुत्र थशे. ते आ अवसर्पिणीमां छेल्ला केवळी थशे." आ प्रमाणे भगवाननी देशना सांभळी सर्व जनो स्वस्थाने गया.

पछी सातमे दिवसे ते देव स्वर्गथी च्यवी धारिणीनी कुक्षिथी पुत्ररूपे उत्पन्न थया. तेनुं मातपिताए जंबू नाम पाड्युं. ते अनुक्रमे युवावस्था पाम्या. एकदा वैभा

रगिरि उपर श्री सुधर्मा स्वामी समवसर्या. तेने नमवा माटे जंबूकुमार गया. सुधर्मा स्वामीने वांदीने योग्य स्थाने बेसी अमृत जेवी उज्वल देशना सांभळीने ते पोताना घर तरफ पाछा वळ्या. गामना दरवाजा पासे आवतां ते दरवाजे शत्रुने मारवा माटे चक्र विगेरे गोठवेलां हतां ते जोइ जंबूकुमारे विचार्युं के “ कदाच आ मारण-चक्रादिक मारा उपर पडे, तो हुं धर्म कर्या विना केवी गति पामुं? माटे हुं पाछो वळीने गणधर पासे जइ जीवन पर्यंत ब्रह्मचर्यनुं पच्चख्खाण तो लइ आवुं.” एम विचारी गणधर पासे जइ ब्रह्मचर्यनुं पच्चख्खाण लइने ते घेर आव्यो. पछी मात-पिताने तेणे कह्युं के “ हुं आपनी आज्ञाथी श्री सुधर्मा स्वामी पासे दीक्षा लेवा इच्छुं छुं.” आ प्रमाणेनुं कालकूटना जेवुं तेनुं वचन सांभळीने मातापिताए पुत्र परना स्नेहथी मोह पामीने संयमनी दुष्करता विगेरेनु वर्णन कर्युं. तेना अनेक उत्तरो आपीने जंबूकुमारे मातपिताने निरुत्तर कर्या: एटले फरीथी ते बोल्या के “ हे वत्स ! तारे माटे प्रथमथी नक्की करी राखेली आठ कन्याओने परणीने अमारा मनोरथ पूर्ण कर, पछी तारे गमे ते करजे.” आ प्रमाणे केहेवामां तेना मातपिताए “स्त्रीओना प्रेममां पडवाथी पछी ए जइ शकशे नहीं ” एवो निश्चय करीने तेने परणवानो आग्रह कर्यो. पछी मोटा उत्सवथी जंबूकुमारे आठ कन्या ओ साथे पाणिग्रहण कर्युं. जंबूकुमारे परण्या पहेलां ते आठने पोतानो मनोरथ कहेवराव्यो हतो. त्यारे ते आठेए कह्युं हतुं के “ आ लोकमां अथवा तो परलोकमां पण अमारे तो जंबूकुमारज स्वामी छे. शुं कुमुदिनी चंद्र विना बीजा वरने कदापि इच्छे छे? ” एम कहीने ते जंबूकुमारने परणी हती. लग्न थया पछी स्पृहा रहित जंबूकुमार वासगृह (शयनगृह) मां गयो. त्यां कामदेवथी पीडाती ते स्त्रीओ साथे विकार रहित कुमार वातो करवा लाग्यो. ते वखते ते स्त्रीओए स्नेह वृद्धि पामे तेवी आठ वार्ताओ कही. तेना उत्तरमां कुमारे वैराग्य उत्पन्न थाय तेवी सामी आठ वार्ताओ कही. हवे ते उपदेशने समयेज पांचसो चोरो सहित प्रभव नामनो राज-पुत्र अवस्वापिनी अने तालोद्घाटिनी (ताळां उघाडे तेवी) विद्याना प्रभावथी जंबूकुमारना घरमां आवीने चोरी करवा लाग्यो हतो. ते वखते कोइ देवताए ते सर्वने स्तंभित कर्या; एटले प्रभवे विचार्युं के “ आ महात्माथीज हुं परिवार सहित स्तंभित थयो छुं. ” एम विचारीने सर्व स्त्रीओने उत्तर प्रत्युत्तर आपीने समजा-वता जंबूकुमारने तेणे कह्युं के “ हे महात्मा ! हुं आ दुष्ट व्यापार–चौर्यकर्मथी

निवृत्त थयो छुं, माटे मारी पासेथी आ बे विद्या ल्यो अने तमारी स्तंभिनी विद्या मने आपो." ते सांभळीने जंबूकुमार बोल्या के "हुं तो प्रातःकाळमांज आ गृहादिकना बंधननो त्याग करीने श्रीसुधर्मास्वामी पासे दीक्षा लेवानो छुं, मारे तारी विद्यानी कांइ पण जरूर नथी. वळी हे भद्र ! में कांइ तने स्तंभित कर्यो नथी, पण कोइ देवताए मारापरनी भक्तिथी तने स्तंभित कर्यो हशे. तेमज भवनी वृद्धि करे तेवी विद्याओ हुं लेतो के देतो नथी; पण समस्त अर्थने साधी आपनारी श्री सर्वज्ञभाषित ज्ञानादिक विद्यानेज ग्रहण करवाने हुं इच्छुं छुं." एम कहीने तेणे चमत्कार पामे तेवी धर्मकथाओ तेने विस्तारथी कही. ते सांभळीने प्रभव बोल्यो के "हे भद्र ! पुण्यथी प्राप्त थयेला भोगोने तमे शा माटे भोगवता नथी ?" जंबूकुमारे जवाब आप्यो के "किंपाक वृक्षना फळनी जेम अंते दारुण कष्टने आपनारा अने देखीताज मात्र मनोहर एवा विषयोने कयो डाह्यो माणस भोगवे ? कोइ न भोगवे." एम कही तेणे प्रथम मधुबिंदुनुं दृष्टांत कर्युं. फरीथी प्रभवे कह्युं के "तमारे पुत्र थाय त्यारपछी दीक्षा लेवी योग्य छे, केमके पिंड आपनार पुत्ररहितने स्वर्गनी प्राप्ति थती नथी." ते सांभळीने जंबूकुमारे हास्य करीने कह्युं के "जो एम होय तो सूकर, सर्प, श्वान, गोधा विगेरेने घणा पुत्रो होय छे, तेथी तेओज स्वर्गे जशे, अने बाल्यावस्थाथीज ब्रह्मचर्य पाळनारा स्वर्गे नहीं जाय." आ प्रसंग उपर महेश्वर वणिकनुं दृष्टांत कही बताव्युं. पछी जंबूकुमारनी आठे स्त्रीओ अनुक्रमे बोली. तेमां प्रथम मोटी समुद्रश्री बोली के "हे स्वामी ! पुण्यथी प्राप्त थयेली आ लक्ष्मीनो त्याग करीने तमे केम चारित्र लेवा इच्छो छो ?" जंबूकुमारे जवाब आप्यो के "वीजळीनी जेवी चपळ लक्ष्मीनो शो विश्वास ? माटे हे प्रिये ! ते लक्ष्मीने मूकीने हुं दीक्षा ग्रहण करवा इच्छुं छुं." पछी बीजी बव्रश्री बोली के "छए दर्शननो मत एवो छे के दानादिक धर्मथी उपकारी होवाने लीधे गृहस्थाश्रमीनो धर्म श्रेष्ठ छे. कह्युं छे के—

हितं भवद्वयस्यापि, धर्ममेतमगारिणाम् ।
पालयन्ति नरा धीरास्त्यजन्ति तु ततः परे ॥ १ ॥

भावार्थ—"आ दानादिक गृहस्थीओनो धर्म बन्ने भवमां हितकारी होवाथी तेनुं धीर पुरुषो पालन करे छे, अने कायर मनुष्यो तेने तजी दे छे."

जंबूए कह्युं के "सावद्यनुं–पापयुक्त क्रियाओनुं सेवन करवाथी गृहीधर्म शी रीते श्रेष्ठ कहेवाय ? केमके गृही अने मुनिना धर्ममां मेरु अने सरसव तथा सूर्य अने खद्योतना जेटलुं अंतर छे." पछी त्रीजी पद्मसेना बोली के "कदलीना गर्भ जेवुं कोमळ तमारुं शरीर संयमनां कष्टो सहन करवाने योग्य नथी." जंबूए कह्यु के "अरे ! कृतघ्नी अने क्षणभंगुर एवा आ देह उपर बुद्धिमान पुरुष शी रीते प्रीति करे ?" पछी चोथी कनकसेना बोली के "पूर्वे जिनेश्वरोए पण प्रथम राज्यनुं पालन करी संसारना भोग भोगवीने पछी व्रत अंगीकार कर्युं हतुं, तो तमे शुं कोइ नवा मोक्षनी इच्छावाळा थया छो ?" जंबूए कह्युं के "जिनेश्वरो अवधिज्ञानवाळा होवाथी तेओ पोताना व्रतयोग्य समयने जाणी शके छे; माटे हाथी साथे गधेडानी जेम तेमनी साथे आपणी जेवा सामान्य मनुष्योनी शी स्पर्धा ? प्राणीओना जीवितरूपी महा अमूल्य रत्नने कामरूप तस्कर अचिंत्यो आवीने मूळमांथी चोरी ले छे, तेथी डाह्या पुरुषो संयमरूपी पाथेय लइने तेनावडे मोक्षपुरने पामे छे के ज्यां आ काळरूप चोरनो जरा पण भय होतो नथी." पछी पांचमी नभसेना बोली के "हे प्राणनाथ ! आ प्रत्यक्ष अने स्वाधीन एवुं कुटुंबनुं सुख प्राप्त थयुं छे, तेने छोडीने देह विनाना सुखनी (मोक्षसुखनी) शा माटे इच्छा करो छो ?" जंबूए जवाब आप्यो के "हे प्रिया ! क्षुधा, तृषा, मूत्र, पुरीष अने रोगादिकथी पीडा पामता आ मनुष्यदेहमां इष्ट वस्तुना समागमथी पण शुं सुख छे ? कांइ नथी." पछी छट्ठी कनकश्री बोली के "प्रत्यक्ष सुख पाम्या छतां तेने तजीने परोक्ष सुखनी वातो करवी ते फोगट छे. भोगनी प्राप्ति माटे व्रत ग्रहण करवुं, तो ज्यारे ते भोगज प्राप्त थया होय त्यारे व्रतना आचरणथी शुं ? खेतरमां वृष्टिथीज अन्न पाक्युं होय तो पछी कुवामांथी पाणी खेंचीने पावानो प्रयास कोण करे ?" कुमारे तेने जवाब आप्यो के "हे प्रिया ! तारी बुद्धि बरोबर रुडी रीते चालती नथी. वळी आवुं बोलवाथी तारुं अदीर्घदर्शीपणुं प्रगट थाय छे, अने ते अन्य जनने हितकारी थतुं नथी; केमके स्वर्ग तथा मोक्षने आपनार एवा आ मनुष्यदेहने जे माणसो भोगसुखमां गुमावे छे, तेओ मूलधन खानारानी जेम परिणामे अतिशय दुःखने प्राप्त थाय छे, माटे हे प्रिया ! जलदीथी नाश पामनारा एवा आ मनुष्यजन्मने पामीने हुं एवी रीते करीश के जेथी कोइ पण वखत पश्चात्ताप करवो न पडे." पछी सातमी कनकवती बोली के "हे नाथ ! हाथमां

रहेला रसने ढोळी नाखीने पात्रना कांठा चाटवा ' ए कहेवतने तमे सत्य करी बतावो छो." जंबूए कह्युं के "हे गौर अंगवाळी प्रिया! भोगो हाथमां आव्या छतां पण नाश पामी जाय छे, तेथी तेमां मनुष्योनुं स्वाधीनपणुं छेज नहीं; छतां तेने हाथमां आवेला माने छे तेओने भूतनी जेवो भ्रम थयेल छे एम समजवुं. विवेकी पुरुषो पोतेज भोगना संयोगोनो त्याग करे छे. अने जे अविवेकी पुरुषो तेनो त्याग करता नथी तेओनो ते भोगोज त्याग करे छे." पछी छेल्ली (आठमी) जयश्री बोली के "हे स्वामी! तमे सत्य कहो छो, परंतु तमे परोपकाररूप उत्तम धर्मने अंगीकार करनारा छो, माटे भोगने इच्छया विना पण अमारापर उपकार करवा माटे अमने सेवो. वृक्षो मनुष्योना तापने दूर करवारुप उपकारने माटे पोते तापने सहन करे छे. वळी क्षारसमुद्रनुं पाणी पण मेघना संयोगथी अमृत समान थाय छे, तेवी रीते तमारा संयोगथी प्राप्त थयेला भोग पण अमने सुखने माटे थशे." कुमारे कह्युं के "हे प्रिया! 'भोगोथी क्षण मात्र सुख थाय छे, पण चिरकाळ सुधी दुःख थाय छे' एवा परमात्माना वचनथी मारुं मन तेनाथी निवृत्ति पाम्युं छे, अने तेमां तमारुं पण कांइ कल्याण होय एम मने भासतुं नथी. माटे हे कमळना जेवा नेत्रवाळी प्रिया! तेवा प्रांते अहितकारी भोगमां आग्रह करवो ते कल्याणने माटे नथी. कुमनुष्योमां, कुदेवोमां, तिर्यंचोमां अने नरकमां भोगी जनो जे दुःख पामे छे ते सर्व ज्ञानीज जाणे छे."

आ प्रमाणेनी कुमारनी वाणी सांभळीने ते आठे स्त्रीओ वैराग्य पामी, एटले तत्काळ हाथ जोडीने बोली के "हे प्राणनाथ! तमे जे मार्गनो आश्रय करो तेज मार्ग अमारे पण सेव्य छे."

ते वखते प्रभव विचार करवा लाग्यो के "अहो! आ महात्मानुं विवेकीपणुं तथा परोपकारीपणुं केवुं छे? अने मारुं पापिष्ठपणुं तथा मूर्खपणुं केवुं छे? आ महात्मा पोताने आधीन एवी पण लक्ष्मीनो त्याग करे छे अने निर्लज्ज एवो हुं तेज लक्ष्मीनी अभिलाषा करुं छुं पण ते प्राप्त थती नथी. माटे हुं अत्यंत निंद्य छुं. मने अधमीने धिक्कार छे!" आवा विचारथी परिवार सहित वैराग्य पामेलो प्रभव बोल्यो के "हे महात्मा! मने आज्ञा आपो. मारे शुं

करवुं ?" जंबूकुमारे जवाब आप्यो के "जे हुं करुं ते तुं पण कर."

पछी प्रातःकाळे संघ तथा चैत्यनुं पूजन करीने स्वजनोनुं सन्मान करीने कुमारे स्नान करी चंदननुं विलेपन कर्युं. पछी श्वेत वस्त्रो तथा सर्व अंगे अलंकारो धारण करीने हजार पुरुषोए वहन कराती शिबिकामां आरूढ थया. मार्गमां दीन पुरुषोने दान आपी रंजन करता हता, वाजित्रोथी आकाश शब्दित थतुं हतुं, अने अनादृत देवताए तेनो निष्क्रमणोत्सव कर्यो हतो. एवी रीते पोतानी आठ पत्नीओ, तेना माबापो, पोताना माबाप अने पांचसो चोरो सहित प्रभव राजपुत्र—ए सर्वनी साथे जंबूकुमार सुधर्मास्वामीए पवित्र करेला उपवनमां आव्या. त्यां शिबिकाथी उतरीने गुरुने नमस्कार करी जंबूकुमारे विज्ञप्ति करी के "कुटुंब सहित अमने पांचसो सत्तावीश जणने दीक्षा तथा तपस्या आपीने अनुग्रह करो." एटले सुधर्मास्वामीए पोताना हाथथी तेने परिवार सहित दीक्षा आपी, अने प्रभवमुनि जंबूमुनिने शिष्य तरीके आप्या.

"श्रीवीरस्वामीना निर्वाण पछी दश वर्षे सुधर्मास्वामीए जंबूस्वामीने गणधर पदवी आपी, अने श्रीमहावीरना निर्वाण पछी चोसठ वर्षे जंबूस्वामीए प्रभवस्वामीने गणधर पदवी आपी."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ चतुर्विंशतितमस्तंभस्य
द्विपंचाशदधिकत्रिशततमः प्रबंधः ॥ ३५२ ॥

व्याख्यान ३५३ मुं.

भाववंदनना फळ विषे.

स्वस्थानस्थोऽपि सद्भावात्, सांबः श्रीकृष्णनन्दनः ।
श्रीनेमिवंदनात् प्राप, फलं मुक्तिफलप्रदम् ॥ १ ॥

भावार्थ—" श्री कृष्णनो पुत्र सांब पोताने स्थाने रहीने पण सद्भाववडे श्री नेमिनाथने वंदन करवाथी मुक्तिफळने आपनारुं फळ पाम्यो. "

सांबकुमारनी कथा.

द्वारका नगरीमां त्रण खंडना स्वामी श्रीकृष्णवासुदेव राज्य करता हता. तेने रुक्मिणी विगेरे घणी स्त्रीओ हती. एकदा रुक्मिणीए स्वप्नमां वृषभोथी शोभता विमानमां पोताने बेठेली जोइ. पछी ते स्वप्न तेणे श्रीकृष्णने कह्युं, त्यारे कृष्णे ' तने पुत्र थशे ' एम कह्युं. ते वाक्य रुक्मिणीए सत्यभामाने कह्युं. ते सांभळीने क्रोधथी अरुण थयेली सत्यभामा कृष्ण पासे जइने बोली के " में पण आजे स्वप्नमां मोटो हस्ती जोयो छे. " आ वाक्य तेनी चेष्टापरथी असत्य जाणीने कृष्णे कह्युं के " हे प्रिया ! परनी इर्ष्याथी शा माटे खेद करे छे ? " त्यारे बीजानी संपत्तिने नहीं सहन करनारी सत्यभामा बोली के " मारुं वाक्य सत्य ज छे. " पछी ते बन्ने सपत्नीने परस्पर विवाद थयो, तेमां छेवट तेमणे एवी सरत करी के " जेनो पुत्र पहेलो परणे तेने बीजीए पोताना मस्तकना सर्व केशो उतारीने आपवा. " आ वातमां कृष्ण तथा बळरामने साक्षी राख्या.

दैवयोगे ते बन्ने सपत्नीओए गर्भ धारण कर्या. समय आवतां रुक्मिणीए प्रथम पुत्रने जन्म आप्यो. ते पुत्र अत्यंत कांतिमान होवाथी कृष्णे तेनुं प्रद्युम्न एवुं नाम पाड्युं. बीजे दिवसे सत्यभामाए पण पुत्रने जन्म आप्यो. तेनुं नाम भानु राखवामां आव्युं. अन्यदा धूमकेतु नामनो असुर पूर्वना वैरथी रुक्मिणीने घेर आवीने तेना पुत्रने वैताढ्यपर्वतपर लइ गयो. त्यां एक शिलापर ते बाळकने मूकीने ते असुर जतो रह्यो. तेवामां काळसंवर नामे कोइक विद्याधरनो

राजा त्यांथी नीकळ्यो. तेणे ते बाळक जोइने तेने लइ पोतानी स्त्रीने आप्यो, अने पुत्र तरीके तेनुं पालन करवा मांड्युं.

अहीं श्रीकृष्णने पुत्रहरणनी खबर थतां तेना वियोगथी तेने पीडा थइ. ते जोइने नारदमुनि श्रीसीमंधर स्वामी पासे गया. त्यां नारदना पूछवाथी स्वामीए धूमकेतुना हरणथी आरंभीने प्रद्युम्ननुं सर्व वृत्तान्त कही बताव्युं. ते सांभळीने नारद कृष्ण अने रुक्मिणी पासे आवी प्रद्युम्ननुं सर्व वृत्तान्त कहीने कह्युं के "पूर्वभवे रुक्मिणीए मयूरीनां इंडांनो सोळ प्रहर सुधी वियोग कराव्यो हतो, ते कर्मथी तेनो पुत्र तेने सोळ वर्ष पाछो मळशे." ते सांभळीने रुक्मिणी हर्षित थइ.

अहीं प्रद्युम्न युवावस्था पाम्यो. अन्यदा तेना स्वरूपथी मोह पामेली ते काळसंवर विद्याधरनी स्त्री कनकमाळाए कामज्वरथी पीडा पामीने प्रद्युम्नने कह्युं के "हे भाग्यवान् ! मारी साथे भोग भोगव." ते सांभळीने खेद पामेलो प्रद्युम्न बोल्यो के "हे माता ! आवुं बोलवुं तमने घटतुं नथी." ते बोली के "हुं तारी माता नथी. मारा पतिने तुं कोइ स्थानेथी हाथ आव्यो छे, में तो तने वृत्तनी जेम वृद्धि पमाड्यो छे; तेथी हुं तारी पासेथी भोगरूप फळ ग्रहण करवा इच्छुं छुं. मारी पासेथी तुं सर्वत्र विजय आपनारी गौरी अने प्रज्ञप्ति नामनी बे विद्याओ ग्रहण कर." त्यारे प्रद्युम्न हा पाडीने तेनी पासेथी बन्ने विद्या ग्रहण करी. पछी कनकमाळा बोली के "हे प्राणप्रिय! हवे मारा देहमां व्याप्त थयेला कामज्वरनुं निवारण कर, अने पोतानी वाणीने सत्य कर." ते सांभळीने प्रद्युम्न बोल्यो के "हे माता! तमे मारा विद्यागुरु थइने आवी अयोग्य मागणी केम करो छो ?" एम कहीने प्रद्युम्न नगरनी बहार गयो. ते वखते पोताना नखवडे पोताना वक्षस्थळादिकनुं क्रोधथी निर्दय रीते विदारण करीने कनकमाळा पोकार करवा लागी अने मोटे स्वरे बोली के "अरे पुत्रो ! दोडो, दोडो, आ दुष्ट भोगनी इच्छाथी मारी आवी कदर्थना करीने जतो रह्यो छे." ते सांभळी तेना पुत्रो प्रद्युम्ननी पाछळ युद्ध करवा दोड्या. प्रद्युम्ने विद्याबळथी ते सर्वने हणी नाख्या. पुत्रोने हणायेला सांभळीने तेनो पिता जाते युद्ध करवा गयो. तेने पण प्रद्युम्ने क्रीडामात्रमां जीतीने बांधी लीधो. त्यारे ते बोल्यो के "हे पुत्र ! शा माटे मारी कदर्थना करे छे ? सत्य बोल." त्यारे कुमार बोल्यो के "हे पिता ! आ तमारी स्त्री सारी नथी. हुं तेनुं चेष्टित कही शकुं तेम नथी."

आ प्रमाणे वात थती हती तेवामां अकस्मात् नारदे त्यां आवीने प्रद्युम्नकुमारने कह्युं के " हे कुमार ! तारा पिता कृष्ण अने तारी माता रुक्मिणी तारा वियोगथी पीडा पामे छे. वळी तारी ओरमान मातानो पुत्र भानुकुमार जो प्रथम परणशे तो सरत प्रमाणे तारी माताने पोतानी वेणी कापीने तेने आपवी पडशे, अने केश आपवाना कष्टथी तथा तारा वियोगना शोकथी दुःखी थयेली तारी माता तारा जेवो पुत्र छतां पण मरण पामशे." ते सांभळीने हर्ष पामेलो प्रद्युम्न विमानमां बेसीने नारदनी साथे द्वारकाना उपवनमां आव्यो. पछी विमान सहित नारदने त्यांज मूकीने प्रद्युम्ने वेष परावर्तन करी भानुना विवाह माटे आणेली कन्यानुं हरण कर्युं, अने तेने नारद पासे मूकी. पछी श्री कृष्णना उद्यानने विद्याना बळथी पुष्प, फळ अने पत्ररहित करी दीधुं; तथा विवाहने माटे एकठां करेलां जळ, घास विगेरेने पण विद्याना बळथी अदृश्य कर्यां. पछी एक मायावी अश्व बनावीने तेने गाम बहार खेलाववा लाग्यो. ते अश्वना वेगने जोवानी इच्छाथी भानुकुमार तेनी पासेथी ते अश्व मागीने तेनापर चड्यो, अने तेने खेलाववा लाग्यो. एटले प्रद्युम्ने विद्यावडे तेने अश्वपरथी पाडी नांख्यो, ते जोइने लोको भानुने हसवा लाग्या. पछी प्रद्युम्न ब्राह्मणनो वेष धारण करीने गाममां गयो. त्यां कोइ वेपारीनी दुकाने उभेली सत्यभामानी कुब्जा दासीने मुष्टी मारीने सरळ अने स्वरूपवाळी करी दीधी; एटले ते दासी तेने बहुमानथी सत्यभामाने घेर तेडी गइ, अने सत्यभामाने पोतानी वात कही संभळावी ते ब्राह्मणनी श्लाघा करी. ते सांभळीने सत्यभामाए ते ब्राह्मणने नमीने कह्युं के " हे प्रिय ! मने रुक्मिणी करतां अधिक रूपवान करो." त्यारे ते बोल्यो के " तमे प्रथम शिरमुंडन करावीने जीर्ण वस्त्रो धारण करी एकांत स्थळे बेसी आ मंत्रनो जप करो, एटले तमारुं इच्छित थशे." ते सांभळीने सत्यभामाए ते प्रमाणे करीने जाप जपवा मांड्यो.

पछी प्रद्युम्न रुक्मिणीने घेर जइने कृष्णना सिंहासनपर बेठो. ते जोइने रुक्मिणी बोली के--

कृष्णं वा कृष्णजातं वा, विना सिंहासनेऽत्र हि ।
अन्यं पुमांसमासीनं, सहंते नहि देवता ॥ १ ॥

" आ सिंहासनपर कृष्ण अथवा तेना पुत्र सिवाय बीजो कोइ बेसे तो ते देवताओ सहन करी शकता नथी." त्यारे ते बोल्यो के " हुं महा तपस्वी छुं. सोळ वर्षे आज पारणाने माटे हुं अहीं आव्यो छुं; तेथी तमे मने पारणुं करावो, नहींतो हुं सत्यभामाने घेर जइश. " त्यारे रुक्मिणीए तेने क्षीर खावा आपीने विज्ञप्ति करी के " हे पूज्य ! मने देवताए कह्युं छे के सोळ वर्षे तारो पुत्र तने मळशे, ते हजु सुधी आव्यो नथी, मने पुत्रवियोगनुं बहु दुःख छे. " त्यारे ते बोल्यो के "मारे मारी मातानो वियोग छे पण शुं करीए ? परंतु ज्योतिषशास्त्रने आधारे हुं कहुं छुं के—आपण बन्नेनुं विरहदुःख थोडाज काळमां नष्ट थशे. तमे मने आ क्षीर खावा आपी छे ते मने भावती नथी; तेथी श्रीकृष्णने माटे करेला मोदक मने आपो." त्यारे ते बोली के "ते मोदक कृष्णनेज खावा लायक छे, बीजाने ते मोदक जरे तेवा नथी. " तेणे कह्युं के "तपस्वीने शुं दुर्जर छे ?" ते सांभळी शंका सहित रुक्मिणीए एक मोदक तेने आप्यो. ते खाइने तेणे बीजो माग्यो. एम वारंवार मागी मागीने खातां सर्व मोदक खाइ गयो. अनुक्रमे पात्र खाली थइ गयेलुं जोइने ते बोली के " हे मुनि ! तमे तो अति बळवान जणाओ छो, केमके आटला बधा मोदक खाधा तोपण तृप्त थया नहीं. "

अहीं सत्यभामा एकांतमां बेसीने जप करती हती. तेनी पासे आवीने तेना सेवकोए कह्युं के " विवाहने माटे एकठी करेली सर्व सामग्री तथा कन्याने कोइ देव हरण करी गयो जणाय छे. " ते सांभळीने ते अत्यंत खेद पामी. पछी क्रोधथी तेणे रुक्मिणीना केश लाववा माटे दासीओने टोपली आपीने रुक्मिणीने घेर मोकली. ते दासीओए आवीने रुक्मिणी पासे केश माग्या; त्यारे ते मायासाधुए मायाथी दासीओना मस्तकना केशथीज ते टोपली भरी आपी. दासीओए पोतानां शिरमुंडन थयां ते जाण्युं नहीं. पछी ते दासीओ केश लइने सत्यभामा पासे आवी. त्यां तेओनेज मुंडित थयेली जोइने अति खेद पामेली सत्यभामा साक्षी राखेला कृष्ण पासे जइने क्रोधथी बोली के " मने रुक्मिणीना केश अपावो. " कृष्णे कह्युं के " प्रथम तुंज मुंडित थइ छे, हवे बीजीने शामाटे विरूप करवा इच्छे छे?" ते बोली के "हास्य करवाथी सर्युं, अर्थात् हांसी न करो. मने तेना केश अपावो. " त्यारे कृष्णे केश माटे बळरामने रुक्मिणी पासे मोक-

ल्या. त्यां प्रद्युम्ने करेलुं कृष्णनुं स्वरूप सिंहासनपर बेठेल जोइने लज्जा पामी बळराम पाछा फर्या. पाछा आवीने जुए छे तो त्यां पण कृष्णने जोया; एटले बळरामे कह्युं के "तमे बे रूप करीने मने लज्जित कर्यो." कृष्ण बोल्या के "हुं सोगनपूर्वक सत्य कहुं छुं के हुं त्यां गयोज नथी." त्यारे सत्यभामाए कह्युं के "सर्वत्र तमारुं चेष्टित जणाय छे." ते सांभळीने विलखा थयेला कृष्ण रुक्मिणीने घेर आव्या. तेज वखते नारदे आवीने कृष्ण तथा रुक्मिणीने कह्युं के "जेणे अहीं कृष्णनुं रूप कर्युं हतुं तेज तमारो पुत्र आ प्रद्युम्न छे." ते सांभळीने तरतज प्रद्युम्न मातापिताना चरणमां नमीने हाथ जोडी बोल्यो के "हुं तमारो पुत्र ज्यां सुधी सर्व यादवोने कांइक अपूर्व चमत्कार न बतावुं त्यांसुधी तमे मौन रहेजो." ते सांभळीने ते बन्नेए तेने आलिंगन करीने तेनुं वचन स्वीकार्युं.

पछी प्रद्युम्न पोतानी माताने रथमां बेसाडीने चाल्यो, अने शंख वगाडीने यादवोने क्षोभ पमाडतो सतो ते बोल्यो के "हुं आ रुक्मिणीनुं हरण करुं छुं, तेथी जो कृष्णनुं बळ होय तो तेनी रक्षा करो. हुं एकलोज सर्व वैरीओनो नाश करवा समर्थ छुं." एम बोलतो ते गाम बहार नीकळ्यो. ते वखते कृष्णे विचार्युं जे "जरुर आ कोइ मायावी मने पण छेतरीने मारी पत्नीनुं हरण करी जाय छे, माटे मारे तेने हणवो जोइए." एम विचारीने सर्व आयुधो अने सैन्य सहित तें तेनी पाछळ गया. प्रद्युम्ने तरतज सर्व सैन्यने भग्न करी दइने हाथीने दांतरहित करे तेम कृष्णने पण शस्त्ररहित करी दीधा, तेथी कृष्ण खेद पामवा लाग्या; एटले तेज वखते नारदे आवीने तेनो संशय दूर कर्यो. पछी प्रद्युम्न आवीने पिताना चरणमां पड्यो अने बोल्यो के "हे पिता ! मारो अपराध क्षमा करो. में मात्र कौतुकने माटेज आ चमत्कार बताव्यो छे." पछी कृष्णे हर्षपूर्वक मोटा उत्सवथी पुत्रने पुरप्रवेश कराव्यो.

ए अवसरे दुर्योधने आवीने कृष्णने कह्युं के "मारी पुत्री अने तमारा पुत्र भानुनी वहुनुं कोइए हरण कर्युं छे, तेथी तेनी शोध करावो." कृष्णे कह्युं के "शुं करीए? घणी शोधी पण कांइ पत्तो लागतो नथी." एम कहीने खेद पामेला पिताने जोइने प्रद्युम्न बोल्यो के "हुं हमणा मारी विद्याथी तेने शोधीने अहीं लावुं छुं, तमे खेद करशो नहीं." एम कहीने तरतज ते कन्याने ते लइ आव्यो. पछी कृष्णे तथा दुर्योधने कह्युं के "हे प्रद्युम्न !

तुंज आ कन्याने परण." ते बोल्यो के "ते योग्य नहीं. भानुकुमारनेज परणावो." आ प्रकारनो तेनो उदार आशय जोइने अनेक विद्याधरोए तथा राजाओए प्रद्युम्नने पोतपोतानी कन्याओ आपी.

एकदा सत्यभामाने अति कृश अने दुःखित जोइने कृष्णे तेने पूछ्युं के "केम, तने शुं दुःख छे ?" त्यारे ते बोली के "प्रद्युम्न जेवा पुत्रने हुं इच्छुं छुं." कृष्णे कह्युं के "तारी चिंता हुं दूर करीश." पछी कृष्णे चतुर्थ तप करीने हरिणगमेषी देवनुं आराधन कर्युं, एटले तेणे प्रगट थइने इच्छित पुत्रने आपनारो हार तेने आप्यो अने अदृश्य थयो. ते हारप्राप्तिनुं स्वरूप प्रद्युम्नना जाणवामां आव्युं, एटले तेणे मायाथी जांबूवंती माताने सत्यभामा जेवी करीने कृष्ण पासे मोकली. हरिए तेना कंठमां ते हार नांखीने तेनी साथे क्रीडा करी. ते वखते दैवयोगे स्वर्गमांथी च्यवीने कोइ देवता जांबूवतीनी कुक्षिमां अवतर्यो. पछी हर्ष पामती जांबूवती पोताना महेलमां गइ. थोडीवारे सत्यभामा भोगने माटे कृष्ण पासे आवी. त्यारे कृष्णे विचार्युं के "अहो ! आ स्त्री हजु तृप्ति पामी नथी; तेथी फरीने आवी जणाय छे. स्त्रीओने कामनी शांति होती नथी ते वात सत्य छे!" एम विचारीने तेनी साथे पण तेणे क्रीडा करी. ते वखते समय जोइने प्रद्युम्ने भंभा वगाडी, जेथी कृष्ण क्षोभ पाम्या. पछी तेणे सत्यभामाने कह्युं के "तारे पुत्र थशे." प्रातःकाळे जांबूवतीना कंठमां पेलो हार जोइने कृष्णे विचार्युं के "खरेखर, गइ रात्रे प्रद्युम्नेज आ प्रपंच रच्यो होय एम जणाय छे." एम विचारी कृष्ण मौनज रह्या. अनुक्रमे समय आवतां जांबूवतीए सांब नामना पुत्रने जन्म आप्यो, अने सत्यभामाए भीरुक नामना पुत्रने जन्म आप्यो. बन्ने कुमारो अनुक्रमे वृद्धि पामी बाळक्रिडा करवा लाग्या. तेमां सांब भीरुकने हमेशां व्हीवरावतो, तेथी एकदा सत्यभामाए कृष्णने कह्युं के "मारा पुत्रने निरंतर सांब व्हीवरावे छे." कृष्णे ते वात जांबूवतीने कही के "तारो पुत्र अन्यायी संभळाय छे." जांबूवती बोली के "ना, मारो पुत्र तो न्यायी छे." कृष्णे कह्युं के "आपणे तेनी खात्री करशुं." पछी कृष्णे आभीरनुं (भरवाडनुं) रूप लीधुं, अने जांबूवतीने आभीरीनुं रूप लेवराव्युं. पछी दहीं वेचवाना मिषथी चालता चालता ते बन्ने पुरना दरवाजा पासे आव्या. त्यां सांबे तेमने जोया; एटले तेणे आभीरीने कह्युं के "अहीं आव, मारे दहीं लेवुं छे." एम कहीने तेने एक शून्य घरमां लइ जइने सांब कांइक कहेवा लाग्यो,

त्यारे ते बन्नेए पोतानुं स्वरूप अकस्मात् प्रगट कर्युं. ते जोइने सांब लज्जा पामी जतो रह्यो. पछी कृष्णे जांबूवतीने कह्युं के "तारा पुत्रनी चेष्टा तें प्रत्यक्ष जोइ?" ते बोली के "मारो पुत्र तो भोळो छे, आ तो बाळक्रिडा छे." कृष्णे कह्युं के "खरी वात छे, सिंहण पोताना बाळकने भद्र ने सौम्य ज माने छे." पछी बीजे दिवसे सांब हाथमां एक खीलो राखीने चौटामां जतां कृष्ण तथा सर्व लोको सांभळे तेम बोल्यो के "गइ कालनी मारी वात जे प्रगट करशे तेना मुखमां आ खीली मारवी छे." ते सांभळीने कृष्णे तेने गाम बहार जता रहेवानो हुकम कर्यो, त्यारे सांब प्रद्युम्न पासेथी केटलीक विद्या शीखीने नीकळी गयो. पछी भीरुकने प्रद्युम्न हमेशां पीडा करवा लाग्यो; एटले तेने सत्यभामाए कह्युं के "हे शठ! तुं पण सांबनी जेम केम गाममांथी जतो नथी?" प्रद्युम्न बोल्यो के "हे माता! क्यां जाउं?" ते बोली के "स्मशानमां." फरीथी तेणे पूछ्युं के "हे माता! हुं पाछो क्यारे आवुं?" ते बोली के "ज्यारे हुं सांबने हाथ पकडीने गाममां लावुं त्यारे तारे आववुं." ते बोल्यो के "बहु सारुं. आपनी आज्ञा मारे प्रमाण छे." एम कही प्रद्युम्न सांबनी पासे गयो. पछी सत्यभामा अत्यंत हर्ष पामी, अने पोताना पुत्रने योग्य एवी नवाणुं कन्याओ तेणे एकठी करी (मेळवी;) सो कन्याओ पूरी करवाना विचारथी ते एकने माटे शोध करवा लागी, पण क्यांइ मळी नहीं. आ वात प्रद्युम्नना जाणवामां आवी. तेथी ते मायावडे जितशत्रु नामनो राजा बन्यो, सांबने पोतानी कन्या बनावी, अने मायावी सैन्य बनाव्युं. एवी रीते ते द्वारकानी बहार आवी पडाव नांखीने रह्यो. ते वात सत्यभामाए सांभळी, एटले तेणे ते कन्यानी मागणी करी. त्यारे जितशत्रु राजाए कह्युं के "जो मारी पुत्रीने सत्यभामा पोते हाथे पकडीने गाममां लइ जाय, अने विवाह वखते मारी कन्यानो हाथ भीरुकना हाथ उपर रखावे तो हुं मारी कन्या आपुं." ते वात सत्यभामाए कबुल करी. पछी ते कन्याने हाथे पकडीने सत्यभामा गाममां लइ जवा लागी; ते वखते सर्व पौरजनो सांब अने प्रद्युम्नने जोइने कहेवा लाग्या के "अहो! पोताना पुत्रनो विवाहोत्सव होवाथी सत्यभामा सांब प्रद्युम्नने मनावीने घेर लइ जाय छे." पछी सत्यभामाने घेर जइने चतुर बुद्धिवाळा सांबे भीरुकनो जमणो हाथ पोताना डाबा हाथ उपर राखीने पकड्यो,

१ सत्यभामा जितशत्रु राजा ने तेनी कन्यानुं रूप देखती हती अने नगरजनो तेने शांब प्रद्युम्ननुं रूप देखता हता ते तेनी विद्यानो चमत्कार हतो.

अने नवाणु कन्याओना जमणा हाथने पोताना जमणा हाथथी पकड्या. एवी रीते युक्तिथी नवाणु कन्या साथे फेरा फरीने सर्व कन्याओने सांब परण्यो. पछी ते कन्याओ साथे सांब वासगृहमां गयो; तेनी पाछळ भीरुक आव्यो. एटले सांबे तेनी पासे पण पोतानुं मूळ स्वरूप प्रगट करी भृकुटी चडावीने जोयुं, तेथी भय पामीने भीरुक भाग्यो अने माता पासे जइने ते वात करी. एटले गाभरी बनेली सत्यभामा वासगृहमां गइ. तेने पण सांबे मूळ रूप बताव्युं; एटले ते क्रोधथी बोली के "अरे दुष्ट! तने अहीं कोणे आण्यो?" त्यारे सांब बोल्यो के "हे माता! तमे ज मने गाममां लाव्या छो, अने आ नवाणु कन्याओ साथे पण तमे ज मने परणाव्यो छे. ते बाबतमां आ सर्व पौरजनो साक्षी छे." ते सांभळीने भामाए पौरजनोने पूछ्युं, त्यारे तेओए सांबनुं वचन सत्य कह्युं. आवी सांबनी अकलित माया जोइने अत्यंत रोषातुर थयेली सत्यभामा लाचार थइने निःश्वास मूकी पोताना गृहमां गइ. आवी रीते छळना बळथी सांब नवाणु स्त्रीओनो पति थयो. सर्व यादवो सांब तथा प्रद्युम्नने सर्वोत्कृष्ट मानवा लाग्या.

एकदा कोइ राजाए श्रीकृष्णने एक जातिमान अश्व भेट तरीके मोकल्यो. ते वखते सांब अने पालक ए बे पुत्रोए आवीने पिता पासे ते अश्वनी मागणी करी; एटले कृष्णे कह्युं के "काले तमारा बेमांथी जे श्रीनेमिनाथने प्रथम वंदना करशे तेने आ अश्व हुं आपीश." पछी पालक कुमार तो रात्रीना पाछले पहोरे उठीने मोटेथी शब्द करीने पोताना भृत्योने उठाड्या, अने तमने तैयार करी साथे लइने प्रातःकाळ थतां सौथी प्रथम जइने प्रभुने वंदना करी. पछी त्यांथी पाछो आवीने पिताने ते वात करीने अश्व माग्यो. त्यारे कृष्णे कह्युं के "प्रभुने पूछीने पछी आपीश." अहीं मध्य रात्री गया पछी सांब जाग्यो हतो; पण ते पापभीरु होवाथी पोताने स्थाने ज रहीने भगवाननुं ध्यान करी तेने नम्यो. प्रातःकाळे समय थतां सर्वे प्रभुना समवसरणमां गया. प्रभुने वंदना करीने कृष्णे पूछ्युं के "हे स्वामी! आजे आपने प्रथम कोणे वंदना करी?" प्रभु बोल्या के "आजे द्रव्यवंदनथी पालक कुमारे प्रथम अमने वांद्या हता अने सांबकुमारे भाववंदनथी प्रथम वांद्या हता." ते सांभळीने कृष्णे सांबकुमारने ते अश्व आप्यो. अन्यदा प्रभुनी देशनाथी प्रतिबोध पामीने सांब तथा प्रद्युम्ने दीक्षा ग्रहण करी.

अने अनुक्रमे गिरनार पर्वत उपर[1] मुक्ति पाम्या.

" सांबे प्रभुनुं आंतर ध्यान कर्युं तेथी ते वंदननुं फळ पाम्यो, अने पालके साक्षात् प्रभुने वांद्या छतां पण ते फळ पाम्यो नहीं; माटे पंडित पुरुषो बाह्य विधि करतां आभ्यंतर विधिने बळवान् माने छे. "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ चतुर्विंशातितमस्तंभस्य त्रिपंचाशदधिकत्रिशततमः प्रबंधः ॥ ३५३ ॥

व्याख्यान ३५४ मुं.

भव्यप्राणी प्रयत्नवडे प्रतिबोध पामे छे ते विषे.

चिल्लणाया बहूपायैः, स्वस्वामी प्रतिबोधितः ।
समानधर्मश्रद्धाभि-र्दंपतीत्वं च शोभते ॥ १ ॥

भावार्थ—" चेलणा राणीए घणा उपायथी पोताना स्वामीने प्रतिबोध पमाड्यो हतो, केमके समान धर्मनी श्रद्धाथीज दंपतीपणुं शोभे छे. "

श्रेणिक राजानी कथा.

राजगृही नगरीमां श्रेणिक राजा राज्य करतो हतो. ते बौधधर्मनो रागी होवाथी बौध साधुओनी निरंतर उपासना करतो, हमेशां बौधालयमां जइने श्रद्धापूर्वक तेनो धर्मोपदेश सांभळतो, अने पछी घेर आवीने पोतानी चेलणा राणी पासे बौधधर्मनी नित्य प्रशंसा करतो. बौधगुरुए पोताना शिष्यवर्गने एवुं समजावी राख्युं हतुं के " ज्यारे हुं प्रभातसमये प्रच्छन्न भूमिगृह (भोंयरा) मां जइने बेसुं, त्यारे मारा दर्शन माटे आवेला राजादिक प्रत्ये कहेवुं के–गुरु तो

[1] सिद्धाचळ उपर भाडवा डुंगरे साडी आठ करोड मुनि साथे फागण शुदि १३ शे सिद्धिपद पाम्यानो शत्रुंजय महात्म्यादिकमां उल्लेख छे.

हमेशां इन्द्रादिकने उपदेश करवा माटे स्वर्गमां जाय छे, अने पाछा त्यांथी अहीं आवे छे." एकदा श्रेणिक राजा त्यां आव्या. त्यारे तेणे गुरुने देख्या नहीं; एटले तेना शिष्योने पूछयुं के "गुरु क्यां छे ?" तेओ बोल्या के "गुरु तो आकाशमार्गे इंद्रनी पासे गया छे." ते वार्ता राजाए चेलणा पासे आवीने तेने कही, पण श्रावककुळमां उत्पन्न थयेली चेलणा जन्मथीज जैनधर्मी होवाथी राजाना वचनपर तेने बीलकुल श्रद्धा आवी नहीं. एक दिवस राजा आग्रहथी चेलणाने पण साथे लइने बौधगुरुना मकाने गयो. त्यां जती वखते चेलणाए पोताना सेवकोने छानी रीते शीखवी राख्युं के "ज्यारे अमे बौधालयमां बेसीए त्यारे राजा न जाणे तेम तमारे ते बौधालयमां पाछळना भागथी अग्नि सळगाववो." अहीं राजा तथा राणी शिष्यना मुखथी गुरुनुं स्वर्गमां गमन आगमन सांभळीने थोडीवार त्यां बेठा. त्यारे राणीए राजाने कह्युं के "हे स्वामी! आज तो आपणे थोडीवार वधारे अहींज बेसीए, अने स्वर्गथी उतरता गुरुने जोइने पछी जइए." ते वात अंगीकार करीने राजा राणी सहित त्यां बेठो, तेवामां तो ते मकानमां अग्नि लागवाथी भयभ्रांत थयेला ते बौद्धाचार्य एकदम भूमिग्रहमांथी नीकळीने बहार आव्या. त्यां राजा तथा राणीने जोइने नीचुं मुख राखी लज्जित थया; एटले राजाए पूछयुं के "हे गुरु! आजे तमे स्वर्गमां गया हता के नहीं ?" गुरु बोल्या के "ना, आजे तो हुं स्वर्गे गयो नथी, पण हंमेशना अभ्यासथी शिष्योए तमने स्वर्गे गयानुं कह्युं हशे." पछी राजा राणी सहित पोताना महेलमां आव्यो, पण राजाना मनमां अनेक तर्कवितर्क थवा लाग्या; तेथी राजाए राणीने पूछयुं के "आजे थयुं शुं? अकस्मात अग्नि क्यांथी प्रगटी नीकळ्यो? मने तो तें अग्नि मूकाव्यो होय एम जणाय छे." त्यारे चेलणा बोली के–"हे स्वामी! एक वार्त्ता कहुं ते सांभळो—

"कोइ एक गाममां बे वाणिया रहेता हता. ते बन्नेनी स्त्रीओ एक साथे गर्भिणी थइ, त्यारे तेमणे परस्पर निश्चय कर्यो के "आपणी स्त्रीओमां एकने पुत्र अने एकने पुत्री थाय तो ते बन्नेनो विवाह करवो. आ प्रमाणे निश्चय करीने परस्पर ते सरत लखी लीधी. पछी समय आवतां एक स्त्रीने पुत्री थइ अने बीजीने सर्प अवतर्यो. ते बन्ने अनुक्रमे युवावस्था पाम्या, त्यारे सर्पना पिताए राजानी समक्ष पोतानो लेख बतावी न्याय करावीने ते सर्प साथे पेलानी कन्यानो विवाह

कराव्यो. रात्रे ते दंपती शयनगृहमां गया. त्यां जूदा जूदा पलंगपर सुता. तेवामां ते सर्पना शरीरमांथी एक दिव्य कांतिमान पुरुष नीकळ्यो. तेणे ते कन्या-साथे क्रीडा करी. पछी ते पाछो तेज सर्पना शरीरमां समाइ गयो. ए प्रमाणे हमेशां थवा लाग्युं. ते वात ते स्त्रीए पोताना स्वजनोने कही, त्यारे एक लब्धलक्ष (बुद्धिमान) पुरुषे कह्युं के " ज्यारे ते सर्पना कलेवरने मूकीने कन्यानी साथे क्रीडा करवा जाय त्यारे ते सर्पना कलेवरने तत्काळ अग्निथी बाळी मूकवुं; एटले ते सर्पना कलेवर विना शेमां प्रवेश करशे ? पछी ते तेज दिव्य स्वरूपे रहेशे." ते सांभळीने कन्याना आप्तजनोए ते प्रमाणे कर्युं; तेथी ते देवकुमार तेज स्वरूपे रह्यो." आ प्रमाणे हे स्वामी ! ज्यारे तमारा गुरु हमेशां स्वर्गे जता हशे, त्यारे ते दिव्य अने मलादिक रहित एवुं देवना जेवुं नवीन शरीर करीने जता हशे, अने मूळ देहने शबरूपे अहीं मूकी जता हशे, ते विना जवाय नहीं. तेथी में एवा हेतुथी अग्नि मूकाव्यो हतो के जो तेनुं मूळ शरीर सर्पना कलेवरनी जेम भस्म थइ जाय, तो तेना दिव्य स्वरूपनुंज हमेशां सर्वने दर्शन थाय, एटले बहु श्रेष्ठ थाय; केमके लोकोत्तर रूपनुं दर्शन अति दुर्लभ छे. पण ते मारो अभिप्राय पार पड्यो नहीं, अने अग्निनी ज्वाळाथी पराभव पामेला ते तो घरमांथीज विह्वळ वचन अने वदनवाळा बहार नीकळ्या. माटे हे राजन् ! स्वर्गे गमनागमनननी सर्व वात असत्यज मानवा योग्य छे." आ प्रमाणे राणीए कहेल युक्ति सांभळ्या छतां पण धूर्तना वचनथी व्युद्ग्राहित थयेला चित्तवाळानी जेम राजाए जरा पण बौद्धगुरुपरना दृष्टिरागनो त्याग कर्यो नहीं. कह्युं छे के—

कामरागस्नेहरागा—वीषत्करनिवारणौ ।
दृष्टिरागस्तु पापीयान्, दुरुच्छेद्यः सतामपि ॥ १ ॥

" कामराग अने स्नेहराग ए बेने निवारण करवामां बहु थोडी महेनत पडे छे, तेनुं निवारण सहेजे थइ शके छे; पण पापिष्ट एवो दृष्टिराग तो सत्पुरुषोथी पण दुःखे तजी शकाय तेवो—छेदाय तेवो छे. "

अन्यदा राजाए बौद्धगुरुने भोजन माटे निमंत्रण कर्युं. ते जमवा आव्या त्यारे राणीए तेनां उपानह (पगरखां) पोताना सेवक पासे गुप्त रीते मंगावी तेना सूक्ष्म ककडा करी तेनुं चूर्ण शाक विगेरेमां खबर न पडे तेम भेळवी दीधुं. भोजन

करती वखते गुरुए भोजनना स्वादने लीधे कांइ पण जाएयुं नहीं. भोजन करी रह्या पछी पोताने स्थाने जती वखते गुरुए चोतरफ पोतानां उपानह शोध्यां, पण हाथ लाग्यां नहीं, त्यारे चेलणाए राजाने कह्युं के " हे स्वामी ! तमारा गुरु ज्ञानी छे के नहीं ? जो ज्ञानी होय तो उपानहनी शोध शामाटे करे छे ? ज्ञानथीज जाणी ले के क्यां छे ? अने जो अज्ञानी छे, तो हमणां जमेला भोजननेतेना नामने पण भूली जशे. माटे हे राजन् ! आ दांभिक माणसो शुं जाणी शके ? समग्र विचारमां निपुण तो जैनमुनिओज होय छे. " पछी गुरु तो खेद पामी पोताने स्थाने गया. घेर पहोंच्या के तरत कंठ सुधी भोजन करेलुं होवाथी तेमने वमन थयुं, तेमां चर्मना सूक्ष्म ककडाओ नीकळ्या. एटले गुरुए राजाने बोलावीने ते वात कही. राजाए कह्युं के " अमारा भोजनमां एवा कोइ जातनो दोष धारशो नहीं." पछी ते वात राजाए राणी पासे आवीने कही; एटले राणी बोली के " तमारा गुरु ज्ञानीना नामथी पूजाय छे, तो एटलुं पण जाणी शक्या नहीं के मारां उपानह मारा उदरमांज छे." ते सांभळीने राजा मौन रह्यो.

हवे राजाए चेलणाने पोताना धर्मनी द्वेषिणी जाणीने तेनो गर्व दूर करवा माटे एकदा पोताना सेवकोने कह्युं के "तमे स्मशानमां जइने त्यांथी कोइ तरतनुं मरेलुं बाळकनुं शब लावीने रसोइयाने आपो." सेवकोए ते प्रमाणे कर्युं. एटले राजाए ते शबना मांसादिक युक्त खीर विगेरे भोजननी सामग्री तैयार करावी. पछी अनुचरोने जैनमुनिने आमंत्रण करवा माटे मोकल्या, चेलणाए अनुमानथी कांइक हकीकत जाणीने राजाने पूछ्युं के " हे स्वामी ! आज तमे चंचळ चित्तवाळा अने उत्सुक केम जणाओ छो ?" राजाए कह्युं के, " राज्यादिकनी चिंताथी, बीजुं कांइ नथी." पछी राजा रसोडामां जइने बेठो, अने राणी साधुने आववाना मार्गे गोखमां बेठी. थोडीवारे राजाना सेवके बतावेला मार्गे एक मुनिने आवता जोया. ते वखते राणीए विचार कर्यो के " आ निःस्पृह मुनि मारी सामुं पण जोशे नहीं, केमके ते इर्यासमिति शोधवा माटे नीचुं जोइनेज चाले छे; तेथी कांइक युक्ति करुं के जेथी ते मारा सामुं जुए." एम विचारीने ज्यारे मुनि ते गोखनी नीचे आव्या, त्यारे राणीए उंचा हाथ करीने बारीनां बारणां एकदम खखडाव्यां, एटले मुनिए उंचुं जोयुं. तेने तत्काळ नमन करीने चेलणाए प्रथम बे आंगळीओ अने पछी त्रण आंगळीओ देखाडी. ते जोइने मुनिए एक आंगळी देखाडी. आ

संकेतनुं तात्पर्य ए छे के—राणीए आंगळीनी संज्ञाथी गुरुने पूछयुं के 'तमारे बे ज्ञान छे के त्रण ?' तेना जवाबमां मुनिए एक आंगळी बतावी, एटले 'त्रण उपरांत एक ज्ञान वधारे छे अर्थात चार ज्ञान छे.' एम साधुए बताव्युं; तेथी राणीए हर्ष पामीने फरीथी फीट्टा वंदन कर्युं. पछी मुनि राजानी पाकशाळामां गया. राजा बहुमानथी मुनिने ते बाळकना मांसवाळुं भोजन वहोरावचा लाग्यो, एटले मुनिए ज्ञानदृष्टिथी ते भोजन अभक्ष्य अने अयोग्य जाणीने राजाने कह्युं के " हे राजन् ! आ भोजन अमारे योग्य नथी. अमे मुनिओ निर्दोष आहार ग्रहण करीए छीए." राजाए कह्युं के "हे पूज्य ! आ आहार शी रीते दूषित छे ? राजाने घेर निपजेलो होवाथी ते शुद्धज छे; जो कदाच दूषित होय तो तेनो दोष प्रगट करो." त्यारे मुनि बोल्या के " हे राजन् ! तमे करावेलुं काम तमे पोते प्रत्यक्ष जाणो छो, छतां शामाटे कपट करो छो ? तमने ए योग्य नथी. मुनिओने तो अचित्त आहार पण जो दोषवाळो होय तो ते कल्पतो नथी; तो पछी निरंतर जेमां जीवो उत्पन्न थाय तेवो बाळकना मांसथी बनेलो आहार तो तेने शी रीते कल्पे ?" आ प्रमाणे मुनिनां वचन सांभळीने संपूर्ण विश्वास आववाथी राजाए ते ज्ञानी मुनिने वंदन करीने कह्युं के " हे पूज्य ! तमारुं ज्ञान, तमारो धर्म अने तमारी सर्व क्रियाओ सत्य छे." इत्यादि जैनधर्मनी प्रशंसा करीने हर्षथी सम्यक्त्व सन्मुख थयेलो राजा चेलणा पासे आवीने बोल्यो के "हे प्रिये ! तारा गुरु परम ज्ञानी छे. में आजे तेनी परीक्षा करी." एम कहीने चेलणाना पूछवाथी राजाए सर्व वृत्तांत कही संभळाव्यो. ते सांभळीने चेलणा बोली के " हे स्वामी ! एवा निःस्पृह ज्ञानीनो अंत न लेवो; केमके ते मुनिओ बौद्धना साधु जेवा नथी. बौद्धाचार्य तो भोजनमां आवेला सूक्ष्म चर्मना खंडोने खाती वेळाए मुखादिकना स्पर्शथी पण जाणी शक्या नहीं." पछी राजाए ते वखतनुं स्वरुप पूछयुं. त्यारे राणीए बधी वात खरेखरी कही दीधी.

आ रीते अनेक युक्तिथी राणीए बोध करीने राजाने जैनधर्ममां रसिक बनाव्यो. पछी अनुक्रमे श्री महावीरस्वामीनी देशना विगेरेथी श्रेणिक राजा जैनधर्ममां स्थिर थयो.

आ दृष्टांत जेवुं सांभळवामां आव्युं तेवुंज लखी दीधुं छे.

" आ श्रेणिक राजानी कथा सांभळीने जैनधर्मना तत्त्वने जाणनार माणसोए बौद्ध, शाक्य, वेदांती अने कणादादिक एकांतवादीना कुधर्मनो त्याग करवो. "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ चतुर्विंशतितमस्तंभस्य
चतुष्पंचाशदधिकत्रिशततमः प्रबंधः ॥ ३५४ ॥

व्याख्यान ३५५ मुं.

तीर्थस्तवना विषे.

शत्रुंजयादितीर्थानां, प्रत्यूषे समयेऽनिशम् ।
विदध्यात् स्तवनां जन्तुः, सर्वाघौघप्रणाशिनीम् ॥ १ ॥

भावार्थ—" हमेशां प्रातःकाळे दरेक प्राणीए सर्व पापना समूहने नाश करनारी शत्रुंजयादिक तीर्थोनी स्तुति करवी. "

पूर्वाचार्योए नीचे प्रमाणे शत्रुंजयादि तीर्थोनी स्तुति करेली छे—

तीर्थराजस्तवना.

राजादनाधस्तनभूमिभागे, युगादिदेवांघ्रिसरोजपीठम् ।
देवेन्द्रवन्द्यं नरराजपूज्यं, सिद्धाचलाग्रस्थितमर्चयामि ॥ १ ॥
आदिप्रभोर्दक्षिणदिग्विभागे, सहस्रकूटे जिनराजमूर्तिः ।
सौम्याकृतिः सिद्धततीनिभाश्च, शत्रुञ्जयस्थाः परिपूजयामि ॥ २ ॥
आदिप्रभोर्वक्त्रसरोरुहाच्च, विनिर्गतां श्रीत्रिपदीमवाप्य ।
यो द्वादशांगीं विदधे गणेशः, स पुंडरीको जयताच्छिवाद्रौ ॥ ३ ॥
चउद्दसाणं सयसंखगाणं, बावन्न सहियाणगणाहिवाणं ।
सुपाउआ जत्थ विराजमाणा, सत्तुंजयं तं पणमामि निच्चं ॥ ४ ॥

श्रीसूर्यदेवेन विनिर्मितस्य, श्रीसूर्यकुंडस्य जलप्रभावात् ।
कुष्ठादिरोगाश्च समेऽप्यनश्यन्, नरो भवेत् कुर्कुटतां विहाय ॥ ५ ॥
विश्वत्रयोद्योतकरा गुणालया, महार्घ्यमाणिक्यसुकुक्षिधारिका ।
मतंगजस्था मरुदेविमातृका, विराजते यत्र गिरौ विशेषतः ॥ ६ ॥
यत्रैव शैले खलु पञ्च पांडवा, युधिष्ठिराद्या विजितेन्द्रियाश्च ।
कुन्तासमं विंशतिकोटिसाधुभिः, सार्धं शिवर्द्धिं च समाससादिरे ॥ ७ ॥
नमिविनमिमुनीन्द्रावादिसेवापरौ यौ, गगनचरपती तौ प्रापतुर्मोक्षलक्ष्मीम् ।
विमलगिरिवरे वै कोटियुग्मर्षिभिश्च, सह हि विमलबोधिप्राप्तिपुण्यैकहेतू ॥८॥
विमलगुणसमूहैः संभृतश्चान्तरात्मा, स्वपदरमणभोक्ता दर्शनज्ञानधर्ता ।
निखिलशमधनानां तिसृभिः कोटिभिश्च, सममृतपदर्द्धिं प्राप्नुयादत्र रामः॥९॥
सौराष्ट्रदेशे खलु रत्नतुल्यं, सत्तीर्थयुग्मं परिवर्तते च ।
शत्रुञ्जयाख्यं गिरिनारसंज्ञं, नमाम्यहं तद्बहुमानभक्त्या ॥ १० ॥
अणंतनाणीण अनंतदंसिणे, अणंतसुक्खाण अणंतवीरिणे ।
वीसं जिणा जत्थ शिवं पवन्ना, समेयसेलं तमहं थुणामि ॥ ११ ॥
प्रगेऽहर्निशं संस्तुतं वासवाद्यै —र्जिनं नाभिभूपाल वंशावतंसम् ।
श्रयेऽष्टापदे प्राप्तपूर्णात्मतत्त्वं, सुसौभाग्यलक्ष्मीप्रदं द्योतिमंतम् ॥ १२ ॥
कल्याणकन्दोद्भवनैकमेघं, समस्तजीवोद्धरणे क्षमं तम् ।
स्फुरत्प्रतापं महनीयमूर्तिं, श्रीमारुदेव्यं वृषभं च वन्दे ॥ १३ ॥

। इति तीर्थराजस्तवना ।

"जे सिद्धाचळ उपर रायणना वृक्ष नीचे देवेन्द्रोए वंदन करेलुं तथा चक्रवर्तीए पूजेलुं एवुं युगादिदेव श्री आदीश्वरनुं चरणकमळरूप पीठ रहेलुं छे, तेनुं हुं अर्चन करुं छुं, १. जे शत्रुंजय गिरिपर आदीश्वर प्रभुनी दक्षिण दिशामां सहस्रकूटनी अंदर सौम्य आकृतिवाळी १०२४ तीर्थंकरोनी मूर्तिओ रहेली छे, तेनुं हुं पूजन करुं छुं. २. श्री ऋषभस्वामीना मुखकमळथी नीकळेली त्रिपदीने पामीने जेमणे द्वादशांगीनी रचना करी एवा शत्रुंजयपर रहेला श्री पुंडरिक गणधर जयने पामो. ३. ज्यां (प्रभुनी डाबी बाजुए) चौद सो ने बावन गणधरोनी पादुकाओ विराजमान छे ते शत्रुंजयगिरिने हुं नित्य प्रणाम करुं छुं. ४. जे गिरिपर

सूर्यदेवे निर्माण करेला सूर्यकुंडना जळना प्रभावथी कुष्टादिक व्याधिओनो समूह नाश पामे छे, तेमज कुकडापणुं पामेलो जीव पाछो मनुष्यपणाने पामे छे, (चंदराजानी जेम) ते शत्रुंजय गिरिने हुं प्रणाम करुं छुं. ५. जे गिरि उपर त्रण विश्वमां उद्योतने करनारा, गुणोना स्थानरूप अने अमूल्य रत्न (ऋषभदेव) ने कुक्षिमां धारण करनारा एवा हाथीपर बेठेला मरुदेवी माता विराजे छे ते गिरिने हुं नमन करुं छुं. ६. जे पर्वतपर जितेंद्रिय एवा युधिष्ठिर विगेरे पांचे पांडवो कुंता मातानी साथे वीश करोड साधुओ सहित मुक्तिपदने पाम्या छे ते पर्वतने हुं नमुं छुं ७. जे गिरि उपर नमि अने विनमि नामना मुनींद्रो के जेओ विद्याधरना राजाओ हता तथा श्री आदिनाथनी सेवा करनारा हता तेओ बे करोड साधुओ सहित मोक्षनी लक्ष्मीने पाम्या, ते विमलगिरि अमने विमळ (निर्मळ) बोधनी प्राप्ति अने पुष्टिना हेतुरूप थाओ. ८. जे गिरिपर निर्मुळ गुणोना समूहथी जेनो आत्मा परिपूर्ण थयो छे, अने जे निरंतर आत्मिक सुखमां रमण करनारा अने तेना भोक्ता छे, ज्ञानदर्शनने धारण करनारा छे तथा समतारूप धनवाळा छे एवा रामचंद्र त्रण करोड मुनिओनी साथे मोक्षस्थाननी समृद्धिने पाम्या छे ते अद्रिने हुं वंदना करुं छुं. ९. सौराष्ट्र देशमां शत्रुंजय अने गिरिनार ए बे तीर्थ अमूल्य रत्न तुल्य वर्ते छे, तेने हुं बहुमानपूर्वक भक्तिथी प्रणाम करुं छुं. १०. ज्यां अनंत ज्ञानवाळा, अनंत दर्शनवाळा, अनंत सुखवाळा अने अनंत वीर्यवाळा वीश तीर्थंकरो शिवपदने पाम्या छे ते समेतगिरिनी हुं स्तुति करुं छुं. ११. निरंतर प्रातःकाळे देवेन्द्रोए स्तुति करेला, नाभिराजाना वंशना अलंकाररूप श्री ऋषभदेव जे पर्वतपर सौभाग्य लक्ष्मीने आपनारा द्योतिमान् पूर्ण आत्मतत्त्वने (सिद्धिपदने) पाम्या छे ते अष्टापद पर्वतनो हुं आश्रय करुं छुं. १२. कल्याणरूप कंदने उत्पन्न करवामां अद्वितीय मेघ समान, समस्त जीवोनो उद्धार करवामां समर्थ, स्फुरणायमान प्रतापवाळा अने पूज्य मूर्त्तिवाळा मरुदेवीना पुत्र श्री ऋषभस्वामीने हुं वंदना करुं छुं.”

शत्रुंजय तीर्थना प्रभाव संबंधी एक कथा छे ते नीचे प्रमाणे—

क्षितिप्रतिष्ठ नामना नगरमां सांतु नामे मंत्री हतो. ते एकदा हस्तीपर बेसीने रयवाडीए गयो हतो. त्यांथी पाछा वळतां पोते करावेली सांतुवसही नामनी

चैत्यमां देवने वांदवा माटे हाथीपरथी नीचे उतरीने प्रवेश करतां तेणे ते चैत्यमां रहेनारा एक श्वेतांबर साधुने कोइ वेश्याना स्कन्ध उपर हाथ राखीने उभेला दीठा, तेम छतां पण मंत्रीए उत्तरासंग करीने गौतम गणधरनी जेम पंचांग नमस्कारपूर्वक तेने वंदना करी. पछी एक क्षणवार रहीने फरीथी नमन करी मंत्री पोताना घर तरफ गयो.

तेमना गया पछी ते साधु पोताना दुराचरणथी लज्जा पामीने जाणे पाताळमां पेसवानी इच्छा करता होय तेम अत्यंत खिन्न थइ गया. पछी तेज वखते सर्व वस्तु विगेरेनो त्याग करीने श्री हेमचंद्रसूरि पासे जइ तेमणे फरीथी दीक्षा लीधी. पछी वैराग्यभावथी पूर्ण थयेला ते साधुए श्री शत्रुंजयगिरि उपर जइने बार वर्ष सुधी तप कर्युं. एकदा ते मंत्री शत्रुंजयनी यात्रा करवा माटे गयो. त्यां ते साधुने जोइने 'आपने में पूर्वे कोइ वखत जोयेला छे' एम कहीने वंदना करी. पछी तेमना पवित्र चारित्रथी प्रसन्न थयेला मंत्रीए ते मुनिने तेमना गुरु, कुळ विगेरे पूछ्युं; एटले तेमणे मंत्रीने कह्युं के "तत्त्वथी तो तमेज मारा गुरु छो." ते सांभळीने अजाण्यो मंत्री कान आडा हाथ राखीने बोल्यो के 'अरे पूज्य ! एवुं न बोलो.' मुनि बोल्या के—

जो जेण सुद्धधम्मंमि, ठाविओ संजएण गिहिणा वा ।
सो चेव तस्स जायइ, धम्मगुरु धम्मदाणाओ ॥१॥

" मुनिए अथवा गृहस्थीए जेणे जेने शुद्ध धर्ममां स्थापन कर्यो होय तेज तेने धर्मदान आपवाथी तेनो धर्मगुरु जाणवो. " एम कहीने ते मुनिए पोतानुं मूळ वृत्तांत कही तेने धर्ममां दृढ कर्यो.

चैत्यना भंग करनारे शुं करवुं ते विषे.

चैत्यभंगाच्च यद्दुःखं, लब्धं तस्य क्षयः कथम् ।
भूयश्चैत्यविधानेन, तत्पापं विलयं व्रजेत् ॥ १ ॥

भावार्थ—" चैत्यनो एटले जिनप्रतिमानो अथवा जिनमंदिरनो भंग करवाथी जे दुःख (पाप) प्राप्त थाय ते शी रीते क्षय पामे ? आ प्रश्ननो

जवाब ए छे के ते पाप फरीने चैत्य करावत्राथी नाश पामे छे." ते उपर दृष्टांत छे ते नीचे प्रमाणे—

प्रह्लादनपुर (पालनपुर) मां प्रह्लादन नामे राजा हतो. ते एकदा अर्बुदाचळ (आबुपर्वत) जोवा गयो. त्यां तेणे कुमारपाळ राजाए करावेलो श्री पार्श्वनाथस्वामीनो प्रासाद जोयो. ते प्रासादमां श्रीपार्श्वनाथस्वामीनी रुपानी प्रतिमा जोइने राजाए तेने भांगी नखावी महादेवनो पोठीयो करावीने शिवालयमां स्थापन कर्यो. त्यांथी राजा पोताने घेर आव्यो के तरतज राजाना शरीरमां गलत्कुष्ट (झरतो कोढ) नो व्याधि उत्पन्न थयो. ते व्याधिथी राजाना देहमां घणी वेदना थवा लागी. राजाने गंगा विगेरेना तीर्थजळथी स्नान कराव्युं, तोपण व्याधि शांत थयो नहीं; तेथी ते अत्यंत व्याकूळ थयो. एकदा राजाए कोइ मुनिने रोगनी शांतिनो उपाय पूछ्यो, त्यारे मुनिए कह्युं के—

स्वस्तिश्रीयांधाम गुणाभिराम, सुत्रामसंताननतांह्रिपद्म ।
जाग्रत्प्रतापं जगतितलेऽत्र, श्रीपार्श्वदेवं सततं श्रय त्वं ॥ १ ॥
यदीयमूर्तिर्भविनो समस्तं, निहंत्यघं दृष्टीपथावतीर्णा ।
शैलेऽर्बुदेस्थापिततीर्थनाथं, श्रीपार्श्वदेवो वितनोति सौख्यं ॥ २ ॥

"हे राजन्! कल्याण अने संपत्तिना स्थानभूत, सकळ गुणोथी विराजमान, अने जेना चरणकमळने इन्द्रोनो समूह पण प्रणाम करे छे, तथा जेनो प्रताप जगतमां निरंतरजागृत छे एवा श्री पार्श्वनाथ प्रभुनुं तमे निरंतर सेवन करो. जेनी मूर्त्ति मात्र दृष्टिमार्गमां आववाथी पण भव्य प्राणीओना समग्र पापने हणे छे, एवा आबुपर्वतपर स्थापन करेला श्री पार्श्वनाथ प्रभु सर्व प्राणीओने सुखना आपनारा छे." हे राजा! तमे आ पुरमांज एक नवीन चैत्य करावीने तेमां श्री पार्श्वनाथजीनी मूर्त्ति स्थापन करी हमेशां दंभ रहित निर्मळ भक्तिथी तेनी पूजा करो, तेथी तमारा रोगनी शांति थशे. वळी हे राजा! प्रतिमादिकना भंगनुं प्रायश्चित्त सांभळो—

मोटी प्रतिमा बळी गइ होय, नाश पामी होय अथवा तेनी कोइए चोरी करी होय, तो मूळ मंत्रनो एक लाख जाप करीने बीजी प्रतिमा स्थापन करवाथी ते पापनी शुद्धि थाय छे. एक हाथ उंचेथी बिंब पडे तो मूळ मंत्रनो दश हजार जाप करीने पछी पूजा करवी. बे हाथ उंचेथी पडे अने अंगभंग न

थयो होय तो एक लाख जाप करीने फरीथी संस्कार करवाथी शुद्ध थाय. पुरुषप्रमाण उंचाइथी प्रतिमा पडी होय अने शलाका सर्वथी विशीर्ण थइ होय तो तेनुं प्रायश्चित्त नथी, एटले के शलाकानो भेद थाय तो नवीज प्रतिमा कराववी पडे. स्थंडिलादिकमां पण देवोनुं आवाहन कर्या पछी पूजानुं कार्य विसर्जन कर्युं न होय त्यांसुधीमां जो प्रमादथी बिंबने उपघात थाय, तो पूजादिवडे मंत्रने संहरीने मूळ मंत्रनो पांच हजार जाप करी पात्रदान आपी फरीथी सर्व अर्चा–पूजा करवी. देवना उपकरणने पगवडे स्पर्श थयो होय तो पांचसो वार मंत्रजाप करवो. प्रतिक्रमणनी क्रियानो लोप थयो होय तो व्याधि विनानाए उपवास करीने मूळ मंत्रनो सोवार जाप करवो, अने व्याधिवाळाए मात्र सो वार जापज करवो. एक दिवस देवपूजा न थइ होय, तो त्रण उपवास करीने त्रणे दिवस त्रणसो त्रणसो वार जाप करवो. अजाणतां निर्माल्यनुं भक्षण थइ गयुं होय तो दश हजार जाप करी विशेषे पूजा करवी, अने जाणीने निर्माल्यनुं भक्षण कर्युं होय तो एक लक्ष नवकारनो जाप करीने पांच उपवास करवा.

निर्माल्यना पांच भेद छे. देवस्व, देवद्रव्य, नैवेद्य, निवेदित अने निर्माल्य. तेमां देवने माटे आपेल ग्रामादिक देवस्व कहेवाय छे. देवसंबंधी अलंकारादिक देवद्रव्य कहेवाय छे. देवने माटे कल्पेल पदार्थ नैवेद्य कहेवाय छे. देवने माटे कल्पीने तेमनी पासे धरेलुं निवेदित कहेवाय छे, अने प्रभु पासे धर्या पछी बहार नांखी दीधेलुं–उपाडी लीधेलुं निर्माल्य कहेवाय छे. ते पांचे प्रकारना निर्माल्यने सुंघवुं नहीं, ओळंगवुं नहीं, कोइने आपवुं नहीं, तेमज वेचवुं नहीं.[1] केमके कोइने आपवाथी राक्षसजातिमां जन्म थाय छे, खावाथी चांडाळ जातिमां जन्म थाय छे, ओळंगवाथी कार्यसिद्धिमां हानि थाय छे, सुंघवाथी वनस्पतिकायमां जन्म थाय छे, स्पर्श करवाथी स्त्रीपणुं प्राप्त थाय छे, अने वेचवाथी भिल्लयोनिमां जन्म थाय छे. पूजामां दीपनुं अवलोकन करतां तथा धूप अन्नादिक धरतां तेनो गंध आवे तेनो दोष नथी, तेमज नदीना प्रवाहमां नांखेला पुष्पादिक निर्माल्य गंधथी पण दोष लागतो नथी.

मरणना तथा जन्मना सूतकवाळाने घेर जमवुं नहीं. अजाणतां खवायुं

---

१ पोताना संबंधीने आपवुं नहीं अने पोते द्रव्य मेळववा वेचवुं नहीं एम समजवुं; देरासरना माळी भोजकने आपवामां तेमज देवद्रव्यनी वृद्धि माटे वेचवामां बाध समजवो नहीं.

होय तो एक उपवास करीने मूळ मंत्रनो एक हजार जाप करवो. जाणीने भोजन कर्युं होय तो त्रण उपवास करीने त्रण हजार जाप करवो. पोतानेज घेर सूतक आव्युं होय तो सूतकी माणसनो स्पर्श तजी देवो अने जूदी रसोइ करावीने जमवुं; नहीं तो प्रतिक्रमण देवपूजा विगेरे नित्यकर्मनी हानि थाय छे. धर्ममां स्थित रहेला, क्रियामां आसक्त, ज्ञानवाळा अने व्रतवाळाए सूतकमां पण नित्यकर्मनी हानि करवी नहीं, अर्थात् प्रतिक्रमण देवपूजादि कर्या विना रहेवुं नहीं. कोइ माणस नित्यकर्म करतो न होय अने प्रमादथी (अजाणतां) सूतकीनो स्पर्श करे, अथवा समुदाय माटे रांधेला अनाजनुं भोजन करे तो एक उपवास अने हजार जापथी ते शुद्ध थाय छे; पण जो जाणीने स्पर्शादिक कर्युं होय तो तेथी त्रणगणुं प्रायश्चित्त करवुं. एक दिवसनी पूजानो लोप थयो होय तो मूळ मंत्रनो दश हजार जाप करवो अथवा उपवास करीने एक सो वार जाप करवो. ”

आ प्रमाणे मुनिए कहेलो प्रायश्चित्तनो विधि सांभळीने राजाए तरतज श्री पार्श्वनाथनुं चैत्य करावी तेमां श्री पार्श्वनाथस्वामीनी कांचनमय मूर्त्ति स्थापन करी अने हमेशां तेनी भक्तिपूर्वक पूजा करवा मांडी. तेना प्रभावथी अनुक्रमे राजानो सर्व व्याधि नष्ट थयो.

“ पालणपुरना प्रह्लाद नामना राजाए भक्तिवडे जे पार्श्वनाथनी मूर्त्तिनुं निर्मापण कर्युं ते मूर्त्तिना स्नात्रनुं जळ अन्य राजाने पण पामा (खस) व्याधिनो नाश करनार थयुं. प्रह्लादनपुरमां प्रह्लादन नामना चैत्यमां बिराजेला प्रह्लादन नामना पार्श्वनाथस्वामी चंद्रनी जेम प्राणीओने प्रह्लाद (हर्ष) करनारा थवाथी जगतमां सार्थक नामवाळा थया छे. ”

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ चतुर्विंशतितमस्तंभस्य
पंचपंचाशदधिकत्रिशततमः प्रबंधः ॥ ३५५ ॥

व्याख्यान ३५६ मुं.

धर्मना माहात्म्य विषे.

जिनधर्मं समाराध्य, भूत्वा विभवभाजनम् ।
प्राप्ताः सिद्धिसुखं ये ते, श्लाघ्या मंगलकुंभवत् ॥ १ ॥

भावार्थ—" जिनधर्मनुं आराधन करीने सर्व संपत्तिनुं स्थान थइ जेओ सिद्धिसुखने पाम्या छे तेओ मंगळकळशनी जेम प्रशंसा करवाने योग्य छे. "

मंगळकुंभनुं दृष्टांत.

उज्जयिनी नगरीमां वैरिसिंह नामे राजा हतो. ते नगरीमां धनदत्त नामे धर्मनी रुचिवाळो एक शेठ हतो. तेने पुत्ररहित सत्यभामा नामनी स्त्री हती. एकदा पुत्रनी चिंताथी म्लान मुखवाळा शेठने जोइने सत्यभामाए तेने पूछयुं के " हे नाथ ! तमारे चिंतातुर थवानुं शुं कारण छे ? ते कहो. " त्यारे शेठे पुत्र-चिंतानी वात कही. ते सांभळीने ते बोली के " हे स्वामी ! सुखने इच्छनार माणसे एवी चिंता शामाटे करवी ? तेणे तो आ लोकमां तथा परलोकमां सुखने आपनार धर्मनीज सेवा करवी. " आ प्रमाणेनो प्रियानो उपदेश सांभळीने तेने सत्य मानीने हर्ष पामेलो श्रेष्ठी पुष्पादिकवडे देवपूजा करवा विगेरे अनेक धर्म-कार्यो करवा लाग्यो. धर्मना प्रभावथी तुष्टमान थयेली शासनदेवीए तेने इच्छित वरदान आप्युं; तेथी सत्यभामाए गर्भ धारण कर्यो. अनुक्रमे समय पूर्ण थतां तेणे एक पुत्रने जन्म आप्यो. ते पुत्रनुं स्वप्नने अनुसारे मंगळकुंभ एवुं नाम पाड्युं. ते पुत्र अनुक्रमे वृद्धि पामी कळाभ्यास करवामां तत्पर थयो. तेना पिता हमेशां देवपूजाने माटे पुष्पादिक लेवा उद्यानमां जता, तेनो निषेध करीने मंगळकुंभ हमेशां पुष्पो लावीने पिताने आपवा लाग्यो. ते पुष्पोथी पिता अने पुत्र बन्ने पूजा करता हता. आ प्रमाणे धर्माभ्यास करता हता तेवामां जे बन्युं ते सांभळो—

चंपापुरीमां महाबाहु नामे राजा हतो. तेने गुणावळी नामे राणी हती. ते राणीथी उत्पन्न थयेली लावण्यना रसनी जाणे पेटी होय तेवी स्वरूपवान्

त्रैलोक्यसुंदरी नामे तेने पुत्री हती. ते युवावस्था पामी त्यारे राजाए विचार्युं के "मारी पुत्रीने योग्य वर कोण मळशे ?" पछी राजाए पोताना सुबुद्धि नामना प्रधानने बोलावीने कह्युं के "में तारा पुत्रने मारी त्रैलोक्यसुंदरी आपी छे तेमां तारे कांइ पण बोलवुं नहि." ते सांभळी प्रधाने घेर जइ विचार कर्यो के "राजानी पुत्री तो साक्षात् रति जेवी छे, अने मारो पुत्र तो कुष्टना व्याधिवाळो छे. ते जाणतां छतां हुं ते बन्नेनो योग शी रीते करुं ?" पछी पोतानी बुद्धिथीज उपाय शोधीने प्रधाने गोत्रदेवीनी आराधना करी. त्यारे देवी पण प्रत्यक्ष थइने बोली के "हे प्रधान ! तारा पुत्रने कर्मना विपाकथी कुष्ट रोग थयो छे, तेथी ते मटी शके तेम नथी; केमके भोग्य कर्म अवश्य भोगववुंज पडे छे; तोपण तारा कार्यनी सिद्धि माटे तारी भक्तिथी प्रसन्न थयेली हुं आ पुरीने दरवाजे रहेनार अश्वरक्षकनी पासे टाढथी पीडा पामतो अने अग्निनी इच्छावाळो कोइक बाळक लावीने मूकीश. ते बाळकने तारे ग्रहण करवो." एम कहीने देवी अन्तर्धान थइ. पछी मंत्रीए विवाहनी सामग्री तैयार करवा मांडी, अने ते अश्वरक्षकने बोलावीने कह्युं के "अमुक दिवसे जे बाळक तारी पासे आवे तेने गुप्त रीते मारी पासे लावजे." एम कहीने अश्वरक्षकने रजा आपी.

हवे ते गोत्रदेवीए पण उज्जयिनी नगरीमां जइने पुष्पो लइने घर तरफ जता ते मंगळकुंभने उद्देशीने आकाशवाणीथी कह्युं के "आ बाळक राजानी कन्याने भाडे परणशे." ते सांभळीने मंगळकुंभ विस्मय पामी घेर आव्यो. बीजे दिवसे पण तेज प्रमाणे सांभळ्युं. त्यारे तेणे विचार कर्यो के "आजे घेर जइने आ आकाशवाणीनी वात पिताने कहीश." आम विचार करे छे तेटलामां तो तेने ते देवीए चंपापुरीनी पासेना वनमां मूक्यो, एटले ते भमतो भमतो अश्वपाळनी पासे गयो. अश्वपाळे तेने गुप्त रीते लइ जइने मंत्रीने सोंप्यो. मंत्रीए तेने देवकुमार जेवो रूपवान् जोइने हर्ष पामी एकांतमां राख्यो. एकदा मंगळकुंभे सचिवने पूछ्युं के "हे पिता ! मने परदेशीने शामाटे गुप्त स्थाने राख्यो छे ?" मंत्रीए तेने कपटथी कह्युं के "तने राजानी पुत्री त्रैलोक्यसुंदरी साथे परणाववो छे, तेने परणीने पछी तुं मारा कुष्टना व्याधिवाळा पुत्रने ते राजपुत्री आपजे. आ कार्य माटे तने अहीं लाववामां आव्यो छे." ते सांभळीने मंगळकुंभ बोल्यो के "कुळने कलंक लगाडनारुं अकृत्य हुं शी रीते करुं ? मुग्ध जनने कूवामां उता-

रीने दोरडुं कापी नाखवा जेवुं ए अकार्य हुं तो नहीं करुं." मंत्रीए कह्युं के "रे मूर्ख ! जो आ काम तुं नहीं कर तो हुं मारा हाथथीज तने मारी नांखीश." ते सांभळीने ते बाळक बुद्धिरूप नेत्रथी विचारीने बोल्यो के "हुं तमारा कहेवा प्रमाणे करुं, पण राजा हस्तमेळाप वखते जे वस्तु आपे ते बधी तमारे मने आपवी." मंत्रीए ते वात कबूल राखी. पछी लग्नदिवसे शुभ समये मोटा आडंबरथी मंगळकुंभ राजपुत्री साथे परण्यो. तेना हस्तमेळाप समये राजाए जातिवंत पांच अश्वो विगेरे पहेरामणीमां तेने आप्या.

विवाह थइ रह्या पछी मंत्री राजपुत्रीने तथा मंगळकुंभने पोताने घेर लइ गयो. थोडीवारे मंगळकुंभ देहचिंताए जवानुं मिष करीने शयनगृहथी बहार नीकळ्यो. तेनुं चपळ चित्त जाणीने राजपुत्री पण जळपात्र लइने तेनी पाछळ गइ. देहचिंताथी आव्या पछी मंगळकुंभने आमणदुमणा–चळचित्त जोइने राजपुत्रीए पूछयुं के "हे नाथ ! शुं तमने क्षुधा बाधा करे छे ?" तेणे हा कही; एटले राजपुत्रीए दासी पासे पोताने घेरथी मोदक मंगावीने तेने आप्या. ते खातां खातां पोतानुं स्थान जणाववा माटे मंगळकळश बोल्यो के "उज्जयिनी नगरीना जळ विना आ मोदक स्वादिष्ट लागता नथी." ते सांभळीने राजपुत्रीए आश्चर्य पामीने विचार्युं के "अहो ! आ अघटमान (असंगत) वाक्य केम बोले छे ?" एम विचारीने तेणे पतिने सुगंधी तांबूल आप्युं. पछी फरीथी ते देहचिंताना मिषे बहार नीकळीने अश्वो विगेरे लइ अवंती तरफ चाल्यो. अनुक्रमे अवंती पहोंच्यो. तेना माबाप तेने आवेलो जोइ शोकरहित थया. पछी तेणे पोताना मातपिताने पोतानुं सर्व वृत्तांत कही संभळाव्युं.

अहीं मंत्रीए मंगळकुंभनो वेष पहेरावीने पोताना पुत्रने राजपुत्री पासे मोकल्यो. ते कोढीओ आवासभुवनमां जइने शय्या पर चढी राजपुत्रीने स्पर्श करवा लाग्यो. तेने जोइने तत्काळ ते राजपुत्री शयनगृहमांथी बहार नीकळीने दासीओ पासे बेठी, अने आखी रात्री खेदयुक्त चित्ते त्यांज निर्गमन करी. प्रातःकाळे मंत्रीए राजा पासे जइने कह्युं के "हे स्वामी ! मारो पुत्र आपनी पुत्रीना स्पर्शथी कुष्टी थयो होय एम जणाय छे. हवे शुं करवुं ?" ते सांभळीने राजा बोल्यो के कर्मनी विचित्र गति छे. कह्युं छे के—

चिन्तयत्यन्यथा जीवो, हर्षपूरितमानसः ।
विधिस्त्वेष महावैरी, कुरुते कार्यमन्यथा ॥ ९ ॥

भावार्थ—" हर्षथी पूर्ण मनवाळो थइने जीव जे कार्य करवानुं चिंतवे छे ते आ महाशत्रु रूप विधि अन्यथा करे छे. "

" हे मंत्री ! आमां मारी पुत्रीनोज दोष छे, तारा पुत्रनो दोष नथी." एवी रीते राजाए आश्वासन आपेलो मंत्री पोताने घेर गयो. राजाए पुत्रीना दोषने लीधे क्रोधथी तेने पोतानी पासे आववानो निषेध कर्यो.

एकदा पितानो क्रोध शांत थयो, त्यारे ते पितानी पासे जइने बोली के " हे पिता ! मने पुरुषनो वेष आपो. हुं उज्जयिनी गयेला मारा पतिने मळीने मारुं कलंक दूर करीश." राजाए तेने अनुमति आपी, एटले ते केटलाक सैन्य सहित सिंह नामना सामंतनी साथे उज्जयिनी गइ. उज्जयिनीना राजाए चंपापुरीनो राजपुत्र आव्याना समाचार जाणी तेने रहेवा माटे महेल विगेरे आपी तेनो सत्कार कर्यो. एकदा पोताना उतारा पासेथी पाणी पीवा जता पोताना पिताना नामांकित अश्वो जोइने तेणे पोताना सेवकोने तेनी पाछळ मोकली ते अश्वना स्वामीनुं नाम ठाम विगेरे पूछाव्युं. ते माणसोना मुखथी तेने हजु ज्ञाननो अभ्यासी जाणीने तेणे सर्व छात्रो सहित तेना अध्यापकने जमवानुं निमंत्रण कर्युं, एटले अध्यापक सर्व छात्रोने लइने जमवा आव्या. तेनी अंदर पोताना भर्त्तारने जोइने ते राजपुत्री बहु हर्ष पामी. पछी सर्वेनुं अशन वसनादिवडे सन्मान करीने ते कुमाररूप राजपुत्रीए अध्यापकने कह्युं के " आ छात्रोमांथी कोइ पण मारुं वृत्तांत जाणतो होय ते तमारी आज्ञाथी कहीं बतावे तेम करो." ते सांभळीने अध्यापके तेनुं वृत्तांत जे जाणतो होय तेने कहेवानी आज्ञा आपी; एटले मंगळकुंभे ते पुरुषवेषने धारण करनार पोतानी प्रिया छे, एम ओळखीने सिंहसामंत विगेरे सर्वना सांभळतां पोताना विवाह विगेरेनुं पूर्व वृत्तांत कह्युं. ते सांभळीने राजपुत्रीए सिंहसामंतने कह्युं के " आज मारो पति छे, अने तेने शोधवा माटेज हुं पुरुषनो वेष धारण करीने अहीं आवी छुं." सिंह सामंते कह्युं के " जो तेज तारो पति होय तो तुं निःशंकपणे तेनी सेवा कर. " पछी ए वात राजाने जणावीने तेनी आज्ञाथी त्रैलोक्यसुंदरी स्त्रीनो वेष धारण करी पोताने सासरे गइ, अने तेनी साथे मंगळकुंभ विलास करवा लाग्यो.

एकदा त्रैलोक्यसुंदरीनी प्रेरणाथी मंगळकळश राजानी आज्ञा लइने चंपानगरीए गयो. त्यांनो राजा पण पोतानी पुत्रीना मुखथी तेनुं सर्व वृत्तांत सांभळीने हर्षित थइ बोल्यो के 'हे पुत्री! तें तारुं कलंक दूर कर्युं.' पछी राजाए पेला दुष्ट कार्य करनार मंत्रीने मारवानो हुकम कर्यो. ते वखते मंगळकळशे विनंति करीने तेने छोडाव्यो. पछी पुत्ररहित एवा ते राजाए मंगळकळशने राज्यपर बेसाडी पोते यशोभद्रसूरि पासे दीक्षा ग्रहण करी.

मंगळकळशने राज्यनुं प्रतिपालन करतां जयशेखर नामनो पुत्र थयो. एकदा जयसिंह नामना आचार्यने उद्यानमां आवेला सांभळीने मंगळकळशे प्रिया सहित गुरु पासे जइ तेमने वंदना करी. तेमनी देशना सांभळ्या पछी मंगळकळशे पूछ्युं के "गुरु! हुं कया कर्मथी आवा प्रकारनी विवाहविडंबना पाम्यो? तथा कया कर्मथी मारी प्रियाने दूषण प्राप्त थयुं?" सूरिए कह्युं के "पूर्वे क्षितिप्रतिष्ठपुरमां सोमचंद्र नामे एक कुळपुत्र रहेतो हतो. तेने श्रीदेवी नामनी पत्नी हती, अने जिनदेव नामनो एक श्रावक मित्र हतो. एकदा धनकांक्षी जिनदेव धन उपार्जन करवाना हेतुथी देशांतर जवा तैयार थयो; ते वखते तेणे पोताना मित्र सोमचंद्रने पोतानुं धन सात क्षेत्रमां वापरवा माटे आप्युं. तेना गया पछी सोमचंद्रे मित्रना कहेवा प्रमाणे तेनुं द्रव्य सात क्षेत्रमां खर्च्युं. तेज पुरमां श्रीदेवीनी एक बहेनपणी भद्रा नामनी हती. तेनो पति कोइक कर्मथी कुष्टी थयो. ते वात भद्राए एक वखत पोतानी सखी श्रीदेवीने कही. त्यारे श्रीदेवीए हास्य करीने कह्युं के "हे सखी! तारा संगथी तारो पति कुष्टी थयो." ते सांभळीने भद्रा पोताना मनमां अति दुःखी थइ. ते जाणीने थोडी वारे श्रीदेवी बोली के "हे सखी! खेद न करीश, में तो तने मश्करीमां कह्युं छे." एम कहीने तेणे भद्राने आनंदित करी. पछी साधुना संगथी तमे दंपती श्राद्धधर्म पामी तेनुं पालन करी समाधिवडे काळ करीने सौधर्म देवलोकमां उत्पन्न थया. त्यांथी आयुष्य पूर्ण थतां च्यवीने सोमचंद्रनो जीव तुं राजा थयो, अने श्रीदेवीनो जीव त्रैलोक्यसुंदरी थयो. तें पूर्वभवे परद्रव्यथी पुण्य उपार्जन कर्युं हतुं तेथी आ भवमां भाडावडे तुं राजपुत्रीने परण्यो, अने आ त्रैलोक्यसुंदरीए हास्यथी पण सखीने कलंक आप्युं हतुं, तेथी आ भवे कलंक प्राप्त थयुं.

आ प्रमाणे गुरुना मुखथी पोतानो पूर्वभव सांभळीने विरक्त थयेला ते

दंपतीए पोताना पुत्रने राज्य सोंपीने गुरु पासे दीक्षा लीधी. पछी अतिचार रहित चारित्रनुं पालन करीने अंते ते बन्ने काळ करीने ब्रह्म देवलोकमां देवता थया. त्यांथी च्यवीने अनुक्रमे अव्यय, अजर, अभय अने समग्र आत्मसंपत्तिना आविर्भावरूप मोक्षपदने पामशे.

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ चतुर्विंशतितमस्तंभस्य
षट्पंचाशदधिकत्रिशततमः प्रबंधः ॥ ३५६ ॥

व्याख्यान ३५७ मुं.

गुरु पट्टावळी.

षट्त्रिंशद्गुणरत्नाढ्यः, सौधर्मादिपरंपरः ।
गुरुपट्टक्रमो ध्येयः, सुरासुरनरैः स्तुतः ॥ १ ॥

भावार्थ—" सुर, असुर अने मनुष्योए स्तुति करेलो तथा छत्रीश गुणरूपी रत्नोथी आढ्य एवो श्री सुधर्मादिक गणधरोनी परंपरावाळो गुरुपट्टनो क्रम ध्यान करवा योग्य छे. "

गुरु (आचार्य) परंपरानो क्रम हीरसौभाग्य काव्यमां कहेलो छे. ते प्रमाणे अहीं लखीए छीए.

श्री वीरजिनेश्वरने इन्द्रभूति विगेरे अगियार उत्तम गणधरो हता. तेओ जाणे प्रथम शिवे दग्ध करेलो कामदेव पार्वतिना लग्नमां फरीथी प्रगट थयो तेने हणवानी इच्छा राखनार अगियार रुद्र (शिव) प्रगट थया होय तेवा शोभता हता. ते गणधरोमां श्री वर्धमानस्वामीना पट्टने धारण करवामां धुर्य एवा श्री सुधर्मास्वामी थया. 'जगतमां वृषभ विना बीजो कोण धूसरीना स्था-

नने अवलंबन आपे ? ' ते सुधर्मास्वामीना पट्ट उपर यशलक्ष्मीवडे कुंदपुष्पने तथा शंखने पण तिरस्कार करनार जंबूस्वामी थया. बाळक एवा पण जेनाथी पराभव पामेलो कामदेव जाणे लज्जा पाम्यो होय तेम अदृश्य थइ गयो. ते जंबूस्वामीना पट्टनी लक्ष्मीने चंद्रमुखी स्त्रीने जेम तिलक शोभावे तेम प्रभवस्वामीए शोभावी, के जे प्रभवस्वामीए चोररूप थइने पण सार्थवाहनी जेम प्राणीओने कल्याणकारी एवी मोक्षलक्ष्मी प्राप्त करावी, ते अति आश्चर्य छे. त्यारपछी ते प्रभवस्वामीना पट्टने पिताना सिंहासनने जेम राजा शोभावे तेम शय्यंभवस्वामी शोभावता हवा, जेमना कंठपीठमां मुक्तामणिनी माळानी जेम सर्व विद्याओ स्फुरणायमान थइने शोभी रही हती. त्यारपछी सिंह जेम पर्वतना शिखरने शोभावे तेम तेमना पट्टने कीर्तिरूपी आकाशगंगावडे दिशाओने पूर्ण करता एवा श्री यशोभद्रसूरि शोभावता हवा. त्यारपछी जेम श्रावण मासनो मेघ जळवृष्टिथी कदंब, जंबू अने कुटज वृक्षोना वनने पल्लवित करे तेम श्री यशोभद्रस्वामीना पट्टने श्री संभूतिविजय आचार्ये पोतानी शोभाथी अलंकृत कर्युं. त्यारपछी ते संभूतिविजयना सतीर्थ्य (गुरुभाइ) भद्रबाहु आचार्य समग्र आगमना पारदर्शी थया, जेमणे वज्ररत्ननी खाणमांथी वज्ररत्ननी जेम दशाश्रुतस्कन्धमांथी कल्पसूत्र उद्धर्युं. त्यारपछी ते संभूतिविजय तथा भद्रबाहुस्वामीनी पट्टलक्ष्मीने पोताना वंशरूपी समुद्रमां कौस्तुभमणि जेवा श्री स्थूलभद्रस्वामीए यशथी त्रण लोकनी जेम शोभावी. त्यारपछी सारथिना रथने वहन करवामां बे वृषभ होय तेम ते स्थूलभद्रना पट्ट उपर अनुक्रमे धर्मधूराने धारण करनारा आर्यमहागिरि तथा आर्यसुहस्ति थया. त्यारपछी ते आर्यसुहस्ति मुनीन्द्रना पट्टने विष्णुना पादक्रमरुप आकाशने सूर्यचंद्रनी जेम श्री सुस्थितसूरि तथा सुप्रतिबद्धसूरि नामना तेमना बे शिष्योए सुशोभित कर्युं.

पूर्वे सुधर्मास्वामीने आरंभीने सुहस्तिसूरि थया त्यां सुधी साधुओनुं निर्ग्रंथ नाम हतुं, एटले निर्ग्रंथगच्छ कहेवातो, अने आ बे सुस्थित तथा सुप्रतिबद्ध सूरिना वखतथी बीजुं कोटिकगण एवुं नाम थयुं. तेनो हेतु ए छे के ते सूरिए सूरिमंत्रनो एक करोड वार जाप कर्यो हतो.

त्यारपछी ते सुस्थित अने सुप्रतिबद्धसूरिनी पट्टलक्ष्मीना तिलकरूप मुनिओमां चक्रवर्ती समान श्रीइन्द्रदिन्न आचार्य थया. तेमणे बळरामे यमुनानो पराभव

कर्यो तेम दांभिकपणानो पराभव कर्यो हतो. त्यारपछी अंगिरा तापसथी बृहस्पतिनी जेम ते इन्द्रदिन्न आचार्यथी घणा गुणवान श्री दिन्नसूरि थया. तेमणे जेम नारायणे कालनेमि असुरनो नाश कर्यो तेम रागनो नाश कर्यो हतो. त्यारपछी क्रमे करीने जिनेश्वरना पादने [1]मस्तकवडे स्पर्श करती एवी ते दिन्नसूरिनी पट्टलक्ष्मीने ध्वजानो समूह जेम प्रासादसमूहने शोभावे तेम सिंहगिरि नामना सूरीश्वरे शोभावी. त्यारपछी तेमना पट्टने मस्तकने माणिक्यनो मुकुट शोभावे तेम अज्ञान तथा पापना समूहरूप पर्वतनुं दलन करवामां इन्द्रना वज्र जेवा श्री वज्रप्रभु उत्कृष्ट शोभा पमाडता हवा. त्यारपछी श्रीवज्रप्रभुना पट्टरूपी उदयाचळ पर्वतनी चूलिका उपर सूर्य समान श्रीवज्रसेनसूरि थया. त्यारपछी चंद्रकुळना मूळ कारणभूत श्रीचंद्रसूरि थया. अहींथी चंद्रगच्छ एवुं त्रीजुं नाम थयुं. त्यारपछी जेम सरोवरना मध्य भागने प्रफुल्लित कमळ शोभावे तेम तरंगित करुणा रसवाळा ते चंद्रसूरिना पट्टने सामन्तभद्र सूरिए शोभाव्युं. आ सूरि प्राये वनमां रहेता हता, तेथी तेमनाथी आ गच्छनुं वनवासीगच्छ एवुं चोथुं नाम थयुं. त्यार पछी सामन्तसूरिना पट्ट उपर वृद्धदेव सूरि थया. तेमणे कोरंटक नामना नगरमां भव्य प्राणीओना नेत्ररूपी पांथनी आजीविका (विश्रामस्थान) समान तथा पुण्यना पाक (उदय)ने करनारी जाणे सत्रशाळा (दानशाळा) होय तेवी श्री महावीरस्वामीनी मूर्त्ति स्थापन करी हती. त्यारपछी औरस पुत्रवडे जेम पितानो वंश उत्कृष्ट शोभा पामे तेम वृद्धदेवसूरिनुं पट्ट त्रैलोक्यनी लक्ष्मीना तिलक समान श्री प्रद्योतन नामना सूरिवडे उत्कृष्ट शोभा पाम्युं. त्यारपछी गंगाना तरंग जेवो जेमनो वाग्विलास छे एवा अने बुद्धिथी बृहस्पतिने पण जीतनारा श्रीमानदेव सूरिए सभामंडपने सभ्य जननी जेम ते प्रद्योतनसूरिना स्थानने अलंकृत कर्युं. आ श्रीमानदेवसूरिने आचार्यपद आपती वखते तेमना स्कन्धपर साक्षात् सरस्वती तथा लक्ष्मीदेवीने जोइने "अहो! अन्यायादिक प्रमादने सेवनार राजानो जेम राज्यथी भ्रंश थाय छे तेम आ मानदेव राजादिकनो सत्कार पामीने चारित्रथी भ्रष्ट थशे." एवी शंकाथी जेमनुं मन खेद पामतुं हतुं एवा पोताना गुरु श्री प्रद्योतनसूरिने जोइने नरेन्द्र, नागेन्द्र अने देवेन्द्रो पण जेमनी कीर्तिनुं गान करता हता एवा ते मानदेवसूरिए जाणे काम क्रोधादिक छ अभ्यंतर शत्रुने जीतवा इच्छता होय तेम घृतादिक छ विगयनो यावज्जीवित त्याग कर्यो हतो. आ सूरि संघना

---

१ जिनेश्वरनु आदिपणुं होवाथी परंपरावडे आ पट्ट जिनेश्वरना पादरूप थयो, अने आ पट्टलक्ष्मी आदि होवाथी तेनुं मस्तक थयुं.

उपद्रवनो नाश करवा माटे लघुशांतिना रचनारा जाणवा. त्यारपछी ते मानदेवसूरिना पट्टरुप आकाशमां सूर्य समान श्रीमानतुंग नामे सूरीन्द्र थया. तेमणे पृथ्वीपरना अनेक राजाओने जेम चक्रवर्ती आज्ञा मनावे तेम सर्व साधुओने पोतानी आज्ञा ग्रहण करावी हती. आ सूरिए पोताने बांधेला अडतालीश बंधनोने 'भक्तामर स्तोत्र' रचीने तेवडे तोडी नाख्या हता; तथा संघने व्यन्तरादिके करेला उपसर्गो दूर करवा माटे ' नमिऊण पणयसुरगण ' इत्यादि सर्व भयनुं हरण करनार स्तोत्र बनावी आप्युं हतुं. त्यार पछी श्री कृष्णनी जेम शुक्लध्यानरूप सर्पेन्द्र ते रूप मन्थनरज्जु तेनावडे अने समतारूपी मंदराचळ पर्वतवडे मदरूपी समुद्रनुं मंथन करीने श्री वीर नामना आचार्य ते मानतुंगसूरिनी पट्टलक्ष्मीने वर्या. त्यारपछी जेमणे समग्र कुवादीओना समूहने दूर कर्या छे एवा श्री जयदेवसूरि थया, के जेनी वाणीना विलासथी जेना माधुर्यनो तिरस्कार थयो छे एवी सुधा (अमृत) जाणे क्षीरसागरमां डूबी गइ होय नहीं शुं ? त्यारपछी स्वर्गनी अप्सराओए जेमनी कीर्त्तिनुं गायन कर्युं छे अने जेमनुं मन सदा चिदानंद [आत्मानंद]-मांज मग्न छे एवा श्री देवानंदसूरिए युवावस्था जेम चंद्रमुखी स्त्रीने शोभा पमाडे तेम ते जयदेवसूरिनी पट्टलक्ष्मीने शोभा पमाडी. त्यारपछी जाणे अज्ञान रूप अंधकारना सैन्यने हणवानी इच्छावाळा पराक्रमे शरीरनो स्वीकार कर्यो होय तेवा अने देवानंदसूरिना पट्टरुपी समुद्रने उल्लास करवामां चंद्र समान श्री विक्रम नामना सूरीश्वर थया. त्यारपछी सिद्धान्तसमुद्रना पारने जोनारा एवा श्री नरसिंहसूरि थया. तेमणे जेम सूर्य जगत्ने निद्रानो त्याग करावे तेम एक यत्ने मांस खावानो त्याग कराव्यो हतो. त्यारपछी जेम अमूल्य माणिक्य अंगुलीने शोभावे तेम खूमाण राजाना कुळमां दीपक समान समुद्रसूरि नामना आचार्ये श्री नरसिंहसूरिनी पट्टलक्ष्मीने अलंकृत करी. त्यारपछी ते समुद्रसूरिना पट्ट उपर श्री मानदेव नामना [बीजा] सूरि थया, के जेमना मुखकमळमां वास करनारी सरस्वती देवी अमृतना भोजनवडे कंठ सुधी तृप्त थयेली होवाथी, आ आचार्यना मनोहर वाग्विलासना मिषथी जाणे पीधेला अमृतना उद्गार काढती होय एवो भास थतो हतो. त्यारपछी तेमना पट्ट उपर विबुध समान श्री विबुधप्रभ नामना आचार्येन्द्र थया, जेमनाथी पराभव पामेलो पुष्परूप आयुधवाळो कामदेव फरीथी युद्ध करवानी इच्छावडे तीक्ष्ण आयुधवाळो थयो. त्यारपछी तेमना पट्टरुपी कमळमां हंस समान श्रीमान् जयानंदसूरि थया, जेमना हृदय-

मां अगस्त्य मुनिनी अंजलीमां समुद्रनी जेम समग्र सिद्धान्त समाइ गया हता. त्यारपछी तेमना स्थानपर रविप्रभ नामना मुनींद्र थया, तेमनुं मुख चंद्रसमान आचरण करतुं हतुं, तेमना दांतनी कांति चंद्रनी ज्योत्स्नानुं आचरण करती हती, तेमनी भृकुटीनी वक्रता चंद्रमां रहेली वक्रतानुं आचरण करती हती, अने वाणीनो विलास अमृत श्रववानुं आचरण करतो हतो. त्यारपछी ते रविप्रभसूरिना पट्ट उपर श्री यशोदेवसूरि थया, तेमना वृद्धि पामता कीर्त्तिरूपी क्षीरसागरे करीने जगत्मां अर्हतना महिमाए करीने इतिओ (उपद्रवो)नी जेम कृष्ण नीलादिक असित पदार्थोए पोताना नामनो पण लोप कर्यो हतो; अर्थात् आ आचार्यनी कीर्तिथी सर्व विश्व श्वेत थयुं हतुं, तेथी कृष्ण नीलादिक वर्णो जोवामां पण आवता नहोता. त्यारपछी तेमना पट्ट उपर अलौकिक प्रद्युम्नदेव (कामदेव) समान प्रद्युम्नदेव नामे आचार्य थया; कारणके ते आचार्ये भवने (संसारने) भेदी नांख्यो हतो, अने कामदेव तो भवथी (शिवथी) भेदायो हतो. वळी ते आचार्ये रति (स्त्री विगेरेनी प्रीति)नो त्याग (नाश) कर्यो हतो, अने कामदेव तो रतिनो पति होवाथी तेनो स्वीकारनार हतो; ते आचार्य मधु (मध अथवा मद्य)थी दूर रहेला हता, अने कामदेव तो मधु (वसंत)ना सहायनो इच्छक हतो, तेमज ते आचार्यनी मूर्त्ति समग्र विश्वने आदर करवा योग्य मनोहर हती, अने कामदेव तो अनंग होवाथी मूर्त्तिरहित हतो; माटे ते आचार्य नवीन कामदेवरूप थया हता. त्यारपछी पोतानी कीर्तिरूप चंद्रज्योत्स्नावडे जेमणे त्रिलोकने धवलित कर्युं छे एवा श्री मानदेवसूरिए प्रभु, मंत्र अने उत्साह ए त्रण प्रकारनी शक्तिवडे राजानी लक्ष्मीनी जेम ते प्रद्युम्नसूरिना पट्टनी लक्ष्मीने शोभा पमाडी. (आ त्रीजा मानदेव सूरि जाणवा). त्यारपछी जेमना चरणकमळमां इन्द्रो तथा चंद्रो भ्रमररूप थया छे एवा विमलचंद्र नामना सूरीश्वरथी शत्रुने ताप पमाडनार प्रतापथी राजानी जेम ते मानदेवसूरिनुं पट्ट लक्ष्मीने भोगवतुं थयुं. त्यारपछी तेमना पट्ट उपर कामदेव समान प्रशस्त रूपवान अने आचार्योने विषे चंद्र समान उद्योतन नामना सूरि विराजमान थया, के जेना पट्टने धारण करनारा दिग्गजोनी जेवा आठ सूरिन्द्रो थया. आ सूरीए मोटा वटवृक्षनी नीचे आठ मुनिओने सूरिपद आप्युं हतुं तेथी तेमना वखतथी आ गच्छनुं वडगच्छ अथवा बृहद्गच्छ एवुं पांचमुं नाम पडयुं. त्यारपछी तेमना पट्ट उपर जेमणे पोताना माहात्म्यवडे सर्व देवोने नम्र करेला छे एवा सर्वदेव नामना आचार्य थया, के जे

तारानी श्रेणीवडे चंद्रनी जेम गुणोनी श्रेणीवडे आश्रय करायेला हता. त्यारपछी तेना पट्ट उपर [1]गोने विषे निवास करनार, [2]गौरववडे शोभावाळा, वाणीना अधिपति अने [3]विबुधोए सेवाता एवा देवसूरि (बृहस्पति) ना जेवा श्रीदेवसूरि नामना आचार्य थया. त्यारपछी मंदिरने दीवो शोभावे तेम तेना पट्टने [4]दोषोना उदयथी प्रगट थयेला तम (अज्ञान अथवा पाप) ना विस्तारनो नाश करवारूप व्यापारमांज तत्पर थयेला एवा श्रीसर्वदेवसूरिए शोभाव्युं. (आ बीजा सर्वदेव सूरि जाणवा). त्यारपछी तेमना पट्टरूप आम्रवृक्षने सेवनारा पोपट अने कोयलनी जेवा श्रीमान् यशोभद्रसूरि तथा मुनिओने विषे श्रेष्ठ एवा श्रीनेमिचंद्रसूरि थया. त्यारपछी ते बन्ने सूरिना पट्ट उपर अनेक शास्त्रोना रचनारा श्री मुनिचंद्र नामना सूरि थया. वायुनी अस्खलित गतिनी जेम तेमनी बुद्धि कोइ पण शास्त्रमां स्खलना पामती नहोती. चारित्र लेवाने इच्छता चक्रवर्ती जेम छ खंड पृथ्वीनो त्याग करे तेम आ सूरिए छ विगयनो त्याग कर्यो हतो. ते सूरि कोइ पण वखत पोताना शरीर उपर पण ममता करता नहीं, अने हमेशां एकजवार छाशनी पराश मात्रनो आहार करता हता. त्यारपछी तेमना पट्ट उपर देवोए उपसर्ग कर्या छतां पण आ कोइ वखत जिताय तेवा नथी, ए हेतुथीज जाणे तेवा नामथी पृथ्वीपर प्रसिद्ध थया होय एम अजितदेव नामना सूरि थया. त्यारपछी जगत्ने पवित्र करनार देवनदी (गंगा)नो प्रवाह चंद्रमौलि (शिव)नी जटानो आश्रय करे तेम ते अजितदेवसूरिना पट्टनो तपस्वीओने विषे सिंह समान अने जगत्ने पवित्र करनार एवा श्री विजयसिंहसूरिए आश्रय कर्यो. त्यारपछी इक्ष्वाकु वंशने श्री ऋषभस्वामीना पुत्रो भरत अने बाहुबळीए जेम शोभाव्यो, तेम ते विजयसिंहसूरिना पट्टने श्री सोमप्रभ तथा श्री मणिरत्नसूरिए शोभा पमाडी. त्यारपछी श्रीमज्जगच्चंद्रसूरि थया. तेमणे ते बन्ने सूरिना पट्टरूपी लक्ष्मीना तिलकनी लीलाने विस्तारी. ते सूरिए जेम राजहंस मेघथी मलिन थयेला तळावनो त्याग करे, तेम कलिकाळना प्रभावथी थयेली चारित्रनी शिथिलतानो त्याग कर्यो हतो. ते आचार्य वाद करवा आवेला बत्रीश दिगंबराचार्यो साथे वाद करवामां हीरकमणि (वज्रमणि) नी

---

१ सूरिना विशेषणमां गो एटले पृथ्वी, अने बृहस्पतिना विशेषणमां स्वर्ग २. सूरिना पक्षमा गारव एटले माहात्म्य, बीजा पक्षमां इन्द्रादिक देवोने भणाववाथी गुरुपणुं ३. पहेला पक्षमां पंडितो, बीजामां देवो. ४ दीवाना पक्षमां दोषा एटले रात्री अने तम एटले अंधकार.

जेवा अभेद्य थया हता, तथा आघाट नगरना राजाए तेमनुं हीरलाजगच्चंद्र सूरि एवुं नाम प्रसिद्ध कर्युं हतुं. वळी जेम कोइ राजा मोटा युद्धोए करीने शत्रुओनो पराभव कर्या पछी जितकाशीनी संज्ञा पामे, तेम ते आचार्य बार वर्ष सुधी आयंबिलनो तप करीने तपानुं बिरुद पाम्या हता. त्यारथी आरंभीने जेम अत्रिऋषिना नेत्रथी चंद्रलेखा प्रगट थइ, तेम आ आचार्यथी तपागच्छ एवुं छठ्ठुं नाम प्रगट थयुं; अने जेम वसंत मासथी सूर्यनी कांति अधिक देदीप्यमान थाय तेम आ आचार्यथी मुमुक्षु पुरुषोनी लक्ष्मी अधिक दीप्त थइ.

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ चतुर्विंशतितमस्तंभस्य सप्तपंचाशदधिकत्रिशततमः प्रबंधः ॥ ३५७ ॥

व्याख्यान ३५८ मुं.

तपागच्छ नाम पड्या पछीना आचार्यनी पट्टावळी.

त्यारपछी श्री जगच्चंद्रसूरिना पट्ट उपर विष्णुना वक्षःस्थळ उपर कौस्तुभमणिनी जेम देवेन्द्रना कर्णोमां आभरणरूप थतां यशोवडे त्रिजगतने उद्भासन करनार देवेन्द्र नामना सूरि शोभता हवा. (आ सूरि कर्मग्रंथादिकना कर्ता जाणवा). त्यारपछी तेना पट्ट उपर धर्मघोषसूरि थया. ते जाणे नागणीओए गायन करेली ते आचार्यनी कीर्तिने सांभळवामां रसिक थयेला नागाधिराजे (शेषनागे) ते माटेज बे हजार चक्षुओ[1] धारण कर्या होय नहीं एवा थया. ते आचार्यना उपदेशथी बादशाहना मंत्री पृथ्वीधरे जाणे पोतानी चोराशी ज्ञातिओनो उद्धार करवा माटेज होय नहीं एम तीर्थंकरोना चोराशी प्रासादो कराव्या. त्या-

१ सर्पो चक्षुवडेज सांभळे छे-तेमने कान जुदा होता नथी, तेथी अहीं सांभळवा माटे चक्षु कर्यानुं समजवुं.

रपछी तेमना पट्ट उपर मनुष्योनी दृष्टिरूप चकोरीने आह्लाद करवामां चंद्रनी कांतिसमान सोमप्रभ नामना सूरि थया. ते सूरिना संगथी शरद्ऋतुना संगथी चंद्रज्योत्स्नानी जेम चारित्रलक्ष्मी शोभती हती. त्यारपछी ते सोमप्रभ सूरिए पोताना पट्ट उपर मुनिओनी लक्ष्मीना देदीप्यमान तिलक समान सोमतिलक नामना सूरिने स्थापन कर्या. ते सूरिए वादमां अन्य वादीओना समूहना मुखमां प्रतिपदा तिथिनी जेम अनध्यायता मूकी दीधी हती, अर्थात् तेमने बोलता बंध कर्या हता. त्यारपछी ते सोमतिलक गुरुए पोताना स्थान उपर देव समान सुंदर शोभावाळा श्री देवसुंदर सूरिने स्थापन कर्या. ते आचार्ये प्रातःकाळ जेम अंधकार सहित रात्रीनो नाश करे तेम आठ मद सहित मायानो नाश कर्यो हतो. त्यारपछी तेमना पट्टने श्रीमान् सोमसुंदर गुरुए सेवन कर्युं. कोइ एक पुरुष के जेने आ आचार्यनुं महात्म्य सांभळीने सूर्यने घुवडनी जेम अन्य धर्मीओए द्वेषथी ते आचार्यने मारवा माटे मोकल्यो हतो ते पुरुष आचार्यने मारवा माटे तेना उपाश्रये गयो, त्यां चंद्रनी कांतिवडे छिद्रमांथी तेणे जोयुं तो सूरि सुता सुता पण जीवघातादिक प्रमादथी रहित छे एम दीठुं, एटले के पोताना संथाराने तथा तेनी आसपास रजोहरणवडे पूंजता जोया; ते जोइने ते पुरुषे पश्चात्ताप करता सता गुरु पासे प्रगट थइ तेमने खमावीने पोतानुं वृत्तांत कह्युं; अने पछी गुरुना उपदेशथी प्रतिबोध पामी दीक्षा लीधी. त्यारपछी जेम उत्पल कमळनो विकास करवामां चतुर एवा शरद्ऋतुना चंद्रबिंबमां प्राप्त थयेली सूर्यनी कांतिवडे लोकोनां नेत्रोने अत्यंत प्रीति उत्पन्न थाय छे, तेम पृथ्वीवलयने प्रतिबोध करवामां चतुर एवा मुनिसुंदर नामना सूरीन्द्रने विषे प्राप्त थयेली सोमसुंदरसूरिनी पट्टलक्ष्मीए भव्यजनोना नेत्रोने अत्यंत प्रीति उत्पन्न करी. आ सूरिए 'संतिकरं' विगेरे स्तोत्रो बनावीने व्यंतरोनो उपद्रव शांत कर्यो हतो. त्यारपछी ऋषभदेवथकी जेम श्री पुंडरीक गणधर थया, तेम ते मुनीसुंदरसूरिथकी रत्नशेखरसूरि थया. ते सूरिने खंभातमां कोइ बावी नामना श्रेष्ठ ब्राह्मणे बालसरस्वती कहीने बोलाव्या, त्यारथी तेमने बालसरस्वतीनुं बिरुद मळ्युं हतुं. श्राद्धविधिसूत्रवृत्ति विगेरे अनेक ग्रंथोना रचनार ए रत्नशेखरसूरिना पट्टने लक्ष्मीसागरसूरिए अलंकृत कर्युं. तेमना पट्ट उपर मोटा गुणवान सुमतिसाधुसूरि थया. तेमना पट्ट उपर श्री हेमविमलसूरि थया. आ सूरिना वखतमां दुःषमा काळना दोषथी घणा मुनिओ प्राये प्रमादी, ममतावाळा अने चा-

रित्रनुं पालन करवामां शिथिल थवा लाग्या. ते जोइने समग्र पापने दूर करनार ते हेमविमलसूरिए सूरिना गुणोथी विराजमान, सौभाग्य ने भाग्यथी पूर्ण अने संवेगरूप तरंगना समुद्र समान एवा आनंदविमलसूरिने योग्य जाणीने तरतज धर्मना अभ्युदयनी सिद्धिने माटे पोताना पट्टपर स्थापन कर्या. ते सूरिए विक्रम संवत १५८२ मां संवेगना वेगवाळा मुनिओने शरणभूत एवो चारित्राक्रियानो उद्धार कर्यो. शरीर उपर पण ममत्व विनाना एवा तेमणे पोताना पापनी आलोचना करीने जे दुष्कर तप कर्युं ते आ प्रमाणे-अरिहंतादिक वीश स्थानकोनुं ध्यान करतां ते निर्विकार सूरिए चारसो उपवासवडे वीश स्थानक तप कर्यो, पछी वरिष्ठ (श्रेष्ठ) एवा चारसो छट्ठवडे तेनुं आराधन कर्युं. विहरमान जिननो आश्रय करीने वीश छट्ठ कर्या, पछी बसो ने ओगणत्रीश छट्ठ श्री वीरप्रभुने आश्रीने कर्या, तथा पाखी विगेरे पर्वमां पण बीजा घणा छट्ठ कर्या. पछी ज्ञानावरणीय कर्मना नाश माटे पांच द्वादशम (पांच पांच उपवास) कर्या, अने तेटलाज द्वादशम अंतराय कर्मना नाश माटे कर्या. दर्शनावरणीय कर्मना नाश माटे नव दशम (चार चार उपवास) कर्या. मोहनीय कर्मना नाश माटे अट्ठावीश अट्ठम कर्या. तेज प्रमाणे वेदनीय, गोत्र अने आयुष्य कर्मना नाश माटे पण घणा अट्ठम तथा दशम कर्या. मात्र एक नामकर्म संबंधी तप ते आचार्य करी शक्या नहीं. प्रांते आयुष्य पूर्ण थतां अनशन ग्रहण करीने ते आनंदविमलसूरि चित्तमां चतुःशरणनुं स्मरण करतां स्वर्गसुखने पाम्या. त्यारपछी ते सूरिना पट्ट उपर सर्वत्र विजयमान, नयवान (न्यायी) अने समयवान (सिद्धांतोना जाणनार) श्री विजयदानसूरि थया. त्यारपछी तेमना पट्ट उपर अखंड विजयवाळा श्री हीरविजयसूरि थया. आ वर्तमान काळमां पण ते सूरिना महिमाने देवसमुदाये गायो हतो. आ सूरिना उपदेशथी प्रतिबोध पामेला अकबर बादशाहे दयानुं ध्यान धरतां आखी पृथ्वीने जैनधर्ममय करी दीधी हती. त्यारपछी तेमना पट्टने उदयाचळ पर्वतना शिखरने शरदृतुना प्रदीप्त सूर्यनी जेम विजयसेनसूरिए शोभाव्युं. त्यारपछी तेमना पट्टने अज्ञानरूप अन्धकारनो नाश करनार, लोकोना मनरूपी पद्मनो विकास करनार, कुतर्करूपी हीमनो नाश करनार, महा दोषरूपी रात्रीनुं उच्छेदन करनार अने ज्ञानरूप दिवसनी लक्ष्मीनो उदय करनार एवा विजयतिलक नामना सूरिए आकाशने सूर्य अलंकृत करे तेम अलंकृत कर्युं. त्यारपछी तेमना पट्ट उपर चंद्रकीर-

णना समूह जेवा उज्ज्वल अर्थवादनो प्रचार करनार, राजसभाओमां विजयलक्ष्मीने प्राप्त करनार, जाणे गौतमस्वामीना प्रतिनिधि होय एवा हीरविजयसूरिना शिष्य विजयानंदसूरि थया. ते बोधिना निधि समान सूरि पोताना गच्छमां मोटी ख्यातिने पाम्या. तेमना पट्ट उपर श्री विजयराज सूरि थया. तेमना चारित्ररूपी महासागरवडे ज्ञाननो निधि वृद्धि पाम्यो अने तेथी शासनरूपी गृहनो उद्योत करवामां तेओ दीप समान थया. त्यारपछी त्रिभुवनेश्वर प्रभुनुं ध्यान करवाना लालचु श्री विजयमानसूरि थया. तेमनी वाणीनी मीठाशथी पराभव पामेली द्राक्ष जाणे लज्जाथी संकोच पामी होय एम लागतुं हतुं. त्यारपछी तेमना पट्ट उपर सिद्धान्तवाणी बोलवामां चतुर अने मारी[1] जेवाने प्रथम आगमनो उपदेश करनार एवा विजयऋद्धि नामे आचार्य थया. तेमणे अनेक लोकोने न्यायमार्गे चलाव्या. त्यारपछी तेमना पट्ट उपर अमारा गुरु श्रीविजयसौभाग्यसूरि थया. तेमना प्रभावथी गुणरत्नना पात्र समान स्याद्वाद तत्त्व अमारी समीपे आव्युं; अर्थात् अमने स्याद्वाद तत्त्वनी प्राप्ति थइ. ते विजयसौभाग्य गुरुना पट्टपर श्रीविजयलक्ष्मी सूरि थया. तेमणे आ सुखने आपनारी गुरु पट्टावळी हर्षथी लखी छे. मारा गुरुना शिष्य गुणवान अने धैर्यवान एवा जयवंत श्रीप्रेमविजय नामना मारा गुरुभाइने माटे आ उद्यम में करेलो छे.

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ चतुर्विंशतितमस्तंभस्य
अष्टपंचाशदधिकत्रिशततमः प्रबंधः ॥ ३५८ ॥

---

१ श्री ऋद्धिविजयना प्रशिष्य लक्ष्मीविजय.

व्याख्यान ३५९ मुं.

श्री हीरविजयसूरिनुं संक्षिप्त चरित्र.

वैराग्यपूर्णहृदया–स्त्यक्तमूर्छा जगृहुश्चारित्रं ।
सुविहितसाधुप्रभवः, श्रीहीरविजयसूरीन्द्राः ॥ १ ॥

भावार्थ—" वैराग्यथी पूर्ण हृदयवाळा सुविहित मुनिना गुरु श्री हीरविजयसूरिए मूर्छानो त्याग करीने दीक्षा ग्रहण करी हती. "

श्री गुर्जर देशमां तारंगगिरि विगेरे तीर्थो छे. तेमां कैलास पर्वत जेवा उंचा तारंगगिरि उपर कोटिशिला छे. ते शिला जाणे मुक्तिरूपी स्त्रीना पाणिग्रहणमां करोडो मुनिओने माटे रचेली स्वयंवरनी भूमि होय तेवी शोभे छे. वळी ते देशमां जाणे विधाताए जगतना लोकोनो मनोरथ सिद्ध करवा माटे मेरुपर्वत उपरथी कल्पवृक्षने लावीने स्थापन करेल होय तेम नागेन्द्रथी सेवाता श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ विराजे छे. आ पार्श्वनाथना बिंबनुं प्रथम नमि अने विनमि नामना विद्याधर राजाए अर्चन कर्युं हतुं; त्यारपछी जाणे पोताना स्थाननी स्थिरता माटे ज होय तेम स्वर्गमां इन्द्रे पूजा करी हती. पछी इन्द्रे ते बिंबने उज्जयंत (गिरनार) गिरि पर मूक्युं हतुं. त्यांथी लइने सूर्ये तथा चंद्रे पोताना स्थानमां राखीने अर्चन कर्युं हतुं. तेमणे पाछुं गिरनारना शृंग उपर स्थापन कर्युं हतुं. त्यांथी धरणेंद्र पोताना धाममां लइ गया हता. त्यारपछी श्री नेमिनाथना वचनथी श्रीकृष्ण ते बिंबने लाव्या हता. वळी ते देशमां खंभात नगरमां जेनो अपूर्व महिमा छे अने जे बिंबना प्रभावथी धन्वन्तरीनी जेम श्री अभयदेवसूरिनो कुष्ट रोग नाश पाम्यो हतो एवा स्थंभन पार्श्वनाथ विराजे छे. आ प्रमाणे अनेक पुण्यनां स्थानो जेमां रहेलां छे एवा ते गुजरात देशमां श्री प्रल्हादनपुर (पालणपुर) नामे नगर छे. तेमां ओसवाळवंशी कुराशाह नामे शेठ हता. तेने नाथी नामनी पत्नी हती. तेणे संवत १५८३ ना मार्गशीर्ष मासनी शुक्ल नवमीने दिवसे गजना स्वप्नथी सूचित हीरकुमार नामना पुत्रने जन्म आप्यो हतो. ते कुमार क्रमे करीने वृद्धि पामतां युवावस्था पाम्यो. एकदा ते कुमारे श्री

विजयदान सूरिना मुखथी देशना सांभळी के, "जीवित संध्याना रंग जेवुं चपळ छे, नदीना वेग जेवुं यौवन अस्थिर छे, अने लक्ष्मी विद्युत्‌ना जेवी क्षणिक छे, माटे हे भव्य प्राणीओ ! निरंतर जिनधर्मनुं सेवन करवामां त्वरा करो." आ प्रमाणेनी देशना सांभळीने हीरकुमार हर्ष पामी पोताने घेर गयो. पछी अनुक्रमे पोताना माता पिता स्वर्गे गया, त्यारे कुमारे विमला नामनी पोतानी ब्हेन पासे दीक्षानी रजा मागी. ते सांभळीने ब्हेन बोली के "हे भाइ ! तुं वृद्धावस्थामां दीक्षा लेजे. हाल तो तारी स्त्रीना मुखामृतनुं पान करवावडे मारा नेत्ररूप चकोर पक्षीने आह्लाद आपवा माटे चंद्र जेवो थइने चपळता तजी तुं गृहस्थाश्रममां चिरकाळ रहे." ते सांभळीने कुमारे कह्युं के "हे ब्हेन ! आ जीवित दर्भना अग्रभागपर रहेला जळबिंदु समान छे, लक्ष्मी पण कुलटा स्त्री जेवी छे, इक्षुना अग्र भाग जेवुं यौवन पण नीरस छे, अने नाटकना समय जेवो आ स्वजननो संबंध पण क्षणिक छे. मारी बाल्यावस्था जशे, अने यौवन लक्ष्मी मारा शरीरने शोभावशे, अने पछी अमात्यनी जेम वृद्धावस्था प्राप्त थशे ' एवुं (चोक्कस) कोण जाणी शके छे ? " आ प्रमाणे अनेक युक्तिथी उत्तर प्रत्युत्तर करवावडे श्रांत थयेला स्वजनोए तेमने दीक्षा लेवानी रजा आपी. एटले संवत १५९६ ना कार्तिक कृष्ण द्वितीयाने दिवसे गुरु पासे तेमणे दीक्षा ग्रहण करी. गुरुए तेनुं हीरहर्ष एवुं नाम पाड्युं.

गुरु पासे अभ्यास करीने तेओ जैनधर्म संबंधी सर्व शास्त्रमां निपुण थया. पछी परदेशनी भाषा तथा परधर्मना शास्त्रो जाणवानी इच्छाथी तेओ दक्षिण देशमां गया. ते देशमां श्री माणिक्यनाथ ऋषभदेव विराजे छे, तथा त्यां अन्तरिक्ष पार्श्वदेव पण छे. ते अन्तरिक्ष नामना पार्श्वदेव जमीनथी उंचा रहेला होवाथी जाणे भव्य प्राणीओनो महा उदय करवाना हेतुथीज उंचा रह्या होय नहीं एम जणावता हता. वळी करहेटक गाममां मोटा प्रभाववाळा करहेटक नामना पार्श्वनाथ स्वामी बिराजे छे. जे दिशामां तेओ रहेला छे ते स्थानने ते प्रभुनीज वांछाथी[1] जाणे होय नहीं तेम शेषनाग कदापि तजतो नहीं, तेमज जाणे आ पार्श्वनाथ देवोना पण देव छे एम कहेवाने माटेज आवती होय तेम वसन्त विगेरे ऋतुओ वैभव सहित प्रतिवर्षे आवीने ते प्रभुनी सेवा करती हती. वळी ते

१ हुं प्रभुना पदने (मोक्षने) पामुं एवी इच्छाथी.

देशमां सोपारक नामना पुरमां जाणे भरतचक्रीना पुण्यनिधि होय तेवा जीवत्स्वामी श्री आदीश्वर प्रभुनी प्रतिमा बिराजमान छे. ए देशमां देवगिरि नामना किल्लामां (शहेरमां) कोइ ब्राह्मण पासे तर्कशास्त्रादिकनो अभ्यास करीने श्री हीरमुनि गुरुपासे आव्या. गुरुए तत्काळ तेमने वाचक (उपाध्याय) पद आप्युं. पछी गुरुए सूरिमंत्रना अधिष्ठायिक देवतानी आज्ञाथी संवत १६१० ना पोष शुक्ल पंचमीने दिवसे हीरहर्षमुनिने सूरिपदे स्थापन कर्या. पछी गुरु अन्यत्र विहार करवा लाग्या.

अहीं अकबर बादशाहनी सभामां अनेक जातिना लोको आवीने बेठेला हता, ते वखते सौए पोतपोताना धर्मनुं वर्णन कर्युं, तेमां एक विद्वान् पुरुषे श्री हीरसूरिनी प्रशंसा करी के " हे बादशाह! जेम सर्व राजाओमां आप मुकुट समान छो, तेम सर्व दर्शनोमां अद्वितीय विद्वान अने सर्व धार्मिकोमां मुकुट समान एक हीरविजयसूरिज छे. आ प्रमाणेनी तेमनी प्रशंसा सांभळीने बादशाहे बे दूतोने विज्ञप्तियुक्त फरमान आपीने लाटदेशमां गांधार नामना बंदरे ज्यां हीरसूरि बिराजमान हता त्यां तेमने बोलाववा माटे मोकल्या. ते दूतोए त्यां जइने जेना चरणकमळनी सेवा सर्व संघ करी रहेला हता एवा हीरगुरुना चरणकमळमां ते फरमान मूक्युं. ते दूते करेली विज्ञप्ति सांभळीने श्रावकोए पण विनंतिपूर्वक कह्युं के " हे गुरु महाराज! जेम केशीगणधरे प्रदेशीराजाने बोध पमाड्यो हतो, तेम आप पण अकबर बादशाहने बोध पमाडजो, आपनी जेवा महात्मा पुरुषो विश्वना उपकारने माटेज यत्न करे छे. शुं मेघ सर्व जगतने जीवाडतो नथी ? वळी जेम पारधी वनमांहेना अनेक प्राणीओने हणीने वनने निःसत्त्व (प्राणी रहित) करी नाखे छे, वळी सर्व द्वेषीवर्गने जीती लइने निःसत्त्व (सत्त्व रहित) करी नाखनार श्री हेमचंद्रसूरिए जेम कुमारपाळ राजाने बोध पमाड्यो हतो, तेम आप अकबर राजाने बोध पमाडजो." आ प्रमाणेनी श्री संघनी विनंति सांभळीने गुरु त्यांथी विहार करी राजनगर (अमदावाद) समीप आव्या; एटले त्यांना अधिकारी साहिबखाने अत्यंत आदर अने भक्तिपूर्वक गुरुने पोतानी राजधानीमां लइ जइने तेमनी पासे घणा घोडाओ, हस्तीओ, रथो, म्यानाओ, पालखीओ विगेरे भेट करी. पछी विनंति करी के " हे स्वामी ! अकबर बादशाहना हुकमथी आ भेट हुं आपने करुं छुं माटे ते ग्रहण करो. बादशाहे

मने कहेवराव्युं छे के सूरीश्वर श्रीहीरविजय गुरुने धन, रथ, अश्व, हस्ती विगेरे आपीने तेमना मनोरथ पूर्ण करी तेमने मारा तरफ मोकलवा. माटे हे स्वामी! आ आपने माटे आवेली थापणनी जेम माराथी अपातुं ग्रहण करो." ते सांभळीने सुरि बोल्या के "अमे निष्परिग्रही छीए, अमे हमेशां उपानह पण पहेर्या विना पगे चालवानेज योग्य छीए, तेथी ए सर्व अमारे कांइ कामनुं नथी." एम कही सुरि विहार करता आबुगिरि आव्या.

त्यां गुरुए विमलमंत्रीए करावेली विमळवसही जोइ. ते वसही (जिनचैत्य) आरस पत्थरनी होवाथी श्वेत हती, तेमां अनेक श्वेत हाथीओ अने श्वेत अश्वो हता, तथा सुधा सरखी शोभायमान हती, अने ते वसहीनो मध्य भाग श्री जिनेश्वरे पवित्र करेलो हतो; तेथी ते वसति जाणे क्षीरसमुद्रनी सखी होय तेवी जणाती हती; केमके क्षीरसागर दूधनो होवाथी श्वेत छे, श्वेत ऐरावत हाथी, श्वेत उच्चैःश्रवा अश्व अने सुधा (अमृत) तेमांथी नीकळ्यां छे एम कहेवाय छे, तथा जिन एटले विष्णुए तेनो मध्य भाग पवित्र करेलो कहेवाय छे. त्यारपछी ते यतीन्द्रे वस्तुपाळे करावेली वसतिना चैत्यने जोयुं. त्यां गिरनार पर्वतनी जेम आबुपर्वतने पण पवित्र करवानी इच्छाथीज जाणे आव्या होय एवा नयनने आनंद करनारा शिवाराणीना पुत्र श्री नेमिनाथने वंदना करी. त्यांथी चालतां मार्गमां जाणे धर्मनुं प्रपास्थान (परब) होय तेवा अने जेणे अमृत (मोक्ष) नी लक्ष्मी धारण करी छे एवा कुमारपाळ राजाए करावेला चैत्यने नमीने ते मुनीन्द्रे अचळगढमां आवी चतुर्मुख श्री ऋषभस्वामीने वंदना करी. त्यांथी राणकपुर आवीने नलिनीगुल्म विमानना आकारवाळा धनाशाहे करावेला चैत्यने वंदना करी. ते चैत्यमां जाणे प्राणीओने चारगतिनी पीडारूप मोटा अंधकूपमांथी उद्धार करवानी इच्छाथीज होय नहीं एम चार मूर्त्तिने धारण करता श्री युगादिदेवना दर्शन कर्या. त्यांथी मेडता नगर समीपे आवीने श्री फळवर्धि पार्श्वनाथने वंदना करी. आ प्रतिमा विषे एवुं संभळाय छे के आ बिंबनी पासे बीजी कोइ जिनप्रतिमा रही शकती नथी, तेथी ते प्रतिमा एकलीज छे. ते प्रभु जाणे एम धारता होय के हुं एकलोज-बीजानी अपेक्षा राख्या विना त्रण जगतना जीवोना मनोरथ परिपूर्ण करुं एवो छुं, तेथी बीजानी जरुर नथी. एवी रीते पोताना मनमां अहंकार लावीने ते प्रभु एक-

लाज रहेला होय नहीं ? वळी ते फळवधिं पार्श्वनाथना द्वारने बारणां रहेतां नहीं. कदाच कोइ माणस ते द्वार उपर बारणां चढावता तो प्रातःकाळे ते प्रासादथी बे कोस दूर जइने पडता, त्यां रहेता नहीं.

सूरि त्यांथी विहार करीने फतेहपुरनी समीपे आव्या. त्यांनो राजा थानसिंह बादशाहनो सेवक हतो, तथा अमीपाळ नामे बादशाहनो सेवक पण त्यां हतो. ते हमेशां बादशाहने नाळियेरनी भेट मोकलतो हतो. तेमणे तथा संघना मुख्य माणसोए बादशाहने सूरिना आगमनना खबर आप्या. पछी बादशाहनी आज्ञाथी श्रीसंघ मोटा उत्सवपूर्वक फतेहपुरथी बादशाहनी राजधानीना शाखापुर (गाम बहारनुं परुं) सुधी सुरि साथे आव्यो. पछी बादशाहना कहेवाथी बादशाहनो सर्वशास्त्रसंपन्न शेखगुरु सुरिने पोताने घेर लइ गयो. त्यां सुरिए प्रथम ते शेखनी साथेज धर्मगोष्ठी करीने ते शेखना मनना दरेक संशयो दूर करी तेने प्रतिबोध पमाड्यो. पछी सुरि बादशाह पासे आव्या, तेने बादशाहे बहु आदरमानपूर्वक अनेक प्रश्नो पुछ्या. तेना प्रत्युत्तरो आपीने गुरुए यम, नियम अने जिन तीर्थादिकनुं स्वरूप प्रकाशित करी बादशाहनुं चित्त दयाधर्मथी सुवासित कर्युं. पछी बादशाह सूरिने पोतानी चित्रशाळामां लइ गया. त्यां बादशाहे त्रण पगथियांवाळा उंचा सिंहासनपर बेसीने गुरुने कह्युं के " हे सूरीश्वर ! राजाओने बेसवा लायक आ सभाभूमिमां आच्छादन करेला गालीचा उपर आपना चरणकमळ मूकी तेने पवित्र करो. " गुरु बोल्या के " हे राजन् ! कदाच तेनी नीचे कीडीओ होय, माटे अमे तेना पर पग न मूकीए." बादशाहे कह्युं के " हे गुरु ! देवलोकना मंदिर जेवी स्वच्छ आ सभामां कीडीओ विगेरे कांइ होयज नहीं." गुरु बोल्या के " अमारो आचार ज एवो छे, माटे अमे जोया विना पग मूकता नथी. मुमुक्षुए पोताना आचरणनुं चिंतामणि रत्ननी जेम रक्षण करवुं जोइए." पछी बादशाहे ते गालीचो उंचो कराव्यो तो तेनी नीचे बादशाहे पोतेज अनेक कीडीओ जोइ, तेथी आश्चर्य पामीने तेणे सूरिनी अति प्रशंसा करी. पछी विधिपूर्वक योग्य स्थाने बेसीने निःस्पृह गुरुए धर्मना रहस्यने प्रकाशित कर्युं.

त्यांथी सूरि आग्रामां चातुर्मास रह्या. त्यां प्राणीओना इच्छित मनोरथने पूर्ण करवा माटे जाणे स्वर्गमांथी चिंतामणि रत्न आवेलुं होय नहीं एवा चिंतामणि

पार्श्वनाथना बिंबने मोटा उत्सवपूर्वक सूरिए स्थापन कर्युं. चातुर्मास पूर्ण थया पछी सूरि फतेहपुर आव्या, त्यां फरीने बादशाहनुं मळवुं थयुं. ते वखते बादशाहे रथ, अश्वो तथा हाथी विगेरेनी भेट आपी. गुरुए ते अंगीकार करी नहीं. त्यारे बादशाहे कह्युं के "हे सूरीश्वर! मारी पासेथी कांइ पण ग्रहण करीने मने कृतार्थ करो; केमके सुपात्रना हाथ उपर जेनो हाथ थयो नथी (जेणे सुपात्रने दान आप्युं नथी) तेनो जन्म वनमां रहेला मालतीना पुष्पनी जेम निरर्थक छे." आ प्रमाणे दानने माटे बादशाहे वारंवार आग्रह कर्यो, त्यारे सूरिए पांजरामां पूरेला सर्व पक्षीओने छोडी मूकवानुं माग्युं; एटले बादशाहे सर्व पक्षीओने छोडी मूक्या, पर्युषणमां बार दिवस सुधी अमरपडह वगडाववानुं (अमारी पाळवानुं) फरमान कर्युं, तथा बादशाहे करावेलुं बार कोशनुं मोटुं डामर नामनुं सरोवर के जेनो सामो किनारो पण दृष्टिथी जोइ शकातो नहोतो ते सरोवरमां रहेला मीनादिक जंतुओना वधनो सर्वथा निषेध कर्यो. पछी बादशाहे फरीथी सूरिने कह्युं के "आजथी आपनी जेम हुं पण मृगयावडे जीवहिंसा नहीं करुं. हुं इच्छुं छुं के सर्वे प्राणीओ मारी जेम इच्छा प्रमाणे फरो हरो अने क्रीडा करो." आ प्रमाणे मृगया, जजियावेरो अने शत्रुंजयनो कर विगेरे मुकावी दइ, अनेक प्रकारनी पुण्य क्रियामां तेने जोडी दइ सूरिए अन्यत्र विहार कर्यो.

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ चतुर्विंशतितमस्तंभस्य
एकोनषष्ट्यधिकत्रिशततमः प्रबंधः ॥ ३५९ ॥

व्याख्यान ३६० मुं.

श्री हीरविजयसूरिनुं चरित्र [चालु]

जगद्गुरुरिदं राज्ञा, बिरुदं प्रददे तदा ।
तद्वहन्नन्यदेशेषु, विजहार गुरु क्रमात् ॥ १ ॥

भावार्थ—" त्यारे आ जगत्गुरु छे एवुं बादशाहे बिरुद आप्युं. पछी बादशाहे आपेला जगद्गुरु बिरुदने वहन करता सूरिए अन्यत्र विहार कर्यो. " आ श्लोकमां कहेला अर्थनुं समर्थन करवा माटे तेमनुं चरित्र विशेषे कहेवामां आवे छे.

अन्य देशोमां विहार करतां करतां श्रीहीरगुरु मथुरापुरीमां आव्या. त्यां मोटा उत्सवथी संघजनोथी परिवरेला सूरिए चारण मुनिनी जेम पार्श्वनाथ अने सुपार्श्वनाथ प्रभुनी यात्रा करी, तथा जंबूस्वामी, प्रभवस्वामी विगेरे पांचसो ने सत्तावीश मुनिओना स्तूपोने वंदना करी. पछी गोपाल गिरि उपर ऋषभदेवने वंदना करी. ते गिरि उपर शत्रुंजयनी जेम बावन गजना प्रमाणवाळी श्री आदीश्वरनी प्रतिमा छे, तथा बीजी पण जिनप्रतिमाओ छे, तेने सूरीश्वरे वंदना करी. त्यांथी वरकाणक नगरमां आवीने साक्षात् पार्श्वयक्षनी जेम वरकाणक नामना पार्श्वनाथने नम्या. त्यांथी अनुक्रमे सिद्धाचळ आवी त्यां दर्शन तथा स्तुति विगेरे करीने गुरु जयपुरमां आव्या.

त्यां श्री संघनी समीपे सूरिए श्री अजय पार्श्वनाथनुं किंचित् चरित्र कह्युं के– " कोइ श्रेष्ठी जळवट व्यापार माटे समुद्ररस्ते जतो हतो. दैवयोगे अचानक वृष्टिनो उत्पात थयो; तेथी कल्पांत काळनी जेम पोताना वहाणना लोकोनो संहार थशे एम धारीने ते दुःख जोवाने असमर्थ एवो ते श्रेष्ठी प्रथमथीज मृत्यु पामवा माटे समुद्रमां झंपापात करवा जाय छे, तेटलामां पद्मावती देवीए आकाशवाणीथी कह्युं के ' आ समुद्रनी मध्ये समग्र दुःखरूपी सागरनुं मंथन करवामां मंदराचळ पर्वत समान प्रभाववाळी अने समुद्रनी मेखलाना निधिसमान श्री पार्श्वनाथनी प्रतिमा छे; माटे हे श्रेष्ठी ! नाविक लोको पासे तेने समुद्रमांथी बहार कढावीने तेनी पूजा करी वहाणमां राखीश तो हुं तारुं सर्व विघ्न दूर करीश. पण हे श्रेष्ठी !

ते कल्पवृत्तना पर्णनी करेली पेटीने तुं उघाडीश नहीं, तेने तेवी ने तेवी स्थितिमां द्वीप (दीव) बंदरे लइ जजे. त्यां दिग्यात्राने माटे आवेला अजय नामना राजाने ते पेटी आपजे. ते मूर्त्तिना स्नात्रजळथी ते राजाने थयेला एकसो ने सात रोगो नाश पामशे.' आ प्रमाणे देवीनी वाणी सांभळीने ते श्रेष्ठीए पोताना माणसो पासे ते पेटी बहार कढावी अने वहाणमां स्थापन करी, तेथी सर्व उपद्रवो नाश पाम्या. अत्यारे पण समुद्रमां प्रतिकूळ वायुने लीधे कांइ उपद्रव थयो होय ते वखते जो अजय पार्श्वनाथनुं ध्यान कर्युं होय तो ते वहाणनी जेम मनुष्योने निर्विघ्न रीते सुखेथी समुद्रने किनारे पहोंचाडे छे.

पछी ते श्रेष्ठीए दीवबंदरे जइने त्यां आवेला अजयराजाने पेटी संबंधी सर्व वृत्तांत कही ते पेटी तेनी पासे मूकी, एटले राजाए त्यां अजय नामनुं नगर वसावी विनयपूर्वक ते बिंबने पेटीमांथी बहार काढी ते पुरमां मोटुं चैत्य करावीने तेमां ते स्थापन कर्युं. अने तेना स्नात्रजळथी ते राजा व्याधिमुक्त थयो. पूर्वे तेनुं अजय पार्श्वनाथ एवुं नाम हतुं, हालमां त्यां अजार नामे ग्राम वसवाथी अजार पार्श्वनाथ एवुं नाम थयुं छे. आ हकीकतनो विस्तार शत्रुंजयमहात्म्यमांथी जाणवो.

श्री हीरविजयसूरिए दीक्षाथी आरंभीने जे तप कर्युं ते आ प्रमाणे— जेम राजा न्यायने न तजे, तेम सूरिए जीवनपर्यंत एकासणुं छोडयुं नहोतुं. जाणे कामदेवना पांच बाणो तज्यां होय तेम तेमणे पांचे विकृति (विगइ)नो त्याग कर्यो हतो. जाणे के भवसागरने पार पमाडनारी बार भावनाओने विशेषे करीने पुष्ट करता होय तेम हमेशां भोजन समये नामग्रहणपूर्वक अन्न, जळ, शाक विगेरे मळीने बारज द्रव्यो [पदार्थो] वापरता हता. पोताना पापनी आलोचना माटे ते सूरिए त्रणसो उपवास अने सवाबसो छठ कर्या. त्रण चोवीशीनुं ध्यान करवानी इच्छाथी बोंतेर अट्ठम कर्या. बे हजार आयंबिल कर्या, ने फरीने वीश स्थानकोना आराधन माटे वीश आयंबिल कर्या. बे हजार नीवी करी. वळी एकदत्ती एटले पात्रमां एकज वखते जेटलुं अन्न जळ अविच्छिन्न पडे तेटलो आहार करवो ते, तथा एकज दाणो खावो ते एकसित्थ कहेवाय छे, इत्यादि अनेक तीव्र तपो कर्यां. फरीथी त्रण हजार ने छसो उपवास कर्या. पछी प्रथम उपवास, ते उपर एकासणुं, ते उपर आयंबिल, ते उपर पाछो उपवास एवी रीते तेर

मास सुधी विजयदान गुरु संबंधी तप कर्युं. पछी बावीश मास सुधी योग वहन करीने तीव्र तप कर्युं. पछी त्रण मास सुधी सूरिमंत्रनी विधिपूर्वक आराधना करीने चार करोड श्लोक प्रमाण सज्जायध्यान कर्युं. ते सूरिए पांचसो जिनबिंबनी प्रतिष्ठा करी. इत्यादि बहु प्रकारनां धर्मकार्यो करीने ते सूरि उनाया [उना] नगरमां संवत १६५२ ना भाद्रपद शुदि ११ ने दिवसे महामंत्र [नवकार] नुं स्मरण करता सता स्वर्गलोकने पाम्या.

" ए प्रमाणे अमृतना ओघ सरखा उज्ज्वळ ध्यानने धारण करता सता सूरिए भगवंते कहेला महानंदपुरे जवाना मार्गने त्यां जवानी इच्छाथी जाते जोवाने माटे देवलोकनो आश्रय कर्यो. "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ चतुर्विंशतितमस्तंभस्य षष्ठ्युत्तरत्रिशततमः प्रबंधः ॥ ३६० ॥

व्याख्यान ३६१ मुं.

सिद्धाचळपर रहेला प्रासादनुं वर्णन.

श्रीसिद्धाचलप्रासादं, सोपानादिस्फुरत्प्रभम् ।
कुंभशृंगध्वजायुक्त–मार्हन्तं तं स्तवाम्यहम् ॥ १ ॥

भावार्थ—" सोपान (पगथियां) विगेरेथी जेनी प्रभा स्फुरणायमान छे अने जेमनो शृंग विभाग (शिखर) कुंभ तथा ध्वजाथी युक्त छे एवा सिद्धाचळपर रहेला श्री अर्हत्‌ना प्रासादनी हुं स्तुति करुं छुं. "

आ श्लोकमां श्री सिद्धाचळ, प्रासाद, सोपान विगेरे, कुंभ, शृंग अने ध्वजा आटला शब्दो कह्या छे, ते दरेकनी नीचे प्रमाणे भावना करवी.

श्री सिद्धाचळ समान पवित्र बीजो कोइ पर्वत नथी. कह्युं छे के—

तावल्लीलाविलासं कलयति मलयो विन्ध्यशैलोऽपि ताव-
द्धत्ते मत्तेभगर्वं तुहिनधरणिभृत्तावदेवाभिरामः ।
तावन्मेरुमहत्त्वं वहति हरिगिरिर्गाहते तावदाभां ।
यावत्तीर्थाधिराजो न नयनपुटैः पीयते पर्वतेन्द्रः ॥ १ ॥

भावार्थ—" ज्यांसुधी सर्व तीर्थोना अधिराज श्री सिद्धाचळ नामना गिरीन्द्रनुं नेत्रपुटवडे पान कर्युं नथी, त्यां सुधी मलयाचळ पर्वत लीलानो विलास विस्तारे छे, त्यां सुधीज विन्ध्याचळ पर्वत मदोन्मत्त हाथीनी जेम गर्वने धारण करे छे, त्यां सुधीज हिमालय पर्वत सुंदर लागे छे, त्यां सुधीज मेरुगिरि महत्त्वने वहन करे छे, अने त्यां सुधीज शक्रशैल (हरिगिरि) तेजने धारण करे छे."

ते सिद्धाचळ उपर भरतचक्रीए करावेलो प्रासाद अलौकिक महिमावाळो छे. ताराओवडे जेम चंद्र शोभे छे, ग्रहोवडे जेम ग्रहपति (सूर्य) शोभे छे, असुरोवडे जेम असुरेन्द्र शोभे छे, सुरोवडे (देवोवडे) जेम सुरेन्द्र शोभे छे, अने मनुष्योवडे जेम नरेन्द्र शोभे छे, तेम बीजां नानां नानां जिनचैत्योवडे चोतरफथी अलंकृत थयेलुं श्री ऋषभदेव स्वामीनुं चैत्य शोभे छे.

ते प्रासाद सोपानादिकथी दीप्तिमान छे, तेमां आदि शब्दना ग्रहणथी तोरण, मंडप, स्तंभ, गर्भागार विगेरेथी पण सुशोभित छे एम जाणवुं. ते आ प्रमाणे–ते चैत्यना अग्र भागे जाणे मोक्षलक्ष्मीनुं कामण होय तेवुं अत्यंत सूक्ष्म नकशी कामवाळुं सुवर्णमणिनुं तोरण बांधेलुं शोभे छे. अपवर्गपुरे पहोंचवाने इच्छता मुनिओने माटे ते आश्रयस्थान जेवुं छे, अने तेनी नीचे जवाथी अमे आ मुक्तिगृहमां प्रवेश करीए छीए के शुं एम भास थाय छे. ते चैत्यना मध्य भागमां अति सुशोभित महामंडप छे, ते पोतानी मुक्तिरूपी कन्याने कोइ पण योग्य वरने आपवा माटे मनमां इच्छा राखनारा धर्मराजाए जाणे मणि सुवर्णमय चित्रोथी शोभायमान स्वयंवरमंडप रच्यो होय नहीं एवो शोभे छे. वळी ते श्री ऋषभस्वामीना प्रासादमां वर्णन करवा लायक एवा घणा स्तंभो शोभी रह्या छे. ते स्तंभोने मिषे सर्व राजाओ जाणे " हे जिनेन्द्र ! इन्द्र आपनो सेवक छे ते अमारो शत्रु छे, माटे तेनी साथे अमने मैत्री करावो." एम कहेवाने माटे आव्या होय नहीं तेम प्रभुनी उपासना करी रह्या छे. ते युगादीश जिनेश्वरना

मंदिर उपर आकाशने अलंकृत करतुं शिखर पोताना वैभवथी सूर्यनां किरणोनां मंडळने विडंबना पमाडे छे तथा जाणे पोतानी कापी नांखेली पांखो फरीथी मेळववाने माटे इच्छतो अमराचळ त्रण भुवनना मनोरथ पूर्ण करवामां कल्पवृक्ष समान ते जिनेश्वरनी भक्ति करवा आव्यो होय तेवुं शोभे छे. वळी 'हे प्रभु! जगतना धनादिक मनोरथ पूरवाने तो हुं समर्थ छुं, पण तमारी जेम मोक्ष-लक्ष्मी आपी शकवा माटे मने तेना आकरमां लइ जाओ.' एम जगदीश्वरने कहेवा माटे उत्सुक थयेलो कामकुंभ आवीने जाणे प्रभुने सेवतो होय नहीं तेम ते शिखरपर रहेलो सुवर्ण कळश शोभे छे. वळी त्रण भुवनमां पोतानी जेवा वैभववाळाना समूहने जाणे जीतवानी इच्छा थइ होय एवा आ जिनेश्वरना प्रासादे शत्रुना समूहरूप सागरने मथन करवामां मन्दराचळ समान शिखरपर स्फुरणायमान थतो मजबूत दंडरत्न धारण कर्यो छे; तेमज जय मेळवनार विभूतिवडे वारंवार स्पर्धा करता वैजयंतादिकने जीतीने आ आदिनाथना चैत्ये जाणे जगतमांहेना शत्रुमात्रना विजयने जणावनारी वैजयंतिका मस्तकपर धारण करी होय एम हुं मानुं छुं.

अनेक निर्जर, मनुष्यो अने उरगोना पुरंदरोए (देवेंद्र, नरेंद्र ने असुरेंद्रोए) सेवित एवो विमळाचळरूप राजा ऋषभदेवनी प्रतिमाथी अलंकृत थयेला एवा अने उपर जणावेला सुंदर मंडपनी अंदर रहेला तेमज तोरणोना त्रिकथी विचित्र लागता गर्भालयने धारण करी रह्यो छे. ते गर्भगृहनी अंदर युगना आदि समयमां जेम में संसारथी प्राणीओनो उद्धार कर्यो हतो, तेवीज रीते आ मलिन कलिकाळमां पण फरीथी हुं उद्धार करुं, एवो हृदयमां विचार करीने श्री आदीश्वर प्रभु पोताना स्वरूपे त्यां उतरीने प्रतिमाना मिषथी स्थिर रह्या छे एम जणाय छे.

मोक्षलक्ष्मीने भजनारा अने मेघसमान गंभीर ध्वनिवाळा एवा हे प्रभु! तमे निरंजनपणाथी कमळनी जेवा विशुद्ध आशयवाळा कहेवाओ छो, संसार-सागरमांथी भव्य प्राणीओने तमे नौकानी जेम पार उतारो छो. वळी अमृत रसनी जेम तमे जगतना समग्र प्राणीओनुं जीवन छो, एवा हे प्रभु! तमे जयवंता वर्तो.

। इति प्रासादादिवर्णनम् ।

उपदेशरूप प्रासादना अवयवोनुं वर्णन.

आ उपदेश प्रासाद ग्रंथमां बुद्धिना आठ गुणोनुं वर्णन करेलुं छे ते आठने शास्त्रमार्गने देखाडनारा ते प्रासादना सोपान [पगथियां] जाणवा. विकथाना प्रकार सहित तेने निरंतर त्याग करवानुं वर्णन करेलुं छे, ते आ उपदेश प्रासादनां सुखे प्रवेश करी शकाय तेवां चार द्वार जाणवां. चार प्रकारना अनुयोगनुं वर्णन कर्युं छे ते आ ग्रंथरूप प्रासादमां विचित्र रचनावाळां चार तोरण जाणवां. द्रव्यभावरूप बे बे भेदवाळा बार व्रतोनुं वर्णन कर्युं छे, तेथी ते चोवीशने आ प्रासादना स्तंभ जाणवा. मन, वचन अने कायाना योगनी शुद्धि कहेली छे, ते आ प्रासादनो असत्प्रवृत्तिथी निवारण करनार मंडप जाणवो. अन्य मंदिरोमां गवाक्ष विगेरे वस्तुओ होय छे तेने स्थाने अहीं अतिचार रहित व्रतो जाणवां. सातसो नयथी युक्त स्याद्वादने द्योतन करनार वचनने आ प्रासादनुं निर्मळ द्युतिवाळुं शिखर जाणवुं. रत्नत्रयनी स्तुतिना आरंभने अहीं मोटा कुंभ समान जाणवो. अनन्त अने अव्यय संपत्तिवाळा मोक्षनी स्तुतिने ध्वजारूप जाणवी. शुद्ध अन्तःकरणने गर्भगृह [गभारा] रूप जाणवुं. ते गर्भगृहमां प्रतिष्ठित थयेला चिद्रूप जे मूर्त्ति छे ते स्वयंभू त्रिभुवनना नाथ छे एम जाणवुं. ते प्रभु निरंतर प्राणीओने सौभाग्य लक्ष्मी आपे छे.

चोसठ इन्द्रो, सोळ विद्यादेवीओ अने चोवीश तीर्थंकरोना शासननी अधिष्ठायिक देवीओ तथा चोवीश यक्षो आ सुभद्र नामना प्रासादनी रक्षा करो.

श्री शांतिनाथने नमस्कार करवो ए प्रथम मंगळ छे, सहस्रकूटना प्रभुनुं वंदन ए बीजुं मध्य मंगळ छे, अने शासनदेवीनुं ध्यान ए अंतिम मंगळ छे. ते सर्वे हमेशां आ ग्रंथ वांचनार तथा सांभळनारना कल्याण माटे थाओ.

इत्यब्दादिनपरिमितोपदेशप्रासादवृत्तौ चतुर्विंशतितमस्तंभस्य
एकषष्ट्यधिकत्रिशततमः प्रबंधः ॥ ३६१ ॥

प्रशस्ति.

जेना प्रभावथी शुभ साध्यने साधी आपनार आ प्रासादनुं निर्विघ्नपणे निर्मापण करी शकायुं ते अनंत कल्याणना स्थानरूप चिंतामणि पार्श्वनाथने हुं वंदन करुं छुं. स्तंभतीर्थमां सूरिमंत्र आराधनना उद्यमथी जेमने सूरिमंत्रना अधिष्ठायिक देवनो आदेश प्राप्त थयो ते गुरुनुं हुं स्मरण करुं छुं. घणा गुणवाळा अने एकाग्र चित्ते नमस्कारमंत्रनुं ध्यान करनारा श्रीमान् विजयसौभाग्यसूरि नामना गुरुनी हुं स्तुति करुं छुं. ते गुरुना शिष्य श्री विजयलक्ष्मी नामना सूरिए आ उपदेश प्रासाद ग्रंथ शास्त्रोमां दीठेला अक्षरोने अनुसारे रचेलो छे, अने श्री प्रेमविजयादिक मुनिओने अभ्यास करवा माटे तेनी उपदेशसंग्रहा नामनी वृत्ति पण करेली छे. आ ग्रंथ संवत १८४३ ना कार्तिक शुदि पूर्णिमाने दिवसे संपूर्ण थयो छे. ज्यां सुधी जगतमां मेरुपर्वत रहेलो छे, ज्यां सुधी जगतमां जैनशासन प्रवर्ते छे, ज्यांसुधी ज्योतिष्चक्र आकाशमां विराजमान छे, अने ज्यांसुधी सुरनदी (गंगा)नो प्रवाह जगतमां प्रवर्ते छे, त्यां सुधी मानसरोवरना हंस जेवा विद्वानोथी वंचातो सतो आ ग्रंथ विजयने पामो.

आ ग्रंथमां कांइक अज्ञानताथी, कांइक बुद्धिना विकल्परूप दोषथी, कांइक उत्सुकताना वशथी अने कांइक स्मृतिना दोषथी जे कांइ रभसवृत्तिवडे उत्सूत्र प्ररुपणा थइ होय तेनी पंडित जनोए क्षमा करवी.

आ शास्त्रमां मतिनी मंदताने लीधे कांइक शास्त्रविरुद्ध दृष्टांतादिक कहेवायां आव्युं होय तो इर्ष्या नहीं राखतां मारापर करुणा लावीने शुद्ध चित्तवाळा पंडितोए तेने शुद्ध करवुं (सुधारवुं). आ ग्रंथ रचवाना प्रयत्नथी जे कांइ सुकृत थयुं होय ते सुकृतथी आ ग्रंथना वांचनार, उद्धरनार तथा सांभळनारने जैन धर्मनी प्राप्ति थाओ.

सर्व कल्याणकारणं, सर्वश्रेयस्कसाधनम् ।
प्रशस्यं पुण्यकृत्यानां, जयत्यार्हतशासनम् ॥ १ ॥

भावार्थ—" सर्व कल्याणनुं कारण, सर्व श्रेयनुं साधन, अने पुण्यकृत्योवडे प्रशंसा करवालायक एवुं श्री जैनशासन (जगतमां) जय पामे छे. "

॥ इत्युपदेशप्रासादः ॥

॥ समाप्तोऽयं ग्रंथः ॥

मोटी अनुक्रमणिकानी प्रस्तावना

आ आखा ग्रंथमां ३६१ व्याख्यानोमां जे जे कथाओ आवेली छे ते सर्व कथाओनी अक्षरना अनुक्रमथी आ अनुक्रमणिका करवामां आवी छे तेनो हेतु जे कथा शोधवी होय ते तरत शोधी शकाय ते छे. अक्षरोनी अंदर स्वरनो अनुक्रम एटला माटे राखवामां आव्यो नथी के तेथी स्थंभ ने व्याख्याननो अनुक्रम दरेक अक्षरमां पण रही शकतो नथी. कोइपण कथा शोधवा इच्छनारे व्याख्यानना अंक साथे जणावेला स्थंभमां जोइ लेवुं. तेमां पांच विभागनी अंदर १ थी ४, ५ थी ९, १० थी १४, १५ थी १९ अने २० थी २४ ए प्रमाणे स्थंभो आवेला होवाथी ते ते विभागमां जोवुं. आ ग्रंथमां आवेलां पर्वतिथिनां व्याख्यानोनी अनुक्रमणिका प्रांते खास जुदी आपवामां आवी छे. तेनी आवश्यकतावाळाओए तेनो लाभ लेवो.

अ

न

प

य

र

ह.

पर्वतिथिनां व्याख्यान.

